Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि ॥

१. हमारे "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश २८°।३८' एवं पूर्व रेखांश ७७°।१२' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।

२. 'आर्यभट्ट पंचांग' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 'सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज़ वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अतः प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (-) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. इस पंचाङ्ग में करण सूर्योदय कालीन दिए गए हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

५. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र मार्ग आदि भा. स्टे. टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

६. महीनों में अष्टमी-पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रातः ५ घं. ३० मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। यह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

७. लस्टर में A.B.C.D. * आदि चिन्ह दिए गए हैं, उनका मतलब यह है कि मेटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतवाली को पंचाङ्ग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

८. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जाये। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

९. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक ११ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहां २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।

१०. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

११. रा.मि. पहले कॉलम में दी गई हैं। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिए गए हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रतिष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं।

१२. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टे.टा. प्रातः ५-३० बजे (दिल्ली) के दिए गए हैं। और लग्न का समाप्तिकाल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१३. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अ

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आषा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गू.दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज.=जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूमिमुख (अस्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वा फाल्गु.
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास-तारीख)

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना [illegible] इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्य काल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अन्तर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंसित किया तब हमारे देश वासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री राम कृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमरीका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका, ब्रिटेन, योरोप आदि देशों में घूम-घूम कर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदुपरान्त स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों सन्त महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलम्बन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थायें हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला कौशल तथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित [illegible] विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचे लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारण उत्तर भारत में इस विद्या का सब से अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भण्डार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिये अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ **''शतक मार्त्तण्ड''** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता श्री आर्यभट्ट थे, जिनका जन्म ४७६ ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ ''आर्य भटीय'' कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यञ्जनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्हीं महापुरुष के नाम पर **''आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र''** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार में सफल होंगे।

''शतक मार्त्तण्ड'' जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक [illegible] के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अ[illegible] विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने ''श्री आ[illegible] ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरम्भ किया। ज्योतिष [illegible] विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिये क्षमा प्रदान [illegible] सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में [illegible] परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

[illegible] प्रकाशन 259, [illegible] दिल्ली 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

म. लेः

जनमत

"श्री आर्यभट् पंचांग" के सम्बन्ध में ज्योतिषाचार्यों, विद्वानों तथा ज्योषि प्रेमी सज्जनों के अनेकों पत्र पंचांग के सम्पादक, व्यवस्थापक, प्रकाशक तथा अनुसंधान केन्द्रों को प्राप्त हुए। हम उन सभी महानुभावों को उनके आशीर्वचनों, शुभकामनाओं, प्रशस्ति वाकयें तथा उपयोगी परामर्शों के लिए हार्दिक धन्यवाद समर्पित करते हैं। आपके अधिकांश सुझावों को हमने इस वर्ष के पंचांग में सम्मिलित कर दिया है और हमारा यह प्रयास रहेगा कि पाठकों के उपयोगी सुझावों को यथाशक्ति कार्यरूप में परिणित किया जाये। हमारे पास आए पत्रों के अंश आपकी सूचना के लिए हम यहां उद्धृत कर रहे हैं:—

❖ **डॉ. बी. एन. जोशी, जोशी औषधालय, सदर बाजार, रोपड़ (पं.) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग में देखा, उसकी सूक्ष्म गणित व सारगर्भित करते देख मन अति प्रसन्न हुआ। वास्तव में आप प्रशंसा व सम्मान के पात्र है।

❖ **के.सी. शर्मा, अनाज मंडी, शाहदरा, दिल्ली से-** यह पंचांग भी अति सूक्ष्म अति सुन्दर एवं अति आवश्यक है। मेरे विचार से यह लघु पंचांग भी जनता के लिए अति उपयोगी है।

❖ **श्री आनन्द प्रकाश, ग्राम कालेवाला, मुरादाबाद (उ.प्र.) से-** पंचांग की जो सामग्री है वह अत्यन्त प्रिय है। पंचांग दिवाकर का मुकाबला आपके इस आर्यभट्ट पंचांग ने ही किया है। हम तो यही कहेंगे कि भगवान् आपके इस कार्यक्षेत्र को और आगे बढ़ाए।

❖ **पं. लेखराज द्विवेदी, जोधपुर (राज.) से-** वास्तव में आर्यभट्ट पंचांग तारीफ के योग्य है। इसमें आपने सभी पूर्णताएं भर दी हैं। सभी तरह के वर्गों के लिए पंचांग संग्रहणीय है।

❖ **आचार्य हर्षवर्धन मधुर (प्रवक्ता), हिन्दी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय जांगला-शिमला से-** आप द्वारा रचित आर्यभट्ट पंचांग अध्ययन किया जो कि ज्योतिष कार्य के लिए विशेष लाभप्रद है।

❖ **शुभ कर्ण ज्योतिषी अरुण ज्योतिष कार्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली से-** ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपका श्री आर्यभट्ट पंचांग सदैव उन्नति करता रहे व इसी प्रकार सफलता अर्जित करे।

❖ **पं. पी. के. शर्मा व्याकरणाचार्य, संस्कृत-हिन्दी एम. ए. ज्योतिष, शास्त्री साहित्याचार्य, अलीगढ़ से-** आपका प्रयास सराहनीय है। आपने यह पंचांग गागर में सागर भरकर एक ऐसा दीपक प्रज्वलित किया है जैसे एक भानु की किरणें सर्वत्र प्रसारित कर सम्पूर्ण अंधकार मिटा दिया हो। अतः हमारी कामना यह है कि यह दीपक सदैव इस देश में प्रज्वलित रहे और अंधकार मिटता रहे।

❖ **कलानाथ शास्त्री, अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर, (राज.) से-** इस अत्यन्त्युपयोगी पंचांग के प्रकाशन के लिए आप बधाई के पात्र हैं।

❖ **राजेश कुमार कन्दोई, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली से-** सामान्य व विशिष्ट सभी प्रकार की सूचनाओं को समेटते हुए यह अनमोल पंचांग अनुपम ही है। सचमुच यह गागर में सागर कहा जा सकता है।

❖ **कमलचन्द भूरा, किशन नगर, गुवाहाटी (आसाम) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांगम् की अतुलनीय सामग्री ज्ञानवर्धक व नई-नई उपलब्धियों के लिए विशेष अनुकरणीय है। ज्योतिषीय जानकारी देने वाला विश्व में प्रथम शायद यही पंचांग है।

❖ **पं. बी. एस. शर्मा (ज्योतिष), मुराद अली लेन, लखनऊ से-** आर्यभट्ट पंचांग में अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं का समावेश है। जिससे इस पंचांग की महत्ता स्वतः ही बढ़ जाती है।

❖ **भगवती प्रसाद मयगाई, रुद्र प्रयाग-गढ़वाल (उ.प्र.) से-** आपके पंचांग सामग्री के लिए सभी पाठक आभारी अवश्य होंगे। सम्पूर्ण सामग्री उपयोगी एवं ग्राह्य है। मनन करने योग्य है तथा जीवन में प्रत्येक स्तर पर सार्थक है।

❖ **श्री आनन्द प्रकाश प्रजापति-(मुरादाबाद) उत्तर प्रदेश से-** आर्यभट्ट पंचांग एक ज्योतिष की किताब है। साधारण पढ़ा-लिखा आदमी भी एक प्रकार का ज्योतिषी बन सकता है। "आर्यभट्ट पंचांग" जहाँ भी होता है वहाँ उजाला ही उजाला है। आर्यभट्ट पंचांग को छोड़कर बाकी मकड़ियों का जाला है।

❖ **अशोक कौशिक, सम्पादक आर्य जगत्, शाश्वत वाणी, विकासपुरी, नई दिल्ली से-** 'आर्यभट्ट पंचांग' वर्तमान में प्रचलित पंचांगं में अग्रणी है। आप द्वारा प्रकाशित होने पर 'स्वर्ण में सुहागा' का संयोग बन गया है।

❖ **डा. डी. एन. सक्सेना (आर.ए.एस., से नि.) जयपुर से-** आपका 'श्री आर्यभट्ट पंचांगम्' अति सुन्दर है। इसमें काफी सामग्री है।

❖ **पं. द्वारका प्रसाद पाटोदिया (एम.एं., एल.एल.बी., डिप मॉन्ट) किशनगढ़, अजमेर से-** अपने देश की अधिकांश जनता गरीब होने के कारण कम मूल्य का यह प्रामाणिक पंचांग अति शीघ्र ही लोकप्रिय हो जावेगा। व्रतोत्सव, त्योहार, पर्व आदि का प्रारम्भ में ही संकलित प्रकाशन का इस पंचांग में वैशिष्टय है।

❖ **डॉ. शिव कुमार मिश्र, 'मधुप', प्रो. एम.ए. संस्कृत-हिन्दी, गोल्ड मेडिल प्राप्त, साहित्याचार्य पी.एच.डी., इलाहाबाद से-** इस पंचांग में ज्ञातव्य प्रायः समस्त विषयों का सरल, सुगम भाषा में सर्वदोष मुक्त आंकलन किया गया है। यह शीघ्र ही लोकप्रिय होगा, ऐसी हमारी शुभाशंसा है।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५०६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६ ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना सन् १९८३ में हुई और भारत सरकार से इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्य काल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अन्तर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंसित किया तब हमारे देश वासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री राम कृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमरीका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका, ब्रिटेन, योरोप आदि देशों में घूम-घूम कर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदुपरान्त स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों सन्त महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलम्बन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थायें हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला कौशल तथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थानों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचे लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारणण उत्तर भारत में इस विद्या का सब से अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भण्डार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिये अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ **''शतक मार्त्तण्ड''** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता श्री आर्यभट्ट थे, जिनका जन्म ४७६ ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ ''आर्य भटीय'' कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यञ्जनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्ही महापुरुष के नाम पर **''आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र''** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार में सफल होंगे।

''शतक मार्त्तण्ड'' जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अ[illegible] विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने ''श्री आ[illegible] ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरम्भ किया। ज्योतिष [illegible] विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिये क्षमा प्रदान [illegible] सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में [illegible] परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

म. लेः

जनमत

"श्री आर्यभट्ट पंचांग" के सम्बन्ध में ज्योतिषाचार्यों, विद्वानों तथा ज्योषि प्रेमी सज्जनों के अनेकों पत्र पंचांग के सम्पादक, व्यवस्थापक, प्रकाशक तथा अनुसंधान केन्द्रों को प्राप्त हुए। हम उन सभी महानुभावों को उनके आशीर्वचनों, शुभकामनाओं, प्रशस्ति वाकयें तथा उपयोगी परामर्शों के लिए हार्दिक धन्यवाद समर्पित करते हैं। आपके अधिकांश सुझावों को हमने इस वर्ष के पंचांग में सम्मिलित कर दिया है और हमारा यह प्रयास रहेगा कि पाठकों के उपयोगी सुझावों को यथाशक्ति कार्यरूप में परिणित किया जाये। हमारे पास आए पत्रों के अंश आपकी सूचना के लिए हम यहां उद्धृत कर रहे हैं:—

❖ **डॉ. बी. एन. जोशी, जोशी औषधालय, सदर बाजार, रोपड़ (पं.) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग में देखा, उसकी सूक्ष्म गणित व सारगर्भित करते देख मन अति प्रसन्न हुआ। वास्तव में आप प्रशंसा व सम्मान के पात्र है।

❖ **के.सी. शर्मा, अनाज मंडी, शाहदरा, दिल्ली से-** यह पंचांग भी अति सूक्ष्म अति सुन्दर एवं अति आवश्यक है। मेरे विचार से यह लघु पंचांग भी जनता के लिए अति उपयोगी है।

❖ **श्री आनन्द प्रकाश, ग्राम कालेवाला, मुरादाबाद (उ.प्र.) से-** पंचांग की जो सामग्री है वह अत्यन्त प्रिय है। पंचांग दिवाकर का मुकाबला आपके इस आर्यभट्ट पंचांग ने ही किया है। हम तो यही कहेंगे कि भगवान् आपके इस कार्यक्षेत्र को और आगे बढ़ाए।

❖ **पं. लेखराज द्विवेदी, जोधपुर (राज.) से-** वास्तव में आर्यभट्ट पंचांग तारीफ के योग्य है। इसमें आपने सभी पूर्णताएं भर दी हैं। सभी तरह के वर्गों के लिए पंचांग संग्रहणीय है।

❖ **आचार्य हर्षवर्धन मधुर (प्रवक्ता), हिन्दी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय जांगला-शिमला से-** आप द्वारा रचित आर्यभट्ट पंचांग अध्ययन किया जो कि ज्योतिष कार्य के लिए विशेष लाभप्रद है।

❖ **शुभ कर्ण ज्योतिषी अरुण ज्योतिष कार्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली से-** ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपका श्री आर्यभट्ट पंचांग सदैव उन्नति करता रहे व इसी प्रकार सफलता अर्जित करे।

❖ **पं. पी. के. शर्मा व्याकरणाचार्य, संस्कृत-हिन्दी एम. ए. ज्योतिष, शास्त्री साहित्याचार्य, अलीगढ़ से-** आपका प्रयास सराहनीय है। आपने यह पंचांग गागर में सागर भरकर एक ऐसा दीपक प्रज्वलित किया है जैसे एक भानु की किरणें सर्वत्र प्रसारित कर सम्पूर्ण अंधकार मिटा दिया हो। अतः हमारी कामना यह है कि यह दीपक सदैव इस देश में प्रज्वलित रहे और अंधकार मिटता रहे।

❖ **कलानाथ शास्त्री, अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर, (राज.) से-** इस अत्यन्त्युपयोगी पंचांग के प्रकाशन के लिए आप बधाई के पात्र हैं।

❖ **राजेश कुमार कन्दोई, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली से-** सामान्य व विशिष्ट सभी प्रकार की सूचनाओं को समेटते हुए यह अनमोल पंचांग अनुपम ही है। सचमुच यह गागर में सागर कहा जा सकता है।

❖ **कमलचन्द भूरा, किशन नगर, गुवाहाटी (आसाम) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांगम् की अतुलनीय सामग्री ज्ञानवर्धक व नई-नई उपलब्धियों के लिए विशेष अनुकरणीय है। ज्योतिषीय जानकारी देने वाला विश्व में प्रथम शायद यही पंचांग है।

❖ **पं. बी. एस. शर्मा (ज्योतिष), मुराद अली लेन, लखनऊ से-** आर्यभट्ट पंचांग में अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं का समावेश है। जिससे इस पंचांग की महत्ता स्वतः ही बढ़ जाती है।

❖ **भगवती प्रसाद मयगाई, रुद्र प्रयाग-गढ़वाल (उ.प्र.) से-** आपके पंचांग सामग्री के लिए सभी पाठक आभारी अवश्य होंगे। सम्पूर्ण सामग्री उपयोगी एवं ग्राह्य है। मनन करने योग्य है तथा जीवन में प्रत्येक स्तर पर सार्थक है।

❖ **श्री आनन्द प्रकाश प्रजापति-(मुरादाबाद) उत्तर प्रदेश से-** आर्यभट्ट पंचांग एक ज्योतिष की किताब है। साधारण पढ़ा-लिखा आदमी भी एक प्रकार का ज्योतिषी बन सकता है। "आर्यभट्ट पंचांग" जहाँ भी होता है वहाँ उजाला ही उजाला है। आर्यभट्ट पंचांग को छोड़कर बाकी मकड़ियों का जाला है।

❖ **अशोक कौशिक, सम्पादक आर्य जगत्, शाश्वत वाणी, विकासपुरी, नई दिल्ली से-** 'आर्यभट्ट पंचांग' वर्तमान में प्रचलित पंचांगं में अग्रणी है। आप द्वारा प्रकाशित होने पर 'स्वर्ण में सुहागा' का संयोग बन गया है।

❖ **डा. डी. एन. सक्सेना (आर.ए.एस., से नि.) जयपुर से-** आपका 'श्री आर्यभट्ट पंचांगम्' अति सुन्दर है। इसमें काफी सामग्री है।

❖ **पं. द्वारका प्रसाद पाटोदिया (एम.ए., एल.एल.बी., डिप मॉन्ट) किशनगढ़, अजमेर से-** अपने देश की अधिकांश जनता गरीब होने के कारण कम मूल्य का यह प्रामाणिक पंचांग अति शीघ्र ही लोकप्रिय हो जावेगा। व्रतोत्सव, त्यौहार, पर्व आदि का प्रारम्भ में ही संकलित प्रकाशन का इस पंचांग में वैशिष्टय है।

❖ **डॉ. शिव कुमार मिश्र, 'मधुप', प्रो. एम.ए. संस्कृत-हिन्दी, गोल्ड मेडिल प्राप्त, साहित्याचार्य पी.एच.डी., इलाहाबाद से-** इस पंचांग में ज्ञातव्य प्रायः समस्त विषयों का सरल, सुगम भाषा में सर्वदोष मुक्त आंकलन किया गया है। यह शीघ्र ही लोकप्रिय होगा, ऐसी हमारी शुभाशंसा है।

प्रकाशक: धर्मसंघ प्रकाशन, २५०६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६ ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❖ **बालकृष्ण इन्दोरिया, चुरु, राजस्थान से-** 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' परिपूर्ण व विस्तृत पंचांग है। अतः सर्वोत्कृष्ट है। आप निरन्तर प्रगति कर सफल हों ऐसी कामना है।

❖ **प्रो. आचार्य चन्द्रहास शर्मा, शिक्षा शास्त्र विभागाध्य एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय प्रमुख, जीवन पार्क, पंखा रोड, नई दिल्ली से-** यह पंचांग साधारण व्यक्ति से लेकर विद्वत्समुदाय तक सभी के लिए उपादेय है। औषधि प्रयोग, तंत्र-मंत्र तथा फलादेश आदि व्यवहारिक जनजीवनोपयोगी प्रकरणों का सन्निवेश होने में सुहागे का काम करता है।

❖ **ब्रह्म ऋषि कश्मीरी लाल शास्त्री, संकीर्तनाचार्य, ज्योतिष रत्न, बस्ती गुंजा, जालन्धर से-** माँ वीणा पाणी की कृपा से श्री आर्यभट्ट पंचांग की ज्योतिष जगत में ज्योतिर्विदों ने प्रशंसा की है। भारत के हर प्रान्त में यह प्राप्त है।

❖ **डॉ. कुंज बिहारी तिवारी, ज्योतिष शिरोमणि, ज्योतिष भूषण, मानस रत्न, ज्यो. तीर्थ पर्यावरण मनीषि, महाराजपुर (म.प्र.) से-** यह पंचांग अपने आप में परिपूर्ण है, साथ ही सुगंधित पुष्पों की एक माला है, जिसमें भांति-भांति की गुंथे हुए सुगंधित पुष्प अनूठे हैं, जो अपनी सुगंध से इस देश को ही नहीं विश्व को सुगंधित करेंगे।

❖ **बी.पी. उपाध्याय, टीचर्सकॉलोनी, उदयपुर, राजस्थान से-** आपके द्वारा प्रकाशित 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' अत्यन्त ही उपयोगी पंचांग है। इसकी जितनी भी प्रशंसा करेंगे कम ही होगी। इतनी मूल्यवान सामग्री देकर तथा कम मूल्य लेकर आप ज्योतिषी की महान सेवा कर रहे हैं।

❖ **डॉ. सत्येन्द्र सर्राफ, लक्ष्मीपुरा, सागर (म.प्र.) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग में संकलित सामग्री। तालिकाएं ज्योतिष कर्मियों के लिए निरन्तर उपयोगी है। सर्वजनोपयोगी सामग्री जैसे व्रत-पर्व-त्यौहारादि का संकलन इसे सामान्य पाठक, गृहस्थ को भी उपयोगी बना देता है, जहाँ मासिक राशि-फलादेश उनके आकर्षण का विषय बनता है।

❖ **प्रो. जवाहर मुथा, सम्पादक एवं अध्यक्ष ज्योतिष पत्रिका, नवीं पेठ, अहमद नगर से-** यह कहने में भी सानंद हर्ष होता है कि आर्यभट्ट पंचांग सर्वांग सुन्दर और पूर्णरूपेण है। भारत की सभी भाषाओं में इसका अनुवाद होना चाहिए, ऐसा हम समझते हैं। यह पंचांग गणित में अत्यंत शुद्ध होने के कारण विश्वसनीय एवं लोकोपयोगी है।

❖ **सुरेश चन्द्र तिवारी, भीमगोडा-हरिद्वार (उ.प्र.) से-** पंचांग में अत्यधिक सामग्री एवं जानकारी होने से लगभग सब प्रकार की शंकाओं का समाधान आपके प्रकाश व मंडल एवं विद्वानों द्वारा किया गया जिससे मन प्रसन्न हो उठा।

❖ **श्री जितेन्द्र जोशी, ज्योतिष, दहिसर (पश्चिम.) मुंबई से-** पंचांग बहुत उपयोगी रहेगा, सब चीजें इसमें उपलब्ध हैं।

❖ **S.Mathu Ratnam From BEML Layout, Bangalore-** We are very much impressed by your Panchang which also includ monthly forecasts for different Rashi.

❖ **पं. श्यामनन्दन मिश्र, ज्योतिष सा. आचार्य), अजमेर विश्वविद्यालय से-** आपने आधुनिक प्रकार में पंचांग विषयों का समावेश करते हुए जनता जनार्दन को शास्त्रोचित दिशा निर्देश देने का प्रयास किया है। एतदर्थ मेरी हार्दिक शुभ कामना है।

❖ **अचलेश्वर त्रिपाठी, साहित्य शास्त्री, ब्यावर (राज.) से-** पंचांग में आपने अनेक ज्योतिष के लिए ज्ञानवर्द्धन तथा सरलीकरण का प्रयास किया है। ज्योतिष अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त करते हुए सफल व कारगर जीवन में हो सकते हैं।

❖ **प्रो. आर. सी. दिवाकर (एम.ए.बी. एस. सी) गणित, ज्योतिष, हस्त रेखा विशेषज्ञ तथा तान्त्रिक, ब्यावर राज. से-** आपका पंचांग पढ़ने के बाद मुझे अब अन्य पंचांगों की आवश्यकता मालूम नहीं पड़ती है।

❖ **चिन्तामणि रा. केलकर, बासगांव, गोवा से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही उपयुक्त है, इसमें कोई शंका नहीं।

❖ **रोशन लाल दुकानदार, शिमला से-** पंचांग बहुत ही उपयोगी है। क्योंकि इसकी भाषा शैली आधुनिक तथा सरल है।

❖ **पं. नन्दकुमार जमुनाधर त्रिपाठी, ज्योतिष साहित्य आयुर्वेद विशारद, संस्कृत प्रथमा, संगीत, सत्यनारायण कथा वाचक, जलगाँव, महाराष्ट्र से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग आदि से अंत तक देखा तो पाया कि पंचांग परिपूर्ण है। सू.उ. सारणी, अंक विचार, लग्न विचार, सू.उ. परिवर्तन पद्धति, यंत्र-मंत्र-तंत्र साधना, रत्नों का प्रभाव, उपयोगी विषयों का समालोचन कर समावेश किया है।

❖ **पं. शान्ता प्रसाद पाराशर, एम.ए. साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति, ग्वालियर, म.प्र. से-** पंचांग का गणित एवं विस्तृत कलेवर निश्चय ही श्रेष्ठ एवं सराहनीय है।

❖ **परमानन्द शास्त्री, राजस्थान संस्कृत विद्यालय, तारानगर चुरू से-** आप लोगों ने आर्यभट्ट की विस्मृति को फिर स्मरण करा कर अनुकरणीय कार्य किया है तथा कुछ अहंकारू पंचांगकारों की मूर्खता को भी उजागर किया है।

❖ **पं. प्रेमसुख ओझा, शास्त्री, एम.ए. संस्कृत, बी.एड., तारानगर, चुरु, राजस्थान से-** पंचांग की सामग्री बहुत ही उपयुक्त एवं लाभदायक है। आपका प्रयास सराहनीय है। गागर में सागर भरने का प्रयास है।

❖ **सुजानमल जैन ज्योंतिष, अर्थ टू स्टार ज्योंतिष एवं शिक्षा केन्द्र, बियाबानी, इन्दौर (म.प्र.) से-** पंचांग अवलोकन के बाद हमें कोई त्रुटी नहीं लगी तथा साथ ही-टू-इन-वन तथा कीमत भी दूसरे पंचांगों के मुकाबले कम है।

❖ **मधुकर गोविंद हुपरीकर-ज्योतिर्विद्या भूषण, कोल्हापुर से-** पंचांग का अभ्यास किया, इसमें जो जानकारी है बहुत ही उपयुक्त है। इसका गणित विभाग अत्यंत शुद्ध है। जानकारी उपयोगी तथा सरल है।

❖ **मधुकर मुकंदराव हिरे-इंजीनियर, ज्यों. विशारद, बांदे पूर्व, मुंबई से-** आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही शास्त्र शुद्ध जानकारी देता है। कृपया मेरी शुभ[illegible] स्वीकार करें।

प्रकाशक: धर्म[illegible] प्रकाशन, [illegible] नई सड़क, दिल्ली-[illegible] फोन [illegible], ३-८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❖ **अरुण सदाशिव जोशी-ज्यो.भास्कर, नासिक, महाराष्ट्र से**-ज्योतिष शास्त्र और पंचांग के साहित्य में आपके प्रयास सराहनीय हैं। अक्षांशादि सारणी का उपयोग तथा ज्योतिर्विदों को बहुत होगा। सर्वदृष्टि से आपका पंचांग बहुत अच्छा है। इस काम में आपको सफलता मिले, यही भगवान से प्रार्थना करता हूँ।

❖ **एम.एम.श्रीवास्तव, भवेश ज्यों अनुसंधान केन्द्र, भोपाल (म.प्र.) से**-पंचांग की छपाई और इसमें दी गई जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है।

❖ **डॉ. बी. शामसखा-डायरेक्टर, मोतीबाग, नई दिल्ली से**-अपने दैनिक कार्यों में उपयोग के लिए मुझे ऐसे ही संक्षिप्त पंचांग की खोज थी। इस उपयोगी सुन्दर, संक्षिप्त और जानकारी पूर्ण पंचांग के प्रकाशन के लिए बधाई।

❖ **वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक, प्रधान सम्पादक (अवैतनिक) वेदांग ज्योति एवं श्री सालासर पंचांग मेड़ता सिटी नागौर से**-श्री आर्यभट्ट पंचांग गागर में सागर युक्त अतुलित ज्योतिषी सामग्री की जानकारी देने वाला विश्व में प्रथम पंचांग दृष्टिगोचर हुआ। इसकी प्रशंसा एवं उपादेयता स्वत: उजागर होती है।

❖ **संतोष राम (हस्त रेखा विशेषज्ञ) मॉडल टाउन, दिल्ली से**-आपका पंचांग भारतीय ज्योतिष विद्या की प्राचीन परंपरा को बनाए रखने का सराहनीय प्रयास है। पंचांग के प्रकाशन हेतु कोटि-कोटि सधन्यवाद।

❖ **रामजीलाल शर्मा, रतलाम (म.प्र.) से**-आपके द्वारा निर्मित पंचांग देखा व काम में लिया आपका प्रयास व साहित्य सराहनीय है।

❖ **पं. गिरि मोहन गुरु-गोस्वामी सेवाश्रम-होशंगाबाद (म.प्र.) से**-पंडितों के हितार्थ अनेक अन्य सामग्री देकर गागर में सागर वाली उक्ति चरितार्थ कर दी है।

❖ **निशिकान्त जोशी (ज्यो. शास्त्री), ठाणा (महाराष्ट्र) से**-आपका पंचांग आम जनता तथा ज्योतिष के लिए कुंडली बनाने के लिए भी उपयुक्त है। पंचांग चन्द्र-सूर्य की तरह पृथ्वी पर चमकता रहे यही हमारी शुभ कामना है।

❖ **डॉ. राजकुमार रत्नप्रिय, सम्या.-कॉस्मो इण्डिया-कानपुर से**-अधिकाधिक विषयों का श्रेष्ठ समायोजन निश्चय ही पंचांग को सर्वोपयोगी और लोकप्रिय बनाता व इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरी शुभ कमनाएं।

❖ **किशन लाल उपाध्याय शास्त्री, मन्थन ज्यो. कार्यालय, चुरू (राज.) से**-यह पंचांग वर्ष की अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति होती है। विस्तृत क्रमबद्ध होड़ाचक्र इसी पंचांग की अतुलनीय विशिष्ट विशेषताएं है।

❖ **डॉ.भालचन्द्र शंकर शास्त्री (ज्योतिषाचार्य, ज्यो. अलंकार, ज्यो. तीर्थ, राज ज्यो. म.प्र. शासन, लश्कर ग्वालियर से**-पंचांग ज्योतिष के लिए परमोपयोगी है। छपाई अति सुन्दर, स्वच्छ एवं स्पष्ट होने से बाल-वृद्ध मानवों को पठनीय है। मुख्य-मुख्य सभी विषय इस पंचांग में आपने भर दिए हैं। जैसे गागर में सागर।

❖ **पं. चन्द्रिका प्रसाद वाजपेयी-भोपाल, मध्य प्रदेश से**-आर्यभट्ट पंचाग के अतिरिक्त ग्रहों की स्थिति, मुहूर्त की शुद्धता, ज्यो. संबंधी विविध जानकारी का संग्रह यहाँ उपलब्ध अन्य पंचांगों में नहीं मिलता है।

❖ **प्रकाश नाथ चौहान (तंत्र ज्योतिषाचार्य साहित्य कला सरस्वती प्राच्य विद्या महामहोपाध्याय तांत्रिक मार्तण्ड आदि उपाधि से विभूषित तथा रजत एवं स्वर्ण पदक से सम्मानित, ब्यावर (अजमेर) राज. से**-'श्री आर्यभट्ट पंचांग' में ज्योतिष विषयक भव्य सामग्री देखकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो गागर में सागर भरने का प्रयास किया गया है। पंचांग का आलोक विश्व के कोने-कोने में प्रसारित हो यह मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

❖ **पं. शिवचरण लाल शर्मा, ज्यो. कुम्भराजज-गुना (म.प्र.) से**-यह पंचांग निर्माणात्मक प्रवृत्तियों का प्रतिपादन करते हुए भारत की समस्याओं का समाधान व उत्थान का काम करेगा। आपके इस प्रयास के लिए शुभकामनाएँ।

❖ **लक्ष्मीचन्द्र गुप्ता (तांत्रिक एवं पत्रकार, बी.ए. विद्यारत्न, ज्यो. तन्त्र मार्तण्ड, बी.ए. एम.एस. (कल). आयुर्वेद रत्न (प्रयाग), फार्मासिस्ट एवं परामर्शदाता चिकित्सक), पीलीभीत (उ. प्र.) से**-पंचांग कुछ नवीनताएं लिए हुए हैं जो अन्यों में नहीं मिलती जैसे ग्रहों का भावानुसार, गोचर फल, वर्ष फल, जन्म कुण्डली फल (पु. स्त्री का इसके अतिरिक्त इसकी पाठ्य सामग्री व सारणियां भी कम उपयोगी नहीं है।

❖ **भालचन्द म. लेम्भ, एम.ए. (साहित्य विशारद (मराठी), रा.भा. रत्न, शनिवार पेढ, पुणे से**-दैनंदिनी घरेलू जीवन में जितनी बातों की आवश्यकता होती है उन सभी का इस पंचांग में अंतर्भाव किया है। ज्योतिष के लिए तो यह अत्यंत उपयुक्त है।

❖ **इन्दरमल चौधरी (ज्यो. भूषण, ज्यो. मनीषी, ज्यो. मार्तण्ड, ज्यो. दिवाकर, जो. श्री, दैवज्ञ श्री उपाधियां एवं रजत पदक प्राप्त), समया. एवं प्रकाशक, 'ज्यो.रत्न' पत्रिका, सादड़ी-राजसमन्द (राज.) से**-आर्यभट्ट पंचांग की गणित शुद्ध है, सारगर्भित विषय वस्तु ज्योतिष प्रेमियों के लिए सुबोध है। पंचांग का प्रारूप तैयार करने में आपका श्रम सराहनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका पंचांग देश में प्रथम स्तर का पंचांग साबित होकर ज्योतिष जगत में अक्षम ख्याति प्राप्त करेगा।

❖ **कपिल देव मिश्र (साहित्य रत्न, भा. रत्न, फेस रीडर, ज्योतिर्विद, मंत्र-तंत्र-यज्ञ विशेषज्ञ), कुलावा, मुंबई से**-भारत के कर्मकाण्ड एवं ज्योतिषियों के लिए यह पंचांग सहायक ही नहीं पूर्णरूप से मार्गदर्शन करने वाला है। इसका एक-एक पृष्ठ ज्यो. जगत के लिए वरदान साबित होगा।

❖ **महर्षि पं. मदन मोहन एस. जोशी (स्वर्ण पदक से विभूषित, ज्योतिषाचार्य, रमलाचार्य)** -श्री आर्यभट्ट पंचांग में सूक्ष्म गणित वास्तव में ज्योतिषियों के गणित भाव हेतु पूर्ण लाभप्रद साबित हो रहा है। ❑

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'बृहत् जातक' की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने 'आर्यभटीय' ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय से ही मिलता है, यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरम्भ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रहनक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धान्त, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरूप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा, सिद्धान्त, गणित, संहिता, मुहूर्त, फलित, प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरन्तर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अन्दर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्रचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थायें थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम-से-कम २८००० वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष-शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् ४७६ में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आर्यभटीय' में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि ४९६७ योजन बताई है, सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णों को एक-एक संख्या-वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया; जैसे-पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८ इसी प्रकार क्रम से म = २५, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = ९०, ह = 100; क = एक, कि = सौ, कु = दस हजार, कृ = दस लाख, कॄ = दस करोड़, के = दस अरब, कै = दस खरब, को = दस नील, कौ = दस शंख, इसी प्रकार ख = दो, खि = दो सौ, खु = बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'आर्यभटीय' की रचना प्राचीन कुसुमपुर में (जो आज का पटना नगर है) रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि ९९८ ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल ११९४ ई. के पहले का है। इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' है। इसमें १८ अध्याय हैं, जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीज गणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान् विद्वान थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बताये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध व आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष-प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त

आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना श्री धर्मपाल जी अग्रवाल के विशेष परिश्रम तथा सहयोग से ही सम्भव हो सकी है। श्री धर्मपाल जी मै. धर्मसन प्रकाशन के वरिष्ठ भागीदार हैं। धर्मसन प्रकाशन गत २०-२२ वर्षों से कतिपय श्रेष्ठ पंचांगों का उच्चस्तर का प्रकाशन करता आ रहा है। विभाजन से पूर्व लाहौर में इनके पूज्य पिताजी की प्रकाशन संस्था मै. मेहरचन्द एण्ड सन्स भी तत्कालीन उच्च-कोटि के हिन्दी, श्री विश्व मार्तण्ड पंचांग तथा उर्दू मेहर आलम आदि जन्त्रियों के प्रकाशक थे। पैतृक व्यवसाय होने के कारण पंचांग प्रकाशन कार्य इनको रक्त में ही उत्तराधिकार स्वरूप मिला। आप अब तक ५० वर्ष का व्यक्तिगत अनुभव भी अर्जित कर चुके हैं।

श्री मार्तण्ड परिवार के उर्दू, पंजाबी, हिन्दी भाषा में प्रकाशित श्री मार्तण्ड आलम जन्त्री (मेहर आलम जन्त्री), शिरोमणि तिथि प्रत्रिका और श्री बटुक पंचांग आदि विभाजन पूर्व श्री मेहरचन्द एण्ड सन्स लाहौर के द्वारा प्रकाशित होते रहे हैं। और आजकल सं. २०४२ से धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं। उपरोक्त पंचांग व जन्त्रियों के प्रकाशन स्तर में गत ४ वर्षों में ही अभूतपूर्व प्रगति हुई है। सं. २०३३ से श्री विश्वविजय पंचाग का प्रकाशन भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा आरम्भ किया गया और सं. २०४१ तक यह पंचांग इसी प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित किया जाता रहा। इन वर्षों में इस पंचांग की लोक प्रियता में जो गुणात्मक वृद्धि हुई उसका श्रेय अधिकांश में इसकी सुचारू प्रकाशन व्यवस्था को ही है। धर्मसन प्रकाशन इस वर्ष से (श्री प्रेमपाल कौशिक जी का) राजधानी पंचांग भी प्रकाशित कर रहा है, गत ४-५ वर्षों से पं. जीयालाल जी के असली पंचांग तथा मशहूर आम जन्त्री हिन्दी, उर्दू और सं. २०३६ (सन् १९७९) से लाहौर के प्रसिद्धि पं. देवीदयाल जी के पंचांग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री हिन्दी, उर्दू प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा उत्तरी भारत के अधिकांश प्रमुख पंचांग भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होते हैं।

आजकल पंचांग तो काफी संख्या में प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु अच्छे स्तर के पंचांगों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। इनमें भी दिल्ली के अक्षांश पर आधारित पंचांग तो एकाध ही हैं। कुछ समय पहिले तक ज्योतिष के शास्त्रोक्त ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध थे और भाषा टीका सहित पुस्तकों की भाषा भी संस्कृत निष्ठ कठिन भाषा ही रहती थी। अभी गत कुछ वर्षों से ज्योतिष शास्त्र पर हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ हुआ है। जिनके द्वारा सर्वसाधारण में भी ज्योतिष के गूढ़ तत्वों के ज्ञान का प्रचार हुआ है। परन्तु अधिकांश पंचांगों में अभी तक बहुत से विषयों की जानकारी केवल संस्कृत भाषा में अथवा संस्कृत निष्ठ क्लिष्ठ हिन्दी में दी जाती है। इस कारण हिन्दी जानने वाले ज्योतिष प्रेमीजन तो उसे समझ ही नहीं पाते, बहुत से पंडित और ज्योतिषी भी कठिनाई का अनुभव करते हैं। संस्कृत देवभाषा है और हमारा बहुत सा ज्ञान भण्डार इस भाषा में संचित है इसमें कोई भी संदेह नहीं। परन्तु खेद है कि इस भाषा को पढ़ने व जानने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन संचित ज्ञान भण्डार को सरल सुबोध भाषा में वर्तमान परिपेक्ष्य में हिन्दी भाषी जनता को उपलब्ध कराया जाय। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन आरम्भ किया गया है।

इस पंचांग के सम्पादक पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न ज्योतिष वाचस्पति की ज्योतिष प्रथमा, गणित ज्योतिष प्रथमा गणित, फलित, अंक ज्योतिष, हाथ की रेखाएं, स्वरोदय शिक्षा, राजयोग शिक्षा, मंत्र-तन्त्र साधना और तंत्र विद्या नाम से पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सौ साल के पंचांग **'शतक मार्तण्ड'** का सम्पादन भी किया है। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों ने उनकी सरल सुबोध भाषा तथा विषय प्रतिपादन शैली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। इस पंचांग के पाठकों को उनके अध्ययन अनुभव भाषा व शैली का दिग्दर्शन स्थान-२ पर प्राप्त होगा।

श्री आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन कार्य श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र के अन्तर्गत प्रकाशन कार्य के अनुभवी श्री धर्मपाल जी के निर्देशन में ही किया गया है। आशा है ज्योतिष प्रेमी सज्जन इसके मुद्रण औ साज सज्जा को सन्तोष जनक पायेंगे। हमारा प्रयास रहेगा कि आगामी वर्षों में और भी अधिक उपयोगी सामग्री सम्मिलित करें और पंचांग का स्तर उत्तरोत्तर उत्तम बनाया जाये। इस विषय में आपके सुझाव आमन्त्रित हैं। पंचांग का अभी शैशव काल है। त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। आशा है विद्वज्जन त्रुटियों को क्षमा करते हुए इन्हें प्रोत्साहित करेंगे ताकि ज्योतिष प्रेमी जनता की वृहत्तर सेवा कर सकें।

आर.एन. पाण्डे
दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत त्यौहारादि सं. २०५६ विक्रमी, शाके १९२१, सन् १९९९-२०००ई.

गुड़ी पड़वा, नववर्ष प्रा., गौतम ज.	१८मार्च
नवरात्र प्रारम्भ, चेटी चंड	१८ "
श्री झूलेलाल जयंती	१९ "
मत्स्य जयंती, गणगौर पूजा	२० "
सौभाग्य तृतीया व्रत	२० "
हयव्रत पंचमी	२२ "
स्कन्द षष्ठी, मेला माईसरखाना	२३ "
दुर्गा ८, मेला मनसा देवी	२४ "
बुधाष्टमी, अन्नपूर्णा पूजा	२४ "
श्री रामजन्मोत्सव व्रत	२५ "
कामदा एकादशी व्रत	२७-२८ "
हरिदमनोत्सव, हज्ज	२८ "
सोम प्रदोष, महावीर जयंती	२९ "
ईद-उल जुहा (बकरीद)	२९ "
दमनक १४, मे देवबन्द (उ.प्र.)	३० "
चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती	३१ "
सत्यव्रत, वैशाख स्नान प्रा.	३१ "
बैंकों की वार्षिक लेखाबन्दी	१ अप्रै.
गुडफ्राईडे	२ "
विश्व स्वास्थ्य दिवस	७ "
शीतलाष्टमी	९ "
बरूथिनी ११ व्रत	१२ "
श्री वल्लभाचार्य जयंती	१२ "
भौम प्रदोष व्रत	१३ "
मेषादि वैशाखी (पं.)	१४ "
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४ "
विषुविधु, विशु, वैशाखादि	१५ "
श्री शुकदेव ज., मे. पंजोर	१६ "
देव दामोदर तिथि	१६ "
छत्रपति शिवाजी जयंती	१७ "
अक्षय तृतीया, भातंगी जयंती	१८ "
श्री परशुराम जयंती	१८ "
वैनायक ४ व्रत	१९ "
आद्य शंकराचार्य जयंती	२० "
श्री सूरदास जयंती	२० "
श्री रामानुजाचार्य जयंती	२१ "
गंगा सप्तमी पूजन	२२ "
श्री दुर्गा ८, बगलामुखी जयंती	२३ "
श्री जानकी जयंती	२४ "
मोहिनी एकादशी व्रत	२६ "
भौम प्रदोष, राधा द्वादशी	२७ "
परशुराम १२, मुहर्रम (ताजिया)	२७ "
श्री नृसिंह जयंती	२८ "
छिन्नमस्ता ज., गु. अमरदास ज.	२९ "

बुद्ध पूर्णिमा, कूर्म जयंती	३० अप्रै.
सत्यव्रत, वैशाख स्नान पूर्ति	३० "
श्री नारद जयंती, मजदूर दिवस	१ मई
श्री मां आनन्दमयी जयंती	३ "
श्री टैगोर जयंती	७ "
कालाष्टमी	८ "
मेला चनानी माताजी	९ "
अपरा एकादशी व्रत	११-१२ "
प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारंभ	१३ "
भानुका अमा., बड़ पूजन	१५ "
वट सावित्री व्रत समा., शनि ज.	१५ "
अधिक (पुरुषोत्तम) मास प्रा.	१६ "
गंगा दशहरा मेला हरिद्वार	२४ "
कमला ११ व्रत	२५ "
प्रदोष, पं. जवाहरलाल पुण्य तिथि	२७ "
सत्यव्रत	२९ "
विश्व पर्यावरण दिवस, चेहलम	५ जून
कमला ११ व्रत	१० "
प्रदोष व्रत	११ "
अधिक (पुरुषोत्तम) मास समा.	१३ "
पितृकार्य अमा., शहादते इ. हसन	१३ "
करवीर व्रत	१४ "
रम्भा तृतीया व्रत	१५ "
श्री प्रताप जय., मे. हल्दी घाटी	१६ "
श्रुति पंचमी (जैन)	१८ "
अरण्य ६, विन्ध्यवासिनी पूजा	१९ "
भानु सप्तमी	२० "
श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती	२१ "
श्री माहेश्वरी नवमी	२२ "
बटुक भैरव जयंती	२३ "
निर्जला ११ व्रत	२४ "
चम्पक द्वादशी	२५ "
शनि प्र., वटसावित्री व्रत प्रा. गुज.	२६ "
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	२७ "
कबीर जयंती, ज्येष्ठी पूर्णिमा	२८ "
वटसावित्री व्रत पूर्ण (गुजरात)	२८ "
गुरु हर गोबिन्द सिंह जयंती	२९ "
योगिनी ११ व्रत	९ जुलाई
शनि प्रदोष व्रत	१० "
देवकार्यामावस्या	१३ "
श्री जगदीश रथयात्रा (उड़ीसा)	१४ "
मनसा पूजा (बंगाल में) प्रा.	१७ "
स्कन्द पंचमी	१७ "
कुमार षष्ठी व्रत	१८ "

विवस्त सप्तमी	१९ जुलाई
दुर्गा ८, खरसी पूजा (त्रिपुरा)	२० "
भड्डली ९, मे. शरीफ भवानी	२१ "
बहुधा यात्रा, गिरिजा पूजा	२२ "
तिलक जयंती	२३ "
देवशयनी ११ व्रत	२४ "
प्रदोष व्रत, ग्यारहवीं शरीफ	२५ "
जया पार्वती व्रत प्रा.	२६ "
चौमासी चौदश	२७ "
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	२८ "
तिलक पुण्य दिवस	१ अग.
नाग पंचमी (बंगाल व मरु.)	२ "
केर पूजा (त्रिपुरा)	३ "
कामदा ११ व्रत	७-८ "
प्रदोष व्रत	९ "
हरियाली अमा., सरस माधुरी ज.	११ "
नक्त व्रत प्रारंभ	१२ "
मधुश्रवा तीज, हरियाली तीज	१४ "
वरद् ४ व्रत, स्वतंत्रता दिवस	१५ "
नाग पंचमी देशाचारे	१६ "
मनसा पूजा समाप्त (बंगाल)	१७ "
गो. तुलसीदास जयंती	१८ "
दुर्गा ८, मे. चिन्तपूर्णी, नयना देवी	१९ "
पुत्रदा ११ व्रत, झूलन यात्रारम्भ	२३-२४ "
भौम प्रदोष व्रत	२४ "
ओणम (केरल)	२५ "
श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन	२६ "
झूलन यात्रा समाप्त	२६ "
अमरनाथ दर्शन, संस्कृत दिवस	२६ "
कज्जली ३, सातूड़ी तीज	२९ "
बहुला ४ व्रत	३० "
रक्षा पंचमी, चन्द्र षष्ठी व्रत	३१ "
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त	२ सितं.
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव	३ "
गोगा नवमी, नन्दोत्सव	४ "
शिक्षक दिवस	५ "
अजा ११ व्रत	६ "
भौम प्रदोष व्रत, बोछ बारस	७ "
जैन पर्युषण प्रा., वत्स द्वादशी	७ "
अघोरा १४ व्रत, विश्व साक्षरता दि.	८ "
पिठौरी अमा., देवपितृ अमावस्या	९ "
मेला सुथरेशाह दिल्ली	९ "
नक्त व्रत समाप्त, वीर जन्मोत्सव	१० "
मेला रणीचा (जैसलमेर)	११ "

भूदान जयंती	११ सितं.
हरितालिका ३ व्रत, वराह जयंती	१२ "
गणेश जन्मोत्सव, पत्थर ४ व्रत	१३ "
ऋषि पंचमी, सम्वत्सरी जैन	१४ "
इन्जीनियर्स दिवस	१५ "
सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ	१६ "
मुक्ताभरण, सन्तान सप्तमी	१७ "
विश्वकर्मा पू., महालक्ष्मी व्रतारंभ	१७ "
श्री राधाष्टमी, दधीचि जयंती	१८ "
श्री चन्द्रनवमी (उदासीन सम्प्र.)	१९ "
मेला रामदेव (जैसलमेर)	२० "
पद्मा ११ व्रत, ढोल ग्यारस-म.प्र.	२१ "
जलझूलनी मेला चार भुजानाथ	२१ "
वामन जयंती, श्री भुवनेश्वरी ज.	२२ "
प्रदोष व्रत, गोवि रात्रि व्रतारंभ	२३ "
अनन्त १४ व्रत, चान्द्र पूर्णिमा	२४ "
सत्य व्रत, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा	२५ "
अर्द्धवार्षिकी लेखाबन्दी	३० "
श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त	१ अक्टू.
महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	२ "
मातृ नवमी	३ "
इन्दिरा ११ व्रत	५ "
सर्वपितृ अमावस्या व श्राद्ध	९ "
शरद् नवरात्र प्रा., अग्रसेन जयंती	१० "
उपांग ललिता पंचमी व्रत	१४ "
सरस्वती आवाहन, दुर्गा पूजा प्रा.	१६ "
श्री महाष्टमी व्रत पू., महानवमी	१८ "
विजया दशमी, मेला दशहरा	१९ "
नवरात्र समाप्त, सरस्वती विसर्जन	१९ "
श्री माधवाचार्य ज., भरत मिलाप	२० "
पापांकुशा ११ व्रत	२१ "
प्रदोष व्रत	२२ "
शरद् पूर्णिमा, कोजागरी व्रत	२४ "
बाल्मीकि ज., कार्तिक स्नान प्रा.	२४ "
जन्म दिन हजरत अली	२४ "
करक चतुर्थी व्रत	२७ "
पद्म प्रभु जयंती (जैन)	२९ "
अहोई अष्टमी	३१ "
स. पटेल ज., इन्दिरा गांधी पु.दि.	३१ "
रमा एकादशी व्रत स्मा.-वै.	३ नवं.
गोवत्स द्वादशी पूजन	४ "
प्रदोष, धन त्रयोदशी	५ "
नरक चतुर्दशी, रूप १४	६ "
दीपावली, लक्ष्मी पूजन	७ "

सोमवती अमावस्या, अन्नकूट	८ नवं.
गोवर्धन पूजन	८ "
भैया दूज, विश्वकर्मा जयंती	१० "
पांडव ज्ञान पंचमी, सौभाग्य ५	१३ "
सूर्य ६ व्रत, डाला छठ (बिहार)	१४ "
बाल दिवस मेला दिल्ली	१४ "
गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी	१६ "
आंवला नवमी, कुष्माण्ड नवमी	१७ "
लाजपतराय पुण्य दिवस	१७ "
देव प्रबोधिनी ११ व्रत	१९ "
इन्दिरागांधी जन्म दि., एकता दि.	१९ "
कालीदास जयंती	२० "
प्रदोष, वैकुण्ठ १४ व्रत	२१ "
सत्यव्रत, चौमासी चौदश	२२ "
कार्तिकी १५, गुरुनानक जयंती	२३ "
कार्तिक स्नान पूर्ति, शबे-ए-बरात	२३ "
देव दिवाली, मेला पुष्कर	२३ "
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	२५ "
सुविधानाथ जयंती, दीक्षा दिवस	२७ "
श्री महाकाल भैरवाष्टमी	२९ "
उत्पत्ति ११ व्रत	३ दिसं.
प्रदोष, संत ज्ञानेश्वर पुण्य दिवस	५ "
देवपितृकार्याऽमावस्या, झंडा दि.	७ "
गु. तेगबहादुर बलिदान दिवस	१३ "
स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी	१४ "
मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जय.	१५ "
महानन्दा नवमी	१७ "
मोक्षदा ११ व्रत, मौनी एकादशी	१९ "
सोम प्रदोष, अखण्ड द्वादशी	२० "
श्री दत्तात्रेय जय., अन्नपूर्णा जय.	२२ "
सत्यव्रत, शिशिर ऋतु प्रा.	२२ "
क्रिसमस डे (बड़ा दिन)	२५ "
कालाष्टमी	२९ "
शहादते हजरत अली	३० "
नववर्ष की पूर्व संध्या	३१ "
सन् २००० ई.	
ई. नववर्ष प्रा., नववर्ष अभिनन्दन	१ जन.
श्री पार्श्वनाथ जयंती	१ "
सफला एकादशी व्रत	२ "
प्रदोष, चन्द्रप्रभु जयंती (जैन)	४ "
शबे-ए-कदर	५ "
देवपितृकार्या अमावस्या	६ "
वकुला अमावस्या (उड़ीसा)	६ "
जुमातुल विदा	७ "
इदुलफितर (ईद)	९ "
लोहड़ी उत्सव (पंजाब)	१३ "

गु. गोविन्द सिंह ज, मकर संक्रांति	१४ जन.
संक्रांति पुण्यकाल, पौंगल पर्व	१५ "
शाम्ब दशमी, रवि दशमी	१६ "
पुत्रदा ११ व्रत स्मार्त, वैष्णव	१७ "
चान्द्र पूर्णिमा, सत्यव्रत	२० "
पौषी पूर्णिमा, शाकम्भरी ज.	२१ "
माघ स्नान प्रा.	२१ "
सुभाष चन्द्र बोस जयंती	२३ "
संकष्ट गणेश ४ व्रत	२४ "
भारतीय गणतन्त्र दिवस	२६ "
स्वा. विवेकानन्द, रामानन्दाचार्य ज.	२७ "
लाला लाजपतराय जयंती	२८ "
स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती	३० "
महात्मा गांधी पुण्य दिवस	३० "
षट्तिला एकादशी व्रत	१ फर.
श्री शीतलनाथ जयंती	२ "
दस्तकार दिवस	२ "
मेरु त्रयोदशी (जैन)	३ "
मौनी अमावस्या	५ "
बसन्त पंचमी, सरस्वती पूजन	१० "
आरोग्य ७, रथ ७	१२ "
महानन्दा नवमी	१४ "
जया एकादशी व्रत	१५-१६ "
भीष्म द्वादशी	१६ "
डेजर्ट उत्सव, गु. हरराय जयंती	१७ "
जितेन्द्र रथयात्रा	१८ "
माघी पूर्णिमा, गु. रविदास जयंती	१९ "
सत्यव्रत, माघ स्नान समाप्त	१९ "
श्री जानकी जयंती, कालाष्टमी	२७ "
गुरु रामदास जयंती	२८ "
विजया ११ व्रत	१-२ मार्च
प्रदोष व्रत	३ "
महाशिवरात्रि व्रत	४-५ "
सोमवती अमावस्या	६ "
फुलरिया २, महिला दिवस	८ "
रामकृष्ण परमहंस जयंती	८ "
दुर्गा ८, अन्नपूर्णा ८	१३ "
आमला ११ व्रत, हज्ज	१६ "
प्रदोष व्रत, गोविन्द १२, बकरीद	१७ "
होली, सत्यव्रत, चान्द्र पूर्जिमा	१९ "
धुलण्डी, चैतन्य महाप्रभु जयंती	२० "
भाई २, संत तुकाराम जयंती	२२ "
शीतला पूजन, शीतला ७	२७ "
पापमोचनी ११ व्रत	३१ "
प्रदोष, वारुणी पर्व योग	२ अप्रै.
चान्द्र सम्वत्सर समाप्त	४ "

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्रकाशक: ए. सेन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ फो. ३२६४९८६, ३२८८२३४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
प्रकाशक: ग्रंथ प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८१, ३२८५२३४

इस्लामी त्यौ., महापुरुष जयंतियां, मेले, गुरु पर्व, क्रिश्चियन त्यौहार सं. २०५६ विक्रमी, शाके १९२१, सन् १९९९-२००० ई.

इस्लामी त्यौहार

हज	२८ मार्च
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	२९ "
मुहर्रम, हिजरी सन् १४२० प्रा.	१८ अप्रैल
ताजिया (मुहर्रम)	२७ "
बेहल्लम	५ जून
शहादते इमाम हसन	१३ "
ईद-ए-मिलाद (शबेबरात)	२७ "
ईद-ए-गौसद	२ जुला.
फातेहा यजदहम (११वीं शरीफ)	२५ "
अजमेर का उर्स मेला शुरू	१२ अक्टू.
जन्म दिन हजरत अली	२४ "
शबे-ए-मिराज	७ नवं.
शबे-ए-बरात (बख्तोत्सव)	२३ "
रोजा प्रारम्भ	१० दिसं.
शहादते हजरत अली	३० "

सन् २००० ई.

शबे-ए-कद्र	५ जन.
जुम्मतुलविदा	७ "
ईदुलफितर (ईद)	९ "
हज	१६ मार्च
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	१७ "

महापुरुष जयन्तियाँ (जैन)

मुनि सुमतिनाथ जयंती	२७ मार्च
" महावीर स्वामी "	२९ "
" सुव्रतनाथ "	११ अप्रै.
" कुन्थनाथ "	१६ "
" अनन्तनाथ "	१२ मई
" शान्तिनाथ "	१४ "
" सुपार्श्वनाथ "	२५ जून
" नमिनाथ "	८ जुला
" नैमिनाथ "	१८ "
" पद्मप्रभुनाथ "	५ नवं.
" सम्भवनाथ "	२३ "
" पुष्पदन्तनाथ "	८ दिसं
" मल्लिनाथ "	१९ "
" अरहनाथ "	२१ "

सन् २००० ई.

मुनि चन्द्रप्रभु व पार्श्वनाथ जयंती	२ जन.
" वर्धमान सुविधिनाथ "	९ "
मुनि राजेन्द्र सुरिश्वरनाथ जयं.	१३ जन.
" शीतलनाथ "	२ फर.
" विमलनाथ "	९ "
" अजितनाथ "	१५ "
" अभिनन्दन नाथ "	१६ "
" धर्मनाथ "	१७ "
" श्रेयांसनाथ "	१ मार्च
" वासुपूज्यनाथ "	५ "
" ऋषभनाथ "	२९ "

प्रान्तीय मेला दशहरा तथा अन्य उत्सव

मेला आर्यसमाज स्थापना दि.	१८ मार्च
" चीमा नानकसर (पंजाब)	१८ "
" गणगौर जयपुर (राज.)	२० "
" माईसरखान्ड (पंजाब)	२३ "
" बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	२४ "
" मनसा देवी (हरियाणा)	२४ "
" ज्वालामुखी (हरचोवाल व गुरदासपुर)	२४ "
" रामजन्मोत्सव (अयोध्या)	२५ "
" कांसा देवी (रोपड़, कांसल)	२९ "
" देवी थीहरा (कैथल)	३० "
" बा. सुन्दरी देवबन्द उ.प्र.	३० "
" भानकपुर शरीफ (रोपड़)	३१ "
" कश्मा नहरणी मंडी कुल्लू	१५ अप्रै.
" पिंजोर हरियाणा	१६ "
" पोपल जातर (कुल्लू)	२८ "
" आनी आउहा मिराब (कुल्लू)	७ मई
" चन्नी माताजी	९ "
" डूंगरी जातर (मन्डली)	१५ "
" बंजार (कुल्लू) प्रा.	१५ "
" शादी जातर (नगर, हि.प्र.)	१९ "
" गंगा दशहरा (हरिद्वार)	२४ "
" भून्तर (हि.प्र.)	१५ जून
" हल्दीघाटी (राजस्थान)	१६ "
" क्षीर भवानी (कश्मीर)	२१ "
" बहिरे थीरण्डा (पंजाब)	२४ "
" पिपलू (ऊना, हि.प्र.)	२४ "
" बुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	२८ "
" नानकसर (चीमा)	९ जुला
" शरीफ भवानी (कश्मीर)	२१ "
" ज्वालामुखी (कश्मीर)	२७ "
" नैमिषारण्य (उ.प्र.)	२८ "
मेला गुरु पूर्णिमा (कुराली)	२८ जुला.
" हरियाली अमा. (उदयपुर)	११ अग.
" चित्रपूर्णा व नवरात्रेवी हि.प्र.	१९ "
" अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	२६ "
" द्रोण दनकौर (उ.प्र.)	२ सितं.
" जन्माष्टमी (मथुरा)	३ "
" कैलाशयात्रा कश्मीर प्रा.	७ "
" सुधरेशाह (दिल्ली)	९ "
" गुसाई आंजा (कुराली)	११ "
" रूपोला रामदेव (जैसलमेर)	११ "
" गणेशोत्सव (महाराष्ट्र व मण्डी हि.प्र.)	१३ "
" पात (कश्मीर) प्रा.	१४ "
" ब्रजमण्डल (उ.प्र.)	१६ "
" रामदेव (जैसलमेर)	२० "
" खारभुजानाथ (मेवाड़)	२१ "
" वामन द्वादशी (अम्बाला-पटियाला)	२२ "
" सोढल (जालन्धर)	२४ "
" छपार (पंजाब)	२४ "
" गोपन्दवाल (पंजाब)	२५ "
" श्री आशापति यात्रा (क.)	प्रा. ८ अक्टू.
" ज्वालामुखी (हि.प्र.)	१८ "
" तारादेवी (हि.प्र.)	१८ "
" हरचोवाल (गुरदासपुर)	पं. १८ "
" दशहरा कुल्लू (हि.प्र.)	१९ "
" शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	२३ "
" देवी थीहरा (कैथल)	२३ "
" दीपावली (अमृतसर)	७ नवं.
" अन्नकूट (गोवर्धन)	८ "
" बाल मेला (दिल्ली)	१४ "
" बाबा स्वामन्द बारी ऊना (हि.प्र.)	१९ "
" रेणुका नाहन (हि.प्र.)	१९ "
" चोर वैरागी नकोदर (पं.)	२१ "
" पुष्कर राज (राजस्थान)	२३ "
" रामतीर्थ (अमृतसर)	२३ "
" कपालमोचन (हरियाणा)	२३ "
" गढ़गंगा (उ.प्र.)	२३ "
" पूरमण्डल देविका स्नान (ज.)	६ दिसं.
" जाड़ फतेहगढ़ साहिब (पं.)	२६ "
" संगीत हरबल्लभ प्रा.	२७ "

सन् २००० ई.

मेला लोहड़ी (पंजाब)	१३ जन.
" मुक्तसर (पंजाब)	१४ "
" मस्तु आंजा (पंजाब)	१ फर.
" मौनी अमावस्या (हरिद्वार)	५ "
" बसन्त पंचमी (हि.प्र.)	१० "
" पंचखण्ड पीठ विराटनगर	१७ "
" डेजर्ट उत्सव जैसलमेर राज.	१७ "
" वेणेश्वर बांसवाड़ा (राज.)	१९ "
" महाशिवरात्रि (मंडी, हि.प्र.)	४ मार्च
" नीलकंठ महादेव पौड़ी गढ़.	४ "
" श्यामजी खाटू (राज.)	१६-१७ "
" होला आनन्दपुर साहिब (पं.)	२१ "
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	२१ "
" वीरमदास बड़ोली (पटि.)	२१ "
" पंखा ब्रह्मर	२१ "
" शीतला माता (कुराली)	२३ "
" गुरु रामराय (देहरादून)	२५ "
" पिहोवा (हरियाणा)	३ अप्रै.

महापुरुषों के जन्म दिन

श्री गौतम जयंती	१८ मार्च
श्री झूलेलाल जयंती	१९ "
श्री महावीर जयंती	२९ "
श्री बल्लभाचार्य जयंती	१२ अप्रै.
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४ "
श्री शुकदेव जयंती	१६ "
देव दामोदर जयंती	१६ "
श्री शिवाजी जयंती	१७ "
श्री परशुराम जयंती	१८ "
श्री मातंगी जयंती	१८ "
श्री आद्यशंकराचार्य जयंती	२० "
श्री रामानुजाचार्य जयंती	२१ "
बाबू कुंअर सिंह जयंती	२३ "
श्री नृसिंह जयंती	२८ "
छिन्नमस्ता जयंती	२९ "
श्री बुद्धपूर्णिमा	३० "
देव ऋषि नारद जयंती	१ मई
श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ "
श्री महाराणा प्रताप जयंती	१६ जून
सन्त कबीर जयंती	२८ "
श्री लोकमान्य तिलक जयंती	२३ जुला
श्री कल्की जयंती	१६ अग.
गो. तुलसीदास जयंती	१८ "
संत ज्ञानेश्वर जयंती	२ सितं.
डॉ. राधाकृष्ण जयंती	५ "
सन्त सुथरेशाह जयंती	९ सितं.
श्री विनोबाभावे जयंती	११ "
श्री वराह जयंती	१२ "
महा. गांधी व शास्त्री जयंती	२ अक्टू.
अग्रसेन जयंती	१० "
श्री माधवाचार्य जयंती	२० "
महर्षि बाल्मीकि जयंती	२४ "
श्री धनवन्तरि जयंती	५ नवं.
श्री विश्वकर्मा जयंती	१० "
श्री नेहरू जयंती	१४ "
श्रीमती इन्दिरा गांधी जयंती	१९ "
कवि कालीदास जयंती	२० "
गुरु नानक जयंती	२३ "
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती	३ दिसं.
श्री दत्तात्रेय जयंती	२२ "
महामना मदन मोहन मालवीय ज.	२५ "

सन् २००० ई०

गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	१४ जन.
श्री नेताजी सुभाष जयंती	२३ "
स्वा. विवेकानन्द जयंती	२७ "
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	२७ "
श्री लाला लाजपतराय जयंती	२८ "
दीनबन्धु एण्ड्रयूज जयंती	१२ फर.
श्री माधवाचार्य जयंती	१२ "
गु. रविदास जयंती	१९ "
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	८ मार्च
श्री दादूदयाल जयंती	१३ "
चैतन्य महाप्रभु जयंती	२० "

क्रिश्चियन त्यौहार

पाम सण्डे	२८ मार्च
गुड फ्राइडे	२ अप्रै.
इस्टर सटरडे	३ "
इस्टर सण्डे	४ "
क्रिसमस डे	२५ दिसं.
न्यू इयर इव	३१ "
नया वर्ष सन् २००० प्रा.	१ जन.

सिक्खों के गुरु पर्व

गुरु तेगबहादुर जन्म	६ अप्रै.
" अर्जुन देव जी	८ "
" अंगददेव जी जन्म	१७ "
गुरु अमरदास जी जन्म	२९ अप्रै.
" हरगोविन्द जी	२९ जून
" हरकिशन जी	६ अग.
" रामदास जी	२६ अक्टू.
" नानक देव जी	२३ नवं.
" गोविन्द सिंह जी	१४ जन. २०००ई.
" हरराय जी	१७ फर.

गुरुयाई मिली

गुरु अमरदास जी	१८ मार्च
" तेगबहादुर जी	३० "
" हरगोविन्द जी	९ मई
" अर्जुनदेव जी	११ सितं.
" रामदास जी	२३ "
" अंगद देव जी	२९ "
" हरकिशन जी	१ नवं.
" गोविन्द सिंह जी	११ दिसं.
" हरराय जी २००० ई.	२ अप्रै.

ज्योति जोत समाऐ

गुरु अंगददेव जी	२१ मार्च
" हरगोविन्द जी	२२ "
" हरकिशन जी	३० "
" अर्जुनदेव जी	१७ जून
" रामदास जी	१२ सितं.
" अमरदास जी	२५ "
" नानकदेव जी	४ अक्टू
" हरराय जी	१ नवं.
" गोविन्द सिंह जी	१३ "
" तेग बहादुर जी	१३ दिसं.

दशावतार जयन्तियाँ

श्री मत्स्य जयंती	२० मार्च
" रामनवमी जयंती	२५ "
" परशुराम जयंती	१८ अप्रेल
" नृसिंह जयंती	२८ "
" कूर्म जयंती	३० "
" बुद्ध जयंती	३० "
" कल्कि जयंती	१७ अग.
" कृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्त)	२ सितं.
" कृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)	३ "
" वराह जयंती	१२ "
" वामन जयंती	२२ "

प्रकाशक: ग्रंथ प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८१, ३२८५२३४
CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्रत, संक्रान्ति, पूर्णिमा, एकादशी, प्रदोष व्रत, गणेश चतुर्थी, अमावस्या, आश्विन कृष्ण पक्ष श्राद्ध, गंडमूल तथा पंचकादि विवरण सं. २०५६ वि., शाके १९२१, सन् १९९९-२००० ई.

संक्रान्तियाँ

मेष	बुधवार	१४ अप्रै.
वृष	शनिवार	१५ मई
मिथुन	मंगलवार	१५ जून
कर्क	शुक्रवार	१६ जुला.
सिंह	मंगलवार	१७ अग.
कन्या	शुक्रवार	१७ सितं.
तुला	रविवार	१७ अक्टू.
वृश्चिक	मंगलवार	१६ नवं.
धन	गुरुवार	१६ दिसं.
मकर	शुक्रवार	१४ जन.
कुम्भ	रविवार	१३ फर.
मीन	मंगलवार	१४ मार्च

व्रत की पूर्णिमा

चैत्र	३१ मार्च
वैशाख	३० अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ	२९ मई
द्वि. ज्येष्ठ	२८ जून
आषाढ़	२७ जुला.
श्रावण	२६ अग.
भाद्रपद	२५ सितं.
आश्विन	२४ अक्टू.
कार्तिक	२२ नवं.
मार्गशीर्ष	२२ दिसं.
पौष (सन् २००० ई.)	२० जन.
माघ	१९ फर.
फाल्गुन	१९ मार्च

एकादशी व्रत

चैत्र शुक्ल	२७-२८ मार्च
वैशाख कृष्ण	१२ अप्रै.
वैशाख शुक्ल	२६ "
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	११-१२ मई
प्र. ज्ये. शुक्ल	२५-२६ "
द्वि. ज्ये. कृष्ण	१० जून
" ज्ये. शुक्ल	२४ "
आषाढ़ कृष्ण	९ जुला.
" शुक्ल	२४ "
श्रावण कृष्ण	७-८ अग.
" शुक्ल	२२-२३ "
भाद्रपद कृष्ण	६ सितं.
" शुक्ल	२१ सितं.
आश्विन कृष्ण	५ अक्टू.
" शुक्ल	२१ "
कार्तिक कृष्ण	३-४ नवं.
" शुक्ल	१९ "
मार्गशीर्ष कृष्ण	३ दिसं.
" शुक्ल	१९ "
पौष कृष्ण (सन् २०००ई.)	२ जन.
" शुक्ल	१७-१८ "
माघ कृष्ण	१-२ फर.
" शुक्ल	१५-१६ "
फाल्गुन कृष्ण	१-२ मार्च
" शुक्ल	१६ मार्च
चैत्र कृष्ण	३१ "

प्रदोष व्रत

चैत्र शुक्ल	२९ मार्च
वैशाख कृष्ण	१३ अप्रै.
" शुक्ल	२७ "
प्र. ज्येष्ठ कृष्ण	१३ मई
प्र. ज्येष्ठ शुक्ल	२७ "
द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण	११ जून
" शुक्ल	२६ "
आषाढ़ कृष्ण	१० जुला.
" शुक्ल	२५ "
श्रावण कृष्ण	९ अग.
" शुक्ल	२४ "
भाद्रपद कृष्ण	७ सितं.
भाद्रपद शुक्ल	२३ "
आश्विन कृष्ण	६ अक्टू.
" शुक्ल	२२ "
कार्तिक कृष्ण	५ नवं.
" शुक्ल	२१ "
मार्गशीर्ष कृष्ण	५ दिसं.
" शुक्ल	२० "
पौष कृष्ण (सन् २०००ई.)	४ जन.
" शुक्ल	१९ "
माघ कृष्ण	२ फर.
" शुक्ल	१७ "
फाल्गुन कृष्ण	३ मार्च
" शुक्ल	१७ "
चैत्र कृष्ण	२ अप्रै.

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

चैत्र (सन् ९९ ई.)	५ मार्च
वैशाख	४ अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ	४ मई
द्वि. ज्येष्ठ	२ जून
आषाढ़	२ जुला.
श्रावण	३१ जुला.
भाद्रपद	३० अग.
आश्विन	२८ सितं.
कार्तिक	२७ अक्टू.
मार्गशीर्ष	२६ नवं.
पौष	२५ दिसं.
माघ (सन् २००० ई.)	२४ जन.
फाल्गुन	२२ फर.
चैत्र	२३ मार्च

अमावस्यायें

वैशाख (सन् ९९ ई.)	१६ अप्रै.
प्र. ज्येष्ठ (शनैश्चरी)	१५ मई
द्वि. ज्येष्ठ	१३ जून
आषाढ़ (भौमवती)	१३ जुला.
श्रावण	११ अग.
भाद्रपद	९ सितं.
आश्विन (शनैश्चरी)	९ अक्टू.
कार्तिक (सौमवती)	८ नवं.
मार्गशीर्ष (अगहन)	७ दिसं.
पौष (सन् २०००ई.)	६ जन.
माघ (शनैश्चरी)	५ फर.
फाल्गुन (सोमवती)	६ मार्च
चैत्र (भौमवती)	४ अप्रै.

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

पूर्णिमा का श्राद्ध	२५ सितं.
प्रतिपदा का श्राद्ध	२६ "
द्वितीया का श्राद्ध	२६ "
तृतीया का श्राद्ध	२७ "
चतुर्थी का श्राद्ध	२८ "
पंचमी का श्राद्ध	२९ "
षष्ठी का श्राद्ध	३० "
सप्तमी का श्राद्ध	१ अक्टू.
अष्टमी का श्राद्ध	२ "
नवमी का श्राद्ध	३ "
दशमी का श्राद्ध	४ अक्टू.
एकादशी का श्राद्ध	५ "
द्वादशी का श्राद्ध	६ "
त्रयोदशी का श्राद्ध	७ "
चतुर्दशी का श्राद्ध	८ "
अमावस का श्राद्ध	९ "
सर्वपितृ का श्राद्ध	९ "
मातामह का श्राद्ध	१० "

पंचक आरम्भ व समाप्ति काल

ता.	मास	घं.मि.	से	ता.	मास	घं.मि.	तक
१५	मार्च ९९ ई.	१६।१३	"	१९	मार्च ९९ ई.	२०।३९	"
११	अप्रैल	२६।०५	"	१६	अप्रैल	६।५१	"
९	मई	१०।२७	"	१३	मई	१७।३६	"
५	जून	१६।५७	"	९	जून	२७।०६	"
२	जुलाई	२२।३०	"	७	जुलाई	१०।२५	"
२९	"	२८।३२	"	३	अग.	१६।०५	"
२६	अगस्त	१२।०५	"	३०	अग.	२१।४२	"
२२	सितं.	२१।०७	"	२६	सितं.	२९।१०	"
२०	अक्टू.	६।३७	"	२४	अक्टू.	१४।५६	"
१६	नवं.	१५।०६	"	२०	नवं.	२५।५२	"
१३	दिसं.	२१।५०	"	१८	दिसं.	११।५१	"
९	जन.२००० ई.	२७।३२	"	१४	जन.२००० ई.	१९।२२	"
६	फर.	९।४३	"	१०	फर.	२४।५५	"
४	मार्च	१७।१८	"	९	मार्च	६।४५	"
३१	मार्च	२५।५८	"	५	अप्रैल	१४।३८	"

गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

ता.	मास	घं.मि.	से	ता.	मास	घं.मि.	तक
१८	मार्च	२२।५९	"	२०	मार्च	१८।१८	"
२७	"	९।५७	"	२९	"	११।३५	"
५	अप्रैल	२७।५४	"	८	अप्रैल	९।२६	"
१५	"	९।२६	"	१६	"	२७।५९	"
२३	"	१५।२९	"	२५	"	१७।०९	"
३	मई	१०।२१	"	५	मई	१६।०६	"
१२	"	१९।५४	"	१४	"	१४।४८	"
२०	"	२२।२७	"	२२	"	२३।०९	"
३०	"	१६।२१	"	१	जून	२१।५८	"
८	जून	२८।४४	"	१०	"	२४।५४	"
१७	"	७।२६	"	१९	"	६।४५	"
२६	"	२२।३३	"	२८	"	२७।५८	"
६	जुलाई	११।२४	"	८	जुला.	८।५४	"
१४	"	१७।३३	"	१६	"	१५।५४	"
२४	"	५।३२	"	२६	"	१०।५२	"
२	अग.	१६।४९	"	४	अग.	१४।५५	"
१०	"	२७।१३	"	१२	"	२५।३०	"
२०	"	१३।१५	"	२२	"	१८।४७	"
२९	"	२२।५२	"	३१	"	२०।२१	"
७	सितं.	११।१३	"	९	सितं.	१०।१४	"
१६	"	२१।१८	"	१८	"	२७।०९	"
२६	"	६।५३	"	२७	"	२७।१२	"
४	अक्टू.	१७।१४	"	६	अक्टू.	१७।१२	"
१४	"	४।५९	"	१६	"	११।०८	"
२३	"	१६।५५	"	२५	"	१२।३०	"
३१	"	२२।४१	"	२	नवं.	२२।४७	"
१०	नवं.	११।५५	"	१२	"	१८।०८	"
१९	"	२७।३३	"	२१	"	२३।३३	"
२८	"	५।३७	"	२९	"	२८।३७	"
७	दिसं.	१८।११	"	९	दिसं.	२४।१९	"
१७	"	१२।४५	"	१९	"	१०।१४	"
२५	"	१५।१२	"	२७	"	१२।३५	"
३	जन.२००० ई.	२४।१९	"	६	जन.२००० ई.	६।२७	"
१३	"	१९।३३	"	१५	"	१८।३३	"
२१	"	२६।२९	"	२३	"	२२।४७	"
३१	"	७।०५	"	२	फर.	१३।१३	"
९	फर.	२५।००	"	११	"	२४।२८	"
१८	"	१३।०१	"	२०	"	९।३१	"
२७	"	१४।४५	"	२९	"	२०।५२	"
८	मार्च	७।१४	"	१०	मार्च	६।००	"
१६	"	२१।०५	"	१८	"	१८।३९	"
२५	"	२३।०४	"	२७	"	२८।५५	"
४	अप्रै.	१५।२६	"	६	अप्रै.	१३।१०	"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३।

ग्रहण विवरण संवत् २०५६ वि.

इस वर्ष संवत् २०५६ विक्रमी में (दिनांक १८ मार्च ९९ से ४ अप्रैल २००० ई. तक) सम्पूर्ण भूमण्डल पर चार ग्रहण दिखाई देंगे। जिसमें दो ग्रहण सूर्य तथा दो ही चन्द्रमा के होंगे। जिनका विवरण इस प्रकार है:-

१. खण्डग्रास चन्द्रग्रहण—२८ जुलाई १९९९ ई.
२. खग्रास सूर्यग्रहण—११ अगस्त १९९९ ई.
३. खग्रास चन्द्रग्रहण—२१ जनवरी २००० ई.
४. खण्डग्रास सूर्यग्रहण—५ फरवरी २००० ई.

इन ग्रहणों में से दिनांक ११ अगस्त ९९ ई. को होने वाला खग्रास सूर्यग्रहण ही भारत में दिखाई देगा अन्य तीनों ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे।

भारत में दृश्य खग्रास सूर्यग्रहण का विस्तृत विवरण

१. खग्रास सूर्यग्रहण—यह ग्रहण श्रावण कृष्ण अमावस्या बुधवार दिनांक ११ अगस्त ९९ ई. को सम्पूर्ण भारत के अलावा पूर्वोत्तर अमेरिका, यूरोप, एशिया, पूर्वी कनाडा, ग्रीनलैण्ड, उत्तरी अफ्रीका, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, अटलांटिक महासागर में दिखाई देगा। भारत के दक्षिण राज्य महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा, दक्षिणी म.प्र. के कुछ भागों में यह ग्रहण खग्रास की स्थिति में भी दिखाई देगा शेष सभी राज्यों में खंडग्रास के रूप में दिखाई देगा। राजस्थान, हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली व पश्चिमी महाराष्ट्र को छोड़कर शेष समस्त पूर्वी दक्षिणी भारत में ग्रस्तास्त खंडग्रास सूर्यग्रहण अर्थात् ग्रहण लगा हुआ सूर्य अस्त हो जायेगा। जहां ग्रहण लगा सूर्य अस्त हो जायेगा वहां के धार्मिक जन सूर्यास्त के बाद स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त हो सकते हैं किन्तु भोजनादि का सेवन अगले दिन शुद्ध सूर्य के दर्शन करने के पश्चात् ही करना चाहिए।

भारत में दिनांक ११ अगस्त ९९ को दोपहर बाद ४ बजकर ५५ मिनट से सायंकाल ७ बजे तक यह ग्रहण दिखाई देगा। दिल्ली व कुरुक्षेत्र के आसपास क्षेत्रों में परमग्रास मान इस प्रकार दिखाई देगा।

समय भा.स्टें.टा. में	स्पर्श घं.मि.	मध्य घं.मि.	मोक्ष घं.मि.	पर्वकाल घं.मि.
दिल्ली	१६।५२	१७।५६	१८।५२	२।००
कुरुक्षेत्र	१६।५०	१७।५४	१८।४९	१।५९

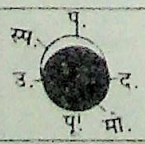

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक दिनांक ११ अगस्त ९९ को प्रातःकाल ४ बजकर ५० मिनट पर प्रारम्भ हो जायेगा। बच्चे, वृद्ध व रोगी प्रतः ११.०० बजे तक भोजन व पथ्य ग्रहण कर सकते हैं। धार्मिक जनों को सूतककाल में भोजनादि नहीं करना चाहिए।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण अश्लेषा नक्षत्र और कर्क राशि में होने से इस नक्षत्र व राशिवालों को विशेष अनिष्टप्रद रहेगा। इसके अतिरिक्त मेष, सिंह व धनु राशि वालों को भी अशुभ फलप्रद रहेगा। वृष, कन्या, तुला एवं कुंभ राशिवालों को ग्रहण श्रेष्ठ फलप्रद तथा मिथुन, वृश्चिक, मकर व मीन राशिवालों को मिश्रित फलप्रद रहेगा। अशुभ नक्षत्र व राशिवालों के साथ-साथ गर्भिणी महिलाओं को ग्रहण का दर्शन नहीं करना चाहिए।

ग्रहण के अन्य फल—सूर्य ग्रहण श्रावण मास में बुधवार को होने से पूर्व संग्रह किये धान्यों में लाभदायक मिट होगा अर्थात् धान्यों में तेजी होगी। कपास, कपड़ा तथा किराना वस्तुओं में भी तेजी बनेगी। कर्क राशि में ग्रहण होने से चौपाया पशुओं में रोग पीड़ा की वृद्धि होगी तथा गेहूं, जौ, चावल, गुड़, तेल, दूध, घी के उत्पादन में कमी आने से तेजी का संचार होगा।

गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश व दक्षिणी म.प्र. के नगरों में खग्रास सूर्यग्रहण का स्पर्श मोक्ष काल तथा खग्रास की अवधि (समय भा.स्टें.टा. में)

नगर	प्रदेश	स्पर्श घं.मि.	मध्य घं.मि.	मोक्ष घं.मि.	खग्रास अ. मि.सै.	नगर	प्रदेश	स्पर्श घं.मि.	मध्य घं.मि.	मोक्ष घं.मि.	खग्रास अ. मि.सै.
सुरेन्द्रनगर	गुजरात	१६।५६	१८।०१	१९।०५	१।०४	भुसावल	महाराष्ट्र	१७।०१	१८।०३	१९।०३	०।४८
नादिआद	गुजरात	१६।५५	१८।००	१९।००	१।०३	जगदलपुर	म.प्र.	१७।०६	१८।०४	१९।०३	०।३५
बड़ौदा	गुजरात	१६।५८	१८।०२	१९।०१	१।०२	दंतेवाड़ा	म.प्र.	१७।०५	१८।०४	१९।०२	०।२०
शिरपुर	महाराष्ट्र	१७।००	१८।०३	१९।०३	०।५९	बाईपारीगुड़ा	उड़ीसा	१७।०७	१८।०३	१९।०३	०।५२
जलगांव	महाराष्ट्र	१७।०२	१८।०३	१९।०३	०।३२	विजिया नगर	आन्ध्र प्र.	१७।०८	१८।०३	१९।०३	०।४६
यवतमाल	महाराष्ट्र	१७।०३	१८।०४	१९।०३	०।५३						

नोट—उपरोक्त नगरों में गुजरात राज्य के नगरों को छोड़कर समस्त नगरों में ग्रस्तास्त सूर्यग्रहण दिखाई देगा।

भारत के प्रसिद्ध नगरों में जहां खण्डग्रास सूर्यग्रहण दिखाई देगा के स्पर्श मोक्षकाल (भा.स्टें.टा. में)

नगर	स्पर्श घं.मि.	मोक्ष घं.मि.	पर्वकाल घं.मि.	नगर	स्पर्श घं.मि.	मोक्ष घं.मि.	पर्वकाल घं.मि.
आगरा	१६।५४	१८।५९	२।०४	कलकत्ता	१७।०४	सूर्यास्त बाद	सूर्यास्त तक
उज्जैन	१६।५८	१८।५८	२।००	काशी	१७।०५	"	"
चंडीगढ़	१६।४९	१८।४८	१।५९	पटना	१७।००	"	"
दिल्ली	१६।५२	१८।५२	२।००	पूना	१७।०३	"	"
मथुरा	१६।५४	१८।५२	१।५८	मद्रास	१७।१३	"	"
शिमला	१६।५७	१८।४७	२।००	उज्जैन	१६।५८	"	"
जयपुर	१६।५४	१८।५४	२।००	वाराणसी	१६।५९	"	"
मुम्बई	१७।०२	१९।०३	२।०१	नागपुर	१७।०३	"	"
				गोहाटी	१६।५८	"	"

भारत के बाहर दिखाई देने वाले ग्रहणों का विस्तृत विवरण

१. खण्डग्रास चन्द्रग्रहण:—यह ग्रहण आषाढ़ शुक्ल १५ बुधवार दिनांक २८ जुलाई ९९ ई. को आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, उत्तर-दक्षिण अमेरिका के अलावा पूर्वी एशिया में चीन, वर्मा, थाईलैण्ड में दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण भा.स्टें.टा. अनुसार १५।५० से १८।१५ के मध्य दिखाई देगा।

२. खग्रास चन्द्रग्रहण—यह ग्रहण पौष शुक्ल १५ शुक्रवार दिनांक २१ जनवरी २००० ई. को पश्चिमी राष्ट्र अफ्रीका, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, इंगलैण्ड आदि देशों में दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा अतः इसको मानने की कोई आवश्यकता नहीं है।

३. खण्डग्रास सूर्यग्रहण—माघ कृष्ण अमावस्या शनिवार दिनांक ५ फरवरी २००० ई. को यूरोप, भूमध्यसागर, उत्तरी अफ्रीका, ईरान, ईराक, सऊदी अरब आदि देशों में खण्डग्रास सूर्यग्रहण दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देने से इसको मानने की कोई आवश्यकता नहीं है।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार संवत् २०५६ विक्रमी

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१८	मार्च	उ.भा.	१
२१	"	"	२
२४	"	"	३
२८	"	"	४
३१	"	रेवती	१
४	अप्रैल	"	२
७	"	"	३
१०	"	"	४
१४	"	अश्वि.	१ मेष
१७	"	"	२
२१	"	"	३
२४	"	"	४
२७	"	भरणी	१
१	मई	"	२
४	"	"	३
८	"	"	४
११	"	कृत्ति.	१
१५	"	"	२ वृष
१८	"	"	३
२२	"	"	४
२५	"	रोहि.	१
२८	"	"	२
१	जून	"	३
४	"	"	४
८	"	मृग.	१
११	"	"	२
१५	"	"	३ मिथुन
१८	"	"	४
२२	"	आर्द्रा	१
२५	"	"	२
२९	"	"	३
२	जुलाई	"	४
६	"	पुनर्वसु	१
९	"	"	२
१३	"	"	३
१६	"	"	४ कर्क
२०	"	पुष्य	१

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२३	जुलाई	पुष्य	२
२७	"	"	३
३०	"	"	४
३	अग.	अश्ले.	१
६	"	"	२
१०	"	"	३
१३	"	"	४
१७	"	मघा	१ सिंह
२०	"	"	२
२४	"	"	३
२७	"	"	४
३१	"	पू.फा.	१
३	सितं.	"	२
६	"	"	३
१०	"	"	४
१३	"	उ.फा.	१
१७	"	"	२ कन्या
२०	"	"	३
२३	"	"	४
२७	"	हस्त	१
३०	"	"	२
४	अक्टू.	"	३
७	"	"	४
१०	"	चित्रा	१
१४	"	"	२
१७	"	"	३ तुला
२१	"	"	४
२४	"	स्वाती	१
२७	"	"	२
३१	"	"	३
३	नवं.	"	४
६	"	विशा.	१
१०	"	"	२
१३	"	"	३
१६	"	"	४ वृश्चि.
१९	"	अनु.	१
२३	"	"	२

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२६	नव.	अनु.	३
२९	"	"	४
३	दिसं.	ज्येष्ठा	१
६	"	"	२
९	"	"	३
१३	"	"	४
१६	"	मूल	१ धनु
१९	"	"	२
२२	"	"	३
२६	"	"	४
२९	"	पू.षा.	१

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१	जन.	पू.षा.	२
४	"	"	३
८	"	"	४
११	"	उ.षा.	१
१४	"	"	२ मकर
१७	"	"	३
२१	"	"	४
२४	"	श्रवण	१
२७	"	"	२
३१	"	"	३
३	फर.	"	४
६	"	धनि.	१
९	"	"	२
१३	"	"	३ कुंभ
१६	"	"	४
१९	"	शत.	१
२३	"	"	२
२६	"	"	३
२९	"	"	४
४	मार्च	पू.भा.	१
७	"	"	२
१०	"	"	३
१४	"	"	४ मीन
१७	"	उ.भा.	१
२०	"	"	२

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२४	मार्च	उ.भा.	३
२७	"	"	४
३०	"	रेवती	१
३	अप्रैल	"	२
६	"	"	३

मंगल नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१८	मार्च	वक्री	
३	अप्रैल	स्वाती	३
१६	"	"	२
२५	"	"	१
४	मई	चित्रा	४
१५	"	"	३
४	जून	मार्गी	
२५	"	चित्रा	४
६	जुलाई	स्वाती	१
१५	"	"	२
२३	"	"	३
३०	"	"	४
५	अगस्त	विशा.	१
१२	"	"	२
१८	"	"	३
२३	"	"	४ वृश्चि.
२९	"	अनु.	१
३	सितं.	"	२
८	"	"	३
१४	"	"	४
१९	"	ज्येष्ठा	१
२४	"	"	२
२८	"	"	३
३	अक्टू.	"	४
८	"	मूल	१ धनु
१३	"	"	२
१७	"	"	३
२२	"	"	४
२६	"	पू.षा.	१
३१	"	"	२
४	नवं.	"	३
९	"	"	४
१३	"	उ.षा.	१
२०	"	"	२

मंगल नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१८	नवं.	उ.षा.	२ मकर
२२	"	"	३
२६	"	"	४
१	दिस.	श्रवण	१
५	"	"	२
९	"	"	३
१४	"	"	४
१८	"	धनिष्ठा	१
२२	"	"	२
२७	"	"	३ कुंभ
३१	"	"	४

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
४	जन.	शत.	१
९	"	"	२
१३	"	"	३
१७	"	"	४
२२	"	पू.भा.	१
२६	"	"	२
३०	"	"	३
४	फर.	"	४ मीन
८	"	उ.भा.	१
१२	"	"	२
१७	"	"	३
२१	"	"	४
२५	"	रेवती	१
१	मार्च	"	२
५	"	"	३
१०	"	"	४
१४	"	अश्वि.	१ मेष
१९	"	"	२
२३	"	"	३
२८	"	"	४
१	अप्रैल	भरणी	१
६	"	"	२

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१७	मार्च	उ.भा.	१
२१	"	पू.भा.	४

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२५	मार्च	पू.भा.	३ कुंभ
२	अप्रैल	मार्गी	
१०	"	पू.भा.	४ मीन
१५	"	उ.भा.	१
१८	"	"	२
२१	"	"	३
२४	"	"	४
२६	"	रेवती	१
२८	"	"	२
१	मई	"	३
३	"	"	४
५	"	अश्वि.	१ मेष
७	"	"	२
९	"	"	३
११	"	"	४
१२	"	भरणी	१
१४	"	"	२
१६	"	"	३
१७	"	"	४
१९	"	कृत्तिका	१
२१	"	"	२ वृष
२२	"	"	३
२४	"	"	४
२५	"	रोहिणी	१
२७	"	"	२
२८	"	"	३
३०	"	"	४
३१	"	मृग.	१
१	जून	"	२
३	"	"	३ मिथुन
५	"	"	४
७	"	आर्द्रा	१
९	"	"	२
१०	"	"	३
१२	"	"	४
१४	"	पुनर्वसु	१
१६	"	"	२

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१९	जून	पुनर्वसु	३
२१	"	"	४ कर्क
२४	"	पुष्य	१
२७	"	"	२
३०	"	"	३
५	जुलाई	"	४
१३	"	वक्री	
२०	"	पुष्य	३
२५	"	"	२
३०	"	"	१
६	अगस्त	मार्गी	
१२	"	पुष्य	२
१५	"	"	३
१८	"	"	४
२०	"	अश्ले.	१
२२	"	"	२
२४	"	"	३
२६	"	"	४
२८	"	मघा	१ सिंह
३०	"	"	२
३१	"	"	३
२	सितं.	"	४
४	"	पू.फा.	१
५	"	"	२
७	"	"	३
९	"	"	४
११	"	उ.फा.	१
१३	"	"	२ कन्या
१४	"	"	३
१६	"	"	४
१८	"	हस्त	१
२०	"	"	२
२२	"	"	३
२४	"	"	४
२६	"	चित्रा	१
२८	"	"	२

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१	अक्टू.	चित्रा	३ तुला
३	"	"	४
५	"	स्वाती	१
७	"	"	२
१०	"	"	३
१२	"	"	४
१५	"	विशा.	१
१७	"	"	२
२०	"	"	३
२३	"	"	४ वृश्चि
२७	"	अनु.	१
३१	"	"	२
५	नवं.	वक्री	
९	"	अनु.	१
१२	"	विशा.	४
१५	"	"	३ तुला
१७	"	"	२
२१	"	"	१
२५	"	मार्गी	
२९	"	विशा.	२
३	दिसं.	"	३
६	"	"	४ वृश्चि
८	"	अनु.	१
११	"	"	२
१३	"	"	३
१६	"	"	४
१८	"	ज्येष्ठा	१
२०	"	"	२
२२	"	"	३
२५	"	"	४
२७	"	मूल	१ धनु
२९	"	"	२
३१	"	"	३

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२	जन.	मूल	४
४	"	पू.षा.	१
६	"	"	२
९	"	"	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार संवत् २०५६ विक्रमी

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
११	जनवरी	पू.षा.	४
१३	"	उ.षा.	१
१५	"	"	२ मकर
१७	"	"	३
१९	"	"	४
२१	"	श्रवण	१
२३	"	"	२
२५	"	"	३
२७	"	"	४
२८	"	धनि.	१
३०	"	"	२
१	फर.	"	३ कुंभ
३	"	"	४
५	"	शत.	१
७	"	"	२
९	"	"	३
१२	"	"	४
१५	"	पू.भा.	१
२२	"	वक्री	
२८	"	शत.	४
२	मार्च	"	३
५	"	"	२
१०	"	"	१
१५	"	मार्गी	
१९	"	शत.	२
२४	"	"	३
२८	"	"	४
३१	"	पू.भा.	१
३	अप्रै.	"	२
६	"	"	३

गुरु नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२९	मार्च	रेवती	१
१२	अप्रैल	"	२
२६	अप्रैल	रेवती	३
११	मई	"	४
२६	"	अश्वि.	१ मेष
१२	जून	"	२
१	जुला.	"	३
२९	"	"	४
२५	अगस्त	वक्री	
२०	सितं.	अश्वि.	३
१९	अक्टू.	"	२
१४	नवं.	"	१
२१	दिसं.	मार्गी	

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२५	जन.	अश्वि.	२
१८	फर.	"	३
७	मार्च	"	४
२३	"	भरणी	१
६	अप्रैल	"	२

शुक्र नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१८	मार्च	अश्विनी	३
२१	"	"	४
२४	"	भरणी	१
२७	"	"	२
२९	"	"	३
१	अप्रै.	"	४
४	"	कृत्ति.	१
७	"	"	२ वृष
१०	"	"	३
१३	"	"	४
१५	"	रोहिणी	१
१८	"	"	२
२१	"	"	३
२४	"	"	४
२७	"	मृग.	१
३०	अप्रैल	मृग	२
३	मई	"	३ मिथुन
६	"	"	४
९	"	आर्द्रा	१
१२	"	"	२
१५	"	"	३
१८	"	"	४
२१	"	पुनर्वसु	१
२४	"	"	२
२७	"	"	३
३०	"	"	४ कर्क
३	जून	पुष्य	१
६	"	"	२
९	"	"	३
१३	"	"	४
१६	"	अश्ले.	१
२०	"	"	२
२४	"	"	३
२८	"	"	४
२	जुला.	मघा	१ सिंह
७	"	"	२
१३	"	"	३
२१	"	"	४
३०	"	वक्री	
७	अगस्त	मघा	३
१४	"	"	२
२०	"	"	१
२५	"	अश्ले.	४ कर्क
१	सितं.	"	३
११	"	मार्गी	
२०	"	अश्ले.	४
२८	"	मघा	१ सिंह
३	अक्टू.	"	२
८	"	"	३
१२	अक्टू.	मघा	४
१६	"	पू.फा.	१
२०	"	"	२
२४	"	"	३
२७	"	"	४
३०	"	उ.फा.	१
३	नवं.	"	२ कन्या
६	"	"	३
९	"	"	४
१२	"	हस्त	१
१५	"	"	२
१८	"	"	३
२१	"	"	४
२४	"	चित्रा	१
२७	"	"	२
३०	"	"	३ तुला
३	दिसं.	"	४
६	"	स्वाती	१
९	"	"	२
१२	"	"	३
१४	"	"	४
१७	"	विशा.	१
२०	"	"	२
२३	"	"	३
२६	"	"	४ वृश्चि.
२८	"	अनु.	१
३१	"	"	२

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
३	जन.	अनु.	३
६	"	"	४
८	"	ज्येष्ठा	१
११	"	"	२
१४	"	"	३
१७	"	"	४
१९	जन.	मूल	१ धनु
२२	"	"	२
२५	"	"	३
२७	"	"	४
३०	"	पू.षा.	१
२	फर.	"	२
५	"	"	३
७	"	"	४
१०	"	उ.षा.	१
१३	"	"	२ मकर
१५	"	"	३
१८	"	"	४
२१	"	श्रवण	१
२४	"	"	२
२६	"	"	३
२९	"	"	४
३	मार्च	धनिष्ठा	१
५	"	"	२
८	"	"	३ कुंभ
११	"	"	४
१३	"	शत.	१
१६	"	"	२
१९	"	"	३
२२	"	"	४
२४	"	पू.भा.	१
२७	"	"	२
३०	"	"	३
१	अप्रैल	"	४ मीन
४	"	उ.भा.	१

शनि नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
४	अप्रैल	अश्वि.	४
३०	"	भरणी	१
२७	मई	"	२
२७	जून	"	३
२७	अगस्त	भरणी	४
३०	"	वक्री	
१	सितं.	भरणी	३
४	नवं.	"	२
२७	दिसं.	"	१

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१२	जन.	मार्गी	
२८	"	भरणी	२
१६	मार्च	"	३

राहु नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१७	मई	अश्ले.	२
१९	जुलाई	"	१
२०	सितं.	पुष्य	४
२२	नवं.	"	३

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२३	जन.	पुष्य	२
२६	मार्च	"	१

केतु नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१७	मई	श्रवण	४
१९	जुलाई	"	३
२०	सितं.	"	२
२२	नवं.	"	१

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२३	जन.	उ.षा.	४
२६	मार्च	"	३

हर्षल नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२३	मई	वक्री	
२	सितं.	श्रवण	३
२३	अक्टू.	मार्गी	
११	दिसं.	श्रवण	४

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१३	फर.	धनिष्ठा	१
२३	मार्च	श्रवण	१
७	मई	वक्री	
२१	जून	उ.षा.	४
१४	अक्टू.	मार्गी	

सन् २०००ई.

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१९	जन.	श्रवण	१

प्लूटो नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१९	अगस्त	मार्गी	
७	दिसं.	ज्येष्ठा	१

(सन् २०००ई.)

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१५	मार्च	वक्री	

भौम उदयास्त

वर्ष पर्यन्त उदय

बुधोदयास्त

ता.	मास		
२६	मार्च	उदय	पूर्व
१४	मई	अस्त	पूर्व
५	जून	उदय	पश्चि.
१८	जुलाई	अस्त	पश्चि.
४	अगस्त	उदय	पूर्व
२६	अगस्त	अस्त	पूर्व
२५	सितंबर	उदय	पश्चि.
९	नवंम्बर	अस्त	पश्चि.
२२	नवंम्बर	उदय	पूर्व
२३	दिसंबर	अस्त	पूर्व

(सन् २०००ई.)

ता.	मास		
३	फर.	उदय	पश्चिम
२३	फर.	अस्त	पश्चिम
८	मार्च	उदय	पूर्व

मंगल वक्री- मार्गी

ता.	मास	
१८	मार्च	वक्री
४	जून	मार्गी

बुध वक्री-मार्गी

वर्षारंभ में बुध वक्री

ता.	मास	वक्री-मार्गी
२	अप्रैल	मार्गी
१३	जुलाई	वक्री
६	अगस्त	मार्गी
५	नवंबर	वक्री
२५	नवंबर	मार्गी
२१	फरवरी	वक्री
१४	मार्च	मार्गी

गुरु उदयास्त

२२ मार्च	अस्त	(प.)
२१ अप्रैल	उदय	(पू.)

गुरु वक्री-मार्गी

२५ अगस्त	वक्री
२१ दिसंबर	मार्गी

शुक्र उदयास्त

११ अगस्त	अस्त	(प.)
२६ अगस्त	उदय	(पू.)

शुक्र वक्री-मार्गी

३० जुलाई	वक्री
११ सितं.	मार्गी

शनि उदयास्त

९ अप्रैल	अस्त	(प.)
१५ मई	उदय	(पू.)

शनि वक्री-मार्गी

३० अगस्त	वक्री
१२ जन.	२०००ई. मार्गी

हर्षल-नेपच्यून-प्लूटो वक्री-मार्गी

हर्षल	२३ मई	वक्री
"	२३ अक्टू.	मार्गी
नेपच्यून	७ मई	वक्री
"	१४ अक्टू.	मार्गी
प्लूटो	१९ अगस्त	मार्गी
"	१५ मार्च २०००	वक्री

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

विक्रम संवत् २०५६ (दिनांक १८ मार्च १९९९ ई. से ४ अप्रैल २००० ई. तक)

- इस वर्ष के राजा, मंत्री, दुर्गेशादि अन्य शुभाशुभ ग्रहों की वर्ष लग्न, जगल्लग्न में स्थिति एवं भारतीय गणतंत्र के ५०वें वर्ष लग्न की ग्रह स्थिति पर सम्यक विचार करने से ज्ञात होता है कि यह वर्ष भारत के लिए कठिन अग्नि परीक्षा का है।
- वर्षारम्भ से तीन मास पूर्व और आगे के प्रथम चरण में प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी को संकटप्रद। शारीरिक व सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान रखना आवश्यक होगा। वर्ष उत्तरार्ध में भी राजनैतिक संकट, भाजपा गंठबन्धन सरकार अल्पमत की ओर अग्रसर।
- भारत आगामी दशक के अन्त तक विश्व में महान शक्ति के रूप में उभर कर सामने आयेगा।
- संसद व राज्यों की विधान सभाओं में अभूतपूर्व अशोभनीय दृश्य उपस्थित होंगे।
- खनिज तेल, धातु पदार्थ व उसके उत्पाद महंगे होंगे। खाद्य पदार्थों में भी मंहगाई बढ़ेगी।
- अमेरिका, चीन, अफ्रीका, ईरान, अरब राष्ट्र, पाकिस्तान और यूरोप के प्रधान शासकों के लिए वर्ष राजनैतिक उथल-पुथल के साथ देश में अशांति कारक।
- विश्व के अनेक भागों में प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, बाढ़, तूफान, यान दुर्घटना, महामारी का अकाण्ड ताण्डव।
- कांग्रेस (ई.) में श्रीमती सोनिया गांधी द्वारा पुनः प्रतिष्ठा बनाने का अथक प्रयास, सफलता आंशिक।
- मंहगाई, बेकारी, भ्रष्टाचार, बंद, घेराव में वृद्धि, विश्व में आर्थिक संकट उग्र रूप धारण करें।
- वर्ष उत्तरार्ध में विश्व में कहीं सत्ता परिवर्तन, प्रधान शासक की मृत्यु से जनता स्तब्ध होगी। भारत में भी केन्द्र एवं प्रान्तों के कुछ प्रधान पुरुष की मृत्यु से राष्ट्र ध्वज झुकेगा।

विगत एक दशक से "श्री आर्यभट्ट पंचांग" द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गईं उससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी है एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य चन्द्रग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैवविद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अतः संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैवविद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है अतः समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों को कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा।

ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान से प्राचीन ग्रन्थ वराह मिहिराचार्य कृत "बाराही संहिता" के आधार पर "दैवज्ञ

होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांतिउत्पन्न होगी। इसके लिए संगट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य साबित हुए हैं।

संवत् २०५६ विक्रमी में ग्रहों की आकाशी कौंसिल में छह अधिकार सौम्य ग्रहों को एवं चार अधिकार क्रूर ग्रहों को मिले हैं। सूर्यदेव को इस वर्ष केवल एक अधिकार रसेश का प्राप्त हुआ है। जबकि चन्द्रमा को कोई अधिकार नहीं मिला है। मंगल को इस वर्ष तीन अधिकार क्रमशः मेषेश, फलेश व दुर्गेश के तथा बुध को मंत्री पद का अधिकार प्राप्त हुआ है। गुरु को राजा के पद के अतिरिक्त धान्येश का पद भी मिला है। शुक्र को सस्येश, नीरसेश एवं धनेश के तीन पद मिले हैं जबकि शनिदेव को भी कोई अधिकार नहीं मिला है। इस प्रकार सौम्य ग्रहों को आधे से अधिक अधिकार मिलने से शुभ फलों की अधिकता दिखाई देगी। शांति वार्ताओं से नये आयामों की शुरूआत होगी। आर्थिक प्रगति के लिए नये-नये समझौतों पर आर्थिक संधियां होंगी। किन्तु मंगलदेव को तीन अधिकार मिलने से एवं अशुभ योग प्रतियोगों के कारण शांति प्रयासों को पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी। विश्व के अनेक भागों में अशांति, युद्धादि भय, सैन्यशक्ति का प्रदर्शन, आर्थिक मंदी, प्रकृति प्रकोप, भूकम्पादि से जनधन की हानि होगी।

विक्रम संवत् २०५६ का शुभारंभ संवत् २०५५ वि. के अंतिम दिन चैत्र कृष्ण अमावस्या बुधवार दिनांक १७ मार्च १९९९ ई. को अर्द्धरात्रि में १२ बजकर १८ मिनट इष्ट घट्यादि ४४।२० पर वृश्चिक लग्न में

शेष पृष्ठ २०० पर....

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

विक्रम संवत् २०५६ में बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि आदि योगों का विवरण प्रत्येक मास की अंग्रेजी तारीखों में बनने वाले भा.स्टै. टाइम से शुभ योगों में किए गये सभी कार्य सफल होने की संभावना होती है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
१८ मार्च	२२।५९	से	२० मार्च	६।३१ तक
२२ "	१३।५७	"	२३ "	६।२७ "
२४ "	६।२६	"	२४ "	१०।५६ "
२५ "	१०।०५	"	२६ "	९।४८ "
३१ "	१४।४८	"	१ अप्रै.	६।१७ "
३ अप्रै.	६।१५	"	३ "	२२।०२ "
५ "	६।१२	"	५ "	२७।५४ "
१० "	१३।११	"	११ "	६।०६ "
१५ "	९।२६	"	१६ "	२७।५९ "
१९ "	५।५७	"	२० "	५।५६ "
२२ "	५।५४	"	२३ "	५।५३ "
२८ "	५।४९	"	२८ "	२३।०८ "
३ मई	५।४४	"	३ मई	१०।२१ "
७ "	२०।३७	"	८ "	२२।०३ "
११ "	२१।३७	"	१२ "	५।३८ "
१३ "	५।३७	"	१४ "	१४।४८ "
१७ "	५।३५	"	१७ "	२६।५९ "
२० "	५।३३	"	२० "	२२।२७ "
२३ "	२४।३२	"	२४ "	५।३१ "
४ जून	५।२९	"	४ जून	२८।१९ "
८ "	५।४१	"	८ "	२८।४४ "
१० "	५।२८	"	१० "	२४।५४ "
१२ "	१९।२३	"	१३ "	५।२८ "
१४ "	५।२८	"	१४ "	१३।३३ "
१७ "	५।२८	"	१७ "	७।२६ "
२० "	७।३३	"	२१ "	५।२९ "
२७ "	२५।०८	"	२८ "	५।३१ "
२ जुलाई	५।३२	"	२ जुलाई	९।५२ "
६ "	५।३४	"	६ "	११।२४ "
८ "	५।३५	"	८ "	८।५४ "
१० "	५।३६	"	१० "	२६।१७ "
१६ "	१५।५४	"	१७ "	५।३९ "
१८ "	५।४०	"	१९ "	५।४० "
[illegible]	[illegible]।३४	"	२३ "	५।४३ "
२५ जुलाई	८।२१	से	२६ जुलाई	५।४४ तक
१ अग.	१७।१५	"	२ अग.	५।४८ "
३ "	१६।०५	"	४ "	५।४९ "
७ "	५।५१	"	७ "	१०।३५ "
९ "	२८।४१	"	१० "	५।५३ "
१० "	२७।१३	"	११ "	५।५३ "
१३ "	५।५४	"	१३ "	२५।२८ "
१५ "	५।५५	"	१५ "	२७।१७ "
१९ "	१०।१९	"	२० "	५।५८ "
२२ "	५।५९	"	२२ "	१८।४७ "
२९ "	६।०३	"	२९ "	२२।५२ "
३१ "	६।०४	"	३१ "	२०।२१ "
१ सितं.	१८।५४	"	२ सितं.	६।०५ "
६ "	१२।०७	"	७ "	६।०७ "
७ "	११।१३	"	८ "	६।०८ "
१० "	६।०९	"	१० "	१०।१९ "
१२ "	६।१०	"	१२ "	११।५९ "
१५ "	१८।२५	"	१६ "	२१।१८ "
१९ "	२९।३९	"	२० "	६।१४ "
२६ "	६।१७	"	२६ "	६।५३ "
२६ "	२९।१०	"	२७ "	६।१७ "
२८ "	२५।११	"	३० "	६।१९ "
३ अक्टू.	१७।४७	"	४ अक्टू.	१७।१४ "
५ "	६।२१	"	५ "	१७।०४ "
१३ "	६।२६	"	१३ "	२८।५९ "
१७ "	१३।५८	"	१८ "	६।२९ "
१८ "	१६।२०	"	१९ "	६।३० "
२४ "	१४।५६	"	२५ "	६।३३ "
२६ "	९।५३	"	२८ "	६।३६ "
२९ "	२४।४१	"	३० "	६।३७ "
३१ "	६।३८	"	३१ "	२२।४१ "
६ नवं.	२८।१७	"	७ नवं.	६।४३ "
१० "	६।४५	"	१० "	११।५५ "
१४ "	६।४८	"	१४ "	२३।५७ "
१५ "	६।४९	"	१५ "	२६।१३ "
१९ "	२७।३३	"	२० "	६।५३ "
२१ "	६।५४	"	२१ "	२३।३३ "
२३ "	६।५५	"	२३ "	१७।४६ "
२४ "	६।५६	"	२५ "	६।५७ "
२६ "	९।१२	"	२७ "	६।५८ "
१ दिसं.	३०।१८	"	२ दिसं.	७।०२ "
४ दिसं.	१०।०६	से	५ दिसं.	७।०५ तक
६ "	१५।१७	"	७ "	७।०६ "
११ "	३०।१३	"	१२ "	७।१० "
१३ "	७।१०	"	१३ "	८।४४ "
१७ "	१२।४५	"	१८ "	७।१३ "
१९ "	७।१४	"	१९ "	१०।१४ "
२० "	२९।१६	"	२१ "	७।१५ "
२२ "	७।१५	"	२२ "	२३।११ "
२३ "	२०।१२	"	२४ "	१७।३० "
२९ "	१२।५५	"	३० "	७।१९ "
१ जन.	७।१९	"	१ जन.	१८।३३ "
३ "	७।२०	"	३ "	२४।१९ "
८ "	१२।०४	"	९ "	७।२० "
१३ "	१९।३३	"	१५ "	७।२० "
१७ "	१५।१५	"	१८ "	७।२० "
१९ "	७।२०	"	१९ "	१०।२० "
२० "	७।३८	"	२१ "	७।१९ "
२६ "	७।१८	"	२६ "	२२।१२ "
४ फर.	१८।३९	"	५ फर.	२०।४७ "
८ "	२४।३५	"	९ "	७।१० "
१० "	७।०९	"	११ "	२४।२८ "
१४ "	७।०६	"	१५ "	७।०५ "
१७ "	७।०३	"	१८ "	७।०३ "
२३ "	६।५८	"	२३ "	७।४२ "
३ मार्च	६।४९	"	३ मार्च	२८।२८ "
७ "	७।२८	"	८ "	६।४४ "
९ "	६।४३	"	९ "	३०।०० "
११ "	२७।५१	"	१२ "	६।४० "
१३ "	६।३९	"	१३ "	२५।१३ "
१६ "	६।३६	"	१६ "	२१।०५ "
१९ "	१७।४८	"	२० "	६।३१ "
२६ "	२५।५५	"	२७ "	६।२३ "
३१ "	६।१८	"	३१ "	१३।०३ "
४ अप्रै.	६।१३	"	४ अप्रै.	१५।२६ "

अमृत सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
१९ मार्च	६।३२	से	१९ मार्च	२०।३९ तक
१६ अप्रै.	६।००	"	१६ अप्रै.	६।५१ "
१९ "	१९।४९	"	२० "	५।५६ "
२२ "	१५।३५	"	२३ "	५।५३ "
१७ मई	५।३८	से	१७ मई	२६।५९ तक
२० "	५।३३	"	२० "	२२।२७ "
१२ जून	१९।२३	"	१३ जून	५।२८ "
१४ "	५।२८	"	१४ "	१३।३३ "
१७ "	५।२८	"	१७ "	७।२६ "
१० जुला.	५।३६	"	१० जुला.	२६।१७ "
१८ "	१७।०७	"	१९ "	५।४० "
३ अग.	१६।०५	"	४ अग.	५।४९ "
७ "	५।५१	"	७ "	१०।०५ "
१५ "	५।५५	"	१५ "	२७।१७ "
३१ "	६।०४	"	३१ "	२०।२१ "
१२ सितं.	६।१०	"	१२ सितं.	११।५९ "
१५ "	१८।२५	"	१६ "	६।१२ "
१३ अक्टू.	६।२६	"	१३ अक्टू.	२८।५९ "
१० नवं.	६।४५	"	१० नवं.	११।५५ "
१९ "	२७।३३	"	२० "	६।५३ "
१७ दिसं.	१२।४५	"	१८ दिसं.	७।१३ "
१४ जन.	७।२०	"	१४ जन.	१९।२२ "
२० "	२८।५८	"	२१ "	७।१९ "
१४ फर.	२०।५४	"	१५ फर.	७।०५ "
१७ "	१५।०३	"	१८ "	७।०३ "
११ मार्च	२७।५१	"	१२ मार्च	६।४० "
१३ "	६।३९	"	१३ "	२५।१३ "
१६ "	६।३६	"	१६ "	२१।०५ "

रवि पुष्य-गुरु पुष्य योग

ये योग केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं। रविपुष्य योग यंत्र, तंत्र, मंत्रों में सिद्धिदायक तथा रत्न धारण व जड़ी-बूटी ग्रहण करने में श्रेयष्कर होते हैं। गुरुपुष्य योग व्यापारिक कार्यों में अधिक फलीभूत होता है।

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
२२ अप्रैल	१५।३५	से	२३ अप्रै.	५।५३ तक
२० मई	५।३३	"	२० मई	२२।२७ "
१७ जून	५।२८	"	१७ जून	७।२६ "
३ अक्टू.	१७।४७	"	४ अक्टू.	६।२१ "
३१ "	६।३८	"	३१ "	२२।४१ "
२० जन.	२८।५८	"	२१ जन.	७।१९ "
१७ फर.	१५।०३	"	१८ फर.	७।०३ "
१६ मार्च	६।३६	"	१६ मार्च	२१।०५ "

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग

तिथि, वार एवं नक्षत्र आदि के संयोग से बनने वाले द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग अपने नामानुसार द्विगुणित तथा त्रिगुणित फल प्रत्येक काम में दिया करते हैं। व्यापार में लगाया या बैंक आदि में जमा किया धन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता है।

द्विपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
२३ मार्च	१२।१४	से	२३ मार्च	२८।४२ तक
२५ मई	२८।५४	"	२६ मई	५।३१ "
५ जून	२२।०७	"	५ जून	२९।२६ "
७ अग.	२६।१५	"	८ अग.	८।१३ "
१० अक्टू.	१८।०९	"	१० अक्टू.	२१।३२ "
४ दिसं.	७।०४	"	४ दिसं.	१०।०६ "
१८ जन.	१२।५६	"	१८ जन.	२०।२३ "
६ फर.	१९।४८	"	६ फर.	२२।३० "
२१ मार्च	१७।१४	"	२२ मार्च	६।२९ "
१ अप्रै.	६।१७	"	१ अप्रै.	१४।४३ "

त्रिपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.तक
१३ अप्रै.	१३।१०	से	१३ अप्रै.	१८।५० तक
१७ "	२५।०४	"	१७ "	२६।२९ "
२७ "	५।४९	"	२७ "	१४।३६ "
१ मई	२२।४४	"	२ मई	७।२४ "
१५ जून	११।००	"	१५ जून	१७।४३ "
२० "	७।३३	"	२० "	११।१७ "
२८ अगस्त	६।०२	"	२८ अग.	२३।४५ "
११ सितं.	६।०९	"	११ सितं.	१०।५२ "
२६ अक्टू.	९।५३	"	२६ अक्टू.	१९।४८ "
३० "	८।०६	"	३० "	२३।२५ "
२८ दिसं.	१२।२१	"	२९ दिसं.	७।१८ "
२ जन.	१३।२१	"	२ जन.	२१।२० "
८ "	७।२०	"	८ "	१२।०४ "
२६ फर.	६।५५	"	२६ फर.	१२।०४ "

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

※ विक्रम संवत् २०५६ शाके १९२१ मध्ये विवाहादि मुहूर्त्ताः ※

समय शुद्धिः

गुरु अस्त—इस वर्ष सम्वत् २०५६ वि. में चैत्र शुक्ल ५ सोमवार दिनांक २२ मार्च १९९९ ई. से वैशाख शुक्ल ६ बुधवार दिनांक २१ अप्रैल १९९९ ई. तक गुरु अस्त रहेगा।

शुक्र अस्त—इस वर्ष श्रावण कृष्ण ३० अमावस्या बुधवार दिनांक ११ अगस्त १९९९ से श्रावण शुक्ल १५ गुरुवार दिनांक २६ अगस्त ९९ तक शुक्र अस्त रहेगा।

इस पंचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त ज्योतिर्गणित की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया गया है। गुरु-शुक्र के अस्तकाल से ३ दिन पूर्व के वृद्धत्वकाल से तथा उदय के बाद ३ दिन तक बाल्यत्व दोष में विवाहादि शुभ कर्म नहीं करने चाहिए तदनुसार ही मुहूर्त्तादि लिखे गये हैं।

नोटः-नीचे लिखे विवाहमुहूर्त्तों में जहाँ कहीं युति, वेध और दग्धा तिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले हैं वे विवाह मुहूर्त्त भी लिखे गये हैं। यहां क्रांति साम्य दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
वैशा.	शु.	११	चन्द्रे	२६	अप्रैल	उ.फा.	रे.७ऽसू॥ऽबु.गु.॥॥ऽ। लग्न गोधूलि सोग्रांगः शुक्र ८ दोषः, मंगल पूज्यः, पादवेधात् बुध गुरु वेधाऽभावः, गणितेन क्रांति साम्याऽभावः स्टै. टा. १८।५६ बाद।
"	"	१२	भौमे	२७	"	उ.फा.	रे.८ ऽसू॥ऽबु.गु.॥॥॥ दिवा लग्न ६।४२ से वृष, ८।३७ से मिथुन, अन्यगो. सोग्रांगः, मंगल पूज्यः, नृपपंचक दोषः रे.७ वृष लग्ने शनि १२ पूज्यः, पादवेधात् बुध गुरु वेधाऽभावः
"	"	१३	बुधे	२८	"	हस्त	रे. ७ ऽसूऽ॥ऽनृ॥॥। दिवा. ल. ६।३८ से वृष, शनि १२ पूज्यः, ८।३३ से मिथुन, अन्य गोधूलि सोग्रांगः, मंगल पूज्यः, गोधूल्यां उत्तरार्ध नृपपंचकाऽभावः
"	"	१४	गुरौ	२९	"	चित्रा	रे. ८॥॥ऽबु.गु.।ऽ॥। दिवा लग्न वृष, मिथुन ६।३४ से १०।४२ तक, वृष लग्ने शनि १२ पूज्यः, गोधूल्यां भद्रा दोषः
ज्ये.	कृ.	४	भौमे	४	मई	मूल	रे. ७॥॥ ऽशु. ऽअ.।ऽ॥ लग्न कुंभ २५।४२ से २७।११ तक
"	"	४	बुधे	५	"	मूल	रे. ७ ।।॥ ऽशु. ऽअ । ऽ॥ दिवालग्न ८।०६ से मिथुन, चन्द्र ७ पूज्यः, १२।३७ से १४।५६ तक सिंह
"	"	५	गुरौ	६	"	उ.षा.	रे. ६ऽचंऽ।ऽशु.॥॥ऽल. गोधूलि सोंग्रांग मंगल पूज्यः, रात्रौ २५।३४ से कुंभ लग्ने नृपपंचक दोषः, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः दग्धा तिथि दोष परिहारः
"	"	६	शुक्रे	७	"	उ.षा.	रे. ५ऽचं.ऽ।ऽशु.।ऽनृ॥।ऽ दिवा लग्न वृष ६।०३ से ७।५७ तक, रेखा ५ दोषः, अति आवश्यके, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः, दग्धा तिथि दोषः
प्र.ज्ये.	कृ.	६	शुक्रे	७	मई	श्रवण	रे. ८ ऽबु.॥॥॥ऽ॥ लग्न कुंभ २५।३० से २६।५९ तक
"	"	७	शनौ	८	"	"	रे. ८ ऽबु.॥॥॥ऽ॥ दिवा ल. ५।५८ से वृष, शनि १२ पूज्यः, अन्यगो सोग्रांगः मंगल पूज्यः
"	"	१०	भौमे	११	"	उ.भा.	रे. ७॥॥।ऽरोऽऽ।लग्न २५।१३ से २६।४२ तक कुंभ
"	"	११	बुधे	१२	"	"	रे. ८॥॥॥ऽऽ॥ दिवा लग्न वृष प्रातः ५।४१ से ६।२९ तक मिथुन लग्ने ७।३७ से ९।४९ तक, क्षय तिथि दोषः आवश्यके, गोधूल्यां नक्षत्रांत दोषः
"	"	११	बुधे	१२	"	रेवती	रे. ८॥ऽगु.॥॥ऽ॥ लग्न कुंभ २५।०९ से, गुरु युतिः क्षय तिथि दोष आवश्यके
द्वि.ज्ये.	शु.	८	चन्द्रे	२१	जून	हस्त	रे. ८।ऽ॥॥ऽ॥। दिवा लग्न ११।११ से ११।५२ तक सिंह, अन्यगोधूलि शुक्र ८ दोषः, रात्रौ वृष लग्न २७।०३ से २८।५८ तक, चोर पंचक दोषः
"	"	९	भौमे	२२	"	हस्त	रे. ७।ऽ॥।ऽचोऽ॥। दिवा लग्न सिंह ९।३० से १०।०१ तक
"	"	१०	बुधे	२३	"	स्वाती	रे. ८॥॥ऽगु.॥ऽ॥दिवा लग्न वृश्चिक १६।२१ से, सायं गोधूलि शुक्र ८ दोषः, रात्रौ २२।२६ से २३।५४ तक कुंभ लग्ने षष्ठे शुक्रः दोष परिहारः वृष लग्ने २६।५५ से, शुक्र शनि पूज्य
"	"	१५	चन्द्रे	२८	"	मूल	रे. ८॥॥॥।ऽऽ। दिवा लग्न १६।०२ से १८।२० तक वृश्चिक, रात्रौ कुंभ लग्न २२।०७ से, षष्ठे शुक्रः दोष परिहारः गणितेन क्रां. साम्याऽभावः
आषा.	कृ.	२	बुधे	३०	"	उ.षा.	रे. ९॥॥॥ऽ। दिवा लग्न सिंह ८।५९ से, वृश्चिक लग्न १५।५४ से १७।१३ तक, गणितेन क्रांति साम्याऽभावः
"	"	७	भौमे	६	जुला.	रेवती	रे. ७॥॥॥ऽअ।ऽ।ऽ लग्न अन्यगोधूलि, रात्रौ वृष लग्न २६।०४ से शनि १२ पूज्यः, दग्धा तिथि दोष परिहारः, क्षय तिथि दोष आवश्यके,
"	"	९	बुधे	७	"	अश्वि.	रे. ६॥ऽगु.॥ऽअऽऽ॥ दिवा लग्न सिंह १०।२५ से १०।४९ तक, अन्यगोधूलि रात्रौ २।०१ से ३।५५ तक वृष लग्ने, शनि १२ पूज्य अन्य गोधूलि वृष लग्ने अग्नि पंचकाऽभावः रे.७
"	"	१२	शनौ	१०	"	रोहि.	रे. ८।ऽ॥॥।ऽ॥ दिवा लग्न ८।१७ से सिंह, १५।१२ से १७।२९ तक वृश्चिक
आषा.	शु.	५	शनौ	१७	"	उ.फा.	रे. १०॥॥॥॥॥ दिवा लग्न १६।०७ से १७।०५ तक वृश्चिक
"	"	६	रवौ	१८	"	हस्त	रे. ७॥॥।ऽअऽऽ॥ लग्न मिथुन रात्रौ २७।५५ से २४।२५ तक
"	"	७	चन्द्रे	१९	"	हस्त	रे. ७॥॥।ऽअऽऽ॥ दिवा लग्न सिंह ७।४५ से १०।०२ तक, वृश्चिक लग्न १४।४० से १६।५७ तक
"	"	७	चन्द्रे	१९	"	चित्रा	रे. ८॥॥।ऽअ।ऽ॥ लग्न अन्यगोधूलि सोग्रांगः शुक्रः ८ दोषः परिहारः रात्रौ २५।१३ से २५।३९ तक वृष लग्ने, शनि १२ पूज्यः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
आषा.	शु.	८	भौमे	२०	जुला.	चित्रा	रे. ८ ॥॥॥ऽऽ॥ दिवा लग्न १४।३६ से १६।५३ तक वृश्चिक, सायं अन्यगोधूलि सोग्रांग: शुक्र ८ दोष परिहार:
"	"	१२	रवौ	२५	"	मूल	रे. ८ ऽसू ॥॥ऽरो॥॥ दिवा लग्न ८।२१ से ९।४० तक सिंह, वृश्चिक लग्ने १४।१७ से सायं अन्यगोधूलि सोग्रांग्र: शुक्र ८ दोष परिहार:, दिवा सिंह लग्नें रोग पंचकाऽभाव: रे.९
श्रावण	कृ.	४	रवौ	१	अग.	उ.भा.	रे.८ ॥॥ऽचो।ऽ ॥ लग्न गोधूलि सोग्रांग: शुक्र ८ दोष परिहार:, रात्री २४।२४ से वृष-मिथुन लग्न, वृषे शनि १२ पूज्य:, मिथुने शुक्र ३ पूज्य:
"	"	५	चन्द्रे	२	"	"	रे. ८ ॥॥ऽचो।ऽ ॥ दिवा लग्न वृश्चिक १३।४६ से १५।३७ तक
"	"	५	चन्द्रे	२	"	रेवती	रे. ८ ॥॥ऽ॥ऽ लग्न गोधूलि सोग्रांग: शुक्र ८ दोष परिहार:, रात्री वृष-मिथुन लग्ने २४।२० से २८।२७ तक, वृषे शनि १२ पूज्य: मिथुने शुक्र ३ पूज्य:, गोधूल्यां वृष लग्ने दग्धा तिथि दोष परिहार:
"	"	११	शनौ	७	"	रोहि.	रे. ८ ॥॥ऽअऽऽ॥दिवा लग्न सिंह ७।५२ से ८।४९ तक
"	"	११	शनौ	७	"	मृग.	रे. ७॥॥ऽअऽऽ॥दिवा लग्न १३।२६ से १५।४४ तक वृश्चिक, चंद्र ७ पूज्य:, सायं अन्यगोधूलि सोग्रांग:, शुक्र ८ दोष परिहार:, रात्री वृष लग्ने २४।०१ से २५।५४ तक, शनि १२ पूज्य:
"	"	१२	रवौ	८	"	"	रे. ८ ॥॥ऽऽ॥ दिवा लग्न सिंह ६।२८ से ७।०१ तक
भाद्रपद	कृ.	४	चन्द्रे	३०	"	अश्वि.	रे. ५ ऽऽगु॥ऽबृ।ऽऽ। लग्न रात्री २४।२४ से २६।३७ तक मिथुन रेखा ५ अल्पदोष:, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभाव:, अति आवश्यके
"	"	७	गुरौ	२	सितं.	रोहि.	रे.५ ऽबु.ऽ॥ऽमं.ऽचौ।ऽ ॥लग्न अन्यगोधूलि, शुक्र षष्ठ दोष परिहार, रात्री मीन लग्ने १९।१९ से २०।४४ तक, मिथुन लग्ने २४।१४ से २६।२६ तक, चौर पंचकाऽभाव: रे.६
"	"	८	शुक्रे	३	"	मृग.	रे. ७ऽशु॥॥ऽऽ॥लग्न अन्यगोधूलि शुक्र षष्ठ दोष परिहार:, रात्री मीन लग्ने १९।१५ से, मिथुन लग्ने २४।१० से २६।२२ तक, मिथुन उत्तरार्ध लग्ने रोग पंचक दोष: रे. ६
भाद्रपद	शु.	२	शनौ	११	"	हस्त	रे. ८ ॥॥ऽचोऽ॥। दिवा लग्न धनु १३।२७ से १५।३१ तक, शुक्र ८ दोष परिहार:, रात्री १८।४३ से २०।०८ तक मीन लग्ने चंद्र ७ पूज्य:, मिथुन लग्ने २३।३७ से २५।५० तक
"	"	३	रवौ	१२	"	चित्रा	रे. १० ॥॥॥॥॥ दिवा लग्न १३।२३ से धनु, शुक्र ८ दोष परिहार:, रात्री मीन लग्ने १८।३९ से चं. ७ पूज्य:, मिथुन लग्ने २३।३४ से
"	"	४	चन्द्रे	१३	"	स्वाती	रे.५ ॥ऽचं.ऽगु.ऽरोऽऽ॥ दिवा लग्न धनु १३।३८ से १५।२३ तक, पादवेधात् चन्द्रवेधाऽभाव: शुक्र ८ दोष परिहार:, रेखा ५ दोष: आवश्यके
"	"	५	भौमे	१४	"	"	रे. ८ ॥ऽचं.ऽगु.॥॥॥दिवालग्न १३।१५ से १४।३६ तक धनु, चन्द्रपादवेध दोष:, शुक्र ८ दोष परिहार: आवश्यके
"	"	९	रवौ	१९	"	उ.षा.	रे. ८ ॥॥ऽअ।ऽ ॥लग्न रात्री २९।३९ से २९।५५ तक सिंह
भाद्रपद	शु.	१०	चन्द्रे	२०	सित.	उ.षा.	रे. ९ ॥॥॥ऽ॥ दिवालग्न धनु १२।५० से १४।५४ तक, शुक्र ८ दोष परिहार:, सायं गोधूलि लग्ने
"	"	१२	बुधे	२२	"	धनि.	रे. ६ऽसू.॥ऽशु.ऽशु।ऽ॥। दिव लग्न १२।४२ से धनु शुक्र ८ दोष परिहार: (शुक्र पादवेध) सायं गोधूलि, रात्री २२।५३ से मिथुन, २७।२५ से २९।४३ तक सिंह लग्ने चंद्र ७ पूज्य:, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभाव:
आश्विन	शु.	१	रवौ	१०	अक्टू.	स्वाती	रे. ६।ऽऽबु.।ऽगु.।ऽ॥। लग्न रात्री २६।१३ से २८।३१ तक सिंह
"	"	२	चन्द्रे	११	"	"	रे. ७॥ऽबु.।ऽगु.।ऽ॥। दिवालग्न वृश्चिक ९।०९ से ११।२६ तक
"	"	८	चन्द्रे	१८	"	उ.षा.	रे. ८ऽमं.॥॥॥ऽ॥ दिवा लग्न ८।४१ से वृश्चिक
"	"	१३	शनौ	२३	"	उ.भा.	रे. १० ॥॥॥॥॥ दिवा लग्न वृश्चिक ८।२१ से १०।३८ तक, क्षय तिथि दोष:
"	"	१३	शनौ	२३	"	रेवती	रे.८ ॥॥ऽऽ॥ लग्न अन्यगोधूलि सोग्रांग: क्षय तिथि दोष: आवश्यके
"	"	१५	रवौ	२४	"	अश्वि.	रे. ६ ॥ऽगु.ऽशु.॥ऽऽ॥ लग्न रात्री २६।३२ से २७।३५ तक सिंह, पादवेधात्शुक्रवेधाऽभाव:
कार्तिक	कृ.	३	बुधे	२७	"	रोहिणी	रे. ९ ॥॥ऽबु.॥॥।लग्न गोधूलि सोग्रांग:
"	"	४	गुरौ	२८	"	मृगशिर	रे.७ ॥॥ऽअऽऽ॥ लग्न सिंह रात्री २५।०२ से २६।१९ तक नक्षत्रांत दोष:
कार्तिक	शु.	३	गुरौ	११	नवं.	मूल	रे. ९ ॥॥ऽचो॥॥ लग्न अन्यगोधूलि सोग्रांग: रात्री २४।०७ से २६।२४ तक सिंह लग्ने
"	"	११	शुक्रे	१९	"	उ.भा.	रे. ७।ऽ।ऽशु।ऽअ॥॥ दिवा लग्न धनु ८।५४ से १०।५७ तक, पाद वेधात्शुक्रवेधाऽभाव:
"	"	१२	शनौ	२०	"	रेवती	रे.९॥॥ऽशु॥॥। दिवा लग्न धनु ८।५० से, सायं गोधूलि
"	"	१५	भौमे	२३	"	रोहिणी	रे. ८ ॥॥ऽसू॥ऽ॥ लग्न रात्री २३।२१ से २५।३७ तक सिंह लग्ने
मा.शीर्ष	कृ.	१	बुधे	२४	"	"	रे. ८ ॥॥ऽसू॥ऽ॥ दिवा लग्न कुंभ १२।२० से १३।३० तक अष्टम शुक्र दोष परिहार:
"	"	९	बुधे	१	दिसं.	उ.फा.	रे. ७ ॥॥।ऽचो।ऽ।ऽ दिवा लग्न धनु ८।०५ से, सायं अन्यगोधूलि, रात्री २२।४८ से २५।०६ तक सिंह लग्ने, दग्धा तिथि दोष परिहार:, दिवा धनु लग्ने चोरपंचक दग्धा तिथि अभाव: रेखा ९
"	"	१०	गुरौ	२	"	हस्त	रे. ८ ॥॥ऽऽ॥ लग्न रात्री २२।४४ से २५।०२ तक सिंह लग्ने
"	"	११	शुक्रे	३	"	चित्रा	रे. ६ ॥ऽशु.॥ऽरोऽऽ॥ दिवा लग्न धनु ७।५९ से, सायं अन्यगोधूलि, रात्री सिंह लग्ने २२।४० से, शुक्रयुति दोष:, आवश्यके, दिवा धनु लग्ने रोग पंचकाऽभाव:
"	"	१२	शनौ	४	"	"	रे.६ ॥ऽशु.॥ऽरोऽऽ॥ दिवा लग्ने धनु ७।५३ से ८।५४ तक, शुक्रयुति दोष:
"	"	१२	शनौ	४	"	स्वाती	रे. ७ ॥॥ऽगु.ऽरो।ऽ ॥ दिवा लग्न कुंभे ११।४१ से १३।०९ तक, रात्री २२।३६ से २४।५४ तक सिंह लग्ने
मार्ग.	शु.	३	शनौ	११	"	उ.षा.	रे.१० ॥॥॥॥॥ दिवा लग्न कुंभ ११।१५ से, सायं अन्यगोधूलि, कुंभ लग्ने चोर पंचक दोष: रेखा ९
"	"	५	चन्द्रे	१३	"	धनिष्ठा	रे. ८ ॥॥।ऽरोऽ॥। दिवा लग्न ८।४४ से ९।२३ तक धनु लग्ने, कुंभ लग्ने ११।०७ से १२।३५ तक, सायं अन्य गोधूलि रात्री सिंह लग्ने २२।०२ से, चन्द्र-शुक्र पूज्य:

शेष पृष्ठ २२९ पर.....

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०५६ विक्रमी (दिनांक १८ मार्च १९९९ से ४ अप्रैल २००० ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय का ज्ञानार्थ कोष्ठक (बन्द कोष्ठकों में घंटा मिनट लिखे गये हैं)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए "सूर्य की पूजा" तथा कन्या के लिए "गुरु की पूजा" वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उस राशिवाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए चौथे, आठवें तथा बारहवें सूर्य व ४, ८ चन्द्र परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अतः चतुर्थ, अष्टम और बारहवें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है तथा चतुर्थ, अष्टम और बारहवें चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्तों की तारीखें लिखी गयी हैं।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष—अप्रैल-२६, २७, २८, २९, मई-४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, जून-२१, २२, २३, २८, ३०, जुलाई-६, ७, १०, अगस्त-३०, सितं.-२, ३, ११, १२, १३, १४, १९, २०, २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २३, २४, २७, २८, नवं.-११, जन.-१५, २२ (२४।२३ बाद), २५, २६, फरवरी-१, २, ९, १०, ११, १५, १९, २१, २८, मार्च-२, ७, ९।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १७ अग. से १६ सितं. तक १७ अक्टू. से १५ नव. तक	**मेष**—अप्रैल-२६, २७, २८, २९, मई-४, ५, ६, ७, ८, जून-२१, २२, २३, २८, ३०, जुला.-७ (१०।२५ बाद), १०, १७, १८, १९, २०, २५, अग.-७, ८, ३०, सितं.-२, ३, ११, १२, १३, १४, १९, २०, २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २४, २७, २८, नवं.-११, २३, २४, दिसं.-१, २, ३, ४, ११, १३, १४, जन.-१५, २२ (२४।२३ बाद), २५, २६, फर.-१, २, १० (२४।५५ बाद), ११, १५, १९, २१, २८, मार्च-२, ९।	वर्षारंभ से २५ मई तक विशेष पूज्य उसके पश्चात् सामान्य पूज्य
वृष—जून-२१, २२, २३, ३० (१२।५० बाद), जुलाई-६, ७, १०, १८, १९, २०, अगस्त-१, २, ७, ८, ३०, सितं.-२० (१२।१० बाद), २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २३, २४, २७, २८, नवं.-१९, २०, २३, २४, दिसं.-१ (११।२२ बाद), २, ३, ४, ११ (१०।०४ बाद), १३, १४, जन.-१५, २५, २६, फर.-९, १०, ११, १५, २१, मार्च-२, ७, ९।	१५ जून से १५ जुलाई तक १७ सितं. से १६ अक्टू. तक १६ नवं. से १५ दिस. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**वृष**—अप्रैल-२७, २८, २९, मई-६ (२५।०८ बाद), ७, ८, ११, १२, जून-२१, २२, २३, ३० (१२।५० बाद), जुला.-६, १०, १८, १९, २०, अग.-१, २, ७, ८, सितं.-२, ३, ११, १२, १३, १४, २० (१२।१० बाद), २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २३, २७, २८, नवं.-१९, २०, २३, २४, दिसं.-१ (११।१२ बाद), २, ३, ४, ११ (१०।०४ बाद), १३, १४, जन.-२५, २६, फर.-९, १० (२४।५५ तक), १५, २१, मार्च-२, ७।	२६ मई से वर्ष अन्त तक विशेष पूज्य
मिथुन—अप्रैल-२६, मई-४, ५, ६ (२५।०८ तक), ११, १२, जून-२३, २८, ३० (१२।५० तक), जुलाई-६, ७, १०, १७, २०, २५, अग.-१, २, ७, ८, ३०, सितं.-२, ३, १२ (२४।४४ बाद), १३, १४, अक्टू.२३, २४, २७, २८, नवं.-११, १९, २०, २३, २४, दिसं.-१ (११।२२ तक), ३ (२०।५९ बाद), ४, १३, (२१।५० बाद) १४, फर.-१५, १९, २१ (१४।०५ तक), २८, मार्च-७, ९।	१५ जून से १६ अग. तक १७ अक्टू. से १५ नवं. तक १३ फर. से १३ मार्च तक	**मिथुन**—अप्रैल-२६, मई-४, ५, ६ (२५।०८ तक), ११, १२, जून-२३, २८, ३० (१२।५० तक), जुला.-६, ७, १७, २०, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० बाद), ८, ३०, सितं.-१२, (२४।४४), १३, १४, १९, २२ (२१।७ बाद), अक्टू. १०, ११, २३, २४, २८ (१५।३३ बाद), नवं. ११, १९, २०, दिसं.-१ (११।२२ तक), ३ (२०।५९ बाद), ४, १३ (२१।५० बाद), १४, जन.-१५, २२, फर.-१, २, ९, १०, ११, १५, १९, २१ (१४।०५ तक), २८, मार्च-७, ९।	वर्षारंभ से २५ मई तक सामान्य पूज्य
कर्क—अप्रैल-२६, २७, २८, २९ (१२।२५ तक), मई-४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, जुला.-१७, १८, १९, २५, अग.-१, २, ७, ८, ३०, सितं.-२, ३, ११, १२(२४।४४ तक), १९, २०, २२ (२१।०७ तक), नवं.-१९, २०, २३, २४, दिसं.-१, २, ३ (२०।५९ तक), ११, १३ (२१।५० तक), जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, ९, १०, ११।	१६ जुला. से १६ सितं. तक १६ नवं. से १५ दिस. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**कर्क**—अप्रैल-२६, २७, २८, २९ (१२।२५ तक), मई-४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, जून-२१, २२, २८, ३०, जुला.-६, ७, १०, १७, १८, १९, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० तक), ३०, सितं.-२, ३ (२७।१४ तक), ११, १२ (२४।४४ तक), १९, २०, २२ (२१।०७ तक), अक्टू.-१८, २३, २४, २७, नवं.-११, १९, २०, २३, २४, दिसं.-१, २, ३ (२०।५९ तक), ११, १३ (२१।५० तक), जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, ९, १०, ११, १९, २१, २८, मार्च-२, ७, ९।	२६ मई से वर्ष अन्त तक सामान्य पूज्य
सिंह—अप्रैल-२६, २७, २८, २९, मई-४, ५, ६, ७, ८, जून-२१, २२, २३, २८, ३०, जुला.-७, १०, अग.-३०, सित.-२, ३, ११, १२, १३, १४, १९, २०, २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २४, २७, २८, नवं.-११, जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, १० (२४।५५ बाद), ११, १५, १९, २१, २८, मार्च-२, ९।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १७ अग. से १६ अक्टू. तक १३ फर. से १३ मार्च तक	**सिंह**—अप्रैल- २६, २७, २८, २९, मई-४, ५, ६, ७, ८, जून-२१, २२, २३, २८, ३०, जुला.-७ (१०।२५ बाद), १०, १७, १८, १९, २०, २५, अग.-७, ८, ३०, सितं.-२, ३, ११, १२, १३, १४, १९, २०, २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २४, २७, २८, नवं.-११, २३, २४, दिसं.-१, २, ३, ४, ११, १३, १४, जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, १० (२४।५५ बाद), ११, १५, १९, २१, २८, मार्च-२, ९।	वर्षारंभ से २५ मई तक विशेष पूज्य
		कन्या—अप्रैल- २६, २८, २९, मई-६ (२५।०८ बाद), ७, ८, ११, १२, जून-	२६ मई से वर्ष अन्त तक विशेष पूज्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
१८, २३, २७, २८, नवं.-१९, २०, २३, २४, दिसं.-१, २, ३, ४, ११ (१०।०४ बाद), १३, १४, जन.-२२, २५, २६. फर.-९, १० (२४।५५ तक), १५, १९, २१, मार्च-२, ७।		सितं.-२, ३, ११, १२, १३, १४, २० (१२।१० बाद), २२ अक्टू.-१०, ११, १८, २३, २७, २८, नवं.-१९, २०, २३, २४, दिसं.-१ (११।२२ बाद), २, ३, ४, ११ (१०।०४ बाद), १३, १४, जन.-२५, २६, फर.-९, १० (२४।५५ तक), १५, २१, मार्च-२, ७।	
तुला—अप्रैल-२६, २७, २८, २९, मई-४, ५, ६ (२५।०८ तक), ११, १२, जून-२१, २२, २३, २८, ३० (१२।५० तक), जुला.-६, ७, १७, १८, १९, २०, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० बाद), ८, ३०, सितं.-११, १२, १३, १४, अक्टू.-२३, २४, २८ (१५।३३ बाद), नवं.-११, १९, २०, दिसं.-१, २, ३, ४, १३ (२१।५० बाद), १४, फर.-१५, १९, २१, २८, मार्च-७, ९।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १५ जून से १५ जुला. तक १७ अक्टू. से १५ दिसं. तक १३ फर. से १३ मार्च तक	**तुला**—अप्रैल- २६, मई-४, ५, ६ (२५।०८ तक), ११, १२, जून-२३, २८, ३० (१२।५० तक), जुला.-६, ७, १७, २०, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० बाद), ८, ३०, सितं.-१२ (२४।४४ बाद), १३, १४, १९, २२ (२१।०७ बाद), अक्टू.-१०, ११, २३, २४, २८ (१५।३३ बाद), नवं.-११, १९, २०, दिसं.-१ (११।२२ तक), ३ (२०।५९ बाद), ४, १३ (२१।५० बाद), १४, जन.-१५, २२, फर.-१, २, ९, १०, ११, १५, १९, २१ (१४।०५ तक), २८, मार्च-७, ९।	वर्षारंभ से २५ मई तक सामान्य पूज्य
वृश्चिक—अप्रैल-२६, २७, २८, २९, मई-४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, जुला.-१७, १८, १९, २०, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० तक), ३०, सितं.-२, ३ (२७।१४ तक), ११, १२, १९, २०, २२ (२१।०७ तक), नवं.-१९, २०, २३, २४, दिसं.-१, २, ३, ४, ११, १३ (२१।५० तक), जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, ९, १०, ११।	१६ जुला. से १६ अग. तक १६ नवं. से १५ दिसं. तक	**वृश्चिक**—अप्रैल- २६, २७, २८, २९ (१२।२५ तक), मई-४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, जून-२१, २२, २८, ३०, जुला.-६, ७, १०, १७, १८, १९, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० तक), ३०, सितं.-२, ३ (२७।१४ तक), ११, १२ (२४।४४ तक), १९, २०, २२ (२१।०७ तक), अक्टू.-१८, २३, २४, २७, नवं.-११, १९, २०, २३, २४, दिसं.-१, २, ३ (२०।५९ तक), ११, १३ (२१।५० तक), जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, ९, १०, ११, १९, २१, २८, मार्च-२, ७, ९।	२६ मई से वर्ष अन्त तक सामान्य पूज्य
धनु—अप्रैल- २६, २७, २८, २९, मई-४, ५, ६, ७, ८, जून-२१, २२, २३, २८, ३०, जुला.-७, १०, अग.-३०, सितं.-२, ३, ११, १२, १३, १४, १९, २०, २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २४, २७, २८, नवं.-११, जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, १० (२४।५५ बाद), ११, १५, १९, २१, २८, मार्च-२, ९।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १५ जून से १५ जुला. तक १७ अग. से १६ सितं. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**धनु**—अप्रैल- २६, २७, २८, २९, मई-४, ५, ६, ७, ८, जून-२१, २२, २३, २८, ३०, जुला.-७ (१०।२५ बाद), १०, १७, १८, १९, २०, २५, अग.-७, ८, ३०, सितं.-२, ३, ११, १२, १३, १४, १९, २०, २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २४, २७, २८, नवं.-११, २३, २४, दिसं.-१, २, ३, ४, ११, १३, १४, जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, १० (२४।५५ बाद), ११, १५, १९, २१, २८, मार्च-२, ९।	वर्षारंभ से २५ मई तक विशेष पूज्य
मकर—जून-२१, २२, २३, २८, ३०, जुला-६, १०, १८, १९, २०, २५, अग.-१, २, ७, ८, सितं.-१९, २०, २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २३, २७, २८, नवं.-११, १९, २०, २३, २४, दिसं.-१ (११।२२ बाद), २, ३, ४, ११, १३, १४, जन.-२५, २६, फर.-१, २, ९, १० (२४।५५ तक), १५, २१, २८, मार्च-२, ७।	१६ जुला. से १६ अग. तक १७ सितं. से १६ अक्टू. तक १४ जन. से १३ मार्च तक	**मकर**—अप्रैल-२७, २८, २९, मई-६ (२५।०८ बाद), ७, ८, ११, १२, जून-२१, २२, २३, ३० (१२।५० बाद), जुला.-६, १०, १८, १९, २०, अग.-१, २, ७, ८, सितं.-२, ३, ११, १२, १३, १४, २० (१२।१० बाद), २२, अक्टू.-१०, ११, १८, २३, २७, २८, नवं.-१९, २०, २३, २४, दिसं.-१ (११।२२ बाद), २, ३, ४, ११ (१०।०४ बाद), १३, १४, जन.-२५, २६, फर.-९, १० (२४।५५ तक), १५, २१, मार्च-२, ७।	वर्षारंभ से २५ मई तक सामान्य पूज्य उसके पश्चात् वर्षान्त तक विशेष पूज्य
कुंभ—अप्रैल- २६, मई-४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, जून-२३, २८, ३०, जुला.-६, ७, १७, २०, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० बाद), ८, ३०, सितं.-१२ (२४।४४ बाद), १३, १४, अक्टू.-२३, २४, २८ (१५।३३ बाद), नवं.-११, १९, २०, दिसं.-१ (११।२२ तक), ३ (२०।५९बाद), ४, ११, १३, १४, फर.-१५, १९, २१ (१४।०५ तक), २८, मार्च-२, ७, ९।	१५ जून से १५ जुला. तक १७ अग. से १६ सितं. तक १७ अक्टू. से १५ नवं. तक १३ फर. से १३ मार्च तक	**कुंभ**—अप्रैल-२६, मई-४, ५, ६ (२५।०८ तक), ११, १२, जून-२३, २८, ३० (१२।५० तक), जुला.-६, ७, १७, २०, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० बाद), ८, ३०, सितं.-१२ (२४।४४ बाद), १३, १४, १९, २२ (२१।०७ बाद), अक्टू.-१०, ११, २३, २४, २८ (१५।३३ बाद), नवं.-११, १९, २०, दिसं.-१ (११।२२ तक), ३ (२०।५९ बाद), ४, १३ (२१।५० बाद), १४, जन.-१५, २२, फर.-१, २, ९, १०, ११, १५, १९, २१ (१४।०५ तक), २८, मार्च-७, ९।	२६ मई से वर्षान्त तक सामान्य पूज्य
मीन—अप्रैल- २६, २७, २८, २९ (१२।२५ तक), मई-४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, जुला.-१७, १८, १९, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० तक), ३०, सितं.-२, ३ (२७।१४ तक), ११, १२ (२४।४४ तक), १९, २०, २२, नवं.-१९, २०, २३, २४, दिसं.-१, २, ३ (२०।५९ तक), ११, १३, जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, ९, १०, ११।	१४ अप्रैल से १४ मई तक १६ जुला. से १६ अग. तक १७ सितं. से १७ अक्टू. तक १६ नवं. से १५ दिसं. तक	**मीन**—अप्रैल-२६, २७, २८, २९ (१२।२५ तक), मई-४, ५, ६, ७, ८, ११, १२, जून.-२१, २२, २८, ३० जुला.-६, ७, १०, १७, १८, १९, २५, अग.-१, २, ७ (२१।१० तक), ३०, सितं.-२, ३ (२७।१४ तक), ११, १२ (२४।४४ तक), १९, २०, २२ (२१।०७ तक), अक्टू.-१८, २३, २४, २७, नव.-११, १९, २०, २३, २४, दिसं.-१, २, ३ (२०।५९ तक), ११, १३ (२१।५० तक), जन.-१५, २२, २५, २६, फर.-१, २, ९, १०, ११, १९, २१, २८, मार्च-२, ७, ९।	वर्षारंभ से २५ मई तक सामान्य पूज्य

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साढ़े पांच बजे (प्रातः ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रातः ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से१५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७ कला कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १.४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०.४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४.४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८.४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१.०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३.२९.३५.४५) में से घटा देने से शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का ग्रह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया पृथक-पृथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट के ग्रह स्पष्ट करने हैं।**

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३.२८.३८.०४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३.२९.३५.४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं-यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं	(-)३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अतः ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्तर गत १५ घंटे१५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति=३४६१x९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३१ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३१)=३-२९-१४-४३ अतः १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३-२९-१४-४३ बना।** इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अतः उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अतः क्रिया पूर्ववत १६८x९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १' ४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)- (१-४७)=११-१२-५६-३५ अतः **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५** आया।

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

कृपया पाठक इन (❖ को $\frac{3}{4}$) (★ को $\frac{1}{2}$) (● को $\frac{1}{4}$) पढ़ें।

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०.०१ ●	०.०२ ●	०.०५	०.०७ ●	०.१०	०.१२ ●	०.१५	०.१७ ●	०.२०	०.२२ ●	०.२५	०.२७ ●	०.३०
२	०.०२ ●	०.०५	०.१०	०.१५	०.२०	०.२५	०.३०	०.३५	०.४०	०.४५	०.५०	०.५५	१.००
३	०.०३ ●	०.०७ ●	०.१५	०.२२ ●	०.३०	०.३७ ●	०.४५	०.५२ ●	१.००	१.०७ ●	१.१५	१.२२ ●	१.३०
४	०.०५	०.१०	०.२०	०.३०	०.४०	०.५०	१.००	१.१०	१.२०	१.३०	१.४०	१.५०	२.००
५	०.०६ ●	०.१२ ●	०.२५	०.३७ ●	०.५०	१.०२ ●	१.१५	१.२७ ●	१.४०	१.५२ ●	२.०५	२.१७ ●	२.३०
६	०.०७ ●	०.१५	०.३०	०.४५	१.००	१.१५	१.३०	१.४५	२.००	२.१५	२.३०	२.४५	३.००
७	०.०८ ●	०.१७ ●	०.३५	०.५२ ●	१.१०	१.२७ ●	१.४५	२.०२ ●	२.२०	२.३७ ●	२.५५	३.१२ ●	३.३०
८	०.१०	०.२०	०.४०	१.००	१.२०	१.४०	२.००	२.२०	२.४०	३.००	३.२०	३.४०	४.००
९	०.११ ●	०.२२ ●	०.४५	१.०७ ●	१.३०	१.५२ ●	२.१५	२.३७ ●	३.००	३.२२ ●	३.४५	४.०७ ●	४.३०
१०	०.१२ ●	०.२५	०.५०	१.१५	१.४०	२.०५	२.३०	२.५५	३.२०	३.४५	४.१०	४.३५	५.००
११	०.१३ ●	०.२७ ●	०.५५	१.२२ ●	१.५०	२.१७ ●	२.४५	३.१२ ●	३.४०	४.०७ ●	४.३५	५.१२ ●	५.३०
१२	०.१५	०.३०	१.००	१.३०	२.००	२.३०	३.००	३.३०	४.००	४.३०	५.००	५.३०	६.००
१३	०.१६ ●	०.३२ ●	१.०५	१.३७ ●	२.१०	२.४२ ●	३.१५	३.४७ ●	४.२०	४.५२ ●	५.२५	५.५७ ●	६.३०
१४	०.१७ ●	०.३५	१.१०	१.४५	२.२०	२.५५	३.३०	४.०५	४.४०	५.१५	५.५०	६.२५	७.००
१५	०.१८ ●	०.३७ ●	१.१५	१.५२ ●	२.३०	३.०७ ●	३.४५	४.२२ ●	५.००	५.३७ ●	६.१५	६.५२ ●	७.३०
१६	०.२०	०.४०	१.२०	२.००	२.४०	३.२०	४.००	४.४०	५.२०	६.००	६.४०	७.२०	८.००
१७	०.२१ ●	०.४२ ●	१.२५	२.०७ ●	२.५०	३.३२ ●	४.१५	४.५७ ●	५.४०	६.२२ ●	७.०५	७.४७ ●	८.३०
१८	०.२२ ●	०.४५	१.३०	२.१५	३.००	३.४५	४.३०	५.१५	६.००	६.४५	७.३०	८.१५	९.००
१९	०.२३ ●	०.४७ ●	१.३५	२.२२ ●	३.१०	३.५७ ●	४.४५	५.३२ ●	६.२०	७.०७ ●	७.५५	८.४२ ●	९.३०
२०	०.२५	०.५०	१.४०	२.३०	३.२०	४.१०	५.००	५.५०	६.४०	७.३०	८.२०	९.१०	१०.००
२१	०.२६ ●	०.५२ ●	१.४५	२.३७ ●	३.३०	४.२२ ●	५.१५	६.०७ ●	७.००	७.५२ ●	८.४५	९.३७ ●	१०.३०
२२	०.२७ ●	०.५५	१.५०	२.४५	३.४०	४.३५	५.३०	६.२५	७.२०	८.१५	९.१०	१०.०५	११.००
२३	०.२८ ●	०.५७ ●	१.५५	२.५२ ●	३.५०	४.४७ ●	५.४५	६.४२ ●	७.४०	८.३७ ●	९.३५	१०.३२ ●	११.३०
२४	०.३०	१.००	२.००	३.००	४.००	५.००	६.००	७.००	८.००	९.००	१०.००	११.००	१२.००
२५	०.३१ ●	१.०२ ●	२.०५	३.०७ ●	४.१०	५.१२ ●	६.१५	७.१७ ●	८.२०	९.२२ ●	१०.२५	११.२७ ●	१२.३०
२६	०.३२ ●	१.०५	२.१०	३.१५	४.२०	५.२५	६.३०	७.३५	८.४०	९.४५	१०.५०	११.५५	१३.००
२७	०.३३ ●	१.०७ ●	२.१५	३.२२ ●	४.३०	५.३७ ●	६.४५	७.५२ ●	८.५०	९.५७ ●	११.०५	१२.१२ ●	१३.३०
३८	०.३५	१.१०	२.२०	३.३०	४.४०	५.५०	७.००	८.१०	९.२०	१०.३०	११.४०	१२.५०	१४.००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३९	०.३८ ●	१.१७ ●	२.३५	३.५२ ●	५.१०	६.२७ ●	७.४५	९.०२ ●	१०.२०	११.३७ ●	१२.५५	१४.१२ ●	१५.३०
३२	०.४०	१.२०	२.४०	४.००	५.२०	६.४०	८.००	९.२०	१०.४०	१२.००	१३.२०	१४.४०	१६.००
३३	०.४१ ●	१.२२ ●	२.४५	४.०७ ●	५.३०	६.५२ ●	८.१५	९.३७ ●	११.००	१२.२२ ●	१३.४५	१५.०७ ●	१६.३०
३४	०.४२ ●	१.२५	२.५०	४.१५	५.४०	७.०५	८.३०	९.५५	११.२०	१२.४५	१४.१०	१५.३५	१७.००
३५	०.४३ ●	१.२७ ●	२.५५	४.२२ ●	५.५०	७.१७ ●	८.४५	१०.१२ ●	११.४०	१३.०७ ●	१४.३५	१६.०२ ●	१७.३०
३६	०.४५	१.३०	३.००	४.३०	६.००	७.३०	९.००	१०.३०	१२.००	१३.३०	१५.००	१६.३०	१८.००
३७	०.४६ ●	१.३२ ●	३.०५	४.३७ ●	६.१०	७.४२ ●	९.१५	१०.४७ ●	१२.२०	१३.५२ ●	१५.२५	१६.५७ ●	१८.३०
३८	०.४७ ●	१.३५	३.१०	४.४५	६.२०	७.५५	९.३०	११.०५	१२.४०	१४.१५	१५.५०	१७.२५	१९.००
३९	०.४८ ●	१.३७ ●	३.१५	४.५२ ●	६.३०	८.०७ ●	९.४५	११.२२ ●	१३.००	१४.३७ ●	१६.१५	१७.५२ ●	१९.३०
४०	०.५०	१.४०	३.२०	५.००	६.४०	८.२०	१०.००	११.४०	१३.२०	१५.००	१६.४०	१८.२०	२०.००
४१	०.५१ ●	१.४२ ●	३.२५	५.०७ ●	६.५०	८.३२ ●	१०.१५	११.५७ ●	१३.४०	१५.२२ ●	१७.०५	१८.४७ ●	२०.३०
४२	०.५२ ●	१.४५	३.३०	५.१५	७.००	८.४५	१०.३०	१२.१५	१४.००	१५.४५	१७.३०	१९.१५	२१.००
४३	०.५३ ●	१.४७ ●	३.३५	५.२२ ●	७.१०	८.५७ ●	१०.४५	१२.३२ ●	१४.२०	१६.०७ ●	१७.५५	१९.४२ ●	२१.३०
४४	०.५५	१.५०	३.४०	५.३०	७.२०	९.१०	११.००	१२.५०	१४.४०	१६.३०	१८.२०	२०.१०	२२.००
४५	०.५६ ●	१.५२ ●	३.४५	५.३७ ●	७.३०	९.२२ ●	११.१५	१३.०७ ●	१५.००	१६.५२ ●	१८.४५	२०.३७ ●	२२.३०
४६	०.५७ ●	१.५५	३.५०	५.४५	७.४०	९.३५	११.३०	१३.२५	१५.२०	१७.१५	१९.१०	२१.०५	२३.००
४७	०.५८ ●	१.५७ ●	३.५५	५.५२ ●	७.५०	९.४७ ●	११.४५	१३.४२ ●	१५.४०	१७.३७ ●	१९.३५	२१.३२ ●	२३.३०
४८	१.००	२.००	४.००	६.००	८.००	१०.००	१२.००	१४.००	१६.००	१८.००	२०.००	२२.००	२४.००
४९	१.०१ ●	२.०२ ●	४.०५	६.०७ ●	८.१०	१०.१२ ●	१२.१५	१४.१७ ●	१६.२०	१८.२२ ●	२०.२५	२२.२७ ●	२४.३०
५०	१.०२ ●	२.०५	४.१०	६.१५	८.२०	१०.२५	१२.३०	१४.३५	१६.४०	१८.४५	२१.००	२३.१५	२५.३०
५१	१.०३ ●	२.०७ ●	४.१५	६.२२ ●	८.३०	१०.३७ ●	१२.४५	१४.५२ ●	१७.००	१९.०७ ●	२१.१५	२३.२२ ●	२५.३०
५२	१.०५	२.१०	४.२०	६.३०	८.४०	१०.५०	१३.००	१५.१०	१७.२०	१९.३०	२१.४०	२३.५०	२६.००
५३	१.०६ ●	२.१२ ●	४.२५	६.३७ ●	८.५०	११.०२ ●	१३.१५	१५.२७ ●	१७.४०	१९.५२ ●	२२.०५	२४.१७ ●	२६.३०
५४	१.०७ ●	२.१५	४.३०	६.४५	९.००	११.१५	१३.३०	१५.४५	१८.००	२०.१५	२२.३०	२४.४५	२७.००
५५	१.०८ ●	२.१७ ●	४.३५	६.५२ ●	९.१०	११.२७ ●	१३.४५	१६.०२ ●	१८.२०	२०.३७ ●	२२.५५	२५.१२ ●	२७.३०
५६	१.१०	२.२०	४.४०	७.००	९.२०	११.४०	१४.००	१६.२०	१८.४०	२१.००	२३.२०	२५.४०	२८.००
५७	१.११ ●	२.२२ ●	४.४५	७.०७ ●	९.३०	११.५२ ●	१४.१५	१६.३७ ●	१९.००	२१.२२ ●	२३.४५	२६.०७ ●	२८.३०
५८	१.१२ ●	२.२५	४.५०	७.१५	९.४०	१२.०५	१४.३०	१६.५५	१९.२०	२१.४५	२४.१०	२६.३५	२९.००
५९	१.१३ ●	२.२७ ●	४.५५	७.२२ ●	९.५०	१२.१७ ●	१४.४५	१७.१२ ●	१९.४०	२२.०७ ●	२४.३५	२७.०२ ●	२९.३०
६०	१.१५	२.३०	५.००	७.३०	१०.००	१२.३०	१५.००	१७.३०	२०.००	२२.३०	२५.००	२७.३०	३०.००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मार्च सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५०' ।३३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
१८	११ ०३ ०५ ५६	११ ०६ ०१ ०३	०६ १८ २१ २८	११ ०६ २९ ४०	११ १३ ४७ १५	० ०५ ३९ १०	० ०७ ५६ २५	३ २६ ३१ ४८	९ २१ १८ ४०	९ ०९ ५१ ३०	७ १६ ३८ ५४	१८
१९	११ ४ ५ ३९	११ २० ३९ ४७	०६ १८ २१३४व	११ ०५ ३७ ०८	११ १४ ०१ ४२	० ०६ ५१ ४५	० ०८ ०३ १२	३ २६ २८ ३७	९ २१ २१ २८	९ ०९ ५३ ०३	७ १६ ३८ ४४	१९
२०	११ ५ ५ २०	०० ०५ २६ ३३	०६ १८ २० ५७	११ ०४ ४२ ४०	११ १४ १६ ८	० ०८ ०४ १८	० ०८ १० ०२	३ २६ २५ २७	९ २१ २४ १५	९ ०९ ५४ ३२	७ १६ ३८ ३२	२०
२१	११ ६ ४ ५९	०० २० १३ २४	०६ १८ १९ २४	११ ०३ ४७ २०	११ १४ ३० ३५	० ०९ १६ ४६	० ०८ १६ ५४	३ २६ २२ १६	९ २१ २७ ००	९ ०९ ५६ ००	७ १६ ३८ १८	२१
२२	११ ७ ४ ३६	०१ ०४ ५२ ५८	०६ १८ १७ १७	११ ०२ ५२ २५	११ १४ ४५ ०४	० १० २९ १०	० ०८ २३ ५०	३ २६ १९ ०५	६ २१ २९ ४०	९ ०९ ५७ २५	७ १६ ३८ ०२	२२
२३	११ ८ ०४ ८	०१ १९ १९ ३३	०६ १८ १४ १४	११ ०१ ५९ ००	११ १४ ५९ ३२	० ११ ४१ २९	० ०८ ३० ४५	३ २६ १५ ५४	९ २१ ३२ २०	९ ०९ ५८ ५३	७ १६ ३७ ४५	२३
२४	११ ०९ ०३ ४०	०२ ०३ २९ ३२	०६ १८ १० ३६	११ ०१ ०८ १०	११ १५ १४ ०२	० १२ ५३ ४५	० ०८ ३७ ४५	३ २६ १२ ४४	९ २१ ३५ ००	९ १० ०० १५	७ १६ ३७ २५	२४
२५	११ १० ०३ ०९	०२ १७ २१ २८	०६ १८ ०६ ०९	११ ०० २० ३७	११ १५ २८ ३२	० १४ ०५ ५५	० ०८ ४४ ४७	३ २६ ०९ ३३	९ २१ ३७ ३६	९ १० ०१ ३७	७ १६ ३७ ०३	२५
२६	११ ११ ०२ ३७	०३ ०० ५५ ३५	०६ १८ ०० ५६	१० २९ ३७ १०	११ १५ ४३ ०२	० १५ १८ ००	० ०८ ५१ ५२	३ २६ ०६ २२	९ २१ ४० १०	९ १० ०४ १६	७ १६ ३६ १४	२६
२७	११ १२ ०२ ०२	०३ १४ १३ १०	०६ १७ ५४ ५७	१० २८ ५८ २८	११ १५ ५७ ३२	० १६ ३० ००	० ०८ ५८ ५८	३ २६ ०३ ११	९ २१ ४२ ४२	९ १० ०५ ३५	७ १६ ३५ ४७	२७
२८	११ १३ ०१ २६	०३ २७ १५ ५८	०६ १७ ४८ १३	१० २८ २४ ५५	११ १६ १२ ०३	० १७ ४१ ५५	० ०९ ०६ ०५	३ २६ ०० ०१	९ २१ ४५ १२	९ १० ०६ ५०	७ १६ ३५ १८	२८
२९	११ १४ ०० ५०	०४ १० ०५ ४९	०६ १७ ४० ४४	१० २७ ५६ ५०	११ १६ २६ ३४	० १८ ५३ ४५	० ०९ १३ १७	३ २५ ५६ ५०	९ २१ ४७ ४०	९ १० ०८ ०४	७ १६ ३४ ४५	२९
३०	११ १५ ०० १०	०४ २२ ४४ १५	०६ १७ ३२ २५	१० २७ ३४ २५	११ १६ ४१ ०६	० २० ०५ ३०	० ०९ २० ३०	३ २५ ५३ ३९	९ २१ ५० ०५	९ १० ०९ १५	७ १६ ३४ १३	३०
३१	११ १५ ५९ २७	०५ ०५ १२ २९	०६ १७ २३ २३	१० २७ १७ ५५	११ १६ ५५ ३७	० २१ १७ १३	० ०९ २७ ४३	३ २५ ५० २८	९ २१ ५२ ३०	९ १० ०९ १५	७ १६ ३४ १३	३१

दैनिक ग्रह-स्पष्ट

इस पंचांग में यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः ५।३० बजे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-न्यूजीलैण्ड के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर + ६ घं. ३० मि. है। अतः ये ग्रह स्पष्ट न्यूजीलैंड स्टैं. टा. के अनुसार मध्यान्ह १२ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

अप्रैल सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५१' ।२३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	बुध	मंगल	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रैल
१	११ १७ ४२ ४३	१० ०१ ५० ०२	०० १२ ४१ ४१	१० २० ०९ ३०	० १५ १९ ३५	१० २९ ०१ ००	० २१ ३८ ५४	३ ०६ २३ ३९	९ २५ ४७ ४९	९ १२ २० १५	७ १८ ५७ ४६	१
२	११ १८ ४१ ५४	१० १४ ३१ ४९	०० १३ २५ २१	१० २१ १८ १०	० १५ ३३ ०८	११ ०० १५ ०४	० २१ ४५ ५०	३ ०६ २० २८	९ २५ ५० १४	९ १२ २१ २५	७ १८ ५७ ११	२
३	११ १९ ४१ ०५	१० २७ ३५ ०७	०० १४ ०८ ५७	१० २२ २९ ०५	० १५ ४६ ४४	११ ०१ २९ ०८	० २१ ५२ ४९	३ ०६ १७ १७	९ २५ ५२ ३७	९ १२ २२ ३४	७ १८ ५६ ३५	३
४	११ २० ४० १२	११ ११ ०० १८	०० १४ ५२ ३१	१० २३ ४२ १०	० १६ ०० २१	११ ०२ ४३ ११	० २१ ५९ ५०	३ ०६ १४ ०७	९ २५ ५४ ५८	९ १२ २३ ४२	७ १८ ५५ ५६	४
५	११ २१ ३९ १६	११ २४ ४५ ४०	०० १५ ३६ ०२	१० २४ ५७ २२	० १६ १४ ०१	११ ०३ ५७ १५	० २२ ०६ ५२	३ ०६ १० ५६	९ २५ ५६ १७	९ १२ २४ ४८	७ १८ ५५ १५	५
६	११ २२ ३८ १९	०० ०८ ४७ ३८	०० १६ १९ ३०	१० २६ १४ ३७	० १६ २७ ४४	११ ०५ ११ १७	० २२ १३ ५६	३ ०६ ०७ ४५	९ २५ ५९ ३३	९ १२ २५ ५३	७ १८ ५४ ३४	६
७	११ २३ ३७ २१	०० २३ ०१ १३	०० १७ ०२ ५६	१० २७ ३३ ५३	० १६ ४१ २९	११ ०६ २५ १८	० २२ २१ ०३	३ ०६ ०४ ३४	९ २६ ०१ ४७	९ १२ २६ ५६	७ १८ ५३ ५०	७

प्रकाशक : ओमप्रकाश प्रभाकर, ४९, [illegible] दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अप्रैल सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५०' १३६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रैल
१	११ १६ ५८ ४५	५ १७ ३१ २८	६ १७ १३ ३१	१० २७ ७ २०	११ १७ १० ०९	० २२ २८ ४९	० ०९ ३४ ५८	३ २५ ४७ १८	९ २१ ५४ ५१	९ १० १० २५	७ १६ ३३ ३७	१
२	११ १७ ५७ ५८	५ २९ ४२ ०५	६ १७ ०२ ५९	१० २७ २ २७	११ १७ २४ ४१	० २३ ४० २०	० ०९ ४२ १५	३ २५ ४४ ०७	९ २१ ५७ ०९	९ १० ११ ३३	७ १६ ३२ ५९	२
३	११ १८ ५७ ०८	६ ११ ४५ १७	६ १६ ५१ २१	१० २७ ०२ ५७	११ १७ ३९ १२	० २४ ५१ ४६	० ०९ ४९ ३२	३ २५ ४० ५६	९ २१ ५९ २६	९ १० १२ ३९	७ १६ ३२ १९	३
४	११ १९ ५६ १७	६ २३ ४२ २९	६ १६ ३९ ३७	१० २७ ०८ ३८	११ १७ ५३ ४१	० २६ ०३ ०६	० ०९ ५६ ५०	३ २५ ३७ ४५	९ २२ ०१ ४१	९ १० १३ ४४	७ १६ ३१ ३७	४
५	११ २० ५५ २४	७ ०५ ३५ ३४	६ १६ २६ ५०	१० २७ १९ ५३	११ १८ ०८ १२	० २७ १४ २१	० १० ०४ १०	३ २५ ३४ ३५	९ २२ ०३ ५३	९ १० १४ ४७	७ १६ ३० ५४	५
६	११ २१ ५४ २९	७ १७ २७ १२	६ १६ १३ २०	१० २७ ३६ ०९	११ १८ २२ ४२	० २८ २५ ३०	० १० ११ ३३	३ २५ ३१ २४	९ २२ ०६ ०३	९ १० १५ ४८	७ १६ ३० ०८	६
७	११ २२ ५३ ३२	७ २९ २० ४४	६ १५ ५९ ०७	१० २७ ५७ ४७	११ १८ ३७ ११	० २९ ३६ ३५	० १० १८ ५८	३ २५ २८ १३	९ २२ ०८ १०	९ १० १६ ४८	७ १६ २९ २१	७
८	११ २३ ५२ ३३	८ ११ २० १५	६ १५ ४४ १४	१० २८ २४ ०२	११ १८ ५१ ४०	१ ०० ४७ ३३	० १० २६ २६	३ २५ २५ ०२	९ २२ १० १५	९ १० १७ ४५	७ १६ २८ ३२	८
९	११ २४ ५१ ३१	८ २३ ३० २३	६ १५ २८ ४०	१० २८ ५४ १९	११ १९ ०६ ११	१ ०१ ५८ २५	० १० ३३ ५६	३ २५ २१ ५२	९ २२ १२ १७	९ १० १८ ४०	७ १६ २७ ४२	९
१०	११ २५ ५० २८	९ ०५ ५६ ०७	६ १५ १२ २७	१० २९ २८ ५५	११ १९ २० ३८	१ ०३ ०९ ११	० १० ४१ २७	३ २५ १८ ४१	९ २२ १४ १८	९ १० १९ ३३	७ १६ २६ ५०	१०
११	११ २६ ४९ २३	९ १८ ४२ २१	६ १४ ५५ २५	११ ०० ०७ ४०	११ १९ ३५ ०४	१ ०४ १९ ५२	० १० ४८ ५७	३ २५ १५ ३०	९ २२ १६ १६	९ १० २० २५	७ १६ २५ ५६	११
१२	११ २७ ४८ १५	१० ०१ ५३ २२	६ १४ ३७ ५७	११ ०० ४९ ४९	११ १९ ४९ ३२	१ ०५ ३० २७	० १० ५६ २८	३ २५ १२ १९	९ २२ १८ १२	९ १० २१ १५	७ १६ २५ ००	१२
१३	११ २८ ४७ ०६	१० १५ ३२ १२	६ १४ १९ ५४	११ ०१ ३६ ०१	११ २० ०३ ५८	१ ०६ ४० ५६	० ११ ०४ ००	३ २५ ०९ ०८	९ २२ २० ०५	९ १० २२ ०३	७ १६ २४ ०३	१३
१४	११ २९ ४५ ५५	१० २९ ३९ ४३	६ १४ ०१ १८	११ ०२ २५ ३२	११ २० १८ २३	१ ०७ ५१ १९	० ११ ११ ३४	३ २५ ०५ ५८	९ २२ २१ ५४	९ १० २२ ४९	७ १६ २३ ०४	१४
१५	० ०० ४४ ४१	११ १४ १३ ५०	६ १३ ४२ १०	११ ०३ १८ ०५	११ २० ३२ ४७	१ ०९ ०१ ३४	० ११ १९ ०९	३ २५ ०२ ४७	९ २२ २३ ४२	९ १० २३ ३३	७ १६ २२ ०४	१५
१६	० ०१ ४३ २६	११ २९ ०९ ०६	६ १३ २२ ३२	११ ०४ १३ ४१	११ २० ४७ १०	१ १० ११ ४४	० ११ २६ ४६	३ २४ ५९ ३६	९ २२ २५ २७	९ १० २४ १५	७ १६ २१ ०२	१६
१७	० ०२ ४२ ११	०० १४ १६ ५८	६ १३ ०२ २७	११ ०५ १२ ४४	११ २१ ०१ ३१	१ ११ २१ ४७	० ११ ३४ २४	३ २४ ५६ २५	९ २२ २७ ०९	९ १० २४ ५५	७ १६ १९ ५९	१७
१८	० ०३ ४० ५०	०० २९ २७ ०४	६ १२ ४१ ५७	११ ०६ १४ ०६	११ २१ १५ ५३	१ १२ ३१ ४३	० ११ ४२ ०३	३ २४ ५३ १५	९ २२ २८ ४८	९ १० २५ ३३	७ १६ १८ ५३	१८
१९	० ०४ ३९ २९	०१ १४ २९ ००	६ १२ २१ ०२	११ ०७ १८ १४	११ २१ ३० १२	१ १३ ४१ ३२	० ११ ४९ ४३	३ २४ ५० ०४	९ २२ ३० २६	९ १० २६ ०९	७ १६ १७ ४७	१९
२०	० ०५ ३८ ०६	१ २९ १४ ०७	६ ११ ५९ ४७	११ ०८ २४ ५६	११ २१ ४४ ३०	१ १४ ५१ १४	० ११ ५७ २३	३ २४ ४६ ५३	९ २२ ३२ ००	९ १० २६ ४४	७ १६ १६ ३९	२०
२१	० ०६ ३६ ४१	२ १३ ३६ ४८	६ ११ ३८ १३	११ ०९ ३४ ०८	११ २१ ५८ ४६	१ १६ ०० ४९	० १२ ०५ ०३	३ २४ ४३ ४२	९ २२ ३३ ३१	९ १० २७ १७	७ १६ १५ २९	२१
२२	० ०७ ३५ १४	२ २७ ३४ ३५	६ ११ १६ २३	११ १० ४५ ४६	११ २२ १३ ०१	१ १७ १० १७	० १२ १२ ४४	३ २४ ४० ३२	९ २२ ३५ ००	९ १० २७ ४७	७ १६ १४ १८	२२
२३	० ०८ ३३ ४६	३ ११ ०७ ४८	६ १० ५४ २०	११ ११ ५९ ४७	११ २२ २७ १५	१ १८ १९ ३८	० १२ २० २५	३ २४ ३७ २१	९ २२ ३६ २५	९ १० २८ १५	७ १६ १३ ०६	२३
२४	० ०९ ३२ १५	३ २४ १८ ४०	६ १० ३२ ०५	११ १३ १६ ०७	११ २२ ४२ २८	१ १९ २८ ४१	० १२ २८ ०७	३ २४ ३४ १०	९ २२ ३७ ४९	९ १० २८ ४१	७ १६ ११ ५२	२४
२५	० १० ३० ४२	४ ०७ १० २३	६ १० ०८ ४२	११ १४ ३४ ३५	११ २२ ५५ ३८	१ २० ३७ ५६	० १२ ३५ ४८	३ २४ ३० ५९	९ २२ ३९ ०८	९ १० २९ ०५	७ १६ १० ३६	२५
२६	० ११ २८ ०८	४ १९ ४६ २९	६ ०९ ४७ १३	११ १५ ५५ १४	११ २३ ०९ ४७	१ २१ ४६ ५३	० १२ ४३ २९	३ २४ २७ ४९	९ २२ ४० २६	९ १० २९ २८	७ १६ ०९ २०	२६
२७	० १२ २७ ३१	५ ०२ १० १३	६ ०९ २३ ४२	११ १७ १७ ५९	११ २३ २३ ५४	१ २२ ५५ ४३	० १२ ५१ १०	३ २४ २४ ३८	९ २२ ४१ ४१	९ १० २९ ४९	७ १६ ०८ ०३	२७
२८	० १३ २५ ५३	५ १४ २४ २५	६ ०९ ०२ १०	११ १८ ४२ ४५	११ २३ ३७ ५८	१ २४ ०४ २४	० १२ ५८ ५०	३ २४ २१ २७	९ २२ ४२ ५४	९ १० ३० ०७	७ १६ ०६ ४४	२८
२९	० १४ २३ १३	५ २६ ३१ १७	६ ०८ ३९ ४०	११ २० ०९ २९	११ २३ ५२ ०१	१ २५ १२ ५७	० १३ ०६ ३१	३ २४ १८ १६	९ २२ ४४ ०३	९ १० ३० २४	७ १६ ०५ २४	२९
३०	० १५ २२ ३१	६ ०८ ३२ ३०	६ ०८ १७ १६	११ [illegible]	[illegible]	[illegible]	० १३ १४ ११	३ २४ १५ ०६	९ २२ ४५ ०९	९ १० ३० ३८	७ १६ ०४ ०२	३०

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

मई सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५०' ।४०"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मई
१	० १६ २० ४८	६ २० २९ २४	६ ०७ ५५ ००	११ २३ ०८ ३६	११ २४ २० ००	१ २७ २९ ३८	० १३ २१ ५२	३ २४ ११ ५५	९ २२ ४६ १३	९ १० ३० ५१	७ १६ ०२ ४१	१
२	० १७ १९ ०३	७ ०२ २३ १३	६ ०७ ३२ ५४	११ २४ ४१ ०३	११ २४ ३३ ५६	१ २८ ३७ ४५	० १३ २९ ३२	३ २४ ०८ ४४	९ २२ ४७ १३	९ १० ३१ ०२	७ १६ ०१ १७	२
३	० १८ १७ १६	७ १४ १५ २२	६ ०७ ११ ०१	११ २६ १५ २०	११ २४ ४७ ५१	१ २९ ४५ ४३	० १३ ३७ १२	३ २४ ०५ ३३	९ २२ ४८ ११	९ १० ३१ १०	७ १५ ५९ ५४	३
४	० १९ १५ २७	७ २६ ०७ ३८	६ ०६ ५९ २४	११ २७ ५१ २९	११ २५ ०१ ४३	२ ०० ५३ ३२	० १३ ४४ ५१	३ २४ ०२ २३	९ २२ ४९ ०५	९ १० ३१ १८	७ १५ ५८ २८	४
५	० २० १३ ३७	८ ०८ ०२ २६	६ ०६ २८ ०६	११ २९ २९ १८	११ २५ १५ ३२	२ ०२ ०१ ११	० १३ ५२ ३१	३ २३ ५९ १२	९ २२ ४९ ५६	९ १० ३१ २२	७ १५ ५७ ०२	५
६	० २१ ११ ४४	८ २० ०२ ५२	६ ०६ ०७ ०८	० ०१ ०९ १५	११ २५ २९ १८	२ ०३ ०८ ४१	० १४ ०० १०	३ २३ ५६ ०१	९ २२ ५० ४६	९ १० ३१ २५	७ १५ ५५ ३४	६
७	० २२ ०९ ५१	९ ०२ १२ ४७	६ ०५ ४६ ३४	० ०२ ५० ५२	११ २५ ४३ ०१	२ ०४ १६ ०१	० १४ ०७ ४९	३ २३ ५२ ५०	९ २२ ५१ ३१	९ १० ३१२५व	७ १५ ५४ ०६	७
८	० २३ ०७ ५५	९ १४ ३६ ३६	६ ०५ २६ २५	० ०४ ३४ ४३	११ २५ ५६ ४३	२ ०५ २३ ११	० १४ १५ २७	३ २३ ४९ ३९	९ २२ ५२ १४	९ १० ३१ २४	७ १५ ५२ ३७	८
९	० २४ ०५ ५८	९ २७ १९ ०४	६ ०५ ०६ ४५	० ०६ २० १७	११ २६ १० २१	२ ०६ ३० ११	० १४ २३ ०५	३ २३ ४६ २९	९ २२ ५२ ५३	९ १० ३१ २१	७ १५ ५१ ०७	९
१०	० २५ ०४ ००	१० १० २४ ४९	६ ०४ ४७ ३४	० ०८ ०८ ००	११ २६ २३ ५७	२ ०७ ३७ ००	० १४ ३० ४३	३ २३ ४३ १८	९ २२ ५३ ३०	९ १० ३१ १६	७ १५ ४९ ३६	१०
११	० २६ ०१ ५९	१० २३ ५७ ४०	६ ०४ २८ ५५	० ०९ ५७ ३३	११ २६ ३७ ३०	२ ०८ ४३ ३८	० १४ ३८ २०	३ २३ ४० ०७	९ २२ ५४ ०४	९ १० ३१ ०९	७ १५ ४८ ०५	११
१२	० २६ ५९ ५७	११ ०७ ५९ ४९	६ ०४ १० ५०	० ११ ४९ ०९	११ २६ ५१ ००	२ ०९ ५० ०५	० १४ ४५ ५७	३ २३ ३६ ५६	९ २२ ५४ ३४	९ १० ३१ ००	७ १५ ४६ ३३	१२
१३	० २७ ५७ ५३	११ २२ ३० ४६	६ ०३ ५३ २०	० १३ ४२ ४८	११ २७ ०४ २८	२ १० ५६ २१	० १४ ५३ ३३	३ २३ ३३ ४६	९ २२ ५५ ०२	९ १० ३० ४९	७ १५ ४५ ०१	१३
१४	० २८ ५५ ४८	० ०७ २६ ३२	६ ०३ ३६ ३८	० १५ ३८ ०१	११ २७ १७ ५१	२ १२ ०२ २५	० १५ ०१ ०८	३ २३ ३० ३५	९ २२ ५५ २७	९ १० ३० ३७	७ १५ ४३ २८	१४
१५	० २९ ५३ ४२	० २२ ३९ २८	६ ०३ २० १५	० १७ ३४ ५५	११ २७ ३१ ११	२ १३ ०८ १८	० १५ ०८ ४१	३ २३ २७ २४	९ २२ ५५ ४८	९ १० ३० २२	७ १५ ४१ ५४	१५
१६	१ ०० ५१ ३३	१ ०७ ५९ ०२	६ ०३ ०४ ४२	० १९ ३३ ५८	११ २७ ४४ २९	२ १४ १३ ५८	० १५ १६ १२	३ २३ २४ १३	९ २२ ५६ ०७	९ १० ३० ०५	७ १५ ४० २०	१६
१७	१ ०१ ४९ २५	१ २३ १३ ३९	६ ०२ ४९ ५०	० २१ ३४ ३५	११ २७ ५७ ४४	२ १५ १९ २६	० १५ २३ ४३	३ २३ २१ ०३	९ २२ ५६ २३	९ १० २९ ४७	७ १५ ३८ ४४	१७
१८	१ ०२ ४७ १४	२ ०८ १२ ४५	६ ०२ ३५ ४२	० २३ ३७ ४०	११ २८ १० ५४	२ १६ २४ ४०	० १५ ३१ १३	३ २३ १७ ५२	९ २२ ५६ ३६	९ १० २९ २६	७ १५ ३७ ०८	१८
१९	१ ०३ ४५ ०१	२ २२ ४८ ३४	६ ०२ २२ १७	० २५ ४२ ३४	११ २८ २४ ०२	२ १७ २९ ४३	० १५ ३८ ४१	३ २३ १४ ४१	९ २२ ५६ ४६	९ १० २९ ०४	७ १५ ३५ ३२	१९
२०	१ ०४ ४२ ४८	३ ०६ ५६ ५५	६ ०२ ०९ ३८	० २७ ४८ २०	११ २८ ३७ ०६	२ १८ ३४ ३२	० १५ ४६ ०८	३ २३ ११ ३०	९ २२ ५६ ५२	९ १० २८ ४०	७ १५ ३३ ५५	२०
२१	१ ०५ ४० ३२	३ २० ३७ ००	६ ०१ ५७ ४४	० २९ ५५ ४८	११ २८ ५० ०५	२ १९ ३९ ०७	० १५ ५३ ३३	३ २३ ०८ २०	९ २२ ५६ ५६	९ १० २८ १४	७ १५ ३२ १८	२१
२२	१ ०६ ३८ १६	४ ०३ ५० ३९	६ ०१ ४६ ३६	१ ०२ ०४ १०	११ २९ ०३ ०२	२ २० ४३ २७	० १६ ०० ५६	३ २३ ०५ ०९	९ २२ ५६ ५७	९ १० २७ ४५	७ १५ ३० ४०	२२
२३	१ ०७ ३५ ५८	४ १६ ४१ १७	६ ०१ ३६ १६	१ ०४ १३ २८	११ २९ १५ ५५	२ २१ ४७ ३३	० १६ ०८ १७	३ २३ ०१ ५८	९ २२ ५६५७व	९ १० २७ १५	७ १५ २९ ०२	२३
२४	१ ०८ ३३ ३९	४ २९ १३ ०५	६ ०१ २६ ४४	१ ०६ २३ ५०	११ २९ २८ ४३	२ २२ ५१ २४	० १६ १५ ३६	३ २२ ५८ ४७	९ २२ ५६ ५१	९ १० २६ ४४	७ १५ २७ २४	२४
२५	१ ०९ ३१ १८	५ ११ ३० २०	६ ०१ १८ ००	१ ०८ ३५ ०३	११ २९ ४१ २८	२ २३ ५५ ००	० १६ २२ ५२	३ २२ ५५ ३७	९ २२ ५६ ४३	९ १० २६ ११	७ १५ २५ ४६	२५
२६	१ १० २८ ५७	५ २३ ३७ ०१	६ ०१ १० ०४	१ १० ४६ १०	११ २९ ५४ ०९	२ २४ ५८ १९	० १६ ३० ०५	३ २२ ५२ २६	९ २२ ५६ ३१	९ १० २५ ३५	७ १५ २४ ०७	२६
२७	१ ११ २६ ३४	६ ०५ ३६ ३२	६ ०१ ०२ ५७	१ १२ ५९ ०४	० ०० ०६ ४५	२ २६ ०१ २३	० १६ ३७ १५	३ २२ ४९ १५	९ २२ ५६ १८	९ १० २४ ५९	७ १५ २२ २८	२७
२८	१ १२ २४ १०	६ १७ ३१ ४०	६ ०० ५६ ३९	१ १५ १० २८	० ०० १९ १८	२ २७ ०४ १०	० १६ ४४ २४	३ २२ ४६ ०४	९ २२ ५६ ०२	९ १० २४ २०	७ १५ २० ४९	२८
२९	१ १३ २१ ४४	६ २९ २४ ३३	६ ०० ५१ १०	१ १७ २१ ४०	० ०० ३१ ४६	२ २८ ०६ ४०	० १६ ५१ ३२	३ २२ ४२ ५४	९ २२ ५५ ४२	९ १० २३ ४०	७ १५ १९ १०	२९
३०	१ १४ १९ १८	७ ११ १६ ५७	६ ०० ४७ ३०	१ १९ ३२ ११	० ०० ४४ ०९	२ २९ ०८ ५२	० १६ ५८ ३९	३ २२ ३९ ४३	९ २२ ५५ १९	९ १० २२ ५८	७ १५ १७ ३१	३०
३१	१ १५ १६ ५०	७ २३ १० २१	६ ०० ४३ ३८	१ २१ ४१ ५२	० ०० ५६ २९	३ ०० १० ४५	० १७ ०५ ४५	३ २२ ३६ ३२	९ २२ ५४ ५४	९ १० २२ १४	७ १५ १५ ५२	३१

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जून सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५०' ४४"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
१	१ १६ १४ २२	८ ०५ ०६ १५	६ ०० ४० ३६	१ २३ ५० ३६	० ०१ ०८ ४४	३ ०१ १२ २२	० १७ १२ ४८	३ २२ ३३ २१	९ २२ ५४ २७	९ १० २१ २९	७ १५ १४ १३	१
२	१ १७ ११ ५२	८ १७ ०६ २१	६ ०० ३८ २२	१ २६ ५८ ०९	० ०१ २० ५४	३ ०२ १३ ३८	० १७ १९ ४८	३ २२ ३० १०	९ २२ ५३ ५५	९ १० २० ४२	७ १५ १२ ३४	२
३	१ १८ ०९ २१	८ २९ १२ ५१	६ ०० ३६ ५६	१ २८ ०४ १४	० ०१ ३२ ५९	३ ०३ १४ ३५	० १७ २६ ४५	३ २२ २७ ००	९ २२ ५३ २१	९ १० १९ ५२	७ १५ १० ५५	३
४	१ १९ ०६ ४९	९ ११ २८ ३०	६ ०० ३६ ११म	२ ०० ०८ ३०	० ०१ ४४ ५९	३ ०४ १५ ११	० १७ ३३ ४१	३ २२ २३ ४९	९ २२ ५२ ४४	९ १० १९ ०२	७ १५ ०९ १६	४
५	१ २० ०४ १६	९ २३ ५६ ३२	६ ०० ३६ २९	२ ०२ १० २६	० ०२ ५६ ५६	३ ०५ १५ २७	० १७ ४० ३६	३ २२ २० ३८	९ २२ ५२ ०५	९ १० १८ १०	७ १५ ०७ ३८	५
६	१ २१ ०१ ४३	१० ०६ ४० ४६	६ ०० ३७ २७	२ ०४ १० २९	० ०१ ०८ ४६	३ ०६ १५ २०	० १७ ४७ २८	३ २२ १७ २७	९ २२ ५१ २३	९ १० १७ १६	७ १५ ०५ ५९	६
७	१ २१ ५९ ८	१० १९ ४५ ०३	६ ०० ३९ १२	२ ०६ ०८ २२	० ०२ २० ३१	३ ०७ १४ ५०	० १७ ५४ १६	३ २२ १४ १७	९ २२ ५० ३८	९ १० १६ २१	७ १५ ०४ २१	७
८	१ २२ ५६ ३२	११ ०३ १२ ५१	६ ०० ४१ ४३	२ ०८ ०३ २५	० ०२ ३२ १२	३ ०८ १३ ५९	० १८ ०१ ०२	३ २२ ११ ०६	९ २२ ४९ ५०	९ १० १५ २४	७ १५ ०२ ४३	८
९	१ २३ ५३ ५६	११ १७ ०६ ३४	६ ०० ४५ ००	२ ०९ ५६ ३२	० ०२ ४३ ४७	३ ०९ १२ ४३	० १८ ०७ ४५	३ २२ ०७ ५५	९ २२ ४९ ००	९ १० १४ २५	७ १५ ०१ ०५	९
१०	१ २४ ५१ १९	० १ २६ ३६	६ ०० ४९ २	२ ११ ४७ १७	० ०२ ५५ १७	३ १० ११ ०३	० १८ १४ २३	३ २२ ४ ४४	९ २२ ४८ ०७	९ १० १३ २५	७ १४ ५९ २८	१०
११	१ २५ ४८ ४०	० १६ १० ३३	६ ०० ५३ ४९	२ १३ ३५ १६	० ०३ ०६ ४२	३ ११ ०८ ५७	० १८ २० ५८	३ २२ ०१ ३४	९ २२ ४७ ११	९ १० १२ २४	७ १४ ५७ ५१	११
१२	१ २६ ४६ ०१	१ ०१ १२ ४७	६ ०० ५९ २०	२ १५ २१ १७	० ०३ १८ ००	३ १२ ०६ २६	० १८ २७ ३३	३ २१ ५८ २३	९ २२ ४६ १४	९ १० ११ २१	७ १४ ५६ १५	१२
१३	१ २७ ४३ २१	१ १६ २४ ४१	६ ०१ ०५ ३६	२ १७ ०४ २९	० ०३ २९ १५	३ १३ ०३ २७	० १८ ३४ ०६	३ २१ ५५ १२	९ २२ ४५ १२	९ १० १० १७	७ १४ ५४ ३९	१३
१४	१ २८ ४० ४१	२ ०१ ३५ ५३	६ ०१ १२ ३४	२ १८ ४५ ११	० ०३ ४० २३	३ १४ ०० ०१	० १८ ४० ३५	३ २१ ५२ ०१	९ २२ ४४ ०९	९ १० ०९ १२	७ १४ ५३ ०३	१४
१५	१ २९ ३८ ००	२ १६ ३६ ०१	६ ०१ २० १४	२ २० २३ १५	० ०३ ५१ २६	३ १४ ५६ ०६	० १८ ४७ ०२	३ २१ ४८ ५१	९ २२ ४३ ०२	९ १० ०८ ०४	७ १४ ५१ २८	१५
१६	२ ०० ३५ १९	३ ०१ १६ २८	६ ०१ २८ ३६	२ २१ ५८ ३५	० ०४ ०२ २३	३ १५ ५१ ४०	० १८ ५३ २५	३ २१ ४५ ४०	९ २२ ४१ ५४	९ १० ०६ ५६	७ १४ ४९ ५४	१६
१७	२ ०१ ३२ ३७	३ १५ ३१ ३३	६ ०१ ३७ ४०	२ २३ ३१ २०	० ०४ १३ १४	३ १६ ४६ ४५	० १८ ५९ ४४	३ २१ ४२ २९	९ २२ ४० ४३	९ १० ०५ ४७	७ १४ ४८ २१	१७
१८	२ ०२ २९ ५४	३ २९ १८ ५०	६ ०१ ४७ २४	२ २५ ०१ ४४	० ०४ २३ ५९	३ १७ ४१ १८	० १९ ०५ ५९	३ २१ ३९ १८	९ २२ ३९ २९	९ १० ०४ ३५	७ १४ ४६ ४८	१८
१९	२ ०३ २७ १०	४ १२ ३८ ४५	६ ०१ ५७ ४८	२ २६ २९ २३	० ०४ ३४ ३७	३ १८ ३५ १७	० १९ १२ ११	३ २१ ३६ ०८	९ २२ ३८ १२	९ १० ०३ २२	७ १४ ४५ १५	१९
२०	२ ०४ २४ २७	४ २५ ३३ ४६	६ ०२ ०८ ५१	२ २७ ५४ ३७	० ०४ ४५ १०	३ १९ २८ ४२	० १९ १८ २१	३ २१ ३२ ५७	९ २२ ३६ ५४	९ १० ०२ १०	७ १४ ४३ ४४	२०
२१	२ ०५ २१ ४१	५ ०८ ०७ ४१	६ ०२ २० ३२	२ २९ १६ ५४	० ०४ ५५ ३६	३ २० २१ ३१	० १९ २४ २९	३ २१ २९ ४६	९ २२ ३५ ३३	९ १० ०० ५४	७ १४ ४२ १३	२१
२२	२ ०६ १८ ५६	५ २० २४ ५५	६ ०२ ३२ ५२	३ ०० ३६ २८	० ०५ ०५ ५५	३ २१ १३ ४४	० १९ ३० ३३	३ २१ २६ ३५	९ २२ ३४ १०	९ ०९ ५९ ३८	७ १४ ४० ४२	२२
२३	२ ०७ १६ ११	६ ०२ २९ ५८	६ ०२ ४५ ४९	३ ०१ ५३ २३	० ०५ १६ ०८	३ २२ ०५ १८	० १९ ३६ ३३	३ २१ २३ २५	९ २२ ३२ ४३	९ ०९ ५८ २१	७ १४ ३९ १३	२३
२४	२ ०८ १३ २५	६ १४ २७ ०३	६ ०२ ५९ २२	३ ०३ ०७ २५	० ०५ २६ १५	३ २२ ५६ १४	० १९ ४२ २९	३ २१ २० १४	९ २२ ३१ १५	९ ०९ ५७ ०३	७ १४ ३७ ४४	२४
२५	२ ०९ १० ३९	६ २६ १९ ५७	६ ०३ १३ ३१	३ ०४ १८ ०९	० ०५ ३६ १४	३ २३ ४६ २८	० १९ ४८ २०	३ २१ १७ ०३	९ २२ २९ ४५	९ ०९ ५५ ४३	७ १४ ३६ १७	२५
२६	२ १० ०७ ५३	७ ८ ११ ५१	६ ०३ २८ १५	३ ०५ २६ ०३	० ०५ ४६ ०८	३ २४ ३६ ००	० १९ ५४ ०७	३ २१ १३ ५२	९ २२ २८ १२	९ ०९ ५४ २३	७ १४ ३४ ५०	२६
२७	२ ११ ०५ ०६	७ २० ०५ २२	६ ०३ ४३ ३४	३ ०६ ३१ १२	० ०५ ५५ ५३	३ २५ २४ ४९	० १९ ५९ ५१	३ २१ १० ४१	९ २२ २६ ३७	९ ०९ ५३ ०१	७ १४ ३३ २४	२७
२८	२ १२ ०२ १९	८ ०२ ०२ ३८	६ ०३ ५९ २६	३ ०७ ३३ १९	० ०६ ०५ ३३	३ २६ १२ ५३	० २० ०५ ३२	३ २१ ०७ ३१	९ २२ २५ ००	९ ०९ ५१ ३८	७ १४ ३१ ५९	२८
२९	२ १२ ५९ ३२	८ १४ ०५ २२	६ ०४ १५ ५२	३ ०८ ३२ ११	० ०६ १५ ०४	३ २७ ०० १०	० २० ११ १०	३ २१ ०४ २०	९ २२ २३ २१	९ ०९ ५० १५	७ १४ ३० ३५	२९
३०	२ १३ ५६ ४५	८ २६ १५ ०७	६ ०४ ३२ ५१	३ ०९ १७ ४१	० ०६ २४ २९	३ २७ ४६ २७	० २० १६ ०४	३ २१ ०१ ०९	९ २२ २१ ३९	९ ०९ ४८ ५१	७ १४ २९ १३	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

जुलाई सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५०' ४७"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुला.
१	२ १४ ५३ ५८	९ ०८ ३३ २२	६ ०४ ५० २१	३ १० १९ ४३	० ०६ ३३ ४६	३ २८ ३२ १४	० २० २२ १५	३ २० ५७ ५८	९ २२ १९ ५६	९ ०९ ४७ २५	७ १४ २७ ५१	१
२	२ १५ ५१ १०	९ २१ ०१ ४७	६ ०५ ०८ २३	३ ११ ०८ १२	० ०६ ४२ ५६	३ २९ १६ ५७	० २० २७ ४३	३ २० ५४ ४८	९ २२ १८ ११	९ ०९ ४५ ५९	७ १४ २६ ३०	२
३	२ १६ ४८ २१	१० ०३ ४२ १५	६ ०५ २६ ५७	३ ११ ५३ ०२	० ०६ ५१ ५९	४ ०० ०० ४७	० २० ३३ ०७	३ २० ५१ ३७	९ २२ १६ २४	९ ०९ ४४ ३२	७ १४ २५ ११	३
४	२ १७ ४५ ३३	१० १६ ३६ ५६	६ ०५ ४६ ००	३ १२ ३४ ०६	० ०७ ०० ५४	४ ०० ४३ ३८	० २० ३८ २८	३ २० ४८ २६	९ २२ १४ ३५	९ ०९ ४३ ०३	७ १४ २३ ५२	४
५	२ १८ ४२ ४५	१० २९ ४८ ०२	६ ०६ ०५ ३४	३ १३ ११ २१	० ०७ ९ ४१	४ ०१ २५ ३२	० २० ४३ ४२	३ २० ४५ १५	९ २२ १२ ४४	९ ०९ ४१ ३४	७ १४ २२ ३५	५
६	२ १९ ३९ ५७	११ १३ १७ ३८	६ ०६ २५ ३६	३ १३ ४४ ४०	० ०७ १८ २०	४ ०२ ०६ २४	० २० ४८ ५२	३ २० ४२ ०५	९ २२ १० ५१	९ ०९ ४० ०४	७ १४ २१ १९	६
७	२ २० ३७ ०९	११ २७ ०७ ०८	६ ०६ ४६ ०७	३ १४ १३ ५९	० ०७ २६ ५२	४ ०२ ४६ १३	० २० ५३ ५८	३ २० ३८ ५४	९ २२ ०८ ५६	९ ०९ ३८ ३३	७ १४ २० ०५	७
८	२ २१ ३४ २१	० ११ १६ ४१	६ ०७ ०७ ०६	३ १४ ३९ १०	० ०७ ३५ १६	४ ०३ २४ ५४	० २० ५९ ००	३ २० ३५ ४३	९ २२ ०७ ००	९ ०९ ३७ ०३	७ १४ १८ ५१	८
९	२ २२ ३१ ३४	० २५ ४४ ४४	६ ०७ २८ ३३	३ १५ ०० ०८	० ०७ ४३ ३२	४ ०४ ०२ २९	० २१ ०३ ५८	३ २० ३२ ३२	९ २२ ०६ ०२	९ ०९ ३५ ३१	७ १४ १७ ३९	९
१०	२ २३ २८ ४६	१ १० २७ २९	६ ०७ ५० २६	३ १५ १६ ४५	० ०७ ५१ ३९	४ ०४ ३८ ५१	० २१ ०८ ५२	३ २० २९ २२	९ २२ ०३ ०२	९ ०९ ३३ ५८	७ १४ १६ २९	१०
११	२ २४ २५ ५८	१ २५ १९ ०२	६ ०८ १२ ४६	३ १५ २८ ५३	० ०७ ५९ ३७	४ ०५ १३ ५९	० २१ १३ ४३	३ २० २६ ११	९ २२ ०१ ०१	९ ०९ ३२ २४	७ १४ १५ १९	११
१२	२ २५ २३ १०	२ १० ११ ५१	६ ०८ ३५ ३२	३ १५ ३६ २६	० ०८ ०७ २९	४ ०५ ४७ ५०	० २१ १८ २५	३ २० २३ ००	९ २१ ५८ ५९	९ ०९ ३० ५१	७ १४ १४ ११	१२
१३	२ २६ २० २३	२ २४ ५७ ५०	६ ०८ ५८ ४३	३ १५ ३९१६व	० ०८ १५ ११	४ ०६ २० २१	० २१ २३ ०३	३ २० १९ ४९	९ २१ ५६ ५४	९ ०९ २९ १७	७ १४ १३ ०५	१३
१४	२ २७ १७ ३७	३ ०९ २९ ३०	६ ०९ २२ २०	३ १५ ३७ १७	० ०८ २२ ४५	४ ०६ ५१ ३१	० २१ २७ ३७	३ २० १६ ३९	९ २१ ५४ ४९	९ ०९ २७ ४२	७ १४ १२ ००	१४
१५	२ २८ १४ ५०	३ २३ ४१ ००	६ ०९ ४६ २०	३ १५ ३० २४	० ०८ ३० ११	४ ०७ २१ १३	० २१ ३२ ०७	३ २० १३ २८	९ २१ ५२ ४२	९ ०९ २६ ०७	७ १४ १० ५६	१५
१६	२ २९ १२ ०४	४ ७ २८ ४९	६ १० १० ४५	३ १५ १८ ३६	० ०८ ३८ २७	४ ०७ ४९ २५	० २१ ३६ ३३	३ २० १० १७	९ २१ ५० ३३	९ ०९ २४ ३१	७ १४ ०९ ५४	१६
१७	३ ०० ०९ १८	५ २० ५१ ४६	६ १० ३५ ३३	३ १५ ०१ ५४	० ०८ ४४ ३४	४ ०८ १६ ०६	० २१ ४० ५५	३ २० ०७ ०६	९ २१ ४८ २४	९ ०९ २२ ५५	७ १४ ०८ ५३	१७
१८	३ ०१ ०६ ३२	५ ३ ५० ४८	६ ११ ०० ३५	३ १४ ४० २७	० ०८ ५१ ३३	४ ०८ ४१ १०	० २१ ४५ १३	३ २० ०३ ५६	९ २१ ४६ १३	९ ०९ २१ १९	७ १४ ०७ ५४	१८
१९	३ ०२ ०३ ४६	५ १६ २८ २७	६ ११ २६ १९	३ १४ १४ २६	० ०८ ५८ २२	४ ०९ ०४ ३५	० २१ ४९ २६	३ २० ०० ४५	९ २१ ४४ ०१	९ ०९ १९ ४२	७ १४ ०६ ५७	१९
२०	३ ०३ ०१ ०१	५ २८ ४८ २४	६ ११ ५२ १६	३ १३ ४४ १०	० ०९ ०५ ०२	४ ०९ २६ १७	० २१ ५३ ३३	३ १९ ५७ ३४	९ २१ ४१ ४८	९ ०९ १८ ०५	७ १४ ०६ ०१	२०
२१	३ ०३ ५८ १७	६ १० ५४ ५४	६ १२ १८ ३५	३ १३ १० ०६	० ०९ ११ ३२	४ ०९ ४६ १२	० २१ ५७ ३४	३ १९ ५४ २३	९ २१ ३९ ३३	९ ०९ १६ २८	७ १४ ०५ ०७	२१
२२	३ ०४ ५५ ३४	६ २२ ५२ २९	६ १२ ४५ १५	३ १२ ३२ ४४	० ०९ १७ ५३	४ १० ०४ १७	० २२ ०१ ३०	३ १९ ५१ १२	९ २१ ३७ १८	९ ०९ १४ ५१	७ १४ ०४ १५	२२
२३	३ ०५ ५२ ५०	७ ०४ ४५ ३१	६ १३ १२ १६	३ ११ ५२ ४४	० ०९ २४ ०५	४ १० २० २९	० २२ ०५ २२	३ १९ ४८ ०२	९ २१ ३५ ०२	९ ०९ १३ १२	७ १४ ०३ २४	२३
२४	३ ०६ ५० ०७	७ १६ ३८ ०९	६ १३ ३९ ३८	३ ११ १० ४८	० ०९ ३० ०७	४ १० ३४ ४३	० २२ ०९ ०९	३ १९ ४४ ५१	९ २१ ३२ ४५	९ ०९ ११ ३५	७ १४ ०२ ३४	२४
२५	३ ०७ ४७ २५	७ २८ ३४ ०१	६ १४ ०७ २०	३ १० २७ ४४	० ०९ ३५ ५९	४ १० ४६ ५६	० २२ १२ ५१	३ १९ ४१ ४०	९ २१ ३० २७	९ ०९ ०९ ५७	७ १४ ०१ ४८	२५
२६	३ ०८ ४४ ४४	८ १० ३६ १६	६ १४ ३५ २२	३ ०९ ४४ १८	० ०९ ४१ ४१	४ १० ५७ ०६	० २२ १६ २८	३ १९ ३८ २९	९ २१ २८ ०८	९ ०९ ०८ १९	७ १४ ०१ ०१	२६
२७	३ ०९ ४२ ०२	८ २२ ४७ २३	६ १५ ०३ ४३	३ ०९ ०१ २१	० ०९ ४७ १३	४ ११ ०५ ०७	० २२ १९ ५९	३ १९ ३५ १९	९ २१ २५ ४९	९ ०९ ०६ ४१	७ १४ ०० १७	२७
२८	३ १० ३९ २२	९ ०५ ०९ १८	६ १५ ३२ २४	३ ०८ १९ ४१	० ०९ ५२ ३५	४ ११ १० ५८	० २२ २३ २४	३ १९ ३२ ०८	९ २१ २३ २८	९ ०९ ०५ ०३	७ १३ ५९ ३५	२८
२९	३ ११ ३६ ४३	९ १७ ४३ २०	६ १६ ०१ २४	३ ०७ ४० ०२	० ०९ ५७ ४७	४ ११ १४ ३६	० २२ २६ ४१	३ १९ २८ ५७	९ २१ २१ ०८	९ ०९ ०३ २६	७ १३ ५८ ५४	२९
३०	३ १२ ३४ ०४	१० ०० ३० २३	६ १६ ३० ४३	३ ०७ ०३ ०६	० १० ०२ ४९	४ ११ १५५७व	० २२ २९ ५२	३ १९ २५ ४६	९ २१ १८ ४६	९ ०९ ०१ ४८	७ १३ ५८ १५	३०
३१	३ १३ ३१ २६	१० १३ ३० ५६	६ १७ ०० १९	३ ०६ २९ ३२	० १० ०७ ४१	४ ११ १४ ५९	० २२ ३२ ५८	३ १९ २२ ३६	९ २१ १६ २४	९ ०८ ०० १०	७ १३ ५७ ३९	३१

प्रकाशक: धर्मसिंह प्रकाशन (रजि.), नई सड़क, दिल्ली-६ फोन: ३२६१४६, ३२८५२३४

CC-0. In Public Domain. Kirtikar Dhirendra Vajargarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अगस्त सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशा २३° ५०' ५१"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अगस्त	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अगस्त
१	३ १४ २८ ४९	१० २६ ४५ १०	६ १७ ३० १३	३ ०५ ५९ ५३	० १० १२ २२	४ ११ ११ ४२	० २२ ३५ ५९	३ १९ १९ २५	९ २१ १४ ०२	९ ०८ ५८ ३३	७ १३ ५७ ०३	१
२	३ १५ २६ १२	११ १० १३ ०६	६ १८ ०० २५	३ ०५ ३४ ३९	० १० १६ ५२	४ ११ ०६ ०२	० २२ ३८ ५६	३ १९ १६ १४	९ २१ ११ ३९	९ ०८ ५६ ५६	७ १३ ५६ ३०	२
३	३ १६ २३ ३६	११ २३ ५४ २६	६ १८ ३० ५४	३ ०५ १४ १५	० १० २१ १२	४ १० ५८ ००	० २२ ४१ ४९	३ १९ १३ ०३	९ २१ ०९ १६	९ ०८ ५५ १९	७ १३ ५५ ५९	३
४	३ १७ २१ ०२	० ०७ ४८ ३६	६ १९ ०१ ४१	३ ०४ ५९ ६	० १० २५ २२	१ १० ४७ ३४	० २२ ४४ ३६	३ १९ ०९ ५३	९ २१ ०६ ५३	९ ०८ ५३ ४२	७ १३ ५५ २९	४
५	३ १८ १८ २८	० २१ ५४ ३०	६ १९ ३२ ४४	३ ०४ ४९ ३२	० १० २९ २०	४ १० ३४ ४६	० २२ ४७ १५	३ १९ ०६ ४२	९ २१ ०४ २९	९ ०८ ५२ ०६	७ १३ ५५ ००	५
६	३ १९ १५ ५५	१ ०६ १० २५	६ २० ०४ ०३	३ ०४ ४५ ५१मा	० १० ३३ ०९	४ १० १९ ३६	० २२ ४९ ४९	३ १९ ०३ ३१	९ २१ ०२ ०६	९ ०८ ५० ३०	७ १३ ५४ ३५	६
७	३ २० १३ २४	१ २० ३३ ४२	६ २० ३५ ३९	३ ०४ ४८ १८	० १० ३६ ४५	४ १० ०२ ०६	० २२ ५२ १५	३ १९ ०० २०	९ २० ५९ ४२	९ ०८ ४८ ५५	७ १३ ५४ ११	७
८	३ २१ १० ५३	२ ०५ ०० ५१	६ २१ ०७ ३१	३ ०४ ५७ ०७	० १० ४० १२	४ ०९ ४२ २०	० २२ ५४ ३५	३ १८ ५७ ०९	९ २० ५७ १८	९ ०८ ४७ १९	७ १३ ५३ ४८	८
९	३ २२ ०८ २३	२ १९ २७ २७	६ २१ ३९ ३७	३ ०५ १२ ३२	० १० ४३ २६	४ ०९ २० २१	० २२ ५६ ५०	३ १८ ५३ ५९	९ २० ५४ ५४	१ ०८ ४५ ४५	७ १३ ५३ २८	९
१०	३ २३ ०५ ५४	३ ०३ ४८ ३९	६ २२ १२ ००	३ ०५ ३४ ३९	० १० ४६ ३०	४ ०८ ५६ १४	० २२ ५८ ५९	३ १८ ५० ४८	९ २० ५२ ३०	९ ०८ ४४ ११	७ १३ ५३ १०	१०
११	३ २४ ०३ २७	३ १७ ५९ ३२	६ २२ ४४ ३८	३ ०६ ०३ ३५	० १० ४९ २३	४ ०८ ३० ०४	० २३ ०१ ०४	३ १८ ४७ ३७	९ २० ५० ०७	९ ०८ ४२ ३७	७ १३ ५२ ५३	११
१२	३ २५ ०१ ०१	४ ०१ ५५ ४४	६ २३ १७ ३०	३ ०६ ३९ २३	० १० ५२ ०४	४ ०८ ०१ ५९	० २३ ०३ ०२	३ १८ ४४ २६	९ २० ४७ ४३	९ ०८ ४१ ०४	७ १३ ५२ ३९	१२
१३	३ २५ ५८ ३६	४ १५ ३३ ५३	६ २३ ५० ३७	३ ०७ २२ ०२	० १० ५४ ३४	४ ०७ ३२ ०७	० २३ ०४ ५३	३ १८ ४१ १६	९ २० ४५ २०	९ ०८ ३९ ३१	७ १३ ५२ २६	१३
१४	३ २६ ५६ १२	४ २८ ५२ ०१	६ २४ २३ ५९	३ ०८ ११ २८	० १० ५६ ५२	४ ०७ ०० ३८	० २३ ०६ ३६	३ १८ ३८ ०५	९ २० ४२ ५७	९ ०८ ३८ ००	७ १३ ५२ १६	१४
१५	३ २७ ५३ ४९	५ ११ ४९ ४४	६ २४ ५७ ३४	३ ०९ ०७ ३३	० १० ५८ ५८	४ ०६ २७ ४१	० २३ ०८ १४	३ १८ ३४ ५४	९ २० ४० ३५	९ ०८ ३६ २८	७ १३ ५२ ०७	१५
१६	३ २८ ५१ २७	५ २४ २८ ०५	६ २५ ३१ २३	३ १० १० ०६	० ११ ०० ५३	४ ०५ ५३ २७	० २३ ०९ ४४	३ १८ ३१ ४३	९ २० ३८ १३	९ ०८ ३४ ५८	७ १३ ५२ ०१	१६
१७	३ २९ ४९ ०७	६ ०६ ४९ २७	६ २६ ०५ २६	३ ११ १८ ५२	० ११ ०२ ३७	४ ०५ १८ १०	० २३ ११ ०८	३ १८ २८ ३३	९ २० ३५ ५१	९ ०८ ३३ २८	७ १३ ५१ ५६	१७
१८	४ ०० ४६ ४८	६ १८ ५७ १३	६ २६ ३९ ४३	३ १२ ३३ ३४	० ११ ०४ ०६	४ ०४ ४२ ०२	० २३ १२ २६	३ १८ २५ २२	९ २० ३३ ३१	९ ०८ ३१ ५९	७ १३ ५१ ५३	१८
१९	४ ०१ ४४ ३०	७ ०० ५५ २९	६ २७ १४ १३	३ १३ ५३ ५३	० ११ ०५ २५	४ ०४ ०५ १६	० २३ १३ ४०	३ १८ २२ ११	९ २० ३१ १०	९ ०८ ३० ३१	७ १३ ५१ ५२मा	१९
२०	४ ०२ ४२ १३	७ १२ ४८ ४७	६ २७ ४८ ५६	३ १५ १९ २८	० ११ ०६ ३२	४ ०३ २८ ०७	० २३ १४ ४८	३ १८ १९ ००	९ २० २८ ५०	९ ०८ २९ ०४	७ १३ ५१ ५३	२०
२१	४ ०३ ३९ ५८	७ २४ ४१ ४६	६ २८ २३ ५२	३ १६ ४९ ५४	० ११ ०७ २८	४ ०२ ५० ५०	० २३ १५ ५१	३ १८ १५ ५०	९ २० २६ ३१	९ ०८ २७ ३८	७ १३ ५१ ५६	२१
२२	४ ०४ ३७ ४४	८ ०६ ३९ ००	६ २८ ५९ १	३ १८ २४ ५०	० ११ ०८ ११	४ ०२ १३ ३८	० २३ १६ ४७	३ १८ १२ ३९	९ २० २४ १३	९ ०८ २६ १२	७ १३ ५२ ००	२२
२३	४ ०५ ३५ ३२	८ १८ ४४ ४३	६ २९ ३४ २२	३ २० ०३ ५१	० ११ ०८ ४२	४ ०१ ३६ ४५	० २३ १७ ३५	३ १८ ०९ २८	९ २० २१ ५६	९ ०८ २४ ४८	७ १३ ५२ ०७	२३
२४	४ ०६ ३३ २१	९ ०१ ०२ ३५	७ ०० ०९ ५६	३ २१ ४६ ३२	० ११ ०९ ०१	४ ०१ ०० २५	० २३ १८ १६	३ १८ ०६ १७	९ २० १९ ४०	९ ०८ २३ २४	७ १३ ५२ १७	२४
२५	४ ०७ ३१ १२	९ १३ ३५ २९	७ ०० ४५ ४१	३ २३ ३२ २८	० ११ ०९ ७व	४ ०० २४ ५४	० २३ १८ ५१	३ १८ ०३ ०७	९ २० १७ २४	९ ०८ २२ ०२	७ १३ ५२ २८	२५
२६	४ ०८ २९ ०४	९ २६ २५ १९	७ ०१ २१ ३९	३ २५ २१ १७	० ११ ०९ ०३	३ २९ ५० २३	० २३ १९ २१	३ १७ ५९ ५६	९ २० १५ १०	९ ०८ २० ४०	७ १३ ५२ ४१	२६
२७	४ ०९ २६ ५८	१० ०९ ३२ ५०	७ ०१ ५७ ४८	३ २७ १२ ३३	० ११ ०८ ४६	३ २९ १७ ०५	० २३ १९ ४५	३ १७ ५६ ४५	९ २० १२ ५६	९ ०८ १९ २०	७ १३ ५२ ५६	२७
२८	४ १० २४ ५२	१० २२ ५७ ३३	७ ०२ ३४ ०९	३ २९ ०५ ५२	० ११ ०८ १६	३ २८ ४५ १२	० २३ २० ०३	३ १७ ५३ ३४	९ २० १० ४४	९ ०८ १८ ००	७ १३ ५३ १३	२८
२९	४ ११ २२ ४९	११ ०६ ३७ ४९	७ ०३ १० ४१	४ ०१ ०० ५३	० ११ ०७ ३६	३ २८ १४ ५६	० २३ २० १५	३ १७ ५० २४	९ २० ०८ ३३	९ ०८ १६ ४२	७ १३ ५३ ३३	२९
३०	४ १२ २० ४७	११ २० ३१ ०४	७ ०३ ४७ २५	४ ०२ ५७ १३	० ११ ०६ ४४	३ २७ ४६ २४	० २३ २०२०व	३ १७ ४७ १३	९ २० ०६ २३	९ ०८ १५ २५	७ १३ ५३ ५५	३०
३१	४ १३ १८ ४७	०० ०४ ३४ ०६	७ ०४ २४ १९	४ ०४ ५४ ३१	० ११ ०५ ३६	३ २७ १९ ४५	० २३ २० १७	३ १७ ४४ ०२	९ २० ०४ १४	९ ०८ १४ ०९	७ १३ ५४ १७	३१

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्रकाशक: धर्मसंघ प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशा २३° ५०' ५५"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र (वक्री)	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सितं.
१	४ १४ १६ ४८	० १८ ४३ ३२	७ ०५ ०१ २४	४ ०६ ५२ २६	० ११ ०४ १८	३ २६ ५५ ०८	० २३ २० ०५	३ १७ ४० ५१	९ २० ०२ ०७	९ ०८ १२ ५५	७ १३ ५४ ४२	१
२	४ १५ १४ ५१	१ ०२ ५६ ०८	७ ०५ ३८ ४०	४ ०८ ५० ३९	० ११ ०२ ४६	३ २६ ३२ ४०	० २३ १९ ४७	३ १७ ३७ ४१	९ २० ०० ००	९ ०८ ११ ४०	७ १३ ५५ १०	२
३	४ १६ १२ ५६	१ १७ ०९ ०६	७ ०६ १६ ०७	४ १० ४८ ५३	० ११ ०१ ०५	३ २६ १२ २३	० २३ १९ २३	३ १७ ३४ ३०	९ १९ ५७ ५७	९ ०८ १० २९	७ १३ ५५ ३९	३
४	४ १७ ११ ०२	२ ०१ २० ०६	७ ०६ ५३ ४५	४ १२ ४६ ५१	० १० ५९ ११	३ २५ ५४ २३	० २३ १८ ५४	३ १७ ३१ १९	९ १९ ५५ ५३	९ ०८ ०९ १८	७ १३ ५६ ११	४
५	४ १८ ०९ ११	२ १६ २७ ११	७ ०७ ३१ ३२	४ १४ ४४ २१	० १० ५७ ०६	३ २५ ३८ ४५	० २३ १८ १९	३ १७ २८ ०८	९ १९ ५३ ५२	९ ०८ ०८ ०८	७ १३ ५६ ४५	५
६	४ १९ ०७ २०	२ २९ २८ ३५	७ ०८ ०९ ३०	४ १६ ४१ ०९	० १० ५४ ५०	३ २५ २५ २९	० २३ १७ ३९	३ १७ २४ ५७	९ १९ ५१ ५२	९ ०८ ०७ ००	७ १३ ५७ २०	६
७	४ २० ०५ ३२	३ १३ २२ ३०	७ ०८ ४७ ३८	४ १८ ३७ ०६	० १० ५२ २२	३ २५ १४ ३७	० २३ १६ ५१	३ १७ २१ ४७	९ १९ ४९ ५३	९ ०८ ०५ ५३	७ १३ ५७ ५८	७
८	४ २१ ०३ ४५	३ २७ ०७ ०२	७ ०९ २५ ५६	४ २० ३२ ०५	० १० ४९ ४२	३ २५ ०६ १०	० २३ १५ ५७	३ १७ १८ ३६	९ १९ ४७ ५६	९ ०८ ०४ ४८	७ १३ ५८ ३८	८
९	४ २२ ०२ ००	४ १० ४० १०	७ १० ०४ २४	४ २२ २५ ५९	० १० ४६ ५०	३ २५ ०० ०७	० २३ १४ ५६	३ १७ १५ २५	९ १९ ४६ ०२	९ ०८ ०३ ४५	७ १३ ५९ १९	९
१०	४ २३ ०० १७	४ २३ ५९ ५७	७ १० ४३ ०१	४ २४ १८ ४६	० १० ४३ ४७	३ २४ ५६ ३०	० २३ १३ ४७	३ १७ १२ १४	९ १९ ४४ ०८	९ ०८ ०२ ४२	७ १४ ०० ०३	१०
११	४ २३ ५८ ३५	५ ०७ ०४ ५२	७ ११ २१ ४७	४ २६ १० २३	० १० ४० ३३	३ २४ ५५ १५मा	० २३ १२ ३२	३ १७ ०९ ०४	९ १९ ४२ १७	९ ०८ ०१ ४२	७ १४ ०० ४८	११
१२	४ २४ ५६ ५५	५ १९ ५४ ००	७ १२ ०० ४३	४ २८ ०० ५०	० १० ३७ ०७	३ २४ ५६ २०	० २३ ११ १४	३ १७ ०५ ५३	९ १९ ४० २८	९ ०८ ०० ४१	७ १४ ०१ ३५	१२
१३	४ २५ ५५ १७	६ ०२ २७ २६	७ १२ ३९ ४८	४ २९ ५० ०८	० १० ३३ ३०	३ २४ ५९ ४५	० २३ ०९ १८	३ १७ ०२ ४३	९ १९ ३८ ४१	९ ०७ ५९ ४३	७ १४ ०२ २५	१३
१४	४ २६ ५३ ४१	६ १४ ४६ १६	७ १३ १९ ०३	५ ०१ ३८ १९	० १० २९ ४२	३ २५ ०५ २६	० २३ ०८ १५	३ १६ ५९ ३१	९ १९ ३६ ५४	९ ०७ ५८ ४७	७ १४ ०३ १६	१४
१५	४ २७ ५२ ०७	६ २६ ५२ ४३	७ १३ ५८ २६	५ ०३ २५ २६	० १० २५ ४३	३ २५ १३ २१	० २३ ०६ ३७	३ १६ ५६ २१	९ १९ ३५ ११	९ ०७ ५७ ५३	७ १४ ०४ ०९	१५
१६	४ २८ ५० ३५	७ ०८ ५० ००	७ १४ ३७ ५७	५ ०५ ११ ३१	० १० २१ ३३	३ २५ २३ २७	० २३ ०४ ५१	३ १६ ५३ १०	९ १९ ३३ ३०	९ ०७ ५७ ००	७ १७ ०५ ०४	१६
१७	४ २९ ४९ ०३	७ २० ४२ ०८	७ १५ १७ ३८	५ ०६ ५६ ३७	० १० १७ १२	३ २५ ३५ ४१	० २३ ०२ ५७	३ १६ ४९ ५९	९ १९ ३१ ५१	९ ०७ ५६ ०८	७ १४ ०६ ०१	१७
१८	५ ०० ४७ ३५	८ ०२ ३३ ४५	७ १५ ५७ २७	५ ०८ ४० ४६	० १० १२ ४०	३ २५ ५० ००	० २३ ०० ५७	३ १६ ४३ ४८	९ १९ ३० १३	९ ०७ ५५ १८	७ १४ ०७ ००	१८
१९	५ ०१ ४६ ०९	८ १४ २९ ५१	७ १६ ३७ २५	५ १० २४ ०१	० १० ०७ ५८	३ २६ ०६ १८	० २२ ५८ ५१	३ १६ ४३ ३८	९ १९ २८ ३९	९ ०७ ५४ ३०	७ १४ ०८ ०१	१९
२०	५ ०२ ४४ ४४	८ २६ ३५ २८	७ १७ १७ ३१	५ १२ ०६ २३	० १० ०३ ०६	३ २६ २४ ३३	० २२ ५६ ४०	३ १६ ४० २७	९ १९ २७ ०७	९ ०७ ५३ ४३	७ १४ ०९ ०३	२०
२१	५ ०३ ४३ २१	९ ०८ ५५ २८	७ १७ ५७ ४५	५ १३ ४७ ५२	० ०९ ५८ ०३	३ २६ ४४ ४१	० २२ ५४ २५	३ १६ ३७ १६	९ १९ २५ ३६	९ ०७ ५२ ५८	७ १४ १० ०७	२१
२२	५ ०४ ४२ ००	९ २१ ३४ ०१	७ १८ ३८ ०८	५ १५ २८ २९	० ०९ ५२ ५१	३ २७ ०६ ४०	० २२ ५२ ०४	३ १६ ३४ ०५	९ १९ २४ ०८	९ ०७ ५२ १५	७ १४ ११ १४	२२
२३	५ ०५ ४० ४१	१० ०४ ३४ १६	७ १९ १८ ३९	५ १७ ०८ १४	० ०९ ४७ २८	३ २७ ३० २५	० २२ ४९ ४१	३ १६ ३० ५५	९ १९ २२ ४२	९ ०७ ५१ ३४	७ १४ १२ २२	२३
२४	५ ०६ ३९ २४	१० १७ ५७ ४४	७ १९ ५९ १७	५ १८ ४७ ०५	० ०९ ४१ ५६	३ २७ ५५ ५२	० २२ ४७ १०	३ १६ २७ ४४	९ १९ २१ १८	९ ०७ ५० ५४	७ १४ १३ ३१	२४
२५	५ ०७ ३८ ०९	११ ०१ ४३ ५८	७ २० ४० ०३	५ २० २५ ०२	० ०९ ३६ १४	३ २८ २२ ५९	० २२ ४४ ३२	३ १६ २४ ३३	९ १९ १९ ५८	९ ०७ ५० १६	७ १४ १४ ४३	२५
२६	५ ०८ ३६ ५६	११ १५ ५० १९	७ २१ २० ५७	५ २२ ०२ ०३	० ०९ ३० २३	३ २८ ५१ ४०	० २२ ४१ ४९	३ १६ २१ २२	९ १९ १८ ३९	९ ०७ ४९ ४१	७ १४ १५ ५६	२६
२७	५ ०९ ३५ ४५	० ०० १२ ०४	७ २२ ०१ ५९	५ २३ ३७ २७	० ०९ २४ २३	३ २९ २१ ५५	० २२ ३८ ५९	३ १६ १८ ११	९ १९ १७ २३	९ ०७ ४९ ०७	७ १४ १७ ११	२७
२८	५ १० ३४ ३६	० १४ ४३ ०२	७ २२ ४३ ०८	५ २५ १२ १२	० ०९ १८ १५	३ २९ ५३ ३९	० २२ ३६ ०६	३ १६ १५ ०१	९ १९ १६ ०९	९ ०७ ४८ ३४	७ १४ १८ २८	२८
२९	५ ११ ३३ २९	० २९ १६ ३१	७ २३ २४ २४	५ २६ ४५ ५८	० ०९ ११ ५७	४ ०० २६ ४८	० २२ ३३ ०९	३ १६ ११ ५०	९ १९ १४ ५८	९ ०७ ४८ ०३	७ १४ १९ ४७	२९
३०	५ १२ ३२ २५	१ १३ ४६ २५	७ २४ ०५ ४८	५ २८ १९ ०५	० ०९ ०५ ३१	४ ०१ ०१ २०	० २२ ३० ०६	३ १६ ०८ ३९	९ १९ १३ ५०	९ ०७ ४७ ३५	७ १४ २१ ०७	३०

प्रकाशक: धर्मसंघ प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४
CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्टूबर सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशा २३° ५०' ५९"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
१	५ १३ ३१ २२	१ २८ ०७ ५८	७ २४ ४७ १८	५ २९ ५१ ११	० ०८ ५८ ५७	४ ०१ ३७ १३	० २२ २६ ५८	३ १६ ०५ २८	९ १९ १२ ४४	९ ०७ ४७ ०८	७ १४ २२ २९	१
२	५ १४ ३० २१	२ १२ १८ ०९	७ २५ २८ ५६	६ ०० २२ १९	० ०८ ५२ १६	४ ०२ १४ २२	० २२ २३ ४६	३ १६ ०२ १८	९ १९ ११ ४१	९ ०७ ४६ ४७	७ १४ २३ ५३	२
३	५ १५ २९ २२	२ २६ १५ ३६	७ २६ १० ४१	६ ०२ ५२ २७	० ०८ ४५ २७	४ ०२ ५२ ४५	० २२ २० २७	३ १५ ५९ ०७	९ १९ १० ४१	९ ०७ ४६ २१	७ १४ २५ १८	३
४	५ १६ २८ २५	३ १० ०० १०	७ २६ ५२ ३२	६ ०४ २१ ४८	० ०८ ३८ ३१	४ ०३ ३२ २१	० २२ १७ ०३	३ १५ ५५ ५६	९ १९ ०९ ४३	९ ०७ ४६ ००	७ १४ २६ ४५	४
५	५ १७ २७ ३०	३ २३ ३२ २२	७ २७ ३४ ३१	६ ०५ ५० १२	० ०८ ३१ २८	४ ०४ १३ ०५	० २२ १३ ३३	३ १५ ५२ ४५	९ १९ ०८ ४८	९ ०७ ४५ ४०	७ १४ २८ १४	५
६	५ १८ २६ ३७	४ ०६ ५२ ५१	७ २८ १६ ३६	६ ०७ १७ ४२	० ०८ २४ १८	४ ०४ ५४ ५५	० २२ ०९ ५८	३ १५ ४९ ३५	९ १९ ०७ ५६	९ ०७ ४५ २३	७ १४ २९ ४४	६
७	५ १९ २५ ४७	४ २० ०२ ०५	७ २८ ५८ ४८	६ ०८ ४४ १७	० ०८ १७ ०२	४ ०५ ३७ ५०	० २२ ०६ २०	३ १५ ४६ २४	९ १९ ०७ ०६	९ ०७ ४५ ०८	७ १४ ३१ १६	७
८	५ २० २४ ५८	५ ०३ ०० ०९	७ २९ ४१ ०६	६ १० १० ००	० ०८ ०९ ४१	४ ०६ २१ ४६	० २२ ०२ ३९	३ १५ ४३ १३	९ १९ ०६ २०	९ ०७ ४४ ५६	७ १४ ३२ ४९	८
९	५ २१ २४ १०	५ १५ ४६ ५१	८ ०० २३ ३०	६ ११ ३४ ५०	० ०८ ०२ १३	४ ०७ ०६ ४१	० २१ ५८ ५६	३ १५ ४० ०२	९ १९ ०५ ३५	९ ०७ ४४ ४४	७ १४ ३४ २४	९
१०	५ २२ २३ २६	५ २८ २१ ५४	८ ०१ ०६ ०१	६ १२ ५८ ५२	० ०७ ५४ ४१	४ ०७ ५२ ३३	० २१ ५५ ०८	३ १५ ३६ ५२	९ १९ ०४ ५५	९ ०७ ४४ ३५	७ १४ ३६ ००	१०
११	५ २३ २२ ४३	६ १० ४५ १५	८ ०१ ४८ ३८	६ १४ २१ ५१	० ०७ ४७ ०३	४ ०८ ३९ २१	० २१ ५१ १६	३ १५ ३३ ४१	९ १९ ०४ १६	९ ०७ ४४ २८	७ १४ ३७ ३८	११
१२	५ २४ २२ ०३	६ २२ ५७ २४	८ ०२ ३१ २१	६ १५ ४३ १९	० ०७ ३९ २१	४ ०९ २७ ०२	० २१ ४७ १९	३ १५ ३० ३०	९ १९ ०३ ४१	९ ०७ ४४ २३	७ १४ ३९ १८	१२
१३	५ २५ २१ २४	७ ०४ ५९ ३६	८ ०३ १४ ११	६ १७ ०४ ४८	० ०७ ३१ ३५	४ १० १५ ३४	० २१ ४३ १७	३ १५ २७ १९	९ १९ ०३ ०९	९ ०७ ४४ २०	७ १४ ४० ५८	१३
१४	५ २६ २१ ४८	७ १६ ५४ ०२	८ ०३ ५७ ०६	६ १८ २४ २५	० ०७ २३ ४४	४ ११ ०४ ५६	० २१ ३९ १२	३ १५ २४ ०८	९ १९ ०२ ४०	९ ०७ ४४ १९मा	७ १४ ४२ ४१	१४
१५	५ २७ २० १४	७ २८ ४३ ४९	८ ०४ ४० ०७	६ १९ ४३ ३५	० ०७ १५ ५०	४ ११ ५५ ०६	० २१ ३५ ०४	३ १५ २० ५८	९ १९ ०२ १३	९ ०७ ४४ २०	७ १४ ४४ २४	१५
१६	५ २८ १९ ४२	८ १० ३२ ५८	८ ०५ २३ १२	६ २१ ०१ १३	० ०७ ०७ ५३	४ १२ ४६ ०२	० २१ ३० ५३	३ १५ १७ ४७	९ १९ ०१ ५०	९ ०७ ४४ २२	७ १४ ४६ ०९	१६
१७	५ २९ १९ ११	८ २२ २६ ११	८ ०६ ०६ २५	६ २२ १७ ३२	० ०६ ५९ ५३	४ १३ ३७ ४२	० २१ २६ ४०	३ १५ १४ ३६	९ १९ ०१ २९	९ ०७ ४४ २७	७ १४ ४७ ५७	१७
१८	६ ०० १८ ४२	९ ०४ २८ ४२	८ ०६ ४९ ४३	६ २३ ३२ १५	० ०६ ५१ ५१	४ १४ ३० ०५	० २१ २२ २७	३ १५ ११ २५	९ १९ ०१ ११	९ ०७ ४४ ३४	७ १४ ४९ ४६	१८
१९	६ ०१ १८ १६	९ १६ ४५ ५७	८ ०७ ३३ ०६	६ २४ ४५ ४४	० ०६ ४३ ४७	४ १५ २३ १०	० २१ १८ ०४	३ १५ ०८ १५	९ १९ ०० ५७	९ ०७ ४४ ४३	७ १४ ५१ ३६	१९
२०	६ ०२ १७ ५२	९ २९ २३ ११	८ ०८ १६ ३५	६ २५ ५७ २१	० ०६ ३५ ४०	४ १६ १६ ५४	० २१ १३ ३७	३ १५ ०५ ०४	९ १९ ०० ४५	९ ०७ ४४ ५३	७ १४ ५३ २७	२०
२१	६ ०३ १७ ३१	१० १२ २४ ५२	८ ०९ ०० ०९	६ २७ ०७ ०५	० ०६ २७ ३३	४ १७ ११ १८	० २१ ०९ ०८	३ १५ ०१ ५३	९ १९ ०० ३६	९ ०७ ४५ ०७	७ १४ ५५ २०	२१
२२	६ ०४ १७ ११	१० २५ ५३ ५९	८ ०९ ४३ ४८	६ २८ १४ ४७	० ०६ ०९ २४	४ १८ ०६ १८	० २१ ०४ ३७	३ १४ ५८ ४२	९ १९ ०० ३०	९ ०७ ४५ २२	७ १४ ५७ १३	२२
२३	६ ०५ १६ ५२	११ ०९ ५१ १७	८ १० २७ ३३	६ २९ २० १७	० ०६ ११ १५	४ १९ ०१ ५४	० २१ ०० ०३	३ १४ ५५ ३२	९ १९ ०० २७मा	९ ०७ ४५ ३९	७ १४ ५९ ०८	२३
२४	६ ०६ १६ ३६	११ २४ १४ ३५	८ ११ ११ २२	७ ०० २३ २३	० ०६ ०३ ०६	४ १९ ५८ ०६	० २० ५५ २८	३ १४ ५२ २१	९ १९ ०० २७	९ ०७ ४५ ५७	७ १५ ०१ ०४	२४
२५	६ ०७ १६ २२	०० ०८ ५८ ३४	८ ११ ५५ १६	७ ०१ २३ ५१	० ०५ ५४ ५७	४ २० ५४ ५१	० २० ५० ५४	३ १४ ४९ १०	९ १९ ०० ३०	९ ०७ ४६ १९	७ १५ ०३ ०१	२५
२६	६ ०८ १६ १०	०० २३ ५५ ११	८ १२ ३९ १६	७ ०२ २१ २८	० ०५ ४६ ४७	४ २१ ५२ ०९	० २० ४६ १८	३ १४ ४५ ५९	९ १९ ०० ३७	९ ०७ ४६ ४२	७ १५ ०५ ००	२६
२७	६ ०९ १६ ०१	०१ ०८ ५४ ५६	८ १३ २३ २०	७ ०३ १५ ५६	० ०५ ३८ ४०	४ २२ ४९ ५९	० २० ४१ ४१	३ १४ ४२ ४९	९ १९ ०० ४६	९ ०७ ४७ ०६	७ १५ ०६ ५९	२७
२८	६ १० १५ ५२	०१ २३ ४८ ३१	८ १४ ०७ २९	७ ०४ ०६ ५६	० ०५ ३० ३५	४ २३ ४८ १९	० २० ३७ ०२	३ १४ ३९ ३८	९ १९ ०० ५८	९ ०७ ४७ ३४	७ १५ ०९ ००	२८
२९	६ ११ १५ ४६	०२ ०८ २८ २६	८ १४ ५१ ४२	७ ०४ ५४ ०८	० ०५ २२ २९	४ २४ ४७ ०८	० २० ३२ २२	३ १४ ३६ २७	९ १९ ०१ १५	९ ०७ ४८ ०२	७ १५ ११ ०१	२९
३०	६ १२ १५ ४२	०२ २२ ४९ ४९	८ १५ ३६ ००	७ ०५ ३७ ०४	० ०५ १४ २७	४ २५ ४६ २६	० २० २७ ३८	३ १४ ३३ १६	९ १९ ०१ ३३	९ ०७ ४८ ३४	७ १५ १३ ०४	३०
३१	६ १३ १५ ३९	०३ ०६ ५० ३७	८ १६ २० २३	७ ०६ १५ १७	० ०५ ०६ २७	४ २६ ४६ १२	० २० २२ ५२	३ १४ ३० ०६	९ १९ ०१ ५६	९ ०७ ४९ ०७	७ १५ १५ ०७	३१

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५१' ०३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	नवं.
१	६ १४ १५ ३९	३ २० ३१ ०१	८ १७ ०४ ४९	७ ०६ ४७ ४६	० ०४ ५८ २९	४ २७ ४६ २५	० २० १८ ०६	३ १४ २६ ५५	९ १९ ०२ २१	९ ०७ ४९ ४१	७ १५ १७ १३	१
२	६ १५ १५ ४१	४ ०३ ५२ ४१	८ १७ ४९ २०	७ ०७ १४ ३२	० ०४ ५० ३५	४ २८ ४७ ०४	० २० १३ १८	३ १४ २३ ४४	९ १९ ०२ ४९	९ ०७ ५० १८	७ १५ १९ १९	२
३	६ १६ १५ ४४	४ १६ ५७ ५६	८ १८ ३३ ५५	७ ०७ ३४ ३७	० ०४ ४२ ४५	४ २९ ४८ ०७	० २० ०८ ३१	३ १४ २० ३३	९ १९ ०२ २१	९ ०७ ५० ५८	७ १५ २१ २६	३
४	६ १७ १५ ४९	४ २९ ४९ १२	८ १९ १८ ३४	७ ०७ ४७ ५०	० ०४ ३४ ५८	५ ०० ४९ ३६	० २० ०३ ४३	३ १४ १७ २२	९ १९ ०३ ५५	९ ०७ ५१ ३८	७ १५ २३ ३३	४
५	६ १८ १५ ५६	५ १२ २८ ३२	८ २० ०३ १८	७ ०७ ५२५६व	० ०४ २७ १५	५ ०१ ५१ २७	० १९ ५८ ५४	३ १४ १४ १२	९ १९ ०४ ३३	९ ०७ ५२ २१	७ १५ २५ ४२	५
६	६ १९ १६ ०४	५ २४ ५७ ३०	८ २० ४८ ०६	७ ०७ ४९ ३५	० ०४ १९ ३८	५ ०२ ५३ ४२	० १९ ५४ ०३	३ १४ ११ ०१	९ १९ ०५ १४	९ ०७ ५३ ०७	७ १५ २७ ५२	६
७	६ २० १६ १५	६ ०७ १७ १०	८ २१ ३२ ५७	७ ०७ ३७ ०७	० ०४ १२ ०६	५ ०३ ५६ १८	० १९ ४९ १०	३ १४ ०७ ५०	९ १९ ०५ ५७	९ ०७ ५३ ५३	७ १५ ३० ०२	७
८	६ २१ १६ २७	६ १९ २८ १९	८ २२ १७ ५२	७ ०७ १५ २३	० ०४ ०४ ३८	५ ०४ ५९ १७	० १९ ४४ १७	३ १४ ०४ ३९	९ १९ ०६ ४४	९ ०७ ५४ ४२	७ १५ ३२ १३	८
९	६ २२ १६ ४१	७ ०१ ३१ ४०	८ २३ ०२ ५१	७ ०६ ४४ ०४	० ०३ ५७ १६	५ ०६ ०२ ३७	० १९ ३९ २५	३ १४ ०१ २९	९ १९ ०७ ३४	९ ०७ ५५ ३३	७ १५ ३४ २५	९
१०	६ २३ १६ ५७	७ १३ २८ ११	८ २३ ४७ ५४	७ ०६ ०२ ०७	० ०३ ५० ०१	५ ०७ ०६ १७	० १९ ३४ ३४	३ १३ ५८ १८	९ १९ ०८ २६	९ ०७ ५६ २५	७ १५ ३६ ३८	१०
११	६ २४ १७ १४	७ २५ १९ २२	८ २४ ३३ ००	७ ०५ ०९ ५२	० ०३ ४२ ५१	५ ०८ १० १५	० १९ २९ ४६	३ १३ ५५ ०७	९ १९ ०९ २२	९ ०७ ५७ २०	७ १५ ३८ ५१	११
१२	६ २५ १७ ३४	८ ०७ ०७ २५	८ २५ १८ १०	७ ०४ ०८ ३६	० ०३ ३५ ४९	५ ०९ १४ ३४	० १९ २४ ५९	३ १३ ५१ ५६	९ १९ १० २१	९ ०७ ५८ १७	७ १५ ४१ ०५	१२
१३	६ २६ १७ ५५	८ १८ ५५ २३	८ २६ ०३ २३	७ ०५ ५९ ३२	० ०३ २८ ५३	५ १० १९ ११	० १९ २० १२	३ १३ ४८ ४६	९ १९ ११ २३	९ ०७ ५९ १५	७ १५ ४३ १९	१३
१४	६ २७ १८ १७	९ ०० ४७ ०४	८ २६ ४८ ४०	७ ०१ ४४ २४	० ०३ २२ ०४	५ ११ २४ ०५	० १९ १५ २५	३ १३ ४५ ३५	९ १९ १२ २८	९ ०८ ०० १६	७ १५ ४५ ३४	१४
१५	६ २८ १८ ४२	९ १२ ४७ ०४	८ २७ ३२ ५९	७ ०० २५ १८	० ०३ १५ २३	५ १२ २९ १७	० १९ १० ३९	३ १३ ४२ २४	९ १९ १३ ३६	९ ०८ ०१ १८	७ १५ ४७ ४९	१५
१६	६ २९ १९ ०८	९ २५ ०० ३१	८ २८ १९ २२	६ २९ ०४ ४३	० ०३ ०८ ५१	५ १३ ३४ ४७	० १९ ०५ ५३	३ १३ ३९ १३	९ १९ १४ ४७	९ ०८ ०२ २२	७ १५ ५० ०६	१६
१७	७ ०० १९ ३५	१० ०७ ३२ ४५	८ २९ ०४ ४९	६ २७ ४५ १२	० ०३ ०२ २७	५ १४ ४० ३२	० १९ ०१ ०७	३ १३ ३६ ०३	९ १९ १६ ००	९ ०८ ०३ २८	७ १५ ५२ २२	१७
१८	७ ०१ २० ०४	१० २० २८ ५४	८ २९ ५० १९	६ २६ २९ १९	० ०२ ५६ ०९	५ १५ ४६ ३३	० १८ ५६ २२	३ १३ ३२ ५२	९ १९ १७ १७	९ ०८ ०४ ३६	७ १५ ५४ ३८	१८
१९	७ ०२ २० ३५	११ ०३ ५३ ०५	९ ०० ३५ २१	६ २५ १९ २७	० ०२ ५० ०२	५ १६ ५२ ५०	० १८ ५१ ४०	३ १३ २९ ४१	९ १९ १८ ३६	९ ०८ ०५ ४५	७ १५ ५६ ५५	१९
२०	७ ०३ २१ ०७	११ १७ ४७ ३७	९ ०१ २१ २६	६ २४ १७ ३६	० ०२ ४४ ०३	५ १७ ५९ २२	० १८ ४७ ००	३ १३ २६ ३०	९ १९ १९ ५८	९ ०८ ०६ ५७	७ १५ ५९ १२	२०
२१	७ ०४ २१ ४१	० ०२ १२ ०१	९ ०२ ०७ ०३	६ २३ २५ २०	० ०२ ३८ १३	५ १९ ०६ ०९	० १८ ४२ २२	३ १३ २३ २०	९ १९ २१ २४	९ ०८ ०८ ०९	७ १६ ०१ ३१	२१
२२	७ ०५ २२ १६	० १७ ०२ १९	९ ०२ ५२ ४४	६ २२ ४३ ४४	० ०२ ३२ ३३	५ २० १३ १०	० १८ ३७ ४७	३ १३ २० ०९	९ १९ २२ ५२	९ ०८ ०९ २६	७ १६ ०३ ५०	२२
२३	७ ०६ २२ ५३	१ ०२ १० ५८	९ ०३ ३८ २७	६ २२ १३ २५	० ०२ २७ ०३	५ २१ २० २५	० १८ ३३ १३	३ १३ १६ ५८	९ १९ २४ २३	९ ०८ १० ४०	७ १६ ०६ १०	२३
२४	७ ०७ २३ ३१	१ १७ २७ ४२	९ ०४ २४ १३	६ २१ ५४ ३५	० ०२ २१ ४३	५ २२ २७ ५३	० १८ २८ ४०	३ १३ १३ ४७	९ १९ २५ ५६	९ ०८ ११ ५९	७ १६ ०८ ३०	२४
२५	७ ०८ २४ १२	२ ०२ ४१ १९	९ ०५ १० ०१	६ २१ ४७०४मा	० ०२ १६ ३४	५ २३ ३५ ३४	० १८ २४ १०	३ १३ १० ३७	९ १९ २७ ३३	९ ०८ १३ १८	७ १६ १० ५०	२५
२६	७ ०९ २४ ५३	२ १७ ४१ ४०	९ ०५ ५५ ५२	६ २१ ५० २६	० ०२ ११ ३४	५ २४ ४३ २८	० १८ १९ ४५	३ १३ ०७ २६	९ १९ २९ १३	९ ०८ १४ ४१	७ १६ १३ १०	२६
२७	७ १० २५ ३५	३ ०२ २१ १४	९ ०६ ४१ ४५	६ २२ ०४ ०४	० ०२ ०६ ४६	५ २५ ५१ ३३	० १८ १५ २६	३ १३ ०४ १५	९ १९ ३० ५४	९ १८ १६ ०४	७ १६ १५ ३०	२७
२८	७ ११ २६ १९	३ १६ ३५ ५१	९ ०७ २७ ४१	६ २२ २७ १३	० ०२ ०२ ०८	५ २६ ५९ ५१	० १८ ११ ०९	३ १३ ०१ ०४	९ १९ ३२ ३९	९ ०८ १७ २९	७ १६ १७ ५१	२८
२९	७ १२ २७ ०४	४ ०० २४ २९	९ ०८ १३ ३९	६ २२ ५९ ०१	० ०१ ५७ २१	५ २८ ०८ २०	० १८ ०६ ५६	३ १२ ५७ ५३	९ १९ ३४ २७	९ ०८ १८ ५६	७ १६ २० ११	२९
३०	७ १३ २७ ५०	४ १३ ४८ २५	९ ०८ ५९ ३९	६ २३ ३८ ३८	० ०१ ५३ २५	५ २९ १७ ०१	० १८ ०२ ४७	३ १२ ५४ ४३	९ १९ ३६ १६	९ ०८ २० २४	७ १६ २२ ३१	३०

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिसम्बर सन् १९९९ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५१' ०७"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
१	७ १४ २८ ३७	४ २६ ५० २७	९ ०९ ४५ ४१	६ २४ २५ ११	० ०१ ४९ २०	६ ०० २५ ५२	० १७ ५८ ४०	३ १२ ५१ ३२	९ १९ ३८ ०९	९ ०८ २१ ५६	७ १६ २४ ५२	१
२	७ १५ २९ २६	५ ०९ ३३ ५८	९ १० ३१ ४५	६ २५ १७ ५२	० ०१ ४५ २६	६ ०१ ३४ ५४	० १७ ५४ ३७	३ १२ ४८ २१	९ १९ ४० ०४	९ ०८ २३ २६	७ १६ २७ १२	२
३	७ १६ ३० १६	५ २२ ०२ २८	९ ११ १७ ५१	६ २६ १५ ५३	० ०१ ४१ ४४	६ ०२ ४४ ०५	० १७ ५० ३६	३ १२ ४५ १०	९ १९ ४२ ०२	९ ०८ २५ ००	७ १६ २९ ३२	३
४	७ १७ ३१ ०६	६ ०४ १९ ०८	९ १२ ०३ ५९	६ २७ १८ ३१	० ०१ ३८ १४	६ ०३ ५३ २७	० १७ ४६ ४०	३ १२ ४२ ००	९ १९ ४४ ०२	९ ०८ २६ ३५	७ १६ ३१ ५२	४
५	७ १८ ३१ ५८	६ १६ २६ ४१	९ १२ ५० ०८	६ २८ २५ ०९	० ०१ ३५ ५	६ ०५ ०२ ५८	० १७ ४२ ५१	३ १२ ३८ ४९	९ १९ ४६ ०६	९ ०८ २८ ११	७ १६ ३४ १२	५
६	७ १९ ३२ ५२	६ २८ २७ १५	९ १३ ३६ १९	६ २९ ३५ १२	० ०१ ३१ ४८	६ ०६ १२ ३९	० १७ ३९ ०६	३ १२ ३५ ३८	९ १९ ४८ १२	९ ०८ २९ ४८	७ १६ ३६ ३३	६
७	७ २० ३३ ४६	७ १० २२ ३५	९ १४ २२ ३२	७ ०० ४८ ११	० ०१ २८ ५४	६ ०७ २२ २८	० १७ ३५ २६	३ १२ ३२ २७	९ १९ ५० २०	९ ०८ ३१ २७	७ १६ ३८ ५३	७
८	७ २१ ३४ ४१	७ २२ १४ १३	९ १५ ०८ ४७	७ ०२ ०३ ३८	० ०१ २६ ११	६ ०८ ३२ २७	० १७ ३१ ५०	३ १२ २९ १७	९ १९ ५२ ३१	९ ०८ ३३ ०८	७ १६ ४१ १३	८
९	७ २२ ३५ ३७	८ ०४ ०३ ३८	९ १५ ५५ ०३	७ ०३ २१ १४	० ०१ २३ ४०	६ ०९ ४२ ३५	० १७ २८ १७	३ १२ २६ ०६	९ १९ ५४ ४३	९ ०८ ३४ ४९	७ १६ ४३ ३३	९
१०	७ २३ ३६ ३४	८ १५ ५२ ३४	९ १६ ४१ २०	७ ०४ ४० ३९	० ०१ २१ २२	६ १० ५२ ५०	० १७ २४ ४८	३ १२ २२ ५५	९ १९ ५६ ५९	९ ०८ ३६ ३३	७ १६ ४५ ५३	१०
११	७ २४ ३७ ३३	८ २७ ४३ ११	९ १७ २७ ३९	७ ०६ ०१ ४०	० ०१ १९ १६	६ १२ ०३ १४	० १७ २१ २३	३ १२ १९ ४४	९ १९ ५९ १७	९ ०८ ३८ १८	७ १६ ४८ १२	११
१२	७ २५ ३८ ३२	९ ०९ ३८ १२	९ १८ १३ ५९	७ ०७ २४ ०४	० ०१ १७ २२	६ १३ १३ ४७	० १७ १८ ०३	३ १२ १६ ३४	९ २० ०१ ३७	९ ०८ ४० ०४	७ १६ ५० ३२	१२
१३	७ २६ ३९ ३२	९ २१ ४० ५९	९ १९ ०० २१	७ ०८ ४७ ४१	० ०१ १५ ४०	६ १४ २४ २६	० १७ १४ ५०	३ १२ १३ २३	९ २० ०४ ००	९ ०८ ४१ ५२	७ १६ ५२ ५२	१३
१४	७ २७ ४० ३२	१० ०३ ५५ २७	९ १९ ४६ ४३	७ १० १२ २३	० ०१ १४ ११	६ १५ ३५ १२	० १७ ११ ४४	३ १२ १० १२	९ २० ०६ २५	९ ०८ ४३ ४०	७ १६ ५५ ११	१४
१५	७ २८ ४१ ३३	१० १६ २६ ००	९ २० ३३ ०७	७ ११ ३८ ०४	० ०१ १२ ५५	६ १६ ४६ ०६	० १७ ०८ ४४	३ १२ ०७ ०१	९ २० ०८ ५३	९ ०८ ४५ ३०	७ १५ ५७ ३०	१५
१६	७ २९ ४२ ३५	१० २९ १७ ०९	९ २१ १९ ३१	७ १३ ०४ ३७	० ०१ ११ ५१	६ १७ ५७ ०६	० १७ ०५ ४९	३ १२ ०३ ५२	९ २० ११ २०	९ ०८ ४७ २२	७ १६ ५९ ४२	१६
१७	८ ०० ४३ ३८	११ १२ ३२ ५७	९ २२ ०५ ५८	७ १४ ३१ ५९	० ०१ ११ ००	६ १९ ०८ १४	० १७ ०३ ००	३ १२ ०० ४०	९ २० १३ ५२	९ ०८ ४९ १३	७ १६ ०२ ०८	१७
१८	८ ०१ ४४ ४२	११ २६ १६ २६	९ २२ ५२ २४	७ १६ ०० ०५	० ०१ १० २१	६ २० १९ २८	० १७ ०० १६	३ ११ ५७ २९	९ २० १६ २६	९ ०८ ५१ ०७	७ १७ ०४ २६	१८
१९	८ ०२ ४५ ४७	० १० २८ ३५	९ २३ ३८ ५२	७ १७ २८ ५०	० ०१ ०९ ५५	६ २१ ३० ४९	० १६ ५७ ३६	३ १९ ५४ १८	९ २० १९ ०१	९ ०८ ५३ ०२	७ १७ ०६ ४४	१९
२०	८ ०३ ४६ ५२	० २५ ०७ ३९	९ २४ २५ २०	७ १८ ५८ ११	० ०१ ०९ ४२	६ २२ ४२ १५	० १६ ५५ ०२	३ ११ ५१ ०७	९ २० २१ ३९	९ ०८ ५४ ५७	७ १७ ०९ ०१	२०
२१	८ ०४ ४७ ५७	१ १० ०८ ३१	९ २५ ११ ४९	७ २० २८ ०३	० ०१ ०९ ४०मा	६ २३ ५३ ४८	० १६ ५२ ३६	३ ११ ४७ ५७	९ २० २४ १९	९ ०८ ५६ ५४	७ १७ ११ १८	२१
२२	८ ०५ ४९ ०३	१ २५ २२ ५६	९ २५ ५८ १८	७ २१ ५८ २३	० ०१ ०९ ५१	६ २५ ०५ २६	० १६ ५० २०	३ ११ ४४ ४६	९ २० २७ ००	९ ०८ ५८ ५२	७ १७ १३ ३५	२२
२३	८ ०६ ५० ०९	२ १० ४० ३७	९ २६ ४४ ४९	७ २३ २९ ०७	० ०१ १० १६	६ २६ १७ ११	० १६ ४८ ०९	३ ११ ४१ ३५	९ २० २९ ४४	९ ०९ ०० ५१	७ १७ १५ ५०	२३
२४	८ ०७ ५१ १६	२ २५ ५० ४८	९ २७ ३१ १९	७ २५ ०० १२	० ०१ १० ५२	६ २७ २९ ००	० १६ ४६ ०१	३ ११ ३८ २४	९ २० ३२ ३०	९ ०९ ०२ ५१	७ १७ १८ ०४	२४
२५	८ ०८ ५२ २४	३ १० ४४ ०८	९ २८ १७ ५०	७ २६ ३१ ३४	० ०१ ११ ४२	६ २८ ४० ५५	० १६ ४४ ००	३ ११ ३५ १८	९ २० ३५ १८	९ ०९ ०४ ५२	७ १७ २० १८	२५
२६	८ ९ ५३ ३१	३ २५ १३ ५५	९ २९ ०४ २२	७ २८ ०३ ११	० ०१ १२ ४४	६ २९ ५२ ५५	० १६ ४२ ०३	३ ११ ३२ ०३	९ २० ३८ ०७	९ ०९ ०६ ५४	७ १७ २२ ३१	२६
२७	८ १० ५४ ३९	४ ०९ १६ ३६	९ २९ ५० ५४	७ २९ ३५ ००	० ०१ १३ ५८	७ ०१ ०५ ००	० १६ ४० १२	३ ११ २८ ५२	९ २० ४० ५८	९ ०९ ०८ ५७	७ १७ २४ ४३	२७
२८	८ ११ ५५ ४७	४ २२ ५१ ३७	१० ०० ३७ २६	८ ०१ ०७ ०१	० ०१ १५ २५	७ ०२ १७ १०	० १६ ३८ २८	३ ११ २५ ४१	९ २० ४१ ५२	० ०९ ११ ०१	७ १७ २६ ५४	२८
२९	८ १२ ५६ ५६	५ ०६ ०० ३५	१० ०१ २३ ५८	८ ०२ ३९ १३	० ०१ १७ ०४	७ ०३ २९ २४	० १६ ३६ ४९	३ ११ २२ ३१	९ २० ४६ ४६	९ ०९ १३ ०६	७ १७ २९ ०४	२९
३०	८ १३ ५८ ०५	५ १८ ४६ ३९	१० ०२ १० ३१	८ ०४ ११ ३६	० ०१ १८ ५५	७ ०४ ४१ ४३	० १६ ३५ १९	३ ११ १९ २०	९ २० ४९ ४३	९ ०९ १५ ११	७ १७ ३१ १३	३०
३१	८ १४ ५९ १३	६ ०१ १३ ४३	१० ०२ ५७ ०३	८ ०५ ४४ ०९	० ०१ २० ५०	७ ०५ ५४ ०६	० १६ ३३ ५६	३ ११ १६ ०९	९ २० ५२ ४१	९ ०९ १७ १७	७ १७ ३३ २१	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३°।११'।११"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
१	८ १६ ०० १३	६ १३ २५ ५७	१० ०३ ४३ ३७	८ ०७ १६ ५६	० ०१ २३ १३	७ ०७ ०६ ३३	० १६ ३२ ४१	३ ११ १२ ५८	९ २० ५५ ४१	९ ०९ १९ २४	७ १७ ३५ २८	१
२	८ १७ ०१ ३२	६ २५ २७ २३	१० ०४ ३० ०९	८ ०८ ४९ ५८	० ०१ २५ ३१	७ ०८ १९ ०५	० १६ ३१ ३१	३ ११ ०९ ४८	९ २० ५८ ४२	९ ०९ २१ ३२	७ १७ ३७ ३५	२
३	८ १८ ०२ ४१	७ ०० २१ ४०	१० ०५ १६ ४१	८ १० २३ १७	० ०१ २८ १८	७ ०९ ३१ ४०	० १६ ३० २६	३ ११ ०६ ३७	९ २१ ०१ ४५	९ ०९ २३ ४१	७ १७ ३९ ४१	३
४	८ १९ ३ ५०	७ १९ ११ ५८	१० ०६ ०३ १४	८ ११ ५६ ५६	० ०१ ३१ ०८	७ १० ४४ २०	० १६ २९ २६	३ ११ ०३ २६	९ २१ ०४ ४९	९ ०९ २५ ५१	७ १७ ४१ ४६	४
५	८ २० ०५ ००	८ ०१ ०१ ००	१० ०६ ४९ ४६	८ १३ ३० ५८	० ०१ ३४ १०	७ ११ ५७ ०३	० १६ २८ ३३	३ ११ ०० १५	९ २१ ०७ ५५	९ ०९ २८ ००	७ १७ ४३ ५०	५
६	८ २१ ०६ ०१	८ १२ ५१ ०३	१० ०७ ३६ १८	८ १५ ०५ २५	० ०१ ३७ २४	७ १२ ०९ ४९	० १६ २७ ४५	३ १० ५७ ०४	९ २१ ११ ०३	९ ०९ ३० १०	७ १७ ४५ ५३	६
७	८ २२ ०७ १९	८ २४ ४४ ०६	१० ०८ २२ ४९	८ १६ ४० २०	० ०१ ४० ५०	७ १४ २२ ३९	० १६ २७ ०६	३ १० ५३ ५४	९ २१ १४ ११	९ ०९ ३२ २२	७ १७ ४७ ५५	७
८	८ २३ ०८ २८	९ ०६ ४२ ००	१० ०९ ०९ २०	८ १८ १५ ४४	० ०१ ४४ २७	७ १५ ३५ ३३	० १६ २६ ३४	३ १० ५० ४३	९ २१ १७ २१	९ ०९ ३४ ३४	७ १७ ४९ ५६	८
९	८ २४ ०९ ३६	९ १८ ४६ ३९	१० ०९ ५५ ५१	८ १९ ५१ ४०	० ०१ ४८ १७	७ १६ ४८ २९	० १६ २६ १०	३ १० ४७ ३२	९ २१ २० ३२	९ ०९ ३६ ४६	७ १७ ५१ ५६	९
१०	८ २५ १० ४५	१० ०१ ०० ०४	१० १० ४२ २१	८ २१ २८ ०७	० ०१ ५२ १८	७ १८ ०१ २८	० १६ २५ ५२	३ १० ४४ २१	९ २१ २३ ४५	९ ०९ ३८ ५८	७ १७ ५३ ५४	१०
११	८ २६ ११ ५४	१० १३ २४ ३५	१० ११ २८ ५१	८ २३ ०५ ०८	० ०१ ५६ ३०	७ १९ १४ ३०	० १६ २५ ४१	३ १० ४१ ११	९ २१ २६ ५८	९ ०९ ४१ १३	७ १७ ५५ ५१	११
१२	८ २७ १३ ०२	१० २६ ०२ ४९	१० १२ १५ २०	८ २४ ४२ ४०	० ०२ ०० ५३	७ २० २७ ३६	० १६ २५ ३५	३ १० ३८ ००	९ २१ ३० १३	९ ०९ ४३ २७	७ १७ ५७ ४७	१२
१३	८ २८ १४ १०	११ ०८ ५७ ३०	१० १३ ०१ ४८	८ २६ २० ४५	० ०२ ०५ २९	७ २१ ४१ ४५	० १६ २५ ३५	३ १० ३४ ४९	९ २१ ३३ २९	९ ०९ ४५ ४०	७ १७ ५९ ४२	१३
१४	८ २९ १५ १७	११ २२ ११ २१	१० १३ ४८ १६	८ २७ ५९ १९	० ०२ १० १४	७ २२ ५३ ५६	० १६ २५ ४३	३ १० ३१ ३८	९ २१ ३६ ४६	९ ०९ ४७ ५५	७ १८ ०१ ३६	१४
१५	९ ०० १६ २५	० ०५ ४६ ३३	१० १४ ३४ ४३	८ २९ ३८ २३	० ०२ १५ ११	७ २४ ०७ १०	० १६ २५ ५८	३ १० २८ २८	९ २१ ४० ०४	९ ०९ ५० १०	७ १८ ०३ २९	१५
१६	९ ०१ १७ ३२	० १९ ४४ १८	१० १५ २१ ०९	९ ०१ १७ ५४	० ०२ २० १९	७ २५ २० २६	० १६ २६ २१	३ १० २५ १७	९ २१ ४३ २२	९ ०९ ५२ २५	७ १८ ०५ २१	१६
१७	९ ०२ १८ ३८	१ ०४ ०४ ११	१० १६ ०७ ३६	९ ०२ ५७ ५०	० ०२ २५ ३८	७ २६ ३३ १५	० १६ २६ ५२	३ १० २२ ०६	९ २१ ४६ ४१	९ ०९ ५४ ४०	७ १८ ०७ ११	१७
१८	९ ०३ १९ ४४	१ १८ ४३ ३०	१० १६ ५४ ००	९ ०४ ३८ ११	० ०२ ३१ ०७	७ २७ ४७ ०६	० १६ २७ ३०	३ १० १८ ५५	९ २१ ५० ०२	९ ०९ ५६ ५५	७ १८ ०९ ००	१८
१९	९ ०४ २० ४९	२ ०३ ३० ४०	१० १७ ४० २३	९ ०६ १८ ५५	० ०२ ३६ ४७	७ २९ ०० ३०	० १६ २८ १५	३ १० १५ ४५	९ २१ ५३ २५	९ ०९ ५९ ११	७ १८ १० ४८	१९
२०	९ ०५ २१ ५५	२ १८ ३९ १३	१० १८ २६ ४६	९ ०८ ०० ०१	० ०२ ४२ ३८	८ ०० १३ ५५	० १६ २९ ०६	३ १० १२ ३४	९ २१ ५६ ४६	९ १० ०१ २७	७ १८ १२ ३४	२०
२१	९ ०६ २२ ५८	३ ०३ ३९ ४९	१० १९ १३ ०७	९ ०९ ४१ २९	० ०२ ४८ ३९	८ ०१ २७ २३	० १६ ३० ०३	३ १० ०९ २३	९ २२ ०० ०९	९ १० ०३ ४३	७ १८ १४ १६	२१
२२	९ ०७ २४ ०२	३ १८ ३० ४८	१० १९ ५९ २८	९ ११ २३ १८	० ०२ ५४ ५०	८ ०२ ४० ५२	० १६ ३१ ०५	३ १० ०६ १२	९ २२ ०३ ३२	९ १० ०६ ००	७ १८ १५ ५७	२२
२३	९ ०८ २५ ०५	४ ०३ ०४ ३३	१० २० ४५ ४७	९ १३ ०५ २९	० ०३ ०१ ११	८ ०३ ५४ २४	० १६ ३२ १५	३ १० ०३ ०२	९ २२ ०६ ५७	९ १० ०८ १६	७ १८ १७ ३७	२३
२४	९ ०९ २६ ००	४ १० १५ ३०	१० २१ ३२ ०५	९ १४ ४४ ०३	० ०३ ०७ ४३	८ ०५ ०७ ५८	० १६ ३३ ३२	३ ०९ ५९ ५१	९ २२ १० २२	९ १० १० ३२	७ १८ १९ १५	२४
२५	९ १० २७ ०८	५ ०१ ०० ३५	१० २२ १८ २२	९ १६ ३१ ००	० ०३ १४ २४	८ ०६ २१ ३३	० १६ ३४ ५७	३ ०९ ५६ ४०	९ २२ १३ ४८	९ १० १२ ४८	७ १८ २० ५२	२५
२६	९ ११ २८ ०९	५ १४ १९ १४	१० २३ ०४ ३७	९ १८ १४ १९	० ०३ २१ १५	८ ०७ ३५ १०	० १६ ३६ २८	३ ०९ ५३ २९	९ २२ १७ १४	९ १० १५ ०४	७ १८ २२ २७	२६
२७	९ १२ २९ ०८	५ २७ १३ ००	१० २३ ५० ५१	९ १९ ५८ ०१	० ०३ २८ १६	८ ०८ ४८ ४९	० १६ ३८ ०६	३ ०९ ५० १८	९ २२ २० ४१	९ १० १७ २१	७ १८ २४ ००	२७
२८	९ १३ ३० ०७	६ ०९ ४४ ५९	१० २४ ३७ ०४	९ २१ ४२ ०४	० ०३ ३५ २७	८ १० ०२ २९	० १६ ३९ ४९	३ ०९ ४७ ०८	९ २२ २४ ०८	९ १० १९ ३७	७ १८ २५ ३२	२८
२९	९ १४ ३१ ०५	६ २३ ५९ १५	१० २५ २३ १५	९ २३ २६ २५	० ०३ ४२ ४७	८ ११ १६ ११	० १६ ४१ ३७	३ ०९ ४३ ५७	९ २२ २७ ३५	९ १० २१ ५४	७ १८ २७ ०२	२९
३०	९ १५ ३२ ०२	७ ०४ ०० २२	१० २६ ०९ २५	९ २५ ११ ००	० ०३ ५० १६	८ १२ २९ ५४	० १६ ४३ ३१	३ ०९ ४० ४६	९ २२ ३१ ०३	९ १० २४ १०	७ १८ २८ ३१	३०
३१	९ १६ ३२ ५९	७ १५ ५३ ०१	१० २६ ५५ ३३	९ २६ ५५ ४३	० ०३ ५७ ५५	८ १३ ४३ ३९	० १६ ४५ ३१	३ ०९ ३७ ३५	९ २२ ३४ ३१	९ १० २६ २६	७ १८ २९ ५८	३१

प्रकाशकः धर्मपत्त प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फरवरी सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशा २३° ५१' १९"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फा.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फा.
१	९ १७ ३३ ५४	७ २७ ४१ ४०	१० २७ ४१ ४१	९ २८ ४० २४	० ०४ ०५ ४२	८ १४ ५७ २५	० १६ ४७ ४०	३ ०९ ३४ २५	९ २२ ३७ ५९	९ १० २८ ४३	७ १८ ३१ २३	१
२	९ १८ ३४ ४८	८ ०९ ३० २४	१० २८ २७ ४६	१० ०० २४ ५२	० ०४ १३ ४०	८ १६ ११ १३	० १६ ४९ ५४	३ ०९ ३१ १४	९ २२ ४१ २८	९ १० ३० ५८	७ १८ ३२ ४७	२
३	९ १९ ३५ ४१	८ २१ २२ ४७	१० २९ १३ ५०	१० ०२ ०८ ५३	० ०४ २१ ४६	८ १७ २५ २	० १६ ५२ १७	३ ०९ २८ ०३	९ २२ ४४ ५७	९ १० ३३ १३	७ १८ ३४ ०८	३
४	९ २० ३६ ३४	९ ०३ २१ ४७	१० २९ ५९ ५२	१० ०३ ५२ १०	० ०४ ३० ००	८ १८ ३८ ५२	० १६ ५४ ४६	३ ०९ २४ ५२	९ २२ ४८ २६	९ १० ३५ २८	७ १८ ३५ २८	४
५	९ २१ ३७ २४	९ १५ २९ ४३	११ ०० ४५ ५२	१० ०५ ३४ २२	० ०४ ३८ २३	८ १९ ५२ ४२	० १६ ५७ २१	३ ०९ २१ ४२	९ २२ ५१ ५५	९ १० ३७ ४३	७ १८ ३६ ४६	५
६	९ २२ ३८ १४	९ २७ ४८ २२	११ ०१ ३१ ५१	१० ०७ १५ ०८	० ०४ ४६ ५५	८ २१ ०६ ३५	० १७ ०० ०२	३ ०९ १८ ३१	९ २२ ५५ २४	९ १० ३९ ५९	७ १८ ३८ ०३	६
७	९ २३ ३९ ०३	१० १० १८ ५६	११ ०२ १७ ४८	१० ०८ ५४ ००	० ०४ ५५ ३५	८ २२ २० २९	० १७ ०२ ४७	३ ०९ १५ २०	९ २२ ५८ ५३	९ १० ४२ १४	७ १८ ३९ १७	७
८	९ २४ ३९ ५०	१० २३ ०२ १४	११ ०३ ०३ ४२	१० १० ३० ३२	० ०५ ०४ २४	८ २३ ३४ २३	० १७ ०५ ३९	३ ०९ १२ ०९	९ २३ ०२ २२	९ १० ४४ २९	७ १८ ४० ३०	८
९	९ २५ ४० ३६	११ ०५ ५८ ५०	११ ०३ ४९ ३५	१० १२ ०४ ११	० ०५ १३ २१	८ २४ ४८ १९	० १७ ०८ ३७	३ ०९ ०८ ५९	९ २३ ०५ ५१	९ १० ४६ ४२	७ १८ ४१ ४१	९
१०	९ २६ ४१ २१	११ १९ ०९ ०५	११ ०४ ३५ २७	१० १३ ३४ २४	० ०५ २२ २६	८ २६ ०२ १५	० १७ ११ ४२	३ ०९ ०५ ४८	९ २३ ०९ २०	९ १० ४८ ५५	७ १८ ४२ ५०	१०
११	९ २७ ४२ ०५	० ०२ ३३ १६	११ ०५ २१ १६	१० १५ ०० ३७	० ०५ ३१ ३९	८ २७ १६ १२	० १७ १४ ५३	३ ०९ ०२ ३७	९ २३ १२ ४९	९ १० ५१ ०७	७ १८ ४३ ५८	११
१२	९ २८ ४२ ४७	० १६ ११ ३५	११ ०६ ०७ ०३	१० १६ २२ ११	० ०५ ४१ ०१	८ २८ ३० १०	० १७ १८ ११	३ ०८ ५९ २६	९ २३ १६ १८	९ १० ५३ १९	७ १८ ४५ ०३	१२
१३	९ २९ ४३ २८	१ ०० ०३ ५८	११ ०६ ५२ ४८	१० १७ ३८ २८	० ०५ ५० २९	८ २९ ४४ १०	० १७ २१ ३४	३ ०८ ५६ १५	९ २३ १९ ४६	९ १० ५५ ३०	७ १८ ४६ ०७	१३
१४	१० ०० ४४ ०७	१ १४ ०९ ५५	११ ०७ ३८ ३३	१० १८ ४८ ४७	० ०६ ०० ०५	९ ०० ५८ ०९	० १७ २५ ०१	३ ०८ ५३ ०५	९ २३ २३ १४	९ १० ५७ ४०	७ १८ ४७ ०८	१४
१५	१० ०१ ४४ ४६	१ २८ २८ ०५	११ ०८ २४ १४	१० १९ ५२ २९	० ०६ ०९ ४७	९ ०२ १२ ०९	० १७ २८ ३४	३ ०८ ४९ ५४	९ २३ २६ ४२	९ १० ५९ ५०	७ १८ ४८ ०८	१५
१६	१० ०२ ४५ २२	२ १२ ५६ ०७	११ ०९ ०९ ५३	१० २० ४८ ५०	० ०६ १९ ३८	९ ०३ २६ १०	० १७ ३२ ११	३ ०८ ४६ ४३	९ २३ ३० १०	९ ११ ०१ ५९	७ १८ ४९ ०६	१६
१७	१० ०३ ४५ ५८	२ २७ ३० २०	११ ०९ ५५ ३०	१० २१ ३७ १२	० ०६ २९ ३६	९ ०४ ४० १२	० १७ ३५ ५५	३ ०८ ४३ ३२	९ २३ ३३ ३७	९ ११ ०४ ०८	७ १८ ५० ०३	१७
१८	१० ०४ ४६ ३२	३ १२ ०५ ५१	११ १० ४१ ०५	१० २२ १६ ५५	० ०६ ३९ ४१	९ ०५ ५४ १४	० १७ ३९ ४६	३ ०८ ४० २२	९ २३ ३७ ०३	९ ११ ०६ १६	७ १८ ५० ५८	१८
१९	१० ०५ ४७ ०४	३ २६ ३६ ५४	११ ११ २६ ३८	१० २२ ४७ २४	० ०६ ४९ ५३	९ ०७ ०८ १७	० १७ ४३ ४३	३ ०८ ३७ ११	९ २३ ४० २९	९ ११ ०८ २३	७ १८ ५१ ५१	१९
२०	१० ०६ ४७ ३५	४ १० ५७ २३	११ १२ १२ ०८	१० २३ ०८ ०९	० ०७ ०० १३	९ ०८ २२ २०	० १७ ४७ ५०	३ ०८ ३४ ००	९ २३ ४३ ५५	९ ११ १० २९	७ १८ ५२ ४२	२०
२१	१० ०७ ४८ ०४	४ २५ ०१ ४८	११ १२ ५७ ३६	१० २३ १८ ४८	० ०७ १० ३९	९ ०९ ३६ २४	० १७ ५१ ५८	३ ०८ ३० ४९	९ २३ ४७ १९	९ ११ १२ ३४	७ १८ ५३ ३०	२१
२२	१० ०८ ४८ ३१	५ ०८ ४५ ५४	११ १३ ४३ ०२	१० २३ १९ ०८व	० ०७ २१ ११	९ १० ५० २९	० १७ ५६ १२	३ ०८ २७ ३९	९ २३ ५० ४३	९ ११ १४ ३९	७ १८ ५४ १७	२२
२३	१० ०९ ४८ ५७	५ २२ ०७ १६	११ १४ २८ २६	१० २३ ०९ ०९	० ०७ ३१ ५०	९ १२ ०४ ३४	० १८ ०० २८	३ ०८ २४ २८	९ २३ ५४ ०७	९ ११ १६ ४३	७ १८ ५५ ०२	२३
२४	१० १० ४९ २१	६ ०५ ०५ ३१	११ १५ १३ ४७	१० २२ ४९ ०३	० ०७ ४२ ३६	९ १३ १८ ४०	० १८ ०४ ५०	३ ०८ २१ १७	९ २३ ५७ ३०	९ ११ १८ ४६	७ १८ ५५ ४४	२४
२५	१० ११ ४९ ४४	६ १७ ४२ ०६	११ १५ ५९ ०६	१० २२ १९ २२	० ०७ ५३ २८	९ १४ ३२ ४६	० १८ ०९ १६	३ ०८ १८ ०६	९ २४ ०० ५२	९ ११ २० ४८	७ १८ ५६ २५	२५
२६	१० १२ ५० ०५	७ ०० ०० ०२	११ १६ ४४ २२	१० २१ ४० ५२	० ०८ ०४ २६	९ १५ ४६ ५२	० १८ १३ ४५	३ ०८ १४ ५६	९ २४ ०४ १३	९ ११ २२ ४९	७ १८ ५७ ०२	२६
२७	१० १३ ५० २४	७ १२ ०३ २४	११ १७ २९ ३७	१० २० ५४ ३८	० ०८ १५ २९	९ १७ ०० ५८	० १८ १८ २२	३ ०८ ११ ४५	९ २४ ०७ ३३	९ ११ २४ ४९	७ १८ ५७ ३८	२७
२८	१० १४ ५० ४२	७ २३ ५७ ०२	११ १८ १४ ४८	१० २० ०१ ५६	० ०८ २६ ४०	९ १८ १५ ०५	० १८ २३ ०६	३ ०८ ०८ ३४	९ २४ १० ५२	९ ११ २६ ४८	७ १८ ५८ १३	२८
२९	१० १५ ५० ५८	८ ०५ ४६ ०१	११ १८ ५९ ५८	१० १९ ०४ १६	० ०८ ३७ ५६	९ १९ २९ १२	० १८ २७ ५४	३ ०८ ०५ २३	९ २४ १४ ११	९ ११ २८ ४६	७ १८ ५८ ४४	२९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मार्च सन् २००० ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५१' १९"

ता. मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. मार्च
१	१० १६ ५१ १२	८ १७ ३५ २८	११ १९ ४५ ०५	१० १८ ०३ १५	० ०८ ४९ १६	९ २० ४३ १९	० १८ ३२ ४८	३ ०८ ०२ १२	९ २४ १७ २९	९ ११ ३० ४३	७ १८ ५९ १४	१
२	१० १७ ५१ २४	८ २९ ३० १०	११ २० ३० ०९	१० १७ ०० ३०	० ०९ ०० ४४	९ २१ ५७ २६	० १८ ३७ ४४	३ ०७ ५९ ०२	९ २४ २० ४५	९ ११ ३२ ३९	७ १८ ५९ ४२	२
३	१० १८ ५१ ३५	९ ११ ३४ २१	११ २१ १५ ११	१० १५ ५७ ३८	० ०९ १२ १६	९ २३ ११ ३३	० १८ ४२ ४५	३ ०७ ५५ ५१	९ २४ २४ ०१	९ ११ ३४ ३४	७ १९ ०० ०७	३
४	१० १९ ५१ ४३	९ २३ ५१ ३०	११ २२ ०० १०	१० १४ ५६ ०६	० ०९ २३ ५५	९ २४ २५ ४१	० १८ ४७ ५१	३ ०७ ५२ ४०	९ २४ २७ १५	९ ११ ३६ २७	७ १९ ०० ३०	४
५	१० २० ५१ ५०	१० ०६ २४ ०२	११ २२ ४५ ०७	१० १३ ५७ १२	० ०९ ३५ ३७	९ २५ ३९ ४९	० १८ ५३ ०१	३ ०७ ४९ २९	९ २४ ३० २८	९ ११ ३८ २१	७ १९ ०० ५२	५
६	१० २१ ५१ ५५	१० १९ १३ १५	११ २३ ३० ०१	१० १३ ०२ ०१	० ०९ ४७ २६	९ २६ ५३ ५६	० १८ ५८ १७	३ ०७ ४६ १९	९ २४ ३३ ४०	९ ११ ४० १२	७ १९ ०१ ११	६
७	१० २२ ५१ ५८	११ ०२ १९ १०	११ २४ १४ ५३	१० १२ ११ २५	० ०९ ५९ २०	९ २८ ०८ ०४	० १९ ०३ ३९	३ ०७ ४३ ०८	९ २४ ३६ ५२	९ ११ ४२ ०२	७ १९ ०१ २८	७
८	१० २३ ५२ ००	११ १५ ४० ४२	११ २४ ५९ ४२	१० ११ २६ ०४	० १० ११ १९	९ २९ २२ १२	० १९ ०९ ०६	३ ०७ ३९ ५७	९ २४ ४० ०१	९ ११ ४३ ५१	७ १९ ०१ ४३	८
९	१० २४ ५२ ००	११ २९ १५ ५०	११ २५ ४४ २८	१० १० ४६ २६	० १० २३ २२	१० ०० ३६ २०	० १९ १४ ३७	३ ०७ ३६ ४६	९ २४ ४३ ०९	९ ११ ४५ ३९	७ १९ ०१ ५६	९
१०	१० २५ ५१ ५७	० १३ ०२ ०१	११ २६ २९ १२	१० १० १२ ४९	० १० ३५ ३०	१० ०१ ५० २८	० १९ २० १२	३ ०७ ३३ ३६	९ २४ ४६ १६	९ ११ ४७ २५	७ १९ ०२ ०७	१०
११	१० २६ ५१ ५३	० २६ ५६ ३९	११ २७ १३ ५३	१० ०९ ४५ २६	० १० ४७ ४३	१० ०३ ०४ ३६	० १९ २५ ५०	३ ०७ ३० २५	९ २४ ४९ २१	९ ११ ४९ १०	७ १९ ०२ १६	११
१२	१० २७ ५१ ४७	१ १० ५७ २२	११ २७ ५८ ३२	१० ०९ २४ १८	० ११ ०० ०१	१० ०४ १८ ४४	० १९ ३१ ३२	३ ०७ २७ १४	९ २४ ५२ २५	९ ११ ५० ५४	७ १९ ०२ २३	१२
१३	१० २८ ५१ ३८	१ २५ ०२ २०	११ २८ ४३ ०७	१० ०९ ०९ २७	० ११ १२ २४	१० ०५ ३२ ५३	० १९ ३७ १८	३ ०७ २४ ०३	९ २४ ५५ २८	९ ११ ५२ ३७	७ १९ ०२ २८	१३
१४	१० २९ ५१ २८	२ ०९ १० ०५	११ २९ २७ ४०	१० ०९ ०० ४७	० ११ २४ ५०	१० ०६ ४७ ०१	० १९ ४३ ०९	३ ०७ २० ५३	९ २४ ५८ २८	९ ११ ५४ १७	७ १९ ०२ ३१	१४
१५	११ ०० ५१ १६	२ २३ १९ २३	० ०० १२ १२	१० ०८ ५८ १२मा	० ११ ३७ २१	१० ०८ ०१ ०९	० १९ ४९ ०४	३ ०७ १७ ४२	९ २५ ०१ २८	९ ११ ५५ ५७	७ १९ ०२ ३२ख	१५
१६	११ ०१ ५१ ०२	३ ०७ २८ ५०	० ०० ५६ ३९	१० ०९ ०१ ३२	० ११ ४९ ५६	१० ०९ १५ १७	० १९ ५५ ०५	३ ०७ १४ ३१	९ २५ ०४ २७	९ ११ ५७ ३५	७ १९ ०२ ३१	१६
१७	११ ०२ ५० ४६	३ २१ ३६ ३१	० ०१ ४१ ०४	१० ०९ १० ३६	० १२ ०२ ३६	१० १० २९ २५	० २० ०१ ०९	३ ०७ ११ २०	९ २५ ०७ २३	९ ११ ५९ १२	७ १९ ०२ २९	१७
१८	११ ०३ ५० २८	४ ०५ ३९ ५०	० ०२ २५ २६	१० ०९ २५ ११	० १२ १५ १८	१० ११ ४३ ३२	० २० ०७ १५	३ ०७ ०८ १०	९ २५ १० १७	९ १२ ०० ४७	७ १९ ०२ २५	१८
१९	११ ०४ ५० ०८	४ १९ ३५ ३०	० ०३ ०९ ४६	१० ०९ ४५ ०३	० १२ २८ ०५	१० १२ ५७ ४०	० २० १३ २५	३ ०७ ०४ ५९	९ २५ १३ १०	९ १२ ०२ २०	७ १९ ०२ १९	१९
२०	११ ०५ ४९ ४५	५ ०३ १९ ५३	० ०३ ५४ ०२	१० १० ०९ ५७	० १२ ४० ५७	१० १४ ११ ४८	० २० १९ ४०	३ ०७ ०१ ४८	९ २५ १६ ०२	९ १२ ०३ ५२	७ १९ ०२ ११	२०
२१	११ ०६ ४९ २१	५ १६ ४९ ३३	० ०४ ३८ १६	१० १० ३९ ३८	० १२ ५३ ५२	१० १५ २५ ५५	० २० २५ ५७	३ ०६ ५८ ३७	९ २५ १८ ५२	९ १२ ०५ २४	७ १९ ०२ ०१	२१
२२	११ ०७ ४८ ५५	६ ०० ०१ ५२	० ०५ २२ २७	१० ११ १३ ४९	० १३ ०६ ५०	१० १६ ४० ०२	० २० ३२ १७	३ ०६ ५५ २६	९ २५ २१ ३९	९ १२ ०६ ५३	७ १९ ०१ ४९	२२
२३	११ ०८ ४८ २७	६ १२ ५५ २५	० ०६ ०६ ३५	१० ११ ५२ १५	० १३ १९ ३२	१० १७ ५४ ०९	० २० ३८ ४२	३ ०६ ५२ १६	९ २५ २४ २५	९ १२ ०८ २०	७ १९ ०१ ३३	२३
२४	११ ०९ ४७ ५६	६ २५ ३० २०	० ०६ ५० ४०	१० १२ ३४ ३९	० १३ ३२ ५८	१० १९ ०८ १५	० २० ४५ ११	३ ०६ ४९ ०५	९ २५ २७ १०	९ १२ ०९ ४७	७ १९ ०१ १६	२४
२५	११ १० ४७ २४	७ ०७ ४८ १७	० ०७ ३४ ४२	१० १३ २० ४७	० १३ ४६ ०६	१० २० २२ २२	० २० ५१ ४३	३ ०६ ४५ ५४	९ २५ २९ ५२	९ १२ ११ ११	७ १९ ०० ५६	२५
२६	११ ११ ४६ ५०	७ १९ ५२ १८	० ०८ १८ ४२	१० १४ १० २३	० १३ ५९ १८	१० २१ ३६ २८	० २० ५८ १९	३ ०६ ४२ ४३	९ २५ ३२ ३२	९ १२ १२ ३३	७ १९ ०० ३५	२६
२७	११ १२ ४६ १४	८ ०१ ४६ २९	० ०९ ०२ ३९	१० १५ ०३ १३	० १४ १२ ३४	१० २२ ५० ३४	० २१ ०४ ५८	३ ०६ ३९ ३३	९ २५ ३५ १०	९ १२ १३ ५४	७ १९ ०० ११	२७
२८	११ १३ ४५ ३६	८ १३ ३५ ४५	० ०९ ४६ ३३	१० १५ ५९ ०५	० १४ २५ ५३	१० २४ ०४ ४०	० २१ ११ ३८	३ ०६ ३६ २२	९ २५ ३७ ४७	९ १२ १५ १४	७ १८ ५९ ४६	२८
२९	११ १४ ४४ ५५	८ २५ २५ २६	० १० ३० २४	१० १६ ५७ ४८	० १४ ३९ १३	१० २५ १८ ४६	० २१ १८ १२	३ ०६ ३३ ११	९ २५ ४० २१	९ १२ १६ ३२	७ १८ ५९ १९	२९
३०	११ १५ ४४ १३	९ ०७ ३० ५९	० ११ १४ १२	१० १७ ५९ १२	० १४ ५२ ३८	१० २६ ३२ ५१	० २१ २५ ०८	३ ०६ ३० ००	९ २५ ४२ ५४	९ १२ १७ ४८	७ १८ ५८ ५०	३०
३१	११ १६ ४३ २९	९ १९ २७ ३८	० ११ ५७ ५८	१० १९ ०३ ०८	० १५ ०६ ०५	१० २७ ४६ ५५	० २१ ३२ ००	३ ०६ २६ ५०	९ २५ ४५ २३	९ १२ १९ ०२	७ १८ ५८ १९	३१

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्य ऽव्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥ विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खाँड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का महात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुने एवं वाचकी मंत्र "**ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च**" मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंजागस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर वाचकों को दान दिशान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैत्र शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याच्च पीड़ां तनुजां च कार्त्तिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहु धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्री राम नवमी तक श्री दुर्गा पूजने एवं पठनादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अब युग व्यवस्था (काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्मा जी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २६ महायुग बीत गये हैं और २७वां महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४३२०० वर्ष है। इसमें ५०९९ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५१वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की है। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुये थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी, फसलें अच्छी होती थी। स्त्रियां पतिव्रता थीं, गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष, बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थई। इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार वध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थे। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,००० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी, बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

कलियुग—भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है, इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं, उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान ३॥ हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है, गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०४६ में कलियुग के ५०९० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,९१० वर्ष रहे हैं। कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियां अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्रकाशक: धर्मपाल प्रकाशन, [illegible] ७८५२३४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सम्वत् २०५६ वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि फलम्

अस्मिन् सम्वत्सर २०५६ वर्ष सृष्टि तोगताब्दा सौर वर्ष संख्या १९५५८८५१०० . तत्र कृतयुग प्रमाणम् १७२८००० . त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६००० . द्वापर युग प्रमाणम् ८६४००० . कलियुग प्रमाणम् ४३२००० . तन्मध्ये गतकलि: ५१०० . भौग्यकलि: सौरवर्ष संख्या ४२६९०१ . श्रीकृष्ण जन्मते गताब्द: ५२२५ . श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यत गताब्द: २०५६ . शकाब्द: १९२१ . बार्हस्पत्यमानेन वर्षनाम भद्रपद: . ईस्वीय सन् १९९९-२००० . हिजरी सन् १४१९-२० . श्रीमहावीर निर्वाण जैन संवत् २५२५-२६ . भारतीय गणराज्य सम्वत् ५०-५१ प्रवर्तते।

सम्वत् विश्वा १८ . सम्वत् वाहन चातक: . सम्वत् दो वायु अन्न . सोमवती अमावस्या २ . सोमवती पंचमी ३ . अंगार की चतुर्थी १ . बुधाष्टमी १ . भानुसप्तमी ३ . रवि दशमी २ . सम्वत् मुहूर्त: ३३० . सम्वत् दिनानि ३८४ . तिथि क्षय: १८ . तिथि वृद्धि: १२ . उत्पत्ति विश्वा ८७ . खपति विश्वा ११४ . वर्षा विश्वा ९ . धान्यम् १५ . तृण १७ . शीत ९ . तेज ११ . वायु १३ . वृद्धि १५ . क्षय १५ . विग्रह ११ . ऐक्यम् ११५ . सत्य आधा . धर्म ढाढ़ा . पाप १८ . शनि दृष्टि पूर्व नेष्ट . पूर्वी-दक्षिणी भारत ग्रहण २ . एक चन्द्रस्य . एक सूर्यस्य . वर्षनाम भद्रपद: . मेघनाम द्रोण: . रोहिणी निवासे तटे . सम्वत् निवासो रजक गृहे . शुभंनास्ति दैवज्ञ शुभाशुभ चिन्तनीयम्।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णु विंशति का "नन्दन" नाम का सम्वत्सर है। जिसका फल प्राचीन आचार्यों ने इस प्रकार लिखा है:-

सुभिक्षं सुखिनो लोका व्याधिशोक विवर्जिता:। नन्दनं च धनैर्धान्यैर्नन्दनेवत्सरे भवेत्॥

नन्दन नाम के सम्वत्सर में सुख शांति के साथ प्रजा वैभव युक्त जीवन यापन करेगी। धान्य उत्पादन में बढ़ोत्तरी एवं औद्योगिक क्षेत्रों का विस्तार होगा। वैज्ञानिक अनुसंधान में विशेष सफलता प्राप्त होने से प्रगति के नये आयाम शुरू होंगे।

अखिलेश्वर कल्प के कर्त्ता, अधिपन्ता, लोकनायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के दशाधिकारी राजा-मन्त्री आदि का फल न्यूनाधिक मात्रा में सर्वत्र होता है। लेकिन राजा का प्रभाव सर्वाधिक कश्मीर का स्वर्ग भारत का ताज काश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। ऐसे ही मन्त्री का पूर्व के देश कलिंग में, सस्येश का ईशान पूर्वोत्तर के मध्य विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग पर के साथ कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धान्येश तथा दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान होता है।

राजा गुरुस्तत्फलम्-गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुधाश्च धनेव:।
यजन्ति विप्रा बहवो ग्निहोत्रिणोमहोत्सव: सर्वजनेषु वर्तते॥

राजा गुरु का फल — वर्ष का राजा गुरु होने से धान्यादि का उत्पादन बढ़ेगा तथा वर्षा समयानुकूल अच्छी होगी जिससे सभी वस्तुओं की तेजी में रोक लगेगी। दूध, दही, घी का उत्पादन भी अच्छा बढ़ेगा। विप्रजन धार्मिक कार्यों में अधिक लगेंगे। किन्तु विश्व के पश्चिमी देशों में आपसी मतभेद तथा पूंजीवाद का प्रचार-प्रसार अधिक होगा।

मंत्री बुधस्तत्फलम्: शशिसुते शुभमंत्री समागते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम्।
बहुधनं बहुवारि सयन्वितं यवमसूर चणात्र महार्घता॥

मंत्री बुध का फल — मंत्री पद बुध को मिला है अत: शासन व्यवस्था को चलाने में स्वविवेक की कमी रहेगी। सरकार द्वारा जनता पर अधिक करभार लगाया जायेगा जिससे धान्यादि खाद्य वस्तुओं में तेजी होगी। स्त्रियों का वर्चस्व बढ़ेगा तथा वे अपने दाम्पत्य जीवन का आनन्द पूर्वक निर्वाह करेंगी।

सस्येश: शुक्रस्तत्फलम्-शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनप्रियम्।
गोधूम शालेक्षु धनं प्रियंगु वृक्षेषु पुष्पाणि सुख प्रदानि॥

सस्येश शुक्र का फल — वर्ष की अधिकता में किसान वर्ग लाभान्वित रहेगा जिससे धान्य का उत्पादन बढ़ेगा। लोगों की वृद्धि मनोरंजन और विलासिता की ओर अधिक आकर्षित होगी। वृक्षों व बेलों पर फल-फूल अधिक लगेंगे तथा जौ, गेहूं, गन्ना की पैदावार अधिक बढ़ेगी।

धान्येशो गुरुस्तत्फलम्- गुरौ धान्यपतौ याते यव गोधूम शाल्य:।
पच्यन्ते सर्व देशेषु यज्ञानो ब्राह्मणादय:॥

धान्येश गुरु का फल — धान्य जौ, गेहूं, चावल, मूंग, उड़द आदि की पैदावार अच्छी होगी। धार्मिक जनों द्वारा धर्म का प्रचार किया जायेगा। सरकार द्वारा कृषि विकास एवं भूमि सुधार के नये कार्यक्रमों की घोषणा की जायेगी। प्रजा में मांगलिक उत्सवादि कार्य अधिक होंगे।

मेघेशो भौमस्तत्फलम्- अवनिजे जलदस्य पतौ श्रुति विचार विहीन धरामरा:।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम्॥

मेघेश मंगल का फल — प्रजा में धार्मिक प्रवृत्ति की कमी तथा ब्राह्मणों के बच्चे वेदविचार से दूर भागेंगे। असामाजिक तत्वों का बोलबाला बढ़ेगा। तापमान में बढ़ोत्तरी तथा वर्षा में कमी होने से कृषि में बाधा उत्पन्न होगी।

रसेश: सूर्यस्तत्फलम्- रसपतौ तरणी धरणी तदा वि रसभागरतात्य पयोधरा:।
वसन तैल घृतप्रिय मानवा: सुखरसं न भुनक्ति महीपति:॥

रसेश सूर्य का फल — रसकस, घृत, तैल, दूध आदि में कमी आने से भावों में वृद्धि होगी। वर्षा की कमी से सरसों, गुड़, खांड में तेजी हो। प्रधान शासकों में जनतांत्रिक भावना का अभाव दिखाई देगा। प्रजा में रोगोपद्रव व अराजकता से अशांति बढ़ेगी।

नीरसेश: शुक्रस्तत्फलम्- कर्पूरागुरु गन्धानां हेममौक्तिक वाससाम्।
अर्धवृद्धि: प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि॥

नीरसेश शुक्र का फल — सोना, वस्त्र, कपूर, अगर, तगर तथा अन्य सुगन्ध युक्त पदार्थ मंदे किन्तु मशीनरी सामान व लोहादि धातु पदार्थों की कमी होगी। सरसों, घी, कपास, मृगफली, बूट, पाट, बादाम, रेशम का उत्पादन भी ठीक रहेगा।

फलेशो भौमस्तत्फलम्- फलपतिर्यदि भूतनयो भवेत् बहुपुष्प फलान्वित मेदिनी।
गदभयान्वित देशजनास्तदा नृपतयो बहुविग्रहकारका:॥

फलेश मंगल का फल — तापमान व वर्षा की स्थिति अच्छी नहीं रहने से फलों का उत्पादन कम रहेगा। प्रजा में रोग भय तथा द्वेष की भावना बढ़ेगी। अन्नादि का उत्पादन भी कम होने से जनमानस दु:खी व पीड़ित रहेगा।

धनेशो भृगुस्तत्फलम्- द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युता समधना: सकला ननु मानवा:।
समसुखा क्रय विक्रय जीविनो नृपतयो जनपालन तत्परा:॥

धनेश शुक्र का फल — व्यापारी वर्ग अपने धान्यों में लाभ अच्छा कमायेंगे। शासन व्यवस्था में सुधार होने से असामाजिक तत्वों पर नियंत्रण होगा। प्रजा में सुख शांति का संचार होगा। किन्तु शुक्र की निर्बलता शुभफलों में न्यूनता ला सकती है।

दुर्गेशो भौमस्तत्फलम्-अवनिजो गदनायकतां गतो विविधदु:खवियोग समन्वित:।
जनपदेषु जना: क्रय विक्रये भव विशेतया न फलं क्वचित्॥

दुर्गेश मंगल का फल — प्रजा में अनेक प्रकार की रोग पीड़ा की वृद्धि होगी। उद्योग-धन्धों में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी जिससे लाभ नहीं के बराबर होगा। पूर्वी देशों में भय-विग्रह से जनता अधिक त्रस्त होगी। आणुविक प्रतिस्पर्धा का अधिक विस्तार होगा।

वर्षनाम भाद्रपद फलम्— अर्घं महर्घता यांति धन धान्यं समं भवेत्।
मघवा वर्षति स्वच्छं सम्पदौ भाद्रवर्षके॥

वर्षनाम भाद्रपद का फल — प्रजा में सुख वैभव की वृद्धि तथा समयानुकूल वर्षा होने से धान्यादि का उत्पादन बढ़ेगा। प्राकृतिक सम्पदाओं के रख-रखाव के विशेष प्रबन्ध किये जायेंगे। प्रजा में मांगलिक उत्सव अधिक होंगे।

मेघनाम द्रोण: फलम्—"द्रोणे वर्षति सर्वदा।" इस वर्ष चतुर्मेघों में द्रोण नाम का मेघ होने से वर्षा अच्छी होगी जिससे अन्नादि की पैदावार बढ़ेगी। राजा प्रजा में सामंजस्य होने से विकास कार्य अधिक होते दिखाई देंगे।

रोहिणी निवासस्तटे फलम्—"तटे वृष्टि: सुशोभना॥" अन्नोत्पादन में वृद्धता तथा धान, सिंघाड़ा, तरबूर एवं फलों से उत्पन्न वस्तुओं की बाहुल्यता रहेगी। प्रजा में सुखशांति बढ़ेगी।

सम्वत निवासो रजक गृहे फलम्—"रजके वृष्टिरुत्तमा।" इस वर्ष भी सम्वत का निवास धोबी के घर होने के कारण नदी, तालाब जल से परिपूर्ण होंगे। शासन व्यवस्था में सुधार होगा। समय वाहन-चातक बना है जिससे प्राकृतिक स्थानों की सुन्दरता बढ़ाने में सरकार अधिक ध्यान देगी। वर्षा उत्तम होने से धान्य की उत्पत्ति बढ़ेगी।

अथ (विन्ध्य मे दक्षिणवासियों के लिए) अष्टोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	११	५	८	२	५	८	५	११	१४	२	२	१४
व्यय	५	१४	११	११	५	११	१४	५	११	८	८	११

अथ (विन्ध्य से उत्तरवासियों के लिए) विंशोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	२	११	८	५	२	८	११	२	८	११	११	८

आय-व्यय देखने की विधि — अपनी राशि के आय-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें १ घटा दें; शेष में ८ का भाग देने पर यदि अंक १, २, ६, ७ शेष बचें तो उस वर्ष में लाभ उत्तम रहेगा। व्यापार धन्धों में बढ़ोत्तरी होगी। यदि अंक ३, ४, ५ या ८ (०) शेष रहे तो लाभ कम खर्चा अधिक होगा। व्यवसाय में गतिरोध व अशांति बढ़ेगी। दौड़धूप की अधिकता एवं आवश्यक चिन्ताओं में बढ़ोत्तरी होगी।

शनि की साढ़ेसाती ढैय्या और लघु कल्याणी ढैय्या विचार

इस वर्ष के प्रारंभ से अन्त तक शनि मेष राशि मे वक्र-मार्गी गति से विचरण करेगा अत: मेष, वृष व मीन राशि वालों को क्रमश: मध्यकालीन, प्रारम्भिक एवं उतरती शनि की साढ़ेसाती रहेगी। कन्या तथा मकर राशिवालों को ढैय्या शनि रहेगा। मेष राशि के शनि का गोचर फल आगे दिया जा रहा है।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेष-मध्यकालीन मारेमाली चांदी के पाये से चालू होगा। स्वास्थ्य में गर्मी, खर्चा की अधिकता रहेगी। परिश्रम प्रयत्न करने से भी कार्यक्षेत्र में सफलता कम प्राप्त होगी। स्त्री कष्ट से मन अशान्त रहेगा।

वृष-शनि की शिर पर चढ़ती मारेमाली लोहे के पाट से अच्छा नहीं है। शत्रु पक्ष बढ़ने से चलते कार्यों में बाधा आयेगी। यात्रा में कष्ट तथा पारिवारिक क्लेश से मन में असन्तोष रहेगा।

मिथुन-आपको शनि ग्यारहवें भाव में तांबे के पाये से चलेगा। वाद-विवाद तथा मुकदमा में सफलता मिलेगी। विविध प्रकार की सुख सुविधाओं में वृद्धि तथा व्यापार-धन्धों का विस्तार होगा। धर्म में रुचि बढ़ेगी।

कर्क-शनि राज्य भवन में स्वर्णपाट से साधारण फलप्रद है। नवीन कार्य को सोच समझकर हाथ में लें। चालू कार्यों में सफलता व लाभ प्राप्त होगा। उच्चवर्ग के लोगों से मेलजोल बढ़ने से खर्चा बढ़ेगा।

सिंह-राशि वालों को शनि नवम भाव में रजतपाट से मिश्रित फलप्रद है। बड़े लोगों की सूझबूझ से कार्य करेंगे तो लाभ के चांस प्राप्त होंगे। अटके कार्य बनने की संभावना होगी। व्यापार में लाभ परन्तु दौड़धूप की अधिकता मन को बेचैन रखेगी।

कन्या-आपको अष्टम भाव में लघुकल्याणी दैय्या लोहपाट से शनि अशांति व कष्टकारक रहेगा। शारीरिक व मानसिक अशान्ति से अनियमित दिनचर्या बनेगी। क्रोध की अधिकता से बनते कार्य रुक जायेंगे। आर्थिक तंगी ऋण लेने को बाध्य करेगी।

तुला-राशि वालों को सप्तम भाव में तांबे के पाये से शनि मिले-जुले फल देगा। व्यवसाय में परिश्रम प्रयत्न से लाभ के तथा प्रगति के चांस मिलेंगे। शरीर सुख साधारण तथा स्त्री सुख में कमी आने से मन अशान्त रहेगा। मित्रादि से सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक-राशि से छठवें शनि रजतपाट से पारिवारिक सुख व साधनों में वृद्धि करेगा। शत्रु व रोग की कमी आने से उत्साह में बढ़ोतरी होगी। व्यापार धन्धों में लाभ के अच्छे चांस प्राप्त होंगे। कर्तव्यनिष्ठा बढ़ने से नये आयामों में सफलता मिलेगी।

धनु-आपको शनि पांचवें भाव में स्वर्णपाट से अच्छा नहीं है। मन विचलित, कार्य की अधिकता धन खर्चा में वृद्धि होगी। स्त्री, सन्तान सुख भी साधारण मिलेगा। व्यवसाय में अपने स्वजनों द्वारा धोखा हो सकता है। अतः सावधानी से कार्य करना श्रेयस्कर रहेगा।

मकर-राशि वालों को लोहा के पाये से लघुकल्याणी दैय्या नेष्ट फलप्रद है। स्थान परिवर्तन, व्यवसाय में उथल-पुथल तथा मानसिक वेदना में वृद्धि होगी। शरीर में रोगपीड़ा तथा भोजन व्यवस्था में रुकावटें आने लगेंगी। स्वजनों से मनमुटाव होगा।

कुंभ-शनि तृतीय भाव में सोने के पाये से चलने से उत्साह में वृद्धि से अधूरे काम पूरे होंगे। आर्थिक लाभ भौतिक सुविधाओं में बढ़ोतरी करेगा किन्तु शरीर में कष्ट तथा दौड़ धूप की अधिकता बनी रहेगी। भाइयों से मनमुटाव होगा।

मीन-राशि वालों को पैरों पर उतरती मारेमाली तांबे के पाये से मानसिक वेदनाकारक है। दौड़-धूप में भी लाभ कम व खर्चा की अधिकता रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में स्थिरता तथा मान-सम्मान यथावत् रहेगा।

गुरु संचार का फल

सम्वत् २०५६ वि. के प्रारंभ में गुरु मीन राशि में विचरण कर रहा है। जो इस वर्ष २६ मई ९९ तक मीन राशि में रहकर मेष राशि में प्रवेश करेगा। गत वर्ष गुरु देव ने दिनांक १२-१३ जनवरी ९९ ई. को २०।३२ बजे मीन राशि में प्रवेश किया। प्रवेश समय तत्कालिक चन्द्रमा वृश्चिक राशि में रहा तदनुसार मेष, सिंह, धनु राशि वालों को लौहपाट से अशुभ तथा वृष, कन्या, कुंभ राशिवालों को ताम्रपाट से गुरु मिश्रित फलप्रद रहेगा। शेष अन्य राशियों में कर्क, तुला, मीन राशि वालों को चांदी के पाये से श्रेष्ठ तथा मिथुन, वृश्चिक व मकर राशि वालों को स्वर्णपाट से परिश्रम प्रयत्न से सफलता प्रदान करेगा। इस वर्ष दिनांक २६ मई १९९९ को गुरु देव दोपहर बाद ४।३९ बजे मेष राशि में प्रवेश करेंगे। जो वर्षान्त तक वक्रमार्गी गति से मेष राशि में विचरण करते रहेंगे। मेष राशि प्रवेश करते समय तत्कालिक चन्द्रमा कन्या में रहेगा अतः २६ मई ९९ से वर्षान्त तक गुरु, मेष, कन्या व वृश्चिक राशि वालों को स्वर्णपाट से वृष, सिंह, मकर राशि वालों को चांदी के पाये से, मिथुन, तुला, कुंभ राशि वालों को लौहपाट से तथा कर्क, धनु, व मीन राशि वालों को ताम्रपाट से क्रमशः परिश्रम से सफलता, भाग्योन्नति से कर्मक्षेत्र का विस्तार, पीड़ा चिन्ता में वृद्धि तथा सुख-सम्मान में वृद्धि करेगा। मीन व मेष राशि के गुरु का गोचर फल आगे दिया जा रहा है।

१३ जनवरी सन् १९९९ ई. से मीन के गुरु का गोचर फल

मेष-गुरु बारहवें भाव में लौहपाट से मानसिक उच्चाटन, भाग्य अवरोधक स्थिति से बनते कार्यों में रुकावटें तथा खर्चे की अधिकता बनी रहेगी।

वृष-राशि वालों को गुरु एकादश भाव में पारिवारिक सुख सहयोग के साथ बुद्धि की चातुर्यता से अनेक रुके काम बनते दिखाई देंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा व आर्थिक लाभ की योजना हाथ में आयेगी।

मिथुन-आपको गुरु कर्मक्षेत्र में स्वर्णपाट से होने के कारण चलते कार्यों में लाभ किन्तु नये कार्यों के लिए विशेष दौड़धूप करनी पड़ेगी तथा प्रियजनों से मनमुटाव बनने से मानसिक तनाव बढ़ेगा। धर्म में रुचि बनी रहेगी।

कर्क-भाग्य फल उत्तम, नवीन सम्पर्क से रोजगार धन्धों में प्रगति होगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय तथा लाभ व्यय की समानता दिखाई देगी। मान-सम्मान अच्छा प्राप्त होगा।

सिंह-गुरु आठवें भाव में शारीरिक पीड़ा के साथ मानसिक चिन्ताओं में वृद्धि करेगा। दुष्टजनों की संगति से दूर रहें वरना मान-हानि तथा गृह क्लेश का सामना करना पड़ेगा। व्यापार धन्धों में साधारण लाभ ही प्राप्त होगा।

कन्या-राशि वालों को सप्तम भाव में ताम्रपाट से घर परिवार में मांगलिक उत्सवों की वृद्धि से धन खर्चा बढ़ेगा। मान-सम्मान व सुख सुविधाओं की बढ़ोतरी से मनोबल बढ़ेगा।

तुला-आपको गुरु शत्रुभाव में आने से पुराने विवाद तथा रोगादि की समस्याएं उभरकर सामने आयेंगी। खर्चा की बढ़ोतरी मानसिक चिंता का कारण बनेगी। क्रोध की अधिकता से बनते कार्य बाधित होंगे।

वृश्चिक-पंचम भाव में गुरु श्रम संघर्ष से सफलता प्रदान करेगा। संतान सुख सहयोग से मन में प्रसन्नता तथा विद्यार्थी वर्ग को परीक्षा में सफलता प्रदान करेगा।

धनु-आपके लिए गुरु लौहा के पाये से चतुर्थ भाव में अच्छा नहीं कहा जा सकता। लाभ कम खर्चा अधिक होने से क्रोध बढ़ेगा। स्वजनों से मनमुटाव होगा।

मकर-राशि वालों को पराक्रमस्थ गुरु भाग्योन्नति किन्तु परिश्रम मेहनत अधिक करायेगा। पत्नी व पारिवारिक जनों से मेलजोल व सम्पर्क बनाये रखेंगे तो रुके कार्य बनते दिखाई देंगे।

कुंभ-द्वितीय स्थान का गुरु आपको व्यापारिक सफलता के साथ सुख-साधनों में अधिक वृद्धि करेगा। कर्म क्षेत्र का विस्तार तथा मान-सम्मान बढ़ेगा।

मीन-प्रथम भाव का गुरु रजतपाट से संकल्प भाव रखने पर आशातीत सफलता प्रदान करेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी व दौड़धूप की अधिकता रहेगी।

२६ मई सन् ९९ ई. से वर्षान्त तक मेष के गुरु का गोचर फल

मेष-आपको गुरु स्वर्णपाट से लग्नस्थ साधारण फलप्रद रहेगा। अनावश्यक चिन्ता पीड़ा से मन में अशान्ति, दौड़धूप की अधिकता रहेगी।

वृष-व्ययस्थ गुरु नेष्ट किन्तु रजतपाट से श्रेष्ठ रहेगा। घर में मांगलिक उत्सव सम्पन्न होने से खर्चा बढ़ेगा। स्वजनों व मित्रादि का सहयोग मिलने से अधूरे कार्य पूर्ण होंगे।

मिथुन-राशि वालों को लाभभाव में लोहे के पाये से मध्यम फलप्रद है। अनावश्यक झगड़ों व दुष्ट संगति से बचेंगे तो चालू कामों में लाभ होता रहेगा।

कर्क-कर्म क्षेत्र में गुरु तांबे के पाये से मित्रादि से मेलजोल बढ़ायेगा। मकान, जमीन जायदाद में वृद्धि होने से मन प्रसन्न रहेगा। नये रोजगार की रूपरेखा पर विचार विमर्श सम्पन्न किया जायेगा।

सिंह-राशि वालों को मेष का गुरु भाग्य स्थान में रजतपाट से मान-सम्मान के विस्तार के साथ आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता करेगा। इष्ट मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कन्या-आपको अष्टम गुरु स्वर्णपाट से होने के कारण वाद-विवाद, कुटुम्ब पीड़ा, आर्थिक अवरोध, असफल यात्रा तथा शारीरिक पीड़ा में वृद्धि होगी।

तुला-मेष राशिस्थ गुरु आपके सप्तम भाव में लौहपाट से विचरण करेगा। परिवार सुख में गतिरोध, अनावश्यक पीड़ा तथा खर्चे की विशेषता रहेगी।

वृश्चिक-राशि वालों को छठवीं गुरु सोने के पाये से आने से व्यवसाय में बाधा तथा स्वजनों से मनमुटाव होगा। विरोधियों से सावधान रहना हितकर होगा।

धनु-आपके लिये गुरु पंचम भाव में तांबे के पाये से श्रेष्ठ बुद्धि व संगति से सुख साधनों में वृद्धि करेगा। नये कार्य की विचाराधीन योजना सफल होती दिखाई देगी।

मकर-चतुर्थ गुरु नेष्ट किन्तु चांदी के पाये से श्रेष्ठ होने से मिश्रित फल होंगे। परिश्रम प्रयत्न का लाभ अवश्य मिले किन्तु स्वजनों से मनमुटाव रहे।

कुंभ-कुंभ राशि वालों को तृतीय भाव में गुरु अनावश्यक पीड़ा, चिन्ता व आलस्य को बढ़ावा देगा। लोकापवाद से बचें वरना मान-सम्मान में कमी होगी।

मीन-आपको द्वितीय भाव का गुरु तांबे के पाये से पारिवारिक सुख वृद्धि के साथ व्यापारिक सफलता देगा। आर्थिक सुख व मनोबल में वृद्धि होगी।

राहु केतु का गोचर फल

इस वर्ष सं. २०५६ वि. के प्रारंभ से अन्त तक राहु कर्क राशि में तथा केतु मकर राशि में विचरण करेंगे। जिससे सम्पूर्ण वर्ष राहु वृष, कन्या एवं कुंभ राशि वालों के लिए श्रेष्ठ तथा मेष, कर्क, सिंह, धनु राशि वालों को नेष्ट फलप्रद रहेगा, शेष राशि वालों को मिश्रित फल प्राप्त होंगे। वर्षपर्यन्त केतु-सिंह, वृश्चिक व मीन राशि वालों को उत्तम फलों में वृद्धि देगा। जबकि मिथुन, तुला, मकर, कुंभ राशि वालों को नेष्ट फलदायक रहेगा। शेष अन्य राशि वालों को मिलेजुले फल प्राप्त होंगे।

CC-0. In Public Domain. Krikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल पक्ष-१

श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. १८ से ३१ मार्च सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति २७ फाल्गुन से १० चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण-उत्तर गोले, बसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.	तिथि		स्टैं.टा.		नक्षत्र		स्टैं.टा.		योग		स्टैं.टा.		करण		स्टैं.टा.		दिनमान घं.	मि.	सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार	भा.स्टैं.टा. रा.	घं.	मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
मि.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि																			
२७	१	गु	३७	२०	२१	२०	उभा	४१	०५	२२	५०	गु	३०	०७	२२	१२	किं	१०	५५	१०	५५	२०	४७	६	३३	१८	२८	५	२०	18	मीन	११	३	०५	५६	५३ ४३	७	०५	१०	१५
२८	२	शु	२०	४५	१८	२६	रे	३५	१७	२०	३९	ब	३०	०२	१८	३३	बा	३	४०	८	००	२०	५२	६	३२	१८	२०	६	३०	19	मे. २०।६९	११	४	०५	३९	४१	७	४८	२०	१२
२९	३	श	२१	५७	१५	१८	अ	२०	२७	१८	१८	ऐं	२०	४५	१४	४०	ब	२१	५७	१५	१८	२०	५६	६	३१	१८	३०	७	जि.	20	मेष	११	५	०५	२०	३९	८	३९	२१	०९
३०	४	र	१४	२०	१२	१४	भ	२३	४५	१६	००	वै	११	३२	११	०७	वि	१४	२०	१२	१४	३०	००	६	३०	१८	३०	८	२	21	वृ. २१।५७	११	६	०४	५९	३७	९	३६	२२	०६
चै.	५	चं	७	१२	९	२२	कृ	१८	४०	१३	५७	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	७	१२	९	२२	३०	०५	६	२९	१८	३१	९	३	22	वृष	११	७	०४	३६	३३	१०	३३	२३	०३
२	६	मं	०	५७	६	५०	रो	१४	२७	१२	१४	ब्रा	४७	२२	२५	२४	तै	०	५७	६	५०	३०	०९	६	२७	१८	३१	१०	४	23	मि. २३।३१	११	८	०४	०९	३१	११	३०	२४	००
०	७	मं	५५	३७	२८	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	८	बु	५१	२७	२७	०१	मृ	११	१५	१०	५६	मौ	४१	००	२२	५०	वि	२३	२२	१५	४७	३०	१४	६	२६	१८	३२	११	५	24	मिथुन	११	९	०३	४०	२९	१२	२७	२४	५७
४	९	गु	४८	३५	२५	५१	आ	९	१०	१०	०५	शो	३५	३७	२०	४०	बा	१९	५०	१४	२१	३०	१८	६	२५	१८	३२	१२	६	25	क. २३।५०	११	१०	०३	०९	२८	१३	२४	१	५४
५	१०	शु	४६	५७	२५	११	पुन	८	३०	९	४८	ध्रु	३१	१७	१८	५५	तै	१७	४०	१३	२८	३०	२३	६	२४	१८	३३	१३	७	26	कर्क	११	११	०२	३७	२५	१४	२१	२	५१
६	११	श	४६	३०	२४	५९	पु	८	५५	९	५७	शु	२७	५२	१७	३२	व	१६	३७	१३	०२	३०	२७	६	२३	१८	३४	१४	८	27	कर्क	११	१२	०२	०२	२४	१५	२८	३	४८
७	१२	र	४७	१०	२५	१४	श्ले	१०	३०	१०	३४	ध	२५	१७	१६	२९	ब	१६	४२	१३	०३	३०	३१	६	२२	१८	३४	१५	९	28	सिं. १०।३४	११	१३	०१	२६	२४	१६	१५	४	४५
८	१३	चं	४८	५२	२५	५३	म	१३	०७	११	३५	शू	२३	४०	१५	४८	कौ	१७	५२	१३	२९	३०	३५	६	२०	१८	३५	१६	१०	29	सिंह	११	१४	००	५०	२०	१७	१२	५	४२
९	१४	मं	५१	३०	२६	५५	पूफा	१६	४२	१३	००	ग	२२	४५	१५	२५	ब	२०	०२	१४	२०	३०	३९	६	१९	१८	३५	१७	११	30	क. १९।४६	११	१५	००	१०	१८	१८	०६	६	३६
१०	१५	बु	५५	००	२८	१८	उफा	२१	१५	१४	४८	वृ	२२	३२	१५	१९	वि	२३	१०	१५	३४	३०	४३	६	१८	१८	३६	१८	१२	31	कन्या	११	१५	५९	२८	१७	१९	०६	७	३६

A घटस्थापन, गुढ़ी पड़वा, चेटीचंद, वर्षफल श्रवण, आर्य समाज स्थापना दिवस, गौतम ज., मेला चौमा नानकसर (पं.) B सम्प्रदाय, पंचक समाप्त २०।३९ C व्रत, मन्वादि:, शिव शक्ति पूजन, जिल्हेज मु. मा. १२, आन्दोलन तृतीया (बिहार) D प्रवेश ७।१६, वसन्त सम्पात, सूर्य उत्तर गोल में प्रवेश, महा विषुव दिन, वैनायक ४ व्रत, वैभृति पुण्यम् E श्री रामजन्मोत्सव प्रा. कर्क लग्न में, राष्ट्रीय चैत्र मासारम्भ, शाके १९२१ प्रारम्भ G भवान्युत्पत्ति, अन्नपूर्णा पूजा, बुधाष्टमी, मेला मनसा देवी, मेला बाहूफोर्ट (कश्मीर) K जयंती, मन्वादि १५, जैन आयंबिल ओली समाप्त, सिद्धांचल यात्रा, वैशाख स्नान प्रारम्भ, मेला मानकपुर शरीफ रोपड़

उ.भा. में सूर्य प्रवेश ११।०९, वक्री मंगल १९।१०, नूतन संवत्सरारम्भ, नवरात्रारंभ A
चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्वर्ष, सिंधारा २, श्री झुलेलाल जयंती उत्सव सिन्धी B
भद्रा २५।६५ से, गणगौर पूजन मेला राजस्थान, मत्स्य जयंती, सौभाग्य तृतीया C
भद्रा १२।१४ तक, वक्री पू.भा. में बुध प्रवेश १७।२७, सायन मेष में सूर्य D
गुरु पश्चिम में अस्त २३।५५, श्री लक्ष्मीपूजनारंभ, कल्पादि: ५, हयव्रत ५, E
भद्रा २८।४२ से, श्रवण १ में नेपच्यून प्रवेश २५।०७, स्कन्द षष्ठी, मेला F
सप्तमी क्षय: F माईसरखाना अमृतसर, जैन आयंबिल ओली प्रा.
भद्रा १५।४७ तक, भरणी १ में शुक्र प्रवेश १४।१४, श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, G
वक्री कुम्भ में बुध प्रवेश १६।५३, श्री रामनवमी व्रत, नवरात्र समाप्त, मध्यान्ह H
बुध पूर्व में उदय २८।३८ H कर्क लग्न में राम जन्म J ईद-उल-जुहा (बकरीद)
भद्रा १३।०२ से २४।५९ तक, कामदा एका. व्रत स्म.वैष्ण., श्री लक्ष्मीकान्त डोलोत्सव
कामदा एकादशी व्रत निम्बार्कानाम्, हरिदमनोत्सव, हज्ज
रेवती १ में गुरु प्रवेश २७।४१, सोम प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर ज. J
भद्रा २६।५५ से, बाला सुन्दरी मेला देवबन्द (उ.प्र.), दमनक चतुर्दशी
भद्रा १५।३४ तक, रेवती में सूर्य प्र. २१।५५, चैत्री पूर्णिमा, सत्यव्रत, श्री हनुमान K
भद्रा २७।५१ से, सोम प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर ज. J
भद्रा २६।५५ से, बाला सुन्दरी मेला देवबन्द (उ.प्र.), दमनक चतुर्दशी
भद्रा १५।३४ तक, रेवती में सूर्य प्र. २१।५५, चैत्री पूर्णिमा, सत्यव्रत, श्री हनुमान K

चैत्र शु. ८ बुध, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २४ मार्च [दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

मू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२	६	११	११	०	०	३	९	९	०	७
९	३	१८	१	१५	१२	८	२६	२६	२१	१०	१६
३	२९	१०	८	१४	५३	३७	१२	१२	३५	००	३७
४०	३२	३६	१०	२	४०	४०	४४	४४	००	१५	२५
५९	३१	४	४७	१४	७२	७	३	३	२	१	०
२९	५७	२७	३३	३०	१०	०२	११	११	३६	२२	२२
मा	मा	व	व	मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व
उ	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖
उ.भा.	उ.फा.	चित्रा	पू.भा.	रेवती	भरणी	अश्वि.	अश्ले.	धनि.	श्रवण	श्रवण	अनु.

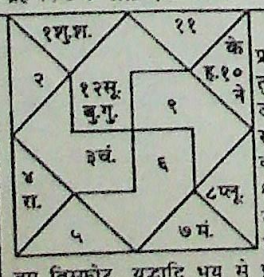

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुरुवार है। जिसका फल प्राचीन दैवज्ञों ने सुभिक्षकारी बताया है। यथा—'सुभिक्षं तु गुरौ भृगौ।' वर्षा समयानुकूल होने से धान्यादि का उत्पादन बढ़ेगा। वर्ष का राजा गुरु एवं मंत्री बुध बनने से राजनैतिक दलों में सामन्जस्य का अभाव तथा एक दूसरे को पछाड़ने का प्रयास करते रहेंगे। व्यापारिक व औद्योगिक क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलने से, विदेशों से व्यापारिक संधियां अधिक होंगी। वर्ष के पूर्वार्ध में मंगल-शनि का समसप्तम योग बने रहने से हिंसक आन्दोलन, यान दुर्घटना, बम विस्फोट, युद्धादि भय से प्रजा में अशान्ति रहेगी। अरब, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान में जन विद्रोह बढ़ेगा। उद्योग धन्धों में श्रमिक वर्ग के आक्रामक रुख से हड़ताल व तालाबन्दी से उत्पादन कम होता दिखाई देगा। वर्षारम्भ में ता. १८ मार्च को मंगल वक्री होने से प्रजा में रोगपीड़ा तथा शासकों में अन्तर्विग्रह उत्पन्न होंगे तथा अशुभ फलों में वृद्धि होगी। **तेजी-मन्दी विचार**—द्वितीया शुक्रवार को ३० मुहूर्ती चन्द्रदर्शन, रुई, सूत, पाट, बारदाना में घटाबढ़ी तथा चावल, जौ, चना, गेहूं, तिल, तेल में मन्दी करेगा। पक्ष मध्य में बुध का उदय सोना, चांदी, तांबा, पीतल में घटाबढ़ी से मंदी प्रदान करेगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में गुरु का अस्त तथा बुध का उदय पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, हि.प्र., उ.प्र. तथा पहाड़ी प्रदेशों में आंधी, गर्ज के साथ वर्षा करेगा जिससे फसल को हानि पहुंचेगी। कहीं-कहीं ओला वृष्टि की भी संभावना है। **शकुन विचार**—"चैत्र सुदी जो पंचमी दक्षिण पूरब वाय। वर्षा भी होवे कुछ भादों तेज विकाय॥ चैत्र सुदी जो उगोदशी धूल उड़े दरम्यान। आने वर्षा हो नहीं ऐसा लो तुम जान॥" चैत्र मास में वर्षा होना आगे चौमासे में वर्षा की कमी का द्योतक होता है।

ता. ३१ मार्च ❖ चैत्र शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

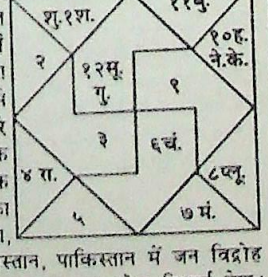

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	५	६	११	११	०	०	३	९	९	९	७
१५	५	१७	२७	१६	२१	९	२५	२५	२१	१०	१६
५९	१२	२३	१७	५५	१७	२७	५०	५०	५२	९	३४
२७	२९	२३	५५	३७	१३	४३	२८	२८	३०	१५	१३
५९	०३८	९	१०	१४	७१	७	३	३	२	१	०
१७	५९	५२	३५	३२	३६	१५	११	११	३१	१०	३६
मा	मा	व	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖
उ.भा.	उ.फा.	चित्रा	पू.भा.	रेवती	भरणी	अश्वि.	अश्ले.	धनि.	श्रवण	श्रवण	अनु.

धर्मसत्य प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख कृष्ण पक्ष-२ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. १ से १६ अप्रैल सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २६ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, वसंत ऋतु।

रा. मि	तिथि ति	वा	घ	प	घं	मि	स्टै.टा.	नक्षत्र न	घ	प	घं	मि	स्टै.टा.	योग यो	घ	प	घं	मि	स्टै.टा.	करण क	घ	प	घं	मि	स्टै.टा.	दिनमान घं. मि.	रात्रिमान घं. मि.	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार	भा.स्टै.टा. रा.मं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घ.	मि.	अस्त घ.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।
१११	१	गु	५९	२५	३०	०३	ह	२६	३२	१६	५४	धु	२२	५७	१५	२८	बा	२७	१२	१७	१०	३०	४७	६	१७	१८	३६	१९	१३	A.1	तु. ३०।५५	११	१६	५८	४५	५१ ५१	१९	२६	६	४६	अप्रैल मा. ४ ता. ३०, बैंकों की वार्षिक लेखाबन्दी
११२	२	शु	६०	००	-	-	चि	३२	४३	१९	२१	ब्या	२४	०२	१५	५३	तै	३२	००	१९	०४	३०	५२	६	१६	१८	३७	२०	१४	2	तुला	११	१७	५७	५८	१०	२०	१४	७	४६	मार्गी बुध १४।५३, गुड फ्राइडे
१३	२	श	४	३७	८	०६	मा	३९	२७	२२	०२	ह	२५	३७	१६	३०	ग	४	३७	८	०६	३०	५६	६	१५	१८	३८	२१	१५	3	तुला	११	१८	५७	०८	९	२०	५७	८	२७	भद्रा २१।१४ से,
१४	३	र	१०	२३	१०	२२	वि	४६	४२	२४	५४	वज्र	२७	४७	१७	२०	वि	१०	२३	१०	२२	३१	००	६	१३	१८	३८	२२	१६	4	वृ. १८।१२	११	१९	५६	१७	७	२१	५०	९	२०	भद्रा १०।१२ तक, कृत्तिका में शुक्र प्रवेश १७।५६, अश्विनी ८ में शनि A
१५	४	चं	१६	३२	१२	४९	अनु	५४	१५	२७	५४	सि	३०	०२	१८	१३	बा	१६	३२	१२	४९	३१	०४	६	१२	१८	३९	२३	१७	5	वृश्चिक	११	२०	५५	२४	५	२२	३३	१०	०३	A प्रवेश १५।५२, इस्टर सन्डे, कृष्ण चतुर्थी व्रत
१६	५	मं	२२	५०	१५	१९	ज्ये	६०	००	-	-	व्य	३२	१७	१९	०६	तै	२२	५०	१५	१९	३१	०८	६	११	१८	३९	२४	१८	6	वृश्चिक	११	२१	५४	२९	३	२३	१६	१०	४६	गुरु तेग बहादुर जयंती, व्यतिपात पुण्यम्
१७	६	बु	२८	४०	१७	३८	ज्ये	१	३५	६	४८	व	३४	१५	१९	५२	व	२८	४०	१७	३८	३१	१३	६	१०	१८	४०	२५	१६	7	ध. ६।४८	११	२२	५३	३२	५१ ५१	२४	००	११	३०	भद्रा १७।३८ से, वृष में शुक्र प्रवेश १३।२५, विश्व स्वास्थ्य दिवस
१८	७	गु	३३	२७	१९	३२	मू	८	१२	९	२६	प	३५	३२	२०	२२	वि	१	१०	६	३७	३१	१७	६	०९	१८	४०	२६	२०	8	धनु	११	२३	५२	३३	५८ ५८	२४	४३	१२	१३	भद्रा ६।३७ तक, गुरु अर्जुन देव जयंती
१९	८	शु	३७	०५	२०	५८	पूषा	१३	४७	११	३९	शि	३५	०२	२०	२५	बा	५	३५	८	२२	३१	२२	६	०८	१८	४१	२७	२१	9	म. १८।०४	११	२४	५१	३१	५७	१	२६	१२	५६	शनि पश्चिम में अस्त २५।१८, कालाष्टमी, शीतलाष्टमी (बूढ़ा बासौड़ा) B
२०	९	श	३८	५५	२१	४१	उषा	१७	४०	१३	११	सि	३४	२७	१९	५४	तै	८	१०	९	२३	३१	२६	६	०७	१८	४१	२८	२२	10	मकर	११	२५	५०	२८	५५	२	०९	१३	५१	मीन में बुध प्रवेश २४।०५, भारतीय रेल सप्ताह प्रारम्भ
२१	१०	र	३८	३७	२१	३३	अ	१९	४७	१४	०१	मा	३१	४५	१८	४८	व	८	५७	९	४१	३१	३०	६	०६	१८	४२	२९	२३	11	कुं. ६।०५	११	२६	४९	२३	५२	२	५२	१४	२२	भद्रा ९।४१ से २१।३३ तक, पंचक प्रारम्भ २६।०५ से,
२२	११	चं	३६	१२	२०	३४	श	१९	४२	१३	५८	शुभ	२९	५०	१७	०१	व	७	४२	९	१०	३१	३४	६	०५	१८	४३	३०	२४	12	कुम्भ	११	२७	४८	१५	५१	३	३५	१५	०५	रेवती २ में गुरु प्रवेश २२।५४, वरूथिनी एका. व्रत (मवका), श्री बल्लभाचार्य जयंती
२३	१२	मं	३१	५७	२८	५०	श्र	१७	४७	१३	१०	शु	२१	२२	१४	३६	कौ	४	२२	७	४८	३१	३८	६	०३	१८	४३	३१	२५	13	कुम्भ	११	२८	४७	०६	४९	४	१८	१५	४८	भौम प्रदोष व्रत
२४	१३	बु	२५	५०	१६	२२	धना	१३	५७	११	३७	ब्र	१३	५०	११	३४	व	२५	५०	१६	२२	३१	४२	६	०२	१८	४४	वै.	२६	14	मीन. ६।०३	११	२९	४५	५५	४६	५	०१	१६	३१	भद्रा १६।२२ से २६।५० तक, अश्विनी मेष में सूर्य प्रवेश ११।१५, C
२५	१४	गु	१८	१५	१३	१९	उषा	८	३२	९	२६	ऐं	५५ ५५	०० ००	८ ८	०० ११	श	१८	१५	१३	१९	३१	४६	६	०१	१८	४४	२	२७	15	मीन	०	००	४४	४१	४५	५	४४	१७	१४	उ.भा. में बुध प्रवेश ६।२०, रोहिणी में शुक्र प्रवेश २५।३०, विशु पर्व (केरल) D
२६	३०	शु	९	४०	९	५२	रे	२ ५५	०० ५८	६ ५७	५१ ५१	वि	४५	०७	२४	०३	ना	९	४०	९	५२	३१	५०	६	००	१८	४५	३	२८	16	मे. ६।५१	०	०१	४३	२६	४२	६	२७	१८	५७	देवकार्याऽमावस्या, मेला पिंजोर हरियाणा, श्री शुकदेव जयंती, देव दामोदर E

B ठंडा भोजन करना चाहिए C संक्रांति मु. ३०, साम्यार्घ, वैशाखी (पंजाब), सौर मास वैशाख प्रारम्भ, डॉ. अम्बेडकर जयंती, मेषादि, मास शिवरात्रि रात्रि व्रत D वैशाखादि, विशु विषु, पितृकार्याऽमावस्या, वैधृति पुण्यं E तिथि आसाम, पंचक समाप्त ६।५१

वैशाख कृ. ८ शुक्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ९ अप्रैल

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू.
११	८	६	१०	११	१	०	३	९	९	९	७
२४	२३	१५	२८	१९	१	१०	२५	२५	२२	१०	१६
५१	३०	२८	५४	६	५८	३३	२१	२१	१२	१८	२७
३१	२३	४०	१९	११	२५	५६	५२	५३	१७	४०	४२
५८	००	१६	३४	१४	७०	७	३	३	२	०	०
५७	४४	१३	३६	२७	४६	३१	११	११	१	५३	५२
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	४	९	९	९	४	९	९	९	४	९	४
रेवती	पूर्वा.	रेवती	पू.भा.	रेवती	कृत्ति.	आश्ले.	अश्वि.	धनि.	श्रवण	श्रवण	अनु.

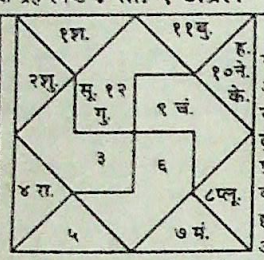

इस पक्ष में गुरु अतीचार गति से तथा क्रूर ग्रह मंगल वक्री गति से चल रहा है। जिसका फल प्राचीन आचार्यों ने इस प्रकार लिखा है। यथा—"**कूरा वक्रा यदा काले सौम्याः शीघ्रास्तु चागताः। अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं नृपराष्ट्र भयंकराः॥**" असामयिक वर्षा, प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, अग्निभय से अशांति व भय का वातावरण बनेगा। राजा प्रजा में अशांति की वृद्धि होगी। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनावपूर्ण तथा आणुविक अस्त्र शास्त्रों का निर्माण बढ़ेगा। अन्तरिक्ष के गतिशील ग्रहों का असर सभी देशों पर दिखाई देगा। शान्ति वार्ताएं दिखावा मात्र ही सिद्ध होंगी। **तेजी-मन्दी विचार**—तारीख ७ अप्रैल को वृष राशि में शुक्र आने से प्रजा में सुख शान्ति का संचार तथा धान्य जौ, गेहूं, चना, मूंगफली, सरसों आदि में मन्दी होकर तेजी होगी। पक्षान्त में मेष संक्रांति बुधवार को होने से सफेद वस्त्र, रुई, कपास, कपूर, चीनी में तेजी होगी। **वृष राशि के शुक्र का फल**—'**भृगुपुत्रो वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथिवी तले। प्रजानां सुखमुत्पन्नं किंचिद्विग्रह कारणम्॥**' **आकाश लक्षण**—राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब में वायुवेग के साथ कहीं-कहीं साधारण बूंदाबांदी होगी। ऋतु परिवर्तन से दिन में गर्मी का अहसास होगा। पूर्वोत्तर पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात या वर्षा होगी। **शकुन विचार**—वैशाख कृष्ण एकादशी को मेघ या बादल चाल हो तो आने वाला वर्ष धान्यादि उत्पादन में श्रेष्ठ रहेगा। यथा—"वैशाख बदी एकादशी प्रबल मेघ को आन। धान्य बीज खेती करो, अच्छा संवत् जान॥" वैशाख कृष्ण अमावस्या को आंधी, तूफान अथवा कोई उत्पात हो तो अन्न का स्टाक करने वालों को आगे लाभ होगा।

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

ता. १६ अप्रैल ❖ चैत्र कृ. ३० शुक्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

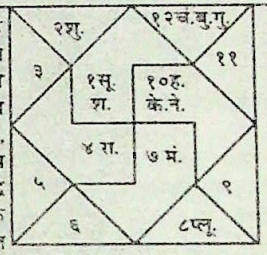

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू.
०	११	६	११	११	१	०	३	९	९	९	७
१	२९	१३	४	२०	१०	११	२४	२४	२२	१०	१६
४३	९	२२	१३	४७	११	२६	५९	५९	२५	२४	२६
२६	६	३२	४१	१०	४४	४६	३६	३६	२७	१५	०२
५८	१००	२०	५९	१४	७०	७	३	३	१	०	१
४२	५२	५	३	२३	३	३८	११	११	४२	४०	०३
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
९	४	९	९	९	४	९	९	९	४	९	४
अश्वि.	रेवती	रेवती	उ.भा.	रेवती	रोहि.	अश्वि.	मृगशि.	धनि.	श्रवण	श्रवण	अनु.

धर्मसंघ प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख शुक्ल पक्ष-३

श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

दिन मान		स्टै.टा. सूर्योदयास्त		दिनांक			चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट				ग	चन्द्रोदयास्त दिल्ली				ता. १७ से ३० अप्रैल सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति २७ चैत्र से १० वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसंत-ग्रीष्म ऋतु।
घटी	पल	उदय घं	उदय मि	अस्त घं	अस्त मि	कलियुग	रिक्तादि	जूलियन		भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क	वि	ति	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं	अस्त मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।
३१	५४	५	५९	१८	४५	४	२९	17	मेष	००।०२	४२	०८	५८/६२		७	४३	२०	१३	गुरु अरंगदेव जी जयं., चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्षि, छत्रपति शिवाजी जयं. (प्राचीन मत से)
०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	० ० ० ०			०		०	०	०	०	द्वितीया क्षयः
३२	५८	५	५८	१८	४६	५	मुह.	18	वृ. ६।१	००।०३	४०	५०	३९		८	२४	२०	५४	अक्षय तृतीया, श्री परशुराम जयंती, त्रेतायुगादि, कल्पादि, श्री मातंगी जयंती, A
३२	०२	५	५७	१८	४७	६	२	19	वृष	००।०४	३९	२९	३७		९	०६	२१	३६	भद्रा ९।१४ से १९।४० तक, वैशाख ४ ब्रह्म
३२	०६	५	५६	१८	४७	७	३	20	मि. ६।६५	००।०५	३८	०६	३५		९	४६	२२	१६	सायन वृष में सूर्य प्रवेश १८।९६, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ, श्री आद्य शंकराचार्य जयं., B
३२	१०	५	५५	१८	४८	८	४	21	मिथुन	००।०६	३६	४१	३३		१०	२४	२२	५४	गुरु पूर्व में उदय ११।६१, रा. वैशाख मासारम्भ, C [गुरु उदय]
३२	१४	५	५४	१८	४८	९	५	22	क. ९।४४	००।०७	३५	१४	३२		११	१०	२३	४०	भद्रा १३।०४ से २४।३७ तक, श्री गंगा सप्तमी, मध्याह्न में गंगा पूजन, गंगोत्पत्ति
३२	१८	५	५३	१८	४९	१०	६	23	कर्क	००।०८	३३	४६	२९		११	४२	२४	१२	श्री दुर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयंती, बाबू कुँअर सिंह जयंती (बिहार)
३२	२२	५	५२	१८	५०	११	७	24	सिं. १६।०१	००।०९	३२	१५	२७		१२	३३	१	०३	श्री सीता नवमी, (जानकी नवमी)
३२	२६	५	५१	१८	५०	१२	८	25	सिंह	००।१०	३०	४२	२६		१३	१५	१	४५	भद्रा २४।४७ से, रवि दशमी, श्री महावीर स्वामी केवल ज्ञान जैन
३२	३०	५	५०	१८	५१	१३	९	26	क. २५।१६	००।११	२८	०८	२३		१३	५६	२	२६	भद्रा १३।१४ तक, रेवती में बुध प्रवेश १८।२९, रेवती ३ में गुरु प्रवेश २२।५२, D
३२	३३	५	४९	१८	५१	१४	१०	27	कन्या	००।१२	२७	३१	२२		१४	५२	३	०८	भरणी में सूर्य प्रवेश २७।०५, मृगशिर में शुक्र प्रवेश १३।५९, भौम प्रदोष व्रत, E
३२	३६	५	४९	१८	५२	१५	११	28	कन्या	००।१३	२५	५३	२०		१५	१९	३	४१	श्री नृसिंह जयंती, अशोक त्रिरात्रि व्रत
३२	४०	५	४८	१८	५३	१६	१२	29	तु. १२।१५	००।१४	२३	१३	१८		१६	०१	४	३१	भद्रा १८।१४ से, गुरु अमरदास जयंती, छिन्नमस्ता जयंती
३२	४४	५	४७	१८	५३	१७	१३	30	तुला	००।१५	२२	३१	१७		१६	४३	५	१३	भद्रा ७।१९ तक, भरणी १ में शनि प्रवेश २३।४०, सत्यव्रत, वैशाखी पूर्णिमा F

A बद्री केदारनाथ यात्रा, वर्षीतप समाप्त (जैन), मुहर्रम मु. मास १ हिजरी सन् १४२० प्रारंभ, B श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (द.भा.), श्री सूरदास जयंती C श्री रामानुजाचार्य ज. (उत्तर भारत में) D अगस्त्य (तारा) अस्त १२।२९, मोहनी एकादशी व्रत (सबका), कतल की रात (मु.), लक्ष्मीनारायण एकादशी (उड़ीसा) E राधा द्वादशी, परशुराम द्वादशी, मुहर्रम ताजिया F पुष्यं, बुद्ध पूर्णिमा, कूर्म जयंती, वैशाख स्नान समाप्त, यम प्रीत्यर्थ जलकुम्भ दानम्

| | | | |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्र. (शुद्ध) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. १ से १५ मई सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २५ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि	तिथि				स्टै.टा.			नक्षत्र				स्टै.टा.			योग				स्टै.टा.		करण				स्टै.टा.		दिन मान घं.	मि.	रात्रि मान घं.	मि.	सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.	घं.	मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	ग. ति: क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
१९	१	श	४२	२५	२२	४४	वि	६०	००	-	-	ब्र	४५	०७	२३	४९	बा	९	२५	९	३२	३२	४८	५	४६	१८	५४	१८	१४	M.1	वृ.	२४	००	१६	२०	४८	१९	४१	६	३३
१२	२	र	४८	३५	२५	११	वि	४	०७	७	२४	ब	४७	२७	२४	४४	तै	१५	२२	११	५४	३२	५२	५	४५	१८	५४	१९	१५	2	वृश्चिक	००	१७	१९	०३	१३	२०	२६	७	२६
१३	३	चं	५४	३७	२७	३५	अनु	११	३२	१०	२१	प	४९	४२	२५	३७	व	२१	४०	१४	२४	३२	५५	५	४४	१८	५५	२०	१६	3	वृश्चिक	००	१८	१७	१६	११	२१	०८	८	१९
१४	४	मं	६०	००	-	-	ज्ये	१८	५७	१३	१९	शि	५१	५२	२६	२९	ब	२७	३०	१६	४४	३२	५८	५	४४	१८	५६	२१	१७	4	ध.	१३	११	००	१९	१५	२७	१०	२१	५१	९	१२
१५	४	बु	०	२५	५	५३	मू	२५	५७	१६	०६	मि	५३	४२	२७	१२	बा	०	२५	५	५३	३३	२	५	४३	१८	५६	२२	१८	5	धनु	००	२०	१३	३७	७	२२	३३	१०	०६
१६	५	गु	५	३७	७	५७	पूषा	३२	१७	१८	३७	मा	५४	४०	२७	३४	तै	५	३७	७	५७	३३	५	५	४२	१८	५७	२३	१९	6	म.	२५	०८	००	२१	११	४४	६	२३	१४	१०	५९
१७	६	शु	९	५०	९	३७	उषा	३७	२०	२०	३७	शुभ	५४	४२	२७	३४	व	९	५०	९	३७	३३	९	५	४१	१८	५७	२४	२०	7	मकर	००	२२	०९	५०	५	२३	५७	११	५३
१८	७	श	१२	३५	१०	४२	श्र	४०	५७	२२	०३	शु	५३	२५	२७	०२	ब	१२	३५	१०	४२	३३	१२	५	४०	१८	५८	२५	२१	8	मकर	००	२३	०७	५५	३	२४	४०	१२	४६
१९	८	र	१३	२७	११	०३	ध	४२	३२	२२	४१	ब	५०	२७	२५	५१	कौ	१३	२७	११	०३	३३	१६	५	४०	१८	५९	२६	२२	9	कुं.	१०	५७	००	२४	०५	५८	२	१	२३	१३	४०
२०	९	चं	१२	३०	१०	३९	श	४२	१७	२२	३४	ऐं	४५	५७	२४	०२	ग	१२	३०	१०	३९	३३	१९	५	३९	१८	५९	२७	२३	10	कुंभ	००	२५	०४	००	५९	२	०६	१४	३३
२१	१०	मं	९	१५	९	२०	पूभा	३९	५७	२१	३७	वै	३९	५०	२१	३४	वि	९	१५	९	२०	३३	२२	५	३८	१९	००	२८	२४	11	मी.	१५	५३	००	२६	०१	५९	५८	२	४९	१५	२७
२२	११	बु	४	०७	७	१७	उभा	३५	४०	१९	५४	वि	३२	१०	१८	३०	बा	४	०७	७	१७	३३	२५	५	३८	१९	००	२९	२५	12	मीन	००	२६	५९	५७	५६	३	३२	१६	२०
०	१२	बु	५७	१५	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२३	१३	गु	४८	५७	२५	१२	रे	२९	५७	१७	३६	ध्रु	२३	१२	१४	५४	ग	२३	२२	१४	५६	३३	२८	५	३७	१९	०१	३०	२६	13	मे.	१७	३६	००	२७	५७	५३	५५	४	१५	१७	१४
२४	१४	शु	३९	४२	२१	२९	अ	२३	००	१४	४८	आ	१३	१०	१०	५२	वि	१४	३०	११	२४	३३	३२	५	३६	१९	०२	३१	२७	14	मेष	००	२८	५५	४८	५४	४	५७	१८	०८
२५	३०	श	२९	५५	१७	३४	भ	१५	२२	११	४५	मौ	५१	३५ ४२	६ २६	३८ १७	च	४	५५	७	३४	३३	३५	५	३६	१९	०२	ज्ये.	२८	15	वृ.	१६	५९	००	२९	५३	४२	५१	५	४०	१९	३३

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।

A देवऋषि नारद जयंती, वीणादि वाद्य यंत्र दान, मई मास ५ ता. ३१, मई दिवस
A विश्व मजदूर दिवस, व्यतिपात पुण्यं
भद्रा १४।२४ से २७।३५ तक, मिथुन में शुक्र प्रवे. १०।३३, श्री श्री माँ आनन्दमयी ज.
वक्री चित्रा में मंगल प्रवेश १६।०५, अंगारक कृष्ण चतुर्थी व्रत
अश्विनी मेष में बुध प्रवेश १२।५२
भद्रा ९।३७ से २२।१० तक, वक्री नेपच्यून १०।५०, कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ज.
कालाष्टमी
आर्द्रा में शुक्र प्रवेश ९।०२, पंचक प्रारम्भ १०।२७ से, श्री दादूदयाल पुण्य B
भद्रा २१।५८ से,
भद्रा ९।२० तक, कृत्तिका में सूर्य प्रवेश २१।१४, रेवती ४ में गुरु प्रवेश ९।५७.C
भरणी में बुध प्रवेश २४।४१, अपरा एकादशी व्रत (वैष्णव), जलक्रीड़ा D
द्वादशी क्षय:
भद्रा २५।१२ से, प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारंभ, पंचक समाप्त १७।३६
भद्रा ११।२४ तक, बुध पूर्व में अस्त १२।०४, मास शिवरात्रि व्रत, सावित्री चतुर्दशी E
वृष में सूर्य प्रवे. ८।०७, संक्रांति मु. १५ महर्घ, शनि पूर्व में उद. १२।३९. F

B तिथि, मेला चनानी माताजी, श्री टैगोर जयंती (बंगाल में) C अपरा एकादशी व्रत (स्मार्त), भद्रकाली एकादशी (पंजाब), मधुसूदन द्वादशी, वैधृति पुण्यं D एकादशी (उड़ीसा), त्रिस्पृशा महाद्वादशी, E फलहारिणी कालिका पूजन F देवपितृकार्याऽमावस्या, शनि जयंती, भावुका अमावस्या, वट सावित्री व्रत, बड़ पूजनार्चन, सावित्री सत्यवान व्रत कथा श्रवणामृत, मेला डूंगरी जातरी (मनाली), सौर ज्येष्ठ मास प्रारंभ

प्रथम ज्येष्ठ कृ. ८ रवि, प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ९ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	९	६	०	११	२	०	३	९	९	९	७
२४	२७	५	६	२६	६	१४	२३	२३	२२	१०	१५
५	१९	६	२०	१०	३०	२३	४६	४६	५२	३१	५१
५८	४	४५	१७	२१	११	५	२९	२९	५३	२१	०७
५८	४५	१९	०७	१३	६६	७	३	३	०	०	१
२	४५	११	४३	३६	४९	३८	११	११	३७	५	३१
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖
पूषा	पूषा	हस्त	ज्येष्ठा	हस्त	हस्त	पूषा	अनु.	पूषा	श्रवण	श्रवण	अनु.

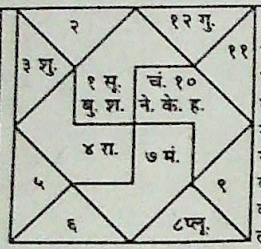

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

इस मास का आरम्भ शनिवार से हुआ है तथा यहाँ आठ नौ ग्रहों का केन्द्र योग भी चल रहा है अत: विश्व शांति के लिए किये गये उपायों को धक्का लगेगा। राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यों में गतिरोध बनने से सरकारी काम बन्द से हो जायेंगे। स्वार्थी नेतागण अपराधी तत्वों को संरक्षण देंगे जिससे देश में यत्र-तत्र झगड़े फसाद होंगे। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शांतिवार्ताएं कमजोर पड़ती दिखाई देंगी। विश्व के अनेक देशों में गृह युद्ध का सा वातावरण बनता दिखाई देगा। नेतागण एक दूसरे पर लांछन लगाते रहेंगे। **तेजी-मन्दी विचार**—तारीख ३ मई को मिथुन राशि में शुक्र प्रवेश करने से अनाज गेहूँ, जौ, चना में घटाबढ़ी से तेजी एवं सरसों, तिल तेल, सूत, पाट, बारदाना, कपास में मन्दी चलेगी। **मिथुन के शुक्र का फल—"मिथुन च यदा शुक्रो महर्घं तत्र जायते। यवगोधूमचणका: शालिश्चैव विशेषत: ॥"** पश्चात में वृष संक्रांति शनिवार की १५ मुहूर्ता होने से चलते बाजार के भावों में भारी उलटफेर करेगी। सोना, चांदी, पीतल, स्टील, आदि में तेजी की धारणा बनेगी। **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में गर्मी का जोर बढ़ेगा। मैदानी भागों में यत्र-तत्र वायु वेग, बादल चाल, आंधी, पानी, लू, बवंडर से जनता त्रस्त होगी। पश्चात में बुध-शनि का अस्त-उदय वायुवेग के साथ वर्षा, बिजली व मेघ गर्जना करेगा। **शकुन विचार**—ज्येष्ठ कृष्ण ११-१२ को बादल गाज होना शुभ होता है किन्तु अमावस्या को बादल बिजली हो तो आगे चौमासे में वर्षा का अभाव माना जाता है। यथा—"ज्येष्ठ मासे त्वमायां हि दिवा वा यदि वा निशम्। आकाशे दृश्यते मेघो ह्यनावृष्टिर्भयावहा ॥"

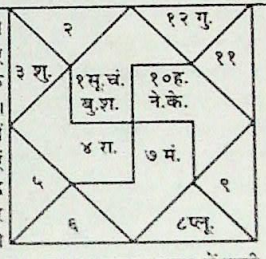

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	०	६	०	११	२	०	३	९	९	९	७
२९	२२	३	१७	२७	१३	१५	२३	२३	२२	१०	१५
५३	३९	२०	३४	३१	८	८	२७	२७	५५	३०	४१
४२	२८	१५	५५	११	१८	४१	२४	२४	४८	२२	५४
५७	११	१५	११	१३	६५	७	३	३	०	०	१
५१	३४	३३	०३	१८	४०	३१	११	११	१९	१७	३४
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖	❖
कृत्ति.	भरणी	चित्रा	भरणी	रेवती	आर्द्रा	भरणी	अश्ले.	धनि.	श्रवण	श्रवण	अनु.

धर्मसन्देश प्रकाशन, 2696, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3265234, 3264986
Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन 2596 नई सड़क दिल्ली 110006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्र. (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. १६ से ३० मई, सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति २६ वैशाख से ९ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा.	तिथि				स्टै.टा.		नक्षत्र				स्टै.टा.		योग				स्टै.टा.		करण				स्टै.टा.		दिन मान घं.	मि.	सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार	भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	गति: क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
मि.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	न.	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.																									
२६	१	र	२०	१०	१३	३९	कृ	७	४०	८	३९	अति	४१	००	२१	५९	व	२०	१०	१३	३९	३३	३८	५	३५	१९	३	२	२९	16	वृष	१	००	५१	३३	६	३३	१९	३३	श्री गंगादशाश्व मेष स्नान प्रारंभ, चन्द्रदर्शन मु. ४५, साम्यार्घ, अधिक A
२७	२	चं	१०	४५	९	५३	रो	०	००	५	३८	सु	३०	४७	१७	५४	कौ	१०	४५	९	५३	३३	४०	५	३५	१९	३	३	सक	17	मि. १६।९०	१	०१	४९	२४	५०	७	२६	२०	२६	अश्लेषा २ में राहु श्रवण ४ में केतु प्रवेश १३।२५, सफर मु.मास २ प्रारंभ
२८	३	मं	२	२०	६	३०	मृ	४८	०५	२४	४८	धृ	२१	२५	१४	०८	व	२	२०	६	३०	३३	४३	५	३४	१९	४	४	२	18	मिथुन	१	०२	४७	१४	४७	८	१९	२१	०९	भद्रा १७।०२ से २७।३५ तक, विनायक ४ व्रत
०	४	मं	५५	०२	२७	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी क्षय:
२९	५	बु	४९	३०	२५	२२	पुष्य	४४	१५	२३	१६	शू	१३	१७	१०	५३	व	२२	०२	१४	२३	३३	०६	५	३४	१९	५	५	३	19	क. १३।५	१	०३	४५	०१	४७	९	१२	२१	५२	कृत्तिका में बुध प्रवेश १६।२८, मेला शाढ़ी जातर नगर (हिमाचल)
३०	६	गु	४५	४५	२३	५१	बु	४२	१५	२२	२७	व	६	३५	८	११	कौ	१७	२२	१२	३०	३३	४९	५	३३	१९	५	६	४	20	कर्क	१	०४	४२	४८	४४	१०	०६	२२	३५	
३१	७	शु	४३	५५	२३	०७	श्ले	४२	१२	२२	२६	वृ	६	३५	८	११	व	१४	३५	११	२३	३३	५२	५	३३	१९	६	७	५	21	सिं. २२।६	१	०५	४०	३२	४४	१०	५९	२३	१८	भद्रा २३।०७ से, वृष में बुध प्रवेश ६।१७, पुनर्वसु में शुक्र प्रवेश १३।१७, B
ज्ये.	८	श	४४	०५	२३	१०	म	४४	०२	२३	०९	ध्रु	५५	३७	२७	४७	वि	१४	१०	११	०२	३३	५५	५	३२	१९	६	८	६	22	सिंह	१	०६	३८	१६	४२	११	५३	२४	०१	भद्रा ११।०२ तक, राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारम्भ
२	९	र	४५	५५	२३	५४	पूर्वा	४७	३०	२४	३२	इ	५४	५०	२७	२८	वा	१४	४७	११	२७	३३	५७	५	३२	१९	७	९	७	23	सिंह	१	०७	३५	५८	४१	१२	४६	२४	४४	वक्री हर्षल ५।३७
३	१०	चं	४९	१७	२५	१४	उषा	५२	३२	२६	३२	ब्र	५७	४५	२७	३७	तै	१७	३०	१२	३१	३३	५९	५	३१	१९	८	१०	८	24	कं. ६।४१	१	०८	३३	३९	३९	१३	४०	१	२७	श्री गंगा दशहरा मेला हरिद्वार, दशहरा व्रत समा., श्री सेतुबन्ध रामेश्वर प्रतिष्ठा दि.
४	११	मं	५३	४७	२७	०२	इ	५८	२७	२८	५४	सि	५६	२२	२८	०४	व	२८	२०	१४	०३	३४	०१	५	३१	१९	८	११	९	25	कन्या	१	०९	३१	१८	३९	१४	३३	२	१०	भद्रा १४।०३ से २७।०२ तक, रोहि. में सूर्य प्रवेश १७।२७, रोहिणी में बुध C
५	१२	बु	५८	५७	२९	०६	वि	६०	००	-	-	ध्रु	५८	०७	२८	४६	व	२६	१७	१६	०२	३४	०३	५	३१	१९	९	१२	१०	26	तु. १८।४५	१	१०	२८	५७	३७	१५	२७	२	५३	अश्विनी १ मेष में गुरु प्रवेश १६।३९, कमला पुरुषोत्तम एकादशी व्रत D
६	१३	गु	६०	००	-	-	वि	५	१७	७	३७	व	६०	००	-	-	कौ	३१	५२	१८	१५	३४	०५	५	३०	१९	९	१३	११	27	तुला	१	११	२६	३४	३६	१६	२०	३	५६	भरणी २ में शनि प्रवेश १४।४४, प्रदोष व्रत, पं. जवाहरलाल नेहरू पुण्य तिथि
७	१३	शु	४	४५	७	२४	स्वा	१२	२५	१०	२८	व	०	१७	५	३७	तै	४	४५	७	२४	३४	०७	५	३०	१९	१०	१४	१२	28	तुला	१	१२	२४	१०	३४	१७	१४	४	१९	त्रयोदशी वृद्धि
८	१४	श	१०	३७	९	४५	वि	१९	४५	१३	२४	ध्रु	२	३५	६	३२	व	१०	३७	९	४५	३४	०९	५	३०	१९	१०	१५	१३	29	वृ. ६।१०	१	१३	२१	४४	३४	१८	०८	५	०२	भद्रा ९।४५ से २२।५७ तक, सत्यव्रत, चौ चरणसिंह पुण्य तिथि
९	१५	र	१६	३७	१२	०९	अनु	२७	०७	१६	२१	प्रि	४	५५	७	२८	व	१६	३७	१२	०९	३४	११	५	३०	१९	११	१६	१४	30	वृश्चिक	१	१४	१९	१८	३२	१९	०२	५	४५	कर्क में शुक्र प्रवेश २५।२०, पूर्णिमा पुण्यं

A पुरुषोत्तम मास प्रारंभ B सायन मिथुन में सूर्य प्रवेश १७।२२ C प्रवेश २०।५८, कमला पुरुषोत्तम एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णवानां D निम्बार्काणाम्, व्यतिपात पुण्यं

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।

प्रथम ज्येष्ठ शु. ८ शनि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २२ मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ह.	ने.	प्लू.
१	४	६	१	११	२	०	३	९	९	९	७
६	३	१	२	२९	२०	१६	२३	२३	२२	१०	१५
३८	५०	४६	४	३	४३	०	५	५	५६	२७	३०
१६	३९	३६	१०	२	२७	५६	९	९	५७	४५	४०
५७	३०	१०	१०	१२	६४	७	३	३	०	०	१
४२	३८	२०	१८	५३	०६	२१	११	११	०	३०	३८
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
शनि	अनु.	विशा.	रोहि.	आर्द्रा.	पू.	भरणी	अश्वि.	श्रवण	श्रवण	श्रवण	अनु.

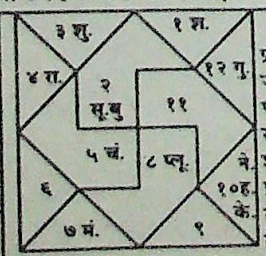

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

ता. ३० मई ❖ प्रथम ज्येष्ठ शु. १५ रवि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

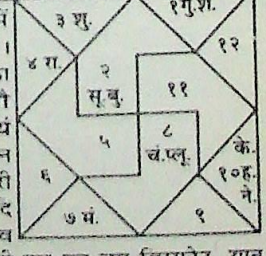

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ह.	ने.	प्लू.
१	७	६	१	०	२	०	३	९	९	९	७
१४	११	०	१९	०	२९	१६	२२	२२	२२	१०	१५
१९	१६	४७	३२	४४	८	५८	३९	३९	५५	२२	१७
१८	५७	३०	११	९	५२	३९	४३	४३	१९	५८	३१
५७	०१	३	१२	१२	६१	७	३	३	०	०	१
३२	२५	५२	४१	२०	५३	६	११	११	२५	४४	३९
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
शनि	अनु.	विशा.	रोहि.	आर्द्रा.	पू.	भरणी	अश्वि.	श्रवण	श्रवण	श्रवण	अनु.

इस पक्ष में ता. २६ मई को बृहस्पति मेष राशि में प्रवेश कर मंगल-शनि से समसप्तम योग बनायेंगे। जो आगामी तीन मास तक बना रहेगा। जिसका फल—''यदारशौरी सुरराज मन्त्री यदैक राशौ समसप्तके वा। अयोध्य लंका पुरमध्य देशे क्षुधाभयं शस्त्र भयं करोति॥'' भारत के मध्य भाग के विभिन्न प्रदेशों उ.प्र., म.प्र. में प्रकृति प्रकोप, भूकम्प, महामारी से जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा। श्रीलंका, ब्रह्मा आदि देशों में आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ने से प्रजा व सरकार को कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। विश्व के अनेक भागों में भी यत्र-तत्र बम विस्फोट, यान दुर्घटना, प्रकृति प्रकोप रहने से हानि होगी। **तेजी-मंदी विचार**—पक्षारंभ गेहूँ, जौ, चना, मूँग, मोठ, ज्वार में घटाबढ़ी तथा चांदी में विशेष तेजी होगी। पक्ष मध्य ता. २१ मई को वृष का बुध आने से तिल तेल, सूत, कपास, रुई, जौ, गेहूँ, चना में तेजी होगी। **वृष राशि के बुध का फल**—''सोमपुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुर्याच्च लक्षणम्। मेदिनी नव खण्डेषु कलहश्च महद्भयम्॥'' **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान में आंधी, तूफान के साथ कहीं-कहीं बूंदाबांदी होगी। गरमी का जोर बढ़ेगा। पूर्वोत्तर भागों में वर्षा के साथ ओले भी पड़ेंगे। **अधिक मास के कर्तव्य**—प्रातःकाल शौचादि से निवृत होकर स्नान एवं हरिनाम स्मरण पूजा आदि अपने धर्म एवं अधिकारानुसार प्रतिदिन करें तथा एक समय सात्विक भोजन करें। इस मास में कांसी के पात्र में अपूपदान का विशेष महत्व माना गया है। यहाँ यथाशक्ति दान पुण्य करने से सब प्रकार के सुख की प्राप्ति होकर अन्त में स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-६ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. ३१ मई से १३ जून सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति १० से २३ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि	तिथि ति	वा	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	स्टै.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प.	मु	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क	वि.	गति: क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं	मि	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।
१०	१	च	२२	२७	१४	२८	अं	३४	१७	१९	१२	सि	७	१२	८	२२	कौ	२२	२७	१४	२८	३४	१३	५	२९	१९	११	१७	१५	३१	ध. १९.१२	१	१५	१६	५०	३१	१९	५६	७	२६	मृगशिर में बुध प्रवेश २३।४८
११	२	मं	२७	५७	१६	४०	मू	४१	१२	२२	५८	सा	९	१२	९	१०	व	२७	५७	१६	४०	३४	१५	५	२९	१९	१२	१८	१६	३१	धनु	१	१६	१४	२२	३०	२१	०५	८	३५	जून मास ६ ता. ३०
१२	३	बु	३२	५२	१८	३८	पू	४७	२२	२४	२६	शु	१०	५५	९	५१	व	०	३२	५	४२	३४	१७	५	२९	१९	१२	१९	१७	२	धनु	१	१७	११	५२	२९	२१	४९	९	१९	भद्रा ५।४२ से १८।३८ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
१३	४	गु	३७	१२	२०	१६	उ	५२	४७	२६	३६	शु	११	५७	१०	१६	व	५	०२	७	३०	३४	१९	५	२९	१९	१३	२०	१८	३	म. ३०।१	१	१८	०९	२१	२८	२२	३२	१०	०२	मिथुन में बुध प्रवेश २७।५२, पुष्य में शुक्र प्रवेश ७।३९
१४	५	शु	३९	५७	२१	२८	भ	५७	०५	२८	१९	ब	१२	२०	१०	२५	कौ	८	४०	८	५७	३४	२०	५	२९	१९	१३	२१	१९	४	मकर	१	१९	०६	४९	२७	२३	०५	१०	३५	मार्गी मंगल १९।१७
१५	६	श	४१	३७	२२	०७	भ	५९	५५	२९	२६	ऐं	११	४७	१०	११	व	१०	५७	९	५१	३४	२२	५	२८	१९	१४	२२	२०	५	कुं. १६।५७	१	२०	०४	१६	२७	२३	४९	११	१९	भद्रा २२।०७ से, बुध पश्चिम में उदय २६।०८, पंचक प्रा. १६।५७ से. A
१६	७	र	४१	३५	२२	०६	म	६०	००	-	-	वै	९	५७	९	२७	वि	११	५०	१०	१२	३४	२३	५	२८	१९	१४	२३	२१	६	कुंभ	१	२१	०१	४३	२५	२४	३२	१२	०२	भद्रा १०।१२ तक, वैधृति पुण्य
१७	८	चं	३९	४५	२१	२२	म	१	१२	५	५७	वि	६	४५	८	१०	बा	१०	५५	९	५०	३४	२५	५	२८	१९	१५	२४	२२	७	मी. २३।५०	१	२१	५९	०८	२४	१	०५	१२	३५	आर्द्रा में बुध प्रवेश १२।०६
१८	९	मं	३६	०७	१९	५५	पू	५८	३२ १०	५ २८	५१ ४४	शो	५५	०२	१०	५३	तै	८	१०	८	४४	३४	२६	५	२८	१९	१६	२५	२३	८	मीन	१	२२	५६	३२	२४	१	५८	१३	२८	मृगशिर में सूर्य प्रवेश १५।१९
१९	१०	बु	३०	४५	१७	४६	उ	५४	०५	२७	०६	सौ	४८	३२	२४	५३	व	३	४०	६	५६	३४	२७	५	२८	१९	१६	२६	२४	९	मे. २३।४६	१	२३	५३	५६	२३	२	४१	१४	११	भद्रा ६।५६ से १७।४६ तक, पंचक समाप्त २७।०६, आखरी चहार शम्बा
२०	११	गु	२३	४५	१४	५८	उ	४८	३५	२४	५४	ध्रु	३९	४७	२१	२३	बा	२३	४५	१४	५८	३४	२८	५	२८	१९	१६	२७	२५	१०	मेष	१	२४	५१	१९	२१	३	२४	१४	५६	कमला पुरुषोत्तम एकादशी व्रत सबका
२१	१२	शु	१५	३७	११	४३	भ	४१	५७	२२	१५	अति	३०	१२	१७	३३	तै	१५	३७	११	४३	३४	२९	५	२८	१९	१६	२८	२६	११	वृ. २३।४४	१	२५	४८	४०	२१	४	०८	१५	३८	प्रदोष व्रत
२२	१३	श	६	३७	८	०७	कृ	३४	४७	१९	२३	शु	१९	५७	१३	२७	व	६	३७	८	०७	३४	३०	५	२८	१९	१७	२९	२७	१२	वृष	१	२६	४६	०१	२०	४	४८	१६	१८	भद्रा ८।०७ से १८।१५ तक, अश्विनी २ में गुरु प्रवेश ९।४६
०	१४	श	५७	१०	२८	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी क्षय
२३	३०	र	४७	३७	२४	३१	मे	२७	१७	१६	२३	ध्रु	५९	४९	२१	१५	च	२२	२०	१४	२४	३४	३१	५	२८	१९	१७	३०	२८	१३	मि. २६।५३	१	२७	४३	२१	२०	५	३१	१७	०१	देवपितृकार्याऽमावस्या, अधिक पुरुषोत्तम मास समा., शहादते इमाम हसन (मु.)

Aविश्व पर्यावरण दिवस, चेहलुम

द्वितीय ज्येष्ठ कृ. ८ चन्द्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ७ जून

मू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१०	६	२	०	३	०	३	९	९	९	७
२१	१९	०	६	२	७	१७	२२	२२	२२	१०	१५
५९	०५	३९	८	२०	१४	५४	१४	१४	५०	१६	०४
८	३	१२	२२	३१	५०	१६	१७	१७	३८	२१	२१
५७	११	२	११	११	५९	६	३	३	०	०	१
२४	४८	२१	३	४१	०	४६	२१	२१	४८	५७	३८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
तैति.	भ्रा.	चित्रा	मृग.	आर्द्रा	पुष्य	भरणी	भरणी	अश्वि.	श्रवण	श्रवण	श्रवण	अनु.

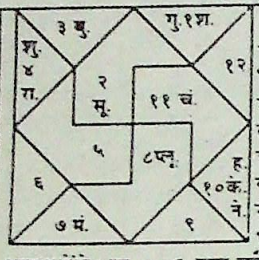

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

इस वर्ष ज्येष्ठ अधिक मास बना है। जिसका फल प्राचीन दैवज्ञों ने इस प्रकार लिखा है — ''द्वि. ज्येष्ठ नृप विग्रहः।'' विश्व के अनेक प्रधान शासकों में आन्तरिक मनमुटाव उत्पन्न होने से तनाव की स्थिति बनेगी। पाकिस्तान, ईरान, ईराक, चीन आदि यवन राष्ट्रों की नीति विश्व में हलचल बढ़ायेगी। कई देशों की वित्तीय नीति खराब होने से व्यापारिक लेन देनों में कमी होगी। राजनेता भ्रष्टाचार में लिप्त होकर जनता के कार्यों में कम ध्यान देंगे। ता. ५-६ जून को पश्चिम में बुध का उदय भी उत्पातकारी है। फल — ''नोत्पात परित्यक्त कदाचिदपि चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।'' पूंजीवादी राष्ट्रों का वर्चस्व बढ़ेगा। उत्तरी भारत में गर्मी का जोर बढ़ेगा। कहीं आंधी, तूफान से संचार व्यवस्थाओं में बाधा उत्पन्न होगी। तेजी-मन्दी विचार — ता. ४ से बाजारों में चल रही चालें अकस्मात् बदलेंगी। यहां बाजार का रुख देखकर काम करना श्रेष्ठ रहेगा। पक्ष मध्य में पाट-बारदाना, सूत, कपास, तिल तेल, सरसों, गेहूँ, चना, मूँग, उड़द में तेजी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण** — पक्षारंभ में गर्मी का प्रकोप बढ़ने से अनेक स्थान पर लू का प्रकोप बढ़ेगा। दक्षिण भारत के तटीय प्रदेशों, असम, नागालैण्ड आदि क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ वर्षा के योग हैं। ऋतु विपर्यय होगा। शकुन विचार — जिस वर्ष पीपल के फल-फूल अधिक आवें तो उस वर्ष मोठ, बाजरा की फसल कमजोर तथा अन्य सब अनाजों की पैदावार श्रेष्ठ होती है।

द्वितीय ज्येष्ठ कृ. ३० रवि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १३ जून

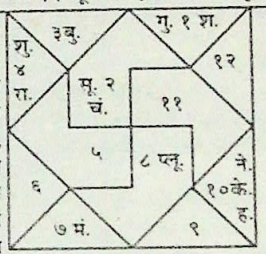

मु	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१	६	२	०	३	०	३	९	९	९	७
२७	१६	१	१७	३	१३	१८	२१	२१	२२	१०	१४
४३	२४	५	४	२९	३	३४	५५	५५	४५	१०	५४
२१	४१	३६	२१	१५	२७	६	१२	१२	१२	१७	३९
५७	११	६	१००	११	५६	६	३	३	१	१	१
२०	१२	५८	४२	८	३४	२९	११	११	३	५	३६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
२	२	७	४	२	७	२	२	४	४	४	४
मृग.	तैति.	चित्रा	आर्द्रा	आश्वि.	पुष्य	भरणी	अश्वि.	श्रवण	श्रवण	श्रवण	अनु.

धर्मसंघ प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-७ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. १४ से २८ जून सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति २४ ज्येष्ठ से ७ आषाढ़ तक। रवि उत्तर-दक्षिणायने, उत्तरगोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

ता. मि.	तिथि		स्टै.टा.	नक्षत्र		स्टै.टा.	योग		स्टै.टा.	करण		स्टै.टा.	दिन मान घं. मि.	रात्रि मान घं. मि.	सूर्योदयास्त उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	दिनांक प्र. मु. अं.			चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	गति: वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।
२४	१	च	३८	ध	४०	५०	व	४०	४२	४३	३३	व	४९	०२	२५	०५	कि	१३	०५	१०	४२	३४	३२	५	२८	१९	१७	३१	२९	१४	मिथुन	१	२८	४०	४१	१३	७	४०	२०	१०	पुनर्वसु में बुध प्रवेश २३।८९, करवीर व्रत
२५	२	मं	३०	३४	४०	४३	श	१३	००	११	००	बु	३९	५७	२१	२७	बा	४	२७	७	१५	३४	३३	५	२८	१९	१८	आ	३०	१५	क. २७।३	१	२९	३८	००	१९	८	२०	२०	५०	मिथुन में सूर्य प्रवेश १४।४३, संक्रांति मु. ४५, समर्घ, चन्द्रदर्शन मु. ०५, साम्यर्घ. A
२६	३	बु	२३	४४	२४	५१	सु	८	३०	८	५५	बृ	३१	५३	१८	१३	व	२३	४७	१४	५९	३४	३४	५	२८	१९	१८	२	२७	१६	कर्क	२	००	३५	१९	१८	९	००	२१	३०	भद्रा २५।५५ से, अश्लेषा में शुक्र प्रवेश २६।३४, महाराणा प्रताप जयंती, B
२७	४	गु	१८	३२	१२	५३	बु	४	५५	७	२८	श	२५	२०	१५	३६	वि	१८	३२	१२	५३	३४	३४	५	२८	१९	१८	३	२	१७	कर्क	२	०१	३२	३७	१७	९	३०	२२	१०	भद्रा १२।५३ तक, गुरु अर्जुन देव बलिदान दिवस, विनायक ४ व्रत
२८	५	शु	१५	३५	११	३५	बृ	३	०२	६	४२	ह	२०	१२	१३	३४	बा	१५	१५	११	३५	३४	३५	५	२९	१९	१९	४	३	१८	सिं. ६।४२	२	०२	२९	५४	१६	१०	२०	२२	५०	श्रुति पंचमी (जैन)
२९	६	श	१३	४०	११	०३	व	३	२०	६	००	श	१६	४२	१२	१०	नै	१३	५५	११	०३	३४	३५	५	२९	१९	१९	५	४	१९	सिंह	२	०३	२७	१०	१६	११	००	२३	३०	अरण्य षष्ठी व्रत (बंगाल में प्रसिद्ध) विन्ध्यवासिनी पूजा, जामित्री षष्ठी (बंगाल)
३०	७	र	१४	५०	११	०३	श	५	४०	७	३३	कि	१४	४७	११	२४	व	१४	३०	११	१७	३४	३६	५	२९	१९	१९	६	५	२०	कं. १३।५२	२	०४	२४	२६	१५	११	४०	२४	१०	भद्रा ११।१७ से २३।८७ तक, भानु सप्तमी
३१	८	चं	१०	००	१२	००	ध	९	००	९	०५	बा	१४	१५	११	११	व	१७	००	१२	१७	३४	३६	५	२९	१९	१९	७	६	२१	कन्या	२	०५	२१	४१	१५	१२	२०	२४	५०	कर्क में बुध प्रवेश १८।३०, वक्री उ षा. ४ में नेपच्यून प्रवेश २२।३३, व्यतिपात C
अग.	९	मं	२०	००	१३	०१	ह	१४	००	११	१३	व	१४	५५	११	२७	कौ	२०	५५	१३	५१	३४	३६	५	२९	१९	२०	८	७	२२	तु. २१।१०	२	०६	१८	५६	१५	१३	००	१	३०	आर्द्रा में सूर्य प्रवेश १४।२०, श्री महेश्वरी नवमी, रवि दक्षिणायन वर्षा ऋतु प्रा. D
२	१०	बु	२०	००	१५	००	व	१६	२७	१२	०५	व	२५	५०	१५	५०	३४	३६	५	३०	१९	२०	९	८	२३	तुला	२	०७	१६	११	१४	१३	४०	२	१०	भद्रा २९।०० से, बटुक भैरव जयंती
३	११	गु	३१	००	१८	११	श	१८	३२	१२	५५	वि	३१	४२	१८	११	३४	३५	५	३०	१९	२०	१०	९	२४	तुला	२	०८	१३	२५	१४	१४	२०	२	५०	भद्रा १८।११ तक, पुष्य में बुध प्रवेश १।४६, निर्जला एकादशी व्रत (सब का) E
४	१२	शु	३०	००	२०	३२	कि	२०	५७	१३	५३	ध	४	३५	७	२०	३४	३४	५	३०	१९	२०	११	१०	२५	वृ. १।४३	२	०९	१०	३९	१४	१५	००	३	३०	चम्पक द्वादशी
५	१३	श	४३	३०	२०	००	बा	२३	१७	१४	४९	कौ	१०	३२	९	४३	३४	३३	५	३०	१९	२०	१२	११	२६	वृश्चिक	२	१०	०७	५३	१३	१५	४०	४	१०	शनि प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत प्रारम्भ (गुजरात में)
६	१४	र	४०	५२	२०	०८	व	२५	३२	१५	४४	व	१६	१७	१२	०२	३४	३२	५	३१	१९	२०	१३	१२	२७	ध. २५।५४	२	११	०५	०६	१३	१६	२०	४	५०	भद्रा २५।०८ से, भरणी ३ में शनि प्रवेश ५।०७, चम्पक चतुर्दशी (बंगाल में) F
७	१५	चं	५०	०२	००	०८	ध	२७	१२	१६	२४	वि	२१	३३	१४	०८	३४	३१	५	३१	१९	२०	१४	१३	२८	धनु	२	१२	०२	१९	१३	१७	००	५	३०	भद्रा १४।०८ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यम्, वट सावित्री व्रत समाप्त (गुजरात) G

A रम्भा तृतीया व्र., शुक्र संक्रांति (उदीच्य), नील आषाढ़ मास प्रा., मेला भून्तर (हिमाचल प्रदेश) B मेला हल्दी घाटी (राज.), रवि-उल-अव्वल मु. मास ३ प्रारंभ, C पुष्य, श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, मेला क्षीर भवानी (कश्मीर), सायन कर्क में सूर्य प्रवेश २५।१९ D राष्ट्रीय आषाढ़ मासारम्भ E मेला बहिरे भटिण्डा (पंजाब) F ईद-ए-मिलाद (बारावफात) G मन्वादि, सन्त कबीर जयंती, देव स्नान ज्येष्ठी पूर्णिमा

द्वितीय ज्येष्ठ शु. ८ चन्द्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २१ जून [दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं] ता. २८ जून ❖ द्वितीय ज्येष्ठ शु. १५ चन्द्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	५	६	२	०	३	०	३	९	९	९	७
५	८	२	२०	४	२०	१९	२२	२१	२२	१०	१४
२१	७	२०	१६	५५	२१	२४	२०	२९	२५	०	३१
४१	४२	३२	५४	३६	३१	२९	०६	०६	३३	५४	३१
५७	०२	१२	५२	१०	५२	६	३	३	१	१	१
१५	१४	२०	३४	१९	१२	४	३१	३१	२३	१९	३१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	४	८	८	८	८	४	४	४	४	४
आर्द्रा	पुष्य	चित्रा	पूर्वा	पूर्वा	अश्ले.	मघा	अश्ले.	अश्ले.	श्रवण	श्रवण	उत्त.	अनु.

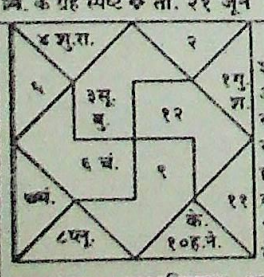

इस पक्ष में ता. १५ जून से संघट्ट चक्र में गुरु, शनि का शुक्र, राहु से वेध अच्छा नहीं है। विश्व के अनेक भागों में प्रकृति-प्रकोप, भूकम्प, महामारी, बम विस्फोट से जन-धन हानि होगी। भारत में भी यत्र-तत्र हिंसा, लूटपाट, हत्या की घटनाएं अधिक होंगी। जीवनोपयोगी वस्तुएं महंगी होंगी। प्रदूषण की वृद्धि होने से पर्यावरण बदलता दिखाई देगा। भारत सरकार को कानून व्यवस्था को बनाये रखने के लिए कठोर कदम उठाने पड़ेंगे। ईरान, ईराक, इजरायल, अफगानिस्तान, अफ्रीका, इंगलैण्ड, अमेरिका में यत्र-तत्र अशुभ फलों का बोलबाला दिखाई देगा।

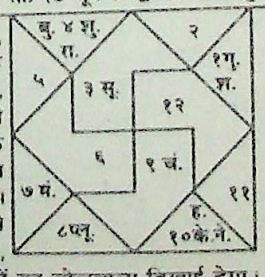

तेजी-मन्दी विचार— द्वितीया मंगलवार को मिथुन संक्रांति एवं चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्त होने से धान्य, अनाज, गल्ला, तेल, तिलहन, सोना, चांदी, पीतल, लोहादि में घटाबढ़ी से तेजी की चाल निकलेगी। प्रजा में रोग पीड़ा व अग्निभय की वृद्धि होगी। मंगलवारी मिथुन संक्रांति का फल— **''ज्येष्ठ श्रीमिथुनार्कतः शनिकुजादित्येषु पापाशयो। रोगोऽग्निज्वलनाद्विजं भयमपि प्रायो महर्घाः कणाः॥''**

आकाश लक्षण— इस पक्ष में आसाम, बंगाल, नेपाल, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु में वर्षा चालू होगी। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उ.प्र., मध्यप्रदेश में वायु वेग के साथ वर्षा होगी। पक्ष मध्य से कृष्ण-शुक्ल का योग अच्छी वर्षाकारक है। **शकुन विचार**— ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को दक्षिण दिशा की हवा चले तथा आकाश बादलों से ढका रहे और मेघ गर्जना हो तो धान्यों का संग्रह करने वालों को आगे आश्विन मास में लाभ होगा।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-८ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. २९ जून से १३ जुलाई सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति ८ से २२ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि	तिथि ति	वा	घ	प	घं	मि	नक्षत्र स्टै.टा. न	घ	प	घं	मि	योग स्टै.टा. यो	घ	प	घं	मि	करण स्टै.टा. क	घ	प	घं	मि	दिन मान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र. मु. अं.	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	ग. ति. क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं	मि	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।
८	१	मं	५८	१०	२८	५०	उत्त	६०	००	-	-	व	२८	३२	१६	५६	बा	२६	२५	१६	०१	३४	३०	५	३१	१९	२०	१५	१४	29	धनु	२	१२	५९	३२	२३	२०	०५	७	३५	वटसावित्री व्रत पारणा, गुरु हरगोविन्द सिंह जयंती
९	२	बु	६०	००	-	-	पूर्वा	१	५५	६	१८	ऐं	२९	१२	१७	१३	तै	३०	००	१७	३२	३४	३०	५	३२	१९	२०	१६	१५	30	म. १५।५०	२	१३	५६	४५	१३	२०	५६	८	१६	
१०	२	गु	१	३५	६	१०	उत्त	६	४७	८	१५	वै	२९	१७	१७	१५	ग	१	३५	६	१०	३४	२९	५	३२	१९	२०	१७	१६	J.1	मकर	२	१४	५३	५८	१२	२१	२७	८	५७	भद्रा १८।४० से, अश्विनी ३ में गुरु प्रवेश २१।५०, वैधृति पुण्य, जुलाई मा. ७ ता. ३१
११	३	शु	४	०५	७	१०	ध	१०	५०	९	५२	वि	२८	२०	१६	५२	वि	४	०५	७	१०	३४	२८	५	३२	१९	२०	१८	१७	2	कुं. २२।३०	२	१५	५१	१०	११	२२	०८	९	३८	भद्रा ७।१० तक, मघा सिंह में शुक्र प्रवेश २९।०४, कृष्ण चतुर्थी व्रत, A
१२	४	श	५	५०	७	४३	ध	१३	४०	११	०१	ध्रो	२६	३५	१६	११	बा	५	२५	७	४३	३४	२७	५	३३	१९	२०	१९	१८	3	कुंभ	२	१६	४८	२१	१२	२३	४९	१०	१२	Aपंचक प्रारम्भ २२।३० से, ईद-ए-मीलाद (मु.)
१३	५	र	५	३०	७	४५	शत	१५	२०	११	४१	आ	२३	५०	१५	०५	तै	५	३०	७	४५	३४	२६	५	३३	१९	२०	२०	१९	4	कुंभ	२	१७	४५	३३	१२	२३	३०	१७	००	
१४	६	चं	४	१२	७	१५	पूभा	१५	३५	११	४८	सौ	१९	५५	१३	३२	व	४	१२	७	१५	३४	२५	५	३४	१९	२०	२१	२०	5	मी. ५।५०	२	१८	४२	४५	१२	२४	११	११	४१	भद्रा ७।१५ से १८।४३ तक
१५	७	मं	१	३२	६	११	उभा	१४	३५	११	२४	शो	१४	५७	११	३३	ब	१	३२	६	११	३४	२४	५	३४	१९	२०	२२	२१	6	मीन	२	१९	३९	५७	१२	२४	५२	१२	२२	पुनर्वसु में सूर्य प्रवेश १३।५५, स्वाती में मंगल प्रवेश २२।२०, कालाष्टमी
०	८	मं	५७	३०	२८	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी क्षयः
१६	९	बु	५२	००	२६	२३	रे	१२	०५	१०	२५	अति	८	५०	९	०७	तै	२४	५५	१५	३३	३४	२२	५	३५	१९	२०	२३	२२	7	मे. १०।२५	२	२०	३७	०९	१२	१	१३	१३	०३	पंचक समाप्त १०।२५
१७	१०	गु	४५	३५	२३	४९	अ	८	१७	८	५४	मु	५३	३५	२७	०१	व	१८	५७	१३	१०	३४	२१	५	३५	१९	२०	२४	२३	8	मेष	२	२१	३४	२१	१३	२	१४	१३	४४	भद्रा १३।१० से २३।४९ तक
१८	११	शु	३८	०७	२०	५०	म	२०	५५	२८	५५	शू	४४	४२	२३	२८	व	११	५७	१०	२२	३४	२०	५	३५	१९	२०	२५	२४	9	वृ. १२।५७	२	२२	३१	३४	१२	२	५६	१४	२६	योगिनी एकादशी व्रत सब का
१९	१२	श	३०	००	१७	३६	पो	५१	४२	२६	१७	गं	३५	२२	१९	४५	कौ	०४	०७	७	१५	३४	१८	५	३६	१९	१९	२६	२५	10	वृष	२	२३	२८	४६	१२	३	३७	१५	०७	शनि प्रदोष व्रत, पापनाशिनी महाद्वादशी व्रत
२०	१३	र	२१	४७	१४	१९	उषा	५५	२७	२३	४७	वृ	२५	४५	१५	५८	व	२१	४७	१४	१९	३४	१६	५	३६	१९	१९	२७	२६	11	मि. १३।०१	२	२४	५५	५८	१२	४	१८	१५	४८	भद्रा १४।१९ से २४।४० तक, मासशिवरात्रि व्रत
२१	१४	चं	१३	२७	११	००	आ	३९	२५	२१	२३	ध्रु	१६	२५	१२	११	श	१३	२७	११	००	३४	१५	५	३७	१९	१९	२८	२७	12	मिथुन	२	२५	२३	१०	१३	५	००	१६	३०	पितृकार्याऽमावस्या
२२	३०	मं	५	३०	७	५३	पुन	३४	०२	१९	१४	व्या	५९	२५	८	३५	ना	५	४०	७	५३	३४	१३	५	३७	१९	१९	२९	२८	13	क. १३।०५	२	२६	२०	२३	१४	५	४२	१७	१२	चक्री बुध ९।०५, देवकार्याऽमावस्या, मध्यम दिवस (काश्मीर)

आषाढ़ कृ. ७ मंगल, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ६ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	११	६	३	०	४	०	३	९	९	९	७
१९	१३	६	१३	७	२	२०	२०	२०	२२	९	१४
३९	१७	२५	४४	१८	६	४८	४२	४२	१०	४०	२१
५७	३८	३६	४०	२०	२४	५२	५	५	५१	४	१९
५७	०९	२०	२९	८	३९	५	३	३	१	१	१
१२	२०	३१	१९	३२	४९	६	११	११	५५	३२	१४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वा फा.	उत्तरा फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु.

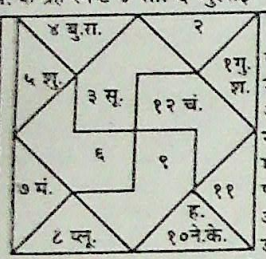

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

इस पक्ष में शुक्र, सिंह राशि में प्रवेश करने से वायु प्रकोप बढ़ेगा। वर्षा में कमी होने से धान्यादि उत्पादन पर असर पड़ेगा। यहां तुला का मंगल भी अशुभ फलों में बढ़ोत्तरी करेगा। यथा—**''सिंहे शुक्र-स्तुलां भौमः कर्के जीवो यदा भवेत्। धूलि वर्षा महान् वायुर्भवेद्धान्य महार्घताः॥''** राजनैतिक परस्पर विरोध, देश की पश्चिमी सीमाओं पर विदेशी अशान्ति का वातावरण पैदा करेंगे। सरकार रेलवे, डाक व तार विभाग के लिए कुछ उपयोगी नियम निर्धारित करेगी। **तेजी-मन्दी विचार**— इस पक्ष में द्वितीया तिथि की वृद्धि तथा अष्टमी तिथि का क्षय होने से बाजार भावों में मन्दी की चाल निकलेगी। यथा—**''जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सब वस्तु मन्दी बिके महंगाई हट जाय॥''** पक्षारंभ में कपास, सरसों, जौ, बाजरा, ज्वार, मक्का में तेजी होगी। यहाँ ६ जून से बाजार रुख देखकर कार्य करें, अचानक मन्दी हो सकती है। पक्षान्त में गुड़-खाण्ड, शक्कर, सूत, बादाम, नारियल, सरसों में घटाबढ़ी से तेजी की चाल निकलेगी। **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में खण्डवृष्टि का योग बन रहा है। कुछ स्थानों पर वायु प्रकोप की अधिकता रहे तो पूर्वी-दक्षिणी भारत में कहीं-कहीं अति वृष्टि से जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा। **शकुन विचार**— आषाढ़ कृष्ण अष्टमी-नवमी को बादल चाल एवं बिजली चमके तो सुभिक्षकारक होता है। यथा—**''आषाढ़ बदी अष्टम दिनां मेघावृत हो चन्द। वर्षा अच्छी होयेगी, मिटे सभी दुःख द्वन्द॥''**

ता. १३ जुलाई ❖ आषाढ़ कृ. ३० मंगल, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	२	६	३	०	४	०	३	९	९	९	७
२६	२४	८	१५	८	६	२१	२०	२०	२१	९	१४
२०	५७	५८	३९	१५	२०	२३	१९	१९	५६	२९	१३
२३	५०	४३	१६	११	२१	३	४९	४९	५४	१७	५
५७	०४	२३	१	७	३१	४	३	३	२	१	१
१४	४०	३७	५९	३४	१०	३४	११	११	५	३५	५
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
पुन.	पुन.	स्वाती	पुष्य	आश्लि.	मघा	भरणी	आश्ले.	श्रवण	श्रवण	उत्त.	अनु.

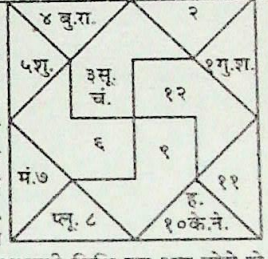

धर्मसन प्रकाश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन्न प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-९ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. १४ से २८ जुलाई सन् १९९९ ई., रा. मिति २३ आषाढ़ से ६ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तरगोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

ता.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र				स्टैं.टा.		योग				स्टैं.टा.		करण				स्टैं.टा.		दिन मान घटी	पल	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक आषाढ़	प्र. मु. अं. रा.उ.अ.	श्रावण	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	गति: क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं	मि	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।
मि	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि																								
०	१	बु	५८	४७	२९	०८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा क्षय: A रथयात्रा जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)
२३	२	बु	५३	०२	२६	५१	भु	२९	४७	१७	३३	वज्र	५१	५२	२६	२३	बा	२५	४२	१५	५५	३४	११	५	३८	१९	१८	३०	२९	14	कर्क	२	२७	१७	३७	२७	८	०९	२०	३९	चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्घ, मनोरथ द्वितीया व्रत (बंगाल में), श्री जगदीश A
२४	३	बु	४८	५२	२५	१२	तै	२६	५०	१६	२२	सि	४५	५२	२३	५९	तै	२०	४२	१३	५५	३४	८	५	३८	१९	१८	३१	र.उ.	15	सिं.१६।५२	२	२८	१४	५०	१४	८	४९	२१	१९	रवि उस्सानी मु. मास ४ प्रारंभ
२५	४	भृ	४६	४७	२४	१२	व	२५	३७	१५	५४	व्य	४१	१०	२२	०७	व	१७	१७	१२	३४	३४	६	५	३९	१९	१८	आ.	२	16	सिंह	२	२९	१२	०४	१४	९	२८	२१	५८	भद्रा १२।३४ से २४।१२ तक, कर्क में सूर्य प्रवेश २५।३५, संक्रांति मु. ३०, B
२६	५	श	४५	४७	२३	५८	शत	२६	१०	१६	०७	व	३८	००	२०	५१	व	१५	५०	११	५९	३४	४	५	३९	१९	१७	२	३	17	कं.२२।१८	३	००	०९	१८	१४	१०	०८	२२	३८	संक्रांति पुण्यकाल पूर्वान्ह में, मनसापूजा प्रारंभ (बंगाल में), स्कन्द पंचमी, C
२७	६	र	४७	०२	२४	२२	प्रो	२८	३७	१७	०७	प	३६	२०	२०	१२	कौ	१६	०७	१२	०७	३४	२	५	४०	१९	१७	३	४	18	कन्या	३	०१	०६	३२	१४	१०	४८	२३	१८	बुध पश्चिम में अस्त १५।१७, कुमार षष्ठी व्रत, श्री महावीर गर्भ कल्याणक
२८	७	चं	४९	५७	२५	२९	ह	३२	४७	१८	४७	ति	३६	०५	२०	०६	ग	१८	२०	१३	००	३४	०	५	४०	१९	१७	४	५	19	कन्या	३	०२	०३	४६	१५	११	२८	२३	५८	भद्रा १४।३० तक, पुष्य में सूर्य प्रवेश १३।२७, जैन अट्ठाई प्रारम्भ, श्री दुर्गाष्टमी,E
२९	८	बं	५४	२०	२०	२५	वि	३८	२२	२१	०२	सि	३७	००	२०	२९	वि	२२	०२	१४	३०	३३	५८	५	४१	१९	१६	५	६	20	तु.७।४८	३	०३	०१	०१	१६	१२	०८	२४	३८	भड़डली नवमी, मेला शरीक भवानी (कश्मीर), कन्दर्प नवमी, शूद्रादि ९
३०	९	बु	५५	४०	२२	३४	भा	४४	५७	२३	४१	मा	३८	३५	२१	०८	बा	२७	००	१६	३०	३३	५६	५	४२	१९	१६	६	७	21	तुला	३	०३	५८	१७	१६	१२	४८	१	१८	मन्वादि, बहुधा यात्रा, पुनर्यात्रा, उत्त्यारथ (उड़ीसा), गिरिजा पूजा दशमी
३१	१०	बु	६०	००	-	-	वि	५२	१०	२६	३४	शुभ	४०	५०	२२	०२	तै	३२	४२	१८	४७	३३	५३	५	४२	१९	१५	७	८	22	वृ.१९।५१	३	०४	५५	३३	१७	१३	२८	१	५८	भद्रा २१।०५ से, सायन सिंह में सूर्य प्रवेश १२।१४, श्री लोकमान्य तिलक जयती,F
आ.	१०	शु	५	३२	७	५६	ब्रह्म	५१	३२	२९	३२	शु	४३	१२	२३	००	ग	५	३२	७	५६	३३	५०	५	४३	१९	१५	८	९	23	वृश्चिक	३	०५	५२	५०	१७	१४	०८	२	३८	भद्रा १०।१६ तक, देवशयनी एकादशी व्रत (सबका), चातुर्मास्य व्रत नियमादि G
२	११	श	११	२२	१०	१६	ऐं	६०	००	-	-	ब	४५	२२	२३	५२	वि	११	२२	१०	१६	३३	४८	५	४३	१९	१४	९	१०	24	वृश्चिक	३	०६	५०	०७	१८	१४	४८	१३	१८	प्रदोष व्रत, हरिवासराऽभाव, फतीहा यजद हुम (ग्यारहवीं शरीफ)
३	१२	र	१६	५५	१२	३०	ऐं	६	३२	८	२१	ध्रु	४७	०२	२४	३३	बा	१६	५५	१२	३०	३३	४५	५	४४	१९	१४	१०	११	25	ध.८।५१	३	०७	४७	२५	१९	१५	२८	३	५८	वैधृति पुण्य, जयापार्वती व्रत शुरू
४	१३	चं	२१	३०	१४	२३	भु	१२	५०	१०	५२	वै	४८	००	२४	५६	तै	२१	३७	१४	२३	३३	४२	५	४४	१९	१३	११	१२	26	धनु	३	०८	४४	४४	१९	१६	०८	४	३८	भद्रा १५।५२ से २८।२३ तक, चौमासी चौदश (जैन, मेला ज्वालामुखी H
५	१४	मं	२५	१७	१५	५२	शुभ	१८	१२	१३	०२	वि	४८	१५	२५	०३	व	२५	१७	१५	५२	३३	३८	५	४५	१९	१३	१२	१३	27	म.१९।५२	३	०९	४२	०३	१९	१६	४८	५	१८	आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, मेला नैमिषारण्य, सन्यासियों का J
६	१५	बु	२७	५०	१६	५३	ब्रह्म	२२	३५	१४	४७	ध्रु	४७	३०	२४	४५	व	२७	५०	१६	५३	३३	३५	५	४५	१९	१२	१३	१४	28	मकर	३	१०	३९	२२	२०	१७	२८	५	५८	

B साम्पार्य, विनायक ४ व्रत, व्यतिपात पुण्य, सौर श्रावण मासारम्भ C हेरा पंचमी (उड़ीसा) D विवस्वत सप्तमी, सूर्य पूजा Eखरसी पूजा (त्रिपुरा) F राष्ट्रीय श्रावण मासारम्भ Gप्रारंभ, जिनदत्त सूरी जयंती (जैन), अजमेर दादा मेला शुरू H (काश्मीर), बाबु परीक्षा सायं, सत्यव्रत, चान्द्र पूर्णिमा व्रत Jचातुर्मास्य नियमादि प्रा., मन्वादि, पूर्वी भारते असम नागालैण्ड राज्ये ग्रस्तोदय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (अन्य राज्यों में ग्रहण नहीं दिखेगा)

आषाढ़ शु. ८ मंगल, प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २० जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ह.	ने.	प्लू.
३	५	६	३	०	४	०	३	९	९	९	७
३	२८	११	१३	९	९	२१	१९	१९	२१	९	१४
१	४८	५२	४४	५	२६	५३	५७	५७	४१	१८	६
१	२४	१६	१०	२	१७	३३	३४	३४	४८	५	१
५७	०८	२६	३४	६	१९	४	३	३	२	१	०
१६	३०	११	४	३०	५०	१	११	११	१५	३७	५४
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
पुष्य	उत्रा.	स्वाती	पुष्य	अश्वि.	मघा	भरणी	अश्ले.	श्रवण	श्रवण	उत्रा.	अनु.

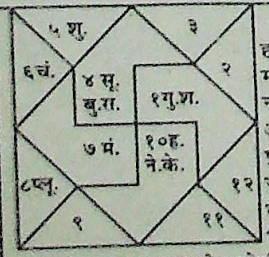

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

ता. २८ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ बुध, प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ह.	ने.	प्लू.
३	९	६	३	०	४	०	३	९	९	९	७
१०	५	१५	८	९	११	२२	१९	१९	२१	९	१३
३९	९	३२	१९	५२	१०	२३	३२	३२	२३	५	५९
२२	१८	२४	४१	३५	५८	२४	८	८	२८	३	३५
५७	५४	२९	३९	५	३	३	३	३	२	१	०
२०	०२	००	३९	१२	३८	१७	११	११	२०	३७	४१
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
पुष्य	उत्रा.	स्वाती	पुष्य	अश्वि.	मघा	भरणी	अश्ले.	श्रवण	श्रवण	उत्रा.	अनु.

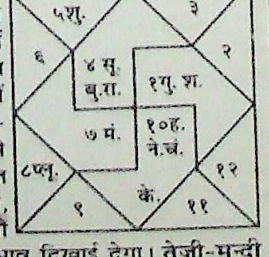

इस पक्ष के प्रारम्भ से बुध वक्री तथा ता. १७ से हर्षल-नेपच्यून सहित नौ ग्रहों का केन्द्र योग जिसमें मंगल-शनि का प्रतियोग भी सम्मिलित है, अच्छा नहीं कहा जा सकता। यह विश्व के अनेक भागों में अशांति का वातावरण तैयार करेगा। कहीं प्रकृति-प्रकोप, बम विस्फोट, अनावृष्टि, अतिवृष्टि से जनमानस को पीड़ित करेगा। किसी महान व्यक्ति का अवसान या सैन्य संघर्ष से अशांति होगी। मलेरिया, निमोनियादि का प्रकोप बढ़ेगा। विश्व बाजार की व्यापारिक दशा कमजोर होती जायेगी। बड़े राष्ट्रों में आपसी तालमेल का अभाव दिखाई देगा। **तेजी-मन्दी विचार**— प्रतिपदा तिथि का क्षय तथा १५ मुहूर्ती चन्द्रदर्शन व्यापारिक वस्तुओं के साथ धान्य, जौ, गेहूं, चना में तेजी की चाल देगा। ता. १८ से सोना, चांदी, तांबा, पीतल में भी तेजी की चाल निकलेगी। पक्षान्त में रुई, अलसी, घी, तेल, गुड़, खांड में अच्छी तेजी होगी। कर्क संक्रांति शुक्रवार को लगने से प्रजा में सुख-शांति का संचार होगा तथा व्यापारी लोग विदेशों से अच्छा लाभ अर्जित करेंगे। **आकाश लक्षण**— इस पक्षारम्भ में उत्तम वर्षा के योग हैं। पूर्वी भारत के साथ-साथ उ.प्र., हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, म.प्र. में वायु के साथ व्यापक वर्षा होगी। राजस्थान, गुजरात के कुछ भागों में साधारण वर्षा के ही योग हैं। **शकुन विचार**— आषाढ़ सुदी पंचमी को यदि पश्चिम दिशा की हवा चले, बादल बिजली वर्षा के पश्चात् इन्द्रधनुष दिखाई पड़े तो धान्य का संग्रह करने वाले व्यापारियों को आगे अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण कृष्ण पक्ष-१० श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. २९ जुलाई से ११ अग. सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति ७ से २० श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तरगोले, वर्षा ऋतु।

| रा. | तिथि | | |

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण शुक्ल पक्ष-११ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. १२ से २६ अगस्त सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति २१ श्रावण से ४ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-शरद ऋतु।

ता.	तिथि		स्टै.टा.	नक्षत्र		स्टै.टा.	योग		स्टै.टा.	करण		स्टै.टा.	दिन मान घं.	दिन मान मि.	सूर्योदयास्त उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार	भा.स्टै.टा. रा.	घं.	मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	गति वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।
२१	१	शु	२२	७७	१५	०१	व	११	२२	१०	२७	व	२२	४७	१५	०१	३२	४६	५	५४	१९	०१	२८	२९	१२	सिंह	३	२५	०१	०१	३६	७	२९	१९	४६	नक्त व्रत प्रारंभ, दक्षिण भारते चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ
२२	२	शु	२०	१२	१३	५२	शुभ	४८	५५	२५	२८	ए	६	२५	८	२८	बी	२०	१२	१३	५९	३२	४३	५	५४	१९	००	२९	३०	१३	सिंह	३	२५	५८	३६	३६	७	४६	२०	२४	चन्द्रदर्शन उत्तर भारते मु. ३०, जीवंतिका पूजन, सिंधारा
२३	३	श	१९	०२	१३	३२	शुक्ल	५०	२०	२६	०३	शि	२	३०	६	५५	व	१९	०२	१३	३२	३२	४०	५	५५	१८	५९	३०	व	३	कं. ७।३१	३	२६	५६	१२	३७	८	४६	२१	१६	भद्रा २५।३९ से, मधुश्रवा तीज, हरि तृतीया, हरियाली तीज, सुवर्ण गौरी व्रत, A
२४	४	र	१९	३७	१३	४६	ई	५३	२५	२७	१७	शि	५८	०३	५	२६	बि	१९	३७	१३	४६	३२	३६	५	५५	१८	५८	३१	२	१५	कन्या	३	२७	५३	४९	३८	९	३९	२२	०९	भद्रा १३।४६ तक, विनायक ४ व्रत, वरद् चतुर्थी, श्रवण तप (जैन), B
२५	५	चं	२१	५०	१४	४०	बि	५८	०३	२९	०९	शुभ	५९	००	२९	३२	वा	२१	५०	१४	४०	३२	३२	५	५६	१८	५७	३२	३	१६	तु. १६।००	३	२८	५१	२७	४०	१०	१६	२२	४६	सोमवती नाग पंचमी देशाचारे, तक्षक भिति चित्रित नागपूजन, श्रावण सोमवार C
२६	६	मं	२५	३५	१६	१०	शुक्ल	६०	००	-	-	शु	६०	००	-	-	तै	२५	३५	१६	१०	३२	२८	५	५६	१८	५६	भा	४	१७	तुला	३	२९	७७	०७	४१	११	०१	२३	३१	मघा सिंह में सूर्य प्रवेश १०।००, संक्रांति मु. १५, मंगला गौरी पूजन, सौर D
२७	७	बु	२०	३२	१८	१०	ब	४	०२	७	३४	शु	०	०७	६	००	व	३	३२	१८	१०	३२	२४	५	५७	१८	५५	२	५	१८	वृ. २७।८८	४	००	४६	४८	४२	११	४६	२४	१६	भद्रा १८।१० से, गो. तुलसीदास जयंती, शीतला सप्तमी पूजन (सिन्ध में)
२८	८	गु	३६	१०	२०	२६	बि	१०	५२	१०	१९	व	१	५०	६	४२	बि	३	१७	७	१७	३२	२०	५	५८	१८	५८	३	६	१९	वृश्चिक	४	०१	४४	३०	४३	१२	३१	१	०१	भद्रा ७।१७ तक, मार्गी प्लूटो ६।१०, श्री दुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी व नयना E
२९	९	शु	४२	१५	२२	५२	शुक्ल	१८	१२	१३	१५	ई	४	१०	७	३८	वा	९	१२	९	३९	३२	१६	५	५८	१८	५३	४	७	२०	वृश्चिक	४	०२	४२	१३	४५	१३	१६	१	४६	अश्लेषा में बुध प्रवेश २६।५२, जीवंतिका पूजन E देवो (हि.प्र.), दूर्वा ८ व्रत
३०	१०	श	४०	४२	२५	०४	मं	२५	२२	१६	०८	वै	६	२२	८	३२	वै	१४	५८	११	५८	३२	१२	५	५९	१८	५२	५	८	२१	ध. १६।४८	४	०३	३९	५८	४६	१४	०१	२	३१	अश्वत्थ मारुती पूजन, वैपृति पुण्य F यात्रारंभः (पूर्वाह्न व प्रदोष)
३१	११	र	५२	३२	२७	००	बु	३२	००	१८	४०	बि	८	१५	९	१७	ब	२०	२०	१४	०७	३२	०८	५	५९	१८	५१	६	९	२२	धनु	४	०४	३७	४४	४८	१४	४६	३	१६	भद्रा १४।०७ से २७।०० तक, पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णवानां, झूलन F
५१	१२	चं	५६	०७	२९	२३	शुक्ल	३७	२७	२०	५९	शो	९	१७	९	४३	ब	२४	३०	१५	४८	३२	०४	६	००	१८	५०	७	१०	२३	म. २७।८८	४	०५	३५	३२	४९	१५	३१	४	०१	वृश्चिक में मंगल प्रवेश २२।४८, पुत्रदा एकादशी व्रत निम्बार्कानां, श्रावण G
२	१३	मं	५८	२७	२९	२३	शुक्ल	४१	३७	२२	३९	शो	९	३०	९	४८	छी	२७	२७	१६	५०	३२	००	६	०	१८	४९	८	११	२४	मकर	४	०६	३३	२१	५१	१६	१६	४	४६	भीम प्रदोष व्रत, मंगला गौरी पूजन, प्रथम ओणम दिन (केरल)
३	१४	बु	५९	००	२९	३७	ब	४४	२२	२३	४८	गं	८	२५	९	२३	ब	२८	५०	१७	३३	३१	५६	६	१	१८	४८	९	१२	२५	मकर	४	०७	३१	१२	५२	१७	०१	५	३१	भद्रा २९।३७ से, वक्री गुरु १०।३५, वक्री अश्लेषा ४ कर्क में शुक्र प्रवेश H
४	१५	गु	५८	०७	२९	१६	व	४०	३५	२४	१५	ब	६	१०	८	२९	बि	२८	४५	१७	३१	३१	५२	६	१	१८	४७	१०	१३	२६	कुं. १२।०५	४	०८	२९	०४	५४	१७	४८	६	१८	भद्रा १७।३१ तक, बुध पूर्व में अस्त ९।००, शुक्र पूर्व में J [शुक्र उदय]

A अश्वत्थ मारुती पूजन, जमादि-उल-अव्वल मु. मा. ५ प्रा. B भारतीय स्वतंत्रता दिवस C व्रत, अमरनाथ यात्रा प्रारंभ, कल्की जयंती D भाद्रपद मासारम्भ, वर्ण शृगाल षष्ठी, मनसा पूजा समाप्त (बंगाल में) G सोमवार व्रत, रा. भाद्रपद मासारम्भ, सायन कन्या में सूर्य प्रवेश १९।२१, श्री विष्णु पवित्रारोपण, दधि त्याग व्रत प्रारम्भ, शरद् ऋतु प्रारम्भ H २२।४९, वीरू ओणम दिवस (केरल)

श्रावण शु. ८ गुरु, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १९ अगस्त

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	६	३	०	४	०	३	९	९	९	७
१	०	२७	१३	११	४	२३	१८	१८	२०	८	२३
०४	५५	१४	०३	५	५	१३	२२	२२	३१	३०	५१
३०	२९	२३	५३	२५	१६	४०	११	११	२०	३१	५२
५७	७३	३४	८५	१	३७	१	३	३	३	१	०
४३	१८	४३	३५	७	०९	८	११	११	२०	२७	१
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
८	४	८	८	४	८	८	८	८	४	४	४
मघा	उत्ति.	विशा.	अनुरा.	ज्येष्ठा	उत्ति.	पूर्वा.	उत्ति.	श्रवण	धनि.	उत्ति.	उत्ति.

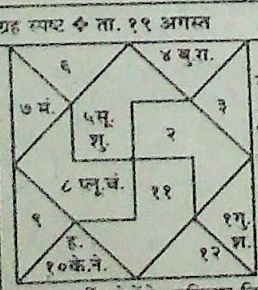

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

इस श्रावण मास में शुक्र का अस्त और उदय दोनों राक्ष गण में हो रहे हैं। जिसका फल प्राचीन आचार्यों ने अच्छा नहीं बताया है। राक्षस गण में शुक्र अस्त का फल—

"शुक्रास्ते राक्षस गणे हिन्दुदेशेषु विग्रहः। खर्प्परे राजयुद्धानि मिश्र-देशेऽन्न विग्रहः॥" हिन्दू देशों में भय, विग्रह, अराजकता एवं युद्धादि का खतरा बढ़ेगा। मिश्र देश में अन्न का उत्पादन कम होगा। मारवाड़ देश व सिन्धु प्रदेश में दुर्भिक्ष का भय व्यापेगा। साम्प्रदायिक दंगे फसाद बढ़ेंगे तथा असमाजिक तत्व अव्यवस्था फैलाने में कसर नहीं छोड़ेंगे। पश्चिम दिशा में शुक्र का अस्त वर्षा में सहायक बनेगा। **"अस्ते च भृगुजे वृष्टिः॥"** किन्तु कुछ स्थानों पर अतिवृष्टि होने से जानमाल का नुकसान होगा। **तेजी-मन्दी विचार**— पक्ष के प्रारम्भ में रुई, कपास, सूत, घृत, तेल, सरसों में घटाबढ़ी तथा सोना, चांदी, गुड़, खांड में मंदी का झटका आवेगा। ता. १७ अगस्त से गेहूं, जौ, चावल, चना, उड़द, मूंग में तेजी होकर मंदी होगी। पक्षान्त में लाल रंग की वस्तुओं में तेजी होगी। **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में पूर्वोत्तर भारत, आसाम, बिहार, आन्ध्रप्रदेश के साथ-साथ राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश के अनेक भागों में तेज हवाओं के साथ वर्षा होगी। कुछ स्थानों पर बाढ़ प्रकोप से जनजीवन प्रभावित होगा। **शकुन विचार**— श्रावण शुक्ल ५ व ६ को लगातार दक्षिण-पश्चिम की हवा तथा वर्षा होती रहे तो धान्यादि संग्रह करने वालों को आगे लाभ होगा। सुदी पूर्णिमा को चन्द्रमा बादलों में उगे तथा वर्षा हो तो सुभिक्ष का संचार होगा।

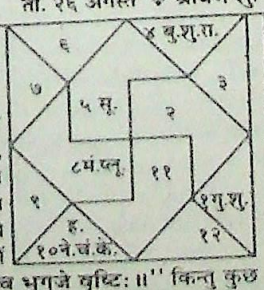

ता. २६ अगस्त ❖ श्रावण शु. १५ गुरु, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	९	७	३	०	३	०	३	९	९	९	७
८	२६	१	२५	११	२९	२३	१७	१७	२०	८	१३
२९	२५	२१	२१	९	५०	१९	५१	५९	१५	२०	५२
४	१९	३९	१७	३	२३	२१	५६	५६	१०	४०	४१
५७	७७	३६	१११	०	३३	०	३	३	२	१	०
५४	३१	९	१६	१७	१८	२४	११	११	१४	२०	१५
मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
८	४	४	८	४	४	८	८	८	४	४	४
मघा	उत्ति.	विशा.	अनुरा.	अनुरा.	ज्येष्ठा	पूर्वा.	उत्ति.	श्रवण	उत्ति.	उत्ति.	उत्ति.

J उदय २४।०१, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्य, श्रावण उपाकर्म, रक्षाबन्धन भद्रा पश्चात, झूलन यात्रा समाप्त (पूर्वाह्न व प्रदोष दोनों) बलभद्र पूजा (उड़ीसा), नारोली पूर्णिमा, अमरनाथ दर्शन पूजा (कश्मीर), संस्कृत दिवस, श्री गायत्री जयंती, पंचक प्रा. १२।०५ से

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१२ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. २७ अगस्त से ९ सितम्बर सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १८ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तरगोले, वर्षा ऋतु।

ता.	तिथि		स्टै.टा.	नक्षत्र		स्टै.टा.	योग		स्टै.टा.	करण		स्टै.टा.	दिन मान घं	मि	उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र. मृ. अं	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. अं. क. वि.	ग. ति. क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।
५	१	शु ५६	०२	२८	२७	शत	४५	२७	२४	१३	भद्रा	२ ५८	७ ३०	११ २९	६	०२	१८	४६	११ १४	27 कुंभ	४ ०९ २६ ५८	६	१९ ३५	७ ०५	भरणी ४ में शनि प्रवेश २५।३०, जीवंतिका पूजन
६	२	श ५७	४५	२७	०८	पूभा	४४	१७	२३	४५	ब	५३ १०	२७	१८	६	०२	१८	४५	१२ १५	28 मी. १७।५४	४ १० २४ ५३	५६	२० ३०	८ ००	मघा सिंह में बुध प्रवेश १६।४८, अशून्य शयन २ व्रत, अश्वत्थ मारुती पूजन
७	३	र ४८	३२	२५	२८	उभा	४२	०२	२२	५२	शूल	४७ ०२	२४	२२	६	०३	१८	४४	१३ १६	29 मीन	४ ११ २२ ४२	५८	२१ १५	८ ४५	भद्रा १४।२१ से २५।२८ तक, अनुराधा में मंगल प्रवेश ११।३५, कजली A
८	४	चं ४२	३२	२३	३२	रे	३९	०७	२१	४२	ब	४० २५	२२	१३	६	०३	१८	४३	१४ १७	30 मे. २१।४२	४ १२ २० ४७	०	२२ ०५	९ ३५	वक्री शनि ११।३०, पू.फा. में सूर्य प्रवेश २९।५९, कृष्ण चतुर्थी व्रत, बहुला ४ व्रत B
९	५	मं ३८	२२	२१	२५	अ	३५	४२	२०	२१	ब	३३ २७	१९	२७	कौ	११	२१	१०	२९	31 मेष	४ १३ १८ ४७	१	२२ ५५	१० २५	रक्षा पंचमी (उड़ीसा), श्री माधव देव तिथि (असम), चन्द्र षष्ठी व्रत
१०	६	बु ३२	४७	१९	११	भ	३२	०५	१८	५४	शु	२६ १५	१६	३४	ग	५	३७	८	१९	S1 वृ. २।३१	४ १४ १६ ४८	३	२३ ४५	११ १५	भद्रा १९।११ से ३०।०५ तक, वक्री भरणी ३ में शनि प्रवेश १२।१०, C
११	७	गु २७	०७	१६	५६	कृ	२८	२०	१७	२५	ब्बा	१८ ५०	१३	३७	ब	२७	०७	१६	५६	2 वृष	४ १५ १४ ५१	५	२४ ३५	१२ ०५	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मा., शौष मेला दनकौर (उ.प्र.), संत ज्ञानेश्वर ज., कालाष्टमी
१२	८	शु २१	२७	१४	४०	गं	२४	३५	१५	५५	ह	११ ३०	१०	४१	कौ	२१	२७	१४	४०	3 मि. १७।१४	४ १६ १२ ५६	६	१ २५	१२ ५५	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव, जीवंतिका पूजन
१३	९	श १५	५७	१२	२९	पु	२१	०२	१४	३१	बव	४ १७ ३	४९ २२	०३	ग	१५	५७	१२	२९	4 मिथुन	४ १७ ११ ०२	८	२ १५	१३ ४५	भद्रा २३।२७ से, पू.फा. में बुध प्रवेश १२।१६, गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव, D
१४	१०	र १०	५०	१०	२६	आ	२७	५२	१३	१५	ब	५७ ४०	२६	२२	वि	१०	५०	१०	२६	5 मिथुन	४ १८ ०९ १०	१०	३ ०५	१४ ३५	भद्रा १०।२६ तक, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जयंती, शिक्षक दिवस, व्यतिपात यु.
१५	११	चं ६	०२	८	३२	पुन	१५	००	१२	०७	ब	४४ २०	२३	५१	बा	६	०२	८	३२	6 क. ६।६२	४ १९ ०७ २०	१२	३ ५५	१५ २५	अजा एकादशी व्रत सबका, जैन पर्युषण पर्वारम्भ (चतुर्थी पक्ष)
१६	१२	मं १	४५	६	४०	पु	२२	४५	२१	१३	ब	३८ ३५	२१	३३	तै	१	४५	६	४९	7 कर्क	४ २० ०५ ३२	१३	४ ४५	१६ १५	भद्रा २९।२३ से, भौम प्रदोष व्रत, जैन पर्युषण पर्वारम्भ (पंचमी पक्ष), E
०	१३	बु ५८	१०	२९	२३	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	0 ०००	० ० ० ०	०	० ०	० ०	त्रयोदशी क्षय:
१७	१४	बृ ५५	२०	२८	१६	श्ले	११	०२	१०	३३	शि	३३ २०	१९	२८	वि	२६	३५	१६	४६	8 सिं. १०।३३	४ २१ ०३ ४५	१५	५ ३५	१७ ०५	भद्रा १६।४६ तक, अघोरा १४ व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, विश्व साक्षरता दिवस
१८	३०	गु ५३	३२	२७	३३	ध	१०	१५	१०	१४	सि	२८ ५२	१७	४१	च	२४	१५	१५	५०	9 सिंह	४ २२ ०२ ००	१७	६ २५	१७ ५५	देवपितृकार्याऽमावस्या, पिठौरी ३०, कुशोत्पाटनी अमा. (ॐ हूँ फट् स्वाहा F

A तृतीया व्रत मातृ तीज, अगस्त्य (तारा) उदय २६।४० B पंचक समाप्त २१।४२ C वक्री श्रवण ३ में हर्षल प्रवेश २९।३०, हलषष्ठी, ललही छठ, पुत्रार्थी व्रत, सितं. मास ९ ता. ३० D गोगा नवमी, अश्वत्थ मारुती पूजन E कैलाश यात्रा २ दिन, वत्स द्वादशी, बोछ बारस F मंत्र से कुशोत्पाटन), मन्वादि सती पूजन, मेला मुथरेशाह दिल्ली, अग्रजवंशे कल्पसूत्र पाठ जैन, वृषभोत्सव

भाद्रपद कृ. ८ शुक्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ सितम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	७	४	०	३	०	३	९	९	९	७
१६	१७	६	१०	१२	२६	२३	१७	१७	१९	८	१३
१२	९	२६	४८	०१	१२	१९	३४	३४	५७	१०	५५
५६	६	०	५३	५	२३	२३	३०	३०	५७	२९	३१
५८	८१	३७	०७	२	१७	०	३	३	२	१	०
६	०९	३८	५८	५४	५९	२९	११	११	४	११	३२
मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
पूफा	मूल	पूषा	अभि.	अश्ले	भरणी	अश्ले	श्रवण	श्रवण	उ.षा.	अनु	

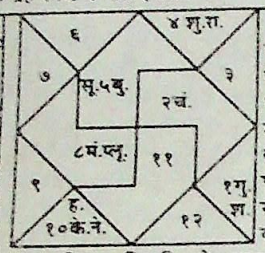

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

ता. ९ सितम्बर ❖ भाद्रपद कृ. ३० गुरु, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

इस पक्ष में मंगल का गुरु-शनि से सम सप्तम योग समाप्त हो गया है किन्तु संघट्ट चक्र में सम्मुख वेध बनने से संसार के अनेक भागों में प्रकृति-प्रकोप, भय विग्रह, बम विस्फोट आदि से प्रजा पीड़ित रहेगी। शासकों में मतभेद शासन व्यवस्था में अस्थिरता पैदा करेंगे। तिथि चतुर्थी को शनि वक्री होने से अशुभ फलों में वृद्धि होगी। यथा—"शनि वक्रे च दुर्भिक्षं रुण्डमुण्डा च मेदिनी।" अकल्पित घटनाओं के कारण जनता में भय का वातावरण बनेगा। महामारी, अनावृष्टि, अतिवृष्टि से अकाल की स्थिति व्यापेगी। पिछड़े वर्ग और अल्पसंख्यकों को लाभ अधिक दिये जाने के कारण बेरोजगारों में असन्तोष व्याप्त होगा। उद्योग धन्धों के विस्तार की योजना भी कमजोर पड़ती दिखाई देगी। **तेजी-मन्दी विचार**—पक्षारम्भ में सिंह का बुध आने से रुई, सूत, सोना, चांदी में तेजी तथा धान्यादि के भाव यथावत् रहेंगे। पक्ष मध्य में बाजार का रुख जोरदार तेजी का बनेगा। वायदा बाजार में उत्तम चांस प्राप्त होंगे। पक्षान्त में मन्दी का झटका आयेगा अतः विचारपूर्वक काम करना श्रेयष्कर रहेगा। **आकाश लक्षण**—पर्वतीय प्रदेश तथा पूर्व में अच्छी वर्षा होगी। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली में एक दो स्थानों पर तथा केरल, आन्ध्रप्रदेश में अधिकांश भागों पर वर्षा या बूंदाबांटी होगी। कुछ स्थानों पर वायु प्रकोप बढ़ेगा। **शकुन विचार**—"भादव बदी दोयज दिनां जो ना दिखे चन्द। धान्य समृद्धि पशु बढ़े, प्रजा में हो आनन्द॥" भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा व द्वितीया को चन्द्रमा बादलों की ओट में छिपा रहे तो सुभिक्ष का संचार तथा धन-धान्य की वृद्धि होगी।

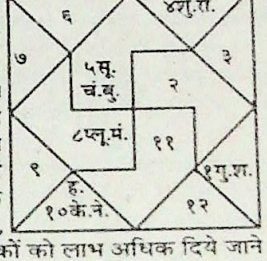

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	४	७	४	०	३	०	३	९	९	९	७
२२	१०	१०	२२	१०	२५	२३	१७	१७	१९	८	१३
२	४०	४	२५	४६	०	१४	१५	१५	४६	३	५९
०	१०	२४	५९	५०	७	५६	२५	२५	२	४५	१९
५८	७१	३८	११२	३	३	१	३	३	१	१	०
१७	४७	३७	४७	३	३७	९	११	११	५४	३	४४
मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
पूफा.	मघा	आ.	पूफा.	अभि.	अश्ले.	भरणी	अश्ले.	श्रवण	श्रवण	उ.षा.	अनु.

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसूत्र प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-१३ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

दिन मास	स्टै.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	उदय मि	अस्त घं	अस्त मि	दिनांक प्र. मु. अं. भाद्रपद	ज.उ.ल.	सितम्बर	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	ग तिः क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.
३०	५२	६	०९	१८	३०	२५	२८	10 कं. १६।६६	४	२३	००	१७	१८	६	०७	१९	१३
३०	४८	६	०९	१८	२०	२६	२९	11 कन्या	४	२३	५८	३५	२०	७	२७	१९	५७
३०	४४	६	१०	१८	२७	२७	ज.उ.	12 तु. २४।४४	४	२४	५६	५५	२२	८	२१	२०	४१
३०	४०	६	१०	१८	२६	२८	२	13 तुला	४	२५	५५	१७	२४	८	५५	२१	२५
३०	३६	६	११	१८	२५	२९	३	14 तुला	४	२६	५३	४१	२६	९	३९	२२	०९
३०	३१	६	११	१८	२४	३०	४	15 सू. ११।४४	४	२७	५२	०७	२८	१०	२३	२२	५३
३०	२७	६	१२	१८	२३	३१	५	16 वृश्चिक	४	२८	५०	३५	२९	११	०७	२३	३७
३०	२३	६	१२	१८	२१	आ.	६	17 ध. २४।१९	४	२९	४९	०४	३१	११	५१	२४	२१
३०	१८	६	१३	१८	२०	२	७	18 धनु	५	००	४७	३५	३४	१२	३५	१	०५
३०	१४	६	१३	१८	१९	३	८	19 धनु	५	०१	४६	०९	३५	१३	१९	१	४९
३०	१०	६	१४	१८	१८	४	९	20 म. १२।१०	५	०२	४४	४४	३७	१४	०३	२	३३
३०	०५	६	१४	१८	१७	५	१०	21 मकर	५	०३	४३	२१	३९	१४	४७	३	१७
३०	०१	६	१५	१८	१५	६	११	22 कुं. २१।०३	५	०४	४२	००	४१	१५	३१	४	०१
२९	५७	६	१५	१८	१४	७	१२	23 कुम्भ	५	०५	४०	४१	४३	१६	१५	४	४५
२९	५३	६	१६	१८	१३	८	१३	24 मी. २६।३०	५	०६	३९	२४	४५	१६	५९	५	२९
२९	४९	६	१६	१८	१२	९	१४	25 मीन	५	०७	३८	०९	४७	१७	४५	६	१५

ता. १० से २५ सितम्बर सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति १९ भाद्रपद से ३ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिण गोले, शरद् ऋतु

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।

तिथि					स्टै.टा.		नक्षत्र				स्टै.टा.		योग				स्टै.टा.		करण				स्टै.टा.	
ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि				
१	शु	५२	५०	२७	१७	कृ	१०	२५	१०	१९	सा	२५	१२	१६	१४	किं	२३	००	१५	२१	३०	५२	६	०९
२	श	५३	२७	२७	३२	कृ	११	४७	१०	५२	शु	२२	३५	१५	११	बा	२२	५७	१५	२०	३०	४८	६	०९
३	र	५५	३०	२८	२२	रो	१४	३२	११	५९	गं	२०	५७	१४	३३	तै	२४	१७	१५	५३	३०	४४	६	१०
४	चं	५८	५७	२९	०५	मृ	१८	४०	१३	३८	ध्रु	२०	३०	१४	२२	व	२७	०५	१७	००	३०	४०	६	१०
५	मं	६०	००	-	-	मृ	२४	०२	१५	४८	ए	२१	०२	१४	३६	ब	३१	०५	१८	३७	३०	३६	६	११
६	बु	३	०५	७	४१	मृ	३०	३५	१८	२५	वै	२२	३०	१५	११	बा	३	४५	७	४१	३०	३१	६	११
७	गु	९	२०	९	५६	मृ	३७	४५	२१	१८	वि	२४	३२	१६	०१	तै	९	२०	०	५६	३०	२७	६	१२
८	शु	१५	२२	१२	२१	आ	४५	१७	२४	१९	प्री	२६	५५	१६	५८	व	१५	२२	१२	२१	३०	२३	६	१२
९	श	२१	२५	१४	४७	पु	५२	२०	२७	०९	आ	२९	०७	१७	५२	ब	२१	२५	१४	४७	३०	१८	६	१३
१०	र	२६	४२	१६	५४	पु	५८	३५	२९	३९	सौ	३०	४०	१८	२९	कौ	२६	४२	१६	५४	३०	१४	६	१३
११	चं	३०	५०	१८	३४	पु	६०	००	-	-	शो	३१	२०	१८	४६	ग	३०	५०	१८	३४	३०	१०	६	१४
१२	मं	३३	१५	१९	३२	पु	३	२०	७	३४	अ	३०	४०	१८	३०	व	२	१७	७	०९	३०	०५	६	१४
१३	बु	३३	५७	१९	५०	श्र	६	२०	८	४७	सु	२८	३५	१७	४१	ब	३	५२	७	४८	३०	०१	६	१५
१४	गु	३२	४२	१९	२०	श्र	७	३०	९	१८	धृ	२५	०५	१६	१७	कौ	३	३०	७	३९	२९	५७	६	१५
१५	शु	२९	४०	१८	०८	श्र	७	००	९	०४	शु	२०	०५	१४	१८	ग	१	१७	६	४७	२९	५३	६	१६
१६	श	२५	१०	१६	२०	धनि	४	५५	८	१४	गं	१३	५५	११	५०	ब	२५	१०	१६	२०	२९	४९	६	१६

चन्द्रोदयास्त दिल्ली																	
१८	६	४७	१९	१३	नक्त व्रत समाप्त, वीर जन्मोत्सव (जैन) F अदु:खनवमी व्रत, भागवत सप्ताह प्रा.												
१९	७	२७	१९	५७	उ.फा. में बुध प्रवेश ११।५६, मार्गी शुक्र ७।१३, चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ, A												
२०	८	२१	२०	४१	हरितालिका ३ व्रत, गौरी तृतीया व्रत, मन्वादि, वराह जयंती, साम श्रावणी, B												
२१	९	५५	२१	२५	भद्रा १७।०० से २१।४५ तक, उ.फा. में सूर्य प्रवेश २३।५२, कन्या में बुध C												
२२	१०	३९	२२	०९	ऋषि पंचमी व्रत, सम्वत्सरी जैन (पंचमी पक्ष), मेला पात ३ दिन का D												
२२	१२	२३	२२	५३	पंचमी वृद्धि, इंजीनियर्स दिवस, वैधृति पुण्य D (कश्मीर), क्षमावाणी पर्व												
२३	१७	२३	२३	३७	सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ, मेला ब्रजमण्डल, श्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ												
२४	११	०७	२३	३७	भद्रा १२।२१ से २५।३५ तक, कन्या में सूर्य प्रवेश ९।५९, संक्रांति मु. १५, E												
२४	११	५१	२४	२१	हस्त में बुध प्र. २३।५५, श्रीराधाष्टमी, श्री दधीचि जयंती, श्री महालक्ष्मी व्रत समा.												
२५	१	१	२५	०५	ज्येष्ठा में मंगल प्रवेश ७।०३, श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), F												
२५	१३	१९	१	४९	वक्री अश्विनी ३ में गुरु प्रवेश २०।१४, पुष्य ४ में राहु श्रवण २ में केतु प्रवेश G												
२६	१४	०३	२	३३	भद्रा ७।०९ से १९।३२ तक, पद्मा एकादशी व्रत सबका, जलझुलनी मेला H												
२६	३	४७	३	१७	श्री वामन जयंती, श्री भुवनेश्वरी जयं., विजया महाद्वादशी व्रत, मेला अम्बाला J												
२६	१५	३१	४	०१	सायन तुला में सूर्य प्रवेश १७।००, रवि दक्षिण गोल में प्रवेश, शरद् सम्पात्, K												
२७	१६	१५	४	४५	भद्रा १८।०८ से २९।१५ तक, अनन्त १४ व्रत, मेला सोहल जलन्धर, चान्द्र पूर्णिमा व्रत												
२७	१६	४९	५	२९	बुध पश्चिम में उदय १३।४४, सत्यव्रत पूर्णिमा पुण्यं प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध L												
२७	१७	४५	६	१५													

A नक्त व्रत उद्यापन, केवलभ्य तप (जैन), स्वांग मेला गणदेव जैसलमेर (राज.), भूदान जयंती B जमादि उस्सानी मु. मास ६ प्रा. C प्रवेश ७।४१, वैश्वयकी श्री गणेश चतुर्थी, पत्थर चौथ, कलंक ४, चन्द्रदर्शन निषेध, गणेश जन्मोत्सवारंभ (महाराष्ट्र), जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष) E मुक्ताभरण सप्तमी, सन्तान सप्तमी, अपराजिता सप्तमी, श्री महालक्ष्मी व्रतारंभ सोलह दिन का, विश्वकर्मा पूजा, सौर आश्विन मासारंभ G ८।५४, मेला रामदेव जैसलमेर व नवलगढ़ दुर्ग, दशावतार दशमी H श्रीचार भुजानाथ गढ़बोर मेवाड़ (राज.), डोलग्यारस (म.प्र.)

भाद्रपद शु. ८ शनि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १८ सितम्बर

मू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	८	७	५	०	३	०	३	९	९	९	७
०	२	१५	८	१०	२८	२३	१६	१६	१९	७	१४
४४	३३	५७	४०	१२	००	०	४६	४६	३०	५८	७
३५	४०	७१	४६	४०	०	५७	४८	४८	१३	१६	०
५८	११	३०	०..	४	१६	२	३	३	१	०	१
३४	६	५८	१५	४२	१८	६	११	११	३४	४८	१
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-	-
७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
उ.फा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	कृत्ति.	कृत्ति.	उ.भा.	उ.फा.	

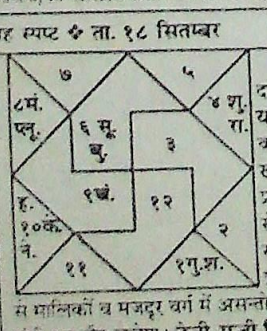

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं] ता. २५ सितम्बर ❖ भाद्रपद शु. १५ शनि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

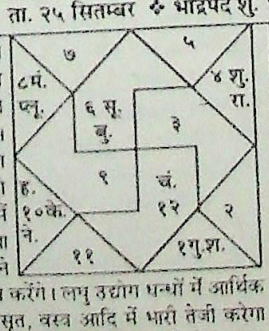

मू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	११	७	५	०	३	०	३	९	९	९	७
७	१	२०	२०	९	२८	२२	१६	१६	१९	७	१४
३८	४३	४०	२५	३६	२२	४४	२४	२४	१९	५०	१४
९	५८	३	२	१४	५९	३२	३३	३३	५८	१६	४३
५८	११६	४०	९७	५	२८	२	३	३	१	०	१
४७	२१	५४	०१	५१	४१	४३	११	११	१९	३५	१३
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
उ.फा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	कृत्ति.	कृत्ति.	उ.भा.	उ.फा.	

इस मास में शुक्ल पक्ष की ५ तिथि की वृद्धि उत्तम फल दायक है। यथा—'यदा यान्ति वृद्धिं सिताख्यश्च पक्षस्तदा यान्ति वृद्धिं नृपा लोक संघाः॥' देश प्रदेश में सुख शांति का वातावरण तैयार होगा। शासन व्यवस्था में सुदृढ़ता आयेगी। खनिज पदार्थों के साथ भारत अनुसंधान के क्षेत्र में नवीन सफलता प्राप्त करेगा। पक्ष मध्य में गुरु-शनि का सूर्य, मंगल, बुध, प्लूटो से षडाष्टक योग बनेगा। जिसके फलस्वरूप अनेक देशों में राजनैतिक उलटफेर होने की संभावना बनेगी। शासकों तथा प्रजाजनों में वैमनस्य बनेंगे। उद्योग धन्धों में उत्पादन कम होने से मालिकों व मजदूर वर्ग में असन्तोष बढ़ेगा। विकसित देश युद्धादि सामग्री का गुप्त रूप से संचय करेंगे। लघु उद्योग धन्धों में आर्थिक मंदी का दौर चलेगा। **तेजी-मन्दी विचार**—शनिवार को चन्द्रदर्शन चांदी, सोना, रुई, अलसी, सूत, वस्त्र आदि में भारी तेजी करेगा किन्तु यदि शुक्र मार्गी होने से शेयर और सर्राफा बाजार विशेष प्रभावित होंगे। कन्या संक्रांति १५ मुहूर्ती होने से धान्य जौ, गेहूं, चना, बाजरा में तेजी का प्रोत्साहन देगी। पश्चात में साधारण घटाबढ़ी के योग हैं। **आकाश लक्षण**—पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान में बादल चाल, वायुवेग तथा पश्चात में साधारण वर्षा के योग हैं। बंगाल, बिहार, उड़ीसा, असम में सामान्य से अच्छी वर्षा होगी। कुछ स्थानों पर वायु वेग भी रहेगा। **शकुन विचार**—भाद्रपद मास की पूर्णिमा को यदि चन्द्रोदय के समय बादल हो तो धान्य का स्टाक शीघ्र निकालना अच्छा रहेगा। आगे निश्चय ही मंदी होगी। यदि आकाश निर्मल रहे तो अन्न का संग्रह करना चाहिए।

J पटियाला, हरिद्वारादभाव, पंचक प्रारंभ २१।०७ से K राष्ट्रीय आश्विन मासारंभ, प्रदोष व्रत, गोत्रि रात्रि व्रतारंभ L महालयारम्भ, भागवत सप्ताह समाप्त, गोत्रि रात्रि व्रत समाप्त, सन्यासियों का चातुर्मास समाप्त

धर्मसूत्र प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन कृष्ण पक्ष-१४ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. २६ सितम्बर से ९ अक्टूबर सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति ४ से १७ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

रा. मि	तिथि	वा	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	नक्षत्र	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	योग	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	करण	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	दिन मान घं	मि	उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक अं.क.	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
४	१	र	१९	२७	२४	०४	ध	१	२०	६	५०	व	९	४२	८	५८	कौ	१०	२७	१४	०४	२९	४५	६	१७	१८	११	१०	१५	26	मे. २९।१०	५	०८	३६	५६	४६	१९	०३	६	३३
५	२	चं	१३	०७	१९	३२	अ	५२	१७	२७	१२	व्या	५०	२२	२६	२६	ग	१३	०७	११	३२	२९	४०	६	१७	१८	०९	११	१६	27	मेष	५	०९	३५	४५	५१	१९	५०	७	२०
६	३	मं	६	१०	८	४६	भ	४७	१२	२५	११	ह	४१	५२	२३	०३	वि	०६	१०	८	४६	२९	३५	६	१८	१८	०८	१२	१७	28	मेष	५	१०	३४	३६	५३	२०	४३	८	१३
०	४	मं	५९	१५	३०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
७	५	बु	५२	३२	२७	१९	कृ	४२	१७	२३	१३	वज्र	३३	२७	१९	४१	कौ	२५	५०	१६	३८	२९	३१	६	१८	१८	०७	१३	१८	29	वृ. ६।५०	५	११	३३	२९	५६	२१	३६	९	०६
८	६	गु	४६	१०	२४	४७	रो	३७	४७	२१	२६	सि	२५	१५	१६	२५	ग	१९	१०	१३	५९	२९	२७	६	१९	१८	०६	१४	१९	30	वृष	५	१२	३२	२५	५७	२२	२९	९	५९
९	७	शु	४०	३५	२२	३३	मृ	३३	५७	१९	५४	व्य	२७	३७	१३	२२	वि	१३	१५	११	३७	२९	२३	६	१९	१८	०५	१५	२०	O.1	मि. ८।३७	५	१३	३१	२२	५९	२३	२२	१०	५२
१०	८	श	३५	४२	२०	३७	आ	३०	५०	१८	४०	व	१०	३७	१०	३५	बा	७	५७	९	३१	२९	१९	६	२०	१८	०४	१६	२१	2	मिथुन	५	१४	३०	२१	५९	२४	१५	११	४५
११	९	र	३१	४५	१९	०२	पुन	४१	१७	८	०३	प	४८	४०	२९	४८	तै	३	३७	७	४७	२९	१५	६	२०	१८	०२	१७	२२	3	क. ११।५९	५	१५	२९	२२	३	१	०८	१२	३८
१२	१०	चं	२८	४०	१७	४९	पु	२७	१२	१७	१४	मि	५३	३७	२७	४८	व	०	०५	६	२३	२९	१०	६	२१	१८	०१	१८	२३	4	कर्क	५	१६	२८	२५	५	२	०१	१३	३१
१३	११	मं	२६	३०	१६	५७	अ	२६	४७	१७	०४	ला	४९	२५	२६	०७	बा	२६	३०	१६	५७	२९	५	६	२१	१८	००	१९	२४	5	सिं. १७।०४	५	१७	२७	३०	७	२	५४	१४	२४
१४	१२	बु	२५	०५	१६	२४	म	२७	३०	१७	१२	सु	४५	४७	२४	४१	तै	२५	०५	१६	२४	२९	१	६	२२	१७	५९	२०	२५	6	सिंह	५	१८	२६	३७	१०	३	४७	१५	२७
१५	१३	गु	२४	३७	१६	१३	पू	२८	२०	१७	४२	गु	४३	००	२३	३४	व	२४	३७	१६	१३	२८	५७	६	२२	१७	५८	२१	२६	7	कं. २३।५३	५	१९	२५	४७	११	४	४०	१६	१०
१६	१४	शु	२५	१२	१६	२८	उ	३०	३२	१८	३६	व	४०	५५	२२	४५	श	२५	१२	१६	२८	२८	५३	६	२३	१७	५७	२२	२७	8	कन्या	५	२०	२४	५८	१३	५	३३	१७	०३
१७	३०	श	२६	४८	१७	०४	ह	३३	३५	१९	५०	ऐं	३९	३२	२२	१३	ना	२६	४०	१७	०४	२८	४९	६	२४	१७	५६	२३	२८	9	कन्या	५	२१	२४	११	१५	६	२६	१७	५६

C व्रत समाप्त, अक्टूबर मा. १० ता. ३१, व्यतिपात पुण्य D मास शिवरात्रि व्रत E मृतकों का श्राद्ध, वायु सेना दिवस

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है

चित्रा में बुध प्रवेश २५।०७, पितृ पक्ष प्रारंभ, प्रतिपदा व द्वितीया श्राद्ध. A
भद्रा २२।०८ से, हस्त में सूर्य प्रवेश १५।२२, तृतीया श्राद्ध
भद्रा ८।४६ तक, मघा सिंह में शुक्र प्रवेश १०।०६, अंगारक चतुर्थी श्राद्ध, B
भद्रा ८।४६ तक, मघा सिंह में शुक्र प्रवेश १०।०६, अंगारक चतुर्थी श्राद्ध, B
चतुर्थी क्षयः, A अशून्य शयन २ व्रत, पंचक समाप्त २९।१०
B कृष्ण चतुर्थी व्रत, भरणी श्राद्ध
पंचमी श्राद्ध
भद्रा २४।४७ से, षष्ठी श्राद्ध, बैंकों में अर्द्धवार्षिकी लेखाबन्दी
भद्रा ११।३७ तक, तुला में बुध प्रवेश ७।४९, सप्तमी श्राद्ध, श्री महालक्ष्मी C
कालाष्टमी, अष्टमी श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका ८ व्रत, महात्मा गांधी व शास्त्री जयं.
मातृ नवमी, सौभाग्यवती श्राद्ध, नवमी श्राद्ध
भद्रा ६।२३ से १७।४९ तक, दशमी श्राद्ध, गुरू नानक देव शहीद दिवस
स्वाती में बुध १९।१०, इन्दिरा एकादशी व्रत सबका, एकादशी श्राद्ध
प्रदोष व्रत, द्वादशी श्राद्ध, संन्यासी श्राद्ध
भद्रा १६।१३ से २८।२२ तक, त्रयोदशी श्राद्ध, कलियुगादि तिथि, D
मूल धनु में मंगल प्रवेश १६।१२, चतुर्दशी श्राद्ध, विषाग्नि शस्त्रादि से E
देवपितृकार्यामावस्या, सर्वपितृ अमावस्या, पितृ विसर्जन, शनैश्चरी अमा.

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

आश्विन कृ. ८ शनि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २ अक्टू.

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू.
५	२	७	६	०	४	०	३	९	९	९	७
२४	१२	२५	०	८	२	२२	१६	१६	१९	७	१४
३०	२८	२८	२२	५२	१४	२३	२	२	११	४६	२२
२१	९	५६	१९	१६	२२	४६	१८	२८	४२	४७	५३
५९	४४	४१	९०	६	३८	३	३	३	१	०	१
१	२७	४५	८	४९	२३	१९	११	११	०	२६	२५
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	८	४	८	४	८	४	८	४	८	४	८
हस्त	अनुरा.	स्वाति	विशाखा	ज्येष्ठा	मघा	भरणी	मूल	श्रवण	श्रवण	उत्ता.	अनु.

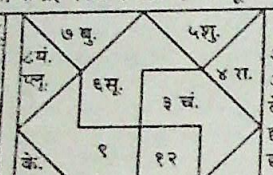

इस मास में पांच रविवार एवं शनिवार की अमावस्या नेष्ट है। चीन, जापान, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रिया, वर्मा, बंगला देश, पाकिस्तान आदि अनेक देशों में अराजकता, उपद्रव तथा प्रकृति-प्रकोप से हानि होगी। रोग महामारी से प्रजा पीड़ित तथा कहीं छत्र भंग होने से शासन सत्ता में परिवर्तन संभव है। पांच रविवार का फल—'**यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदास्ते च महद् भयम्॥**' विश्व के कुछ शासनाध्यक्षों के सामने राजनैतिक समस्या उत्पन्न होने से महत्वपूर्ण मामलों पर निर्णय लेने में विलम्बता आयेगी। पक्षान्त में मंगल धनु राशि में प्रवेश करने से गुरु, शुक्र, शनि से त्रिकोण योग बनेगा जिससे आने वाला समय अशुभ फलों को रोकने में सक्षम होगा। प्रजा में सुख समृद्धि तथा शासक वर्ग कल्याणकारी योजनाएं लागू करने में आगे बढ़ेंगे। तेजी-मन्दी विचार— पक्षारम्भ में सिंह का शुक्र सोना, चांदी, तांबा, जौ, चना, गेहूं, गुड़, खांड, शक्कर में तेजी करेगा। ता. १ अक्टूबर को तुला का बुध आने से अलसी, सरसों, मूंगफली, बिनौला आदि के बाजार मन्दी होंगे। पक्षान्त में पुनः बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे अतः बाजार रुख देखकर कार्य करें। **आकाश लक्षण**— मध्य भारत के अधिकांश राज्यों में मानसून अपने अन्तिम चरण में रहेगा। यहां दिन में गरमी तथा रात में शर्दी पड़ने लगेगी। पूर्व-दक्षिणी राज्यों में यत्र-तत्र न्यूनाधिक वर्षा सम्भव है। **शकुन विचार**— आश्विन कृष्ण प्रतिपदा, अष्टमी और दशमी को यदि आकाश में बादल हो तो शीघ्र ही वर्षा होवे। दशमी से लगातार दो दिन वर्षा और बादल गर्जना हो तो गेहूं का स्टाक करने वालों को आगे लाभ होगा।

ता. ९ अक्टू. ❖ आश्विन कृ. ३० शनि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू.
५	५	८	६	०	४	०	३	९	९	९	७
२१	१५	०	११	८	७	२१	१५	१५	१९	७	१४
२४	४६	२३	३४	२	६	५८	४०	४०	५	४४	३४
१०	५१	३०	५०	१३	४९	५६	२	२	३५	०४	२४
५९	४५	४२	८४	७	४५	३	३	३	०	०	१
१५	३	३१	२	३०	५२	४८	११	११	४०	१०	३६
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	८	४	८	४	८	४	८	४	८	४	८
हस्त	हस्त	मूल	स्वाति	अश्वि.	मघा	भरणी	पूर्वा	श्रवण	श्रवण	उत्ता.	अनु.

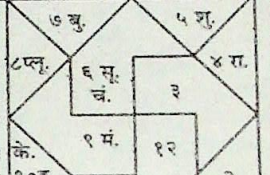

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन शुक्ल पक्ष-१५ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. १० से २४ अक्टू. सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति १८ आश्विन से २ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद्-हेमन्त ऋतु।

मा.	तिथि				स्टै.टा.		नक्षत्र		स्टै.टा.		योग		स्टै.टा.		करण		स्टै.टा.		दिन मान	रात्रि मान	सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः				गतिः	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त	
	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि			घं	मि				भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क. वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१८	१	र	२९	२२	१८	०९	चि	३७	५०	२१	३२	वै	३९	०२	२२	०१	ब	२९	२२	१८	०९	२८	४५	६	२४	१७	५५	२४	२९	10	तु. ८।४१	५	२२	२३	२६	२९	६	०२	१८	३२
१९	२	चं	३२	५७	१९	३६	स्वा	४३	००	२३	३७	वि	३९	२५	२२	११	बा	१	०२	६	५०	२८	४१	६	२५	१७	५३	२५	३०	11	तुला	५	२३	२२	४३	२०	७	०१	१९	३१
२०	३	मं	३७	५०	२१	३३	वि	४९	१७	२२	०८	प्री	४०	३५	२२	३९	तै	५	२०	८	३३	२८	३७	६	२५	१७	५२	२६	२८	12	वृ. १९।०	५	२४	२२	०३	२१	७	४६	२०	१४
२१	४	बु	४३	३७	२३	५३	अनु	५६	२२	२८	५९	आ	४२	२७	२३	२५	ब	१०	३२	१०	३९	२८	३३	६	२६	१७	५१	२७	२	13	वृश्चिक	५	२५	२१	२४	२४	८	५५	२१	०५
२२	५	गु	४९	५५	२६	२५	ज्ये	६०	००	-	-	सौ	४४	४७	२४	२२	ब	१६	४०	१३	०७	२८	२९	६	२७	१७	५०	२८	३	14	वृश्चिक	५	२६	२१	४८	२६	९	२६	२१	५६
२३	६	शु	५६	२०	२८	५९	ज्ये	४	००	८	०३	शो	४७	१५	२५	२१	कौ	२३	०७	१५	४२	२८	२५	६	२७	१७	४९	२९	४	15	ध. ८।४३	५	२७	२०	१४	२८	१०	१७	२२	४७
२४	७	श	६०	००	-	-	मू	११	४०	११	०८	अ	४९	२५	२६	१४	ग	२९	२२	१८	१३	२८	२०	६	२८	१७	४८	३०	५	16	धनु	५	२८	१९	४२	२९	११	०८	२३	३८
२५	७	र	२	२२	७	२५	पूषा	१८	४५	१३	५८	सु	५०	४७	२६	४७	ब	२	२२	७	२५	२८	१६	६	२८	१७	४७	का.	६	17	म. २०।३०	५	२९	१९	११	३१	११	५९	२४	२९
२६	८	चं	७	२२	९	२६	स्वा	२४	३७	१६	२०	धृ	५१	१०	२६	५७	ब	७	२२	९	२६	२८	१२	६	२९	१७	४६	२	७	18	मकर	६	००	१८	४२	३४	१२	५०	१	२०
२७	९	मं	१०	४७	१०	४९	भ	२८	५५	१८	०४	शू	५०	०७	२६	३३	कौ	१०	४७	१०	४९	२८	०८	६	३०	१७	४५	३	८	19	मकर	६	०१	१८	१६	३६	१३	४१	२	११
२८	१०	बु	१२	१०	११	२२	ध	३१	१२	१८	५९	गं	४७	२२	२५	२७	ग	१२	१०	११	२२	२८	०४	६	३०	१७	४४	४	९	20	कुं. ६।३०	६	०२	१७	५२	३९	१४	३२	३	१०
२९	११	गु	११	२७	११	०६	श	३१	२२	१९	०४	वृ	४३	००	२३	४३	वि	११	२७	११	०६	२८	००	६	३१	१७	४३	५	१०	21	कुंभ	६	०३	१७	३१	४०	१५	२३	३	५३
३०	१२	शु	८	३७	९	५८	पूभा	२९	३२	१८	२०	ध्रु	३६	५७	२१	१८	बा	८	३७	९	५८	२७	५६	६	३१	१७	४२	६	११	22	मी. १२।३०	६	०४	१७	११	४१	१६	१४	४	४४
का.	१३	श	३	५२	८	०५	उभा	२५	५७	१६	५५	व्या	२९	३०	१८	२०	तै	३	५२	८	०५	२७	५२	६	३२	१७	४१	७	१२	23	मीन	६	०५	१६	५२	४४	१७	०५	५	३५
०	१४	श	५७	३२	२९	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	१५	र	४९	५७	२६	३२	१	२०	५७	१४	५६	ह	२०	५२	१४	५४	वि	२३	५३	१६	०६	२७	४८	६	३३	१७	४०	८	१३	24	मे. १४।५६	६	०६	१६	३६	४६	१८	००	६	३०

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है

चित्रा में सूर्य प्रवेश २८।२३, शारदीय नवरात्रा प्रारंभ, कलश स्थापना, A
उत्तरभारते चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्ष B पर अजमेर में उर्स मेला शुरू
रज्जब मु. मा. ७ प्रा., मोइनुद्दीन चिश्ती सज्जी अलह (ख्वाजा) की मजार B
भद्रा १०।३९ से २३।५३ तक, विनायक ४ व्रत
मार्गी नेपच्यून ११।८५, उपांग ललिता पंचमी व्रत, ललिता पंचमी
विशाखा में बुध प्रवेश १०।३५, श्री सरस्वती आवाहन मूल में
पू.फा. में शुक्र प्रवेश २१।१७, जैन आयंबिल ओली प्रारम्भ, दुर्गापूजा प्रा., C
भद्रा ७।२५ से २०।२५ तक, तुला में सूर्य प्रवेश २१।५७, संक्रांति मु. ४५, D
श्री महाष्टमी व्रत पूजन, महानवमी, मेला ज्वालामुखी, तारा देवी E
वक्री अश्विनी २ में गुरु प्रवेश १६।४१, मन्वादि, अस्त्र-शस्त्र पूजा, F
भद्रा २३।१८ से, श्री माधवाचार्य जयंती, भरत मिलाप, बौद्धावतार १०, G
भद्रा ११।०६ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत सबका
प्रदोष व्रत H सायन वृश्चिक में सूर्य प्रवेश २६।२२, J
भद्रा २१।३३ से, वृश्चिक में बुध प्रवेश २०।३६, मार्गी हर्षल १८।४०, H
चतुर्दशी क्षयः J राष्ट्रीय कार्तिक मासारम्भ, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ
भद्रा १६।०६ तक, स्वाती में सूर्य प्रवेश १४।५३, महर्षि बाल्मीकि जयंती, K

A अश्वसेन जयंती, मातामह श्राद्ध, दक्षिण भारते चन्द्रदर्शन मु. ३०, वैधृति पुण्यं C सरस्वती आवाहन दशाचारे D श्री सरस्वती पूजन पू.षा. में, अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रारम्भ ७।२५ से, सौर कार्तिक मासारम्भ, श्री महाष्टमी व्रत पूजन, भद्रकाल्यावतार E (हि.प्र.), अन्नपूर्णा परिक्रमा समाप्त ९।२६ तक, श्री सरस्वती बलिदान F नवारात्रा समाप्त, श्री सरस्वती विसर्जन, विजया दशमी (रावणदाह), अपराजिता पूजन, शमी पूजा G पंचक प्रारम्भ ६।३७ से K शरद पूर्णिमा, कोजागरी व्रत पूर्णिमा, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं, जैन ओली समाप्त, कार्तिक स्नान प्रा., कुबेर व लक्ष्मी पूजा (बंगाल में), पंचक समाप्त १४।५६, जन्म दिन हजरत अली (मु.)

आश्विन शु. ८ चन्द्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १८ अक्टूबर [दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं] ता. २४ अक्टूबर ❖ आश्विन शु. १५ रवि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	९	८	६	०	४	०	३	९	९	९	७
०	४	६	२३	६	१४	२१	१५	१५	१९	७	१४
१८	२८	४९	३२	५१	३०	२२	११	११	१	४४	४९
४२	४२	४३	१५	५१	५	२७	२५	२५	११	३४	४६
५९	३३	४३	७३	८	५३	४	३	३	०	०	१
३४	१५	२३	२९	४	५	२३	११	११	१४	९	५०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह

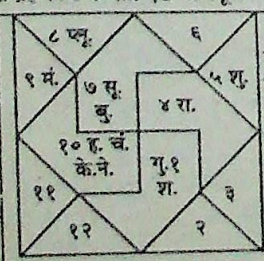

इस पक्ष मध्य से सूर्य का मंगल-शुक्र से त्रिकोदश योग उत्तम है किन्तु गुरु, शनि, राहु-केतु से केन्द्र योग अशुभ है। अतः यहां मिलेजुले फल होंगे। बड़े राष्ट्र अमेरिका, रूस, जापान, फ्रांस, चीन स्वार्थ परायण होते हुए भी पारस्परिक राजनैतिक तथा आर्थिक सम्बन्ध सुधारने की चेष्टा करेंगे। भारत विश्व में अपना वर्चस्व बनाने में सफल होगा। शांति वार्ता अधिक आयोजित होंगी किन्तु उनमें सफलता कम प्राप्त होगी। कृषि क्षेत्र के अलावा भारत खनिज पदार्थों की नवीनतम खोज में भी सफलता प्राप्त करेगा। आणुविक क्षेत्र की बढ़ोतरी विश्व के लिए घातक सिद्ध होगी। किन्तु भारत की नीति शांतिप्रिय ही बनी रहेगी। तेजी-मन्दी विचार — सोमवार को उत्तर भारत में १५ मुहूर्ती चन्द्रदर्शन होने से धान्यादि के अलावा रुई, सूत, चांदी, सोना में तेजी के आसार नजर आयेंगे जिसका असर तुला संक्रांति लगने पर कमजोर पड़ता दिखाई देगा। पक्षान्त में चतुर्दशी तिथि का क्षय धान्य, जौ, गेहूं, चना, सोना, चांदी, तेल, तिलहन में तेजी करेगा। आकाश लक्षण — इस पक्ष में ऋतु परिवर्तन से सर्दी का जोर बढ़ेगा। दक्षिणी मद्रास, आन्ध्र प्रदेश, केरल में बादल चाल रहे। कहीं-कहीं खण्ड-वृष्टि या बूंदाबादी होगी। हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में वायु प्रकोप की अधिकता रहेगी। शकुन विचार — आश्विन शुक्ल सप्तमी व अष्टमी को बादल वर्षा हो तो सुभिक्ष किन्तु पूर्णमासी को बादल वर्षा हो तो अशुभ माना जाता है अतः पूर्णमासी को सम्पूर्ण रात्रि चन्द्रमा निर्मल रहे तो धान्यादि में आगे मंदी होगी।

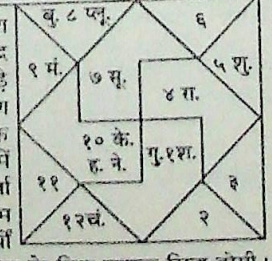

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	११	८	७	०	४	०	३	९	९	९	७
६	२४	११	०	६	१९	२०	१४	१४	१९	७	१५
१६	१४	११	२३	३	५८	५५	५२	५२	००	४५	१
३६	३५	२२	२३	६	६	२८	२१	२१	२७	५७	४
५९	८३	४३	६०	८	५६	४	३	३	०	०	१
४६	५९	५४	२८	०९	४५	३४	११	११	३	२२	५७
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक कृष्ण पक्ष-१६ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. २५ अक्टूबर से ८ नवम्बर सन् १९९९ ई. राष्ट्रीय पिति ३ से १० कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा. मि	तिथि ति	वा	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	दिन मान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मू.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	ग. ति. क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है
३	१	चं	४१	३७	२३	१२	अ	१४	५२	१२	३०	वज्र	११	३२	११	१०	बा	१५	५५	१२	५५	२७	४४	६	३३	१७	४०	९	१४	25	मेष	६	०७	१६	२२	५९	१८	०५	५	३५	
४	२	मं	३३	०५	१९	४८	ध	८	१७	९	५३	सि	५९	३७	२७	१३	तै	७	२५	९	३२	२७	४०	६	३४	१७	३९	१०	१५	26	वृ. १५।११	६	०८	१६	१०	५१	१९	०५	६	४५	भद्रा ३०।०७ से, पू.फा. में मंगल प्रवेश २७।४१, अशून्य शयन २ व्रत, A
५	३	बु	२४	३७	१६	२६	कृ	९	३७	७	१४	व	४१	५०	२३	१९	वि	२४	३७	१६	२६	२७	३६	६	३५	१७	३८	११	१६	27	वृष	६	०९	१६	१	५२	२०	१५	७	४५	भद्रा १६।२६ तक, अनुराधा में बुध प्रवेश ७।२५, करक चतुर्थी व्रत B
६	४	गु	१६	४२	१३	१७	मृ	४९	४२	२६	२९	प	३२	३०	१९	३६	बा	१६	४२	१३	१७	२७	३२	६	३६	१७	३७	१२	१७	28	मि. १५।४३	६	१०	१५	५३	५३	२१	१९	८	४४	
७	५	शु	९	३७	१०	२७	आ	४५	१२	२४	४१	सि	२४	०२	१६	१३	तै	९	३७	१०	२७	२७	२८	६	३६	१७	३६	१३	१८	29	मिथुन	६	११	१५	४६	५६	२२	०३	९	३३	पद्म प्रभु जयंती (जैन)
८	६	श	३	४२	८	०६	पुन	४२	००	२३	२५	मि	१६	३७	१३	१६	व	३	४२	८	०६	२७	२४	६	३७	१७	३५	१४	१९	30	क. १७।११	६	१२	१५	४२	५७	२२	५५	१०	२५	भद्रा ८।०६ से १९।१३ तक, उ.फा. में शुक्र प्रवेश २७।०१
०	७	श	५९	०७	३०	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी क्षय:
९	८	र	५५	५५	२९	००	पु	४०	०७	२२	४१	सा	१०	१२	१०	४३	बा	२७	१७	१७	३३	२७	२१	६	३८	१७	३४	१५	२०	31	कर्क	६	१३	१५	३९	६०	२३	४७	११	१७	कालाष्टमी, अहोई अष्टमी, राधाकुण्ड स्नान मथुरा, सरदार पटेल जयंती, C
१०	९	चं	५४	०५	२८	१६	श्ले	३९	३५	२२	२८	शुभ	४	५५	८	३६	तै	२४	४७	१६	३३	२७	१७	६	३८	१७	३४	१६	२१	N1	सिं. २२।५८	६	१४	१५	३९	२	२४	३९	१२	०९	नवम्बर मास ११ ता. ३०
११	१०	मं	५३	३५	२८	०५	म	४०	२०	२२	४७	गु	५७	०५	६	५७	व	२३	३७	१६	०६	२७	१३	६	३९	१७	३३	१७	२२	2	सिंह	६	१५	१५	४१	३	१	३१	१३	०१	भद्रा १६।०६ से २८।०५ तक
१२	११	बु	५४	१०	२८	२०	पू	४२	१५	२३	३४	ई	५५	१०	२८	४४	ब	२३	४५	१६	१०	२७	१०	६	४०	१७	३२	१८	२३	3	कं. २१।४१	६	१६	१५	४४	५	२	२३	१३	५३	कन्या में शुक्र प्रवेश १०।०८, रमा एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णवानां
१३	१२	गु	५५	५५	२९	०३	उ.फा	४५	१२	२४	४६	वै	५३	४०	२८	०९	कौ	२४	५७	१६	४०	२७	६	६	४१	१७	३२	१९	२४	4	कन्या	६	१७	१५	४९	७	३	१५	१४	४५	वक्री भरणी २ में शनि प्रवेश २४।०१, रमा एकादशी व्रत निम्बार्कानां, D
१४	१३	शु	५५	४०	३०	०९	ह	४९	०५	२६	१९	वि	५३	००	२७	५३	ग	२७	०७	१७	३२	२७	३	६	४१	१७	३१	२०	२५	5	कन्या	६	१८	१५	५६	८	४	०७	१५	३७	भद्रा ३०।०९ से, वक्री बुध १०।२८, प्रदोष व्रत, धन तेरस, धन्वन्तरी जयं. E
१५	१४	श	६०	००	-	-	चि	५३	५७	२८	१७	ध्रु	५२	५५	२७	५२	वि	३०	१७	१८	४९	२७	०	६	४२	१७	३०	२१	२६	6	तु. १५।१५	६	१९	१६	०४	१०	४	४९	१६	२९	श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, निशीथ काल में महाकाली पूजा, प्रदोष G
१६	१४	र	२	१५	७	३७	स्वा	५९	२७	३०	३०	आ	५३	२७	२८	०६	श	२	१५	७	३७	२६	५६	६	४३	१७	३०	२२	२७	7	तुला	६	२०	१६	१४	१३	५	५१	१७	२१	सोमवती अमावस्या पुण्यं, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलिराज पूजा
१७	३०	चं	६	३५	९	२२	वि	६०	००	-	-	सौ	५४	३७	२८	३५	ब	६	३५	९	२२	२६	५२	६	४४	१७	२९	२३	२८	8	वृ. २६।४६	६	२१	१६	२७	१४	६	४८	१८	२८	

A गुरु श्री रामदास जयंती, व्यतिपात पुण्य B(करवा चौथ व्रत), दशरथ चतुर्थी C इन्दिरा गांधी पुण्य दिवस D गोवत्स पूजा, वैधृति पुण्य E यम दीपदानम् F तिलाभ्यङ्ग स्नान, मास शिवरात्रि व्रत G काले दीपदानम्, कमला जयंती, स्वामी दयानन्द व महावीर निर्वाण दिवस, श्री हनुमान जयंती, पितृकार्याऽमावस्या, शब्बे-ए-मिराज

कार्तिक कृ. ८ रवि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३१ अक्टूबर [दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं] ता. ८ नवम्बर ❖ कार्तिक कृ. ३० चन्द्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	३	८	७	०	४	०	३	९	९	९	७
१३	६	१६	६	५	२६	२०	१४	१४	१९	७	१५
१५	५०	२०	१५	६	४६	२२	३०	३०	१	४९	१५
३९	३७	२३	१७	२७	१२	५२	६	६	५६	७	७
६०	५२	४४	३२	७	६०	४	३	३	०	०	२
०	२४	२६	२९	५८	१३	४६	११	११	२५	३४	६
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
९	९	९	९	९	९	९	४	९	४	४	४
स्वाति	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	उ.फा.	भरणी	पू.	श्रवण	श्रवण	उ.भा.	अनु.

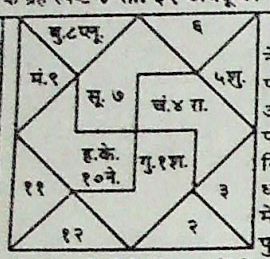

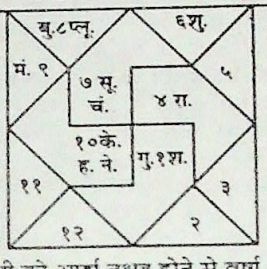

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	६	८	७	०	५	०	३	९	९	९	७
२१	१९	२२	७	४	४	१९	१४	१४	१९	७	१५
१६	२८	१७	१५	४	५९	४४	४	४	६	५४	३२
२७	१९	५२	२३	३८	१७	१७	३९	३९	४४	४२	१३
६०	५३	४४	३१	७	६३	४	३	३	०	०	२
१४	२१	५९	१९	२२	२०	५२	११	११	५०	५१	१२
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
९	४	९	९	९	९	९	४	९	४	४	४
विशा.	स्वाती	पू.फा.	अनु.	आर्द्रा.	उ.फा.	भरणी	पुष्य	श्रवण	श्रवण	उ.भा.	अनु.

इस मास में पांच सोमवार उत्तम तथा पांच मंगलवार नेष्ट हैं अतः यहाँ मिश्रित फल प्राप्त होंगे। भारत-पाकिस्तान के साथ रूस, चीन, फ्रांस व अमेरिका में भी आणविक प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी। जापान, जर्मनी, वियतनाम, पोलेण्ड, रूमानियां, अफगानिस्तान, ब्रिटेन में बम विस्फोट, विमान दुर्घटना, भूकम्प, रेल दुर्घटना से जन धन की हानि होगी। भारत के कुछ प्रान्तीय मन्त्रिमंडलों में फेरबदल होगा। पाकिस्तान से सीमा विवाद का मामला पुनः एक बार बढ़ता दिखाई देगा। दीपावली चतुर्दशी रविवार की होने से प्रजा में रोग पीड़ा व अशांति की वृद्धि होगी। कार्तिक कृष्ण पंचमी को आर्द्रा नक्षत्र होने से वर्षा में कमी तथा पशुओं में रोग पीड़ा से कष्ट बढ़ेगा। यथा — 'कार्तिके पंचमी रौद्रयोगे स्यात्तृण संग्रहः। चतुष्पदेऽन्यथा दुःखं जायतेऽग्रेऽल्पवृष्टिजम्॥' **तेजी-मन्दी विचार** — सरसों, अलसी, राई, हींग, मिर्च, सुपारी के साथ सोना, चांदी, चावल, घृत में तेजी होकर धान्यादि में मन्दी की चाल निकलेगी। ३ नवम्बर को कन्या का शुक्र चांदी में घटाबढ़ी एवं चावल, गुड़, खांड, शक्कर, ऊनी वस्त्रों में तेजी प्रदान करेगा। सोमवती अमावस्या धान्यादि के भावों में मंदी कारक है। **आकाश लक्षण** — पर्वतीय भागों में बादल वर्षा होने से शीत बढ़ने लगेगा। पक्षान्त में दक्षिण भारत, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश में साधारण बादल चाल एवं बूंदाबांदी होगी। पश्चिमी भारत में वायु प्रकोप भी रहेगा। **शकुन विचार** — कार्तिक मास में मेघ गर्जना हो तो अन्नादि में तेजी होती है। कार्तिक कृष्ण में सूर्य के चारों ओर कुण्डल दिखाई दे तो तिल, तेल, अलसी, सरसों, मूंगफली में तेजी हो। यहाँ मंदी में स्टाक करने वालों को लाभ होगा।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१७ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. ९ से २३ नवम्बर सन् १९९९ ई. राष्ट्रीय मिति १८ कार्तिक से २ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा.	तिथि						स्टै.टा.	नक्षत्र					स्टै.टा.	योग					स्टै.टा.	करण					स्टै.टा.	दिन मान घं.	मि.	सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा. स्टै.टा. रा. घं. मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	गति: क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
मि.	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.		न.	घ.	प.	घं.	मि.		यो.	घ.	प.	घं.	मि.		क.	घ.	प.	घं.	मि.																					
१८	१	मं	११५८	२१	११	२०	वि	५	५२	९	०५	शो	५६	२७	२०	१९	ब	११	५२	११	२०	२६	४९	६	४४	१७	२८	२४	२९	९	वृश्चिक	६	२२	१६	४१	६४	६	४९	१८	१९
१९	२	बु	१७५७	१३	५६	ब्र	१२	५५	११	५५	अ	५८	३५	३०	११	की	१७	२७	१३	५६	२६	४५	६	४५	१७	२८	२५	सा	१०	वृश्चिक	६	२३	१६	५७	१७	६	४०	१९	१०
२०	३	गु	२४२२	१६	३१	भ	२०	३०	१४	५८	मु	६०	००	-	-	ग	२४	२२	१६	३१	२६	४२	६	४६	१७	२७	२६	२	११	ध. ११५८	६	२४	१७	१४	२०	७	३५	२०	०५
२१	४	शु	३१०२	१९	१२	भू	२८	२२	१८	०८	मृ	१	०२	७	१२	वि	३१	०२	१९	१२	२६	३०	६	४७	१७	२७	२७	३	१२	धनु	६	२५	१७	३४	२१	८	२८	२०	५८
२२	५	श	३७४०	२१	५१	कृ	३५	५७	२१	१०	धृ	३	२५	८	००	ब	४	२७	८	३४	२६	३६	६	४७	१७	२६	२८	४	१३	म. २५५४	६	२६	१७	५५	२२	९	२१	२१	५१
२३	६	र	४३१७	२४	०७	रो	४२	५२	२३	५७	शू	५	३२	९	०१	की	१०	३०	११	००	२६	३३	६	४८	१७	२६	२९	५	१४	मकर	६	२७	१८	१७	२५	१०	१४	२२	४४
२४	७	चं	४७४०	२५	५३	मृ	४८	३०	२६	१३	गं	६	५०	९	३३	ग	१५	४०	१३	०५	२६	३०	६	४९	१७	२५	३०	६	१६	मकर	६	२८	१८	४२	२६	११	०७	२३	३७
२५	८	मं	५०२०	२६	५८	ब	५२	२७	२७	४९	वृ	७	०५	९	४०	वि	१९	१५	१४	३२	२६	२७	६	५०	१७	२५	क्री	७	१६	कुं. ५५४६	६	२९	१९	०८	२७	१२	०२	२४	३२
२६	९	बु	५०५५	२७	१३	श्र	५४	२७	२८	३८	धु	५	४५	९	०९	ब	२०	५०	१५	११	२६	२४	६	५१	१७	२४	२	८	१७	कुम्भ	७	००	१९	३५	२९	१२	५३	१	२३
२७	१०	गु	४९१५	२६	३३	धि	५४	१०	२८	३१	व्या	८	१७	९	१०	त	२०	१७	१४	५८	२६	२१	६	५१	१७	२४	३	९	१८	मी. २२५८	७	०१	२०	०४	३१	१३	४६	२	१६
२८	११	शु	४५२२	२५	०१	श	५२	४२	२७	३३	व	५१	५७	२७	३९	व	१७	३२	१३	५३	२६	१८	६	५२	१७	२४	४	१०	१९	मीन	७	०२	२०	३५	३२	१४	३१	३	०९
२९	१२	श	३९३५	२२	४३	ध	४७	२७	२५	५२	सि	४४	०२	२४	३०	ब	१२	३७	११	५६	२६	१६	६	५३	१७	२३	५	११	२०	मे. ५५५२	७	०३	२१	०७	३४	१५	३२	४	०२
३०	१३	र	३२०५	१९	४४	श	४१	३७	२३	३३	व्य	३४	४७	२०	४९	की	५	५७	९	१७	२६	१३	६	५४	१७	२३	६	१२	२१	मेष	७	०४	२१	४१	३५	१६	२५	४	५५
[illegible]	१४	चं	२३२७	१६	१७	भ	३५	०७	२०	५७	व	२४	४५	१६	४८	व	२३	२७	१६	१७	२६	१०	६	५४	१७	२३	७	१३	२२	वृ. ५६४३	७	०५	२२	१६	३७	१७	१८	५	४८
२	१५	मं	१४०७	१२	३४	क	२७	०७	१७	४६	प	१३	५७	१२	३०	ब	१४	०७	१२	३४	२६	०८	६	५५	१७	२२	८	१४	२३	वृष	७	०६	२२	५३	३८	१८	०७	६	३७

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है

बुध पश्चिम में अस्त २६।०१, गोसंवर्धन सप्ताह प्रा., द्यूत क्रीड़ा दिवस, A
भैया दूज, टिक्का, यम द्वितीया, विश्वकर्मा जयंती, चित्रगुप्त पूजा, सावान B
भद्रा २९।५१ से, A चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्ध B मु. मास ८ प्रारम्भ
भद्रा १९।१२ तक, वक्री विशाखा में बुध प्रवेश २२।२३, हस्त में शुक्र C
उ.षा. में मंगल प्रवेश २४।५४, पांडव ५, ज्ञान पंचमी (जैन), सौभाग्य D
वक्री अश्विनी १ में गुरु प्रवेश १२।५५, सूर्य ६ व्रत, डाला छठ (बिहार) E
भद्रा २५।५३ से, वक्री तुला में बुध प्रवेश १३।०२, कल्पादि ७, F
भद्रा १४।३२ तक, वृश्चिक में सूर्य प्रवेश २१।४३, संक्रांति मु. ३०, G
आंवला नवमी, अक्षय नवमी, कूष्मांड नवमी, कृतयुगादि, जगत धातु पूजा H
मकर में मंगल प्रवेश १०।३६ H मथुरा प्रदक्षिणा, लाजपतराय पुण्य दिवस
भद्रा १३।५३ से २५।०१ तक, अनुराधा में सूर्य प्रवेश २९।०२, देव J
हरिवासरउ भाव, मन्वादि, तुलसी विवाह, पंचक समा. २५।५२, कालीदास जय.
पुष्य ३ में राहु श्रवण १ में केतु प्रवेश ३०।३८, वैकुण्ठ १४ व्रत, प्रदोष व्रत K
भद्रा १६।१७ से २६।२५ तक, बुध पूर्व में उदय ११।१०, सायन धनु में L
कार्तिकी पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती, देव दीपावली, मेला पुष्करराज व M

C प्रवेश २२।२२, विनायक ४ व्रत, तीन दिन का सूर्य षष्ठी व्रतारंभ, महाभक्ता माल्लवीय जी पुण्य दिवस D पंचमी, गुरु गोविन्द सिंह पुण्य दिवस E प. जवाहर लाल नेहरू जयंती (बाल दिवस), बाल मेला दिल्ली F अष्टान्हिक जैन व्रतारंभ, स्कन्दार्जुन जयंती G गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी, गो पूजा, यव अन्नादिदान, गौशाला निर्माण, गोसंवर्धन सप्ताह समाप्त, सौरमार्गशीर्ष मासारंभ, पंचक प्रा. १५।०५ से J प्रबोधिनी एकादशी व्रत, भीष्म पंचकारम्भ, तुलसी विवाह व पुष्कर मेला प्रा. (राज.), चातुर्मास्य व्रत नियमादि पूर्ण, इंदिरा गांधी जयंती (एकता दिवस), पुण्डर पुर यात्रा (महाराष्ट्र) K काली विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, व्यतिपात पुण्य, मेला चोर बैरागी नकोदर जन्मोत्सव (पंजाब)

कार्तिक शु. ८ मंगल, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १६ नवम्बर [दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं] ता. २३ नवम्बर ❖ कार्तिक शु. १५ मंगल, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ह.	ने.	प्लू.
६	९	८	६	०	५	०	३	९	९	९	७
२०	२०	२८	२०	३	१३	१९	१३	१३	१९	८	१५
१९	०	१९	४	८	३४	५	३०	३९	१४	२	५०
८	३१	२२	४३	५१	४७	५३	१३	१३	४७	२२	६
६०	५२	४५	३९	६	६५	४	३	३	१	१	२
२७	१४	२७	२९	२४	४५	४६	११	११	१३	६	१६
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
४	४	४	अ	४	४	४	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

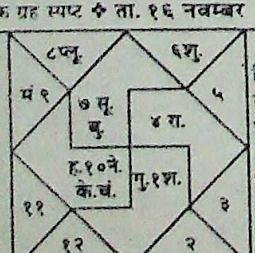

इस पक्ष में मंगल अतिचारी बनने की ओर अग्रसर हो रहा है तथा शनि वक्री पूर्व से ही चलता आ रहा है। मंगल-शनि की यह स्थिति आगामी ६० दिन तक बनी रहने से आने वाला समय शांतिप्रद नहीं कहा जा सकता। यहाँ भारत, रूस, स्वीडन, अफगानिस्तान, सिंध, ग्रीक, टर्की, फिनलैण्ड देश अधिक प्रभावित होंगे। जन विद्रोह, प्रदर्शन, बम-विस्फोट, यान दुर्घटना, अग्निकांड, भूकम्पादि से प्रजा पीड़ित होगी। विश्व शान्ति के प्रयासों को धक्का लगेगा। पक्ष उत्तरार्ध में मकर राशि में चार ग्रहों का योग भी बनेगा जो अशुभ फलों को ही बढ़ावा देगा। आणुविक प्रतिस्पर्धा बढ़ने से छोटे-छोटे देश आतंकित होने लगेंगे। महंगाई वृद्धि से जनता में भारी असन्तोष व्याप्त होगा। तेजी-मन्दी विचार—पक्षारंभ में बुध का अस्त होने से रुई, पाट, बारदाना, गुड़, शक्कर, सोना चांदी में तेजी होगी। जिसे ता. १५ नवम्बर को वक्री बुध तुला में प्रवेश करने से रोकने में कामयाब होगा। अलसी, सरसों, मूंगफली के साथ चांदी में मंदी को प्रोत्साहन देगा। पक्षान्त में बुधोदय तेजी का झटका प्रदान करेगा। आकाश लक्षण—इस पक्ष में बुध का उदय-अस्त वर्षाकारक है। अकाल वृष्टि से कृषि उत्पादन में हानि होगी। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर में हिमपात अथवा ओलावृष्टि से शीत बढ़ेगा। राजस्थान दिल्ली, उ.प्र. में भी बादल चाल अथवा वर्षा होगी। शकुन विचार—"कार्तिक सुदी अष्टमी दिनां, बादल वर्षा होय। चौमासा वर्षे सही संशय करो न कोय॥" कार्तिक सुदी एकादशी होती देव उठान। दिन भर पूरी जो रह औंदा होवे धान॥ कार्तिक सुदी ११ को वर्षा हो तो उत्तम होती है।

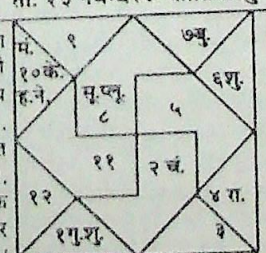

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ह.	ने.	प्लू.
७	१	९	६	०	५	०	३	९	९	९	७
६	२	३	२२	२	२१	१८	१३	१३	१९	८	१६
२२	१०	३८	१३	२७	२०	३३	१६	१६	२४	१०	६
५३	५८	२७	२५	३	२५	१३	५८	५८	२३	४०	१०
६०	११६	४५	१८	५	६७	४	३	३	१	१	२
३८	४४	४६	५०	२०	२८	३३	११	११	३३	१९	२०
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
४	४	४	४	४	४	४	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

L सूर्य प्रवेश २३।५५, रा. मार्गशीर्ष मासारंभ, मत्स्यव्रत, चान्द्र पूर्णिमा, चौमासी चौदस (जैन) M रघुवर तीर्थ गढ़गंगा, अष्टान्हिक जैन व्रत व भीष्म पंचक समा., मन्वादि १५, निम्बार्काचार्य जयंती, कार्तिक स्नान समाप्त, रथयात्रा (जैन), शबे-ए-बरात

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१८ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ना.	तिथि			स्टै.टा.	नक्षत्र			स्टै.टा.	योग			स्टै.टा.	करण			स्टै.टा.	दिन मान		उदय		अस्त		दिनांक प.	मु.	अं.	चन्द्र संचार	भा.स्टै.टा.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः				ग ति:	चन्द्रोदयास्त दिल्ली			
मि	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घ	मि	यो	घ	प	घ	मि	क	घ	प	घं	मि						रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	वि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३	१	बु	४	३२	८	४५	मे	१९	२७	१४	४३	सि	३ ५२	०० २०	८ २७	०० ५२	कौ	४	३२	८	४५	२६	५	६	५६	१७	२२	९	१५	24	मि. २५।१३	७	०७	२३	३१	५५ ४३	१८	२३	६	००
०	२	बु	५५	१३	२९	०१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
४	३	गु	४६	२५	२५	३१	पृ	१२	०७	११	४८	सा	४२	०५	२३	४७	व	२०	४०	१५	१३	२६	३	६	५७	१७	२२	१०	१६	25	मिथुन	७	०८	२४	११	४२	१९	१३	६	४३
५	४	शु	३८	५२	२२	३१	आ	५	३५	९	१२	शुभ	३२	४०	२०	०२	ब	१२	२७	११	५७	२६	०	६	५८	१७	२२	११	१७	26	क. २५।३५	७	०९	२४	५३	४३	२०	२३	७	५३
६	५	श	३	४०	२०	०२	पुन	०	२२ ३७	७	०७	शु	२४	२७	१६	४५	कौ	५	३५	९	१२	२५	५८	६	५८	१७	२२	१२	१८	27	कर्क	७	१०	२५	३६	४३	२१	२३	८	५३
७	६	र	२८	०२	१८	१२	ज्ये	५४	२७	२८	४६	ब	१७	२७	१३	५८	ग	०	०७	७	०२	२५	५५	६	५९	१७	२२	१३	१९	28	सिं. २८।४६	७	११	२६	१९	४५	२२	२३	९	५३
८	७	चं	२५	२०	१७	०४	ध	५४	०२	२८	३७	ऐं	११	५०	११	४४	व	२५	१०	१७	०४	२५	५३	७	००	१७	२२	१४	२०	29	सिंह	७	१२	२७	०४	४६	२३	२३	१०	५३
९	८	मं	२४	१०	१६	४१	शत	५५	२५	२९	११	वै	७	३७	१०	०४	कौ	२४	१०	१६	४१	२५	५१	७	०१	१७	२१	१५	२१	30	सिंह	७	१३	२७	५०	४७	२४	२२	११	५३
१०	९	बु	२४	५०	१६	५८	पूभा	५८	१०	३०	१८	वि	४	५०	८	५८	ग	२४	५०	१६	५८	२५	४९	७	०२	१७	२१	१६	२२	D1	कं. ११।१२	७	१४	२८	३७	४९	१	२३	१३	३८
११	१०	गु	२७	००	१७	५०	उ	६०	००	-	-	शो	३	१५	८	२०	वि	२७	००	१७	५०	२५	४७	७	०२	१७	२१	१७	२३	2	कन्या	७	१५	२९	२६	५०	२	२३	१४	३०
१२	११	शु	३०	२७	१९	१४	उ	२	२०	७	५९	आ	२	३५	८	०५	बा	३०	२७	१९	१४	२५	४५	७	०३	१७	२१	१८	२४	3	तु. २०।५१	७	१६	३०	१६	५०	३	२३	१५	१६
१३	१२	श	३४	५०	२१	००	वि	७	३५	१०	०६	सौ	२	४७	८	११	कौ	२	३०	८	०४	२५	४४	७	०४	१७	२२	१९	२५	4	तुला	७	१७	३१	०६	५३	४	२३	१५	५५
१४	१३	र	३०	१०	२३	०९	ध्रु	१३	४०	१२	३३	शु	३	४५	८	३५	ग	७	२०	१०	०१	२५	४२	७	०५	१७	२२	२०	२६	5	तुला	७	१८	३१	५८	५४	५	२३	१६	१७
१५	१४	चं	४५	५७	२५	२८	वि	२०	३०	१५	१७	अ	५	१७	९	१२	वि	१२	५७	१२	१६	२५	४०	७	०५	१७	२२	२१	२७	6	वृ. ८।१३	७	१९	३२	५२	५४	६	२३	१७	१९
१६	३०	मं	५२	१५	२८	००	ध्रु	२७	४२	१८	११	मृ	७	०५	९	५६	च	१९	०५	१४	४४	२५	३९	७	०६	१७	२२	२२	२८	7	वृश्चिक	७	२०	३३	४६	५५	७	२३	१७	४५

ता. २४ नवम्बर से ७ दिसम्बर सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय तिथि ३ से १६ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है

चित्रा में शुक्र प्रवेश २३।५९, अशून्य शयन २ व्रत

द्वितीया क्षय:

भद्रा १५।१३ से २५।३२ तक, मार्गी बुध १४।८०, सौभाग्य सुन्दरी व्रत

कृष्ण चतुर्थी व्रत

सुविधानाथ जयंती व दीक्षा दिवस (जैन)

भद्रा १८।१२ से २९।३७ तक

श्री महाकाल भैरवाष्टमी, भैरव जी दर्शन पूजनार्चन

तुला में शुक्र प्रवेश २०।२९, प्रथमाष्टमी (उड़ीसा), वैधृतिपुण्य

भद्रा २९।२४ से, श्रवण में मंगल प्रवेश १२।५८, A

भद्रा १७।५० तक, महावीर स्वामी दीक्षा दिवस

ज्येष्ठा में सूर्य प्रवेश ९।२०, उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, B

Bपद्म पभु मोक्ष दिवस (जैन), डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जन्म दिवस

भद्रा २३।०९ से, प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर महाराज पुण्य तिथि

भद्रा १२।१६ तक, वृश्चिक में बुध प्रवेश ९३।३९, स्वाती में C

ज्येष्ठा १ में प्लूटो प्रवेश २९।०७, भौमवती अमावस्या, D

देवपितृकार्याऽमावस्या, कमला जयंती, झंडा दिवस

Aदिसम्बर मास १२ ता. ३१ प्रा. C शुक्र प्रवेश १४।५४, मास शिवरात्रि व्रत, मेला पुरमण्डल देविका स्नान (जम्मू-कश्मीर), श्री बालाजी जयंती D

मार्गशीर्ष कृ. ८ मंगल, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० नवम्बर

मू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	४	९	६	०	५	०	३	९	९	९	७
१३	१३	८	२३	१	२९	१८	१२	१२	१९	८	१६
२७	४८	५९	३८	५३	१७	२	५४	५४	३६	२०	२२
५०	२५	३९	३८	२५	१	४७	४३	४३	१६	२४	३१
६०	४१	४६	४६	४	६८	४	३	३	१	१	२
४४	०२	०२	३३	५	५१	७	११	११	५३	३२	२१
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
ज्येष्ठा	मूल	उ.षा.	पूर्वा.षा.	अभि.	श्रवण	धनि.	शत.	पूर्वा.भा.	उत्त.भा.	रेवती	अश्वि.

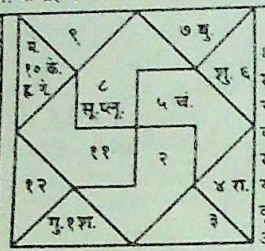

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

इस मास में पांच बुधवार एवं कृष्ण पक्ष की तिथि क्षय श्रेष्ठ है। पांच बुधवार का फल—"बुधस्य पंचवारा: स्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥" प्रजा में आरोग्यता तथा सुख-समृद्धि की बढ़ोत्तरी होगी। धान्यादि की पैदावार बढ़ेगी। परन्तु मकर राशि में तथा पक्षान्त में वृश्चिक राशि में चार ग्रहों का योग भूमण्डल के अनेक स्थानों पर प्रकृति-प्रकोप, मानव कृत विस्फोट से जन-धन हानि तथा समृद्ध देशों द्वारा अपनी विस्तारवादी दुर्नीति का प्रचार-प्रसार किया जायेगा। भारत सरकार को भी सीमावर्ती क्षेत्र में सैनिक गतिविधियां तेज करने में मजबूर होना पड़ेगा। वरना विदेशी आतंकवादी अपनी गतिविधि भारत के अनेक भागों में करने में सफल होंगे। जीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई बढ़ने से श्रमजीवी वर्ग में असन्तोष व्याप्त होगा। **तेजी-मन्दी विचार**—पक्षारम्भ में सोना, चांदी, तांबा, जौ, चना, गेहूं आदि में घटाबढ़ी से मंदी का झटका आयेगा। ता. २५ नवं. को मार्गी बुध होने से चलते भावों में उलटफेर होगी। मंदी वस्तु में तेजी आने की प्रबल संभावना है। पक्षान्त में साधारण घटाबढ़ी से मन्दी की चाल निकलेगी। यहां आई मन्दी वस्तु का स्टाक कर आगे लाभ होगा। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में समुद्र तटवर्ती तथा पर्वतीय प्रदेशों में वायुवेग के साथ बादल चाल तथा कुछ स्थानों पर वर्षा होगी। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर के पहाड़ों पर हिमपात होने से मैदानी भागों में शीत प्रकोप बढ़ने लगेगा। **शकुन विचार**—मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी को बादल, मेघ घटायें उठें तो वर्षा आने से कृषि में हानि होती है तथा धान्यों में तेजी हो। तिथि ७ को गतदिन आकाश निर्मल रहे तो आगे बैशाख में अनाज मन्दा हो तथा यदि बादल हो तो अनाज तेज होगा।

ता. ७ दिसम्बर ❖ मार्गशीर्ष कृ. ३० मंगल, प्रातः ५घं. ३०मि. के ग्रहस्पष्ट

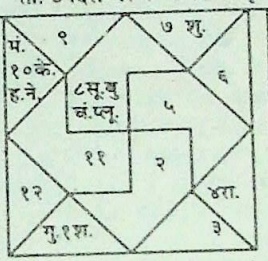

मू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	७	९	७	०	६	०	३	९	९	९	७
२०	१०	१४	०	१	७	१७	२२	१२	१९	८	१६
३३	२२	२२	४८	२८	२२	३५	३२	३२	५०	३१	३८
४६	३५	३२	११	५४	२८	२६	२७	२७	२०	२७	५३
६०	४१	४६	७५	२	६९	३	३	३	१	१	२
५५	३८	१५	२७	४३	५९	३६	११	११	११	४१	२०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
ज्येष्ठा	मूल	श्रवण	शत.	अभि.	स्वाति	भरणी	पूर्वा.	श्रवण	श्रवण	उत्त.भा.	अश्वि.

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन्न प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१९ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता.	तिथि				स्टै.टा.			नक्षत्र				स्टै.टा.		योग				स्टै.टा.		करण				स्टै.टा.		दिन मान		उदय		अस्त		दिनांक प्र.	मु.	अ.	चन्द्र मंचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः				गति:	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त	
मि	ति	वा	घ	प	घ	मि		न	घ	प	घ	मि		यो	घ	प	घ	मि		क	घ	प	घ	मि		घं	मि	घ	मि	घ	मि				भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	५ घं. ३० मि				क. वि.	घ	मि	घ	मि
१७	१	बु	५८	५२	३०	४०		अ	३५	२०	२१	१५		धृ	९	१२	१०	४८		कि	२५	३५	१७	२१		२५	३७	७	०७	१७	२२		२३	२९	८	ध. २१।१५	७	२१	३४	४१	९०.२६	७	२७	१८	१५
१८	२	गु	६०	००	-	-		मू	४३	००	२४	१९		शू	११	३०	११	४३		बा	३२	१७	२०	०२		२५	३६	७	०७	१७	२२		२४	३०	९	धनु	७	२२	३५	३७	५७	८	४०	१९	०७
१९	२	शु	५	२७	९	१९		पूर्वा	५०	३२	२७	२१		ग	१३	४७	१२	३९		कौ	५	२७	९	१९		२५	३४	७	०८	१७	२२		२५	रम	१०	धनु	७	२३	३६	३४	५९	९	३७	२०	०९
२०	३	श	११	५७	११	५६		उत्त	५७	४०	३०	१३		ध्रु	१५	५५	१३	३१		ग	११	५७	११	५६		२५	३३	७	०९	१७	२३		२६	२	११	म. १०।७४	७	२४	३७	३३	५९	१०	३४	२१	०६
२१	४	र	१७	४०	१४	१४		ध्रु	६०	००	-	-		धृ	१७	३०	१४	१०		वि	१७	४०	१४	१४		२५	३२	७	१०	१७	२३		२७	३	१२	मकर	७	२५	३८	३२	०.१	११	२२	२२	०३
२२	५	चं	२२	३५	१६	१२		ध्रु	३	५५	८	४४		व्या	१८	३०	१४	३४		बा	२२	३५	१६	१२		२५	३१	७	१०	१७	२३		२८	४	१३	कुं. २१।५०	७	२६	३९	३२	०	१२	०४	२३	०४
२३	६	मं	२५	५७	१७	३४		शत	९	०२	१०	४८		ह	१८	२०	१४	३१		कौ	२५	५७	१७	३४		२५	३०	७	११	१७	२३		२९	५	१४	कुम्भ	७	२७	४०	३२	१	१२	२५	२३	५७
२४	७	बु	२७	४२	१८	१६		भ	१२	३२	१२	१२		व	१६	५७	१३	५८		व	२७	४२	१८	१६		२५	२९	७	११	१७	२४		३०	६	१५	मी. ३०।४९	७	२८	४१	३३	२	१३	१७	२४	५४
२५	८	गु	२७	२७	१८	११		पूर्वा	१४	१५	१२	५४		सि	१४	०५	१२	५०		ब	२७	२७	१८	११		२५	२८	७	१२	१७	२४		पौ.	७	१६	मीन	७	२९	४२	३५	३	१४	१८	१	५३
२६	९	शु	२५	१०	१७	२७		पूर्वा	१३	५०	१०	४८		ध्रु	९	३५	११	०३		कौ	२५	१०	१७	१७		२५	२७	७	१३	१७	२५		२	८	१७	मीन	८	००	४३	३८	४	१४	४५	२	४८
२७	१०	श	२०	५०	१५	३३		उत्त	३	११	३५	११	५१	व	३	३०	८	३०		ग	२०	५०	१५	३३		२५	२६	७	१३	१७	२५		३	९	१८	मे. ११।५१	८	०१	४४	४२	५	१५	१७	३	४५
२८	११	र	१४	४२	१३	०७		अ	७	३०	१०	१४		शि	४७	०७	२६	०५		वि	१४	४२	१३	०७		२५	२५	७	१४	१७	२५		४	१०	१९	मेष	८	०२	४५	४७	५	१६	००	४	४२
२९	१२	चं	७	०७	१०	०५		भ	१	५२	७	०५		सि	३७	१५	२२	०८		बा	७	०७	१०	०५		२५	२४	७	१४	१७	२६		५	११	२०	सू. १३।१९	८	०३	४६	५२	५	१६	३५	५	३९
०	१३	चं	५८	२७	३०	३७		०	०	०	०	०		०	०	०	०	०		०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०		०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३०	१४	मं	४९	००	२६	५१		मू	४७	३२	२६	१६		मा	२६	३७	१७	५४		ग	२३	४७	१६	४६		२५	२३	७	१५	१७	२६		६	१२	२१	वृष	८	०४	४७	५७	६	१७	२२	६	२६
पौ.	१५	बु	३९	२५	२३	०१		पू	३०	५०	२३	११		शु	४५	४०	१३	३१		वि	१४	१५	१२	५७		२५	२३	७	१५	१७	२७		७	१३	२२	मि. १२।४४	८	०५	४९	०३	६	१८	००	७	२३

ता. ८ से २२ दिसम्बर सन् १९९९ ई., राष्ट्रीय मिति १७ मार्गशीर्ष से १ पौष तक। रवि दक्षिण-उत्तरायणे, दक्षिण गोले, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है

अनुराधा में बुध प्रवेश २९।०७, रुद्र व्रत (पीड़िया व्रत)
चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्घ
रमजान मु. मास ९ प्रारम्भ, रोजा प्रारम्भ, द्वितीया वृद्धि
भद्रा २५।०५ से, श्रवण ४ में हर्षल प्रवेश १२।५२
भद्रा १४।१४ तक, विनायक ४ व्रत
नाग पंचमी (दक्षिण भारत में), श्रीराम विवाहोत्सव, गुरु तेगबहादुर A
स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पाषष्ठी (महाराष्ट्र), गुहा षष्ठी व्रत, श्री राम कलेवा, B
भद्रा १८।१६ से ३०।१५ तक, मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती
मूल धनु में सूर्य प्रवेश १२।२०, संक्रांति मु. ३०, सौर पौष मासारंभ C
विशाखा में शुक्र प्रवेश २२।५६, कल्पादि नवमी, जैन दिवाकर चौथ पुण्य, D
भद्रा २६।२० से, धनिष्ठा में मंगल प्रवेश १९।४५, ज्येष्ठा में बुध E
भद्रा १३।०७ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत सबका, मौनी एकादशी (जैन), F
सोम प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, व्यंजन द्वादशी, गुरु ग्रन्थ साहिब का G जयंती, संभवनाथ जयंती
त्रयोदशी क्षय: H
भद्रा २६।५१ से, मार्गी गुरु १२।५५, पिशाच मोचन श्राद्ध, विदुर भैरव H
भद्रा १२।५७ तक, सायन मकर में सूर्य प्रवेश १३।२०, रवि उत्तरायणे J

A बलिदान दिवस, पंचक प्रारम्भ २१।५० से B मूलक रूपिणी षष्ठी (बंगाल में) C (धनु मल मास प्रारंभ), दुर्गाष्टमी D महानन्दा नवमी, व्यतिपात पुण्य E प्रवेश १६।१८, श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष दिन (जैन), पंचक समाप्त ११।५१ F श्री गीता जयंती, बैकुण्ठ एकादशी व्रत, मातंगी जयंती G वार्षिक उत्सव, कृत्तिका दीपम J शिशिर ऋतु प्रारम्भ, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं, श्री दत्तात्रेय जयंती, अन्नपूर्णा जयंती, राष्ट्रीय पौष मासारंभ

मार्गशीर्ष शु. ८ गुरु, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १६ दिसम्बर

मू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१०	०	७	०	६	०	३	९	९	९	७
२०	२०	२१	१३	१	१७	१७	१२	१२	२०	८	१६
४२	१७	१९	४	११	५७	५	३	३	११	४७	५९
३५	०	३१	३३	५१	६	४९	५१	५१	२०	२२	४९
६१	९०	४६	८७	०	७१	२	३	३	२	१	२
३	८८	२७	२२	५१	८	४९	११	११	३२	५१	१९
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-	-
८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण

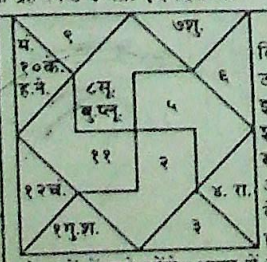

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

इस वर्ष मार्गशीर्ष आदि चार मासों में शुक्ल पक्ष की तिथि क्षय होने से विश्व के अनेक देशों में राजनैतिक उथल-पुथल का परिदृश्य दिखाई देगा। प्राचीन दैवज्ञों ने इसका फल इस प्रकार लिखा है — **''मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्ल पक्षे तिथि क्षयः। छत्र भंगः प्रजापीड़ा दुर्भिक्ष च समादिशेत्॥''** आपसी वैर विरोध से पश्चिमी एशिया में अशांति बढ़ेगी। प्रजा पीड़ा, दुर्भिक्ष भय तथा किसी देश के विशिष्ठ राजनयिक की मृत्यु अथवा हत्या से छत्र भंग होगा। स्वार्थी पदलोलुप नेता देश की भलाई न कर विभिन्न घोटालों में लगे रहेंगे। भारत में सत्ता संघर्ष के लिए ओछी राजनीति का नजारा सामने आयेगा। तिथि ८ को धनु संक्रांति मार्गशीर्ष मास में लगी है। जिसके फलस्वरूप भी दुर्भिक्ष भय से प्रजा पीड़ित हो तथा महंगाई में तीव्र वृद्धि की संभावना बढ़े। **तेजी-मन्दी विचार** — इस पक्ष में द्वितीया तिथि की वृद्धि तथा त्रयोदशी का क्षय एवं चन्द्रदर्शन गुरुवार का होने के कारण बाजार भावों में मन्दी का रुख बना रहे। यथा — **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिके महंगाई हट जाय॥** **आकाश लक्षण** — पूर्वोत्तर भागों एवं मध्य भारत के कुछ भागों में आकस्मिक बादल चाल, वर्षा वायुवेग के साथ होगी। पहाड़ों पर बर्फ गिरने से मैदानी भागों में शीत लहर चलने की संभावना है। पक्षान्त में राजस्थान, दिल्ली, पंजाब में वायु वेग से वर्षा का योग है। **शकुन विचार** — मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी को बिजली चमके और बादल चाल हो तो आगे श्रावण मास में अच्छी वर्षा हो। यथा — **'मार्गशीर्षस्य चाष्टम्यां दृश्यंते विद्युतो यदा। तदा वृष्टिः श्रावणे च मासि संजायते ध्रुवम्॥'** मार्गशीर्ष सुदी में जिन नक्षत्रों में वर्षा होवे उन्हीं नक्षत्रों में आषाढ़ मास में वर्षा होती है।

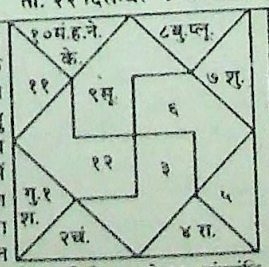

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	१	९	७	०	६	०	३	९	९	९	७
५	२५	२५	२१	१	२५	१६	११	११	२०	८	१७
४९	२२	५८	५८	९	५	५०	४४	४४	२७	५८	१३
३	५६	१८	२३	५१	२६	२०	४६	४६	००	५२	३५
६१	११७	४६	९०	०	७१	२	३	३	२	१	२
६	४१	३१	४४	२५	४५	११	११	११	४४	५९	१५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण

मार्गशीर्ष शु. १५ बुध, प्रातः ५घं. ३०मि. के ग्रहस्पष्ट

धर्मसन्न प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष कृष्ण पक्ष-२० श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

रा. मि	तिथि ति	वा	घ	प	घं	मि	स्टै.टा.	नक्षत्र न	घ	प	घं	मि	स्टै.टा.	योग यो	घ	प	घं	मि	स्टै.टा.	करण क	घ	प	घं	मि	स्टै.टा.	दिन मान घं	मि	रात्रि मान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	म.	अं.	चन्द्र संचार	भा.स्टै.टा. रा.	अं.	क.	वि.	वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
२	१	गु	३०	००	१९	१६	आ	३२	२०	२०	१२	शु	४४	४०	९	०८	बा	४	३७	९	०७	२५	२२	७	१६	१७	२७	८	१४	23	मिथुन	८	०६	५०	०९	९	१८	२३	८	३१
३	२	शु	२१	२२	१५	४९	पुन	२५	३५	१७	३०	ऐं	४४	२०	२५	००	ग	२१	२२	१५	४९	२५	२३	७	१६	१७	२८	९	१५	24	क. १२।०१	८	०७	५१	१६	८	१९	१३	९	२२
४	३	श	१३	४२	१२	४६	पु	१९	४७	१५	१२	वै	३५	३०	२१	२९	वि	१३	४२	१२	४६	२५	२३	७	१७	१७	२८	१०	१६	25	कर्क	८	०८	५२	२४	७	२०	२१	१०	०८
५	४	र	७	३५	१०	१९	श्ले	१५	३७	१३	३२	वि	२७	५७	१८	२८	बा	७	३५	१०	१९	२५	२४	७	१७	१७	२९	११	१७	26	सिं. १३।४२	८	०९	५३	३१	८	२१	०५	१०	५६
६	५	चं	३	१२	८	३४	म	१३	१५	१२	३५	प्री	२१	५२	१६	०२	तै	३	१२	८	३४	२५	२५	७	१७	१७	३०	१२	१८	27	सिंह	८	१०	५४	३१	८	२१	५१	११	२१
७	६	मं	०	४०	७	३४	पूफा	१२	३७	१२	२१	आ	१७	२०	१४	१४	व	०	४०	७	३४	२५	२६	७	१८	१७	३०	१३	१९	28	क. १८।५५	८	११	५५	०७	९	२२	५२	११	५४
८	७	बु	०	१५	७	२४	उफा	१४	०२	१२	५५	सौ	१४	२२	१३	०३	ब	०	१५	७	२४	२५	२७	७	१८	१७	३१	१४	२०	29	कन्या	८	१२	५६	५६	९	२३	४५	१२	३६
९	८	गु	१	३७	७	५८	ह	१७	१०	१४	११	शो	१२	४०	१२	२३	कौ	१	३७	७	५८	२५	२८	७	१९	१७	३२	१५	२१	30	तु. २७।०५	८	१३	५८	०५	९	२४	३८	१३	१७
१०	९	शु	४	४५	९	१३	चि	२२	०५	१६	०९	अ	१२	२७	१२	१८	ग	४	४५	९	१३	२५	३०	७	१९	१७	३२	१६	२२	31	तुला	८	१४	५९	१४	९	१	२३	१३	४८
११	१०	श	९	२२	११	०४	स्वा	२८	०५	१८	३३	मु	१०	४२	१२	३६	वि	९	२२	११	०४	२५	३१	७	१९	१७	३३	१७	२३	J1	तुला	८	१६	००	२३	९	२	२८	१४	१८
१२	११	र	१५	०५	१३	२१	वि	३५	०२	२१	२०	धृ	१४	४२	१३	१२	बा	१५	०५	१३	२१	२५	३२	७	१९	१७	३४	१८	२४	2	वृ. १३।१७	८	१७	०१	३२	९	३	१८	१४	४८
१३	१२	चं	२१	१५	१५	५०	अनु	४२	२७	२४	१९	शू	१६	४२	१४	०१	तै	२१	१५	१५	५०	२५	३४	७	२०	१७	३४	१९	२५	3	वृश्चिक	८	१८	०२	४१	९	४	२८	१५	१८
१४	१३	मं	२७	५७	१८	३१	ज्ये	५०	१०	२७	२४	गं	१९	०२	१४	५७	व	२७	५७	१८	३१	२५	३६	७	२०	१७	३५	२०	२६	4	ध. २७।५४	८	१९	०३	५०	१०	४	५०	१५	४८
१५	१४	बु	३४	३७	२१	११	मू	५७	४७	३०	२७	वृ	२१	२०	१५	५२	वि	१	२०	७	५२	२५	३८	७	२०	१७	३६	२१	२७	5	धनु	८	२०	०५	००	१०	५	४०	१६	१८
१६	३०	गु	४१	००	२३	४४	पूषा	६०	००	-	-	ध्रु	२३	३०	१६	४४	च	७	५०	१०	२८	२५	३९	७	२०	१७	३६	२२	२८	6	धनु	८	२१	०६	१०	९	६	३०	१६	४८

तिथि: स्टै.टा. प्रा. ५ घं. ३० मि. क. उदय घं. मि. अस्त घं. मि.

तिथि: स्टै.टा. प्रा. ५ घं. ३० मि. क. उदय घं. मि. अस्त घं. मि.

ता. २३ दिस. ९९ से ६ जन. सन् २०००ई., राष्ट्रीय तिथि २ से १६ पौष तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।

बुध पूर्व में अस्त २२।२०, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

भद्रा २६।१७ से,

भद्रा ९२।४६ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, वैधृति पुण्य, क्रिसमस डे, A

वृश्चिक में शुक्र प्रवेश ७।५०, मेला जोड़ प्रारम्भ ३ दिन का (पंजाब)

कुंभ में मंगल प्रवेश १०।११, मूल धनु में बुध प्रवेश १२।०१, B

भद्रा ७।३४ से १९।३० तक, अनुराधा में शुक्र प्रवेश २६।२३, C

पू.षा. में सूर्य प्रवेश १४।३२, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध

जिन सागर पुण्य तिथि, शहादते हजरत अली

भद्रा २२।०८ से, ईसाई नव वर्ष की पूर्व संध्या का पर्व न्यू इयर इव

भद्रा ११।०४ तक, श्री पर्श्वनाथ जयंती, जनवरी मास १ ता. ३१ D

सफला एकादशी व्रत सबका

D सन् २००० ई. प्रारम्भ, नव वर्ष दिवस

भद्रा १८।३१ से, शतभिषा में मंगल प्रवेश २४।२८, पू.षा. में E

भद्रा ७।५२ तक, शबे-ए-कदर

देवपितृकार्याऽमावस्या, वकुला अमावस्या (उड़ीसा)

Aईसा जयंती, महामना मदनमोहन मालवीय जयंती B वक्री भरणी १ में शनि प्रवेश ८।१५ C जोड़ मेला समाप्त E बुध प्रवेश २६।४२, भौम प्रदोष व्रत, श्री चन्द्रप्रभु जयंती (जैन), मास शिवरात्रि व्रत

पौष कृ. ८ गुरु, प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० दिसम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	५	१०	८	०	७	०	३	९	९	९	७
१३	१८	२	४	१	४	१६	११	११	२०	९	१७
५८	४६	१०	११	१८	४१	३५	१९	१९	४९	१५	३१
५	३९	३१	२६	५५	४३	१९	२०	२०	४३	११	१३
६१	७४	४६	९२	२	७२	१	३	३	२	२	२
९	४	३२	३३	४	२३	२३	११	११	५८	६	८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
८	४	९	९	९	९	८	९	९	४	४	९
पू.षा.	मूल	श्रत.	पू.भा.	अश्वि.	आर्द्र.	भरणी	पुष्य	श्रवण	श्रवण	उ.भा.	रोहि.

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदयकाल की हैं]

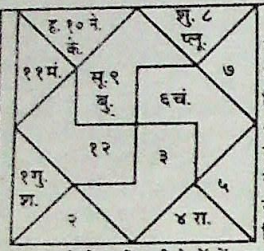

इस मास का प्रारम्भ गुरुवार से हुआ है एवं तारीख २६ दिसम्बर से वृश्चिक राशि में शुक्र आने से उत्तम फलप्रद है। यथा—"**वृश्चिके च गते शुक्र सर्वधान्य समर्घता। लोकस्तु निर्भयस्तत्र सुख स्वस्थं प्रवर्तते॥**" जनता में धार्मिक प्रवृत्ति अधिक बढ़ेगी। कुछ बड़े राष्ट्र शान्ति स्थापना के प्रयासों में संलग्न होंगे। किन्तु पक्ष मध्य से सूर्य-बुध का शुक्र, हर्षल, नेपच्यून, प्लूटो से द्विर्दादश योग एवं राहु से षडाष्टक योग होने से शांति कार्य पूर्ण सफल नहीं हो सकेंगे। सत्तापहरण, जन विद्रोह, पारस्परिक मतभेदादि से बड़े राष्ट्रों के विकास में बाधा उत्पन्न होगी। पश्चिमी देशों में अशान्ति के बादल मंडरायें। कहीं आन्तरिक विद्रोह से शासन परिवर्तन तथा आपसी सम्बन्धों में कटुता बढ़े। अरब, इजराइल, ईराक, ईरान, टर्की में नेष्ट फलों की अधिकता रहेगी। तेजी-मन्दी विचार — ता. २३ दिसं. पक्षारम्भ से गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, चांदी, तांबा, घृत, तेल आदि में मन्दी का झटका आये। मन्दी वस्तु का स्टाक करना आगे लाभप्रद रहेगा। ता. २७ दिसं. को कुंभ का मंगल आने से रुई, चांटी में विशेष घटाबढ़ी तथा अनाज, सोरा, गुड़, खांड में तेजी होगी। पक्षान्त में अस्थाई तेजी का योग है। ध्यान देकर कार्य करें। आकाश लक्षण — पक्षारम्भ में आसाम, बंगाल, नेपाल, भूटान, हिमाचल प्रदेश, उ.प्र. में बादल चाल व कहीं-कहीं वर्षा के योग हैं। शीत प्रकोप की वृद्धि से राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब में शीत लहर एवं पाला पड़ने की संभावना रहेगी। शकुन विचार — पौष कृष्ण पंचमी को यदि बादल वर्षा हो तो धान्यादि में मन्दी का संचार हो तथा अष्टमी को बादल चाल व वर्षा हो तो आगे फरवरी मास में अनाज तेज हो। इस पक्ष में अमावस्या को मूल नक्षत्र का योग अप्रत्यक्ष रूप में ही बना है अत: प्रकृति-प्रकोप अथवा रोगादि से कृषि में हानि हो।

ता. ६ जनवरी ❖ पौष कृ. ३० गुरु, प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

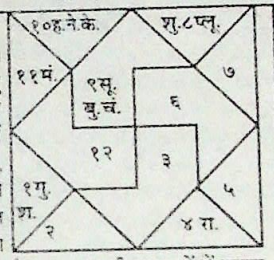

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	८	१०	८	०	७	०	३	९	९	९	७
२१	१२	७	१५	१	१३	१६	१०	१०	२१	९	१७
६	५१	३६	५	३७	९	२७	५७	५७	११	३०	४५
१०	३	१८	२५	२४	४९	४५	४	४	३	१०	५३
६१	७३	४६	९४	३	७२	०	३	३	३	२	२
९	३	३१	५५	२६	५०	३९	११	११	८	१२	२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
८	४	९	९	९	९	८	९	९	४	४	९
पू.षा.	मूल	श्रत.	पू.भा.	अश्वि.	आर्द्र.	भरणी	पुष्य	श्रवण	श्रवण	उ.भा.	रोहि.

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष शुक्ल पक्ष-२१ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. ७ से २१ जनवरी सन् २०००, राष्ट्रीय मिति १७ पौष से १ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है

तारीख	तिथि				स्टै.टा.		नक्षत्र				स्टै.टा.		योग				स्टै.टा.		करण				स्टै.टा.		दिन मान घं.	मि.	रात्रि मान घं.	मि.	सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.	घं.	मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है
१	१	शु	४६	५२	२६	०५	पुष्य	५	०५	९	२२	व्या	२५	१७	१७	२७	किं	१३	५७	१२	५५	२५	४१	७	२०	१७	३७	२३	२९	७	म. १६।०४	८	२२	०७	१९	६	५	५५	१७	१८	जुमातुलविदा (मु.) A सुरीश्वर पुण्य विभुति (जैन)
१८	२	श	५२	२	२८	०९	उत्त	११	५०	१२	०४	हर्ष	२६	४५	१८	०२	बा	१९	३७	१५	११	२५	४३	७	२०	१७	३८	२४	३०	८	मकर	८	२३	०८	२८	८	६	५०	१८	१६	ब्यष्टा में शुक्र प्रवेश २६।४२, चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्ध
१९	३	र	५५	१५	२२	३०	श्र	१७	५०	१४	२८	वज्र	२७	२०	१८	१९	तै	२४	१७	१७	०३	२५	४५	७	२०	१७	३९	२५	मध्य	९	कुं. २७।४२	८	२४	०९	३६	९	७	४३	१९	१४	पंचक प्रारंभ २७।३२ से, सव्वाल मु. मास १० प्रारम्भ, ईदुलफितर, श्री यतीन्द्र A
२०	४	चं	५९	२७	३१	०७	ध	२२	५२	१६	२९	सि	२७	२७	१८	१९	व	२८	०७	१८	३५	२५	४७	७	२०	१७	३९	२६	२	१०	कुंभ	८	२५	१०	४५	९	८	३५	२०	१२	भद्रा १८।३५ से ३१।०७ तक, विनायक ४ व्रत
२१	५	मं	६०	००	-	-	शत	२६	५०	१८	०४	व्य	२६	२७	१७	५५	ब	३०	३२	१९	३३	२५	४९	७	२०	१७	४०	२७	३	११	कुंभ	८	२६	११	५४	८	९	२७	२१	१०	उ.षा. में सूर्य प्रवेश १६।३१, व्यतिपात पुण्य
२२	५	बु	१	२२	७	५३	पूभा	२९	२५	१९	०६	व	२४	३२	१७	०९	बा	१	२२	७	५३	२५	५०	७	२०	१७	४१	२८	४	१२	मी. १२।५३	८	२७	१३	०२	८	१०	१८	२२	८	मार्गी शनि १०।३० C पौंगल पर्व (दक्षिण भारत)
२३	६	गु	१	४०	८	००	उभा	३०	३२	१९	३३	प	२१	२२	१५	५३	तै	१	४०	८	००	२५	५२	७	२०	१७	४२	२९	५	१३	मीन	८	२८	१४	१०	८	११	०९	२३	६	उ.षा. में बुध प्रवेश १०।११, लोहड़ी उत्सव (पंजाब हरियाणा में)
२४	७	शु	०	३२	७	३३	रे	३०	०५	१९	२२	शि	१६	५७	१४	०७	व	०	३२	७	३३	२५	५४	७	२०	१७	४३	माघ	६	१४	मे. १९।५२	८	२९	१५	१८	७	१२	०१	२४	४	भद्रा ७।३३ से १९।०० तक, मकर में सूर्य प्रवेश २३।०२, संक्रांति मु. ३०, सौरमाघB D मन्वादि तिथि
०	८	शु	५७	४५	३०	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी क्षय:
२५	९	श	५३	२०	२८	४०	अ	२८	०२	१८	३३	मि	११	२०	११	५२	बा	२५	४५	१७	३८	२५	५७	७	२०	१७	४४	२	७	१५	मेष	९	००	१६	२५	७	१२	५३	१	२	मकर में बुध प्रवेश १०।४३, संक्रांन्ति पुण्यकाल पूर्वाह्न में, मल मास समाप्त, C
२६	१०	र	४७	३५	२६	२२	भ	२४	३५	१७	१०	सा	५६	२५	९	०६	तै	२०	३५	१५	३४	२५	५९	७	२०	१७	४४	३	८	१६	वृ. २२।१३	९	०१	१७	३२	६	१३	४६	२	००	शाम्ब दशमी (उड़ीसा), आचार्य जिन सागर पुण्य दिवस (जैन), रवि दशमी
२७	११	चं	४०	३२	२३	३३	कृ	१९	४७	१५	१५	शु	४७	३५	२६	२२	व	१४	१२	१३	०१	२६	०१	७	२०	१७	४५	४	९	१७	वृष	९	०२	१८	३८	६	१४	३९	२	५८	भद्रा १३।०१ से २३।३३ तक, पवित्रा (पुत्रदा) एकादशी व्रत स्मार्त वैष्णवानां, D
२८	१२	मं	३२	३०	२०	२३	गो	१४	००	१२	५६	ब्र	३७	५५	२२	३०	ब	६	४२	१०	०१	२६	०४	७	२०	१७	४६	५	१०	१८	मि. २३।४० मिथुन	९	०३	१९	४४	५	१५	३१	३	५६	पुत्रदा एकादशी व्रत निम्बार्कानां E चान्द्र पूर्णिमा व्रत, वैधृति पुण्य
२९	१३	बु	२४	१०	१७	००	पू	७	३०	१०	२०	ऐं	२७	५२	१८	२९	व	२४	१०	१७	००	२६	०७	७	२०	१७	४७	६	११	१९	क. २३।३३	९	०४	२०	४९	५	१६	२१	४	५४	मूल धनु में शुक्र प्रवेश २४।५७, श्रवण १ में नेपच्यून प्रवेश १४।०९, प्रदोष व्रत
३०	१४	गु	१५	३७	१३	३४	आ	४४	०७	७	३८	वै	१७	४५	१४	२५	व	१५	३७	१३	३४	२६	१०	७	१९	१७	४८	७	१२	२०	कर्क	९	०५	२१	५४	४	१७	१०	५	५२	भद्रा १३।३४ से २३।५२ तक, सायन कुम्भ में सूर्य प्रवेश २३।५३, सत्य व्रत, E
माघ	१५	शु.	७	०७	१०	१०	पु	४७	५५	२६	२९	वि	५८	१८	३७	२८	ब	७	०७	१०	१०	२६	१२	७	१९	१७	४८	८	१३	२१		९	०६	२२	५८	४	१७	५७	६	५०	पु.भा. में मंगल प्रवेश २९।४७, श्रवण में बुध प्रवेश ९।५२, पूर्णिमा पुण्य, F

B मासारम्भ, मकर संक्रान्ति, श्री गुरु गोविन्दसिंह जयंती, श्री राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म पुण्यं (जैन), दुर्गाष्टमी, गंगा सागर यात्रा, माघ बिहू (आसाम), भोगी (दक्षिण भारत, पंचक समाप्त १९।२२) F पौषी पूर्णिमा, शाकम्भरी जयंती, माघ स्नान प्रारम्भ, राष्ट्रीय माघ मासारंभ, काशीघाट दशाश्व मेधस्नानारंभ, खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में अदृश्य)

पौष शु. ७ शुक्र, प्रातः ५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १४ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	११	१०	८	०	७	०	३	९	९	९	७
२९	२२	१३	२७	२	२२	१६	१०	१०	२१	९	१८
१५	११	४८	५९	१०	५३	२५	३१	३१	३६	४७	१
१८	२१	१६	१९	१४	५६	४३	३८	३८	४६	५५	३६
६१	८५	४६	९९	४	७३	०	३	३	३	२	१
७	१२	२७	४	५७	१४	१५	११	११	१८	१५	५३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

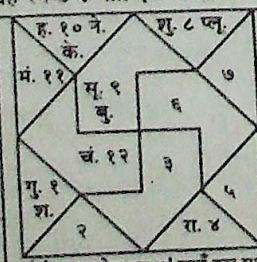

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. २१ जनवरी ❖ पौष शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं, ३० मि. के ग्रहस्पष्ट

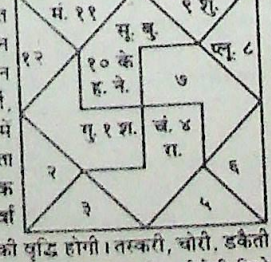

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	३	१०	९	०	८	०	३	९	९	९	७
६	३	१९	९	२	१	१६	१०	१०	२२	९	१८
२२	३९	१३	४१	४८	२७	३०	९	९	०	३	१४
५८	४९	७	२९	३९	२३	३	२३	२३	९	४३	१६
६१	८९	४६	१०१	६	७३	१	३	३	३	२	१
४	५९	२१	४९	११	२९	२	११	११	२३	१७	४१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३

इस पक्ष के मध्य से मकर राशि में हर्शल, नेपच्यून सहित पाँच ग्रहों का योग बनने से विश्व के कुछ राष्ट्रों में विमान दुर्घटना, सैन्य संघर्ष, सत्तापहरण, भीषण हत्याकाण्ड से जन मानस पीड़ित होगा। पश्चिमी देश ईरान, ईराक, इजराइल, तुर्की, अफगानिस्तान व पाकिस्तान के अलावा कई पश्चिमी देशों में धोखाबाजी की राजनीति का जोर बढ़ेगा। कहीं विख्यात नेता का पतन अथवा अवसान से जनता स्तब्ध रहेगी। **यथा—'एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥'** यहाँ इस पक्ष में शनि भी मार्गी हो रहा है जिससे जनता में शीतजन्य रोगों की वृद्धि होगी। तस्करी, चोरी, डकैती की वारदातें अधिक बढ़ने से असामाजिक तत्वों का बोलबाला बढ़ेगा। भारत में भी उपरोक्त फलों की अधिकता दिखाई देगी जिसे रोकने के लिए प्रशासन को कड़े कदम उठाने पड़ेंगे। **तेजी-मन्दी विचार**—पक्षारम्भ में शनिवार का चन्द्रदर्शन सोना, चाँदी, रुई, सरसों, सूत, वस्त्रों में तेजी करेगा। ता. १२ जन. को मार्गी शनि चलते भावों में परिवर्तन करेगा। सुदी एकादशी को कृत्तिका नक्षत्र का योग होने से धान्य व लाल वस्त्र या वस्तु का संग्रह करने वालों को आगे वर्षा ऋतु में लाभ हो। **यथा—'एकादश्यां पौष शुक्ले कृत्तिका भोगतः स्मृतः। रक्तवस्तु महाल्लाभः सुधान्यात्प्रथमाब्दे॥'** **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में शरदी तथा वायुवेग की अधिकता से तापक्रम गिरेगा। पर्वतीय इलाकों में हिमपात होने से दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, गुजरात में शीतलहर चलेगी। पक्ष मध्य में बादल चाल अथवा कहीं-कहीं साधारण वर्षा भी होगी। **शकुन विचार**—पौष शुक्ल सप्तमी से अगले दो दिन में यदि बादल, बिजली व गर्जना हो तो आगे चौमासा में श्रेष्ठ वर्षा होवे। पूर्णिमा को यदि आकाश बादलों से आच्छादित हो और बिजली चमके तो धान्यादि का उत्पादन अच्छा होवे।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ कृष्ण पक्ष-२२

श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. २२ जनवरी से ५ फरवरी सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति २ से १६ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि	तिथि ति	वा	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टै.टा. घं	मि	दिन मान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि रा.	अं.	क.	वि.	गति: क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं	मि	अस्त घं	मि
०	१	शु	५९	२०	३१	०३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२	२	श	५२	३२	२८	२०	ज्ये	४२	४०	२४	२३	आ	४९	३५	२७	०९	तै	२५	४२	१७	३६	२६	१५	७	१९	१७	४९	९	१४	22	सिं. २४।५३	९	०७	२४	०२	९।९	१८	४४	७	२७
३	३	र	४७	००	२६	०७	म	३८	४०	२२	४७	मौ	४२	००	२४	०७	व	१९	३५	१५	०९	२६	१७	७	१९	१७	५०	१०	१५	23	सिंह	९	०८	२५	०५	२	१९	३६	८	०५
४	४	चं	४३	१५	२४	३६	पूफा	३६	१७	२१	४९	शो	३५	४५	२१	३६	ब	१४	५७	१३	१७	२६	२०	७	१८	१७	५१	११	१६	24	कं. २७।४२	९	०९	२६	०७	१	२०	२८	८	४२
५	५	मं	४१	२०	२३	५०	उफा	३५	४२	२१	३५	अ	३०	५७	१९	४१	कौ	१२	०५	१२	०८	२६	२३	७	१८	१७	५२	१२	१७	25	कन्या	९	१०	२७	०८	१	२१	२०	९	१९
६	६	बु	४१	२७	२३	५३	ह	३७	१५	२२	१२	सु	२७	४५	१८	२४	ग	११	१५	११	४८	२६	२६	७	१८	१७	५३	१३	१८	26	कन्या	९	११	२८	०९	९।२६	२२	१२	९	५७
७	७	गु	४३	३७	२४	४४	चि	४०	३०	२३	२९	धृ	२६	०७	१७	४४	वि	१२	२२	१२	१४	२६	२९	७	१७	१७	५३	१४	१९	27	तु. २०।४४	९	१२	२९	०८	५९	२३	०८	१०	३४
८	८	शु	४७	३५	२६	१९	स्वा	४५	४२	२५	३४	शू	२५	५२	१७	३८	बा	१५	२५	१३	२७	२६	३२	७	१७	१७	५४	१५	२०	28	तुला	९	१३	३०	०७	५८	२४	००	११	१२
९	९	श	५२	५७	२८	२७	वि	५२	१०	२८	०८	गं	२९	२०	१८	००	तै	२०	१०	१५	२०	२६	३५	७	१६	१७	५५	१६	२१	29	वृ. २१।५७	९	१४	३१	०५	५७	२४	५२	११	४९
१०	१०	र	५९	१२	३०	५७	अनु	५९	३२	३१	०५	वृ	२८	३७	१८	४३	व	२६	०२	१७	४१	२६	३९	७	१६	१७	५६	१७	२२	30	वृश्चिक	९	१५	३२	०२	५७	१	४१	१२	२७
११	११	चं	६०	००	-	-	ज्ये	६०	००	-	-	ध्रु	३०	५७	१९	३८	ब	३२	३५	२०	१७	२६	४२	७	१५	१७	५७	१८	२३	31	वृश्चिक	९	१६	३२	५९	५५	२	३७	१३	०४
१२	११	मं	६	००	९	३९	ज्ये	७	२०	१०	११	व्या	३३	२०	२०	३५	बा	६	००	९	३९	२६	४५	७	१५	१७	५८	१९	२४	F1	ध. १०।११	९	१७	३३	५४	५४	३	२८	१३	४२
१३	१२	बु	१२	४०	१२	१८	मू	१४	५७	१३	१३	ह	३५	३५	२१	२८	तै	१२	४०	१२	१८	२६	४९	७	१४	१७	५८	२०	२५	2	धनु	९	१८	३४	४८	५३	४	२०	१४	५९
१४	१३	गु	१८	४५	१४	४४	पूषा	२२	१२	१६	०७	वज्र	३७	२०	२२	१०	व	१८	४५	१४	४४	२६	५२	७	१४	१७	५९	२१	२६	3	म. २२।४७	९	१९	३५	४१	५३	५	१२	१४	५९
१५	१४	शु	२४	००	१६	४९	उषा	२८	३५	१८	३९	सि	३८	३०	२२	३७	श	२४	००	१६	४९	२६	५६	७	१३	१८	०	२२	२७	4	मकर	९	२०	३६	३४	५०	६	०४	१५	३४
१६	३०	श	२८	२०	१८	३२	अ	३३	५७	२०	४७	व्य	३८	४७	२२	४३	ना	२८	२०	१८	३२	२६	५९	७	१२	१८	१	२३	२८	5	मकर	९	२१	३७	२४	५०	७	००	१६	१२

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है

प्रतिपदा क्षय:

A श्री सुभाष चन्द्र बोस जयंती

भद्रा १५।०९ से २६।०७ तक, पुष्य २ में राहु उ.षा. ४ में केतु प्रवेश २८।२२ A

श्रवण में सूर्य प्रवेश १८।५०, संकष्ट चतुर्थी व्रत, उर्स मेला निजामुद्दीन B

B (दिल्ली में)

अश्विनी २ में गुरु प्रवेश २५।०७

भद्रा २३।५३ से, भारतीय गणतंत्र दिवस

भद्रा १२।१४ तक, स्वामी विवेकानन्द तथा श्री शमानन्दाचार्य जयंती

धनिष्ठा में बुध प्रवेश २८।०२, भरणी २ में शनि प्रवेश ७।५७, कालाष्टमी C

C अष्टका श्राद्ध, लाला लाजपतराय जयंती

भद्रा १७।४१ से ३०।५७ तक, पू.षा. में शुक्र प्रवेश २१।४८, महात्मा गाँधी D

कुंभ में बुध प्रवेश २३।४७, षट्तिला एकादशी व्रत सबका, उन्मीलनी E

प्रदोष व्रत, श्री शीतल नाथ जयंती (जैन), दस्तकार दिवस

भद्रा १४।४४ से २७।४७ तक, मीन में मंगल प्रवेश २९।३४, बुध पश्चिम में F

शतभिषा में बुध प्रवेश २१।०८, मौनी अमावस्या, देवपितृकार्याऽमावस्या, G

D निर्वाण दिवस, सर्वोदय पखवाड़ा प्रा., बलिदान दिवस, स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस E महाद्वादशी, फरवरी मा.२ ता.२९, मेला मस्तु आणां (पं.) F उदय २०।४०, मेरु त्रयोदशी (जैन), श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणक (जैन), मास शिवरात्रि व्रत, रटन्ती कालिका पूजन G द्वापरयुगादि, विशालमेला हरिद्वार में, व्यतिपात पुण्यं, खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में अदृश्य)

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

माघ कृ. ८ शुक्र, प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	६	१०	९	०	८	०	३	९	९	९	७
२३	९	२४	२१	३	१०	१६	९	९	२२	१०	१८
३०	४४	३७	४२	३५	२	३९	४७	४७	२४	१९	२५
७	५९	४	४	२७	२९	४९	८	८	८	३७	३२
६०।७३		४६	१०४	७	७३	१	३	३	३	२	१
५८	१६	११	२१	२०	४२	४८	११	११	२७	१७	३०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	९	८	४	२	४	२	८	४	४	२	२
श्रवण	स्वाती	पू.भा.	श्रवण	अश्वि.	मूल	भरणी	पुष्य	उ.षा.	श्रवण	श्रवण	ज्येष्ठा

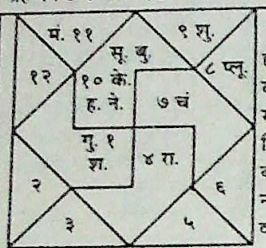

इस मास में प्रतिपदा का क्षय तथा पांच शनिवार का होना अच्छा नहीं है। फल—"शनिवारा यदा पंच पाताले कंपते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महार्घता॥" राज प्रजा में अशान्ति, उत्पात, भूकम्प, अग्निकाण्ड, बम विस्फोट, दुर्भिक्ष भय एवं महंगाई से जनता को परेशानी बढ़ेगी। पूर्वोत्तर देश चीन, जापान, बर्मा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड के साथ अमेरिका में अशान्ति बढ़े। जाति भेद व रंग भेद के अलावा धार्मिक साम्प्रदायिक दंगों से जनता में आक्रोश व्याप्त होगा। पक्षान्त में बुध का पश्चिम में उदय उत्पातकारी योग बनायेगा। कुछ राष्ट्रों की आर्थिक कमजोरी तथा श्रमिक वर्ग में असन्तोष बढ़ायेगा। कहीं प्रकृति प्रकोप से जन-धन की हानि होगी। तेजी-मन्दी विचार— प्रतिपदा का क्षय होने से धान्यादि का संग्रह करने वालों को आगे अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यथा—"माघासितस्य प्रतिपद् द्वितीया वा तृतीयका। त्रुटिता धान्य संग्रहे लाभाय वणिजां मता॥" एक फरवरी को कुंभ का बुध आने से रुई, गुड़, खाण्ड, घृत, तेल में मन्दी का झटका तथा सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल में तेजी होगी। आकाश लक्षण— इस पक्ष में बुध उदय वर्षा कारक है। पूर्वी-उत्तरी भारत के साथ दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उ.प्र. के कई भागों में बादल चाल व वर्षा होगी। कहीं-कहीं ओलावृष्टि से कृषि में हानि होगी। शीत प्रकोप बढ़ेगा। शकुन विचार— माघ कृष्ण तृतीया को यदि बादल गर्जना करें किन्तु वर्षा नहीं होवे तो जौ, गेहूँ का संग्रह करने वालों को आगे लाभ हो तथा षष्ठी को आकाश साफ रहे तो कपास की फसल कमजोर होगी। यथा—"माघ बदी छठ को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजे नहीं कपास॥"

ता. ५ फरवरी ❖ माघ कृ. ३० शनि, प्रात: ५घं. ३०मि. के ग्रहस्पष्ट

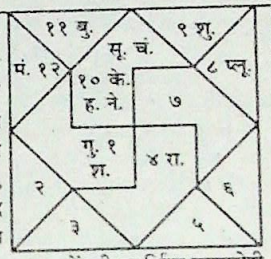

मू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	९	११	१०	०	८	०	३	९	९	९	७
२१	१५	०	५	४	१९	१६	९	९	२२	१०	१८
३७	२९	४५	३४	३८	५२	५७	२१	२१	५१	३७	३६
२४	४३	५२	२२	२३	४२	२१	४२	४२	५५	४३	४६
६०।७२		४५	१०४	८	७३	२	३	३	३	२	१
५०	३९	५९	४६	३२	५३	४१	११	११	२९	१६	१७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
४	२	४	४	२	२	२	८	४	४	२	२
श्रवण	श्रवण	पू.भा.	धनि.	अश्वि.	पू.षा.	भरणी	पुष्य	उ.षा.	श्रवण	श्रवण	ज्येष्ठा

धर्मसन फ्लाग्राफ 2606, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ शुक्ल पक्ष-२३

श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

रा. मि.	तिथि ति	तिथि स्टै.टा. वा	तिथि स्टै.टा. घ	तिथि स्टै.टा. प	तिथि स्टै.टा. घं	तिथि स्टै.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र स्टै.टा. घ	नक्षत्र स्टै.टा. प	नक्षत्र स्टै.टा. घं	नक्षत्र स्टै.टा. मि	योग वा	योग स्टै.टा. घ	योग स्टै.टा. प	योग स्टै.टा. घं	योग स्टै.टा. मि	करण क	करण स्टै.टा. घ	करण स्टै.टा. प	करण स्टै.टा. घं	करण स्टै.टा. मि	दिन मान घं	दिन मान मि	सूर्योदयास्त उदय घं	सूर्योदयास्त उदय मि	सूर्योदयास्त अस्त घं	सूर्योदयास्त अस्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
१७	१	र.	३१	३०	१९	४८	ध	३८	१५	२२	३०	व	३८	७	२२	२७	कि	०	०३	७	१३	२७	३	७	२२	१८	२	२४	२९	६	कुं. १७३	९	२२	३८	१४	३	७	४५	१६	४०
१८	२	च	३३	३०	२०	३५	श	४१	२७	२३	०६	प	३६	४२	२१	५२	बा	२	४०	८	१५	२७	६	७	११	१८	२	२५	३०	७	कुंभ	९	२३	३१	०३	४७	८	२९	१७	५७
१९	३	मं	३४	१७	२०	५३	पू	४३	३२	२४	३५	शि	३४	२५	२०	५६	तै	४	००	८	४६	२७	१०	७	१०	१८	३	२६	३१	८	मी. १८।७	९	२४	३९	५०	४६	९	१४	१९	०५
२०	४	बु	३३	५५	२०	४०	उ	४४	३५	२५	००	गि	३१	१२	१९	३९	व	४	१२	८	५१	२७	१४	७	१०	१८	४	२७	२	९	मीन	९	२५	४०	३६	४५	९	५८	२०	१३
२१	५	गु	३२	२५	२०	०७	रे	४४	२५	२४	५५	मा	२७	०५	१७	५०	ब	३	२०	८	२९	२७	१८	७	९	१८	५	२८	३	१०	मे. २८।५	९	२६	४१	२१	४४	१०	४३	२१	२५
२२	६	शु	३०	००	१९	०८	अ	४३	२०	२४	२८	शुभ	२२	१२	१६	०१	कौ	१	२०	७	४०	२७	२२	७	८	१८	५	२९	४	११	मेष	९	२७	४२	०५	४२	११	२७	२२	२६
२३	७	श	२६	२७	१७	४२	भ	४१	२०	२३	३९	श	१६	३०	१३	४२	व	२६	२७	१७	४२	२७	२६	७	७	१८	६	३०	५	१२	वृ. १।१२	९	२८	४२	४७	४१	१२	१२	२३	३७
२४	८	र	२२	००	१५	५५	कृ	३८	१५	२२	२५	ध्रु	१०	०२	११	०८	ब	२२	००	१५	५५	२७	३०	७	७	१८	७	का.	६	१३	वृष	९	२९	४३	२८	३९	१२	५६	२४	४७
२५	९	च	१६	४५	१३	४८	रो	३४	३०	२०	५४	ऐ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	को	१६	४५	१३	४८	२७	३४	७	६	१८	८	२	७	१४	वृष	१०	००	४४	०७	३८	१३	४१	१	५३
२६	१०	मं	१०	४७	११	२४	मृ	३०	००	१९	०५	वि	४६	५२	२५	५०	ग	१०	४७	११	२४	२७	३८	७	५	१८	८	३	८	१५	मि. ८।१२	१०	०१	४४	४६	३६	१४	२५	३	०१
२७	११	बु	४	१०	८	४४	आ	२५	०७	१७	०५	प्री	३८	२०	२२	२२	वि	४	१०	८	४४	२७	४२	७	४	१८	९	४	९	१६	मिथुन	१०	०२	४५	२२	३६	१५	१०	४	०९
०	१२	बु	५७	१२	२१	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	१३	गु	५०	१२	२७	०८	पुन	२०	००	१५	०३	आ	२९	३७	१८	५४	को	२३	४२	१६	३२	२७	४५	७	३	१८	१०	५	१०	१७	क. १३।४	१०	०३	४५	५८	३४	१५	५४	५	१५
२९	१४	शु	४३	२७	२४	२६	पु	१४	५५	१३	०१	सी	२०	५७	१५	२६	ग	१६	५०	१३	४७	२७	४९	७	३	१८	११	६	११	१८	कर्क	१०	०४	४६	३२	३२	१६	३८	६	२५
३०	१५	श	३७	१७	२२	५७	श्ले	१०	१२	११	०७	शो	१२	४२	१२	०७	वि	१०	२२	११	११	२७	५३	७	२	१८	११	७	१२	१९	सिंह. ११।७	१०	०५	४७	०४	३१	१७	२२	७	३३

तिथि: स्टै.टा. = स्टैण्डर्ड टाइम; नक्षत्र: स्टै.टा. = स्टैण्डर्ड टाइम; योग: स्टै.टा. = स्टैण्डर्ड टाइम; करण: स्टै.टा. = स्टैण्डर्ड टाइम; दिन मान: स्टै.टा. = स्टैण्डर्ड टाइम; सूर्योदयास्त: स्टै.टा. = स्टैण्डर्ड टाइम; चन्द्रोदयास्त दिल्ली: स्टै.टा. = स्टैण्डर्ड टाइम

ता. ६ से ११ फरवरी सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति १७ से ३० माघ तक। रवि उत्तरायण, दक्षिण गोले, शिशिर-वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है।

B सप्तमी चन्द्रभागा सप्तमी, श्री माधवाचार्य जयन्ती, दीनबन्धु एन्ड्रयूज जयंती, सर्वोदय मेला व पक्ष समाप्त C धनिष्ठा १ में हर्षल प्रवेश ७।०७, श्री दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, सौर फाल्गुन मासारम्भ F मेला जैसलमेर ३ दिन का प्रारंभ, गुरु हरराय जयंती, मेला पंच खण्ड पीठ विराटनगर (राज.) G १४।०३, वसन्त ऋतु प्रारंभ, माघी पूर्णिमा, श्री गुरु रविदास जयंती, सत्यव्रत, भैरवी जयंती, माघ स्नान समाप्त, वेणेश्वर मेला (बांसवाड़ा)

माघ शु. ८ रवि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १३ फरवरी

मू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के.	ह	ने	प्लू
९	१	११	१०	०	८	०	३	९	९	९	७
२१	०	६	२७	५	२९	२७	८	८	२३	१०	१८
४३	३	५२	३८	५०	४४	२१	५६	५६	१९	५५	४६
२८	५८	४८	२८	२९	१०	३४	२५	१५	४६	३०	७
६०	०५	०५	७०	९	७३	३	३	३	३	२	१
३१	५०	७.	२९	३६	५२	२७	११	११	२८	१०	१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
मूल	अनु.	उ.भा.	पू.भा.	उ.षा.	पू.षा.	उ.षा.	पुष्य	उ.भा.	धनिष्ठा	श्रवण	स्वाति

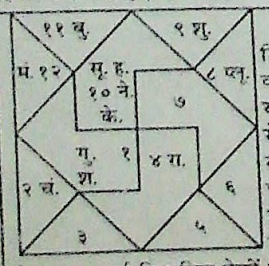

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

इस पक्ष की सप्तमी को भरणी नक्षत्र का योग मिलने से प्रजा में रोग पीड़ा की कमी होकर सुख शांति का संचार होगा। धान्यादि का उत्पादन भी अच्छा होगा। यथा—"माघ मासस्य सप्तम्यां भरणी यदि जायते। रोग नाशस्तदा लोके वसुधा बहुधान्यमृत॥" किन्तु सप्तमी को शनिवार होना अच्छा नहीं है जिससे शुभ फलों की कमी आयेगी। यहाँ मंगल का बुध, गुरु, शनि से द्विर्दादश योग भी विश्व के अनेक देशों की आर्थिक परिस्थितियाँ विषम करेगा। समृद्धशाली देश कूटनीति के तहत अर्द्ध विकसित देशों पर अपना दबदबा बनाये रखने में कामयाब होंगे। भारत विश्व के अग्रणीय देशों में अपनी धाक जमाने में सफल होगा। अंतरिक्ष विज्ञान के साथ कृषि क्षेत्र में भी आशातीत सफलता भारत को मिलेगी। **तेजी-मन्दी विचार**—पक्षारम्भ में सोमवार को चन्द्रदर्शन १५ मुहूर्त्त का होने से सोना, रुई, चाँदी में घटाबढ़ी से तेजी करेगा। ता. १३ फरवरी को मकर का शुक्र तथा कुंभ संक्रांति लगने से गुड़, खाण्ड, घृत, रुई, चाँदी में भारी तेजी का झटका लगेगा। पक्षान्त में साधारण मन्दी का योग है। **आकाश लक्षण**—दक्षिण भारत में गर्मी बढ़ने लगेगी तथा उत्तरी भारत के मैदानी भागों में वायुवेग के साथ कहीं-कहीं बादल चाल रहेगी। राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब में सामान्यतया मौसम साफ रहेगा। शरदी में नरमी आयेगी। **शकुन विचार**—माघ सुदी द्वितीया व तृतीया को बादल बिजली तथा वर्षा हो तो आगे वर्षा ऋतु में कहीं अनावृष्टि तो कहीं अतिवृष्टि हो। पूर्णिमा को यदि बादल हो तो धान्य संग्रह करने वालों को आगे लाभ होगा।

माघ शु. १५ शनि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू.	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	३	११	१०	०	९	०	३	९	९	९	७
५	२६	११	२२	६	७	१७	८	८	२३	११	१८
४७	३६	२६	४७	४९	८	४३	३७	३७	४०	८	५१
४	५४	३८	२४	५३	१७	४३	११	११	२९	२३	५१
६०	८६	६५	२०	१०	७४	४	३	३	३	२	०
३१	२९	३०	४५	२०	३	७	११	११	२६	६	५१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
मूल	अनु.	उ.भा.	पू.भा.	उ.षा.	पू.षा.	उ.षा.	पुष्य	उ.भा.	धनिष्ठा	श्रवण	स्वाति

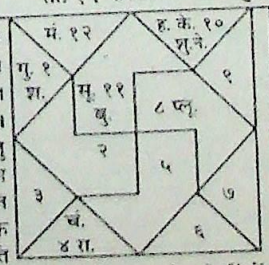

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२४ श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२९

ता. २० फरवरी से ६ मार्च सन् २०००ई., राष्ट्रीय मिति १ से १६ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, बसन्त ऋतु।

रा. मि.	तिथि					स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण					स्टैं.टा.		दिन मान घं.	मि.	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	दिनांक प्र. मु. अं.			चन्द्र संचार	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	गतिः क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है
फा	१	र	३१	५७	१९	४८	म	६	१५	९	३१	अ	५	०२	९	०२	बा	४	३२	८	५०	२७	५७	७	१	१८	१२	८	१३	20	सिंह	१०	०६	४७	३५	३०	१८	०६	८	१४	राष्ट्रीय फाल्गुन मासारंभ
२	२	चं	२७	५७	१८	११	पू	३	१७	८	१९	ध	५२	३०	२८	००	ग	२७	५७	१८	११	२८	०१	७	०	१८	१३	९	१४	21	कं. १४।०५	१०	०७	४८	०४	२७	१८	५६	८	५४	भद्रा २९।४० से, वक्री बुध १८।१५, श्रवण में शुक्र प्रवेश १३।०१
३	३	मं	२५	२०	१७	०७	उ	१	४२	७	४०	शु	४८	०५	२६	१३	वि	२५	२०	१७	०७	२८	०५	६	५९	१८	१३	१०	१५	22	कन्या	१०	०८	४८	३१	२६	१९	५६	९	३५	भद्रा १७।०७ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
४	४	बु	२४	३७	१६	४९	ह	१	५०	७	४२	गं	४५	०५	२५	००	बा	२४	३७	१६	४९	२८	०८	६	५८	१८	१४	११	१६	23	तु. १९।५८	१०	०९	४८	५७	२४	२०	३६	१०	१५	बुध पश्चिम में अस्त ११।३१
५	५	गु	२५	४७	१७	१६	चि	३	४५	८	२७	वृ	४३	३५	२४	२३	तै	२५	४७	१७	१६	२८	१२	६	५७	१८	१५	१२	१७	24	तुला	१०	१०	४९	२१	२३	२१	२६	१०	५६	
६	६	शु	२८	४२	१८	२५	स्वा	७	३०	९	५६	ध्रु	४३	२७	२४	१९	व	२८	४२	१८	२५	२८	१६	६	५६	१८	१५	१३	१८	25	वृ. २९।२८	१०	११	४९	४४	२१	२२	१६	११	३७	भद्रा १८।२५ से, रेवती में मंगल प्रवेश २७।११
७	७	श	३२	२५	२०	१७	वि	१२	५२	१२	०४	व्या	४४	३२	२४	४४	वि	०	५५	७	१७	२८	२०	६	५५	१८	१६	१४	१९	26	वृश्चिक	१०	१२	५०	०५	१९	२३	०६	१२	१८	A जयंती, अष्टका श्राद्ध भद्रा ७।१७ तक
८	८	र	३९	१२	२२	३५	अनु	१९	३७	१४	४५	ह	४६	२७	२५	२९	बा	६	१५	९	२४	२८	२४	६	५४	१८	१७	१५	२०	27	वृश्चिक	१०	१३	५०	२४	१८	२३	५६	१२	५९	वक्री शतभिषा में बुध प्रवेश ३०।१८, कालाष्टमी, श्री सीताष्टमी, जानकी A
९	९	चं	४५	५२	२५	१४	ज्ये	२७	०२	१७	४२	वज्र	४८	५७	२६	२८	तै	१२	३२	११	५४	२८	२८	६	५३	१८	१७	१६	२१	28	ध. १७।४२	१०	१४	५०	४२	१६	२४	४६	१३	४०	समर्थ गुरु रामदास जयन्ती, डा. राजेन्द्र प्रसाद पुण्य दिवस
१०	१०	मं	५२	३०	२७	५२	मू	३५	००	२०	५२	सि	५१	२०	२७	२४	व	१९	१७	१४	३५	२८	३२	६	५२	१८	१८	१७	२२	29	धनु	१०	१५	५०	५८	१४	१	३६	१४	२१	भद्रा १४।३५ से २७।५२ तक
११	११	बु	५८	३२	३०	१६	पूषा	४२	२०	२३	४७	व्य	५३	२०	२८	११	ब	२५	३७	१७	०६	२८	३६	६	५१	१८	१९	१८	२३	M1	म. ३०।२८	१०	१६	५१	१२	१२	२	२७	१५	०२	विजया एकादशी व्रत (स्मार्त), व्यतिपात पुण्यं, मार्च मा.३ ता.३१
१२	१२	गु	६०	००	-	-	उषा	४८	५५	२६	२४	व	५४	२७	२८	४१	कौ	३१	१५	१९	२०	२८	४०	६	५०	१८	१९	१९	२४	2	मकर	१०	१७	५१	२४	११	३	१६	१५	४३	विजया एकादशी व्रत (वैष्णव), वंजुली महाद्वादशी व्रत
१३	१२	शु	३	३२	८	१४	ध	५४	०७	२८	२८	प	५४	५२	२८	४६	तै	३	३२	८	१४	२८	४४	६	४९	१८	२०	२०	२५	3	मकर	१०	१८	५१	३५	८	४	६	१६	३४	धनिष्ठा में शुक्र प्रवेश ८।१४, प्रदोष व्रत
१४	१३	श	७	१५	९	४२	श	५४	५७	२९	५१	शि	५४	००	२८	२४	व	७	१५	९	४२	२८	४८	६	४८	१८	२०	२१	२६	4	कुं. १७।१८	१०	१९	५१	४३	७	४	५६	१७	१५	भद्रा ९।४२ से २२।०६ तक, पू.भा. में सूर्य प्रवेश ८।४८, महाशिवरात्रि व्रत B
१५	१४	र	९	१७	१०	३०	शत	६०	००	-	-	सि	५२	००	२७	३५	श	९	१७	१०	३०	२८	५२	६	४७	१८	२१	२२	२७	5	कुंभ	१०	२०	५१	५०	५	५	४०	१७	५६	महाशिवरात्रि व्रत (वै.) पितृकार्याऽमावस्या, श्री वासुदेव पूज्य जयंती (जैन)
१६	३०	चं	२०	००	१०	४६	शत	०	२७	६	५७	मा	४८	५७	२६	२१	ना	१०	००	१०	४६	२८	५६	६	४६	१८	२१	२३	२८	6	मी. २५।१५	१०	२१	५१	५५	३	६	३०	१८	३७	देवकार्याऽमावस्या, सोमवती अमावस्या पुण्य, मन्वादि, शिव खप्पर पूजा

B (स्मार्त) चतुर्दश ज्योतिर्लिङ्ग पूजनार्चन रुद्राभिषेक, श्री वैद्यनाथ जयंती, महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती व बोधोत्सव, आर्य समाज सप्ताह प्रारंभ, पंचक प्रारंभ १७।१८ से

फाल्गुन कृ. ८ रवि, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २७ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	११	१०	०	९	०	३	९	९	९	७
१३	१२	१७	२०	८	१७	१८	८	८	२४	११	१८
५०	३	२१	५४	१५	०	१८	११	११	७	२४	५७
२४	२४	३७	३८	२९	५८	२२	४५	४५	३३	४९	३८
६०	७१३	४५	५२	११	७४	४	३	३	३	१	०
१८	३८	११	४२	११	०७	४४	११	११	१९	५१	३५
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	३	९	९	४	९	९	९	९
प्रति.	अनु.	रेवती	पू.भा.	अश्वि.	श्रवण	भरणी	पुष्य	उषा.	धनि.	श्रवण	ज्येष्ठा

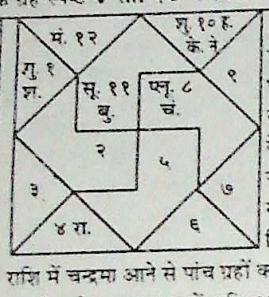

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

ता. ६ मार्च ❖ फाल्गुन कृ. ३० चन्द्र, प्रातः ५घं. ३०मि. के ग्रहस्पष्ट

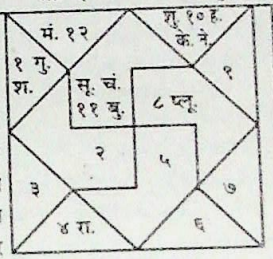

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१०	११	१०	०	९	०	३	९	९	९	७
२२	१९	२३	१३	९	२६	१८	७	७	२४	११	१९
५१	१३	३०	२	४७	५३	५८	४६	४६	३३	४०	१
५५	२५	९	१	२६	१६	१७	१९	१९	४०	१२	११
६०	७५५	४४	५०	११	७४	५	३	३	३	१	०
३	५५	५२	३४	५४	८	२२	११	११	१२	५९	१७
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	४	३	९	३	९	९	४	९	९	९	९
प्र.भा.	प्रति.	रेवती	प्रति.	अश्वि.	धनि.	भरणी	पुष्य	उषा.	धनि.	श्रवण	ज्येष्ठा

इस पक्ष में मिश्रित फल अधिक होंगे। पूंजीवादी राष्ट्रों का प्रभाव बढ़ने से शान्ति सुरक्षा में लगे राष्ट्रों की भूमिका कमजोर पड़ती दिखाई देगी। सोमवती अमावस्या भारत की सुख शांति व समृद्धि में सहयोग करेगी। शासकों का ध्यान जनता की कठिनाइयों के प्रति आकर्षित होने से उसी के अनुरूप कार्यक्रम चलाये जायेंगे। ता. २३ फरवरी को पश्चिम में बुध का अस्त कुम्भ राशि में होने से पहाड़ों पर हिमपात और वायु प्रकोप बढ़ेगा जिससे कृषि में हानि होगी। पश्चात् में २ से ४ मार्च तक मकर राशि में चन्द्रमा आने से पांच ग्रहों का योग अशांति को बढ़ावा देगा। विश्व के साथ-साथ भारत में भी यत्र-तत्र असामाजिक तत्व हत्या, बम विस्फोट, बलात्कार में अधिक लिप्त होंगे। **तेजी-मन्दी विचार**—पक्षारंभ में सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, उड़द, मूंग, मोठ में तेजी होकर मन्दी होगी। कपास, तिल तेल, सरसों में तेजी की चाल बनेगी। ता. २५ फर. को रेवती का मंगल धान्यादि में मन्दी तथा चांदी में तेजी करेगा। जो पक्ष के अन्त तक जारी रहेगी। तेजी का लाभ बाजार रुख देख कर उठावें। **आकाश लक्षण**—पक्ष प्रारम्भ में बुधास्त गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश के अनेक स्थानों पर वायु के साथ बादल चाल या वर्षा करेगा। समुद्र तटीय क्षेत्रों में तेज हवाओं का जोर रहेगा। **शकुन विचार**—फाल्गुन मास में यदि बादल हों किन्तु वर्षा नहीं हो तो वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होती है। यथा—"यदभं फाल्गुने नित्यं न तु पातयते जलम्। वृष्टि गर्भा भवन्त्येव प्रावृट् कालस्य दोहकः॥"

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२५

श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

रा. मि	तिथि		स्टै.टा.			नक्षत्र		स्टै.टा.			योग		स्टै.टा.			करण		स्टै.टा.			दिन मान घं.	मि.	दिनांक प्र.	मु.	अं.	स्टै.टा. सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	चन्द्र संचार	भा.स्टै.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः रा.	अं.	क.	वि.	रा.	क. वि.	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.
१७	१	मं	१	१७	१०	२८	पुभा	१	२२	७	१८	शु	४७	५२	२४	४२	ब	९	१७	१०	२८	२९	००	६	४५	१८	२२	२४	२९	७	मीन	१०	२२	५१	५८	६५	७	२१	१९	०७	अश्विनी ४ में गुरु प्रवेश ६।५०, चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घ
१८	२	बु	७	२५	९	४२	उभा	१	१५	७	१४	शु	३९	५७	२२	४३	को	७	२५	९	४२	२९	०५	६	४४	१८	२३	२५	जि.	८	मीन	१०	२३	५२	००	०	८	१२	२०	००	कुम्भ में शुक्र प्रवेश १७।४४, बुध पूर्व में उदय १३।४२, फुलरिया दोज, A
१९	३	गु	४	३०	८	३१	रे	०	०५	५	००	ब	३४	२०	२०	२७	ग	४	३०	८	३१	२९	०९	६	४३	१८	२३	२६	२	९	मे. ६।०५	१०	२४	५२	००	५९	९	०३	२०	५३	भद्रा १९।४७ से, पं. लेखराम वीर तृतीया, विनायक ४ व्रत, संत चतुर्थी (उड़ीसा) B
२०	४	शु	०	५२	७	०३	भ	५५	४२	२८	५९	ए	२८	१२	१७	५९	वि	०	५२	७	०३	२९	१३	६	४२	१८	२४	२७	३	९	मेष	१०	२५	५१	५८	५५	९	५४	२१	४६	भद्रा ७।०३ तक, आर्य समाज सप्ताह समाप्त B पंचक समाप्त ६।४५
७	५	शु	५६	३७	२९	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी क्षय: C अन्नपूर्णाष्टमी, श्री दादूदयाल जयंती
२१	६	श	५२	००	२७	२९	कृ	५२	५५	२७	५१	वै	२१	४५	१५	२३	को	२४	२२	१६	२६	२९	१८	६	४१	१८	२४	२८	४	११	वृ. १०।४४	१०	२६	५१	५३	५४	१०	४६	२२	३२	गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल), वैधृति पुण्य
२२	७	र	४७	०२	२५	२९	गे	४९	४५	२६	३४	वि	१५	००	१२	४०	ग	२२	३२	१४	२९	२९	२२	६	४०	१८	२५	२९	५	१२	वृष	१०	२७	५१	४७	५१	११	३७	२३	३२	भद्रा २५।२१ से, अष्टाह्निक जैन व्रत प्रारंभ, होलाष्टक प्रारंभ २५।२१ से, भानु सप्तमी
२३	८	चं	४२	००	२३	२७	मृ	४६	२५	२५	१३	प्री	८	०२	९	५२	वि	१४	३५	१२	२९	२९	२६	६	३९	१८	२६	३०	६	१३	मि. १३।५५	१०	२८	५१	३८	५०	१२	२१	२४	२५	भद्रा १२।२९ तक, शतभिषा में शुक्र प्रवेश २७।१४, श्री दुर्गाष्टमी, C
२४	९	मं	३६	४५	२१	२०	आ	४३	०२	२३	५१	आ	१	००	७	०२	बा	९	२२	१०	२३	२९	३१	६	३८	१८	२६	चैत्र	७	१४	मिथुन	१०	२९	५१	२८	४८	१३	२०	१	१८	मीन में सूर्य प्रवेश ८।५४, संक्रांति मु. १५, अश्वि. मेष में मंगल प्रवेश D
२५	१०	बु	३१	३०	१९	१३	पुन	३९	३५	२२	२७	प्रो	४६	३५	२५	१५	तै	४	१०	८	१७	२९	३५	६	३७	१८	२७	२	८	१५	क. १६।०७	११	००	५१	१६	४६	१४	१२	२	११	भद्रा ३०।१० से, प्लूटो वक्री १७।२०
२६	११	गु	२६	१७	१७	०७	पु	३६	१२	२१	०५	अ	३९	३०	२२	२४	वि	२६	१७	१७	०७	२९	३९	६	३६	१८	२७	३	९	१६	कर्क	११	०१	५१	०२	४४	१५	०३	३	०४	भद्रा १७।०७ तक, भरणी ३ में शनि प्रवेश २४।५७, आमला एकादशी E
२७	१२	शु	२१	१७	१५	०५	श्ले	३३	०२	१९	४७	मु	३२	३५	१९	३६	बा	२१	१७	१५	०५	२९	४३	६	३४	१८	२८	४	१०	१७	सिं. १९।०७	११	०२	५०	४६	४२	१५	५५	३	५७	उ.भा. में सूर्य प्रवेश १७।१४, गोविन्द द्वादशी, प्रदोष व्रत, ईल-उल-जुहा (बकरीद)
२८	१३	श	१६	३५	२३	११	म	३०	१५	१८	३९	ध	२६	००	१६	५७	तै	१६	३५	१३	११	२९	४७	६	३३	१८	२८	५	११	१८	सिंह	११	०३	५०	२८	४०	१६	४६	४	५०	F भद्रोत्तर २२।५३ पश्चात्, दारुणरात्रि हुताशिनी
२९	१४	र	१२	३२	११	३३	फा	२८	१०	१७	४८	शु	१९	५५	१४	३०	ब	१२	३२	११	३३	२९	५२	६	३२	१८	२९	६	१२	१९	कं. २३।५७	११	०४	५०	०८	३७	१७	३७	५	४३	भद्रा ११।३३ से २२।५३ तक, सत्यव्रत, चन्द्र पूर्णिमा, होलिकादहन, F
३०	१५	चं	९	१५	१०	१३	उफा	२६	५५	१७	१७	मे	२४	३५	१२	२१	ब	९	१५	१०	१३	२९	५६	६	३१	१८	३०	७	१३	२०	कन्या	११	०५	४९	४५	३६	१८	२८	६	३६	सायन मेष में सूर्य प्रवेश १३।०५, छारेण्डी (धूलण्डी) धूलिवन्दन, G

तिथि: प्रा. ७ मे २० मार्च सन् २००० ई., राष्ट्रीय मिति १७ से ३० फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण-उत्तर गोले, बसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टै.टा. घण्टा मिनटों में है

A श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती, जिल्हेज मु. मास १२ प्रा., विश्व महिला दिवस D २२।५५, मार्गी बुध २६।१८, सौर चैत्र मासारंभ, मीन (खर) मास प्रारंभ E व्रत सबका, श्री राम स्नेही सम्प्रदाय शाहपुरी का फूलडोल महोत्सव प्रारंभ, हज्ज G पूर्णिमा पुष्पं मन्वादि, होलाष्टक समाप्त, चैतन्य महाप्रभु जयंती, अन्ताह्निक जैन व्रत समाप्त, सूर्य उत्तर गोल में प्रवेश, महाविषुव दिन

फाल्गुन शु. ८ चन्द्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १३ मार्च

मु	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२०	१	११	२०	०	१०	०	३	९	१	९	७
२८	२५	२८	९	११	५	१९	७	७	२४	११	१९
५१	२	४३	१	१२	३२	३७	२४	२४	५५	५२	२
३८	२०	७	२७	२४	५३	१८	३	३	२८	३७	२८
५९	८४	४४	८	१२	७४	५	३	३	३	१	०
५०	४५	३३	४०	२६	०८	५१	११	११	०	४०	३
मा	मा	मा	ब	मा	मा	मा	ब	ब	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
उ.फा.	उ.फा.	अश्वि.	उत्त.	अश्वि.	उत्त.	भरणी	९	पुष्य	उ.षा.	धनिष्ठा	श्रवण	९	ज्येष्ठा

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

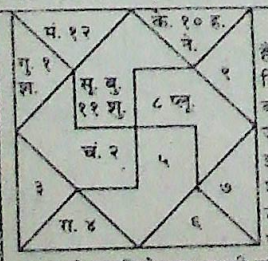

इस मास में पांच रविवार, पाँच सोमवार मध्यम फलप्रद हैं। ता. ८ मार्च को शुक्र कुंभ राशि में आने से अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में सुधार होगा तथा विश्व शांति का वातावरण बनेगा। यथा—"कुंभ राशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम्। भवत्यत्र न संदेहो लोकाः सर्वे निरामयाः॥" इस पक्ष मध्य में मंगल अपनी स्वराशि मेष में प्रवेश कर शनि से योग बनायेगा। जो आगामी ४० दिन तक जारी रहेगा। जिससे प्रजा में रोग पीड़ा, हिंसक आन्दोलन, प्रकृति प्रकोप, यान दुर्घटना तथा भूकम्प आदि से जनजीवन अस्त व्यस्त होगा। विशेषकर उत्तरी पश्चिमी देशों में विषम परिस्थित उत्पन्न होगी। भारत को भी पाकिस्तान से लगी सीमाओं पर कड़ी चौकसी के आदेश करने होंगे। मंगल-शनि के योग का फल—"सम सप्तम शनि भौम हो अथवा एक ही संग। प्रजा कष्ट औ अन्न से जन विग्रह का रङ्ग॥" तेजी-मन्दी विचार—धान्य, गेहूँ, जो, चना, रुई, खाण्ड में मन्दी होकर तेजी की चाल निकलेगी। मीन संक्रांति मंगलवार की १५ मुहूर्त होने से सूत, कपास, नारियल, जायफल, लौंग, सोना, चाँदी, पीतल में तेजी होगी। आकाश लक्षण—बुध-शुक्र का योग मैदानी भागों के कुछ क्षेत्रों में बादल वर्षा करेगा। पर्वतीय प्रदेशों के साथ दक्षिण राज्यों में वायु के साथ वर्षा एवं ओला वृष्टि होगी। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उ.प्र., बिहार में गर्मी बढ़ने लगेगी। शकुन विचार—"फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गरजे वर्षा होय। धान्य सातवें मास में निश्चय मंहगा होय॥" होलिका दहन की रात बीत जाने पर सूर्य उदय के बाद चन्द्रमा दिखाई दे तो श्रेष्ठ तथा सूर्य उदय से पहिले अस्त हो जाय तो श्रेष्ठ होता है।

ता. २० मार्च ❖ फाल्गुन शु. १५ चन्द्र, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

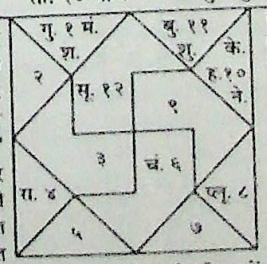

मु	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	५	०	१०	०	१०	०	३	९	९	९	७
५	३	३	१०	१२	१४	२०	७	७	२५	१२	१९
४९	१९	५४	९	४०	११	११	१	१	१६	३	२
४५	५३	२	५७	५७	४८	४०	४८	४८	२	५२	११
५९	०९	४४	२९	१२	७४	६	३	३	२	१	०
३६	४०	१४	४१	५५	७	१७	११	११	५०	३२	१०
मा	मा	मा	मा	ब	मा	मा	ब	ब	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
उ.फा.	उ.फा.	अश्वि.	उत्त.	अश्वि.	उत्त.	भरणी	९	पुष्य	उ.षा.	धनिष्ठा	श्रवण	९	ज्येष्ठा

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र कृष्ण पक्ष-२६

श्री वि. सं. २०५६ शाके १९२१

ता. २१ मार्च से ४ अप्रैल सन् २०००ई., राष्ट्रीय मिति १ चैत्र से १५ चैत्र तक / रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा. स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है

ता.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र				स्टैं.टा.		योग				स्टैं.टा.		करण				स्टैं.टा.		दिन मान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र. मु. अं.			चन्द्र संचार		दै. रवि स्पष्ट प्रातः					गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त	
मि	ति	क	घ	प	घ	मि	न	घ	प	घ	मि	यो	घ	प	घ	मि	क	घ	प	घ	मि	घ	मि	घ	मि	घ	मि	घ	मि	क	घ	मि	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि		रा.	अं.	क	वि.		वि.	घ	मि	घ	मि
चैत्र	१	गं	७	१२	९	२३	ह	२६	५०	१७	१४	वृ	१०	०२	१०	३१	कौ	७	१२	९	२३	३०	०	६	३०	१८	३०	८	१४	२१	तु. २९.१६		११	०६	४९	२१	३९		१९	१९	२०	००	वसन्त प्रतिपदा, बसन्तोत्सव, होला मेला, मेला आनन्दपुर साहिब	A
२	२	बु	६	२५	९	३	वि	२८	१२	१७	४६	धृ	६	४०	९	०९	ग	६	२५	९	०३	३०	५	६	२९	१८	३१	९	१५	२२	तुला		११	०७	४८	५५	३२		२०	८	२०	३५	भद्रा २१.११ से, भरणी १ में गुरु प्रवेश २९.४५, भाई २, संत तुकाराम	B
३	३	गु	७	१२	९	२०	ध्रु	३२	०७	२८	५४	व्या	४	३२	८	१६	वि	७	१२	९	२०	३०	९	६	२७	१८	३१	१०	१६	२३	तुला		११	०८	४८	२७	२९		२०	५७	२१	१३	भद्रा ९.२० तक, कृष्ण गणेश ४ व्रत, कल्पादि तिथि, मेला शीतला	C
४	४	शु	९	४२	१०	१९	वि	३५	३७	२०	४१	हर्ष	३	४०	७	५४	बा	९	४२	१०	१९	३०	१४	६	२६	१८	३२	११	१७	२४	वृ. १४.१२		११	०९	४७	५६	२८		२१	४६	२१	५३	पू.भा. में शुक्र प्रवेश २२.१५ B जयंती, कलमदान पूजा देशाचारे	
५	५	श	१२	४७	११	५६	शु	४१	२७	२३	०४	वज्र	४	०२	८	०२	तै	१३	४७	११	५६	३०	१८	६	२५	१८	३२	१२	१८	२५	वृश्चिक		११	१०	४७	२४	२६		२२	३५	२२	३६	रंग पंचमी, श्री जयंती D एक साथ षष्ठी C माता कुरालो (पंजाब)	
६	६	र	१९	०५	१४	०२	सि	४८	४७	२५	५५	ध्रु	५	३२	८	३७	व	१९	०५	१४	०२	३०	२३	६	२४	१८	३३	१३	१९	२६	ध. २५.५५		११	११	४६	५०	२४		२३	२४	२३	२४	भद्रा १४.०२ से २७.१७ तक, पुष्य १ में राहु उ.भा. ३ में केतु प्रवेश २६.०० D	
७	७	च	२५	२२	१६	३२	सा	५६	२०	२८	५५	व्या	७	३५	९	२५	ब	२५	२२	१६	३२	३०	२७	६	२३	१८	३४	१४	२०	२७	धनु		११	१२	४६	१४	२२		२४	१३	-	-	शीतला सप्तमी, शीतला पूजन (बासी भोजन करना चाहिए), व्यतिपात पुण्य	
८	८	भं	३२	०५	१९	३२	पृ	६०	००	-	-	व	१०	०७	१०	२५	कौ	३२	०५	१९	३२	३०	३१	६	२२	१८	३४	१५	२१	२८	धनु		११	१३	४५	३६	१९		१	०२	०	१६	कालाष्टमी, अष्टकाश्राद्ध, शीतलाष्टमी, ऋषभ जयन्ती (जैन)	E
९	९	बु	३८	०७	२१	३५	पृ	४	०७	७	५९	प	१२	३५	११	२२	तै	५	१२	८	२५	३०	३५	६	२०	१८	३५	१६	२२	२९	मकर		११	१५	४४	१३	१६		२	४०	२	११	E केसरिया मेला भेवाड़, मेला केला देवी करौली (राज.)	
१०	१०	गु	४२	१५	२३	३७	उ	११	०७	२०	४६	शि	१४	२५	१२	०५	व	१०	५७	१०	४२	३०	३९	६	१९	१८	३५	१७	२३	३०	कुं. २.५८		११	१६	४३	२९	१४		३	२९	३	१३	भद्रा १०.४२ से २३.३७ तक, रेवती में सूर्य प्रवेश २८.०५, दशामाता व्रत	
११	११	शु	४६	५७	२५	०५	ध	१६	५२	१३	०३	मि	१५	१२	१२	२३	ब	१५	१५	१२	२४	३०	४३	६	१८	१८	३६	१८	२४	A1	कुंभ		११	१७	४२	४३	११		४	१४	४	१८	पू.भा. में बुध प्रवेश २६.०४, पापमोचनी एकादशी व्रत सबका	F
१२	१२	श	५०	०७	२५	४८	व	२१	०५	१४	४३	मा	१४	४२	१२	१०	कौ	१८	०५	१३	३१	३०	४७	६	१६	१८	३७	२०	२६	२	कुंभ		११	१८	४१	५४	१०		४	५८	५	०५	भरणी में मंगल प्रवेश २६.३४, मीन में शुक्र प्रवेश २४.३७, अप्रैल मा.४ ता.३०	
१३	१३	र	५८	३०	२५	५४	मू	२३	२५	१५	३८	शु	१२	५५	११	२६	ग	१९	०२	१३	५३	३०	५२	६	१५	१८	३८	२१	२७	३	मी. १५.१		११	१९	४१	०४	८		५	४३	५	५६	भद्रा १३.२९ तक, मास शिवरात्रि व्रत, मेला पृथूदक पिहोवा (हरि.)	
१४	१४	च	५९	५५	२५	०९	पू	२३	५५	१५	४९	ध्रु	९	३२	१०	०४	वि	१८	०५	१३	२९	३०	५६	६	१५	१८	३८	२१	२७	४	मीन		११	२०	४०	१२	४		६	३०	६	४५	उ.भा. में शुक्र प्रवेश १७.२६, देवपितृकार्याऽमावस्या, भौमवती	G
१५	१५	भं	४३	४०	२३	४१	उ	२३	०२	१५	२६	व	६	००	२०	८३	व	१५	३५	१२	२७	३१	००	६	१३	१८	३८	२२	२८																	

A (पंजाब), राष्ट्रीय चैत्र मासारंभ शाकः १९२२ प्रारंभ, पंखा मेला झझर G अमा., मन्वादि, चान्द्र सम्वत्सर २०५६ समाप्त ॥ शुभम् ॥

चैत्र कृ. ८ मंगल, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ मार्च

मं	चं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	८	०	१०	०	१०	०	३	९	९	९	७
१३	१३	९	१५	१४	२०	२२	६	६	२५	१२	१८
४५	२५	४६	५९	२५	४	२२	३६	३६	३७	१५	५९
३६	५	३३	५	५३	४०	३८	२२	२२	४७	१४	४६
५९	५०	४३	५८	१३	७४	६	३	३	२	१	०
१९	४१	५१	४३	२०	६	३४	११	११	३४	१८	२७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	व	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
उ.भा.	रेवती	भरणी	कृ.भा.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

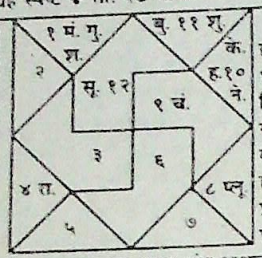

इस पक्ष में युद्धप्रिय मंगल शान्तिप्रिय गुरु के साथ होने को बढ़ रहा है। यहां इसी राशि में मजदूर नेता शनि भी नीचस्थ होकर विचरण कर रहा है। यह अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के लिये अनुकूल नहीं है। प्रजा में रोग पीड़ा तथा गर्मी का जोर बढ़ेगा। मध्य पूर्व एशिया, चीन, जापान, वर्मा, आसाम, नेपाल, भूटान, बंगलादेश आदि में उत्पात होंगे। पश्चिमी देशों में भी उग्र प्रदर्शन, सीमा संघर्ष, प्रकृति प्रकोप से जन-धन की हानि होगी। इस मास में पांच मंगलवार भी हैं अतः राज प्रजा में गतिरोध, किसी देश व राज्य का ध्वज भंग अथवा किसी महान व्यक्ति के अवसान से प्रजा स्तब्ध रहेगी। यथा—"पांच शनीचर, पांच रवि, पांच मंगल जो होय। छत्र टूटि धरनी परै अन्न महंगा होय॥" पक्षान्त में शुक्र अपनी उच्चस्थ राशि (मीन) में प्रवेश करने से प्रजा में सुख शांति को बढ़ावा मिलेगा। तेजी-मन्दी विचार— पक्ष प्रारंभ में सोना, चांदी, तांबा, पीतल, अलसी, चावल, गेहूं, जौ, तिल, मूंग, चना में मन्दी होगी। ता. ३१ मार्च को रेवती का सूर्य धान्य जौ, गेहूं, चावल, चाँदी, अलसी, सरसों में तेजी करेगा। पक्षान्त में घटाबढ़ी की चाल निकलकर बाजार मन्दी की तरफ रहेंगे। आकाश लक्षण— इस पक्ष में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ.प्र., बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश में वायु वेग, बादल चाल एवं कहीं-कहीं वर्षा भी होगी। पूर्वी भारत एवं समुद्र तटीय इलाकों में तेज हवा के साथ वर्षा संभव है। शकुन विचार— चैत्र कृष्ण अष्टमी व चतुर्दशी के दिन में बादल चाल एवं उत्तर दिशा की हवा चले तो आने वाला वर्ष शुभ फलप्रद है। यथा—"चैत्र मासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्यष्टमी तिथौ। तत्रा भ्रपुष्करो वायुः शुभाय वत्सरे भवेत्॥"

ता. ४ अप्रैल ❖ चैत्र कृ. ३० मंगल, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

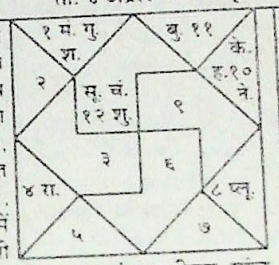

मं	चं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	११	०	१०	०	११	०	३	९	९	९	७
२०	११	१४	२३	१६	२	२१	६	६	२५	१२	१८
४०	००	५२	४२	००	४३	५९	१४	१४	५४	२३	५५
१२	२८	३१	१०	२१	११	५०	७	७	५८	४२	५६
५९	८	२५	४३	७५	१३	७४	७	३	३	१	१	०
४	२२	३१	१२	४०	४	२	११	११	१९	६	४१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
रेवती	उ.भा.	भरणी	कृ.भा.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	उत्ता.	पश्चिमा	श्रवण	ज्येष्ठा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल रेलवे-स्टैंडर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं अतः तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ००।२५ लिखे हुए हैं इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

यदि किसी को इस लग्न सारिणी से किसी दूसरे स्थान का लग्न-समाप्तिकाल मालूम करना अर्थात् लाना हो तो जो भी लग्न जिस तारीख को लाना हो उस तारीख का वह लग्न-समाप्तिकाल का घण्टा-मिनट लिखें, इसके बाद पंचांग परिवर्तन में जिस नगर का लग्न परिवर्तन करना हो, उस नगर के आगे अथवा नगर के पास के नगर के आगे लिखे हुए देशान्तर मिनट लेवें वह देशान्तर मिनट (—) ऋण हो तो ऊपर के लग्न समाप्तिकाल में मिलावें, देशान्तर मिनट धन (+) हो तो ऋण करो तो वह देशान्तर संस्कृत स्थानीय रेलवे टाईम का लग्न-समाप्तिकाल होगा फिर जिस स्थान का लग्न-समाप्तिकाल लाना है—उसके अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर कोष्ठक से चरान्तर साधन करें। वह चरान्तर धन आया हो तो उपर्युक्त देशान्तर लग्न-समाप्तिकाल में मिला दें, यदि ऋण आया हो तो घटा दें, वह स्थानीय रेलवे टाईम से स्पष्ट लग्न का समाप्ति-काल होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को बीकानेर का तुला लग्न समाप्तिकाल निकालना है। अक्षांश सारिणी दिल्ली से बीकानेर का देशान्तर (—) १५।३२ है, दैनिक लग्न-सारिणी में १५ जुलाई को तुला लग्न का समाप्तिकाल दिल्ली में १४।५६ है। उसमें बीकानेर का देशान्तर (—) १५ मिनट ३२ सैकिण्ड ऋण होने के कारण जोड़ने से १५।११।३२ आता है, १५ जुलाई की रविक्रान्ति २१।३७ उत्तर है और बीकानेर का अक्षांश २८।०१ है, इसकी सहायता से चरान्तर सारिणी में २१ क्रान्त्यंश २८ अक्षांश के कोष्ठक में १ चरान्तर मिनट है और २२ क्रान्त्यंश का भी १ चरान्तर मिनट है अतः चरान्तर मिनट (१) उत्तर क्रान्ति होने से १५।११।३२ में धन किया गया तो बीकानेर में तुला लग्न का समाप्तिकाल १५।१२।३२ हुआ।

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश-समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं. मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्नमान के मिनट होंगे, उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समाप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय में होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

स्मार्त्त-वैष्णव विचार

पंचांग में एकादशी व्रत प्रायः स्मार्त्त-वैष्णव भेद से दो दिन अलग-अलग होता है, स्मार्त्त व्रत पहले दिन और वैष्णवों का दूसरे दिन लिखते हैं। इनका निर्णय धर्म शास्त्रीय व्यवस्था से पंचांगों में लिखा जाता है। यदि ५४ घटी से एक पल भी दशमी अधिक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय का व्रत एकादशी को न होकर द्वादशी में होता है। निम्बार्क सम्प्रदाय वाले कपाल वेष मानते हैं। स्मार्त्त लोग जिस दिन अर्धरात्रि के समय अष्टमी हो उसी दिन श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत करते हैं और वैष्णव सम्प्रदाय वाले उदय व्यापिनी अष्टमी मानते हैं।

स्मार्त्त कौन और वैष्णव कौन ?—आम आदमी यह नहीं समझ पाता कि वह स्मार्त्त है या वैष्णव ! उसे स्मरण रखना चाहिए कि श्रुति-स्मृति को मानने वाले सभी आस्तिक-जन स्मार्त्त हैं। वैसे तो द्विज-मात्र (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक सभी स्मार्त्त हैं। "श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।" (मनुः) जो लोग यह समझते हैं कि मांस, मदिरा, प्याज, लहसुन से दूर रहने वाले राम-कृष्ण-विष्णु के उपासक सब वैष्णव हैं, यह उनका भ्रम है। जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्तमुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख-चक्र अंकित करवाये हैं वे, या जिन्होंने किसी वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा लेकर कण्ठी और तुलसी की माला धारण की हुई है वे ही वैष्णव कहला सकते हैं, उनको और विधवा स्त्रियों को दूसरे दिन वैष्णव व्रत करने का अधिकार है, अन्य को नहीं।

(शेष पृष्ठ १३८ का)

स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल
ताबा देखना	हैरानी हो	खून करना	सेहत पाना
नंगी तलवार देखना	शत्रु पर विजय	चित्र देखना	राज्य लाभ
हरी तरकारी देखना	खुशी प्राप्त हो	चीख मारना	संकट
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों	जहाज देखना	स्त्री क्लेश
तेल पीना	कुष्ट रोग से भय	जहाज पर चढ़ना	तबदीली
तिल चबाना	कलंक लगे	तालाब स्नान	इज्जत पाना
तोप देखना	शत्रु नष्ट हो	श्वेत सर्प काटना	लाभ
तीर चलाना	आशा पूर्ण हो	दरिया में नहाना	रोगनाश
जवाहरात देखना	कार्य सफलता	दूध पीना	खुशी

शेष पृष्ठ १०४ पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर
१	७।२८	८।५३	१०।२८	१२।२३	१४।३६	१६।५५	१९।१३	२१।३०	२३।५०	२। ८	४।११	५।५५
२	७।२४	८।४९	१०।२४	१२।१९	१४।३२	१६।५१	१९। ९	२१।२९	२३।४६	२। ४	४। ७	५।५२
३	७।२०	८।४५	१०।२०	१२।१५	१४।२८	१६।४७	१९। ५	२१।२२	२३।४२	२। १	४। ३	५।४७
४	७।१६	८।४१	९०।१६	१२।११	१४।२४	१६।४३	११। १	२१।१८	२३।३८	१।५६	३।५९	५।४३
५	७।१३	८।३८	१०।१३	१२। ८	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।१५	२३।३५	१।५३	३।५६	५।४०
६	७। ९	८।३४	१०। ९	१२। ४	१४।१७	१६।३६	१८।५४	२१।११	२३।३१	१।४९	३।५२	५।३६
७	७। ५	८।३०	१०। ५	१२। ०	१४।१३	१६।३२	१८।५०	२१। ७	२३।२७	१।४५	३।४८	५।३२
८	७। १	८।२६	१०। २	११।५६	१४। ९	१६।२८	१८।४६	२१। ३	२३।२३	१।४१	३।४४	५।२८
९	६।५७	८।२२	९।५७	११।५२	१४। ५	१६।२४	१८।४२	२०।५९	२३।१९	१।३७	३।४०	५।२४
१०	६।५२	८।१७	९।५२	११।४७	१४। ०	१६।१९	१८।३७	२०।५४	२३।१४	१।३२	३।३५	५।१९
११	६।४८	८।१३	९।४८	११।४३	१३।५६	१६।१५	१८।३३	२०।५०	२३।१०	१।२८	३।३१	५।१५
१२	६।४४	८। ९	९।४४	११।३९	१३।५२	१६।११	१८।२९	२०।४६	२३। ६	१।२४	३।२७	५।११
१३	६।४०	८। ५	९।४०	११।३५	१३।४८	१६। ७	१८।२५	२०।४२	२३। २	१।२०	३।२३	५। ७
१४	६।३६	८। १	९।३६	११।३१	१३।४४	१६। ३	१८।२१	२०।३८	२२।५८	१।१६	३।१९	५। ३
१५	६।३२	७।५७	९।३२	११।२७	१३।४०	१५।५९	१८।१७	२०।३४	२२।५४	१।१२	३।१५	४।५९
१६	६।२८	७।५३	९।२८	११।२३	१३।३६	१५।५५	१८।१३	२०।३०	२२।५०	१। ८	३।११	४।५५
१७	६।२४	७।४९	९।२४	११।१९	१३।३२	१५।५१	१८। ९	२०।२६	२२।४६	१। ४	३। ७	४।५१
१८	६।२०	७।४५	९।२०	११।१५	१३।२८	१५।४७	१८। ५	२०।२२	२२।४२	१। ०	३। ३	४।४७
१९	६।१६	७।४१	९।१६	११।११	१३।२४	१५।४३	१८। १	२०।१८	२२।३८	०।५६	२।५९	४।४३
२०	६।१२	७।३७	९।१२	११। ७	१३।२०	१५।३९	१७।५७	२०।१४	२२।३४	०।५२	२।५५	४।३९
२१	६। ८	७।३३	९। ८	११। ३	१३।१६	१५।३५	१७।५३	२०।१०	२२।३०	०।४८	२।५१	४।३५
२२	६। ४	७।२९	९। ४	१०।५९	१३।१२	१५।३१	१७।४९	२०। ६	२२।२६	०।४४	२।४७	४।३१
२३	६। १	७।२५	९। १	१०।५५	१३। ८	१५।२७	१७।४५	२०। २	२२।२२	०।४०	२।४३	४।२७
२४	५।५५	७।२१	८।५६	१०।५१	१३। ४	१५।२३	१७।४१	१९।५८	२२।१८	०।३६	२।३९	४।२३
२५	५।५२	७।१७	८।५२	१०।४७	१३। ०	१५।१९	१७।३७	१९।५४	२२।१४	०।३२	२।३५	४।१९
२६	५।४८	७।१३	८।४८	१०।४३	१२।५६	१५।१५	१७।३३	१९।५०	२२।१०	०।२८	२।३१	४।१५
२७	५।४४	७। ९	८।४४	१०।३९	१२।५२	१५।११	१७।२९	१९।४६	२२। ६	०।२४	२।२७	४।११
२८	५।४०	७। ५	८।४०	१०।३५	१२।४८	१५। ७	१७।२५	१९।४२	२२। २	०।२०	२।२३	४। ७
२९	५।३६	७। १	८।३६	१०।३१	१२।४४	१५। ३	१७।२१	१९।३८	२१।५८	०।१६	२।१९	४। ३
३०	५।३२	६।५७	८।३२	१०।२७	१२।४०	१४।५९	१७।१७	१९।३४	२१।५४	०।१२	२।१५	३।५९
३१	५।२८	६।५३	८।२८	१०।२३	१२।३६	१४।५५	१७।१३	१९।३०	२१।५०	०। ८	२।११	३।५५

अप्रैल की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ
१	६।५०	८।२३	१०।२२	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।४९	२४। ७	२।११	३।५४	५।२२
२	६।४६	८।२०	१०।१८	१२।३१	१४।५०	१७। ७	१९।२५	२१।४५	२४। ३	२। ७	३।५०	५।१८
३	६।४२	८।१७	१०।१४	१२।२७	१४।४६	१७। ३	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२। ४	३।४६	५।१४
४	६।३९	८।१३	१०।१०	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५९	३।४२	५।१०
५	६।३५	८।१०	१०। ६	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५५	३।३८	५। ६
६	६।३१	८। ६	१०। २	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१९। ९	२१।२९	२३।४७	१।५१	३।३४	५। २
७	६।२७	८। ३	९।५७	१२।११	१४।३०	१६।४७	१९। ५	२१।२५	२३।४३	१।४७	३।३०	४।५७
८	६।२२	७।५८	९।५३	१२। ६	१४।२५	१६।४३	१९। ०	२१।२०	२३।३८	१।४२	३।२५	४।५३
९	६।१८	७।५४	९।४९	१२। २	१४।२१	१६।३९	१८।५६	२१।१६	२३।३४	१।३८	३।२१	४।४९
१०	६।१४	७।५०	९।४५	११।५८	१४।१७	१६।३५	१८।५२	२१।१२	२३।३०	१।३४	३।१७	४।४५
११	६।१०	७।४६	९।४१	११।५४	१४।१३	१६।३१	१८।४८	२१। ८	२३।२६	१।३०	३।१३	४।४२
१२	६। ६	७।४३	९।३७	११।५१	१४।१०	१६।२७	१८।४५	२१। ४	२३।२३	१।२७	३।१०	४।३८
१३	६। ३	७।३९	९।३४	११।४७	१४। ६	१६।२४	१८।४१	२१। ०	२३।१९	१।२३	३। ६	४।३४
१४	५।५९	७।३५	९।३०	११।४३	१४। २	१६।२०	१८।३७	२०।५६	२३।१५	१।१९	३। २	४।३०
१५	५।५६	७।३२	९।२७	११।४०	१३।५९	१६।१७	१८।३४	२०।५३	२३।१२	१।१६	२।५९	४।२७
१६	५।५२	७।२८	९।२३	११।३६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४९	२३। ८	१।१२	२।५५	४।२३
१७	५।४८	७।२४	९।१९	११।३२	१३।५१	१६। ९	१८।२६	२०।४५	२३। ४	१। ८	२।५१	४।१९
१८	५।४४	७।२०	९।१५	११।२८	१३।४७	१६। ५	१८।२२	२०।४१	२३। ०	१। ४	२।४७	४।१५
१९	५।४०	७।१६	९।११	११।२४	१३।४३	१६। २	१८।१८	२०।३७	२२।५६	१। १	२।४३	४।११
२०	५।३६	७।१२	९। ७	११।२०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।३३	२२।५२	०।५६	२।३९	४। ७
२१	५।३२	७। ७	९। ३	११।१६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२९	२२।४८	०।५२	२।३५	४। ३
२२	५।२७	७। ३	८।५८	११।११	१३।३०	१५।४८	१८। ५	२०।२४	२२।४३	०।४७	२।३०	३।५८
२३	५।२३	६।५९	८।५४	११। ७	१३।२६	१५।४४	१८। १	२०।२०	२२।३९	०।४३	२।२६	३।५४
२४	५।१९	६।५५	८।५०	११। ३	१३।२२	१५।४०	१७।५७	२०।१६	२२।३५	०।३९	२।२२	३।५०
२५	५।१५	६।५१	८।४६	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।५३	२०।१२	२२।३१	०।३५	२।१८	३।४६
२६	५।११	६।४७	८।४२	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।४९	२०। ८	२२।२७	०।३१	२।१४	३।४२
२७	५। ६	६।४२	८।३७	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०। ४	२२।२२	०।२६	२। ९	३।३७
२८	५। ३	६।३८	८।३३	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४१	२०। ०	२२।१८	०।२२	२। ५	३।३३
२९	४।५८	६।३४	८।२९	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।३७	१९।५६	२२।१४	०।१८	२। १	३।२९
३०	४।५५	६।३१	८।२६	१०।३९	१२।५९	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।११	०।१५	१।५८	३।२६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन
१	६।२६	८।२१	१०।३३	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४८	२२। ६	०। ९	१।५३	३।२२	४।४६
२	६।२२	८।१७	१०।२९	१२।४९	१५। ७	१७।२४	१९।४४	२२। २	०। ५	१।४९	३।१८	४।४२
३	६।१८	८।१३	१०।२५	१२।४५	१५। ३	१७।२०	१९।४०	२१।५८	०। १	१।४५	३।१४	४।३८
४	६।१५	८।१०	१०।२२	१२।४१	१५। ०	१७।१७	१९।३७	२१।५५	२३।५८	१।४२	३।११	४।३५
५	६।११	८। ६	१०।१८	१२।३७	१४।५६	१७।१३	१९।३३	२१।५१	२३।५४	१।३७	३। ७	४।३१
६	६। ७	८। २	१०।१४	१२।३३	१४।५२	१७। ९	१९।२९	२१।४७	२३।५०	१।३४	३। ३	४।२७
७	६। ३	७।५७	१०।१०	१२।२९	१४।४८	१७। ५	१९।२५	२१।४३	२३।४५	१।३०	२।५९	४।२३
८	५।५८	७।५४	१०। ६	१२।२५	१४।४४	१७। १	१९।२१	२१।३९	२३।४२	१।२६	२।५५	४।१९
९	५।५४	७।५०	१०। २	१२।२१	१४।४०	१६।५७	१९।१७	२१।३५	२३।३७	१।२२	२।५१	४।१४
१०	५।५०	७।४६	९।५७	१२।१७	१४।३६	१६।५३	१९।१३	२१।३१	२३।३४	१।१८	२।४७	४।१०
११	५।४५	७।४१	९।५३	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१९। ८	२१।२६	२३।२९	१।१३	२।४२	४। ५
१२	५।४१	७।३७	९।४९	१२। ९	१४।२७	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।२५	१। ९	२।३८	४। २
१३	५।३८	७।३४	९।४६	१२। ५	१४।२४	१६।४१	१९। १	२१।१९	२३।२२	१। ६	२।३५	३।५८
१४	५।३४	७।३०	९।४२	१२। १	१४।२०	१६।३७	१८।५७	२१।१५	२३।१८	१। २	२।३१	३।५४
१५	५।३१	७।२६	९।३७	११।५७	१४।१६	१६।३३	१८।५३	२१।११	२३।१४	०।५७	२।२७	३।५१
१६	५।२७	७।२३	९।३५	११।५४	१४।१३	१६।३०	१८।५०	२१। ८	२३।११	०।५५	२।२४	३।४८
१७	५।२५	७।२०	९।३२	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४७	२१। ५	२३। ८	०।५२	२।२१	३।४५
१८	५।२१	७।१६	९।२८	११।४६	१४। ६	१६।२३	१८।४३	२१। १	२३। ४	०।४८	२।१७	३।४१
१९	५।१७	७।१३	९।२५	११।४३	१४। ३	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३। १	०।४५	२।१४	३।३८
२०	५।१४	७। ९	९।२१	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२२।५७	०।४१	२।१०	३।३४
२१	५।१०	७। ५	९।१७	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२२।५३	०।३७	२। ६	३।३०
२२	५। ६	७। १	९।१३	११।३३	१३।५१	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२२।४९	०।३३	२। २	३।२५
२३	५। ३	६।५७	९। ९	११।२९	१३।४७	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।४५	०।२९	१।५८	३।२२
२४	४।५८	६।५३	९। ५	११।२५	१३।४३	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।४१	०।२५	१।५४	३।१८
२५	४।५४	६।४९	९। २	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।३७	०।२१	१।५०	३।१४
२६	४।५०	६।४५	८।५७	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।१२	२०।३०	२२।३३	०।१७	१।४६	३।१०
२७	४।४६	६।४१	८।५३	११।१२	१३।३१	१५।४८	१८। ८	२०।२६	२२।२९	०।१३	१।४२	३। ६
२८	४।४२	६।३७	८।४९	११। ८	१३।२७	१५।४४	१८। ४	२०।२२	२२।२५	०। ९	१।३८	३। ३
२९	४।३८	६।३३	८।४५	११। ३	१३।२३	१५।४०	१८। ०	२०।१७	२२।२१	०। ५	१।३४	२।५८
३०	४।३४	६।२९	८।४१	१०।५९	१३।१९	१५।३६	१७।५६	२०।१४	२२।१७	०। २	१।३०	२।५४
३१	४।२९	६।२४	८।३६	१०।५५	१३।१४	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।१२	२३।५६	१।२५	२।४९

जून की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६।१९	८।३१	१०।५१	१३। ९	१५।२६	१७।४६	२०। ४	२२। ८	२३।५२	१।२०	२।४५	४।२१
२	६।१५	८।२८	१०।४७	१३। ५	१५।२२	१७।४२	२०। ०	२२। ३	२३।४७	१।१५	२।४०	४।१६
३	६।११	८।२४	१०।४३	१३। १	१५।१८	१७।३८	१९।५६	२१।५९	२३।४३	१।११	२।३६	४।१२
४	६। ७	८।२०	१०।३९	१२।५७	१५।१४	१७।३४	१९।५२	२१।५५	२३।३९	१। ७	२।३२	४। ८
५	६। ३	८।१६	१०।३५	१२।५३	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२१।५१	२३।३५	१। ३	२।२८	४। ४
६	५।५९	८।१२	१०।३१	१२।४९	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२१।४७	२३।३१	०।५९	२।२४	४। १
७	५।५५	८। ८	१०।२७	१२।४५	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।४३	२३।२७	०।५५	२।२०	३।५६
८	५।५२	८। ५	१०।२४	१२।४२	१४।५९	१७।१९	१९।३७	२१।४०	२३।२४	०।५२	२।१७	३।५३
९	५।४८	८। २	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१५	१९।३३	२१।३६	२३।२०	०।४८	२।१३	३।४९
१०	५।४४	७।५७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।११	१९।२९	२१।३२	२३।१६	०।४४	२। ९	३।४५
११	५।४०	७।५३	१०।१२	१२।३०	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।२८	२३।१२	०।४०	२। ५	३।४१
१२	५।३६	७।४९	१०। ८	१२।२६	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।२४	२३। ८	०।३६	२। १	३।३७
१३	५।३२	७।४५	१०। ४	१२।२२	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।२०	२३। ४	०।३२	१।५७	३।३३
१४	५।२९	७।४२	१०। १	१२।१९	१४।३६	१६।५६	१९।१४	२१।१७	२३। १	०।२९	१।५४	३।३०
१५	५।२५	७।३८	९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।५२	१९।१०	२१।१३	२२।५७	०।२५	१।५०	३।२६
१६	५।२१	७।३४	९।५३	१२।११	१४।२८	१६।४८	१९। ६	२१। ९	२२।५३	०।२१	१।४६	३।२२
१७	५।१७	७।३०	९।४९	१२। ७	१४।२४	१६।४४	१९। २	२१। ५	२२।४९	०।१७	१।४२	३।१८
१८	५।१३	७।२६	९।४५	१२। ३	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१। १	२२।४५	०।१३	१।३८	३।१४
१९	५।१०	७।२३	९।४२	१२। ०	१४।१८	१६।३७	१८।५५	२०।५७	२२।४२	०।१०	१।३५	३।११
२०	५। ६	७।१९	९।३८	११।५६	१४।१४	१६।३३	१८।५१	२०।५४	२२।३८	०। ६	१।३१	३। ७
२१	५। ३	७।१५	९।३४	११।५२	१४।१०	१६।२९	१८।४७	२०।५०	२२।३४	०। २	१।२७	३। ३
२२	४।५८	७।११	९।३०	११।४८	१४। ६	१६।२५	१८।४३	२०।४६	२२।३०	२३।५८	१।२३	२।५९
२३	४।५४	७। ७	९।२६	११।४४	१४। २	१६।२१	१८।३९	२०।४२	२२।२६	२३।५४	१।१९	२।५५
२४	४।५०	७। ३	९।२२	११।४०	१३।५८	१६।१७	१८।३५	२०।३८	२२।२२	२३।५०	१।१५	२।५१
२५	४।४७	७। १	९।१९	११।३७	१३।५५	१६।१४	१८।३२	२०।३५	२२।१९	२३।४७	१।१२	२।४८
२६	४।४३	६।५६	९।१५	११।३३	१३।५१	१६।१०	१८।२८	२०।३१	२२।१५	२३।४३	१। ८	२।४४
२७	४।३९	६।५२	९।११	११।२९	१३।४७	१६। ६	१८।२४	२०।२७	२२।११	२३।३९	१। ४	२।४०
२८	४।३५	६।४८	९। ७	११।२५	१३।४३	१६। २	१८।२०	२०।२३	२२। ७	२३।३५	१। १	२।३६
२९	४।३१	६।४४	९। ३	११।२१	१३।३९	१५।५८	१८।१६	२०।१९	२२। ३	२३।३१	०।५५	२।३२
३०	४।२७	६।४०	८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५४	१८।१२	२०।१५	२१।५९	२३।२७	०।५२	२।२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई की दैनिक लग्न-सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	६।३६	८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८। ८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	०।४६	२।२४	४।१६
२	६।३२	८।५२	११। ९	१३।२७	१५।४७	१८। ४	२०। ८	२१।५१	२३।२०	०।४५	२।२०	४।१५
३	६।२८	८।४८	११। ५	१३।२३	१५।४३	१८। ०	२०। ४	२१।४७	२३।१६	०।४१	२।१६	४।११
४	६।२४	८।४४	११। १	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०। १	२१।४३	२३।१२	०।३७	२।१२	४। ७
५	६।२०	८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३। ८	०।३३	२। ८	४। ३
६	६।१६	८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३। ४	०।२९	२। ४	३।५९
७	६।१२	८।३२	१०।४९	१३। ७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३। ०	०।२५	२। १	३।५५
८	६। ८	८।२८	१०।४५	१३। ३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	०।२१	१।५६	३।५१
९	६। ४	८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	०।१७	१।५२	३।४७
१०	६। ०	८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	०।१३	१।४८	३।४३
११	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	०।१०	१।४५	३।४०
१२	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।४८	१५। ८	१७।२५	१९।३०	२१।११	२२।४१	०। ६	१।४१	३।३६
१३	५।४९	८। ९	१०।२६	१२।४४	१५। ४	१७।२१	१९।२६	२१। ८	२२।३७	०। ३	१।३७	३।३२
१४	५।४५	८। ५	१०।२२	१२।४०	१५। ०	१७।१७	१९।२२	२१। ४	२२।३३	२३।५८	१।३३	३।२८
१५	५।४१	८। २	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१। ०	२२।२९	२३।५४	१।२९	३।२४
१६	५।३७	७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७। ९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	१।२५	३।२०
१७	५।३३	७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७। ५	१९।१०	२०।५१	२२।२१	२३।४६	१।२१	३।१६
१८	५।२९	७।४९	१०। ६	१२।२४	१४।४५	१७। १	१९। ६	२०।४८	२२।१७	२३।४२	१।१७	३।१२
१९	५।२५	७।४५	१०। २	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९। २	२०।४४	२२।१३	२३।३८	१।१३	३। ८
२०	५।२१	७।४१	९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२। ९	२३।३४	१। ९	३। ४
२१	५।१७	७।३७	९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२। ५	२३।३०	१। ५	३। १
२२	५।१३	७।३३	९।५०	१२। ८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२। १	२३।२६	१। १	२।५४
२३	५।१०	७।३०	९।४७	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	०।५८	२।५१
२४	५। ६	७।२६	९।४३	१२। १	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	०।५४	२।४७
२५	५। २	७।२२	९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	०।५०	२।४३
२६	४।५८	७।१८	९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	०।४६	२।३९
२७	४।५४	७।१४	९।३२	११।४९	१४। ९	१६।२६	१८।३१	२०।१३	२१।४२	२३। ७	०।४२	२।३५
२८	४।५०	७।१०	९।२८	११।४५	१४। ५	१६।२२	१८।२७	२०। ९	२१।३८	२३। ३	०।३८	२।३१
२९	४।४६	७। ६	९।२४	११।४१	१४। १	१६।१८	१८।२३	२०। ५	२१।३४	२२।५९	०।३४	२।२७
३०	४।४२	७। २	९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०। १	२१।३०	२२।५५	०।३०	२।२३
३१	४।३९	६।५९	९।१७	११।३४	१३।५४	१६।१२	१८।१६	१९।५८	२१।२७	२२।५२	०।२७	२।२०

अगस्त की दैनिक लग्न-सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
१	६।५५	९।१३	११।३१	१३।५०	१६। ८	१८।११	१९।५५	२१।२३	२२।४८	०।२४	२।१८	४।३१
२	६।५१	९। ९	११।२७	१३।४६	१६।४	१८। ७	१९।५१	२१।१९	२२।४४	०।२०	२।१४	४।२७
३	६।४७	९। ५	११।२३	१३।४२	१६। १	१८। ३	१९।४७	२१।१५	२२।४०	०।१६	२।१०	४।२३
४	६।४३	९। १	११।१९	१३।३७	१५।५६	१७।५९	१९।४३	२१।११	२२।३६	०।१२	२। ६	४।१९
५	६।३९	८।५७	११।१५	१३।३४	१५।५२	१७।५५	१९।३९	२१। ७	२२।३२	०। ८	२। २	४।१५
६	६।३५	८।५३	११।११	१३।३०	१५।४८	१७।५१	१९।३५	२१। ३	२२।२८	०। ४	१।५८	४।११
७	६।३१	८।४९	११। ७	१३।२६	१५।४४	१७।४७	१९।३१	२०।५९	२२।२४	०। १	१।५४	४। ७
८	६।२८	८।४६	११। ४	१३।२३	१५।४१	१७।४४	१९।२८	२०।५६	२२।२१	२३।५७	१।५१	४। ४
९	६।२४	८।४२	११। १	१३।१९	१५।३७	१७।४०	१९।२४	२०।५२	२२।१७	२३।५३	१।४७	४। १
१०	६।२०	८।३८	१०।५६	१३।१५	१५।३३	१७।३६	१९।२०	२०।४८	२२।१३	२३।४९	१।४३	३।५६
११	६।१६	८।३४	१०।५२	१३।११	१५।२९	१७।३२	१९।१६	२०।४४	२२। ९	२३।४५	१।३९	३।५२
१२	६।१२	८।३०	१०।४८	१३। ७	१५।२५	१७।२८	१९।१२	२०।४०	२२। ५	२३।४१	१।३५	३।४८
१३	६। ८	८।२६	१०।४४	१३। ३	१५।२१	१७।२४	१९। ८	२०।३६	२२। १	२३।३७	१।३१	३।४४
१४	६। ४	८।२२	१०।४०	१२।५९	१५।१७	१७।२०	१९। ४	२०।३२	२१।५७	२३।३३	१।२७	३।४०
१५	६। १	८।१८	१०।३६	१२।५५	१५।१३	१७।१६	१९। ०	२०।२८	२१।५३	२३।२९	१।२३	३।३६
१६	५।५५	८।१३	१०।३१	१२।५०	१५। ८	१७।११	१८।५५	२०।२३	२१।४८	२३।२४	१।१८	३।३२
१७	५।५१	८। ९	१०।२७	१२।४६	१५। ४	१७। ७	१८।५१	२०।१९	२१।४४	२३।२०	१।१४	३।२७
१८	५।४७	८। ५	१०।२३	१२।४२	१५। ०	१७। ३	१८।४७	२०।१५	२१।४०	२३।१६	१।१०	३।२३
१९	५।४३	८। १	१०।१९	१२।३८	१४।५६	१६।५९	१८।४३	२०।११	२१।३६	२३।१२	१। ६	३।१९
२०	५।३९	७।५७	१०।१५	१२।३४	१४।५२	१६।५५	१८।३९	२०। ७	२१।३२	२३। ८	१। २	३।१५
२१	५।३५	७।५३	१०।११	१२।३०	१४।४८	१६।५१	१८।३५	२०। ३	२१।२८	२३। ४	०।५८	३।११
२२	५।३१	७।४९	१०। ७	१२।२६	१४।४४	१६।४७	१८।३१	१९।५९	२१।२४	२३। ०	०।५४	३। ७
२३	५।२७	७।४५	१०। ३	१२।२२	१४।४०	१६।४३	१८।२७	१९।५५	२१।२०	२२।५६	०।५०	३। ३
२४	५।२३	७।४१	९।५९	१२।१८	१४।३६	१६।३९	१८।२३	१९।५१	२१।१६	२२।५२	०।४६	२।५९
२५	५।१९	७।३७	९।५५	१२।१४	१४।३२	१६।३५	१८।१९	१९।४७	२१।१२	२२।४८	०।४२	२।५५
२६	५।१६	७।३४	९।५२	१२।११	१४।२९	१६।३२	१८।१६	१९।४४	२१। ९	२२।४५	०।३९	२।५२
२७	५।१२	७।३०	९।४८	१२। ७	१४।२५	१६।२८	१८।१२	१९।४०	२१। ५	२२।४१	०।३५	२।४८
२८	५। ८	७।२६	९।४४	१२। ३	१४।२१	१६।२४	१८। ८	१९।३६	२१। १	२२।३७	०।३१	२।४४
२९	५। ४	७।२२	९।४०	११।५९	१४।१७	१६।२०	१८। ४	१९।३२	२०।५७	२२।३३	०।२७	२।४०
३०	५। १	७।१९	९।३७	११।५६	१४।१४	१६।१७	१८। १	१९।२९	२०।५४	२२।३०	०।२४	२।३७
३१	४।५८	७।१६	९।३४	११।५३	१४।११	१६।१४	१७।५८	१९।२६	२०।५१	२२।२७	०।२१	२।३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७।१२	९।३०	११।५०	१।१ ७	१।११	१।५४	१।१२	२०।४८	२२।२३	०।१८	२।३०	४।५०	६। ८
२	७। ८	९।२६	११।४६	१।१ ३	१।१ ७	१।५०	१।१०	२०।४४	२२।१९	०।१४	२।२६	४।४६	६। ४
३	७। ४	९।२२	११।४२	१।५९	१।१ ३	१।४९	१।१५	२०।४०	२२।१५	०।१०	२।२२	४।४२	६। ०
४	७। ०	९।१८	११।३८	१।५५	१।५९	१।४२	१।११	२०।३६	२२।११	०। ६	२।१८	४।३८	५।५६
५	६।५६	९।१४	११।३४	१।५१	१।५५	१।३८	१।१ ७	२०।३२	२२। ७	०। २	२।१४	४।३४	५।५२
६	६।५२	९।१०	११।३०	१।४७	१।५१	१।३४	१।१ ३	२०।२८	२२। ३	२३।५८	२।१०	४।३०	५।४८
७	६।४८	९। ६	११।२६	१।४३	१।४७	१।३०	१।८।५६	२०।२४	२१।५९	२३।५४	२। ६	४।२६	५।४४
८	६।४४	९। २	११।२२	१।३९	१।४३	१।२६	१।८।५५	२०।२०	२१।५५	२३।५०	२। २	४।२२	५।४०
९	६।४०	८।५८	११।१८	१।३५	१।३९	१।२२	१।८।५१	२०।१६	२१।५१	२३।४६	१।५८	४।१८	५।३६
१०	६।३६	८।५४	११।१४	१।३१	१।३५	१।१८	१।८।४७	२०।१२	२१।४७	२३।४२	१।५४	४।१४	५।३१
११	६।३२	८।५०	११।१०	१।२७	१।३१	१।१४	१।८।४३	२०। ८	२१।४३	२३।३७	१।५०	४।१०	५।२७
१२	६।२८	८।४६	११। ६	१।२३	१।२७	१।१०	१।८।३९	२०। ४	२१।३९	२३।३४	१।४६	४। ६	५।२३
१३	६।२४	८।४२	११। २	१।१९	१।२३	१।७ ६	१।८।३५	२०। १	२१।३५	२३।३०	१।४२	४। ३	५।१९
१४	६।२०	८।३८	१०।५८	१।१५	१।१९	१।७ २	१।८।३१	१९।५६	२१।३१	२३।२६	१।३८	३।५८	५।१६
१५	६।१६	८।३४	१०।५४	१।११	१।१५	१।६।५८	१।८।२७	१९।५२	२१।२७	२३।२२	१।३४	३।५४	५।१२
१६	६।११	८।२९	१०।४९	१।७	१।११	१।६।५३	१।८।२२	१९।४७	२१।२२	२३।१७	१।२९	३।५०	५।८
१७	६। ७	८।२५	१०।४५	१।३	१।७	१।६।४९	१।८।१८	१९।४३	२१।१८	२३।१३	१।२५	३।४६	५। ४
१८	६। ३	८।२१	१०।४१	१।५९	१।३	१।६।४५	१।८।१४	१९।३९	२१।१४	२३। ९	१।२१	३।४१	५। ०
१९	५।५९	८।१७	१०।३७	१।५५	१।५९	१।६।४१	१।८।१०	१९।३५	२१।१०	२३। ५	१।१७	३।३७	४।५६
२०	५।५५	८।१३	१०।३३	१।५०	१।५५	१।६।३७	१।८। ४	१९।३१	२१। ६	२३। १	१।१३	३।३३	४।५२
२१	५।५१	८। ९	१०।२९	१।४६	१।५०	१।६।३३	१।८। ०	१९।२७	२१। २	२२।५७	१। ९	३।२९	४।४८
२२	५।४७	८। ५	१०।२५	१।४२	१।४६	१।६।२९	१।७।५६	१९।२३	२०।५८	२२।५३	१। ५	३।२५	४।४३
२३	५।४३	८। १	१०।२१	१।३८	१।४२	१।६।२५	१।७।५२	१९।१९	२०।५४	२२।४९	१। १	३।२१	४।३९
२४	५।३९	७।५७	१०।१७	१।३४	१।३८	१।६।२१	१।७।४८	१९।१५	२०।५०	२२।४५	०।५७	३।१७	४।३५
२५	५।३५	७।५३	१०।१३	१।३०	१।३४	१।६।१७	१।७।४४	१९।११	२०।४६	२२।४१	०।५३	३।१३	४।३१
२६	५।३१	७।४९	१०। ९	१।२६	१।३०	१।६।१३	१।७।४०	१९। ७	२०।४२	२२।३७	०।४९	३। ९	४।२८
२७	५।२७	७।४५	१०। ५	१।२२	१।२६	१।६। ९	१।७।३६	१९। ३	२०।३८	२२।३३	०।४५	३। ५	४।२४
२८	५।२३	७।४१	१०। २	१।१८	१।२२	१।६। ५	१।७।३२	१८।५९	२०।३४	२२।२९	०।४१	३। २	४।२०
२९	५।१९	७।३७	९।५७	१।१४	१।१८	१।६। २	१।७।२८	१८।५५	२०।३०	२२।२५	०।३७	२।५७	४।१६
३०	५।१४	७।३४	९।५४	१।११	१।१५	१।५।५८	१।७।२५	१८।५२	२०।२७	२२।२२	०।३३	२।५४	४।१२

अक्तूबर की दैनिक लग्न-सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७।३०	९।५०	१।२। ७	१।४।११	१।५।५४	१।७।२१	१।८।४८	२०।२३	२२।१८	०।३०	२।५०	५। ८
२	७।२६	९।४६	१।२। ३	१।४। ७	१।५।५०	१।७।१७	१।८।४४	२०।१९	२२।१४	०।२६	२।४६	५। ४
३	७।२२	९।४२	१।११।५९	१।४। ३	१।५।४६	१।७।१३	१।८।४०	२०।१५	२२।१०	०।२२	२।४२	५। ०
४	७।१८	९।३८	१।११।५५	१।३।५९	१।५।४२	१।७। ९	१।८।३६	२०।११	२२। ६	०।१८	२।३८	४।५६
५	७।१४	९।३४	१।११।५१	१।३।५५	१।५।३८	१।७। ५	१।८।३२	२०। ७	२२। २	०।१४	२।३४	४।५२
६	७।१०	९।३०	१।११।४७	१।३।५१	१।५।३४	१।७। १	१।८।२८	२०। ३	२१।५८	०।१०	२।३०	४।४८
७	७। ६	९।२६	१।११।४३	१।३।४७	१।५।३०	१।६।५७	१।८।२४	१९।५९	२१।५४	०। ६	२।२६	४।४४
८	७। २	९।२२	१।११।३९	१।३।४३	१।५।२६	१।६।५३	१।८।२०	१९।५५	२१।५०	०। २	२।२२	४।४०
९	६।५८	९।१८	१।११।३५	१।३।३९	१।५।२२	१।६।४९	१।८।१६	१९।५१	२१।४६	२३।५८	२।१८	४।३६
१०	६।५३	९।१३	१।११।३०	१।३।३४	१।५।१७	१।६।४४	१।८।११	१९।४६	२१।४१	२३।५३	२।१३	४।३१
११	६।४९	९। ९	१।११।२६	१।३।३०	१।५।१३	१।६।४०	१।८। ७	१९।४२	२१।३७	२३।४९	२। ९	४।२७
१२	६।४५	९। ५	१।११।२२	१।३।२६	१।५। ९	१।६।३६	१।८। ३	१९।३८	२१।३३	२३।४५	२। ५	४।२३
१३	६।४१	९। १	१।११।१८	१।३।२२	१।५। ५	१।६।३२	१।७।५९	१९।३४	२१।२९	२३।४१	२। १	४।१९
१४	६।३८	८।५८	१।११।१५	१।३।१९	१।५। २	१।६।२९	१।७।५६	१९।३१	२१।२६	२३।३८	१।५८	४।१६
१५	६।३४	८।५४	१।११।११	१।३।१५	१।४।५८	१।६।२५	१।७।५२	१९।२७	२१।२२	२३।३४	१।५४	४।१२
१६	६।३०	८।५०	१।११। ७	१।३।११	१।४।५४	१।६।२१	१।७।४८	१९।२३	२१।१८	२३।३०	१।५०	४। ८
१७	६।२५	८।४५	१।११। २	१।३। ६	१।४।४९	१।६।१६	१।७।४३	१९।१८	२१।१३	२३।२५	१।४५	४। ३
१८	६।२१	८।४१	१०।५८	१।३। २	१।४।४५	१।६।१२	१।७।३९	१९।१४	२१। ९	२३।२१	१।४१	३।५९
१९	६।१७	८।३७	१०।५४	१।२।५८	१।४।४१	१।६। ८	१।७।३५	१९।१०	२१। ५	२३।१७	१।३७	३।५५
२०	६।१३	८।३३	१०।५०	१।२।५४	१।४।३७	१।६। ४	१।७।३१	१९। ६	२१। १	२३।१३	१।३३	३।५१
२१	६। ९	८।२९	१०।४६	१।२।५०	१।४।३३	१।६। १	१।७।२७	१९। २	२०।५७	२३। ९	१।२९	३।४७
२२	६। ५	८।२५	१०।४२	१।२।४६	१।४।२९	१।५।५६	१।७।२३	१।८।५८	२०।५३	२३। ५	१।२५	३।४३
२३	६। १	८।२१	१०।३८	१।२।४२	१।४।२५	१।५।५२	१।७।१९	१।८।५४	२०।४९	२३। १	१।२१	३।३९
२४	५।५७	८।१७	१०।३४	१।२।३८	१।४।२१	१।५।४८	१।७।१५	१।८।५०	२०।४५	२२।५७	१।१७	३।३५
२५	५।५३	८।१३	१०।३०	१।२।३४	१।४।१७	१।५।४४	१।७।११	१।८।४६	२०।४१	२२।५३	१।१३	३।३१
२६	५।५०	८।१०	१०।२७	१।२।३१	१।४।१४	१।५।४१	१।७। ८	१।८।४३	२०।३७	२२।५०	१।१०	३।२८
२७	५।४६	८। ६	१०।२३	१।२।२७	१।४।१०	१।५।३७	१।७। ४	१।८।३९	२०।३३	२२।४६	१। ६	३।२४
२८	५।४२	८। २	१०।१९	१।२।२३	१।४। ६	१।५।३३	१।७। ०	१।८।३५	२०।२९	२२।४२	१। २	३।२०
२९	५।३८	७।५८	१०।१५	१।२।१९	१।४। २	१।५।२९	१।६।५६	१।८।३१	२०।२५	२२।३८	०।५८	३।१६
३०	५।३४	७।५४	१०।११	१।२।१५	१।३।५८	१।५।२५	१।६।५२	१।८।२७	२०।२१	२२।३४	०।५४	३।१२
३१	५।३०	७।५०	१०। ७	१।२।११	१।३।५४	१।५।२२	१।६।४८	१।८।२३	२०।१७	२२।३०	०।५०	३। ७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ श्री आर्यभट्ट पंचांगम् ॥

नवम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७।४५	१०। ३	१२। ७	१३।५०	१५।१९	१६।४३	१८।१९	२०।१४	२२।२६	०।४६	३। ३	५।२१
२	७।४१	९।५९	१२। ३	१३।४६	१५।१५	१६।३९	१८।१५	२०।१०	२२।२२	०।४२	२।५९	५।१७
३	७।३७	९।५५	११।५९	१३।४२	१५।११	१६।३५	१८।११	२०। ६	२२।१८	०।३८	२।५५	५।१३
४	७।३३	९।५१	११।५५	१३।३८	१५। ७	१६।३१	१८। ७	२०। २	२२।१४	०।३४	२।५१	५। ८
५	७।२९	९।४७	११।५१	१३।३४	१५। ३	१६।२७	१८। ३	१९।५८	२२।१०	०।३०	२।४७	५। ५
६	७।२५	९।४३	११।४७	१३।३०	१४।५९	१६।२३	१७।५९	१९।५४	२२। ६	०।२६	२।४३	५। २
७	७।२१	९।३९	११।४३	१३।२६	१४।५५	१६।१९	१७।५५	१९।५०	२२। २	०।२२	२।३९	४।५७
८	७।१८	९।३६	११।४०	१३।२३	१४।५२	१६।१६	१७।५२	१९।४७	२१।५९	०।१९	२।३६	४।५४
९	७।१४	९।३२	११।३६	१३।१९	१४।४८	१६।१२	१७।४९	१९।४३	२१।५५	०।१५	२।३२	४।५०
१०	७।१०	९।२८	११।३२	१३।१५	१४।४४	१६। ८	१७।४४	१९।३९	२१।५१	०।११	२।२८	४।४६
११	७। ६	९।२४	११।२८	१३।११	१४।४०	१६। ४	१७।४०	१९।३५	२१।४७	०। ७	२।२४	४।४२
१२	७। २	९।२०	११।२४	१३। ७	१४।३६	१६। १	१७।३६	१९।३१	२१।४३	०। ३	२।२०	४।३८
१३	६।५८	९।१७	११।२०	१३। ३	१४।३२	१५।५६	१७।३२	१९।२७	२१।३९	२३।५९	२।१६	४।३४
१४	६।५४	९।१३	११।१६	१२।५९	१४।२८	१५।५२	१७।२८	१९।२३	२१।३५	२२।५५	२।१२	४।३०
१५	६।५०	९। ९	११।१२	१२।५५	१४।२४	१५।४८	१७।२४	१९।१९	२१।३१	२३।५१	२। ८	४।२६
१६	६।४७	९। ६	११। ९	१२।५२	१४।२१	१५।४५	१७।२१	१९।१६	२१।२८	२३।४८	२। ५	४।२३
१७	६।४३	९। २	११। ५	१२।४८	१४।१७	१५।४१	१७।१७	१९।१२	२१।२४	२३।४४	२। १	४।१९
१८	६।३९	८।५८	११। १	१२।४४	१४।१३	१५।३७	१७।१३	१९। ८	२१।२१	२३।४१	१।५७	४।१५
१९	६।३१	८।५४	१०।५७	१२।४०	१४। ९	१५।३३	१७। ९	१९। ४	२१।१७	२३।३७	१।५३	४।११
२०	६।३१	८।५०	१०।५३	१२।३६	१४। ५	१५।२९	१७। ५	१९। ०	२१।१३	२३।३३	१।४९	४। ७
२१	६।२७	८।४९	१०।४९	१२।३२	१४। १	१५।२५	१७। १	१८।५६	२१। ९	२३।२९	१।४५	४। ३
२२	६।२३	८।४२	१०।४५	१२।२८	१३।५७	१५।२१	१६।५७	१८।५२	२१। ५	२३।२५	१।४१	३।५९
२३	६।१९	८।३८	१०।४१	१२।२४	१३।५३	१५।१७	१६।५३	१८।४८	२१। १	२३।२१	१।३७	३।५५
२४	६।१५	८।३४	१०।३७	१२।२०	१३।४९	१५।१३	१६।४९	१८।४४	२०।५७	२३।१७	१।३३	३।५१
२५	६।११	८।३०	१०।३३	१२।१६	१३।४५	१५। ९	१६।४५	१८।४०	२०।५३	२३।१३	१।२९	३।४७
२६	६। ७	८।२६	१०।२९	१२।१२	१३।४१	१५। ५	१६।४१	१८।३६	२०।४९	२३। ९	१।२५	३।४३
२७	६। ३	८।२२	१०।२५	१२। ८	१३।३७	१५। १	१६।३७	१८।३२	२०।४५	२३। ५	१।२१	३।३९
२८	५।५९	८।१८	१०।२१	१२। ४	१३।३३	१४।५७	१६।३३	१८।२८	२०।४१	२३। २	१।१७	३।३५
२९	५।५५	८।१४	१०।१७	१२। ०	१३।२९	१४।५३	१६।२९	१८।२४	२०।३७	२२।५७	१।१३	३।३१
३०	५।५२	८।१०	१०।१४	११।५७	१३।२६	१४।५०	१६।२६	१८।२१	२०।३४	२२।५४	१।१०	३।२८

दिसम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टेण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	वृश्चिक	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८। ५	१०। ९	११।५३	१३।२१	१४।४६	१६।२१	१८।१६	२०।२९	२२।४८	१। ६	३।२३	५।४३
२	८। १	१०। ५	११।४९	१३।१७	१४।४२	१६।१७	१८।१२	२०।२५	२२।४४	१। २	३।१९	५।३९
३	७।५७	१०। २	११।४५	१३।१३	१४।३८	१६।१३	१८। ८	२०।२१	२२।४०	०।५८	३।१५	५।३५
४	७।५३	९।५७	११।४१	१३। ९	१४।३४	१६। ९	१८। ४	२०।१७	२२।३६	०।५४	३।११	५।३१
५	७।४९	९।५३	११।३७	१३। ५	१४।३०	१६। ५	१८। ०	२०।१३	२२।३२	०।५०	३। ७	५।२७
६	७।४६	९।४९	११।३३	१३। १	१४।२६	१६। १	१७।५६	२०। ९	२२।२८	०।४६	३। ३	५।२३
७	७।४३	९।४६	११।३०	१२।५८	१४।२३	१५।५८	१७।५३	२०। ६	२२।२५	०।४३	३। ०	५।२०
८	७।३९	९।४३	११।२७	१२।५५	१४।२०	१५।५५	१७।५०	२०। ३	२२।२२	०।४०	२।५७	५।१७
९	७।३५	९।३९	११।२३	१२।५१	१४।१६	१५।५१	१७।४६	१९।५९	२२।१८	०।३६	२।५३	५।१३
१०	७।३१	९।३५	११।१९	१२।४७	१४।१२	१५।४७	१७।४२	१९।५५	२२।१४	०।३२	२।४९	५। ९
११	७।२७	९।३१	११।१५	१२।४३	१४। ८	१५।४३	१७।३८	१९।५१	२२।१०	०।२८	२।४५	५। ५
१२	७।२३	९।२७	११।११	१२।३९	१४। ४	१५।३९	१७।३४	१९।४७	२२। ६	०।२४	२।४१	५। १
१३	७।१९	९।२३	११। ७	१२।३५	१४। ०	१५।३५	१७।३०	१९।४३	२२। २	०।२०	२।३७	४।५७
१४	७।१५	९।१९	११। ३	१२।३१	१३।५६	१५।३१	१७।२७	१९।३९	२१।५८	०।१६	२।३३	४।५३
१५	७।१०	९।१४	१०।५८	१२।२६	१३।५१	१५।२६	१७।२१	१९।३४	२१।५३	०।११	२।२८	४।४८
१६	७। ६	९।१०	१०।५४	१२।२२	१३।४७	१५।२२	१७।१७	१९।३०	२१।४९	०। ७	२।२४	४।४४
१७	७। २	९। ६	१०।५०	१२।१८	१३।४३	१५।१८	१७।१३	१९।२६	२१।४३	०। ३	२।२०	४।४०
१८	६।५८	९। २	१०।४६	१२।१४	१३।३९	१५।१४	१७। ९	१९।२२	२१।४१	२३।५९	२।१६	४।३६
१९	६।५४	८।५८	१०।४२	१२।१०	१३।३५	१५।१०	१७। ५	१९।१८	२१।३७	२३।५५	२।१२	४।३२
२०	६।५०	८।५४	१०।३८	१२। ६	१३।३१	१५। ६	१७। १	१९।१४	२१।३३	२३।५१	२। ८	४।२८
२१	६।४६	८।५०	१०।३४	१२। २	१३।२७	१५। २	१६।५७	१९।१०	२१।२९	२३।४७	२। ४	४।२४
२२	६।४२	८।४६	१०।३०	११।५८	१३।२३	१४।५८	१६।५३	१९। ६	२१।२५	२३।४३	२। १	४।२०
२३	६।३८	८।४२	१०।२६	११।५४	१३।१९	१४।५४	१६।४९	१९। २	२१।२१	२३।३९	१।५६	४।१६
२४	६।३५	८।३९	१०।२३	११।५१	१३।१६	१४।५१	१६।४६	१८।५९	२१।१८	२३।३६	१।५३	४।१३
२५	६।३१	८।३५	१०।१९	११।४७	१३।१२	१४।४७	१६।४२	१८।५५	२१।१४	२३।३२	१।४९	४। ९
२६	६।२८	८।३२	१०।१६	११।४४	१३। ९	१४।४४	१६।३९	१८।५२	२१।११	२३।२९	१।४६	४। ६
२७	६।२४	८।२८	१०।१२	११।४०	१३। ५	१४।४०	१६।३५	१८।४८	२१। ७	२३।२५	१।४२	४। २
२८	६।२०	८।२४	१०। ८	११।३६	१३। १	१४।३६	१६।३१	१८।४४	२१। ३	२३।२१	१।३८	३।५८
२९	६।१६	८।२०	१०। ४	११।३२	१२।५७	१४।३२	१६।२७	१८।४०	२०।५९	२३।१७	१।३४	३।५४
३०	६।१३	८।१७	१०। २	११।२९	१२।५४	१४।२९	१६।२४	१८।३७	२०।५६	२३।१४	१।३१	३।५१
३१	६। ९	८।१३	९।५७	११।२५	१२।५०	१४।२५	१६।२०	१८।३३	२०।५२	२३।१०	१।२७	३।४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	धनु:	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८। ६	९।५३	११।२१	१२।४६	१४।२२	१६।१६	१८।२६	२०।४९	२३। ६	१।२४	३।४३	६। २
२	८। ५	९।४९	११।१७	१२।४२	१४।१८	१६।१२	१८।२५	२०।४५	२३। २	१।२०	३।३९	५।५७
३	८। २	९।४५	११।१३	१२।३८	१४।१४	१६। ८	१८।२१	२०।४१	२२।५८	१।१६	३।३५	५।५३
४	७।५७	९।४१	११। ९	१२।३४	१४।१०	१६। ४	१८।१७	२०।३७	२२।५४	१।१२	३।३१	५।४९
५	७।५३	९।३७	११। ५	१२।३०	१४। ६	१६। ०	१८।१३	२०।३३	२२।५०	१। ८	३।२७	५।४५
६	७।४९	९।३३	११। १	१२।२६	१४। २	१५।५६	१८। ९	२०।२९	२२।४६	१। ४	३।२३	५।४१
७	७।४५	९।२९	१०।५७	१२।२२	१३।५८	१५।५२	१८। ५	२०।२५	२२।४२	१। ०	३।१९	५।३७
८	७।४२	९।२६	१०।५४	१२।१९	१३।५५	१५।४९	१८। २	२०।२२	२२।३९	०।५७	३।१६	५।३४
९	७।३७	९।२२	१०।५०	१२।१५	१३।५१	१५।४५	१७।५८	२०।१८	२२।३५	०।५३	३।१२	५।३०
१०	७।३४	९।१८	१०।४६	१२।११	१३।४७	१५।४१	१७।५४	२०।१४	२२।३१	०।४९	३। ८	५।२६
११	७।३१	९।१५	१०।४३	१२। ८	१३।४४	१५।३८	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।४६	३। ५	५।२३
१२	७।२७	९।११	१०।३९	१२। ४	१३।४०	१५।३४	१७।४७	२०। ७	२२।२४	०।४२	३। १	५।१९
१३	७।२४	९। ८	१०।३६	१२। १	१३।३७	१५।३१	१७।४४	२०। ४	२२।२१	०।३८	२।५८	५।१६
१४	७।२०	९। ४	१०।३२	११।५७	१३।३३	१५।२७	१७।४०	२०। ०	२२।१७	०।३५	२।५४	५।१२
१५	७।१७	९। २	१०।२९	११।५४	१३।३०	१५।२४	१७।३७	१९।५७	२२।१४	०।३२	२।५१	५। ९
१६	७।१३	८।५७	१०।२५	११।५०	१३।२६	१५।२०	१७।३३	१९।५३	२२।१०	०।२८	२।४७	५। ५
१७	७। ९	८।५३	१०।२१	११।४६	१३।२२	१५।१६	१७।२९	१९।४९	२२। ६	०।२४	२।४३	५। २
१८	७। ४	८।४८	१०।१६	११।४१	१३।१७	१५।११	१७।२४	१९।४४	२२। १	०।१९	२।३८	४।५६
१९	७। ०	८।४४	१०।१२	११।३७	१३।१३	१५। ७	१७।२०	१९।४०	२१।५७	०।१५	२।३४	४।५२
२०	६।५६	८।४०	१०। ८	११।३३	१३। ९	१५। ३	१७।१६	१९।३६	२१।५३	०।११	२।३०	४।४८
२१	६।५२	८।३६	१०। ४	११।२९	१३। ५	१४।५९	१७।१२	१९।३२	२१।४९	०। ७	२।२६	४।४४
२२	६।४८	८।३२	१०। ०	११।२५	१३। १	१४।५५	१७। ८	१९।२८	२१।४४	०। ४	२।२२	४।४०
२३	६।४३	८।२७	९।५५	११।२०	१२।५६	१४।५०	१७। ३	१९।२३	२१।४०	२३।५८	२।१७	४।३५
२४	६।३९	८।२३	९।५१	११।१६	१२।५१	१४।४६	१६।५९	१९।१९	२१।३६	२३।५४	२।१३	४।३१
२५	६।३५	८।१९	९।४७	११।१२	१२।४८	१४।४२	१६।५५	१९।१५	२१।३२	२३।५०	२। ९	४।२७
२६	६।३१	८।१५	९।४३	११। ८	१२।४४	१४।३८	१६।५१	१९।११	२१।२८	२३।४६	२। ५	४।२३
२७	६।२७	८।११	९।३९	११। ४	१२।४०	१४।३४	१६।४७	१९। ७	२१।२४	२३।४२	२। १	४।१९
२८	६।२३	८। ७	९।३५	११। ०	१२।३६	१४।३०	१६।४३	१९। ३	२१।२०	२३।३८	१।५७	४।१५
२९	६।१९	८। ३	९।३१	१०।५६	१२।३२	१४।२६	१६।३९	१८।५९	२१।१६	२३।३४	१।५३	४।११
३०	६।१५	७।५९	९।२७	१०।५२	१२।२८	१४।२२	१६।३५	१८।५५	२१।११	२३।३०	१।४९	४। ७
३१	६।११	७।५५	९।२३	१०।४८	१२।२४	१४।१८	१६।३१	१८।५१	२१। ७	२३।२६	१।४५	४। ३

फरवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु:
१	७।५०	९।१९	१०।४३	१२।१९	१४।१४	१६।२६	१८।४६	२१। ४	२३।२१	१।४१	३।५८	६। २
२	७।४६	९।१५	१०।३९	१२।१५	१४।१०	१६।२२	१८।४२	२१। ०	२३।१७	१।३७	३।५४	५।५८
३	७।४३	९।१२	१०।३६	१२।१२	१४। ७	१६।१९	१८।३९	२०।५७	२३।१४	१।३४	३।५१	५।५५
४	७।३९	९। ८	१०।३२	१२। ८	१४। ३	१६।१५	१८।३५	२०।५३	२३।१०	१।३०	३।४७	५।५१
५	७।३६	९। ५	१०।२९	१२। ५	१४। ०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३। ७	१।२७	३।४४	५।४८
६	७।३२	९। १	१०।२५	१२। १	१३।५६	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२३। ३	१।२३	३।४१	५।४४
७	७।२८	८।५७	१०।२१	११।५७	१३।५२	१६। ४	१८।२४	२०।४२	२२।५९	१।१९	३।३७	५।४०
८	७।२४	८।५३	१०।१७	११।५३	१३।४८	१६। ०	१८।२०	२०।३८	२२।५५	१।१५	३।३३	५।३६
९	७।२०	८।४९	१०।१३	११।४९	१३।४४	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।५१	१।११	३।२९	५।३२
१०	७।१५	८।४४	१०। ८	११।४४	१३।३९	१५।५१	१८।११	२०।२९	२२।४६	१। ६	३।२४	५।२७
११	७।११	८।४०	१०। ४	११।४०	१३।३५	१५।४७	१८। ७	२०।२५	२२।४२	१। २	३।२०	५।२३
१२	७। ७	८।३६	१०। १	११।३६	१३।३१	१५।४३	१८। ३	२०।२१	२२।३८	०।५८	३।१६	५।१९
१३	७। ३	८।३२	९।५७	११।३२	१३।२७	१५।३९	१७।५९	२०।१७	२२।३४	०।५४	३।१२	५।१५
१४	६।५९	८।२८	९।५३	११।२८	१३।२३	१५।३५	१७।५५	२०।१३	२२।३०	०।५०	३। ८	५।११
१५	६।५५	८।२४	९।४९	११।२४	१३।१९	१५।३१	१७।५१	२०। ९	२२।२६	०।४६	३। ४	५। ७
१६	६।५१	८।२०	९।४४	११।२०	१३।१५	१५।२७	१७।४७	२०। ५	२२।२२	०।४२	३। ०	५। ४
१७	६।४७	८।१६	९।४०	११।१६	१३।११	१५।२३	१७।४३	२०। १	२२।१८	०।३८	२।५६	४।५९
१८	६।४३	८।१२	९।३६	११।१२	१३। ७	१५।१९	१७।३९	१९।५७	२२।१४	०।३४	२।५२	४।५५
१९	६।३९	८। ८	९।३२	११। ८	१३। ३	१५।१५	१७।३५	१९।५३	२२।१०	०।३०	२।४८	४।५१
२०	६।३४	८। ३	९।२७	११। ३	१२।५८	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२२। ५	०।२५	२।४३	४।४६
२१	६।३०	७।५९	९।२३	१०।५९	१२।५४	१५। ६	१७।२६	१९।४४	२२। १	०।२१	२।३९	४।४२
२२	६।२६	७।५५	९।१९	१०।५५	१२।५०	१५। २	१७।२२	१९।४०	२१।५७	०।१७	२।३५	४।३८
२३	६।२२	७।५१	९।१५	१०।५१	१२।४६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५३	०।१३	२।३१	४।३४
२४	६।१८	७।४७	९।११	१०।४७	१२।४२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।४९	०। ९	२।२७	४।३०
२५	६।१४	७।४३	९। ७	१०।४३	१२।३८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४५	०। ५	२।२३	४।२६
२६	६।११	७।४०	९। ४	१०।४०	१२।३५	१४।४७	१७। ७	१९।२५	२१।४२	०। ३	२।२०	४।२३
२७	६। ७	७।३६	९। १	१०।३६	१२।३१	१४।४३	१७। ३	१९।२१	२१।३८	२३।५८	२।१६	४।१९
२८	६। ३	७।३२	८।५६	१०।३२	१२।२७	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।३४	२३।५४	२।१२	४।१५

ऊपर दिया गया समय प्रत्येक मास में प्रत्येक तारीख में प्रत्येक लग्न के समाप्त होने का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में घण्टा मिनटों में दिया गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसीलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतालाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा। वर्ष भर की दैनिक लग्न सारणी दिल्ली नगर की पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिये। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आप को निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान—सब से पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर पर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वाभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता को घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिन्ह ज्ञान—बहुधा बालक के शरीर पर आये चिन्ह तिल, भौंरी, लहसन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिन्ह होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिन्ह भी आते हैं। सूर्य सिर में, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु पेट, होंठ, दांतों पर चिन्ह पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो बाईं भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिन्ह होता है। लग्न से ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बाईं बगल में तिल आदि चिन्ह होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिन्ह होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिन्ह होता है। ५ या ६ठे स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिन्ह होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिन्ह लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिन्ह या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिन्ह हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिन्ह होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान—बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊँचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान—जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ली ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

उपसूतिका ज्ञान—प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियां उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिये यह देखना चाहिये कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिकायें जाननी चाहिये। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिये। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती है। अस्पतालों में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिये। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिये। गावों में जहाँ प्रसव घर हों वहां आस-पडौस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश, स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

शिर पाद प्रसव ज्ञान—बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका ग्रह द्वार ज्ञान—सूतिका ग्रह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिये।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार—सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (बृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृषणों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेड़ (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते है तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग—मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला बस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रिया, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से मुख, तीसरे से भुजा, चौथे से हृदय, पांचवे से पेट, छठे से कमर, सातवें से बस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रिय, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ-अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-२ लक्षण इस प्रकार होते हैं।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलँग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट—कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। वैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष—माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊंचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष। आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिन्ह, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बलगमी, स्वभाव चंचल, अग्निमन्द (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क—प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५। २५। ४०। ४८। ६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिंह—माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चीज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिन्ह, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला, चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में चिन्ह, कष्ट कारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुद्गान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता के सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ खा कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, बदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक साधारण, भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे, काले पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गोर, श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या बसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊंचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊंचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊंचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊंचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, माषान्न दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे, मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, मृत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले बसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊंचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आंख भूरी, सिर ऊंचा, बाल कपिल, प्रकृति बलगमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे साधारण, सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिये। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिये। इसको और स्पष्ट करने के लिये २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बज कर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उस के बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिये।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। १०वां शनि, ६ठा चन्द्रमा और १०वां मंगल, तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा बृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्ट दायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान हो कर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् हो कर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरिष्ट योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को कष्ट दायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्ट कारक होते हैं, जैसे - चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष—चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैसाख में ऊँटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्ट कारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिये।

त्रिखल दोष—तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इस के लिये त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिये।

दन्तोत्पत्ति फल—बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिये, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भय दायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट, द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्ट कारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्य शाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टि कारक, ९वें में धनवान, १० वें में सुखी ११वें में महा सुखी, १२ वें में महा धनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल—पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्मे तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में, दया राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्ट दायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिये स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिये।

गण्डमूल के नक्षत्र

अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्ट कारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिये। मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखें। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्ट दायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिये।

जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहाँ है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है :

मूल निवास चक्र

जन्ममासानुसारेण	बै. ज्ये. मार्ग. फा.	चै. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

नक्षत्रों के चरणों और जन्म समय के अनुसार जो फल होता है वह नीचे के चक्र में दिया है :

अथ मूला-श्लेषा—पाद फल

मूल पाद फल		श्लेषा पाद फल		समय फल	
चरण	फल	चरण	फलम्	समय	फल
१	पितृ-नाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृ-नाश	२	धन-नाश	सन्ध्या में	स्व-शरीर भय
३	धन-नाश	३	मातृ-नाश	रात्रि	माता को भय
४	शांति से शुभ	४	पितृ-नाश		

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना) उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें :

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटयः
मूल नाशः	वंश-नाशः	मातृ-क्लेश	मातुल नाशः	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल-लाभः	अल्पजीवी	फलम्

इसी प्रकर नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगो में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्नि-फल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि! बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये :

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घटयः
राजा	पि मृ	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये :

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घटयः
पशुनाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धनला.	दयावः	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्यं	फलम्

अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिये :

अथ अश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घटयः
पुत्रादि	पितृना.	मातृना.	स्त्री लाभ	गुरुभक्त	बली	आत्महा.	भ्रमः	तपस्वी	धनहा.	फलम्

अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिये :

अथ अश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृ हानिः	पितृ हानिः	अल्पायुः

अश्विनी, मघा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों में जन्मे बालक-बालिका का नक्षत्र के चरण अनुसार फल निम्न तालिका से देखें, मूल व अश्लेषा की इसी प्रकार की तालिका ऊपर दे दी गई है।

अश्विनीपाद फल	मघा पाद फल	ज्येष्ठा पाद फल	रेवती पाद फल
१ पिता को भय	१ माता को नेष्ट	१ बड़े भ्राता को नेष्ट	१ राज्य-सम्मान
२ सुख ऐश्वर्य	२ पितृ भय	२ छोटे भ्राता को नेष्ट	२ मंत्रित्व प्राप्ति
३ मन्त्री पद	३ सुख	३ मातृ नाश	३ धन सुख की प्राप्ति
४ राज्य सम्मान	४ धन विद्या प्राप्ति	४ खुद का नाश	४ अनेक कष्ट

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें।

कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिये :

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुलनाश	कुल हानिः	धन हानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियाँ युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली-कुहू जनन फल

सिनीवाली—अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिये। यह अन्तिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल—अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जांय तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति विधान अवश्य कराना चाहिये।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिघ योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रान्ति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्याघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महा पात योग), विश्वघस्त पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिये शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिये। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतीपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र, इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनको शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री-दासी-गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह ।
सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः ॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ ।
पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयौ तत्र शान्तिर्विधीयते ॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़कियां हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिये अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

[शेष पृष्ठ १२५ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बेर शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवे।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, काल के फूल बिल्ली और मनुष्य के बाल	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृशता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चौरास्ते पर रखना।	निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै ह्रांह्रीं ह्रुंह्रूं दुष्टग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा। सुनन्दना विधानोक्त
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	रक्तचंदन रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चूर्ण एक सेर	भात, १सेर आटे के पूड़े, आध सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठः ठः स्वाहा
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना		योगिनी विधानोक्त
षष्ठ दिन मास वर्ष में धट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हँसना, कभी-२ रोना, मोह, मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	कूठ, गुग्गल, राई, हाथीदांत घृत।	विडालिका विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना।		विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोथ, अरुचि, सन्ताप।	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।		
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	चंदन, पुष्प, ५ दीपक, रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	गोशृंग, लहसुन,	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के धीमुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली, निम्ब पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड़फूटन, मुखशोथ, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।		ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।		ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय२ तापय २ हुं २ हन २ दुष्टाना ह्रांह्रुं फट् स्वाहा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट नक्षत्र	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	अपनीय देवोक्त मन्त्र	जप सं०	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	बन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्री)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धि भ्रम	९	१ २ ३ ४ ९ ११ १० २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणंनसरस्वतीवीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥	५ सहस्र	खण्ड यव घृत	गुडौदन तिल	अपमार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य ।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यमः)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	० ८० ४० ११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वतं पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे ॥ ॐ यमाय नमः ॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडौदन नैवेद्य ।	गौ, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र स्वर्ण, गोदान
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरःशूल	९	९ ११ १६ २८	ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपा ꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति ॥ ॐ अग्नये नमः ॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कार्पास मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, बडाधीका, नैवेद्य ।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कन्या भोजन
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७ ९ १८ ३०	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः सुबेध्या उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥	५ सहस्र	घृतयव	शाल्यन्नखली दधिशर्करा	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य ।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	विदोष, महाकष्ट, अर्द्धांग पीड़ा	३	९ ५ ७ १०	ॐइमन्देवा असपत्न ꣳ सुवध्वं महतेक्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमसमुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां ꣳ राजा ॥ ॐ चन्द्रमसेनमः ॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सर्वदना-वत्यमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य ।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
आर्द्रा (शिव)	विदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	० १८ ० ०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, मेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृतारक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य ।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५, ५ कन्या भोजन
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७ १४ २ २१	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः विश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ ॐ अदिताय नमः ॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य ।	सुवर्ण गौ, पीत वस्त्र
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महा कष्ट	७	७ ७ १० २१	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु । यदीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ बृहस्पतये नमः ॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य ।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
आश्लेषा (सर्पः)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मूत्रकृच्छ्र कष्ट	मृ.तु.	० ० ४१ ०	ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥	१० सहस्र	घृत तिल	सतिलाज्य दुग्धान	भृंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्टान्न, नैवेद्य ।	वस्त्र, तिल, माष दान
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा, अर्द्धांग पीड़ा	२०	१५ ७ १७ २०	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नपितरोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ॐ पितरभ्ये नमः ॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिल घृत	घृतौदन पायस	कटकारी मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत बिल्व, धूप, घृत दीप, अपूपोदन मोदक, नैवेद्य ।	पित्तल, यवमाषान्न, स्वर्ण गौ दान
पू. फा. (भगः)	नाभ व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु	० १५ ० ३०	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवादददन्नः भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ ॐ भगाय नमः ॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृतौदन पायस	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य ।	सुवस्त्र, स्वर्ण, रजत, अन्न, गोदान
उ. फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिरपीड़ा, अतिकष्ट	७	७ १४ ७ ६०	ॐ देवावध्वर्यूआगतरत्वेनसूर्यस्त्वचा मध्यायनं ꣳ समंजाये तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥ ॐ अर्यम्णे नमः ॥	१० सहस्र	घृत	शाल्यन्न मिष्ठान्न	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य ।	सुवर्ण, पयस्विनी गौ दान
हस्त (सविता)	उरःशूल, ज्वरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५ १७ १५ ०	ॐ चित्राऽउदगादिदनीमह्यकेतुर्विश्वस्य सूर्यो वरुणस्य देवः । यमस्य मेधमिदन्नयन्तिप्रजापतेर्जनयन्रोचमानः । त्रिनाकेतुमभिजुहोमिहव्यं देवाहुतम् बातजूतो योऽअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति ॥ ॐ सविते नमः ॥	५ सहस्र	दधि घृत	पायस	मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य ।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११ ९ ९ १९	ॐ त्वष्टातुरीयोऽद्भुतइन्द्रानी पुष्टिवर्द्धनम् । द्विपदा-च्छन्दइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदधः ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य ।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मन्त्राः	जप सं०	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायुः)	नाना कष्ट, ज्वर-पीड़ा	मृ.तु.	६० १७ ३० ०	ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथा सस्ते विरागहि नियुत्वाम सोम पीतये ॥ ॐ वायवे नमः ॥	१० सहस्र	तिल, यव घृत	घृतपायस	जाति मूलम्	चन्दनगन्ध (दमनक पुष्प) अगरु, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्ण, रक्तधेनु पक्वान्न
विशाखा (इंद्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५ ० ४ १३	ॐ इन्द्राग्नी आगत ँ सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम् । अस्य पातं धियेषिता ॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः ॥	१० सहस्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्रः)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६० १२ ३६ ३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत ँ सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायश ँ शन्नु ॥ ॐ मित्रायनमः ॥	१० सहस्र	यव-घृत	मध्याज्य गुडमाषान्न	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	स्वर्ण तिल, नील-वस्त्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९ ९ ६ ४	ॐ वातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ शक्राय नमः ॥	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर-धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य ।	स्वर्ण तिल, नील-वस्त्रदान
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदर-रोग, सन्निपात	७	० ९ १५ ६	ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमग्नि ँ स्वेयोनाव-भारुषा । तां विश्वैर्देवऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु ॥ ॐ निर्ऋतये नमः ॥	५ सहस्र	कन्दमूल घृत	सहवि माषान्न	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णागरुधूप, माषमिश्रान्न नैवेद्य ।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जल कुम्भ गोदान
पू. षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	० १५ २४ १०	ॐ अपाधमप किल्बिषमपकृत्यामपोरपः । अपामार्ग-त्वमस्मदनु त्वन्य ँ सुव ॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्टान्न-हवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचंदनगन्ध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य ।	ग्रामान्न, स्वर्णदान
उ. षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरःशूल, प्रलाप	३०	३० २४ २९ १९	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेम ँ हव मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठम् । अग्निजिह्वा उतवायुजत्रा आसद्यास्मि-न्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस तिलाज्य	कर्पास मूलम्	श्वेतचंदनगन्ध, कमलपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य ।	
श्रवण (विष्णुः)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोष-भय, अतिसार	११	६० २४ ६ ९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचंदनगन्ध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रस शाल्यन्न नैवेद्य ।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसवः)	ज्वर-कम्पन, रक्ता-तिसार, मूत्रकृच्छ्र	१५	१५ २ २७ २१	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ॥ ॐ वसुभ्यो नमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदनगन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य ।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुणः)	वात-ज्वर, सन्नि-पात, कष्ट	११	० ५५ ६	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥	१० सहस्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगरुगंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य ।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छाया-पात्रदान
पू. भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	० १२ ५१ १७	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः । विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवानास्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु ॥ ॐ अजैकपदे नमः ॥	१० सहस्र	शीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृङ्गराज मूलम्	केसर चंदनगंध, श्वेतार्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य ।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
उ. भा. (अहि-र्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१० २० ७ १५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि ँ सीः नमस्तेयाव्याय श्रेयाय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	तिल घृत मुद्ग माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	
रेवती (पूषा)	वात, पित्तमय-ज्वर, उरःशूल, चित्तभ्रम		१८ १० ९ २०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः ॥	५ सहस्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि दध्यन्न	अश्वत्थ मूलम्	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य ।	रजतवस्त्र, पैत्तलपात्र वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ :

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह उपरोक्त चक्र में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उससे अरुचि हो जावे को कहते हैं)। अंगशोथ (शरीर में सूजन), संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हड़फूटन, (हड्डियों में दर्द अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखें मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आंखें मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड़फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी विहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोष, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), अफारा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमांच (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के दोनों किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल, काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिला कर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक व सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोबान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहां रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली (गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का बूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है—समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़ कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज या कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतू बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नीबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोशृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मन्त्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मन्त्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मन्त्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, इसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं—वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निद्रा-भय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आंखें फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे—तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरु शूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), अफारा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिश रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिये परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में—श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोदन (दही में गुड़ मिला कर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पूये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते हैं)। सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदन (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), घृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नैवेद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य—गाय, भैंस का घी होता है। अपूपोदन मोदक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिनमें से कई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का ही होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-२ रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूट, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), (फूलों की जातियों, नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है।) यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या पर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग-प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षडरस शाल्यान्न नेवैद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कड़ुवा सब प्रकार के स्वादों से युक्त षटरस होता है।), श्वेतार्क (सफेद आक), शतौषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तैलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गोदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पक्वान्न (पकवान), जल कुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् छाती), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिद्रव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रान्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़ियों को चुगाया जाता है), कंदमूल (ऐसे फल जो जड़ों में पैदा होते हैं जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस(खीर), तन्दुल(चावल), यव(जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिये पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (गोखरू की जड़), अगस्त एक वृक्ष होता है, कार्पास कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक की जड़), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा--सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारि कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मन्त्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिये, विशेष कर ॐ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अथ सुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक-लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः उँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेड़ू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य-मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि-छठा, चन्द्रमा-सप्तम मंगल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य-भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेश, पापग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो, अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ श्री सार्वभू पंचांगम् ॥

अवकहड़ा चक्र: युक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, चरणात्मक अष्टोत्तरी : विंशोत्तरी महादशाओं और ऋतुओं की कुण्डली

राशि	(१) मेष	(२) वृषभ	(३) मिथुन	(४) कर्क	(५) सिंह	(६) कन्या
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य
हुंकार	अग्नि	भूमि	वायु	वारि	अग्नि	भूमि
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	मानव	जलचर	जलचर	मानव
नक्षत्र	अश्विनी १	भरणी २	कृत्तिका ३	रोहिणी ४	मृगशिर ५	आर्द्रा ६
	पुनर्वसु ७	पुष्य ८	आश्लेषा ९	मघा १०	पू. फा. ११	उ. फा. १२
	हस्त १३	चित्रा १४				
चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २
अक्षर	चु चे चो ला	ली लु ले लो	आ ई ऊ ए	ओ वा वी वु	वे वो का की	कु घ ङ च
	के को हा ही	हु हे हो डा	डी डु डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी
	पू ष ण ठ	पे पो				
वर्ण	सिंह	: : : वैश्य	: : : :	: : : शूद्र	: : : :	: : : वैश्य
	: : : :	: : : :	: : : सिंह	नाविक : : मेष	: : : :	: : : :
	: : : :	: : : :	: : : :	: : : :

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अष्टोत्तरी शनि महादशा :
A ०६,११,२०,३१,३४ B ०७,११,२६,४७,०८
C ०८,०७,२७,११ २५ D ०१,०३,२८,५५,४३

अवकहड़ा चक्र : युक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, चरणात्मक अष्टोत्तरी : विंशोत्तरी महादशाओं और ऋतुओं की सारणी

राशि	(७) तुला			(८) वृश्चिक			(९) धनु			(१०) मकर			(११) कुंभ			(१२) मीन		
वर्ण	हंसक	वश्य		हंसक	वश्य		हंसक	वश्य		हंसक	वश्य		हंसक	वश्य		हंसक	वश्य	
शूद्र	वायु	मानव		ब्राह्मण	वारि	कीट जल	क्षत्रिय	अग्नि	मान/चतु	वैश्य	भूमि	चतु./जल	शूद्र	वायु	मानव	ब्राह्मण	वारि	जलचर
नक्षत्र	चित्रा १४	स्वाती १५	विशा. १६	अनु १७	ज्येष्ठा १८		मूल १९	पू.षा. २०		उ.षा. २१	श्रवण २२		धनिष्ठा २३	शत. २४		पू.भा. २५	उ.भा. २६	रेवती २७
चरण	३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४		१ २ ३ ४	१ २ ३ ४		१ २ ३ ४	१ २ ३ ४		१ २ ३ ४	१ २ ३ ४		१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
अक्षर	रा री	रु रे रो ता	री तू ते तो	ना नी नू ने	नो य यी यु		ये यो भा भी	भू धा फा ढा		भे भो जा जी	खी खू खे खो		गा गी गू गे	गो सा सी सू		से सो दा दी	दू चा चा चो	दोदो चा ची
रंग	[illegible]	=	=	=	[illegible]		=	=		=	[illegible]		=	=		=	[illegible]	=
अवकहड़ा चक्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
पूर्वराशि	० ६	६ ६ ६ ६	६ ६ ३ ७	७ ७ ७ ७	७ ७ ७ ८		८ ८ ८ ८	८ ८ ८ ८		६ ६ ६ ६	६ ६ ६ ६		६ १० १० १०	१० १० १० १०		१० १० ११ ११	११ ११ ११ ११	११ ११ १२ ०
अंश	३ ६	१० १३ १६ २०	२३ २६ ० ३	६ १० १३ १६	२० २३ २६ ०		३ ६ १० १३	१६ २० २३ २६		० ३ ६ १०	१३ १६ २० २३		२६ ० ३ ६	१० १३ १६ २०		२३ २६ ० ३	६ १० १३ १६	२० २३ २६ ०
कला	२० ४०	० २० ४० ०	२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०		२० ४० ० २०	४० ० २० ४०		० २० ४० ०	२० ४० ० २०		४० ० २० ४०	० २० ४० ०		२० ४० ० २०	४० ० २० ४०	० २० ४० ०
अष्टोत्तरी महादशा	मंगल	मंगल	मंगल	बुध	बुध		बुध	शनि		शनि	शनि		गुरु	गुरु		गुरु	राहु	राहु
वर्ष	३ ४	४ ५ ५ ६	६ ७ ७ ८	१ २ ४ ५	७ ८ ९ ११		१२ १४ १५ १७	० १ १ २		३ ४ ५ ६	७ ८ ९ १०		१ ३ ४ ६	७ ९ ११ १२		१४ १५ १७ १९	० १ २ ३	३ ४ ५ ६
मास	६ ०	६ ० ६ ०	६ ० ६ ०	४ १० ३ ८	१ ६ ११ ४		९ २ ७ ०	७ ३ १० ६		४ २ ० ११	११ ७ ३ ०		७ २ ९ ४	११ ६ १ ८		३ १० ५ ०	९ ६ ३ ०	९ ६ ३ ०
दिन	० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०		० ० ० ०	१५ ० १५ ०		० ० ० २१	२७ २८ २९ ०		० ० ० ०	० ० ० ०		० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०
विंशोत्तरी महादशा	सं. ७	राहु १८	गुरु १६	शनि १९	बुध १७		केतु ७	शुक्र २०		रवि ६ (A)	चन्द्र १० (B C D)		मंगल ७	राहु १८		गुरु १६	शनि १९	बुध १७
वर्ष	५ ७	८ ९ १० ११	१२ १३ १४ १६	४ ६ १४ १९	४ ८ १२ १७		१ ३ ५ ७	५ १० १५ २०		१ ३ ४ ६	२ ४ ७ १०		१ ३ ५ ७	४ ९ १३ १८		४ ८ १२ १६	४ ९ १४ १९	४ ८ १२ १७
मास	३ ०	६ ० ६ ०	० ० ० ०	९ ६ ३ ०	३ ८ ६ ०		९ ६ ३ ०	० ० ० ०		६ ० ६ ०	६ ० ६ ०		६ ६ ३ ०	६ ० ६ ०		० ० ० ०	६ ६ ३ ०	३ ६ ९ ०
लग्न	३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४		१ २ ३ ४	१ २ ३ ४		१ २ ३ ४	१ २ ३ ४		१ २ ३ ४	१ २ ३ ४		१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
नवांश	७ ८	९ १० ११ १२	१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२		१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८		९ १० ११ १२	१ २ ३ ४		५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२		१ २ ३ ४	५ ६ ७ ८	९ १० ११ १२
स्वांश	शु म	बु. श. ब. शु	मं. शु. बु. च.	सू बु शु म	गु श. श गु		म शु. बु च	सू बु शु म		गु. श. श. गु	म शु. बु. च		सू बु शु म	गु. श. श. गु		मं. शु बु च	सू. बु. शु. म.	शु. श. श. गु.
नक्षत्र	चित्रा १४	स्वाती १५	विशाखा १६	अनु १७	ज्येष्ठा १८		मूल १९	पू.षा. २०		उ.षा. २१	श्रवण २२		धनिष्ठा २३	शत. २४		पू.भा. २५	उ.भा. २६	रेवती २७
योनि	हस्ति	व्याघ्र	सिंह	महिषी	श्वान		वानर	नकुल		सर्प	मूषक		गौ	महिष		व्याघ्र	मृग	श्वान
राशि स्वामी	(७) तुला (Lybra)			(८) वृश्चिक (Scorpio)			(९) धनु (Sagittarus)			(१०) मकर (Capricorn)			(११) कुंभ (Aquarius)			(१२) मीन (Pisces)		
	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	दक्षिण	दक्षिण	शरद	दक्षिण	दक्षिण	हेमन्त	दक्षिण	दक्षिण	हेमन्त	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	वसन्त

अन्तर्दशा निकालने की सरल विधि — कोई भी ग्रह की महादशा में प्रथम खुद की और उसके बाद अनुक्रम से (दशाधिपति) महादशा वाले ग्रह की अन्तर्दशा आती है। अन्तर्दशा निकालने के लिए नियम एवं है कि एक ग्रह की महादशा में कोई भी ग्रह की अन्तर्दशा निकालनी हो तो महादशा और अन्तर्दशा वाले दोनों ग्रहों की जितनी वर्ष की महादशा है उसको गुणा करके जवाब में जो आये उस मास समझना और वह अष्टोत्तरी हो तो नौ से तथा विंशोत्तरी हो तो दस से भाग कर जो आवे उसे मास समझना।

उदाहरण के लिए अष्टोत्तरी सूर्य की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा निकालनी है तो सूर्य के वर्ष ६ और चन्द्र के वर्ष १५ का गुणा करने से ९० होता है, उसको मास समझना अष्टोत्तरी है, इसलिए नौ से भागने से सूर्य में चन्द्र (या चन्द्र में सूर्य) मास १० आये, इसी तरह विंशोत्तरी सूर्य महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा निकालनी है, तो सूर्य के वर्ष ६ तथा शुक्र के वर्ष २० का गुणा करने से १२० मास होते हैं, इसको १० से भाग करने से सूर्य में शुक्र (या शुक्र में सूर्य) १२ मास (१ वर्ष) आते हैं। इसी तरह हरेक महादशा में अन्तर्दशा आसानी से निकाल सकती है।

राशि	अक्षर	राशि	अक्षर
१. मेष	अ, ल, ई	७. तुला	र, न
२. वृषभ	ब, व, ऊ	८. वृश्चिक	न, य
३. मिथुन	क, छ, घ	९. धनु	भ,ध,फ,ढ
४. कर्क	उ, ह	१०. मकर	ख, ज
५. सिंह	म, ट	११. कुम्भ	ग, श
६. कन्या	प, ठ, ण	१२. मीन	द, ध, झ, ञ

जन्मराशि से गोचर चन्द्र के गमन से ९-६-८० से ९-१०-८३-२० (अर्थात् ८३ वि. २० जी अक्षर तक) के प्रथम चरण में समाप्त होते हैं। अभिजित नक्षत्र को अलग (अष्टोत्तरी) शनि महादशा ३॥ वर्ष मान होती है, अर्थात् उत्तराषाढ़ा के चौथे चरण का अन्त और श्रवण के पहले चरण का प्रथम भाग (अर्थात् ७९६-८० मीन) तक अक्षर नक्षत्र की शनि महादशा १० वर्ष की भोग होती है। अभिजित नक्षत्र की शनि महादशा ३॥ वर्ष मान होती है, अर्थात् उत्तराषाढ़ा के चौथे चरण का अन्त और श्रवण के पहले चरण का प्रथम भाग (अर्थात् ७९६-८० से ९-१०-८३-२० तक) में समाप्त होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों के लिए दान

													संख्या	मन्त्र	अवस्था
सूर्य	कनक	मणि	घन	गुड़	सुवर्ण	ताम्र	कमल	रक्तवस्त्र	रक्त चंदन	चामर	दक्षिणा	जप	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	वर्ष २२
चन्द्र	मोती	चांदी	सिता	शंख	वंशपात्र	चावल	कपूर	श्वेतवस्त्र	श्वेत चंदन	श्वेतवस्त्र	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	वर्ष २४
भौमः	मूंगा	कनक	गुड़	सुवर्ण	ताम्र	रक्तवस्त्र	रक्तचन्दन	रक्तवृषभ	मसूर	रक्तपुष्प	दक्षिणा	जप	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	वर्ष २८
बुधः	हरितवस्त्र	मूंगी	कांस्य	घृत	मिश्री	हाथीदांत	सवर्ण	पन्ना	पुष्प	कपूर	दक्षिणा	जप	८०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	वर्ष २२
गुरुः	हरिद्रा	घोड़ा	खाण्ड	सुवर्ण	सिता	पुष्पराग	पीतवस्त्र	लवण	पीतपुष्प	मोदक	दक्षिणा	जप	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	वर्ष १६
शुक्रः	श्वेतवस्त्र	श्वेतवस्त्र	घृत	श्वेतचन्दन	हीरा	चांदी	चावल	खाण्ड	दुग्ध	श्वेतपुष्प	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	वर्ष २५
शनिः	तिल	तेल	माष	नीलम	कृष्णपुष्प	कृष्णवस्त्र	कृष्ण गौ	महिषी	लोहा	सुवर्ण	दक्षिणा	जप	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	वर्ष ३६
राहु	गुलमेद	घोडा	खड्ग	नीलम	कम्बल	सुवर्ण	तिल	तेल	नरेल	सप्तधान्य	दक्षिणा	जप	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	वर्ष ४२
केतु	कस्तूरी	कम्बल	खण्ड	बकरा	तिल	सवर्ण	खण्ड	सप्तधान्य	खोपा	कृष्णवस्त्र	दक्षिणा	जप	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	वर्ष ४२

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि–(यथा सिद्धौषधं रोगान्नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	मालती	इलायची	काले तिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्त चंदन	अक्षत	पुष्प	मनशिला	सुरमा	तिल पत्र	तिल पत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	श्वेत सरसों	सुवृक्ष मूल	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
केशर	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मुलट्ठी	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
खस	श्वेत चंदन	सिंगरफ	मधु	मधु		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलट्ठी	स्फटिक	माल कंगनी	मोती	मालती		मुत्थरा		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

अथाङ्ग विभागे पल्ली (छिपकली कोढ़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रू मध्ये	राज्य सबंधः	वामपादे	नाशः
नासग्रे	निधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	प्रघरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयं	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धि नाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा.मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्न भोजन
ललाटे	बंधुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
द० कर्णे	आयुर्वृद्धिः	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तोषः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

ग्रहपीड़ा निवृत्ति के लिए यन्त्र

सूर्ययन्त्रम्			चन्द्रयन्त्रम्			भौमयन्त्रम्			बुधयन्त्रम्			गुरुयन्त्रम्			शुक्रयन्त्रम्			शनियन्त्रम्			राहुयन्त्रम्			केतुयन्त्रम्		
६	१	८	७	२	९	८	३	१०	९	४	११	१०	५	१२	११	६	१३	१२	७	१४	१३	८	१५	१४	९	१६
७	५	३	८	६	४	९	७	५	१०	८	६	११	९	७	१२	१०	८	१३	११	९	१४	१२	१०	१५	१३	११
२	९	४	३	१०	५	४	११	६	३	१२	७	६	१३	८	७	१४	९	८	१५	१०	९	१६	११	१०	१७	१२

नवदल मुद्रा

गुरु-पन्ना	शुक्र-हीरा	चन्द्र-मोती
गुरु-पुखराज	सूर्य-मणि	म०-मूगा
केतु-लसन	शनि-नीलमे	रा०-गुल्मे

अदरक के लाभः—अदरक को नमक लगाकर खाने से हाजमा को तेज करता हैं। जबान और गले को साफ करता है। कबज को दूर करके भूख को बढ़ाता है। अदरक के रस में मधु मिलाकर प्रयोग करने से खांसी, दमा और जिगर के रोगों को दूर करता है। अदरक घी में भूनकर कुछ नमक मिलाकर खाने से अफारा दूर होता है। अदरक का रस निंबू के रस में नमक डालकर पीने से बदहजमी दूर होती है। चाय की तरह जल में पका कर दूध मिलाकर पीने से सर्दी, खांसी, जुकाम को लाभ होता है।

छिक्का फल—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा "छींक सूंघनी छलकर लीन्हीं। पीनस, सर्दी, घास फल हीनीं ॥ छींक पीठ की कुशल उचारे। बांई कारज सबै संवारे ॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भाषै, छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे ॥२॥ ऊँची छींक कहे जयकारी, नीची छींक होये भयकारी। अपनी छींक महादुखदायी, ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले। शयन के समय और सन्ध्यावन्दन जपादि के आरम्भ में छींक अशुभ नहीं होती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पल्लीपतने (छिपकली के गिरने पर) शुभ तिथि वार नक्षत्र—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ लाभदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन चारों में भी शुभ फल होता है। अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इनके अतिरिक्त तिथि नक्षत्र वारादि में छिपकली गिरे तो अशुभ होता है।

पल्लीपातेकर्त्तव्य कर्म्म—पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्यु योग, दग्ध दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पाप ग्रह-युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्यु-ञ्जय का जप वा तिल स्वर्णदान पंचगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्रदान करना भी उत्तम है।

अंगस्फुरण फलम्

पुरुषों का दायां अङ्ग और स्त्रियों का बायां अङ्ग फड़कना शुभ है। इन्हीं अङ्गों में तिल, लहसुन, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज उठे तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कपोल	शुभाप्ति	हस्त	द्रव्य लाभ	पादोपरि	स्थान लाभ	हृदय	दृष्ट सिद्धि	नाभि	स्त्री नाश	भग	पति प्राप्ति	उदर	कोष लाभ
ललाट	स्थानलाभ	भ्रू मध्य	सुख प्राप्ति	नेत्र	धनाप्ति	नेत्रोर्ध्व	विजय	वक्षः स्थल	विजय	कटि	प्रमोद	आन्त्रिक	कोष वृद्धि	कुक्षि	सुप्रीति	लिंग	स्त्री लाभ

नामाक्षरों से वैरवर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय-वर्ग से पंचक वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुण	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

घाततिथिर्घातवारः घातनक्षमेव च।
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्॥

अथ} **घातचक्र** {विवाह व उपनयनादि में यह घात चक्र वर्ज्य नहीं है। यह घातचक्र द्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य करें।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१२	५।१०।१५
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरुष घातचन्द्रः	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनुः	वृषभ	मीन	सिंह	धनुः	कुम्भ
स्त्री घातचन्द्र	मेष	धनुः	धनुः	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनुः	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहाः	गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यंग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः													जप सं०	जपनीय मन्त्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्त चंदन		७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	मू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेत चंदन		११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चंदन		१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरा वस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल		९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल		१६०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चंदन		१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णगौ	भैंस	उपानह		२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प		१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल	बकरा	शस्त्र		१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेत चंदन	हाथी दांत	मुंथेशवत		मुन्थेश मन्त्र		मुन्थेशकाले

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीय महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७				राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९				बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्				आर्द्रा स्वा.श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पूभा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उभा. तन्मध्येऽन्तरम्				अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अखि. तन्मध्येऽन्तरम्				पूफा. पूषा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७	रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३	बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८	बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	६	के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	०	४	६
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६	श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	६	शु	३	२	०	र	०	१०	६	चं	०	७	०
रा	०	१०	०	बृ	१	४	०	श	१	१	६	बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०	र	०	११	१२	चं	१	५	०	मं	०	४	२७
बृ	०	६	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	६	१८	चं	१	७	०	म	०	११	२७	रा	१	०	१८
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७	शु	३	०	०	र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	६	रा	२	६	१८	बृ	०	११	६
बु	०	१०	[illegible]	के	०	७	०	शु	१	२	०	र	०	१०	२४	चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६	बृ	२	३	६	श	०	१	६
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६	चं	१	०	१८	मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२	श	२	८	६	बु	०	११	२७
शु	०	[illegible]	[illegible]	र	०	६	०	चं	०	७	०	मं	१	०	१८	रा	२	०	१२	बृ	२	६	१२	श	२	८	६	बु	२	१०	०	के	०	२	०

[शेष पृष्ठ १४१ का]

विभिन्न ग्रहों के रत्न और धातुएं

ग्रह	रत्न	धातुएं
१. सूर्य	माणिक्य	स्वर्ण
२. चन्द्र	मोती	चांदी
३. मंगल	मूंगा	स्वर्ण
४. बुध	पन्ना	स्वर्ण, कांसी
५. गुरु	पुखर	चांदी
६. शुक्र	हीरा	चांदी
७. शनि	नीलम	लोहा, शीशा
८. राहु	गोमेद	पंच धातु
९. केतु	लहसुनिया	पंच धातु

१२ राशियों के रत्न और उपरत्न

राशि	रत्न और उपरत्न
१. मेष	त्रिकोण प्रवाल (मूंगा)
२. वृष	हीरा एवं षट्कोण पन्ना
३. मिथुन	पंचकोण पन्ना एवं मोती
४. कर्क	नीलम एवं गोल मोती
५. सिंह	गोल माणिक
६. कन्या	पन्ना
७. तुला	श्वेत पुखराज एवं हीरा
८. वृश्चिक	प्रवाल (मूंगा)
९. धनु	पीला पुखराज
१०. मकर	नीलम
११. कुम्भ	वैदूर्य (लहसुनिया)
	फिरोजा एवं नीलम
१२. मीन	गोमेद और पुखराज

विभिन्न अंग्रेजी महीनों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धारण करने योग्य रत्न

महीने का नाम	संबन्धित रत्न	महीने का नाम	सम्बन्धित रत्न
१. जनवरी	मूंगा (प्रवाल)	७. जुलाई	माणिक
२. फरवरी	एमेथिस्ट	८. अगस्त	गोमेद
३. मार्च	एक्वामरीन	९. सितम्बर	नीलम
४. अप्रैल	हीरा	१०. अक्टूबर	चन्द्रकान्त
५. मई	पन्ना	११. नवम्बर	पुखराज
६. जून	मोतिया	१२. दिसम्बर	वैदूर्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानांतर	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्य	विजयः	मार्गः	पीडाः	सुकु. नाश	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोगः	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौमः	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रु पीड़ा	शोकः	धनलाभ	धनहानि
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रु भय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभय	शोकः	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुखः	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भयं	धनहानि	एश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन.	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्युः	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुना.	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यला.	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखला.	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह. ला.	पुत्रः प्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रु भीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	क्षेमला.	व्यय
शनिः	वार्तांति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्र पीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्यहा.	धनहानि	धनला.	चिन्ता
राहुः	सिरोति	राजभी	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्महानि	विजयः	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनलाभ	लाभः	शोकः
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्यः	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मन्त्री	दुःशीलः	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुचिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्महा.	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनः २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पतिः ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनि	हीनांगी
भौम	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुपुत्रा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम०	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुष्पा	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	दुर्भोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	बला
केतुः	दुःखार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	अरोगा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अतः प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यतः किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु का पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य, आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में है, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में है।

२. ग्रह शुभ या अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट है अथवा नहीं।

३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ योग।

४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना भी सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों तो अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषड़ाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू. मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ यदि त्रिकोण पति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हो तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अतः केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेश स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा—दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था वाले ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (समभेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेश यदि त्रिकोण पति हो तो शुभ फल दायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अतः केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं।

जैसे कहा है—**यद्यद्भावगतौ वाऽपि यद्यद्भावेश संयुतौ।**
ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से सह वास न हो तो विशेष कर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ मित्र राशि में हर्षित शुभ राशि में शान्त नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान् तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**—धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**—तेजस्वी, शान्त, बांधवयुक्त। **दीन अवस्था**—बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**—चिंता युक्त, मानसिक दुःख, रोगी। **शक्त अवस्था**—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दुःख मिलता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, परवा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी। नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म-लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास, मीन लग्न यात्रा में वर्जित है। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी—तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
पान	घृत	गुड़	दूध	तिल	दही	जल	तिल

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४

आसातिथीनाम्

८	अ.	उ.	ने.	द	वा.	पू.	

आसातिथीनाम्

५	२	७	४	८	३	६	१

एवमेमेष्वादौ

५	५	५	५	५	५	५	५

विष्टेर्मुखपुच्छकुशु

८	१	८	३	७	२	५	४

चपुयामेष्वन्त्यम्

३	३	३	३	३	३	३	३

घटीत्रयंपुच्छशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार (भद्रा) तिथि	रविवार, मंगलवार, शनिवार २-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर योग बनता है।

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में विगुण फल देता है इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये. मू. ह. म. पुन. पु. र. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ-पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, सिंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जायें। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

बिडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव-से-गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा-मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्ध व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किंतु स- B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र.लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुःख	दुष्टला	धनप्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख को दायिनी। सम्मुख हरती प्रान॥ दाहिनी दुःख की दायिनी। "कौशिक" योगिनी जान॥

नोट—युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी—आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नैऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

[शेष पृष्ठ १२३ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त्ताः

मुहूर्तनाम	तिथयः	वारा	नक्षत्रादिकम्
सरजोदर्शने स्नानम्	सद्	चं.बु. गु.शु.	अश्वि. रो. मृ. उ. ३ ह. स्वा. ऽनु. ध. ज्ये. रे. श्राद्धाः । त्याज्याः—कृ. भ. मू. आ. पुन. पु. म. चि. वि. श्र.
गर्भाधान	सत्	..	उ. ३ मृ. ह. रो. स्वा. श्र. ध. श. अनु.
सीमन्त	सत्	र.मं.गु	मृ. पुन. पु. मू. श्र. ह. रे. शुक्ल पक्षे माहेश्वरेसबले
जातकर्म नामकर्म	सत्	चं.बु. गु.शु.	जन्मसमये वा. ११।१२ दिने अश्वि. रो. मृ. पुन २ उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. ऽनु. श्र. ध. रे. सद्भानि ।
सूतिका स्नानम्	सत्	सू.म. गु.	ह.मृ. ऽनु. रो. उत्त. ३ अश्वि. स्वा. रे. सद्भानि वचमशुद्ध लग्ने । त्याज्या. पुन. चि. वि. म.२ मू. आ. म श्र./(चराद्)
जलपूजा	सत्	बु.गु. ज.	पु. पुष्य ह. मृ. मू. ऽनु. श्र. सद्भानि । चैत्र पौष मलमास माधान्त गुरु शुक्र का अस्त वह वर्ज्य हैं ।
अन्नप्रशनं	२।३।५ ७।१० १३।१५	बु.गु. चं.शु.	बालानां षष्ठादि समामासेषु कन्याया. पंचमादि विषम मासेषु अश्वि. रो. मृ. पुन. २ उ. ३ ह.३ ऽनु. श.३ रे. भेषु । मीन वृश्चिक मेष लग्नानि । जन्मम च वर्ज्यम् १० में शुद्धे ।
कर्णवेधः	४।६।१४ ३० वर्ज्य	बु.गु. शु.चं.	जन्मदिनात् १२ वा १६ दिने वा ६।७।८ मासेषु वा विषमवर्षे अश्वि. पु. पुन.२ ह.२ ऽनु. अभि. ध. श.रे. मेषु चन्द्र । उर्ध्वबले दमशुद्धलग्ने । वर्ज्यः चैत्र पौषहरिशयनं जन्म मासतारा ।
चौलकर्म	२।३।५ ७।१० ११।१३	सू.बु. शु.चं.	३।५।७ वर्ष चैत्रहीनोत्तरायणे अश्वि. मृ. पुन. पु.ह चि.स्वा. ज्ये. अभि.श्र.ध.श.रे. सद्भानि । श्रवणात्पन्न बालस्य ज्येष्ठे निषिद्ध. गलग्रहे नेष्टः । अष्टममशुद्धलग्ने ।
विद्यारम्भः	२।३।५।६ १०।११।१२	सू.गु. शु.	५ वर्षे अ. मृ. आ. पुन. पु. पु ३. ह. चि. स्वा. मू. श्र. ध. श. सद्भानि अनध्याय वर्जित दिने (उत्तरायणे) ।
निष्क्रमम्	सत्	शुभ वार	४ मासे यावीक्षित तिथि वार नक्षत्रेषु अथवा जन्म से १२वे दिन वा मंगलपूर्वक घर से बाहर निकाले ।
विद्यारंभ दुकान	सत्	सू.चं.बृ. बु.शु.श	अश्वि ऽनु.रो.मृ. उ.३ पुष्य व अभि. रे ह. चि. शुभलग्ने और लग्न में शुक्र चन्द्र होवे अष्टाष्टरहितौ पापैः । कुम्भमकरहितौ.
स्त्रीयों चोटी आटीगुथा	सत्	मु.चं.र. शु.मं.	ह. म. रो. पु. श्र. स्वा. उ.३ मृ. अश्वि. चि. ऽनु. रे. नक्षत्र लग्न २।३।४।५।१२ ।
चूडा पहनना	सत्	र.बु.मं. गु.शु.	अश्वि. ह. चि. स्वा. वि. ऽनु. ध. रे. सूर्याभादगणना । ने ८। श्रे ३। ने २। श्रे ७। ने २। श्रे ४। ने १।
वस्त्रधरण	सत्	शुभाः	पू. ३ उ. ३ कृ. रो. चन्द्रबल देखकर कुयोग रहित ।
कन्याधरण	सत्	चं.र.बु. शुक्रगु.	पू. ३ श्र. अनु. उ. ३ स्वा. ध. कृ. रो. रे. मू. मृ. म. ह. पापाः ३।६।११ शुभाः ५।४।७।१०।६।१ श्रेष्ठः ।
रोषमुक्त स्नानम्	रिक्ता	र.बु.बृ मं.श.	अश्वि. ३ मृ. २ पु. पू. ३ ह. २ वि. ४ श्र. ३ ये नक्षत्र और चर लग्न अशुभ चन्द्र में ।
वापीकूप तडागारंभः	सत्	सत्	ऽनु. ह. रे. उ. ३ रो. पु. ध. श. मघा मू. पूषा. शुभे मासे स्थिरे लग्ने च शुक्र गुर्वीक्षणे ।
हलवाहनं	सत्	चं.बु. बृ.शु.	अश्वि. रो. मृ. पुन. २ उ. ३ ह. ५ ऽनु. म. मू. अभि. श्र. ३ रे. रविभादगणना ३ ने । ८ श्रे. । ६ ने. । ८ श्रे. ।
चूल्हा स्थापनं	सत्	..	पूर्वा ३ रो. पुष्य. उ. ३ अश्वि. आर्द्रा । रविभादगणना ६ श्रे. । ४ ने. । ८ श्रे. । ५ ने. । २ श्रे. । २ ने. । चन्द्रबलेशुभ ।
द्वारशाखा	५।७ ८।९	बृ.बु. शु.	रविभादगणना. ४ श्रे । ८ ने । ८ श्रे। ३ ने। ४ श्रे । काष्ठशा अश्वि ह. पुष्य रो.२उ.३स्वा श्रे.पाषणे ध.श.पूभा.३(७।१० में शु.ल.
दत्तकपुत्र ग्रहण	सत्	र.मं. बृ.शु.	ह. ४ ऽनु. अश्वि. ध. पुष्य सिंह वृष लग्न में वृश्चिक कुम्भक त्याज्य है ।
वधू प्रवेश	सत्	सत्	विवाह से २।४।५।६।७।८।९।१०।१२।१४।१६ दिनों में इसके पीछे विषममास विषमवर्ष में । ह. ३ रो. २ अश्वि. रे. म. पुष्य. ध. श्र. उ. ३ मृ. ऽनु. और स्थिर लग्न में ।
द्विरागमन मुकलावा	सत्	चं.बु. गु.शु.	मं.वृष्च. कुम्भस्थे स्वोच्च ह. ३ रो. २ अश्वि. पुष्य उ. २ श्र. ध. श पुन. रे. चि. ऽनु. सौम्ययुक्त दृष्टे ।२।३।४।६।७।१२ लग्ने रविवश्य शुद्धियोगे सति । सन्मुखदक्षिण विवर्जितेभूगीसत्
मंगल विवाह	सत्	र.मं. श	अश्वि. कृत्ति. आर्द्रा पुन. श्लेषा ज्ये ध. शे एषु मेषु गुरु-शुक्रयोरस्तादि दोषोपि नास्ति ।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्तम्

अश्वि. का वै., माघ, मार्ग. फा. मास श्रे. तथा मे. कर्क कं. तु. वृ. म. कुम्भस्थे रवौ श्रेष्ठः २।६।७।१०।१३।१५ आसु तिथिषु । अथवा या तिथिर्यस्यदेवस्य तस्यावाशुभदः स्मृतः तारा:—गु. शु. बु. सौम्यो मध्यमः पुन. पु. स्वा. उ. ३ श्र. ध. श. रे. अश्वि. ह. ऽनु. रो. मृ.चि. ज्ये. ये स्वस्वामी नक्षत्रेषा । सम्पाद् ३।६।११ पापा । १।४।५।७।९।१० साम्याः । चन्द्र तारानुकूले । गुरुशुक्रयोरुदितयोः. शुभे लग्ने १२ शुद्धे सति मृत्युवादि योग रहित । विष्णु-मजेस्थिरे, शिवस्यचरे । दुर्गाया द्वि.स्वेलग्ने । कूर्पचक्रशद्धौ प्रारभेत् ।

सर्व शुभ कार्येषु महापातो वर्ज्यः.—पश्चिमदिने अस्तदिनं वर्जयेच्छुभे । इतिनारद । आद्यन्तकालयोर्मध्ये कालोज्ज्वोतिदारुण ज्वलनाकारः सर्वकर्मसु गर्हितः । सूर्यसिद्धान्ते ।

साढ़ेतीन स्वयं सिद्धि मुहूर्त

साढ़े तीन स्वयं सिद्धि मुहूर्त १ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २ वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तीज) ३ आश्विन शुक्ल दशमी (विजया दशमी) ४ कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा ये चार स्वयंसिद्धि मुहूर्त है । इनमें किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है इसमें से प्रथम तीन मुहूर्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्ध बली होने से इन्हें साढ़े तीन मुहूर्त कहते हैं ।

॥ अभिजित मुहूर्त ॥

नित्य मध्याह्न में एक घटी अर्थात् ११ बजकर ४८ मि. से १२ बजकर १२ मि. तक के समय को समस्त विद्वानों ने अभिजित मुहूर्त की संज्ञा दी है । इस अभिजित मुहूर्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है । अतः कोई शुभ लग्न न बनता हो तो जातकादि सभी मुहूर्त अभिजित् मुहूर्त में किए जा सकते हैं ।

। हौमाहुति शुभाशुभ मुख ज्ञानम् ।

रवि नक्षत्र से दैनिक चन्द्र नक्षत्र तक गिने ३ नेष्ट तीन से ९ नक्षत्र संख्याङ्क तक श्रेष्ठ ९ से १२ तक नेष्ट । १२ से १४ तक श्रेष्ठ, १५ से १८ तक नेष्ट, १८ से २१ तक श्रेष्ठ शेष ६ नक्षत्र नेष्ट होते हैं ।

॥ शिव वास ज्ञानम् ॥

वर्तमान तिथि को दुगनी करके पांच और मिलावें सात से भाग दें । शेष १ बचे तो शिवजी का वास कैलास पर श्रेष्ठ, शेष २ में गौरी पार्श्वे श्रेष्ठ, शेष ३ में वृषाङ्क श्रेष्ठ, ४ शेष समाधौ सम, ५ शेष में जावेदायां श्रेष्ठ, ६ शेष बचे तो शिवजी का वास क्रिडायां दुःख और ७ शेष में वास श्मशान में जानना फल मृत्युः ।

॥ हौम समये अग्नि वास ज्ञानम् ॥

हवन दिन तिथि संख्या में "वार" संख्या जोड़कर १ और मिलावें, ४ से भाग दें शेष ३।० बचे तो पृथ्वी में अग्नि का वास श्रेष्ठ, १ बचे तो अग्नि का वास आकाश में प्राण नाशक और दो शेष में अग्नि का वास पाताल में होता है जो धन हानि करता है ।

॥ गृहारम्भे शेषनाग फलम् ॥

दोहा—फन दावे तिरिया डसे, पूछ दबे भरतार ।
जो कोई दावे मध्य में, होय कुटुम्ब संहार ॥

अर्थ—जो कोई शेषनाग के मुख पर में मकान की नींव रख चिनाई शुरू कर दे तो उस मकान मालिक की स्त्री नहीं बचती, इसी तरह पूछ से स्वयं गृहकर्ता और मध्य में कुटुम्ब का नाश होता है, इसलिए शेष की चाल बचाकर मुहूर्त करना चाहिए । चाल चक्र से स्पष्ट जानना ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अथ खात (खोदना) चक्रम्

सूर्य	विवाहे	देवालये	गृहारम्भे	जलाशये	शुभस्थान-
सूर्य	२।३।४	१२।१।२	५।६।७	१०।११।१२	अग्ने दिशा
सूर्य	११।१२।१	९।१०।११	२।३।४	७।८।९	नैर्ऋ ,,
सूर्य	८।९।१०	६।७।८	११।१२।१	४।५।६	वायव्य ,,
सूर्य	५।६।७	३।४।५	८।९।१०	१।२।३	ईशान ,,

टिप्पणी—तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से और वार की गिनती रविवार से की जाती है।

गृहारम्भ मुहूर्त शिल्प शास्त्र

दोहा—चार वेद तिथि दुगुनकरि, नाम के अक्षर जोड़।
शिव के नैना भाग दे, विश्वकर्मा ईंट चहोड़॥
एक बचे लखेश्वरी, दोय बचे धनवान।
शून्य बचे जीवै नहीं, शिल्प वचन प्रमान॥

सूर्यसंक्रांति से इतना दिन ५।७।९।१०।२१।२४ बरती सूती जानना सूर्यनक्षत्रात् ५।७।९।१२।१९।२६ भूशयनकेचिद्।

॥ चन्द्रमा विचार ॥

मेष-मकर वृष कर्कट सोते, कार्य समय ऐसे शशि होते।
कन्या मिथुन तुला धनु ठाड़े, कुम्भ मीन सिंह वृश्चिक बैठे॥
सोते कूप खुदाइये, बैठि बसाइए ग्राम।
ठाढ़े कटक सिधारिए, शिल्प शास्त्र प्रमाण॥

वारः	यशोपवीत मुहूर्त आसाय चक्रम्	सूर्यनक्षत्रात्कूप-नलंचक्रम्		
	सू. चं. बु. बृ. शु. एषां वारे भद्रा रुग्वाणादि दोषरहिते	ईशान ३ आरजल	पूर्व ३ खण्डिज	आग्ने ३ सुजल
तिथि	२।३।५।१०।११।१२ शुक्ले कृष्णे तु. २।३।५ परन्तु मासे पराहे न प्रदोषे	उत्तर ३ उत्तमजं	प्र ३ स्वाद तथाशीज	दक्षिण ३ निर्जल
दिशा	अ. ह. पु. उ. ३ रा. प्रले. स्वा. पुन. श्र. ध. मू. चि. मू. अनु. पू. ३ आ. रे.	वायव्य ३ मि. जल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋ त्य अमृतज.
नक्षत्रादि	३।६।११ व्याघा: २।७।१०।३ चन्द्र: १।४।५।७रा.।१० सौम्या ११ सर्वशुभा:। चन्द्रशुक्र गुरुलग्नेशा: ६।८ नेष्टा:। चन्द्र-शुक्रौ १२तिथौ। लग्नात्१।५।८ पापानेष्टा: ३।८।१२ सौम्या-नेष्टा:। पूर्णचन्द्रोवृषकर्कगतो लग्ने शुभोन्यायान लग्ने शुभ:। माधादिपञ्चमासा: शुभ:। कवीज्ययोर्वृद्धत्वास्तशि शास्त्वे न श्रेष्ठ:। जैवे मीना-र्केशुभम्।	गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण योज्यम् जल का वास भी गृहमध्ये कूप विचार से भूमि पर विचारे।		

+ + + +

वारों के नाम—

वारा सप्त रवि: सोमो मंगलश्च बुधस्तथा।
बृहस्पति शुक्रश्च शनिश्चैव यथाक्रमम्॥

सावन दिन सात हैं—जैसे रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, ये यथाक्रम से होते हैं।

रविवार में कृत्य—

राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निरत्नौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौणिकचर्मकाष्ठसंग्रामपथ्यादि रवौ विदध्यात्॥

राजाभिषेक, उत्सव, यात्रा, नौकरी, गोक्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कार्य, मंत्र, औषध-निर्माण, औषध-भक्षण, शस्त्र सम्बन्धी कार्य, सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य—

शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य-स्त्रीवृक्ष-कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीरविकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख, आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊख रस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्यपदार्थ, स्त्री सेवन, वृक्ष रोपणादि, कृषि जल सम्बन्धी, आभूषण, गीत-नृत्य, यज्ञ, दूध-दही-घृत सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, फूल तथा अक्षारम्भ ये कार्य सोमवार में करने चाहिए।

भौमवार में कृत्य—

मेदानृतस्तेय विषाग्निशस्त्र बन्धानि-घातादवशाठ्यदम्भान्।
सेनानिवेशाकरधातुहेम-प्रवालकार्यादि कुजेऽह्नि कुर्यात्॥

चुगुलखोरी, चोरी, विष-सम्बन्धी, शस्त्र-बन्धन, घात, संग्राम, शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना-सम्बन्धी, खान धातु, सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य—

नैपुण्य-पण्यायाऽध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनसूचितसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधे विधेया:॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला, शिल्प, खेल, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी, सोना, कांसा, सन्धि, व्यायाम और विवाहादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य—

धर्मक्रिया पौष्टिक कर्म यज्ञ-मांगल्यहेमाम्बर केसयात्रा:।
रथाश्वभेषज्यविभूषणाद्य कार्यं विधेयात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कार्य पौष्टिक यज्ञ विद्या, मांगल्य, सोना, सम्बन्धी गृह कर्म, वस्त्र, यात्रा, रथ आदि सवारी, घोड़ा सम्बन्धी, औषध, आभूषण आदि कार्य गुरुवार में करना चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य—

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्ध वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूपण्यगोक्षेत्र-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि रत्न, सुगन्ध वस्त्र, उत्सव आभूषण, भूमि व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, आदि कार्य शुक्रवार में करने से सिद्ध होते हैं।

शनिवार में कृत्य—

लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य-पापात्तुतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृहप्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्माकिंसुतेऽह्नि कुर्यात्।

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा-सम्बन्धी, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी, पापकर्म चोरी, मिथ्या, विष सम्बन्धी, आसव, गृह प्रवेश, हाथी को बन्धाना, दीक्षा(मन्त्र-ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए

रवि आदि के स्थिरादि संज्ञा—

रवि: स्थिर: शीतकरश्चरश्च महीं में उग्र: शशिजश्च मिश्र:।
लघु: सुरेज्यो भृगुजो मृदुश्च शनिश्च तीक्ष्ण: कथितो मुनीन्द्रै:॥

रवि स्थिर, चन्द्र (सोम) चर, मंगल उग्र, बुध मिश्र, गुरु लघु, शुक्र मृदु और शनि तीक्ष्ण है। विशेष—ग्रहों के नामानुसार कार्य ग्रहों के वार में करने से सिद्ध होता है।

शुभ और अशुभ वार—

सोमशुक्रगुरुसौम्यवासरा: सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदा:।
भानु-भौम-शनिवासरेषु तु प्रोक्तमेव खलु सिद्ध्यति॥

सोम, शुक्र, गुरु और बुध ये वार सर्वकार्यों में सिद्धप्रद होते हैं। रवि, मंगल और शनि ये वार-उपरोक्त कार्य में ही प्रशस्त हैं। सब कार्यों में विशेषकर विवाहादि शुभ कार्यों में नहीं।

विशिष्ट वारादि कथन—

वारे प्रोक्तं कालहोरासुपत्स्य विष्टीयोगेयोक्तं स्वामितिथ्यंकेऽस्य।
कुर्यादिक्शूलादि चिन्त्यं क्षणेसुनैवोल्लंघ्य: परिघश्चापि दण्ड:॥

इससे पूर्व और आगे—वार में जो कार्य विधि या निषेध कहा गया है उस कार्य को उसके (होरा=क्षण) वार में करना चाहिए। तथा जिस नक्षत्र में जो कर्म विधि अथवा निषेध कहा गया है वह उसके स्वामी के मुहूर्त में करना चाहिए। दिक्शूल आदि का विचार क्षणवारादि में करना एवं आगे कहे हुए परिघदण्ड का उल्लंघन क्षण नक्षत्र (मुहूर्त) में नहीं करना चाहिए।

॥ श्री आर्यभट्ट पंचांगम् ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा मुहूर्त्त

यात्रा मुहूर्त्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये। दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ। सन्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे होने पर मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उसदिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात् मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिये।

सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥

दिशाशूल--सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्

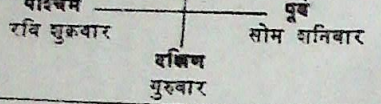

	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष सिंह धनु	सोम शनि	प्रातः काल
दक्षिण दिशा	वृष कन्या मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन तुला कुम्भ	रवि शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क वृश्चिक मीन	बुध मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास--प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एका. को अग्नि कोण में (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९, ३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

योगिनी वास

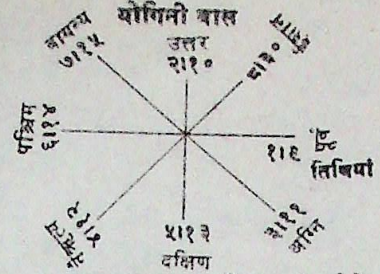

कालराहु चक्रम्

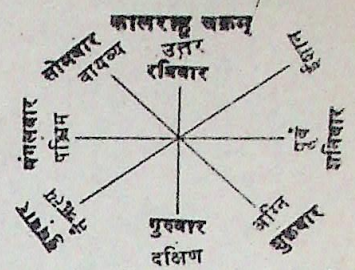

कालराहु वास--शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्र
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरु
नैऋत्य कोण	४।१२	बुध
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगल
वायव्य कोण	७।१५	सोम
उत्तर दिशा	२।१०	रवि
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल--पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातः काल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये।

महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त्त समय पर प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

[शेष पृष्ठ ९९ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संस्कार प्रकरण

सीमांत मुहूर्त्त विचार

यह सीमांत संस्कार गर्भाधान से छटे और ८वें महीने में होता है, उस महीने का स्वामी बलवान् होना चाहिए। गर्भ से लेकर १० महीने के स्वामियों की संज्ञायें ऐसी हैं, पहले महीने का स्वामी शुक्र, २ भौम, ३ गुरु, ४ सूर्य, ५ चंद्र, ६ शनि, ७ बुध, ८वें का लग्नेश, ९ चन्द्र और १०वें महीने का स्वामी सूर्य होता है। २।३।५।७।१०।११। १३।१५ इन तिथियों में तथा मृ. पुन. पुष्य ह. मू. श्र. नक्षत्रों में सू., मं., बृ. वारों में २।३।५।७।९।११ लग्नों और लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में (१।४।७।१०।९।५) में शुक्र ग्रह तथा ३।६।११ स्थान में पाप ग्रह होने पर और लग्न से १।६।८।१२ इन स्थानों में चन्द्रमा न हो, ८वां स्थान शुद्ध हो जन्म लग्न और जन्म राशि से ९वां लग्न न हो तो यह मुहूर्त शुभ होता है। स्त्री को चन्द्रमा का बल देखना जरूरी है। गुरु शुक्र के अस्त का दोष इसमें नहीं होता।

स्तनपान मुहूर्त—पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृरिक्ता तिथि को त्यागकर शुभ तिथि वार में अ. मृ. पुन. पुष्य हस्त मूल, रे. नक्षत्रों में स्तनपान कराना शुभ है।

प्रसूति स्नान मुहूर्त—रिक्ता तिथि को छोड़ कर शुभ तिथि रवि, मं., गुरुवार, अश्वि., रो., मृ. तीनों उत्तरा हस्त, स्वा., अनु., रेव. इन नक्षत्रों में वैधृति, व्यतिपात रहित दिन में प्रसूता स्नान शुभ है।

नामकरण मुहूर्त्त विचार

(नारद के वचन में) यह नामकरण सूतक के अन्त में अपनी-२ कुल परम्परा के अनुसार करना चाहिए। दैववश सुतकांत में न हो सके तो गुरु-शुक्र के उदय होने पर उत्तरायण में पूर्वाह्न के समय चं. बु. बृ. शु. वारों में २।३।५। ७।१०।११।१३ तिथियों में अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में स्थिर लग्न २। ५।८।११ में लग्न से १।४।५।७।९।१० स्थान में शुभ ग्रह ३।६। ११।१२ स्थान में पापग्रह तथा ८वां, १२वां स्थान शुद्ध होने पर पिता बालक के दाहिने कान में शास्त्र विधि द्वारा नामकर्म संस्कार करे, वह जातकर्म सम्पूर्ण व्यवहारों का कारण तथा भाग्य और कीर्ति का कारण होने से व्यतिपात वैधृति, संक्रांति और भद्रादि दोष युक्त समय को छोड़ कर शुभ होता है।

दन्तोत्पत्ति में विचार

कई बालकों के दांत पहले महीने से निकलने लग जाते हैं, उसके प्रत्येक महीने का फल नीचे लिखे चक्र से जान लें।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मास
स्वयं नाश	भ्रातृ हानि	भगिनि हानि	मातृ हानि	ज्येष्ठ भ्रातृहा	मित्रजीव	पितृ जीव	पुष्टिकारक	लक्ष्मी प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	सुख प्राप्ति	सुख प्राप्ति	फल

अन्न प्राशन का विचार

नवजात शिशु को छटे महीने से सम मास में तथा कन्या हो तो ५वें महीने से विषम मासों में, २।३।५।७। १०।१३।१५ तिथियों में चं., बु., बृ., शु. वारों में अश्वि., रो., मृ., पुन., पुष्य, उत्तरा. ३, ह., चित्रा, स्वा., अनु., श्र., ध., श., रे. नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नों में तथा लग्न से दशवां स्थान शुद्ध होने पर और ७वां, ८वां, ९वां स्थान क्रम से शु., मं. और बुध से वर्जित होने पर, ६।८ और १२वें स्थान में चन्द्रमा न हो; जन्म लग्न और जन्म राशि से ९वां लग्न न हो पूर्वाह्न के समय, भद्रादि दोष रहित समय में अन्न प्राशन करना शुभ होता है। इस समय बालक के आगे लेखनी, पुस्तक, स्वर्ण, चांदी, पत्थर और बर्तन रखे, बालक पहले जिस वस्तु को पकड़े उसी से बच्चे की आजीविका जानें।

कर्णवेध

चातुर्मास (आषाढ़ शु. ११ से कार्तिक शुदी ११ तक) चैत्र, पौष जन्म मास, जन्म तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि तथा ४।९।१४ तिथि और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२वें अथवा १६वें दिन अथवा ६।७।८वें मास में या विषम वर्षों में, शुभ वार, अश्वि., मृ., पु., पुष्य, ह., चि., अनु., अभि., श्र., ध., रे. नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध होने पर वृश्चिक, धन, मीन लग्न में और लग्न में गुरु हो तो कर्ण छेदन श्रेष्ठ होता है।

चूड़ाकरण

यह चूडाकरण संस्कार गर्भ से वा जन्म से ३।५।७ वर्ष और उत्तरायण में होता है। कन्या हो तो सम वर्षों में होता है। कई एक कुलाचार से प्रथम वर्ष में करते हैं, अथवा यज्ञोपवीत के साथ ही कर लेते हैं। २।३।५।१० ।११ तिथियों में चं., बु., गु., शु. वारों में अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, ह., चि., स्वा., ज्ये., श्रव., ध., श., रेव. नक्षत्रों में २।३।४।६।७।८।१२ लग्नों में और लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर शुक्र का लग्न से ८वें होना दोष कारक नहीं होता। जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो, केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें पाप ग्रह हों ६।८।१२वें चन्द्रमा न हो, जन्म नक्षत्र और जन्म मास न हो। भद्रा व्यतिपात आदि दोष रहित समय में करने से शुभ होता है। (विशेष विचार) माता गर्भवती हो और गर्भ ५ महीने से अधिक का हो गया हो तो चूड़ाकरण न करें। यदि बालक ५ वर्ष से अधिक हो गया हो तो गर्भवती माता होने पर भी चूड़ाकरण न लेवें, बालक जेठा हो तो जेठ के महीने में चूड़ाकरण न करें।

(वशिष्ट के वचन से)

अक्षरारम्भः

पांचवे वर्ष में और उत्तरायण में बालक से गणेश, विष्णु, लक्ष्मी और सरस्वती का पूजन करवा कर २।३।५। ६।१०।११।१२ तिथियों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, अश्वि., आर्द्रा, पुन., पुष्य, ह., चि., स्वा., अनु., श्रव., रेव., नक्षत्रों में, २।३।७।९।१२ लग्नों में, लग्न से आठवां स्थान शुद्ध होने पर, भद्रादि दोष रहित समय में अक्षरारम्भ शुभ होता है।

विद्यारम्भः

उत्तरायण में २।३।४।६।१०।११।१२ तिथियों में, सू., गु., शु., वारों में, अश्वि., मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू. ३, ह., चि., स्वा., मूल, श्रव., ध., श. नक्षत्रों में, २।३।६।९ लग्नों में, लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर, व्यतिपात आदि दुष्ट समय को त्याग कर शुभ समय में विद्यारम्भ करना चाहिए।

उपनयनम्

उपनयन संस्कार हो जाने से मनुष्य श्रौत स्मार्त कर्मों का अधिकारी हो जाता है, इस संस्कार के हो जाने

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से मनुष्य की देह संस्कृत हो जाती है। इस कर्म में काम्य नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के काल कहे हैं। ब्राह्मणों को ५वें, ८वें, १६वें वर्षों में, क्षत्रियों को ६ठे, ११वें और २२वें वर्षों में, वैश्यों को ८वें, १२वें और २४वें वर्षों में काम्य नित्य और गौणकाल कहे हैं। चै., वै., ज्ये., आषा., देवशयनी से पूर्व जानें। माघ और फाल्गुन इन महीनों में, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में और कृष्ण पक्ष में, २।३।५ तिथि पर्यन्त, सू., चं., बु., बृ., शु. वारों में, अश्वि., मृ., रो., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले., पू. ३ उत्तरा, ३ हस्त, चि., स्वा., ऽनु., मू., श्र., ध., श., रे. नक्षत्रों में, २।३।४।५।७।९।१२ लग्नों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों चं., बृ., श. और लग्न का स्वामी ६।८ और १२वें स्थान में न हो, १।५।८वें स्थान में पापग्रह न हों, वृष और कर्क राशि के बिना चन्द्रमा का लग्न में होना शुभ नहीं होता तथा रोगवान, संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, अनाध्याय, प्रदोष अपरान्ह काल और वैधृत्यादि दोषरहित समय में यह संस्कार करना शुभ होता है, शाकेश और वर्णेश बलवान् होना चाहिये, ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र शुभ नहीं होता। बालक को गुरु, सूर्य और चन्द्रमा का बल अवश्य देखना चाहिए।

सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरुबल	ग्रहबल
३।६।१०।११	३।६।७।१०।११ १।२।५।९	२।५।७।९।११	शुभ
१।२।५।७।९	.....	१।३।६।१०	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निंद्य

उच्च मित्र, स्वराशि में गुरु हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य है।

सूर्य वर की राशि से दूसरे, पांचवें और नौवें हों तो १३ प्रविष्टे के उपरान्त अपूजनीय है क्योंकि लिखा है—
कुमारस्योपनयने विवाहेषुपि रवि बल ३।६।१०।११ श्रेष्ठः, १।२।५।७।९ पूज्यः, ४।८।१२ निंद्यः, २।५।९ त्रयोदशाद्वा-त्परतः शुभः। अन्येष-अनिष्ठ स्थानगे सूर्ये शुभ राशिः पुरोभवेत्। त्रयोदशे दिनं त्यक्त्वा तेस्थ्यं शुभमादिशेत् ॥

शाकेश ज्ञान				वर्णेश ज्ञान			
ऋक्	यजु	साम	अथर्व	ब्राह्मण	क्षत्री	वैश्य	शूद्र
गुरु	शुक्र	भौम	बुध	गु. शु.	सू. भौ.	चन्द्र	बुध

दीक्षा मुहूर्त्त विचार

चै., वै., ज्ये. आषा., श्रा., आश्वि., का., मार्ग., महीनों में २।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथियों में सू., चं., बु., बृ., शु. वारों में रो., ह., चि., स्वा., अनु., उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में भद्रादि दोष रहित समय में दीक्षा ग्रहण करना शुभ होता है।

अथ विवाह संस्कार

सब आश्रमों में गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि ब्रह्मचर्याश्रम, वाणप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम इन तीनों आश्रमों का आश्रय स्थान, यही गृहस्थाश्रम है। इसी तरह देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण इन तीनों ऋणों से मुक्त करने वाली तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि देने वाला होने के कारण गृहस्थाश्रम सब आश्रमों में श्रेष्ठ माना गया है। और शेष संस्कार भी विवाह संस्कार पर ही निर्भर है, क्योंकि विवाह आदि संस्कार होने के पश्चात् ही गर्भाधान आदि समस्त संस्कार हो सकते हैं। इस कारण भी विवाह संस्कार सर्व प्रधान है। यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही स्त्री सुख ऐश्वर्य भोग और उत्तम संतान उत्पन्न करके मनुष्य अपने पितृ ऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह संस्कार का निर्णय हमारे ऋषि मुनियों ने अति सूक्ष्मता से किया है कि जिस के अनुसार विवाह नियत करके मनुष्य जीवन को सुखी बना सकता है। परन्तु आजकल के कई लोग बिना मुहूर्त्त को अच्छी तरह विचारे और कुण्डलियों तथा गुणादि का मिलान किये बिना ही विवाह नियत कर लेते हैं जो कि सर्वथा अनुचित है।

कन्या का पिता योग्य आयु के वर का निश्चय कर कन्या की कुण्डली का मिलान कर तथा गुण मिलान करके वाग्दान करे, ताकि नूतन दम्पति अपना जीवन सुखम व्यतीत करें।

मिलान में वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम व कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम ऐसा विपरीत कदापि न लेवें यह वर-कन्या के लिए हानि-प्रद है। या तो दोनों का प्रसिद्ध नाम लेवें या दोनों का जन्म नाम लेवें। विशेषतः दोनों का जन्म नाम ही लेना चाहिए। क्योंकि कहा है—

जन्म राशि विचार

कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्म राशौ बलान्विते।
अन्यानि शुभ कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥
विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशे प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ॥

नाम राशि विचार

काकिन्यां वर्णशद्धौ च दानेद्युते ज्वरोदये।
मन्त्र पुनर्भूवरणे नामराशि प्रधानता ॥
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नाम राशि प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ॥

विवाह में द्वादश चन्द्रमा का विचार

[काशी नाथः] अधाने संप्रदाने च विवादे राज विग्रहे। पाणि ग्रह च यात्रायां चन्द्रो द्वादशमः शुभः।

विवाह में वर्ज्य तिथि योग

वैधृति व्यति पाताख्यो संपूर्णो वर्जयेच्छुभ।
कृष्ण चतुर्दशी शुक्ला प्रतिपद्दर्श संज्ञिकाः। एतः शुभवे कार्येषु वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥

तिथिना त्रितयं वारमेकं स्पृशति यत्र वै। अवमं दहिनं ज्ञेयंशुभ कर्म्मसु संत्यजेत्।

वर कन्या की राशि मेलन विचार

वर और कन्या के जन्म नक्षत्र और जन्म राशि में (१) वर्णकूट (२) वश्यकूट (३) ताराकूट (४) योनिकूट (५) ग्रहमैत्रीकूट (६) गणकूट (७) भकूट (८) नाड़ीकूट, इन ८ कूटों द्वारा परस्पर मिलान करें, यदि दोनों का जन्मनाम मालूम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम से मिलान करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ योगिनी दशाऽन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
अ. आर्द्रा चित्रा			ध. पुनर्वसु स्वाती			श. पुष्य विशा.			अश्वि. अश्ले. उत्त. पू.भा.			भर. मघा ज्ये. उ.भा.			कृ. पू.फा. मूल रेव.			रो. उ.फा. पू.षा.			मृग. हस्त उ. षा.		
मा	१२	बु.	मा	२४	सू.	मा	३६	गु.	मा	४८	श.	मा	६०	शु.	मा	७२	श.	मा	८४	शु.	मा	९६	कि.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	बा.	३	०	आ	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	म.	२१	१०
पि.	०	२०	बा.	२	०	आ	४	०	म.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	११	२०	मं.	१८	२०	मं.	२	२०
बा.	१	०	आ	२	२०	म.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	मं.	१६	०	पि.	२	१०	पि.	५	१०
आ	१	१०	म.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	मं.	१३	१०	पि.	२	०	बा.	४	२०	बा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	म.	१०	२०	म.	१	२०	पि.	४	०	आ	७	०	आ	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	मं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	बा.	६	०	आ	९	१०	म.	१३	१०
म.	२	१०	मं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	बा.	५	०	आ	८	०	म.	११	२०	उ.	१६	०
मं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	बा.	४	०	आ	६	२०	म.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

मेषादि राशियों का अंग विभाग—कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है। मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, उरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं। जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में उरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश में पादों को जानना। उपर्युक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है अथवा पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हों तो वह अंग उपद्रव युक्त होता है। अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

योगिनी दशा का विवरण—मंगलादि योगिनी दशाओं के क्रमशः स्वामी चन्द्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि और शुक्र होते हैं। संकटा दशा के पूर्वार्ध (१ से ४ वर्ष) तक में राहु और उत्तरार्द्ध (५ से ८ वर्ष) तक में केतु स्वामी होता है।

शुभ दशाएं—मंगला, धान्या, भद्रिका और सिद्धा अशुभ दशाएं—पिंगला, भ्रामरी, उल्का और संकटा जाननी चाहिए।

तीर्थ यात्रा आदि में घात चन्द्र विचार—तीर्थ यात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन (यज्ञोपवीत) आदि शुभ कार्यों में घात चन्द्र का विचार नहीं होता। घात तिथि, घात वार, घात नक्षत्र इनका अशुभ फल केवल यात्रा में माना गया है, अन्य शुभ कार्यों में कोई दोष नहीं होता।

॥ प्रश्न विचार ॥

अथ नष्ट वस्तु चक्रम् (फल सहित)

संज्ञा	अन्ध	मन्द	मध्य	सुलोचन
नक्षत्र	धनि. पुष्य रोहि. पू.षा. वि. उफा. रे.	मृग. हस्त उषा. अनु. श्र. आश्ले. अ.	अभि. आर्द्रा म. चि. पू. भा. ज्ये. भर	पुन स्वा. श्र. कृति उभा. भू. पूफा.
दिशा फलम	पूर्वे गतम शीघ्रलाभम्	दक्षिणेगतम यत्नेनलाभः	पश्चिमेगतम् खबर मात्र	उत्तरे गतम न खबर न प्राप्त

अथ नष्ट वस्तु ज्ञानम् :—प्रश्न कालीन तिथि, वार, नक्षत्र और लग्नांक जोड़ में तीन युक्त कर, पांच से भाग दें। १ शेष बचे तो पृथ्वी में, २ बचे तो जल में है मिले नहीं, ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं, ४ बचे तो अग्नि या राज्य खजाने में विलय हो गई, ५ शेष में वस्तु मिले नहीं केवल शोक सन्ताप ही हो।

पशु खोये गये का प्रश्न :—सूर्याश्रित नक्षत्र से पशु (सफेद व लाल) खोये गये दिन दैनिक चान्द्र नक्षत्र तक गिने ९ नक्षत्र तक पशु को जंगल में भ्रमता जाने, ९ से १५ तक स्वस्थान के समीप जानना १५ से २२ तक शीघ्र घर आ जायेगा, २२ से २४ नष्ट प्रायः, २४ से आगे २७ तक नक्षत्र संख्या होने से पशु की मृत्यु हो गई खबर नहीं मिलेगी।

टिप्पणी—काला पशु बकरी भैंस इत्यादि का प्रश्न हो तो शनि जिस नक्षत्र पर चल रहा हो उससे गिनती कर फल ऊपर लिखे अनुसार जानना। यह मेरा स्वयं का अनुभव है शतप्रतिशत सत्य बैठता है।

। मेषादि लग्नोपरि प्रश्न, फल चक्रम् ।

लग्न	मनश्चिन्तित प्रश्नः	रोगिणां प्रश्नः
मेष	मानवीय जीव की चिन्ता	दैवी व कुल दोषः
वृषभ	चौपाये जीव पशु की चिन्ता	पितृ अतृप्ति दोषः
मिथुन	गर्भस्थ संतान की चिन्ता	शांकिनी-डांकिनी दोषः
कर्क	व्यवसाय की चिन्ता	भूत पिशाचादि दोषः
सिंह	नभचर, थलचर जीव	स्वकुलीय मात्र दोषः
कन्या	दाम्पत्य सुखोपयोग चिन्ता	स्वकुलीय देव दोषः
तुला	गुप्त दिये गये धन की चिन्ता	कुपित चण्डिका दोषः
वृश्चिक	दैहिक और भौतिक क्लेश	मृत्यवस्ता नारि दोषः
धनु	धनोपार्जन की चिन्ता	यक्षिणी व पिशाचिनी दोषः
मकर	शत्रु पर जय-पराजय चिन्ता	स्थान व ग्राम देव दोषः
कुम्भ	स्वकीय जायदाद की चिन्ता	अपुत्री कुलटा स्त्री दोषः
मीन	देव, भूतपिशाचादि की चिन्ता	आकाश गामी वायु प्रकोपः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साधक (प्रश्न कर्त्ता) साध्य (जिसके लिए कर रहा है)

साधक के नाम की वर्ग संख्या को दूना कर उसमें साध्य के नाम की वर्ग संख्या जोड़कर ८ का भाग दें शेष साधक के नाम की काकिणी होती है। इसी प्रकार साध्य की वर्ग संख्या दूनी कर उसमें साधक की वर्ग संख्या जोड़ें, ८ का भाग दें, शेष साध्य की काकिणी होती है। दोनों काकिणियों में जिसकी काकिणी अधिक (धनावशेष) हो वह अर्थप्रद (उत्तम धन देने वाली होती है) अथवा जिसकी काकिणी अल्प होती है, वह ऋणी होता है।

टिप्पणी—साध्य का तात्पर्य यह है कि प्रश्न कर्त्ता जिस किसी व्यक्ति या किसी स्थान विशेष के विषय में प्रश्न कर रहा हो। साधक स्वयं प्रश्न कर्त्ता होता है। वर्गांक और वर्ग की दिशा का पूरा विवरण इस श्री राजधानी पंचांग के मुख्य पृष्ठ पर दिया गया है।

गर्भिणी :—प्रश्न कालीन लग्न कुण्डली के तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम स्थान में पुरुष ग्रह रवि, मंगल और गुरु स्थित हों तो पुत्र हो और इन्ही स्थानों में अन्य ग्रह पड़े हों तो कन्या उत्पन्न हो। विशेषता:—गर्भिणी ऊर्ध्व मुख प्रश्न करे तो पुत्र, अधोमुख प्रश्न करने से कन्या का जन्म जानना चाहिए।

अंक प्रश्न :—प्रश्न कर्त्ता से १०८ अंक में से कोई भी अंक कहलवाये वह अंक मुख से उच्चारण करे उसमें १२ का भाग दें शेष १।७।९ बचे तो देर से कार्य सिद्ध होगा। ४।५।८।१० शेष में कार्य हानि ११ बचने से कार्य सिद्धि, ३।१२ शेष में कार्य सिद्ध होगा।

स्वरोदय यंत्र राज :—प्रश्न कर्त्ता: अभीष्ठ प्रश्न के यथार्थ फल ज्ञानार्थ मन में अपने इष्ट देवता का स्मरण कर अभूतपूर्व स्वरोदय प्रश्न यंत्र के किसी भी कोष्टक में अपने दहिने हाथ की तर्जनी अंगुली रखे. जिस कोष्टक में अंगुली रखी जाय उसमें लिखित अंक के अनुसार शुभाशुभ फल ज्ञात करें।

टिप्पणी—कोई भी सज्जन उपहास के लिए इस यंत्र का प्रयोग न करें अन्यथा किसी अनिष्ट का उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं होगा।

अथ विंशोत्तरी दशा परिलेख :—वर्तमान समय में सभी विद्वानों ने मनुष्य की पूर्णायु १२० वर्ष मान रखी है। १२० वर्ष को ही सूर्यादि नव ग्रहों में विभक्त किया गया है जैसा कि साथ के चक्र में स्पष्ट है। मनुष्य के जीवन में शुभाशुभ दशाओं का उदय ही प्राणि मात्र के पुनर्जन्माजित कर्मों का फल होता है। कृतिकादि २७ नक्षत्रों को त्रिआवृत्ति (श्रा, चं, भौ, रा, जी, श, बु, के, शु) में बाँटा गया है। अर्थात् किसी व्यक्ति का जन्म नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी है, तो उसका जन्म विंशोत्तरी सूर्य ग्रह की महादशा में हुआ है। ऐसा जानना चाहिए। (भयात् भभोग बनाने की विधि जातक प्रकरण में देखें।)

दशा का भुक्त भोग्य जानने की विधि :—जन्म नक्षत्र के कुल घट्यादि मान को भभोग (सर्वक्षः) कहते हैं और जन्म समय तक उसी नक्षत्र के गत घट्यादि मान को भयात् (गतर्क्षः) कहते हैं। भयात् और भभोग की घटियों को पृथक-पृथक ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात् के सर्व पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर फिर भभोग के सर्व पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष, शेषांक को १२ से गुणा कर फिर भभोग पलों से भाग दें, लब्ध मास, पुनः शेषांक को ३० से गुणा कर भभोग के पलों से भाग दें लब्ध दिन आवेंगे। (इसी प्रकार ६० से गुणा कर भाग करने पर घटी-पल उपलब्ध होंगे) यह दशा के भुक्त वर्षादि होंगे। नोट :—इसी प्रकार योगिनी दशा के जानें।

❖ वर्ष फल साधनम् ❖

वर्ष शुभाशुभ फलित हित, जो सम्वत् आमाब्द. जन्मा सम्वत् हीन करि, जो बचें वर्ष शेषाब्द॥

वर्तमान सम्वत् में से जन्म का सम्वत् घटा दें, जो वर्ष शेष बचें उन्हें शेषाब्द (गताब्द व ध्रुवांक) भी कहते हैं। वर्ष शेषाब्द यानी गत वर्ष संख्यांक तुल्य वर्ष प्रवेश सारणी में जो वारादि अंक प्राप्त हों उन्हें जन्म के वारादि इष्ट काल में जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वारादि इष्ट काल होगा। इसी इष्ट परिमित लग्नवत् क्रिया करने से वर्ष लग्न सिद्ध होगा। नोट—प्रति वर्ष जन्म तारीख के लगभग ही वर्षेष्ठ सिद्ध होता है।

❖ योगिनी मुद्दा दशा जानने की विधि: ❖

योगिनी	मं	गि	धा	भ्रा	भ	उ	सि	श
मास	०	१	१	१	१	२	२	२
दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

शेषाब्द (गताब्द) संख्या में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़कर ३ और जोड़ दें। ८ से भाग दें शेष तुल्य मंगलादि योगिनी दशा जानना अर्थात् वर्षारम्भ में शेषांक तुल्य मुद्दा दशा रही वर्ष कुंडली में प्रधान ग्रह मुंथा: होती है।

दोहा—जन्म लग्न में मुन्था, जन्म समय बलवान।
भोग एक राशीवर्ष, कौशिक वचन प्रमान॥

जन्म समय में मुन्था: जन्म लग्न में होती है। प्रति वर्ष प्रति एक राशि में भोग करती हुई पुनः (१३) तेरहवें वर्ष में जन्म लग्नांक राशि में मुन्था आ जाती है।

जानने की विधि:—गताब्द संख्यांक में जन्म लग्नांक जोड़कर १२ का भाग दें शेषांक (राशि) में मुन्था लगा दें।

❖ वर्ष मध्ये मुद्दा (गौरी) दशा चक्रम् ❖

ग्रहा	रवि	चन्द्र	मंगल	रा	जी	श	बु	के	शु
मा.	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

मुद्दा (गौरी) दशा जानने की विधि:—जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द अर्थात् गत वर्ष संख्या जोड़कर २ घटा दें ९ से भाग करने पर जो शेष बचे उसी नम्बर की दशा वर्षारम्भ में होती है। उससे आगे क्रमशः सभी दशायें अपने-अपने निश्चित समयानुसार भोग करती हुई चक्र (वर्ष) पूरा करती हैं।

नोट—यदि शून्य शेष बचे, अर्थात् ९ का भाग पूरा लग जाय तो वर्षारम्भ में शुक्र की दशा जाननीच हिए। नक्षत्र की गणना आश्विनी आदि मानकर की जाती है।

❖ त्रिराशि पति चक्रम् ❖

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवा:	र	शु	श	शु	गु	चं	बु	मं	श	मं	गु	चं
रात्रौ	गु	च	बु	मं	र	शु	श	शु	श	मं	गु	चं

दिन में वर्ष प्रवेश हो तो मेषादि राशियों के क्रमशः त्रिराशि पति (स्वामी) सूर्य शुक्र शनि आदि जानना और यदि रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो गुरु चन्द्र बुधादि त्रिराशि पति होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुछ रोगों पर महात्माओं की अनुभूत औषधें

खांसी—काकड़सिंगी, अतीस, मुलहठी ये तीनों चीजें बराबर लेकर चूर्ण कर लें। शहद से मिलाकर चाटें तो खांसी बन्द हो जाय।

घाव मरहम—तिल का तेल दो तोला, मोम देशी छह माशे, कत्था छह माशे, सिंदूर छह माशे, मुरदासंग छह माशे, छोटी इलायची के बीज छह माशे, सफेदा काशगरी छह माशे इन सब चीजों का मरहम बनाकर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

स्तनों में दूध बढ़ाना—कमलगट्टे की खीर से स्तनों में दूध बढ़ जाता है। (२) बिनौले की गिरी के दो तोले चूर्ण को दूध में खीर बनाकर खाने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।

रक्त प्रदर—नीम का तेल गाय के दूध में पीने से स्त्री का रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

उन्माद—ईख कुटकी सम भाग दूध और शक्कर मिलाकर नासिका में डालकर नस्य लेने से सब प्रकार के उन्माद नष्ट होते हैं।

गर्भ प्राप्त—बिजौरे नीबू के बीजों को दूध में पकाकर घी के साथ पीने से स्त्री को गर्भ प्राप्त होता है।

ज्वरातिसार—असगन्ध, दालचीनी, नागरमोथा, वाराहीकन्द, धाय के फूल और कुड़ा इनसे सिद्ध जल क्वाथ चार-पांच दिन में ज्वरातिसार की शान्ति करता है।

अर्श—हरड़ और लहसन चार माशे और हाड़जोड़ आठ माशे, कुछ तेल और नमक मिलाकर लगाने से अर्श रोग का नाश होता है।

बवासीर—अगर बवासीर को जड़ से खोना है तो एक मास तक अन्न नहीं खाना चाहिए। केवल जिमीकन्द का सेवन सुख पूर्वक करने से बवासीर नष्ट होता है।

बिच्छू का जहर—हुलहुल की जड़ बिच्छू काटे मनुष्य को सात बार सुंघाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

पुराने दस्त—साढ़े चार माशे रीठा को आधा पाव पानी में भिगोकर झाग उठायें। फिर उस पानी को छानकर रोगी को पिला दें। कुछ दिन पिलाने से पुराने दस्त ठीक हो जाते हैं।

जूएं—धतूरे के पत्तों का अर्क कूटकर निकाल लें। इस अर्क को सिर में लगाने से जुएं मर जाते हैं।

आंख दुखना—बबूल के पत्तों को रात के समय कूटकर टिकियां बना लें। इन टिकियों को दुखती आंखों पर रखकर ऊपर से पट्टी बांध कर सो जायें, सुबह तक आंखों की लाली तथा पीड़ा दूर हो जायेगी।

पेट का दर्द—पीपल के दो पत्तों को पीसकर गुड़ में मिलाकर खाने से पेट का दर्द दूर हो जाता है।

गंज—बरगद के पत्तों को अलसी के तेल में भूनकर प्रातः सायं गंज पर मलने से कुछ दिनों में गंजे सिर पर बाल उग आते हैं।

तुतलाना—प्रतिदिन सत्यानाशी की एक नई डाली को तोड़कर जीभ पर लगायें, फिर उसके दूध को उंगली से जीभ पर मलें। कुछ दिन तक यह क्रिया करने से तुतलाना ठीक हो जाता है।

पेट के कीड़े—इन्द्रायण की जड़ को महीन पीस कर कपड़छान कर लें। ३ माशा चूर्ण में १ तोला पुराना गुड़ मिलाकर खूब कूटें फिर गुलाब जल के छींटे देकर नरम करके ६ गोलियां बना लें। प्रतिदिन २ गोली गरम पानी के साथ सेवन करने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

दाद—ढाक के बीज तथा कत्था दोनों को बराबर लें, पानी में पीसकर लेप करने से दाद कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

मुंह के दाग—तुलसी के पत्तों के रस में नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर मलने से झांई, मुंहासे आदि चेहरे के दाग दूर होते हैं।

उदर-विकार—१ पाव गुलाब जल में १ पाव अनारदाना भिगोकर रात भर रख दें, सुबह उसे मलकर छानकर पी जायं। इससे हर प्रकार के उदर-विकार, आधा सीसी तथा नेत्र रोगों को लाभ होता है।

हैजा—ढाई तोला प्याज तथा ७ काली मिर्च को सिल या खरल में डालकर इतना पीसें कि छानने की जरूरत न रहे, फिर उसमें उतना पानी मिला दें जितना रोगी पी सके। इसे पिलाते ही हैजा की घबराहट, प्यास, कै तथा दस्तों को लाभ होता है।

काली खांसी—छोटे बच्चों के गले में लहसुन की कलियों को गूंथकर माला बनाकर पहना देने से ही उनकी काली खांसी ठीक हो जाती है।

जुलाब—ढाई तोला अण्डी का साफ किया हुआ तेल रात्रि के समय दूध के साथ पीने से प्रातः साफ दस्त आता है।

पेचिश—सौंफ ५ तोला, बेलगिरी ५ तोला और मिश्री १० तोला—तीनों को कूट-पीस कर ६-६ माशे चूर्ण को ताजा पानी के साथ सुबह शाम लेने से पेचिश दूर होती है।

प्लीहा—कच्ची मूली का सेवन करना यकृत् तथा पीलिया रोग में लाभ करता है।

मृगी—दो माशे तम्बाकू के पत्तों को एक पाव खौलते हुए पानी में एक घंटे तक डाले रखें। फिर पानी को छानकर आधी छटांक की मात्रा में प्रातः सायं पिलायें। एक सप्ताह के प्रयोग से मृगी रोग पूरी तरह से ठीक हो जाता है।

कण्ठ माला—काशीफल के टुकड़ों को पानी में गर्म करें। उस गर्म पानी के गरारे करने से कण्ठ माला रोग में लाभ होता है।

दाढ़ का दर्द—एक लाल मिर्च को पानी में महीन पीसकर छान लें। उस पानी को थोड़ा-सा गरम करके जिस ओर की दाढ़ में दर्द हो उसके दूसरी ओर के कान में डाल दें तो दाढ़ का दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है। इस प्रयोग से कान में दर्द होने लगे तो थोड़ा सा शुद्ध घी गरम करके कान में डाल देना चाहिए तो उससे कान का दर्द दूर हो जाता है।

प्याज, लहसुन, नमक, मिर्च, हल्दी, धनिया, अदरक, घी, शहद, जीरा, पानी, मिट्टी, मट्ठा, दूध, दही, कौड़ी आदि लगभग ७० वस्तुएं ऐसी हैं, जो हर घर में मौजूद रहती हैं और वह अकेली ही, मिन्टों में विभिन्न प्रकार के रोगों में लाभ पहुंचाती हैं। इन वस्तुओं के गुण तथा उपयोगों की जानकारी देने वाली अलग-अलग पुस्तकें हमारे यहां से प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तकों का अध्ययन आप अवश्य करें। इन पुस्तकों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारे यहां से 'घर का वैद्य, ३५-०० नामक पुस्तक आज ही मंगायें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हस्त-रेखा विचार

हाथ देखने से पहले यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पुरुष का दाहिना (सीधा) हाथ तथा स्त्री का बायां (टेढ़ा) हाथ देखना चाहिए। यदि हाथ में मत्स्य-रेखा हो तो धनवान, बहुसंततिवान, बुद्धिमान तथा सुख भोगने वाला होता है। यदि तुला (तराजू), ग्राम, गांव तथा वक्ष में कोई चिन्ता चिन्ह हो तो व्यापार में सिद्धी मिलती है। कमल, धनुष, तलवार तथा अष्टकोण में से कोई चिन्ह हो तो धनवान् तथा सुख-समृद्धि से सम्पन्न होता है। त्रिशूल, छत्र, शक्ति वाण, रथ, चक्र और ध्वजा का चिन्ह हो तो राजा या राजा के समान वैभव वाला होता है। गिरि, कंकण, योनि, नर-मुंड आदि चिन्ह हों तो राजा का मन्त्री होता है। सूर्य, चन्द्र, नेत्र, मन्दिर, हाथी, और घोड़ा में से कोई चिन्ह हो तो धनवान् तथा सुखी होता है। यदि अंगूठा के मध्य में यव (जौ) का चिन्ह हो तो वह अपनी उत्पन्न वस्तुओं का भोक्ता तथा सुखी होता है। तर्जनी व मध्यमा उंगलियों में से किसी के बीच में यव (जौ) हो तो वह स्त्री-पुत्र, घर, धन-धान्य से पूर्ण सुखी होता है।

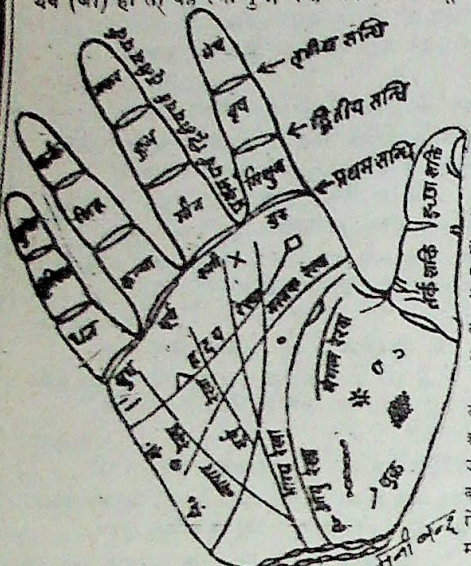

अंगूठे या हाथ में कहीं भी सूप का चिन्ह हो तो अत्यंत दरिद्री होता है। अंगूठे के मूल से लेकर पोंचे के मोड़ तक के उभरे हुए भाग में जितनी रेखाएं दीख पड़ें, उतने ही भाई-बहिन जानने चाहिए। कनिष्ठा उंगली की जड़ के समीप जितनी रेखाएं हों, उतने ही विवाह या उतनी ही स्त्रियों का सुख जानें। अंगूठे के पीछे के बीच के मोड़ पर जो तीन रेखाएं हैं उनमें से एक से बचपन, दूसरी से जवानी तथा तीसरी से बुढ़ापे का सुख-दुःख जानना चाहिये।

● **भाग्य रेखा**—यह रेखा मणिबन्ध (पौंचा) के मूल से लेकर मध्यमा अथवा तर्जनी उंगली के मूल तक जाती है। यदि यह रेखा बीच में कहीं कटी-फटी या खंडित न हो तो व्यक्ति ऐश्वर्यशाली होता है और यदि मध्यमा उंगली के मूल पर समाप्त हो तो उसे सोने के व्यापार से बहुत लाभ होता है। यदि रेखा कटी हो तो ऐसा व्यक्ति निरन्तर अधिक लाभ नहीं कर पाता है। यदि किसी के हाथ में यह रेखा बिल्कुल न हो तो ऐसे व्यक्ति का भाग्य सूर्य रेखा, जीवन रेखा तथा मस्तक रेखाओं की स्थिति से जानना चाहिए।

● **जीवन-रेखा**—यह रेखा तर्जनी उंगली तथा अंगूठे के बीच से मणिबन्ध (पौंचे) की ओर शुक्र-क्षेत्र को घेरती हुई जाती है। यह रेखा सभी हाथों में समान रूप से नहीं होती। यदि यह रेखा स्पष्ट, उठी हुई तथा लम्बाई में पूर्ण हो तो वह व्यक्ति प्राण-शक्ति धारण करने वाला होता है। जिन हाथों स्पष्ट, पतली तथा लम्बाई में पूर्ण रेखा हो तो उनमें प्राण-शक्ति कम ही रहती है। यदि यह रेखा बीच में किसी स्थान पर टूटी हुई हो और साथ ही टूटे हुए स्थान से किसी अन्य रेखा का सम्बन्ध न हो, तो उसी आयु में दुर्घटना घटित होती है। यदि अन्य लक्षण भी इसके द्योतक हों तो मृत्यु जाननी चाहिए। यह रेखा लम्बाई में पूर्ण होती हुई भी अन्य रेखाओं से कट रही हो अथवा स्वयं ही कटी हुई हो तो कष्ट, दुर्घटना, एक्सीडेंट आदि या मृत्यु के समान दुःख होता है।

● **हृदय-रेखा**—कनिष्ठा उंगली के नीचे से चलकर तर्जनी या मध्यमा उंगली के नीचे के क्षेत्र तक जाने वाली रेखा हृदय रेखा कहलाती है। भारतीय विद्वान् इस रेखा को आयु-रेखा भी कहते हैं। परन्तु पाश्चात्य विद्वानों के मत में यह हृदय-रेखा है इस रेखा से मन, हृदय तथा प्रेम-सम्बन्ध के बारे में देखा जाता है। यदि यह रेखा तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व तक चली आये तो ऐसे व्यक्ति का प्रेम-सम्बन्ध समाज में चर्चा का विषय बन जाता है।

यदि यह रेखा मध्यमा उंगली तक जाए तो ऐसा व्यक्ति छल-कपट का व्यवहार करने वाला, स्वार्थी, आत्मलोलुप, धूर्त, कपटी तथा आडम्बर-प्रिय होता है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रेमी को भी धोखा देने में नहीं चूकते। इन्हीं कारणों से इन्हें समाज में विशेष आदर नहीं मिलता।

● **मस्तक रेखा**—यह रेखा तर्जनी उंगली और अंगूठे के मध्य भाग से जीवन रेखा से मिलती हुई अथवा उससे कुछ दूर होकर हथेली के मध्य भाग में चन्द्र अथवा राहु-क्षेत्र की ओर जाती है। प्राचीन भारतीय विद्वानों के अनुसार इसे 'धन-रेखा' या 'वैभव रेखा' बताया गया है परन्तु पाश्चात्य विद्वान इसे 'मस्तक रेखा' बताते हैं। इससे शिक्षा, विद्या, बुद्धि का विचार किया जाता है। यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा निकलने के स्थान से जीवन-रेखा को काटती हुई आगे जाए तो ऐसा व्यक्ति ईर्ष्यालु, झगड़ालू, विवेकशून्य तथा खोटी बुद्धि वाला होता है। बाल्यकाल में वह प्रायः किसी दुर्घटना का शिकार होता है। यदि यह रेखा जीवन-रेखा को छूती हुई आगे बढ़े तो ऐसा व्यक्ति विवेकशील, बुद्धिमान, अवसरवादी तथा सतर्कता एवं सावधानी से काम करने वाला होता है।

● **सूर्य-रेखा**—यह रेखा मणिबन्ध, चंद्र व राहु-क्षेत्र, मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा अथवा अन्य किसी स्थान से प्रारम्भ होकर अनामिका उंगली के नीचे सूर्य-क्षेत्र की ओर जाती है। यह रेखा प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में नहीं पाई जाती। जिनके हाथ में यह रेखा होती है, वे व्यक्ति भाग्योन्नति, आदर-सत्कार तथा यश के धनी होते हैं। इसे 'यश-रेखा' भी कहा जाता है। यदि यह रेखा जीवन-रेखा से निकलकर सीधी सूर्य-क्षेत्र तक जाए तो ऐसा व्यक्ति यंत्र-तंत्र-मंत्र-वेत्ता, कलाकार, यशस्वी, चित्रकार तथा समाज में प्रतिष्ठा-प्राप्त होता है। यदि मंगल-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-क्षेत्र तक जाए तो ऐसा व्यक्ति विद्रोही, परिश्रमी, बहादुर और आत्म-विश्वासी तथा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

● **स्वास्थ्य-रेखा**—यह रेखा हथेली के मध्य भाग से, जीवन रेखा से, चन्द्र-क्षेत्र से अथवा अन्य किसी स्थान से निकलकर कनिष्ठा उंगली के नीचे बुध-क्षेत्र तक जाती है। इस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रेखा से भारतीय विद्वान् भाग्य के बारे में भी विचार करते हैं, परन्तु पाश्चात्य विद्वान् इसे स्वास्थ्य की दशा समझने में प्रयुक्त करते हैं। यह रेखा प्रायः बहुतों के हाथ में नहीं पाई जाती। विशेष रूप से जिनके हाथ में यह रेखा पाई जाती है, उनके स्वास्थ्य पर यह अपना शुभ या अशुभ प्रभाव अवश्य डालती है। जिनके हाथ में यह रेखा नहीं होती वे व्यक्ति प्रायः स्वस्थ, दीर्घ-जीवी एवं प्रसन्नात्मा होते हैं। यदि यह रेखा मस्तक तथा हृदय-रेखा को काटती हुई जाती है, तो ऐसा व्यक्ति मस्तिष्क एवं हृदय दोनों में कमजोर होता है। यह रेखा जितनी स्पष्ट होगी, स्वास्थ्य उतना ही उत्तम होगा और जितनी टेढ़ी, कटी एवं टूटी होगी स्वास्थ्य उतना ही कमजोर होगा।

● **विवाह रेखा**—यह रेखा कनिष्ठा उंगली के नीचे होती है। जितनी रेखाएँ होती हैं, उतने ही विवाह अथवा उतनी स्त्रियों का संसर्ग-सुख भोगने वाला होता है। यदि विवाह-रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी स्त्री से कलह करने वाला तथा व्यभिचारी होता है। यदि यह रेखा शुद्ध हो और एक हो तो ऐसा व्यक्ति एक पत्नी-व्रती होता है।

विवाह-रेखा के ऊपर-नीचे छोटी-छोटी रेखाएँ, जो बहुत ही सूक्ष्म होती है, उनसे संतान के बारे में विचार करना चाहिए। ये छोटी-छोटी रेखाएँ यदि टूटी-फूटी हों तो सन्तान की मृत्यु अथवा गर्भ-पात की सूचक जाननी चाहिए। संतान के विषय में अंगूठे के मूल से लेकर मणिबन्ध (पौंचे) के मोड़ तक की रेखाओं से भी विचार किया जाता है।

सामान्य रूप से सब कार्यों में लग्न-शुद्धि

१. अपनी जन्म-राशि से ८वीं, १२वीं राशि को छोड़कर अन्य राशि लग्न में हो।
२. लग्न से ८वें, १२वें स्थान में कोई ग्रह न हो।
३. चन्द्रमा लग्न से ३, ६, १० या ११वें स्थान में हो।
४. शेष शुभ ग्रह केंद्र, त्रिकोण (१-४-५-७-९-१०) में और पाप ग्रह त्रिषडाय (३-६-११) में हों।

विशेष—यदि उपर्युक्त प्रकार से शोधित लग्न की राशि अपनी जन्म-राशि से ३, ६, १० या ११वें हों तो वह विशेष उत्तम लग्न का मुहूर्त होता है एवं वह लग्न जितने अधिक शुभ ग्रहों से युत दृष्ट हों, उतना ही अधिक बली एवं फलप्रद होता है।

चन्द्रबल—अपनी जन्म-राशि से १, ३, ६, ७, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। इसके अलावा शुक्ल पक्ष में २, ५, ९वीं राशि का भी चन्द्र शुभ होता है।

ताराबल—जन्म-नक्षत्र से इष्ट कालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें, शेष १, २, ४, ६, ८, ० रहे तो ताराबल प्राप्त होता है; ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा-बल नहीं मिलता। शुक्ल पक्ष में चन्द्र-बल, कृष्ण पक्ष में तारा-बल लेना चाहिए।

सामान्य दिन शुद्धि

शुभ तिथि—दोनों पक्ष की २, ३, ५, ७, १०, १२ और कृष्ण १ प्रतिपद तथा शुक्ल १३ ये शुभ तिथियां हैं। क्षय-तिथि और वृद्धि-तिथि वर्ज्य हैं।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शत., उ.भा., रेवती।

शुभ करण—बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर एवं वणिज।

लग्न-प्रशंसा—लग्न का विचार छोड़कर जो कुछ काम किया जाए, वह सब निष्फल होता है; जैसे, ग्रीष्म ऋतु में क्षुद्र नदियां सूख जाती हैं। तिथि नक्षत्र योग अथवा चंद्र के बल का कोई महत्व नहीं; गर्ग, नारद तथा कश्यप मुनि केवल लग्न की प्रशंसा करते हैं। जो लग्न अपने बलवान स्वामी से अथवा बलवान शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, पाप ग्रहों से युत अथवा दृष्ट न हो, वह लग्न बलवान होता है।

लग्न-शुद्धी—लोग कहते है कि चन्द्रमा का बल प्रधान है; किन्तु शास्त्रों के अनुसार लग्न-बल ही प्रधान है। लग्न से ग्यारहवें स्थान में सब ग्रह शुभ होते हैं। ३, ८, स्थानों में सूर्य अथवा शनि शुभ होते हैं। द्वितीय अथवा तृतीय स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है ३, स्थानों में मंगल शुभ होता है। २, ३, ४, ५, ६, ९, १० स्थानों में बुध तथा बृहस्पति शुभ होते हैं। २, ३, ४, ५, ९, १० स्थानों में शुक्र शुभ होता है। ३, ५, ६, ८, ९, १०, १२ स्थानों में राहु शुभ होता हैं।

चरत्रय निषेध—चर लग्न चर नवांश तथा चर राशि में स्थित चन्द्रमा; ये तीनों चर निषिद्ध हैं। वर-कन्या के प्राणों का नाश करने वाले हैं। उदाहरण—कर्क अथवा मेष।

[शेष पृष्ठ ९२ का] **दिवशूल पदार्थ (वार के अनुसार)**

रविवार	घी का बना कोई पदार्थ, ताम्बूल (पान का बीड़ा), रसाल (पका आम)
सोमवार	दूध, खीर या दूध से बने पदार्थ, चन्दन लेपन
मंगलवार	गुड़, मिष्ठान्न या कांजी
बुधवार	तिल या दूध से बने पदार्थ, पुष्प धारण
गुरुवार	दही (दधि)
शुक्रवार	जौ (यव) या घी, दूध से बने पदार्थ
शनिवार	तिल या उड़द से बने पदार्थ खाकर, अदरख, उड़द

प्रस्थान के नियम—यदि यात्रा में देर हो और मुहूर्त्त निकला जा रहा हो तो ब्राह्मण यात्री ब्राह्मण जाति का हो तो जनेऊ, क्षत्रिय कोई हथियार, वैश्य वस्त्र, शूद्र फल अथवा अपनी प्रिय वस्तु या सफर में ले जाने वाला कोई थैला, बक्सा, पेटी आदि अपने पड़ौसी, मित्र, नाते रिश्तेदार के यहां रखवा दें और यात्रा पर जाते समय साथ लेता जावें। पूर्व की यात्रा हो तो प्रस्थान अधिक से अधिक सात दिन का, दक्षिण दिशा की यात्रा हो तो पांच दिन तक का, पश्चिम दिशा की यात्रा में तीन दिन तक और उत्तर दिशा की यात्रा में दो दिन पहले तक रखा जा सकता है। **चन्द्रवास चक्रम्**

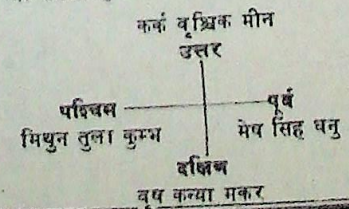

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि ☉	चंद्र ☽	मंगल ♂	बुध ♄	गुरु ♃	शुक्र ♀	शनि ♄	राहु ☊	केतु ☋
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	चं.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं. गु. श.	श.रा.	मं. गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८ १०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर२८°	कन्या १५°	कर्क ५	मीन२७°	तुला२०°	मिथुन१५°	धनु १५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क२८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या२७°	मेष.२०°	धनु१५°	मिथुन१५
मूल त्रिकोण राशि. अंश	सिंह २०°	ष४°से३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु १३°	तुला १०°	कुम्भ२०°	कर्क	मकर
स्वगृह-(राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चि.	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष,तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-९-७-१०-११	६	३-६	४	२-३-६-७	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम(अस्त)राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विशो० दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ. उ.पा. उ.फा.६	रो.ह. श्र.१०	मृ.चि. ध. ७	आश्लेषा ज्ये.रे.१७	पुन. वि. पू.भा.१६	म.पू.फा. पू.षा. २०	पुष्य अनुराधा उ.भा. १९	आर्द्रा स्वाती शत. १८	अश्विनी भ.सू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा ✓	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशिचक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद(नवांश)चार-दिन	३¼	¼	५	२½	४३	३	१००	६०	६०
मध्यमदिनगति,कला,विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्रगति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३" ·४३	१°-५०'-५९" ·४	७°-०'-१५" ·९	१°-१८'-१४" ·४	३°-२३'-४०" ·१	२°-२९'-२१" ·३	×	×
गोचर से मित्र	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११-	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११
अनुक्रम से वेध-स्थान	९-१२-४-५ शनिवर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५

टिप्पणी—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ✓ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

* ग्रह-शील-चक्र *

ग्रह-चिह्न	सूर्य ☉	चंद्र ☾	मंगल ♂	बुध ☿	गुरु ♃	शुक्र ♀	शनि ♄	राहु ☊	केतु ☋
पर्याय	हेलि	ग्लौ,शीत-रश्मि	आर,वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव, अंगि. सुरगुरुइज्य	भृगु भृगुसुत सितदे. गुरु	कोण, मंद सूर्य-पुत्र	तम,अगु,असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ(क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, (पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शूद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	.....	.....
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा.चर	विद्वानों से युक्तग्रा.चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण-मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	.....	.....
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
जन्म-वर्ष अवस्था	प्रौढ़(५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुडी	गुप्त-तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८
दशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	.....	.....
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	.....	.....
तीर्थ-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	.....	.....
तत्त्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका. तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
सात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जामांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	.....	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्ररोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक्	सम	तिर्यक्	अधो.	अधो.	अधो.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर = दिल्ली से पूर्व में + पश्चिम में — अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर — स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय-संस्कार	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय-संस्कार
अयोध्या	उ० प्र०	२६।४८	८२।१४	— १। ४	+२०। ० — ३	उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	— १४। ८ + २	गुरुदासपुर	पंजाब	३२। ३	७५।२७	—२८।१२	— ७। ८ + १
अकलकोट	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	— ३।५२ + ०	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८। ८	७६। ५	—२५।४०	— ४।३६ + ०	गुना	मध्यप्रदेश	२४।४०	७७।३०	—२०। ०	+ १। ४ — ०
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	— १।५२ + ०	एचिलपुर	,, ,,	२१।१८	७७।३३	—१६।४८	+ १।१६ — ०	घाटमशर	उत्तरप्रदेश	२६। ८	८०।११	— ६।१६	+११।४८ — २
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७। २	—२१।५२	— ०।४८ + ०	एटाकाशगंज	उत्तर प्रदेश	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+ ५।४८ — १	चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	— १।२८ — ०
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६ + २	कच्छभुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६ + ५	चन्दौसी	उत्तरप्रदेश	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+ ६।१२ — १
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	— ६।२४ + २	कन्नौज	उत्तर प्रदेश	२७। २	७९।५८	—१०। ८	+१०।५६ — २	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+ ८।१२ — १
अहमदाबाद	गुजरात	२३। २	७२।३७	—३९।३२	—१८।२८ + ३	कविरत्तिद्वीप	लक्ष द्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२ + ३	चिलास	जम्मू-का.	३५।३६	७४। ७	—३३।३२	— १२।२८ + २
अलीगढ़	उ० प्र०	२७।५४	७८। ५	—१७।४०	+ ३।२४ — ०	कलकत्ता	पश्चिमीबंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४० — ७	चीतो	राजस्थान	२७।२३	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२ + २
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९। ५	७४।४४	—३१। ४	—१०। ० + २	कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	— ७।२८ + १	चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	— ५।४८ + १
अलीगढ़टोंक	राजस्थान	२५।५८	७६। ६	—२५।३६	— ४।३२ + ०	करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७। २	—२१।५२	— ०।४८ + ०	चित्रकूट	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	— ६।२४	+१४।४० — २
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६ + २	कन्याकुमारी	तमिलनाडू	८। ४	७७।३६	—१९।३६	+ १।२८ — ०	चित्तौरगढ़	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०। ८ + २
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	— २।२४ + ०	कल्पाद	हिमाचल प्र.	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+ ७।४४ — १	छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+ ६। ८	+३०।१२ — ४
अलूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।३६ + २	करीमनगर	आंध्रप्रदेश	१८।२८	७९। ६	—१३।३६	+ ७।२८ — १	छत्तरपुर	मध्यप्रदेश	२४।५४	७९।३६	+ ६।२८	— १
अमृतशहर	उ० प्र०	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+ ४।३६ — ०	कानपुर	उत्तर प्रदेश	२६।२७	८०।२१	— ८।३६	+१२।२८ — २	छिबरामऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२६	—१२। ४	+ ६। ० — १
अलमोड़ा	उ० प्र०	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+ ६।४४ — १	काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११। ८	+३२।१२ — ५	छबरा टोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	— १।३२ + ०
अमेठी	उ० प्र०	२६। ८	८१।४८	— २।४८	+१८।१६ — २	कांगड़ामन्दिर	हिमाचल	३२। ६	७६।१८	—२४।४८	— ३।४४ + ०	जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+ १३।२०	+३४।२४ — ५
असिनसोल	प० बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	+४०।२४ — ६	काशी	उत्तर प्रदेश	२५।२८	८३। ०	— २। ०	+ ३। ४ — ३	जबलपुर	मध्यप्रदेश	२३।१०	७९।५८	—१०। ८	+ १।०५६ — १
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७। ८	—१६। ४ + २	काचिपुरम	तमिलनाडू	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६ — २	जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	— ५।३६ + १
अकबरपुर	उ० प्र०	२९।२९	८२।३३	+ ०।१२	+२१।१६ — ३	कार्गिल	जम्मू-कश्मीर	३०।३७	७६।१३	—२५। ८	— ४। ४ + ०	जलपाईगुडी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+४६। ० — ७
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५। ४	—२४। ० + ४	किशनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४० + २	जम्मू	जम्मू-का.	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	— ९।२० + १
अमरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३४।३२	+५६।३६ — ९	किस्तवाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	— ५।४४ + १	जसवन्तनगर	जसवन्तन.	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+ ६।४४ — १
अनन्तपुरम	आंध्रप्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१९।३२	+ १।३२ — ०	किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	— ७।२८ + १	जनकपुर	मध्यप्रदेश	२३।४२	८१।५१	— २।३६	+१८।२८ — ३
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१। ०	+६२। ४ — १०	कोच्चि (कोचीन)	केरल	१०। ०	७६।१५	—२५। ०	— ३।५६ + ०	जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०। ५	—४९।४०	—२८।३६ + ४
आहवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	—१४। ८ + २	कोलगंगा	बिहार	२५।१६	८७।१६	+१९। ४	+४०। ८ — ६	जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९। ४	—१८। ० + ३
आगरा	उ० प्र०	२७।११	७८। २	—१७।५२	+ ३।१२ — ०	कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४। ०	+४६। ०	+६७। ४ — ११	जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७। ८ + ४
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९। ४	—१८। ० + ३	केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७। ४	—२१।३६	—००।४० + ०	जोधपुर	राजस्थान	२६।१९	७३। ४	—३७।४४	—१६।४० + २
आजमगढ़	उ० प्र०	२६। ६	८३।१२	+ २।४८	+२३।५२ — ४	कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	— ५।३६ + ०	जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+ ०।५२	+२१।५६ — ३
आरा	बिहार	२५।३९	८४।४२	+ ८।४८	+२९।५२ — ५	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३। ८	—१२। ५ + २	जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	— ३।२४ + ०
औरंगाबाद	बिहार	२४।४४	८४।२३	+ ७।३२	+२८।३६ — ४	कुशलगढ़	राजस्थान	२३। ८	७४।२७	—३२।१२	—११। ८ + २	जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५। ८ + ४
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	— ७।४० + १	कूचबिहार	,, ,,	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४ — ८	जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	— ६।३६ + १
औंगोलु	आंध्रप्रदेश	१५।३१	८०। ६	— ९।३६	+११।२८ — २	कृष्णा	कर्नाटक	१६।२४	७७।१९	—२०।४४	+००।२० — ०	जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२ + ४
इन्दौर	मध्यप्रदेश	२२।४३	७५।५२	—२६।२८	— ५।२८ + ०	खम्मम	आंध्रप्रदेश	१७।१५	८०।११	— ९।१६	+११।४८ — २	झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+ ५।२० — १
इटावा	उ० प्र०	२६।४७	७९। २	—१३।५२	+ ७।१२ १	खण्डवा	मध्यप्रदेश	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	— ३।३६ + ०	झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६। ९	—२५।२४	— ४।२० + ०
इम्फाल	मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+४५।२६	+६६।४० —११	खेडब्रह्मा	गुजरात	२४। ३	७३। ४	—३७।३६	—१६।४० + २	झुंझुनू	राजस्थान	२८। ७	७५।२५	—२८।२०	— ७।१६ + १
इडुक्की	केरल	९।५१	७७।१४	—२१। ४	००।०० — ०	गयाजी	बिहार	२४।४८	८५। १	+१०। ४	+३१। ८ — ५	टोंक	राजस्थान	२६।११	७५।५०	—२६।४०	— ५।३६ + १
इटानगर	अरुणाचल	२६।५४	९३।३७	+४४।२४	+६४।३२ — १०	ग्वालियर	मध्यप्रदेश	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+ ३।४४ — ०	टेरा	जम्मू-का.	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८। ८ + ३
ईगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६ + २	गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३। ४	— २।०० — ०	टाकनपुर	उ. प्र.	२९। ९	८०।१०	— ९।२०	+११।४४ — २
इटारसी	मध्यप्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+ २। ८ — ०	गाजीपुर	उत्तर प्रदेश	२५।२६	८३।३५	+ ४।२०	+२५।२४ — ५	टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६ + ०
इलाहाबाद	उत्तर प्रदेश	२५।२८	८१।५२	— २।३४	+१८।३२ — २	गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४ — ८	टेहरी गढ़वाल	उ० प्र०	३०।२३	७८।३०	—१६। ०	+ ५। ४ — ०
उन्नाव	,, ,,	२६।३३	८०।३०	— ८। ०	+१३। ४ — २	गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।४१	—३४।३६	—१३।३२ + २	टूंडला. जं.	उत्तर प्रदेश	२७।१३	७८।१३	—१७। ८	+ ३।५६ — ०
उत्तरोला	,, ,,	२७।१९	८२।२८	— ०। ८	+२०।५६ — ३	गोरखपुर	उत्तर प्रदेश	२६।४६	८३।२६	— ३।३२	+२४।३६ — ४	डायमण्ड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+ ६।४८	+२७।५२ — ४
उधमपुर	जम्मू	३२।५५	७५। ७	—२९।३२	— ८।२८ + १	गोंडा	उत्तर प्रदेश	२७।१०	८१।५८	— २।१२	+१८।५२ — ३	डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५९	+४९।४४	+७०।४८ —११
उज्जैन	मध्यप्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७। ४	— ६। ० + १	गोधा	गोधा	२५।१४	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८ + २	डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४४	—३५। ८	—१४। ४ + २
उदयमंडलम	तमिलनाडू	११।१७	७९।४४	—२३। ४	— २। ० + ०	गुवाहाटी	असम	२६।१९	९१।४५	+ ७।०	— ४।४० — ०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर—दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टेण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टेण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय-संस्कार	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय-संस्कार	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय-संस्कार
डीग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+ ०।२४ — ०	परसकोट	मध्यप्रदेश	१९।४५	८०।४६	— ६।५६	+१४। ८ — २	बैतूल	मध्य प्रदेश	२१।५१	७७।५६	—१८।१६	+ २।४८ — ०
डेराबाबा न.	पंजाब	३२। २	७५। ४	—२९।४४	— ८।४० + १	पणजी	गोआ	१५।४१	७३।१०	—२७।२०	—१६।१६ + १	बेलगांव	कर्नाटक	१४।५५	७४।३१	—३१।५६	—१०।५२ + २
ढाका	बंगलादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४ — ८	पालनपुर	गुजरात	२४।१९	७२।२७	—४०।१२	—१९। ८ + ३	बुलन्दशहर	उत्तर प्रदेश	२८।२४	७७।५२	—१८। ३	+ २।३२ — ०
तलगांव	तलगांवा	३२।५६	७३।२८	—४०। ८	—१९। ४ + ३	पाण्डिचेरी	तमिलनाडु	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६ — २	बिलासपुर	हिमाचल प्र.	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	— १।३६ + ०
तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४। ०	+४५। ४ — ७	पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२। ४	— १। ० + ०	बिलासपुर	मध्य प्रदेश	२२। ५	८२।१०	— १।२०	+१९।४४ — ३
तेजु	अरुणाचल प्र.	२७।५४	९६।१४	+४०।५६	+७६। ० —१२	प्रयागराज	उ० प्र०	२५।२५	८१।५३	— २।२८	+१८।३६ — ३	बिजनौर	उत्तर प्रदेश	२९।२३	७८।११	—१७।१६	+ ३।४८ — ०
तंजावूर	तमिलनाडु	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+ ८।२८ — १	पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	—१३।२८ + २	बिहारशरीफ	बिहार	२५।११	८५।३२	+१२। ८	+३३।१२ — ५
तिरुवनन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+ ०।२४ — ०	पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	+४०।४४	+६१।४८ — १०	बीकानेर	राजस्थान	२८। १	७३।१९	—२६।४८	—१५।४० + ३
तुर (मेघालय)	शिलङ्ग	२५।३१	९०।१५	+३१। ०	+५२। ४ — ८	पुष्कर	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४ + २	बीजापुर	कर्नाटक	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	— ६। ८ + १
तारनेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	— १।१२ + ०	पेशावर	प. पाकिस्तान	३४। १	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२ + ४	बीदर	कर्नाटक	१८।१०	७७।४७	—१८।५२	+ २।१२ — ०
तेतिया	मध्यप्रदेश	२५।३९	७८।२७	—१६।१२	+ ४।५२ — ०	पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।३२ + ५	बीरमगढ़	गुजरात	२३। ०	७२। २	—४१।५२	—२०।४८ + ३
दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१२।४०	+३४।४४ — ५	फतेहपुर	उत्तर प्रदेश	२७। ६	७७।४०	—१९।२०	+ १।४४ — ०	बोगरा	बंगलादेश	२४।५१	८९।२४	+२७।२६	+४८।४० — ८
दारजलिंग	बंगाल	२७। ३	८८।१७	+२३। ८	+४४।१२ — ७	फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।५५	—३१। ०	— ९।५६ + २	भरतपुर	राजस्थान	२७।१५	७७।३०	—२०। ०	+ १। ४ — ०
हिसपुर	असम	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+५९।४४ — ९	फर्रुखाबाद	उत्तर प्रदेश	२७। ३	७९।३७	—११।३२	+ ९।३२ — १	भंडारा	महाराष्ट्र	२१।१०	७९।४०	—११।२०	+ ९।४४ — १
दिण्डुक्कल	तमिलनाडु	१०।१३	७८। ५	—१७।४०	+ ३।२४ — ०	फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५। २	—२९।५२	— ८।४८ + १	भरूच	गुजरात	२१।४१	७३। ०	—३८। ०	—१६।५६ + ३
दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१। ४	— ०। ० — ०	फुलरा	,, ,,	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	— ७।५२ + १	भटिण्डा	पंजाब	३०।११	७४।५७	—३०।१२	— ९। ८ + १
द्वारका	गुजरात	२२।१९	६८।५७	—४४।१२	—३३। ८ + ५	फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२ + २	भदोही	उ. प्र.	२५।२४	८२।३४	+ ०।१६	+२१।२० — ३
देहरादून	उ० प्र०	३०।१९	७८। ४	—१७।४४	+ ३।२० — ०	फैजाबाद	उत्तर प्रदेश	२६।४७	८२। ८	— १।२८	+१९।३६ — ३	भोपाल	मध्य प्रदेश	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+ ०।३६ — ०
देशलोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२ + २	फीरोजाबाद	उत्तर प्रदेश	२७। ९	७८।२४	—१९।२४	+ ४।४० — ०	भीलवाड़ा	राजस्थान	२५।२१	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६ + २
देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+ ९। ०	+३०। ४ — ५	फुलपुर	उत्तर प्रदेश	२५।३२	८२। ७	— १।३२	+१९।३२ — ३	भिवानी	हरियाणा	२८।४८	७६। ८	—२५।२८	— ४।२४ + ०
धर्मशाला म.	हिमाचल प्र.	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	— ३।२४ + ०	फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४। ३	—३३।४८	—१२।४४ + २	भावनगर	गुजरात	२१।४७	७२।१०	—४१।२०	—२०।१६ + ३
धरमपुरी	तमिलनाडु	१२। ८	७८।११	—१७।१६	+ ३।४८ — ०	फतेहगढ़	उत्तर प्रदेश	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+ ९।२४ — १	भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०।५४	८५।५२	+ १३।२८	+३४।३२ — ५
धारवाड़	कर्नाटक	१५।२८	७५। २	—२९।५२	— ८।४८ + १	बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५२	+ ५।५६	+२७। ० — ८	भुसावल	महाराष्ट्र	२१। २	७५।४७	—२६।५२	— ५।४८ + १
धार	मध्य प्रदेश	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	— ८। ८ + १	बद्रीनाथ	उत्तर प्रदेश	३०।४४	७९।३०	— १२। ०	+ ९। ४ — १	भूटान	भूटान	२७।३०	९०। ०	+३०। ०	+५१। ४ — ८
धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+ २।३६ — ०	बरंगल	आंध्रप्रदेश	१८। ४	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६ — १	भुजकच्छ	गुजरात	२३।१५	६९।४१	—५१।१६	—३०।१२ + ५
धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३। ०	+ २। ०	+२३। ४ — ४	बहोदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६। ८ + २	मथुरा	उत्तर प्रदेश	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+ १।४८ — ०
धांगध्रा	सौराष्ट्र	२२।५९	७१।३०	—४४। ०	—२२।५६ + ४	बलिया	उत्तर प्रदेश	२४।४४	८४। ९	+ ६।३६	+२७।४० — ५	मद्रास	तमिलनाडु	१३। ५	८०।१७	— ८।५२	+१२।१२ — २
नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	— ८। ८ + १	बलोत्तरा	राजस्थान	२५।४९	७२।१६	—४०।५६	—१९।५२ + ३	मणीपुर स्टेट	मणीपुर	२४।२०	९३।५८	+४५।५२	+६६।५६ —११
नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	— ९।५२ + २	बम्बई	महाराष्ट्र	१८।५५	७२।५०	—३३।४०	—१७।३६ + ३	मण्डी	हिमाचल प्र.	३१।४३	७६।५८	—२२। ८	— १। ४ + ०
नडियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३०।३२	—१७।२८ + ३	बरेली	उ० प्र०	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+ ८।४० — १	मल्लपुरम	केरल	११। ४	७६। ४	—२५।४४	— ४।४० + ०
नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४ + २	बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५।३४	७६।५२	—२२।३२	— १।२८ + ०	मालेगांवना	मालेगांव	२०।३१	७४।३०	—३२। ०	—१०।५६ + २
नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	— ४।१६ + ०	बर्द्धमान	प. बंगाल	२३।२५	८७।५४	+२१।३६	+४२।४० — ८	मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+ ६।२४ — १
नागपुर	महाराष्ट्र	२१। ९	७९। ६	—१३।३६	+ ७।२८ — १	बहराइच	उ० प्र०	२७।३४	८१।३७	— ३।३२	+१७।३२ — ३	मुंगेर	बिहार	२५।२३	८६।३०	+१६। ०	+३७। ४ — ६
नाशिक	महाराष्ट्र	२१। ०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८ + २	बस्ती	उ० प्र०	२६।४८	८२।४६	+ १। ४	+२२। ८ — ३	मुजफ्फरपुर	बिहार	२६। ७	८५।२७	+११।४८	+३२।५२ — ५
नाचना	राजस्थान	२७।५२	७१।५४	—४२।२४	—२१।२० + ३	ब्यावर	राजस्थान	२६। ७	७४।५४	—३४।२४	—१३।२० + २	मुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४।३३	७३।२७	—३६।१२	—१५। ८ + २
नारनोल	,,	२८। २	७६। ७	—२५।३२	— ४।२८ + ०	वाराणसी	उ० प्र०	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	+२३। ४ — ४	मेघालय	शिलंग	२५।५७	९२। ०	+३८। ०	+५९। ४ —१०
नागकोविल	तमिलनाडु	८। ७	७७।४७	—१८।५२	+ २।१२ — ०	बासवाड़ा	मध्य प्रदेश	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+ ४।४८ — ०	मैसूर	कर्नाटक	१२।२९	७६।४०	—२६।२०	— २।१६ + ०
नीमच	मध्य प्रदेश	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	— ९।३२ + १	बाराबंकी	उ० प्र०	२६।५६	८१।०	— ५।२०	+१५।४४ — ०	मेरठ	उ. प्र.	२९। १	७७।४५	—१९। ०	+ २। ४ — ०
नैनीताल	उ० प्र०	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+ ८।५२ + १	बालु घाट	प. बिजाज	२५।१४	८८।४७	+२५। ८	+४६।१२ — ७	मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	+ ०।२८	+२१।३२ — ३
नेपालगंज	नेपालगंज	२८। ३	८१।३७	— ३।३२	+१७।३२ — ३	बांदा	उ० प्र०	२४।२८	८०।२१	— ८।३६	+१२।२८ — २	मेड़तासिटी	राजस्थान	२६।३९	७४। ३	—३३।४८	—१२।४४ + २
नीलगिरि	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७। ८	+३८।१२ — ६	बांदीकुई	राजस्थान	२७।२६	७६।२४	—२४।२४	— ३।२० + ०	यानाया	आंध्र प्रदेश	१६।४६	८२।१३	— १। ८	+१९।५६ — ३
पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६ — ५	बूंदी	राजस्थान	२५।२७	७५।४०	—२७।२०	— ६।१६ + १	यासिन	कश्मीर	३६।२१	७३।१९	—३६।४४	—१५।४० + २
पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	— ६। ८ + १	ब्रह्मकुण्ड	अरुणाचल प्र.	२७।५६	९६।१०	+५४।४०	+७५।४४ —१२	यवतमाल	महाराष्ट्र	२०।२४	७८। ८	—१७।२८	+ ३।३६ — ०
पटियाला	,,	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	— ३।१६ + ०	बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+ १।२४ — ०	यादगीर	कर्नाटक	१६।४७	७७। ८	—१७।२८	+ ३।३६ + ०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर = दिल्ली से पूर्व में + पश्चिम में — अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर — स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टै. टा. मि. से.	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय-संस्कार
रतलाम	मध्य प्रदेश	२३।१९	७५। ३	—२९।४८	— ८।४४ + १
रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६।५९	७३।१९	—३६।४४	—१५।४० + २
राजकोट	गुजरात	२२।१८	७०।५०	—४६।४०	—२५।३६ + ४
राजजूर	कर्नाटक	१६।१२	७७।२१	—२०।३६	+ ०।२८ — ०
राजमपेट	आन्ध्र प्रदेश	१४।१२	७९।३४	—११।४४	+ ९।२० — १
रामपुर	उत्तर प्रदेश	२८।४७	७९। २	—१३।५२	+ ७।१२ — १
रामेश्वर	तमिलनाडु	९।१७	७९।१८	—१२।४८	+ ८।१६ — १
रायबरेली	उत्तर प्रदेश	२६।१४	८१।१३	— ५। ८	+१५।५६ — २
राजमंड्रि	आन्ध्र प्रदेश	१७। ५	८१।४८	— २।४८	+१८।१६ — २
रायपुर	मध्यप्रदेश	२१।१५	८१।३८	— ३।२८	+१७।३६ — २
राजगढ़	,, ,,	२४। ०	७६।४४	—२३। ४	— २। ० + ०
,, ,,	राजस्थान	२७।४०	७६।२४	—२४।२४	— ३।२० + ०
राजनन्द गांव	मध्य प्रदेश	२१। ५	८१। ५	— ५।४०	+१५।१५ — ३
रोहतक	हरियाणा	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	— २।२४ + ०
रोपड़	पंजाब	३०।५७	७६।३०	—२४। ०	— २।५६ + ०
लखनऊ	उ० प्र०	२६।५१	८०।५९	— ६। ४	+१५। ० — २
ललितपुर	,, ,,	२४।४१	७८।२४	—१६।२४	+ ४।४० — १
लुधियाना	पंजाब	३०।५५	७५।५३	—२६।२८	— ५।२४ + १
शाहजहांनपुर	उत्तर प्रदेश	२७।५४	७९।५७	— १०।१२	+१०।५२ — २
शिलांग	मेघालय	२५।३४	९१।४५	+३७।३६	+५८।४० — ९
शिवपुरी	मध्य प्रदेश	२५।३०	७८। ४	—१३।४४	+ ३।२० — ०
शाजापुर	,, ,,	२३।२४	७६।१४	—२५। ४	— ४। ० + ०
शेरकिला	काश्मीर	३६। ७	७३।५३	—३४।२८	—१३।२४ + २
श्रीनगर	,, ,,	३४। ६	७४।५१	—३०।३६	— ९।३२ + २
शिमला	हिमाचल प्र.	३१। ६	७७।१०	—२१।२०	— ०।१६ + ०
संतालपुर	गुजरात	२३।४७	७०।२८	—४८। ८	—२७। ४ + ४
सातारा	महाराष्ट्र	१७।४७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२० + २
सागर	मध्यप्रदेश	२३।५०	७८।४५	—१५। ०	+ ६। ४ — १
सरदारशहर	राजस्थान	२८।२७	७४।३०	—३२। ०	—१०।५६ + २
सवाईमाधोपुर	,, ,,	२५।५९	७६।२४	—२४।२४	— ३।२० + ०
सहारनपुर	उत्तर प्रदेश	२९।५९	७७।२३	—२०।२८	+ ०।३६ — ०
सोमनाथ	गुजरात	२१। १	७०।२६	—४८।१६	—२७।२२ + ४
सोलापुर	महाराष्ट्र	१७।४०	७५।४८	—३०।४८	— ५।४४ + १
सोलन	हिमाचल	३०।५५	७७। ९	—२१।२४	— ०।२० + ०
सूरत	गुजरात	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६ + ३
सिकन्दराबाद	आन्ध्रप्रदेश	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+ ५।१६ — ०
सिरोही	राजस्थान	२४।५६	७२।५१	—३८।३६	—१७।३२ + ३
सीकर	,, ,,	२७।५१	७५।१४	—२९। ४	— ८। ० + १
सीतापुर	उत्तर प्रदेश	२७।३६	८०।४०	— ७।२०	+१३।४४ — २
हरिद्वार	,, ,,	२९।५८	७८।१३	—१७। ८	+ ३।५६ — ०
हरदोई	,, ,,	२७।२३	८०।१०	— ९।२०	+११।४४ — २
हथुवा	हथुवा	२६।१२	८४। ५	+ ६।२०	+२७।२४ — ४
होशंगाबाद	मध्यप्रदेश	२२।४६	७७।४५	—१९। ०	+ २। ४ — ०
जारीबाग	बिहार	२४। ०	८५।२३	+११।३२	—३२।३६ — ५
हाजीपुर	उत्तर प्रदेश	२५।३५	८३।११	+ २।४४	+२३।४८ — ४
होश्यारपुर	पंजाब	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	— ५।१६ + १
होशंगाबाद	मध्यप्रदेश	२२।४६	७७।४३	—१९। ८	+ १।५६ — ०
हैदराबाद	आन्ध्रप्रदेश	१७।२७	७८।३०	—१६। ०	+ ५। ४ — ०
हिसार	हरियाणा	२९।१४	७५।४४	—२७। ४	— ६। ० + १
हैदाबाद	पाकिस्तान	२५।२३	६८।२२	—५६।३२	—३५।२८ + ६
हिंगाटा	उड़ीसा	२०।२२	८५।१२	+१०।४८	+३१।५२ — ५

विविध मुहूर्तों का विचार

बड़ा व्यापार करने का मुहूर्त

नक्षत्र ह., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा
वार बुध, गुरु, शुक्र तिथि २,३,५,७,११,१३

नौकरी करने का मुहूर्त—हस्त, चित्रा, अनु., रे., अ., मृ., पुष्य नक्षत्रों में बुध, गुरु, शुक्र, रवि इन वारों में रिक्ता अमा रहित तिथियों में नौकरी प्रारम्भ करनी श्रेष्ठ है।

कर्ण वेध के मुहूर्त का चक्र

वर्ष विषम वर्ष ६, ७, ८ वें मास जन्म से १२वें या १६वें दिन
तिथि १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५, ३०

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त

नक्षत्र ज्ये., आर्द्रा., भ., तीनों उत्तरा, मू., आश्ले०, म०
वार रवि, बुध, गुरु, शुक्र तिथि ३, ५, ८, १०, १३, १५
लग्न ३, ६, ७, ८, ११
लग्न सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र ये ग्रह १, ४, ७, १० इन स्थानों में, पापग्रह ३, ६, ११ स्थानों पर शुभ हैं। अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो।

विशेष—लग्न में कोई प्रबल पापग्रह हो ऐसे लग्न में मुकद्दमा दायर करना अत्यन्त अशुभ है।

स्तन पान कराने का मुहूर्त

जन्म से पांचवें दिन अथवा भद्रा, व्यतिपात वैधृति ४-९-१४ तिथि को छोड़ कर शुभ तिथि सोम बुध गुरु शुक्र वारों में पुन०, पुष्य, मृ०, ह०, श्र०, रे० नक्षत्रों में बालक को प्रथम बार स्तनपान कराना शुभ है।

स्तनपान कराने के लिए मुहूर्त का चक्र

तिथि २, ३, ५, ८ १०, ११, १२, १३, १५,
वार सोम, बुध, गुरु, शुक्र
नक्षत्र पुन०, पुष्य, मृ०, ह०, श्र०, रे०
त्याज्य भद्रा, व्यतिपात, वैधृति, रिक्ता तिथि

भूमि पर बैठने के लिए मुहूर्त का चक्र

तिथि पंचममास में १, २, ३, ४, ५, ६, ८, १०, ११, १२, १३, १५

अन्न-प्राशन कराने के लिए मुहूर्त का चक्र

मास पुत्र को ६, ८, १०, १२ कन्या को ५, ७, ९, ११
तिथि, वार १, ३, ५, ७, १०, १३, १५, सोम, बुध, गुरु, शुक्र

(शेष पृष्ठ ६५ का)

स्वप्न	स्वप्न का फल
बिच्छू देखना	चिंता
बादल देखना	लाभ
भूषण की चोरी	सफर
मदिरा पीना	कष्ट पाए
मीत देखना	हानिकारक
मकान गिरते देखना	तरक्की
जुआ खेलना	धन की तंगी
अपने को मारना	दीर्घायु शुभ
अनाज भरना	धन लाभ
अन्न बेचना	नुकसान
आग उठाना	कष्ट
आंधी देखना	सफर, चिंता
आग देखना	धन प्राप्ति
पर्वत पर चढ़ना	तरक्की
पानी में डूबना	कष्ट पाना
बंशरी बजाना	इज्जत तरक्की
बन्दर देखना	धन लाभ
बर्फ गिरते देखना	रोग, चिन्ता
बगीचा देखना	ऋण निवृत्ति
बारात देखना	रोग
इमारत बनाना	लाभ व तरक्की
ऊंट देखना	लाभ
ऊंचाई से गिरना	मान हानि
बिल्ला देखना	तरक्की पाना
कुत्ते का काटना	शत्रुभय
कूप में गिरना	परेशानी
नाव देखना	परेशानी

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर	भारतीय स्टै. टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशांतर समय संस्कार	साम्पा. संस्कार
वेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१२द.	१७४।४६पू.	—२०।५६	+१२। ०	+ ६।३०	+६।३०। ८	—१। ३०
कानबेरा	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४६। ८पू.	— ३।२८	,, १०। ०	,, ४।३०	+४।४७।३६	,, ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२। ०द.	१४६।१७पू.	—१४।५२	,, १०। ०	,, ४।३०	+४।३६।१२	,, ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३६उ.	१३९।४५पू.	+१६। ०	,, ९। ०	,, ३।३०	+४।१०। ४	,, ०।४४
सेऊल	द.कोरिया	३७।४०उ.	१२७। ०पू.	—३२। ०	,, ९। ०	,, ३।३०	+३।१६। ४	,, ०।३३
प्योंगयांग	उ.कोरिया	३९। ०उ.	१२५।३०पू.	—३८। ०	,, ९। ०	,, ३।३०	+३।१३। ४	,, ०।३२
कार्मोसा	कार्मोसा	२५।१५उ.	१२१।३२पू.	—५३।५२	,, ९। ०	,, ३।३०	+२।५७।१२	,, ०।३०
फिजीद्वीप	फिजी	१८। ०द.	१७९। ०पू.	+ ६।२६	,, १२। ०	,, ६।३०	+६।४७। ४	,, १। ८
पेकिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	,, ८। ०	,, २।३०	+२।३६।२४	,, ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	,, ८। ०	,, २।३०	+२।२७।४४	,, ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	— ८।४०	,, ७।३०	,, २। ०	+२।१२।२४	,, ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	—३४।५२	,, ७।३०	,, २। ०	+१।४६।१२	,, ०।१७
बैंगकॉक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८। ०	,, ७। ०	,, १।३०	+१।३३। ४	,, ०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६। ८पू.	— ५।२८	,, ६।३०	,, १। ०	+१।१५।३६	,, ०।१२
मांडले	,, ,,	२२। ०उ.	९६। ५पू.	— ५।४०	,, ६।३०	,, १। ०	+१।१५।२४	,, ०।१२
लहासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१। ८पू.	+३४।३२	,, ५।३०	,, ०। ०	+०।५५।३६	,, ०। ९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+ १।४०	,, ६। ०	,, ०।३०	+०।५२।४४	,, ०। ८
काबी	सीलोन लंका	७।११उ.	८०।३२पू.	— ०। ०	,, ५।३०	— ०। ०	+०।२१।१२	,, ०। २
राज.दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	—२१। ४	,, ५।३०	+ ०। ०	+०। ०। ०	,, ०। ०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१५पू.	+ ६।४८	,, ४।३०	— १। ०	—०।३२। ८	+ ०। ५
कराची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७। ०पू.	—३२। ०	,, ५। ०	,, ०।३०	—०।४०।५६	,, ०। ६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२०पू.	— ४।१२	,, ३।३०	,, २। ०	—१।४३। ८	,, ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५। १पू.	+ ०। ४	,, ३। ०	,, २।३०	—२। ८।५२	,, ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	— २। ०	,, ३। ०	,, २।३०	—२।१०।५६	,, ०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५। ०पू.	— ०। ०	,, ३। ०	,, २।३०	—२। ८।५६	,, ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+ ५।१२	,, ३। ०	,, २।३०	—२। ३।४०	,, ०।१९
मास्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	,, ३। ०	,, २।३०	—२।३८।३६	,, ०।२६
नाइरोबी	पूर्वीअफ्रीका	१।२०द.	३६।४४पू.	—३३। ४	,, २।३०	,, ३। ०	—२।४२। ०	,, ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	,, २। ०	,, ३।३०	—२।४३।४४	,, ०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७पू.	+२३।४८	,, २। ०	,, ३।३०	—२।४५। ८	,, ०।२८
जेरुसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	,, २। ०	,, ३।३०	—२। ८। ८	,, ०।२८
काहिरा	मिश्र	३०।१ उ.	३१।१३पू.	+ ४।५२	,, २। ०	,, ३।३०	—३। ४। ४	,, ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५५उ.	३२।५६पू.	+११।५६	,, २। ०	,, ३।३०	—२।५७। ०	,, ०।३०
ट्रांसवाल	दक्षि.अफ्रीका	२५।० द.	२९। ०पू.	+ ४। ०	,, २। ०	,, ३।३०	—३।१२।५६	,, ०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	,, २। ०	,, ३।३०	—३।२३।४८	,, ०।३३
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	—२६।४०	,, २। ०	,, ३।३०	—३।३५।३६	,, ०।३६
बुडापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९। ५पू.	+१६।२०	,, १। ०	,, ४।३०	—३।४६।२८	,, ०।३८
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	— ६।३४	,, १। ०	,, ४।३०	—४।१५।२०	,, ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरीअफ्रीका	३२।४५द.	१३।१५पू.	— ७। ०	,, १। ०	,, ४।३०	—४।१५।५६	,, ०।४३
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	—१०। ४	,, १। ०	,, ४।३०	—४।१६। ०	,, ०।४८
मान	पश्चि.जर्मनी	५०।४३उ.	७। ६पू.	—३१।३६	,, १। ०	,, ४।३०	—४।४०।३२	,, ०।४८
जेनेवा	स्वीट्जरलैंड	४६।४२उ.	६। ९पू.	—३५।२४	,, १। ०	,, ४।३०	—४।४४।२०	,, ०।४९

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर	भारतीय स्टै. टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर	दिल्ली से पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय संस्कार	साम्पा. संस्कार
ब्रुसेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	—४२।३६	+ १। ०	— ४।३०	—४।५१।३२	+०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	,, ५०।४०	+ १। ०	,, ४।३०	,, ४।५९।३६	,, ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	,, ०। ०	+ ०। ०	,, ५।३०	,, ५। ८।५६	,, ०।५१
लंदन	,,	५१।३२उ.	०। ५पू.	,, ०।२०	— ०। ०	,, ५।३०	,, ५। ९।१६	,, ०।५२
स्पेन	मॉड्रिड ×	४०।२५उ.	३।४५पू.	,, ७५। ०	+ १। ०	,, ४।३०	,, ५।२३।५६	,, ०।५४
जिब्राल्टर	जिब्राल्टर	३६। ७उ.	५।२२पू.	,, ८।२८	+ १। ०	,, ४।३०	,, ५।३०।२४	,, ०।५७
पुर्तगाल	लिस्बॉन	३८।४२उ.	९।१०पू.	,, ३६।४०	— ०। ०	,, ५।३०	,, ५।४५।३६	,, ११७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५पू.	+ ४१। ०	,, ५। ०	,, १०।३०	,, ९।२७।५६	,, १।४०
अमेरिका	न्यूयॉर्क	४०।४३उ.	७४। ०पू.	+ ४। ०	,, ५। ०	,, १०।३०	,,१०। ४।५६	,, १।४०
कैनेडा	ओटावा	४५।२६उ.	७५।४१पू.	— २।४४	,, ५। ०	,, १०।३०	,,१०।११।४०	,, १।४०
अमेरिका	वाशिंगटन	३८।४३उ.	७७। ०पू.	,, ८। ०	,, ५। ०	,, १०। ०	,,१०।१६।५६	,, १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७पू.	,, ३७। ८	,, ६। ०	,, ११।३०	,,११।४६। ४	,, १।५७

नोट— × यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति :—

जिस नगर का रेलवेस्टेशन मिनट धन होवे उसके मध्यमान्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और ऋण चिह्न होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय होगा, उस मध्यम समय में जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो केन्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण, चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घन्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद—इस समय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है। सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मान कर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाइम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, झोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मान कर किया जाता है, जोकि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट ÷ के हिसाब से ८२।३० × ४ = ५ घं० २० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में—८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भांति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्रायः धूप घड़ी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनमार्ग से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार कोई भी अपने बच्चे का जन्म टाईम नोट नहीं करता, फिर भी रेलवे टाईम को देशी (धूप घड़ी) टाईम में बदलने की विधि हम ऊपर लिख चुके हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक)

उत्तर अक्षांश		अक्षांश ८		९		१०		११		१२		१३		१४	
		उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मा.	ता.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.
जनवरी	१	६ १४	५ ५४	६ १६	५ ५२	६ १७	५ ५०	६ १९	५ ४९	६ २१	५ ४७	६ २३	५ ४५	६ २४	५ ४३
	७	१६	५७	१८	५५	१९	५३	२१	५२	२३	५०	२५	४८	२६	४७
	१३	१८	६ ०	२०	५८	२१	५७	२३	५५	२४	५३	२६	५१	२८	५०
	१९	१९	३	२१	६ १	२२	६ ०	२४	५८	२५	५७	२७	५५	२८	५४
	२५	२०	५	२२	३	२३	२	२४	६ १	२६	५९	२७	५८	२८	५७
	३१	२०	७	२२	६	२३	५	२४	३	२५	६ २	२७	६ ०	२८	५९
फरवरी	६	२०	९	२१	८	२२	७	२३	५	२४	४	२६	३	२७	६ २
	१२	१९	१०	२०	९	२१	८	२२	७	२३	६	२४	५	२५	४
	१८	१७	११	१८	१०	१९	९	२०	८	२१	८	२२	७	२२	६
	२४	१५	११	१६	१०	१७	१०	१७	९	१८	९	१९	८	१९	७
मार्च	२	१३	१२	१४	११	१४	११	१५	१०	१५	१०	१६	९	१५	९
	८	१०	१२	११	११	११	११	११	११	१२	१०	१२	१०	१२	१०
	१४	८	११	८	११	८	११	८	११	८	११	९	१०	९	१०
	२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११
	२६	१	१०	१	१०	१	११	१	११	१	११	१	११	०	१२
अप्रैल	२	५ ५८	१०	५ ५८	१०	५ ५७	११	५ ५७	११	५ ५६	११	५ ५६	११	५ ५५	१२
	८	५५	९	५५	९	५४	१०	५३	११	५२	१२	५२	१२	५१	१३
	१४	५२	९	५१	९	५०	१०	५०	११	४९	१२	४९	१२	४८	१३
	२०	४९	९	४८	१०	४७	११	४७	१२	४६	१२	४५	१३	४४	१४
	२६	४७	९	४६	१०	४५	११	४४	१२	४३	१३	४२	१४	४१	१५
मई	१	४५	९	४४	१०	४३	१२	४२	१३	४१	१४	४०	१५	३८	१६
	७	४३	१०	४२	११	४१	१२	४०	१४	३८	१५	३७	१६	३६	१८
	१३	४२	११	४१	१२	३९	१३	३८	१५	३७	१६	३६	१७	३४	१९
	१९	४१	१२	४०	१३	३८	१५	३७	१६	३५	१८	३४	१९	३२	२१
	२५	४१	१३	४०	१४	३८	१६	३६	१८	३५	१९	३३	२१	३१	२३
	३१	४१	१४	४०	१६	३८	१८	३६	१९	३४	२१	३३	२२	३१	२४
जून	६	४१	१६	४०	१७	३८	१९	३६	२१	३४	२३	३३	२४	३१	२६
	१२	४२	१७	४१	१९	३९	२१	३७	२३	३५	२४	३३	२६	३१	२८
	१८	४३	१९	४२	२०	४०	२२	३८	२४	३६	२६	३४	२८	३२	३०
	२४	४५	२०	४३	२२	४१	२४	३९	२५	३८	२७	३६	२९	३४	३१
	३०	४६	२१	४५	२३	४३	२५	४१	२६	३९	२८	३७	३०	३५	३२
जुलाई	६	४८	२२	४६	२३	४४	२५	४२	२७	४१	२९	३९	३०	३७	३३
	१२	४९	२२	४८	२४	४६	२६	४४	२७	४२	२९	४१	३०	३९	३२
	१८	५०	२२	४९	२३	४७	२५	४५	२७	४४	२९	४२	३०	४०	३२
	२४	५१	२२	५०	२३	४८	२५	४७	२६	४५	२८	४४	२९	४२	३१
	३०	५२	२१	५१	२२	४९	२३	४८	२५	४६	२६	४५	२७	४४	२९
अगस्त	५	५३	१९	५२	२०	५०	२२	४९	२३	४८	२४	४७	२५	४५	२७
	११	५३	१७	५२	१८	५१	२०	५०	२१	४८	२२	४७	२३	४६	२४
	१७	५३	१५	५२	१६	५१	१७	५०	१८	४९	१९	४८	२०	४७	२१
	२३	५३	१२	५२	१३	५१	१४	५०	१५	४९	१६	४९	१७	४८	१८
	२९	५२	१०	५२	१०	५१	११	५०	१२	४९	१२	४९	१३	४८	१४
सितम्बर	४	५२	६	५२	६	५१	७	५०	८	४९	८	४९	९	४८	१०
	१०	५१	३	५१	३	५०	४	५०	४	४९	५	४९	५	४९	५
	१६	५०	०	५०	०	५०	०	५०	०	४९	०	४९	०	४९	१
	२२	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६
	२८	४९	५३	४९	५३	४९	५३	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२
अक्टूबर	३	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४९	४९	४९	४९	५०	४८	५०	४८
	९	४८	४७	४८	४६	४८	४६	४९	४६	४९	४५	५०	४४	५०	४४
	१५	४७	४४	४८	४३	४९	४३	४९	४३	५०	४२	५१	४१	५१	४१
	२१	४७	४२	४८	४१	४९	४०	५०	४०	५०	३९	५१	३८	५२	३७
	२७	४८	४०	४९	३९	५०	३८	५१	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४
नवम्बर	२	४९	३९	५०	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२
	८	५०	३८	५१	३६	५२	३५	५४	३४	५५	३३	५६	३१	५७	३०
	१४	५१	३७	५३	३६	५४	३५	५६	३३	५७	३२	५९	३०	६ ०	२८
	२०	५४	३८	५५	३६	५६	३५	५८	३३	५९	३२	६ १	३०	३	२९
	२६	५६	३९	५८	३७	५९	३६	६ १	३४	६ २	३२	४	३०	५	२९
दिसम्बर	२	५९	४०	६ १	३८	६ २	३७	४	३५	५	३४	७	३२	९	३०
	८	६ २	४२	४	४०	५	३९	७	३७	९	३५	११	३३	१२	३२
	१४	५	४५	७	४३	८	४१	१०	३९	१२	३८	१४	३६	१५	३४
	२०	८	४७	१०	४५	११	४४	१३	४२	१५	४०	१७	३८	१८	३७
	२६	११	५०	१३	४८	१४	४७	१६	४५	१८	४३	२०	४१	२१	४०

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार इसमें देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै. टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

अस्त	१४ उदय	१४ अस्त	१५ उदय	१५ अस्त	१६ उदय	१६ अस्त	१७ उदय	१७ अस्त	१८ उदय	१८ अस्त	१९ उदय	१९ अस्त	दक्षिण अक्षांश	
क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	क मि.	ता. मा.	मि.
५ ४५	६ २४	५ ४३	६ २६	५ ४१	६ २८	५ ४०	६ ३०	५ ३८	६ ३१	५ ३६	६ ३३	५ ३४	३	०
४८	२६	४७	२८	४५	३०	४२	३१	४१	३३	४०	३५	३८	६	१
५१	२८	५०	२९	४८	३१	४७	३३	४५	३४	४३	३६	४०	१५	३
५५	२८	५४	३०	५२	३१	५०	३३	४९	३५	४७	३६	४९	२७	४
५८	२८	५७	३०	५५	३२	५४	३३	५२	३४	५१	३६	४९	२८	६
०	२८	५९	२९	५८	३१	५७	३२	५५	३३	५४	३५	५३	४	८
३	२७	६ २	२८	६ १	२९	६ ०	३०	५८	३१	५७	३३	५६	१०	९
५	२५	४	२६	३	२७	२	२८	६ १	२९	६ ०	३०	६ ५९	१६	१०
७	२२	६	२३	५	२४	४	२५	३	२६	२	२७	२	२२	११
८	१९	७	२०	७	२१	६	२२	५	२३	५	२३	४	२९	१२
९	१६	९	१७	८	१७	८	१८	७	१८	७	१९	६	४	१३
१०	१२	१०	१३	९	१३	९	१४	९	१४	८	१४	८	१०	१४
१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	९	१६	१४
११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	२२	१५
११	०	१२	०	१२	०	१२	०	१२	०	१२	५ ५१	१३	२८	१५
११	५ ५५	१२	५ ५५	१३	५ ५५	१३	५ ५४	१३	५ ५४	१४	५३	१४	६	१५
१२	५१	१३	५१	१३	५०	१४	५०	१४	५०	१५	४९	१५	११	१५
१२	४८	१३	४७	१४	४६	१५	४५	१६	४५	१६	४४	१७	१७	१५
१३	४४	१४	४३	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१८	३९	१९	२३	१५
१४	४१	१५	४०	१६	३९	१७	३७	१८	३६	१९	३५	२१	२९	१४
१५	३८	१६	३७	१७	३६	१९	३५	२०	३३	२०	३२	२२	०	१४
१६	३६	१८	३४	१९	३३	२०	३२	२२	३०	२२	२९	२४	६	१३
१७	३४	१९	३२	२१	३१	२२	२९	२३	२८	२५	२७	२७	१५	१२
१९	३२	२१	३१	२२	२९	२४	२८	२६	२७	२७	२६	२९	२४	११
२१	३१	२३	३०	२४	२८	२६	२६	२८	२५	२९	२३	३१	२९	१०
२२	३१	२४	२९	२६	२७	२८	२६	३०	२४	३२	२२	३३	३	८
२४	३१	२६	२९	२८	२७	३०	२५	३२	२४	३४	२२	३६	७	७
२६	३१	२८	३०	३०	२८	३२	२६	३४	२४	३६	२२	३८	१३	६
२८	३२	३०	३१	३२	२९	३३	२७	३५	२५	३७	२३	३९	१९	४
२९	३४	३१	३२	३३	३०	३५	२८	३७	२६	३९	२४	४१	२४	३
३०	३५	३२	३३	३४	३२	३६	३०	३८	२८	३९	२६	४२	३०	२
३०	३७	३२	३५	३४	३३	३६	३१	३८	२९	४०	२८	४३	०	०
३०	३९	३२	३७	३४	३५	३६	३३	३८	३०	४०	३०	४१	१०	०
३०	४०	३२	३९	३३	३७	३५	३५	३७	३१	३९	३२	४०	१५	३
२९	४२	३१	४०	३२	३९	३४	३७	३५	३३	३७	३४	३९	२१	५
२७	४४	२९	४२	३१	४१	३२	३९	३३	३५	३५	३६	३६	२७	६
२५	४५	२७	४४	२८	४२	३०	४१	३१	४०	३२	३८	३१	१	८
२३	४६	२४	४५	२५	४४	२७	४२	२८	४१	२९	४०	३०	७	९
२०	४७	२१	४६	२२	४५	२३	४४	२५	४२	२६	४३	२६	१३	१०
१७	४८	१८	४७	१८	४६	१९	४५	२१	४४	२१	४३	२२	१८	११
१३	४८	१४	४७	१४	४७	१५	४६	१६	४५	१७	४४	१९	२४	१२
९	४८	१०	४८	१०	४७	११	४७	११	४६	१२	४५	१२	२	१३
५	४९	५	४८	६	४८	६	४७	६	४७	७	४७	७	८	१४
०	४९	१	४९	१	४८	१	४८	१	४८	५	४८	५	१४	१४
५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५५	४९	५ ५७	४९	५ ५७	२०	१५
५२	४९	५२	४९	५२	५०	५२	५०	५२	५०	५२	५०	५१	२६	१५
४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५१	४७	५१	४७	३०	१५
४४	५०	४४	५१	४४	५१	४३	५२	४३	५२	४२	५२	४०	३	१५
४१	५१	४१	५२	४०	५२	३९	५३	३९	५३	३८	५४	३७	१२	१५
३८	५२	३७	५३	३६	५४	३६	५४	३५	५५	३४	५६	३३	१८	१५
३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२	५५	३१	५७	३०	५८	३०	२४	१४
३२	५५	३२	५६	३१	५७	३०	५८	२९	०	२८	१	२७	३०	१४
३१	५७	३०	५८	२९	०	२८	६	२७	३	२६	५	२४	६	१३
३०	०	२८	१	२८	२	२६	४	२५	६	२४	८	२२	१२	१२
३०	२	२९	४	२७	५	२६	७	२४	९	२३	१०	२१	१८	११
३०	५	२९	७	२८	९	२५	१०	२४	१२	२३	१४	२१	२५	१०
३२	९	३०	१०	२८	१२	२७	१४	२५	१६	२३	१७	२१	३१	८
३३	१२	३२	१४	३०	१६	२८	१७	२६	१९	२४	२१	२२	७	७
३६	१५	३४	१७	३२	१९	३०	२१	२८	२३	२५	२४	२४	१३	६
३८	१८	३७	२०	३५	२२	३३	२४	३१	२६	२७	२६	२७	१९	४
४१	२१	४०	२३	३८	२५	३६	२७	३४	२९	३०	३१	३०	२५	२

ऊपर दिये हुये सूर्योदयास्त अक्षांश के मुताबिक स्थानिक (लोकल) समय में दृश्य वक्री भवन युक्त (अर्थ दिन—१६'—वक्री भवन संस्कार—३४ × ५०', पर्व रेखांश '०'३०' ई. सन् १९६९ के गणित के हिसाब से) उदय-अस्त के घंटे और उसके सामने मिनिट दी हुई है। स्पष्ट गणित से सूर्योदय और सूर्यास्त में १ से ५ मिनिट का फर्क आयेगा, दिनमान में ७ से ९ मिनिट का फर्क पड़ेगा।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान बकी भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुता

उत्तर अक्षांश		अक्षांश २० उदय		अक्षांश २० अस्त		२१ उदय		२१ अस्त		२२ उदय		२२ अस्त		२३ उदय		२३ अस्त		२४ उदय		२४ अस्त		२५ उदय		२५ अस्त		२६ उदय		२६ अस्त		२७ उदय		२७ अस्त	
मा	दा	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि
जनवरी	१	६	३५	५	३२	६	३०	५	३०	६	३६	५	२८	६	४१	५	२६	६	४३	५	२४	६	४५	५	२२	६	४७	५	२०	६	४९	५	
	७		३७		३६		३९		३४		४१		३२		४३		३०		४५		२८		४७		२६		४९		२४		५१		
	१३		३८		४०		४०		३८		४१		३६		४३		३४		४५		३३		४७		३१		४९		२९		५१		
	१९		३८		४१		४०		४०		४१		४१		४३		३९		४५		३७		४७		३५		४८		३३		५०		
	२५		३७		४८		३९		४६		४०		४२		४२		४१		४४		४१		४५		४०		४७		३८		४९		
	३१		३९		५१		३७		५०		३९		४९		४०		४७		४२		४९		४३		४४		४५		४३		४९		
फरवरी	६		३४		५५		३५		५४		३६		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४८		४२		४७		४७		
	१२		३१		५८		३२		५७		३३		५६		३४		५५		३६		५३		३७		५२		३८		५१		३९		
	१८		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९		३०		५८		३१		५७		३२		५६		३३		५५		३४		
	२४		२४		३		२४		३		२५	६	२		२६	६	१		२७	६	०		२८	६	०		२८		५९		२९		
मार्च	२		१९		५		२०		५		२०		४		२१		४		२२		३		२२		३		२३	६	२		२३	६	
	८		१५		७		१५		७		१५		७		१६		६		१६		६		१७		६		१७		५		१७		
	१४		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		११		८		११		८		११		
	२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		
	२६	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		
अप्रैल	२		५२		१५		५३		१५		५०		१५		५०		१६		४९		१६		४९		१७		४९		१७		४७		
	८		४८		२६		४७		१७		४७		१७		४६		१८		४६		१९		४५		१९		४४		२०		४४		
	१४		४३		१८		४२		१९		४२		१९		४१		२०		४०		२१		३९		२२		३८		२३		३७		
	२०		३८		३०		३८		२१		३७		२२		३६		२३		३५		२४		३४		२५		३३		२६		३१		
	२६		३४		३२		३३		२३		३२		२४		३१		२५		३०		२६		२८		२८		२७		२९		२६		
मई	१		३१		२३		३०		२५		२९		२६		२७		२७		२६		२९		२५		३०		२३		३१		२२		
	७		२८		२६		२६		२७		२५		२९		२३		३०		२२		३२		२०		३३		१९		३५		१७		
	१३		२५		२८		२३		३०		२०		३१		२०		३३		१९		३४		१७		३६		१५		३८		१३		
	१९		२३		३०		२१		३२		१९		३४		१८		३६		१६		३७		१४		३९		१२		४१		१०		
	२५		२१		३३		१९		३५		१७		३७		१६		३८		१४		४०		१२		४२		१०		४४		८		
	३१		२०		३५		१८		३७		१६		३९		१४		४१		१२		४३		१०		४५		८		४७		६		
जून	६		२०		३८		१८		४०		१६		४२		१४		४४		१२		४६		१०		४८		७		५०		५		
	१२		२०		४०		१८		४२		१६		४४		१४		४६		१२		४८		१०		५०		७		५२		५		
	१८		२१		४१		१६		४३		१७		४५		१५		४७		१२		५०		१०		५२		८		५४		६		
	२४		२२		४३		२०		४५		१८		४७		१६		४९		१४		५१		१२		५३		९		५५		७		
	३०		२४		४३		२२		४५		२०		४७		१८		५०		१६		५२		१३		५४		११		५६		९		
जुलाई	६		२६		४४		२४		४६		२२		४८		२०		५०		१८		५२		१६		५४		१३		५६		११		
	१२		२८		४३		२६		४५		२४		४७		२२		४९		२०		५१		१८		५३		१६		५५		१४		
	१८		३०		४२		२८		४४		२६		४६		२४		४८		२२		४९		२१		५१		१९		५४		१७		
	२४		३२		४०		३१		४२		२९		४४		२७		४६		२४		४८		२४		५१		२२		५३		२०		
	३०		३१		३८		३३		४०		३१		४१		३०		४३		२८		४४		२६		४६		२५		४८		२३		
अगस्त	५		३७		३५		३५		३६		३४		३८		३२		३९		३१		४१		२९		४२		२८		४४		२६		
	११		३९		३२		३७		३३		३६		३४		३५		३५		३३		३७		३२		३८		२१		३९		२९		
	१७		४०		२८		३९		२९		३८		३०		३७		३१		३६		३२		३५		३३		२५		३४		३२		
	२३		४२		२३		४१		२४		४०		२५		३९		२६		३८		२७		३७		२८		३६		२९		३५		
	२९		४४		१८		४३		१९		४२		२०		४१		२०		४०		२१		४०		२२		३९		२३		३८		
सितम्बर	४		४५		१३		४४		१४		४३		१५		४२		१५		४२		१६		४२		१६		४१		१७		४०		
	१०		४६		८		४६		८		४५		८		४५		९		४५		९		४४		१०		४४		१०		४३		
	१६		४८		२		४७		२		४७		३		४७		३		४७		३		४६		३		४६		४		४६		
	२२		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४९	५	५७		४८	५	५७		४८	५	५७		४८	५	
	२८		५०		५१		५०		५१		५०		५१		५१		५१		५१		५१		५१		५०		५१		५०		५१		
अक्टूबर	४		५१		४७		५२		४६		५२		४६		५२		४६		५२		४५		५३		४५		५३		४५		५३		
	१०		५३		४२		५३		४१		५४		४१		५४		४०		५५		४०		५५		३९		५६		३८		५६		
	१५		५५		३७		५५		३६		५६		३५		५७		३४		५७		३४		५८		३३		५९		३८		५९		
	२१		५७		३२		५८		३१		५८		३१		५९		३०		५९		३०		५९		३३		५९		३३		५९		
	२७		५९		२९		०		२७		१		२६		२		२५		३		२४		४		२७		५		२७		३		
नवम्बर	२		२		२५		३		२४		४		२३		५		२२		७		२०		८		२१		९		२२		७		
	८		५		२३		६		२१		८		२०		९		१८		१०		१७		१२		१६		१३		१८		१०		
	१४		८		२१		१०		१९		११		१८		१३		१६		१४		१५		१६		१३		१७		१४		१५		
	२०		१२		२०		१२		१८		१५		१६		१७		१५		१७		१३		२०		११		२२		१२		१९		
	२६		१५		१९		१७		१७		१६		१५		२१		१४		२०		१२		२४		१०		२६		९		२४		
दिसम्बर	२		१९		२०		२१		१८		२३		१७		२५		१२		२७		१२		२९		१०		३१		५		३३		
	८		२३		२१		२५		१९		२७		१७		२९		१५		३१		१३		३३		११		३५		६		३७		
	१४		२७		२३		२८		२१		३०		१९		३२		१५		३५		१५		३७		१३		३९		११		४१		
	२०		३०		२५		३२		२३		३४		२१		३६		१९		३८		१७		४०		१५		४२		१३		४४		
	२६		३३		२८		३५		२६		३७		२४		३९		२२		४१		२०		४३		१८		४५		१६		४७		

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदयास्त निकालने के लिए इसी कोष्ठक से दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि 'दक्षिण अक्षांश' के नीचे दिये हुये हैं वह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ है और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

२७		२८		२९		३०		३१		३२		३३		३४		दक्षिण अक्षांश	
उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त		
मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	क मि. क मि.	ना.	ना.		
४९ ५ १८	६ ५२ ५ १६	६ ५४ ५ १४	६ ५६ ५ ११	६ ५८ ५ ९	७ १ ५ ७	७ ३ ५ ४	७ ६ ५ २	३			
५१ २२	५३ २०	५५ १८	५७ १६	५९ १४	२ ११	४ ९	६ ७	९			
५१ २७	५३ २५	५५ २३	५७ २१	५९ १९	१ ११	४ १४	६ १२	१५	मार्च		
५० ३२	५२ ३०	५४ २८	५६ २६	५८ २४	० २२	२ २०	४ १८	२२			
४९ ३६	५० ३५	५२ ३३	५४ ३१	५६ २९	६ ५८ २७	० २५	२ २३	२८			
४६ ४१	४८ ३९	५० ३८	५१ ३६	५३ ३५	५५ ३३	६ ५६ ३१	६ ५८ २९	४			
४३ ४६	४४ ४४	४६ ४३	४७ ४१	४९ ४०	५० ३८	५२ ३७	५३ ३५	१०			
३९ ५०	४० ४९	४२ ४८	४३ ४६	४४ ४५	४५ ४४	४७ ४२	४८ ४१	१६	अप्रैल		
३४ ५४	३५ ५३	३६ ५२	३८ ५१	३९ ५०	४० ४९	४१ ४८	४२ ४७	२२			
२९ ५८	३० ५७	३१ ५६	३२ ५५	३२ ५५	३३ ५४	३४ ५३	३५ ५२	२९			
२३ ६ २	२४ ६ १	२५ ६ ०	२५ ६ ०	२६ ५९	२७ ५८	२७ ५८	२८ ५७	४			
१७ ५	१८ ५	१८ ४	१९ ४	१९ ३	१९ ३	२० २	२० २	१०			
११ ८	१६ ८	११ ८	१२ ८	१२ ७	१२ ७	१२ ७	१३ ७	१६	मार्च		
४ ११	४ ११	४ ११	४ ११	४ ११	४ ११	४ ११	४ १२	२२			
५८ १४	५८ १२	५७ १५	५७ १५	५७ १५	५७ १६	५६ १६	५६ १६	२८			
५० १८	५० १८	४९ १९	४९ १९	४८ २०	४८ २०	४७ २१	४७ २१	६			
४४ २१	४३ २१	४२ २२	४२ २३	४१ २४	४० २४	३९ २५	३९ २६	११	अप्रैल		
३७ २४	३७ २५	३६ २५	३५ २६	३४ २७	३३ २८	३२ २९	३१ ३०	१७			
३१ २७	३० २८	२९ २९	२८ ३०	२७ ३१	२६ ३३	२५ ३४	२३ ३५	२३			
२६ ३०	२५ ३१	२३ ३३	२२ ३४	२१ ३५	१९ ३७	१८ ३८	१७ ४०	२९			
२२ ३३	२० ३४	१९ ३६	१७ ३७	१६ ३९	१४ ४०	१३ ४२	११ ४३	३			
१७ ३६	१६ ३८	१४ ३९	१२ ४१	११ ४३	९ ४५	७ ४६	५ ४८	९			
१३ ४०	१२ ४१	१० ४३	८ ४५	६ ४७	४ ४९	२ ५१	० ५३	१५	नवम्बर		
१० ४३	८ ४५	६ ४७	४ ४९	२ ५१	० ५३	४ ५८	५५	४ ५६	५७	२०	
८ ४६	६ ४८	४ ५०	२ ५२	४ ५९	५५	४ ५७	५७	५५	५९	५३ ७ २	२६
६ ४९	४ ५१	२ ५४	० ५६	५७ ५८	५५ ७ ०	५३ ७ ३	५० ५	२			
५ ५२	३ ५४	१ ५७	४ ५९	५९ ७ १	५४ ४	५१ ६	४९ ९	७			
५ ५४	३ ५७	१ ५९	५८ ७ १	५६ ४	५३ ६	५१ ९	४८ १२	१३	दिसम्बर		
६ ५६	३ ५९	१ ७ १	५९ ३	५६ ६	५४ ८	५१ ११	४८ १४	१९			
७ ५८	५ ७ ०	२ २	५ ०	५७ ७	५५ १०	५२ १२	५० १५	२४			
९ ५८	७ ०	४ ३	२ ५	५९ ८	५७ १०	५४ १३	५२ १५	३०			
११ ५८	९ ०	७ ५	५ ७	२ ९	५ ० १०	५७ १२	५४ १५	४			
१४ ५७	१२ ५९	१० १	७ ४	५ ९	३ ८	५ ० ११	५८ १३	१०	जनवरी		
१७ ५५	१५ ५७	१३ ५९	१० २	८ ४	६ ६	४ ८	५ १	१५			
२० ५३	१८ ५५	१६ ५७	१४ ५९	१२ १	१० ३	८ ५	५ ७	२१			
२३ ५९	२१ ५१	१९ ५३	१८ ५५	१६ ५७	१४ ५९	१२ १	१० ३	२७			
२६ ४५	२५ ४७	२३ ४९	२१ ५०	१९ ५२	१८ ५४	१६ ५६	१४ ५७	१			
२९ ४१	२८ ४२	२६ ४४	२५ ४५	२३ ४७	२२ ४८	२० ५०	१८ ५२	७	फरवरी		
३२ ३६	३१ ३७	३० ३८	२८ ३९	२७ ४१	२६ ४२	२४ ४४	२३ ४५	१३			
३५ ३०	३४ ३१	३३ ३२	३२ ३३	३१ ३४	२९ ३५	२८ ३७	२७ ३८	१८			
३८ २४	३७ २५	३६ २५	३५ २६	३४ २७	३३ २८	३२ २९	३१ ३०	२४			
४० १७	४० १८	३९ १९	३८ १९	३८ २०	३७ २१	३६ २१	३५ २२	२			
४३ ११	४३ ११	४२ १२	४२ १२	४१ १२	४१ १३	४० १३	४० १४	८			
४६ ४	४५ ४	४५ ४	४५ ५	४५ ५	४४ ५	४४ ५	४४ ६	१४	मार्च		
४८ ५ ५७	४८ ५ ५७	४८ ५ ५७	४८ ५ ५७	४८ ५ ५७	४८ ५ ५७	४८ ५ ५७	४८ ५ ५७	२०			
५१ ५०	५१ ५०	५१ ५०	५१ ५०	५२ ४९	५२ ४९	५२ ४९	५२ ४९	२६			
५३ ४४	५४ ४४	५४ ४४	५४ ४३	५५ ४३	५५ ४२	५५ ४२	५६ ४२	३०			
५९ ३८	५७ ३७	५७ ३७	५८ ३६	५८ ३५	५९ ३५	० ३४	० ३४	५			
० ३२	० ३१	१ ३०	२ ३०	३ २९	४ २८	४ २७	५ २६	१९			
३ २६	४ २५	५ २४	६ २३	७ २२	८ २१	९ २०	१० १९	१४	अप्रैल		
७ २१	८ २०	९ १९	१० १८	११ १६	१२ १५	१४ १४	१५ १३	२४			
१० १७	१२ १५	१३ १४	१४ १२	१६ ११	१७ १०	१९ ८	२० ७	३०			
१४ १३	१६ ११	१८ १०	१० ८	२१ ७	२२ ५	२४ ३	२६ २	६			
१९ १०	२१ ८	२२ ६	२४ ५	२६ ३	२८ १	२९ ४	३१ ४	१२	मई		
२४ ८	२५ ६	२७ ४	२९ २	३१ ०	३३ ४	३५ ५६	३७ ५४	१९			
२८ ६	३० ४	३२ २	३४ ०	३६ ४	३८ ५६	४० ५४	४३ ५२	२५			
३१ ४	३५ २	३७ २	३९ ०	४१ ५८	४३ ५६	४६ ५३	४८ ५१	३१			
३७ ०	३९ ५८	४१ ३	४३ २	४६ ५६	४८ ५६	५० ५३	५३ ५१	७			
४१ ८	४३ ६	४५ ४	४८ २	५० ५६	५२ ५७	५५ ५५	५० ५२	१३	जून		
४४ ११	४७ ९	४९ ६	५१ ४	५३ ५	५६ ५९	५८ ५७	० ५४	१९			
४७ १४	४९ १५	५२ १०	५४ ७	५६ ५	५९ २	७ १ ५ ०	७ ४ ५७	२६			

ये हुये हैं, वह लेने चाहिए और उसमें पेज नम्बर 2 पर दक्षिण अक्षांश के लिए दिया गया, संस्कार का (+) जोड़ या (—) बाकी (मिनट में) करना चाहिये।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंचांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट —पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रान्ति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पाँच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यदि अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.=२॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि से मिला दें तथा बाद में मिनट हों तो उनके जितने पल हों—इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण—दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टै. टा. घं. ६ मि. ४३ है। जयपुर दिल्ली से ५।२२ पश्चिम में है (अक्षांशादि सारणी में देखें)। अतः यह ५।२२ इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४३ में घटा दिये तो घं. ६ मि. ४८।२२ हुए। यह जयपुर का इस पंचांग से मध्यम सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रान्ति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आये चरान्तर सारणी के २७ अक्षांश और १७ क्रान्ति अंश के कोष्ठक में २ मिनट हैं। यह दक्षिण क्रान्ति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्यम सूर्योदय ६।४८।२२ में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४६।२३ आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।४७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २६।५७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २६।५७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।४७ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४८ में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३५ हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रान्त सारणी से इस दिन की रविक्रान्ति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारणी में खड़ी बायें हाथ की लाईन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाईन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रान्तायांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रान्ति दक्षिण होने के कारण ऋण चरान्तर मिनट हुए।

| क्रान्त्यंश | उत्तराक्षांश: चरान्तर मिनट — चरान्तर सारिणी — यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर हो तो धन | | |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छटे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवे और छटे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छटे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का आशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ-मरण पर आशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृ-बांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

अशौच-संपात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के साथ शुद्धि हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १०वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनमुपवासव्रतानि च अब्दमध्ये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। 'प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशस्यते शुक्रस्यास्तमने वैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येते प्रथम वत्सरं विना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थि-निक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वर्षफल बनाने की विधि

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	६०	००
वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	०२	३०	००	३०	००	६०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्षफल बनाने की रीति

जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो उस वर्ष से जन्म सम्वत् को कम करे जो शेष रहे उन अंकों के ऊपर सारणी से देखकर उसमें जन्म के वार इष्ट घड़ी पल में जोड़ देने से उस वर्ष का वार इष्ट घड़ी पल बन जाएगा फिर लग्न सारणी से लग्न देख लेवें।

मुन्था :—गत वर्षों में जन्म लग्न को युक्त करके १२ से भाग देवें जो शेष रहे उस राशी में मुन्था लगा देवें।

फलम् :—मुंथा यदि लग्न से ५, १०, ११वें स्थान में हो तो वह वर्ष फलदायक हो यदि २, ३, ५वें स्थान में हो तो मध्यम और यदि ४।६।७।८ या १२वें स्थान में पड़े तो वह वर्ष अति अशुभ जानना चाहिए, इसके अतिरिक्त यदि मुन्था शुभ ग्रह के साथ हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो शुभ और यदि इससे विपरीत हो तो अशुभ फल देता है।

अर्थ त्रिप्ताकि चक्रम्:—तीन सीधी और तीन तिरछी रेखाएं खींचकर तीनों को परस्पर मिला देवें और फिर मध्य रेखा के ऊपर वाले कोने पर वर्ष लग्न लगाकर शेष राशिएं नम्बर वार दर्ज कर देवें ग्रह स्थापन करने की विधि यह है कि गत वर्षों को नौ का भाग दे जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगा देवें शेष ग्रहों को ४ पर भाग देवें जो शेष रहे जन्म ग्रहों से उतनी संख्या पर शेष ग्रहों को लगा देवें परन्तु राहु वा केतु का संस्कार इसके विपरीत करे। यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न से आठवें स्थान में आवे तो वर्ष कष्टदायक हो। जिस स्थान में जो कोई ग्रह होगा उसी के अनुसार अपना प्रभाव डालेगा।

फलम्:—यदि शुभ ग्रह का राहु से वेध हो तो उस वर्ष शरीर में रोग, सूर्य से हो कफवायु रोग, मंगल से हो तो रक्त विकार और शरीर में पीड़ा और यदि शनि से हो तो वह वर्ष अतिकष्टकारी और धनादि का खर्च अधिक होता है।

दशा:—जन्म नक्षत्र को अश्विनी नक्षत्र से गिन कर लब्ध को गत वर्षों में जमा करके २ घटा देवें जो शेष बचे उसको ९ पर भाग देवें यदि शेष १ बचे तो सूर्य दो रहे तो चन्द्रमा ३ रहे तो मंगल ४ रहे तो राहु ५ रहे तो बृहस्पति ६ रहे तो शनि ७ रहे तो बुध ८ रहे हो तो केतु और यदि शून्य (९) शेष बचे तो शुक्र की दशा शुरू में होगी।

अथ दशा विनानी:—सूर्य १८ दिन, चन्द्रमा ३० दिन, मंगल २१ दिन, राहु ५४ दिन, बृहस्पति ४८ दिन, शनि ५७ दिन बुध ५१ दिन, केतु २१ दिन और शुक्र की दशा के ६० दिन होते हैं। इस प्रकार से दशा लगा लिया करें।

फलम्:—सूर्य मंगल राहु केतु ३, ६, १०, ११वें स्थान में जन्म या वर्ष लग्न में पड़े तो हों शुभ फल देते हैं और शुभ ग्रह चन्द्रमा बुध, गुरु, शुक्र ४, ५, ७, ९, १०, ११वें स्थान में शुभ फल देते हैं। ८, १२वें स्थान में सब ग्रह नेष्ट फल देते हैं।

वर्ष कुण्डली में अरिष्ट योग

जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो तो दो जन्मा वर्ष होता है जो शुभदायक नहीं है। यदि दो जन्मा लग्न में गुरु और चन्द्रमा शुभ स्थान में बैठे हों तो वह वर्ष अशुभ फलदायक नहीं होता यदि छटे गुरु और चन्द्रमा हों तो वह वर्ष अरिष्ट फलदायक होता है यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न एक हो और गुरु आठवें हों और चन्द्रमा छटे हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

सन्तान योग

वर्ष कुंडली में लग्नेश पांचवें या सातवें में पड़ा हो और पंचमेश वा सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। शुभ ग्रह पांचवें हों और पंचमेश देखता हो तो गर्भ होता है गुरु की राशि में चन्द्रमा हो मंगल शुभ राशि में हो या शुक्र की राशि में बैठा हो तो गर्भ योग होता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

नवीन वर्ष मानानुसार वर्ष-प्रवेश सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

आधुनिक विज्ञान वेत्ताओं ने वेधशालाओं मे सूक्ष्म यन्त्रों की सहायता से वर्ष का मान ३६५ दिन १५ घड़ी २२ पल ५७ विपल निर्धारित किया है। प्राचीन मान ३६५।१५।३१।३० है। प्राचीन मान तथा नवीन मान में ८ पल ३३ विपल का अन्तर है जो ३ मिनट २५ सैकिण्ड के बराबर बनता है। प्रति वर्ष ३½ मिनट के लगभग का अन्तर कालान्तर में काफी अधिक हो जाता है और वर्ष प्रवेश लग्न में भिन्नता आ जाती है। आजकल पूना, बम्बई, मद्रास, उत्तर भारत के सभी अच्छे ज्योतिषी नवीन मान से ही वर्षफल बनाकर फलादेश कहते हैं। जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो उसके सम्वत् में से जन्म सम्वत् को घटाने से गत वर्ष आते हैं। गतवर्ष की संख्या के कोष्ठक में जो अंक मिलें उनमें जन्म समय के वारादि जोड़ने से वर्ष प्रवेश के वारादि आ जाते हैं। मान लो आपने २०४५ सम्वत् का वर्षफल बनाना है। जन्म सोमवार सम्वत् २०१४ इष्ट ५८।१५० पर हुआ था। गतवर्ष ३१ हुये जिसकी संख्या उपरोक्त सारणी से मिली। ३-५६-५१-२७

इसमें जन्म समय के वारादि जमा किये— २-५८-५०-००

जो जोड़ आया वह वर्ष प्रवेश का इष्ट हुआ। ६-५५-४१-२७

वार गणना रविवार-१, चन्द्रवार-२ इस प्रकार होती है। ३२वें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार— इष्ट ५५ घड़ी, ४१ पल, २७ विपल पर होगा। तिथि मास जानने के लिये सूर्य के उतने ही राशि अंश वर्ष प्रवेश पर होते हैं जितने कि जन्म समय पर थे। वर्ष प्रवेश की ईसवी तारीख जन्म तारीख के आस-पास ही आती है।

चालन कोष्ठक

ग्रह स्पष्ट करने के लिये ज्योतिषियों को जो गणित करना पड़ता है उसमें इस चालन कोष्ठक (पृष्ठ) से बहुत सहायता मिलती है। पंचांग में प्रतिदिन के ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं। उससे एक दिन की अर्थात् २४ घन्टे की चाल (गति) का पता चल जाता है। ग्रहस्पष्ट प्रायः ५-३० प्रातः के होते हैं। इस समय से जन्म समय तक की अवधि को चालन समझ लीजिये। ग्रहों की चाल तो भिन्न-२ होती है परन्तु चालन सब के लिये एक ही रहता है। त्रैराशिक गणित से ग्रहस्पष्ट इस प्रकार करते हैं—

मान लो किसी का जन्म रात के ९-३० पर हुआ है तो ५-३० प्रातः से ९-३० रात्रि तक १६ घन्टे अर्थात् ९६० मिनट हुये। सूर्य की एक दिन की गति ५९ कला २५ विकला है जिसके विकला ३५६५ हुये। २४ घन्टे अर्थात् १४४० मिनट में सूर्य चला ३५६५ विकला

१ मिनट में सूर्य चला $\frac{३५६५}{१४४०}$

९६० मिनट में सूर्य चला $\frac{३५६५ \times ९६०}{१४४०}$

यह भिन्न बनी। इसमें ३५६५ का ९६० से गुणा करके १४४० से भाग किया जायेगा। अब चालन की सहायता से गणित किया तो १६ घन्टे का चालन ६६७ आया।

२४ घन्टे अर्थात् १००० चालन पर गति है ३५६५

तो १६ घन्टे अर्थात् ६६७ चालन पर गति होगी $\frac{३५६५ \times ६६७}{१०००}$

इसमें ३५६५ का ६६७ से गुणा करके १००० के भाग के लिये दशमलव लगाकर उत्तर प्राप्त हो जायेगा। भाग नहीं देना पड़ेगा। प्रत्येक ग्रह की गति को चालन से गुणा करके दशमलव प्रणाली से ग्रह स्पष्ट करते जाइये।

यथा ३५६५ × ६६७ = २३७७८५५ इसमें हजार का भाग दिया तो हुये २३७७.८५५ अर्थात् २३७८ विकला अर्थात् ३९ कला ३८ विकला। इसको गत दिवस के सूर्य स्पष्ट में जोड़ने से अभीष्ट सूर्य स्पष्ट आ जायेगा।

सप्तधान्य

सप्तधान्य अर्थात् सतनजा केतु आदि क्रूर ग्रहों की शान्ति के लिये दान पदार्थों में सम्मिलित किया जाता है। इसमें निम्न सात धान्य बराबर मात्रा में लेकर मिलाये जाते हैं। १. उड़द काले साबुत, २. मूंग हरी साबुत, ३. कणक (गेहूं या गन्धम), ४. चने (छोले), ५. जौ, ६. तन्दुल (चावल), ७. कंगनी (माल कंगनी) या बाजरा।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्त्यर्थे स्नानौषधि

नवग्रहों के अशुभ फलों की शान्ति के लिये जप दान यज्ञ हवन के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रह के लिये दान पदार्थ तथा स्नान औषधियां अलग-२ लिख कर बताई गई हैं। नीचे लिखी औषधियां सभी ग्रहों के लिये समान रूप से प्रयोग की जा सकती हैं।

१. लाजवन्ती (छुईमुई), २. दूब, ३. खिल्ला, ४. कांगनी, ५. जौ, ६. सरसों लाल, ७. देवदार की लकड़ी का बुरादा, ८. पिसी हल्दी, ९. लौंग, १०. सर्वौषधि। यह सब पदार्थ पन्सारी से या वैद्यक की दवा बेचने वालों से मिल जाते हैं। इनको २४ घन्टे गंगाजल या शुद्ध जल में भिगोकर रख दिया जाता है। फिर उस जल को छानकर उससे स्नान किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितंबर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसम्बर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५६	२३ ६	१८ ६	८ २८	२ ५६	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५६	१७ १	७ २६	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३६	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४६	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३५	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	३० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१	+ ४	+ १४	+ १२	− ३	− ३	− ३	+ ३	+ ९	०	− ९	१६	− ११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	९	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	३	३	३	४	९	०	१०	१६	११
४	४	१४	१२	३	४	२	४	९	०	१०	१६	११
५	५	१४	१२	३	४	२	४	९	− १	१०	१६	− १०
६	५	१४	११	३	४	२	४	९	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	३	४	२	४	९	१	११	१६	१०
८	६	१४	११	१	४	२	४	९	२	११	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	९	२	१२	१६	९
१०	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
११	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
१२	८	१५	१०	+ १	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१३	८	१५	१०	०	४	− १	५	५	३	१३	१६	७
१४	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	८	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	− १	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	८	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	५	+ १	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	− १
२५	१२	१३	५	२	५	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+ १
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+ १२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	− ३	३	+ ३	६	१	− ९	१६	१२	३
३१	१४	+ ४			− ३		+ ६	− १		− १६	− १२	+ ३

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैंडर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय वेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा स्टै.म. में होते हैं यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ १६१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में वेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी पलभा ६।३२ घटी कलभा १२ | दशमलग्न सारणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कालहोरा ज्ञान चक्र और उसका फल

समय	रवि	चं	मं	बु	बृ	शु	श
घ. २॥	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
५	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
७॥	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
१०	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
१२॥	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
१५	शु	शु	श	सू	चं	मं	बृ
१७॥	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
२०	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
२२।	शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
२५	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
२७॥	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
३०	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
३२॥	शु	शु	श	सू	चं	मं	बृ
३५	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
३७॥	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
४०	शु	श	सू	चं	मं	बृ	बृ
४२॥	बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
४५	चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
४७॥	श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
५०	शु	शु	श	सू	चं	मं	बु
५२॥	मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
५५	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
५७॥	शु	श	सू	चं	मं	बृ	बृ
६०	बु	बृ	सू	श	सू	चं	मं

जिस दिन और जिस समय की काल होरा देखनी हो तो काल होराज्ञान चक्र में देख लें। जैसे रविवार को पहली काल-होरा सूर्य का ढाई घड़ी तक होता है, उसके बाद ५ घड़ी तक शुक्र की कालहोरा होती है। इस प्रकार सब ग्रहों की कालहोरा जान लेनी चाहिए। ऋषियों ने होरा को क्षणवार कहा है। वार में भी क्षणवार में ही प्रधानता मानी गई है। इस लिए वार और क्षणवार दोनों अनुकूल हों तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यक में यदि वार अनुकूल नहीं हो तो क्षण वार (होरा) की अनुकूलता देखकर कार्य करना चाहिए। जैसे पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है।

होरा फल

सूर्य की होरा—टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्र की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**—युद्ध यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाईटी में जाना आना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीनलेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्यलेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन शस्त्र धारण, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि, मकान नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी निर्माण कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले वदेन्नष्टः रात्रौतु देवतां वदेत् ॥१॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खग	गज	ध्वांग	ध्वजादि अष्टक वर्गाः
अ इ उ ए	क ख ग घ	च छ ज झ	ट ठ ड ढ	त थ द ध	प फ ब भ	य र ल	श ष स	उच्चारित प्रश्नाक्षराणि
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	व	ह	
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	धातुमूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी गमागम ज्ञानम्
स्वल्प	सप्त	एकविंश	एकमास	४५ दिन	दो मास	दो मास	एक वर्ष	प्रवासी रदनावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्ति	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्ठि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुड़	यव	गाधमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेतांग	लोहित	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्ठि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम्
मूल	काष्ट	सुख	काष्ट	सुख	काष्ट	सुख	काष्ट	रोगी प्रश्ने सुखाद ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट वस्तुदिक ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	नीच	नाई	चौर जाति प्रश्न ज्ञानम्
उत्तम	अग्निगृहे	अरण्य	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्टगते	गृहे	भूमिस्थे	ज्ञोरित द्रव्य स्थानम्
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितर	देव पूजा उपासनादि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय गति प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	बन्दी मोक्ष मोक्ष ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्ष अवधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	न सिद्धि	कार्यसिद्धि भविष्यति नवा
शुभः	कलह	शुभः	कलह	शुभः	कलह	शुभः	कलह	विवाह प्रश्ने शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१०० वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	४५ वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्न आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धन-लाभ प्रश्न लाभ
विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्न भविष्यति नवा
७ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२ मास	वर्षा वर्षण दिनादि

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्त्यै सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्ला, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधी, लोध इन सब औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शांति होती है। गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वन्दना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

सप्त धान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कंगनी ७॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र स्पष्ट सारणी

| क्रमांक १ | | |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खट वर्ग सारणी चक्र

मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि	२	२	१७	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२१	२२	२५	२५	२६
रा.भाग	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
ही.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१ डे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
बु. डा.	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२
चि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
ही.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
२ डे.	८	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
बु. डा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१
चि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	६२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
ही.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२ डे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	८
स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३
मि.डा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२
चि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
ही.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३ डे.	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	९	९
स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१
क.डा.	४	५	५	५	६	६	७	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३
चि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
ही.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४ डे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१०
स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
न.	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०
सि.डा.	५	६	६	८	९	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
चि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
ही.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५ डे.	८	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	११
स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६
कं.डा.	९	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
चि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११
	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	८	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	११
	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	६
	९	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८	८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिनट	०घ	१घं.	२घ.	३घ	४घं.	५घं.	६घ.	७घं.	८घ	९घं.	१०घं.	११घं.	१२घं.	१३घं.	१४घं.	१५घं.	१६घं.	१७घं.	१८घं.	१९घं.	२०घं.	२१घं.	२२घं.	२३घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
२	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
३	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
४	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
५	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
६	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१५	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर-वधू गुण मेलापक सारणी भाग-१

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम् ॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ॥ १ ॥

		वर.	रा.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	धृ.	धृ.	धृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	स.	कु.	कु.	कु.	मी.	मी.	मी.	रा.
			आ.	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	आ.
वधू.	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु	पु.	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१	मे.	१	अ.	२८ ३	३३ ०	२०॥	१८॥ ४	२३॥ ४-	२२॥ ४-	२५॥	१६॥ ३	१०॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२०	२० ५+	२४ ५+	१४॥ ३५	१॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ ६-	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ +५	२५	२६	२०	१५॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+	अ.
२	मे.	१	भ.	३३	२८ ३	२८ -१	१८ -४१	२६॥ ४-	१४॥ ३४	१०॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१० ३१	२४ ५+	१८ ६	१८॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ १-	१८॥ -१६	१८॥ ३६	१९॥ -१६	१८॥ -१५	२३ -२	२२॥ २४+	२५॥ ५+	२०॥	२६	१० १३२	२॥ १३२	१९॥ -२	२३ -२	२२॥ २४+	२५॥ ४+	भ.
३	मे.	।	कृ.	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२७॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१०॥ ६	२७	१४ ३	१५ ३	१६॥ ३६	१६॥ ६-	२५॥ -६	१५ ५+	१९॥ १५५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२१	२३॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१५॥ १४	१०॥ ३४	कृ.
४	वृ.	॥।	कृ.	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ ६-	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ ५+	२९	३०	२३ १	२० १	२२॥ १	१३ ३	कृ.
५	वृ.	१	रो.	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३॥ १	१५॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२३ -१	२५	२६	२७	१२ ३
६	वृ.	॥	मृ.	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२०॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ +	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ ६-	२३॥	२४॥	२१॥ ३	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२४॥	२८	२५	१८ ३॥	२७
७	मि.	॥	मृ.	२६॥	१०॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	१९॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ०३	१३ ३५	२७ ५+	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	२४ -६	१९॥ -२६	२६ -६	१० ३६	१२ ५	१९ ५+	२१ ५+	२२॥ ५+	२७	१७ ३	२६
८	मि.	१	आ.	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१९ १ +	२४ ४+	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ ४-	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० +१५	१३॥ १४	१९ २६	५ १३६२	५१ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	२८	२७	२६	आ.
९	मि.	॥।	पु.	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ५०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ २+	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ ६	१६॥ -६	१८॥ ५+	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६	पु.
१०	क.	।	पु.	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१६ ६	५४ ३६	९॥ ३४	१६ ३५	२५ ५+	२५॥ ५+	पु.
११	क.	१	पु.	२१॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२१ ०	१८॥ ४+	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	१७॥ ३	१३ ३	२५	२०॥	१९ -५	१० ३५	२० -५	१०॥	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	५४ ३५	२६ ५+	पु.
१२	क.	१	आ.	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	१३ ३१	१५	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२०॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	१०॥ १५२	१०॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	१३ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ -६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१० ६	१८ ६	१३ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५	आ.
१३	सिं.	१	म.	१२ +५	१५ १४	१५॥ ३५	१६॥ ३	२१ ३१	१०॥	२०॥	२०॥ १	१५॥ -२	१६॥ +२४	१८॥ ४+	१६ ३२२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१२॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१०॥ ६	२३॥	२४॥	१०॥ १	१०॥ -१६	१८॥ १६	१२ ३६	म.
१४	सिं.	१	पु.	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	५८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ + ४	१६॥ ३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ -४	२०॥ ४+	५॥ १३४	१४ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१५ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	१४ १३	१८॥ ३	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३४	२४॥ ६-	पु.
१५	सिं.	।	उ.	१५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२०॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०२४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	१४ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	२१॥ ५+	१०॥ १३	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-	उ.
१६	क.	॥।	उ.	१३ २३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ ३	२३॥ ३	१०॥ ३	२०॥	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२० ३०	२४॥ १२+	१६॥ -१२४	२५॥ ४+	१६॥ -१२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२५॥	२५॥	२४ ५+	२४ ५+	१५॥ +४१	१६॥ -१६	१३ ३१६	१४॥ ३४	१७ ३	२८	२६	उ.
१७	क.	१	ह.	१३ ३६	१८॥ ६	१६ ६	२०॥ ५+	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	१८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	२६ ३	२८ ३	२० ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	१३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१५ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६	ह.
१८	क.	॥	चि.	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२६ १	२४॥	१९॥	११॥ ३	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१९ ०४	२५॥ ४+	२७	१३ ३	२५	२७	१३ १३	२१ १	१०॥ १५	१० ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१५ १	४॥ १३४	१५	चि.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ	म.	पू.	उ	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

इनमें मेलापक (वर्ण वश्य आदि)की गुणसारिणी हैं. ऊपरकी पंक्तिमें वरके नक्षत्र, तिरछी पंक्तिमें कन्याके नक्षत्र लिखे हैं, उपरी भागमें गुण नीचेके महादोषोंके चिन्ह दिये हैं. जिनोंका काम यह है एक नाडीके दोषकी जगह (३) गणमहादोष (मनुष्यराक्षस)के स्थानमें १ भकूट महादोष (षडाष्टक)में (६) (नवपंचम)में (५) (द्विर्द्वादश)में (४) वैरयोनिमें (२) लिखे हैं. और जहां थोडा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह हैं. जहां (स्वामी मैत्री आदिके) दोषका पूरा निर्वाह है वहां (+) ऐसा चिन्ह बतादिया है, और जिस जगह अर्ताके नक्षत्रसे पूर्व पंचम नक्षत्र है (इसकामी महादोष) है वहां ० शून्यका चिन्ह हैं, और जहां कोईभी महादोष नहीं मिलता वहां केवलगुण ही लिखे हैं.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

			रा.	मे.	मे.	मे.	वृ	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी	मी	मी	रा.
			भा.	१	१	१	III	१	II	II	१	III	I	१	१	१	१	I	III	१	II	II	१	III	I	१	१	१	१	I	III	१	II	I.	१	III	I	१	१	भा.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ	कृ.	कृ.	रो	मृ	मृ.	आ	पु	पु.	पु	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१९	तु.	II	चि.	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१६	११ ३	२१	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ ०१	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६	चि.
२०	तु.	१	स्वा.	२९ ३+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ ८६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२८	१३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ +४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ६०	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२१॥ ३	२३॥ ३	२६	२३ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६	स्वा.
२१	तु.	III	वि.	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ ८६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १२४	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१०॥ ३	२५॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६	वि.
२२	वृ.	I	वि.	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१५॥ ३	१३॥ १३	४१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ ८५	१८ ५८	१४॥ ५८	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२ ३	७ ३४	१२ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	१३ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१५॥ १	१२ १५	१८ १५	१४ ३२५	वि.
२३	वृ.	१	अ.	२३॥ ८६	१४॥ ३६	१८॥ ८६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१५॥ ६	२१ ८५	१७ ३५	२० ८५	२४॥	२०॥	२८॥	२४	२५	११ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	१७ ३५	२६ ५+	अ.
२४	वृ.	१	ज्ये.	१० ३६	१७॥ ५६	२३॥ ८६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	६॥ ५३	१९ ५+	२७ ५८	३१	२३॥ १	१२॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१५॥ ४	१४॥ ५८	९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३॥	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२१	२४	१० ३	१० १३	१४ १३५	२० १५	२० ५+	ज्ये.
२५	ध.	१	मू.	१३॥ ३५	१५ ३५	२५ ५+	१२॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	०॥ ३६	१०॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१५॥ १२३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१५॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६	मू.
२६	ध.	१	पू.	२५॥ ५+	१०॥ ३५	१५॥ ८३५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१२ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१५ ८१५	१० ३५	२१ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ ८१४	१५॥ ३४	१०॥ ८१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
२७	ध.	I	उ.	२४ ५+	२५॥ ५+	१३॥ १३५	६ १३६	१० ३३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२५ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१५ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१०॥ ८१४	२५ ८१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ३४०	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
२८	म.	III	उ.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ ३३५	२२॥ २५+	१५॥ २६+	२४॥ ८६	२१॥ ८६	२८	२८	३४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ११	१५॥ ११	२२॥ ८१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२० ३०	२५॥ १+	१५॥ १४+	१४ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
२९	म.	१	श्र.	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ ८६	१५॥ ८६	२१॥ ८६	४८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२३० ०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२२॥	२३॥ ३
३०	म.	II	ध.	२७	११ १३२	२६	२३॥ ५+	१९ १५	१३ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ ८६	११	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१४॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	२९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१० ३४	२३ ४०	१७॥ १४	२४॥ १	११ १३	२२॥ २+	ध.
३१	कुं.	II	ध.	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२१॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ ५+	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१५ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० ८५	२४॥ ८५	२५	११ ३	२५	२५॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ ४+	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १५	६॥ १३४	१३॥ ४२	ध.
३२	कुं.	१	श.	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३३	२५ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२२॥	१५॥ १	१५॥ ५१	१०॥ १३५	१०॥ २३८	२१ ६	२६ ५+	२१ ५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥	१७ १४	१०॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ १३ ०	८ १३४ ०	१४॥ १४	१५॥ ४	श.
३३	कुं.	III	पू.	१७॥ ३	२४॥ २+	१२॥ ८१	२४ ८१	३०	३०	२३॥ ५+	१० ३५	१० ३५	११॥ ३६	१२॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ ८१	२६ ५+	२० ८१	२०॥ १	२६॥	१२ १३	१५ १३	२५॥	२६॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ ८१	२० ८१	१२ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१२॥ ४२	पू.
३४	मी.	I	पू.	१४॥ ३४	२१॥ ४२+	१६॥ ८१४	१६ १	२१	२१	२४	१०॥ ३	१०॥ ३	१० ३५	२५ ५	१०॥ १५	१६॥ ८१५	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	१९ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१६ ८१५	२५ ५+	६॥ १३५	१४ १३	९॥	२८॥	२८॥	२२॥	२४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ २+	पू.
३५	मी.	१	उ.	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ ८१४	२१ १	२६	१८ ३	१० ३	२५	२६॥	२६ ५	१९ ३५	२० १५	१०॥ ८१५	१५ ३५	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३४	२ १३८	१५ ६	११॥ १६१	१८ ३१८	१८ ३१	२० ८१४	२३॥ ८१	२५॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	१४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०	उ.
३६	मी.	१	रे.	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१० ३	२६	२५	२५	२४	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३५	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	२५	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ३+	२६	२८॥	२७॥ ३	२३॥ ३	२१॥ ३	२२॥ ८१	१३॥ ४१	१५॥ ४	१०॥ ४२	२५॥ २+	३३	२८ ३	रे.
			न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ	मृ.	आ	पु.	पु.	पु	आ	म	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुण्डली मिलान

विवाह से पहले लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली मिलाना आवश्यक होता है। आम जनता इस कार्य के लिए मन्दिर के पुजारियों के पास जाती है। यह आवश्यक नहीं कि पूजा कार्य करने वाला या कर्म काण्ड करने वाला ज्योतिष भी जानता हो। खेद तो इस बात का है कि ज्योतिष न जानते हुए भी ये पुजारी लोग कुण्डली बनाना या कुण्डली मिलाने का काम भी ले लेते हैं और अर्थ का अनर्थ करने में नहीं हिचकिचाते। आम जनता से मेरा निवेदन है कि वे ज्योतिष का कार्य किसी जानकार विद्वान् ज्योतिषी से ही करावें और इन पुजारीनुमा ज्योतिषियों से अनुरोध है कि वे लोग हमारे पूर्वजों की इस विद्या को बदनाम न करें। किसी अच्छे पंचांग से कुण्डली मिलाने का ज्ञान प्राप्त करें, यह बहुत जिम्मेवारी का काम है। गलत मिलान से गृहस्थ सुख में अनेक बाधा, विघ्न आने की आशंका रहती है। आज जो पति-पत्नी में सम्बन्ध-विच्छेद, गृह कलह के समाचार अधिक मिल रहे हैं. उनका कारण कुण्डली न मिलाना या गलत मेलापक ही है।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी प्रत्येक पंचांग में दी होती है और हम भी दे रहे हैं। परन्तु इस विषय पर विस्तार से निर्देश नहीं दिया जाता। मेलापक के पूरे नियम कुछ अच्छे पंचांगों को छोड़कर छोटे स्तर के पंचांगों में नहीं दिये जाते। लड़का-लड़की की जन्म कुण्डली हैं तो उनमें देखकर नक्षत्र का चरण ज्ञात करो। जन्म कुण्डली नहीं है और जन्म ता. व समय है तो जन्म कुण्डली बना लो। इसके लिए पुराने पंचांगों की आवश्यकता होती है। १९०० से २००० तक सौ वर्ष का पंचांग "शतक मार्तण्ड" इसीलिए निकाला गया है कि ज्योतिषियों को गत वर्षों की कुण्डली बनाना सुलभ हो सके। चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से नक्षत्र व उसका चरण ज्ञात हो जाता है। यह सारणी भी पंचांग में दी हुई है। जन्म की ता. व समय नहीं है तो नाम के प्रथम अक्षर से नक्षत्र चरण अवकहड़ा चक्र से देखकर मालुम किया जा सकता है। मान लीजिये वर यानी लड़के की राशि मिथुन, नक्षत्र पुनर्वसु, चरण तीसरा, जन्म नाम प्रथम अक्षर 'ह' है और कन्या की राशि धनु, नक्षत्र पू.षा., चरण दूसरा, जन्म नाम प्रथम अक्षर 'ध' है। मेलापक सारणी में वर के लिए आड़ी रेखा में और कन्या के लिए खड़ी रेखा में नक्षत्र, चरण व राशियां दी गई हैं। वर के खाने में मिथुन के अन्तर्गत पुनर्वसु ।।। नक्षत्र के ३ चरण वाली कोष्ठक में तथा कन्या के धनु राशि अन्तर्गत पू.षा. नक्षत्र के सामने १९ अंक दिए हैं। नीचे ३ की संख्या भी लिखी है। इसका अर्थ है कि वर-कन्या के मेलापक में १९ गुण मिलते हैं परन्तु एक दोष है। सारणी में ३ संख्या वाला दोष नाड़ी दोष है। शास्त्रकारों ने कम से कम १८ गुण मिलने पर विवाह की अनुमति दी है। इस प्रकार गुण तो इसमें १८ से अधिक मिलते हैं परन्तु नाड़ी दोष होने से सन्दिग्ध हो गया। मेलापक सारणी में प्रत्येक खाने में जो अंक लिखे हैं वह गुणों की संख्या है। यदि दो संख्या हैं तो ऊपर की गुणों की और नीचे की दोषों की है। सारणी के नीचे निर्देश है कि इन संख्याओं से कौन सा दोष समझा जाये। कुल ३६ गुण होते हैं। जिनमें कम से कम १८ अवश्य मिलने चाहिए। २० से अधिक गुण मध्यम और २६ से अधिक गुण उत्तम माने गये हैं। मेलापक दोष रहित हो तो उत्तम है। जहां दोष का निर्वाह हो जाता है वहां + चिह्न दिया गया है और जहां थोड़ा दोष है वहां — चिह्न है। ऐसे दोषों पर तो विचार नहीं करना चाहिये यानी निर्दोष शुद्ध ही समझना चाहिए। परन्तु दोषों के परिहार के लिए भी कतिपय नियम हैं उनका अध्ययन आवश्यक है।

संक्षेप में नाड़ी दोष का परिहार इन स्थितियों में हो जाता है :

१) वर एवं कन्या का जन्म एक ही नक्षत्र में हो परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।
२) वर-कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।
३) वर-कन्या के नक्षत्र एक हों परन्तु राशि भिन्न-भिन्न हों।
४) पादवेध न हो।

वर के जन्म नक्षत्र का प्रथम चरण कन्या के जन्म नक्षत्र के चतुर्थ चरण से और वर के जन्म नक्षत्र के द्वितीय चरण का कन्या के जन्म नक्षत्र के तीसरे चरण से पादवेध होता है। यह पादवेध न होता हो तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है अर्थात् वर का नक्षत्र चरण प्रथम हो तो कन्या का नक्षत्र चरण दूसरा या तीसरा हो। वर के नक्षत्र का चरण दूसरा हो तो कन्या प्रथम या चतुर्थ हो। वर के जन्म नक्षत्र का चरण तीसरा हो तो कन्या के जन्म नक्षत्र का चरण प्रथम या चतुर्थ हो और वर का नक्षत्र चरण चतुर्थ हो तो कन्या का नक्षत्र चरण दूसरा या तीसरा हो तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है। जैसा वर के नक्षत्र से बताया है इसी प्रकार कन्या के नक्षत्र के साथ पादवेध को समझना चाहिए। नाड़ी दोष परिहार होने पर ४ अंक गुणों में जोड़ देने चाहिए।

गण दोष परिहार—वर और कन्या के जन्म राशियों के स्वामी या नवांश कुण्डली की चन्द्र राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों तो गण दोष का परिहार हो जाता है। कोई-कोई आचार्य नाड़ी दोष को ब्राह्मण जाति व कर्म करने वालों को ही प्रधानता देते हैं। गण दोष क्षत्रिय जाति व कर्म करने वालों के लिए और योनि वैर वैश्य वर्ण के लिए भागते हैं। गण तीन होते हैं : मनुष्य, राक्षस, देवता। मनुष्य गण की राक्षस गण से और देवता की राक्षस से परस्पर शत्रुता है। यह वर-कन्या के स्वभाव के द्योतक होते हैं। यदि कन्या का नक्षत्र पुष्य है तो राशि कर्क होगी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। वर का नक्षत्र मघा है जिसकी राशि सिंह और राशि का स्वामी सूर्य है परन्तु सूर्य और चन्द्रमा आपस में मित्र हैं अतएव गण दोष का परिहार हो जाता है। परिहार हो जाने पर ३ अंक गुणों में जोड़ देना चाहिये।

भकूट महा दोष—वर-कन्या की राशियां परस्पर छठी, आठवीं पड़ती हों तो भकूट महा दोष हो जाता है। इसमें भी यदि राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों तो इस दोष का परिहार हो जाता है। सारणी में दिए अंकों में परिहार हो जाने पर ३½ अंक जोड़ देने चाहिये।

मंगली दोष

वर या कन्या की कुण्डली में लग्न कुण्डली या चन्द्र कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें खानों में मंगल हो तो मंगली दोष होता है। शनि, राहु, केतु, सूर्य को भी समान भाव से क्रूर समझा गया है। इस प्रकार लग्न और चन्द्र कुण्डली के १२-१२ भावों अर्थात् कुल २४ खानों में से १, ४, ७, ८, १२=५×२=१० भावों में मंगल, शनि, राहु आदि कोई भी ग्रह हो तो मंगली दोष होता है। ध्यान से सोचें तो आप पायेंगे कि इस प्रकार का योग ५०-६० प्रतिशत जन्म पत्रियों में मिलना स्वाभाविक है। परन्तु जन साधारण में अकारण ही इस मंगली दोष का भय समाया हुआ है। यदि वर की कुण्डली में मंगल १, ४, ७, ८ या १२वें भाव में है तो कन्या की कुण्डली में भी इन्हीं खानों में लग्न या राशि से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में मंगल अथवा शनि या राहु होने से मंगल का मेलापक हो जाता है। कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें भाव में मंगल है तो वर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

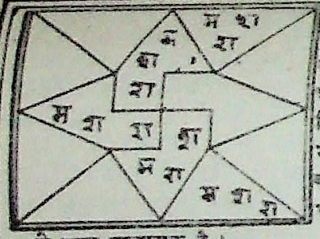

की कुण्डली में भी इन्हीं खानों में मंगल, शनि या राहु होने से मंगल दोष का परिहार होकर पत्री मिल जाती है। यह न हो तो केतु या सूर्य भी बराबर के ही क्रूर ग्रह माने जाते हैं। मंगली दोष परिहार के नियम विस्तार से इसी पंचांग में अन्यत्र दिये गये हैं। उनका भी भली-भांति अध्ययन करके मंगली पत्री का मेलापक करना चाहिये। जन-साधारण में मंगली दोष के प्रति जो भ्रामक विचार व्याप्त हो गये हैं, उनका निराकरण करना भी बहुत आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त वर-कन्या की कुण्डली में दाम्पत्य सुख, सन्तान सुख और धन-सम्पत्ति सुख सम्बन्धी विषयों पर भी दृष्टि डालकर वर-कन्या के माता-पिता को बता देना चाहिये। फलित का विषय काफी गहन है फिर भी कुछ योग तो प्रत्यक्ष ही दिखाई दे जाते हैं। जैसे उच्च-राशि के स्वक्षेत्री या मूल त्रिकोण के शुभ ग्रह हों, पाप ग्रह कुयोग न बनाते हों तो भाग्य शुभ रहेगा। पंचम स्थान से सन्तान का और सप्तम स्थान से सौभाग्य का सुख देखा जाता है। इन स्थानों में शुभ ग्रह हो, शुभ ग्रहों की दृष्टि इन पर हो, क्रूर ग्रहों की दृष्टि या योग न हो तो सन्तान सुख, सौभाग्य सुख उत्तम होगा। और पाप ग्रहों के योग से इन सुखों का अभाव होगा। वर-कन्या की कुण्डली में एक की पत्री भाग्यवान है तो उसके प्रभाव से दूसरे को भी लाभ होगा। फिर भी यदि कन्या के सप्तम भाव में अधिक बलवान् क्रूर ग्रह पड़े हों और वर के सप्तम भाव में कम हो अर्थात् वर का द्विभार्यायोग कम बलवान् हो और कन्या का वैधव्य योग अधिक प्रबल दिखाई दे तो पंडित लोग कभी-कभी कन्या का विवाह पहले शालिग्राम शिला, कुम्भ कलश, पीपल वृक्ष या अर्क पौधे (आक) से करा कर फिर वर से कराते हैं।

बहुधा जन्म-पत्री के स्थान पर जन्म की तारीख व समय लेकर ही लोग ज्योतिषी के पास आते हैं। आप "शतक मार्तण्ड" की सहायता से जन्म-कुण्डली बनाकर मेलापक करिये। वैसे भी बनी हुई पत्रियों को एक बार जांच जरूर लेना चाहिए कि ठीक बनी है या नहीं। पत्री ठीक नहीं होगी तो मेलापक भी शुद्ध नहीं होगा।

८६ पृष्ठ का शेष]

श्री गोरखनाथ के पूछने पर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने कहा था कि इस चक्रोक्त यात्रा मुहूर्त के अनुसार यात्रा करेगा, वह कुशल पावेगा। यह मुहूर्तराज है। उसे चन्द्रदोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, काल, घातवार इत्यादि किसी कुयोग का दोष नहीं होगा, यह स्वयं सत्यसिद्धि भी है। मैंने स्वयं अपने १६ वर्ष के ज्योतिषअध्ययनकाल में इसी यात्रा मुहूर्त राज से अनेक मुहूर्त बनाए हैं। वे लगभग सभी शतप्रतिशत सत्यसिद्धि हुए हैं। पंचांग प्रेमी पाठकों की विशेष जानकारी हेतु पूरे विवरण सहित यह यहां प्रकाशित किया जाता है इसमें प्रत्येक माह की प्रत्येक तिथि और प्रत्येक प्रहर में हर एक दिशा की यात्रा का फल निर्दिष्ट किया गया है। हर मास के नीचे दी गई तिथियों को उस मास के कृष्ण व शुक्ल पक्ष दोनों की तिथियां समझनी चाहिए। इसमें ३।१४।१५ और ३० तिथियों का उल्लेख नहीं है। सो १३ तिथि का फल ३ तीज तिथि के समान, १४ का फल ४ तिथि के समान, १५ का फल ठीक ५ तिथि के समान समझना चाहिए। ३० (अमावस्या) वर्ज्य है। इसी तरह १ से ४ तक के प्रहरों को दिन और रात दोनों के लिए समान समझें। नोट :—दिनमान का चतुर्थांश दिन के एक प्रहर का मान तथा रात्रि मान का चतुर्थांश रात्रि के एक प्रहर का मान होता है।

कुण्डली में मंगलीक योग विचार

लड़के या लड़की की जन्म कुंडली में यदि पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में मंगल पड़ जाए तो एक दूसरे के जीवन को अरिष्टकारी होते हैं। यदि वर और कन्या दोनों की कुंडलियां मंगलीक हों तो विवाह करने में कोई दोष नहीं। यद्यपि योनि, गुण नाड़ी गण इत्यादि का मिलान भी कर लेना चाहिए। कुछ अन्य दशाओं में भी मंगल दोष शान्त हो जाता है यदि—

(१) अन्य कुंडली में १, ४, ७, ८, १२ भाव में शनि हो तो उसका भौम दोष शान्त हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने व हिबुके तथा ।
अष्टमे द्वादशे चैव भौम दोषो न विद्यते ॥

(२) बली गुरु शुक्र-लग्न या ७ भाव में हो तो भी भौम दोष नहीं रहता।

(३) यदि कन्या की कुंडली में जहां मंगल हो, उसी स्थान पर वर की कुंडली में कोई प्रबल पाप ग्रह हो तो भौम दोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत ।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौम दोष विनाशकृत् ।

(४) मेष राशि का मंगल लग्न में, या वृश्चिक राशि का मंगल ४ भाव में या मकर का सातवें या कर्क का आठवें या धनु राशि का मंगल १२वें हों तो भौम दोष नहीं रहता।

मेषे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।
द्यूने मृगे कर्किजाष्टौ भौम दोषो न विद्यते ॥

(५) न मंगली चन्द्रे भृगुन मंगली पश्यति यस्य जीव ।
न मंगली केन्द्र गते च राहुर्न द्वितीये न मंगली मंगल-राहु योगो ॥

अर्थात् यदि दूसरे भाव में चन्द्र-शुक्र हो, मंगल-गुरु की युति हो या गुरु पूर्ण दृष्टि से भौम को देखता है केन्द्र भाव में राहु अथवा मंगल-राहु कहीं इकट्ठे हों। (मुहूर्त दीपक में)

(६) केन्द्र में चन्द्र या चन्द्र-मंगल की युति होने पर भी भौम दोष नहीं रहे।

(७) केन्द्र त्रिकोण में शुभ-ग्रह तथा ३, ६, ८, ११वें भाव में पाप ग्रह हों तो भी भौम दोष शान्त हो जाता है।

(८) षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम सम्भव ।
अष्टमे च यदा सौरिस्य भार्या न जीवति ॥

—अर्थात् वर की कुंडली में छठे भाव में मंगल, सातवें में राहु, आठवें शनि हो तो उसकी पत्नी जीवित नहीं रहती। अर्थात् मंगलीक जैसा प्रभाव होता है।

(९) राशि मैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत् ।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते ॥

—अर्थात् राशि मैत्री हो, गण भी एक हो या तीस से अधिक गुण मिलते हों तो भौम दोष का विचार नहीं करना चाहिए।

(१०) वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु क्षेत्री मंगल १, ४, ७, ८, १२वें भाव में हो तो भी भौम-दोष नहीं रहता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाह सम्बन्धी ज्ञातव्य

ज्येष्ठ पुत्र या ज्येष्ठ कन्या सबसे प्रथम जीवित सन्तान का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं किया जाता। बहुत आवश्यक हो तो कृत्तिका नक्षत्र से सूर्य के निकल जाने पर करना चाहिये। २५ मई तक सूर्य कृत्तिका से निकल जाता है। इसी प्रकार कार्तिक मास में भी वृश्चिक के सूर्य में पूजा, दानादि करके विवाह कर सकते हैं। वृश्चिक का सूर्य लगभग १७ नवम्बर से १६ दिसम्बर तक रहता है। गुरु चौथा, आठवां, बारहवां कन्या की राशि से (४, ८, १२) हो तो नेष्ट होता है और नेष्ट गुरु में विवाह वर्जित होता है। गुरु नेष्ट हो तो पूरे एक वर्ष तक नेष्ट होता है और इतनी अवधि तक प्रतीक्षा करना युक्तिसंगत नहीं है। पहले तो बहुत छोटी उमर में कन्याओं का विवाह कर दिया जाता था तब एक वर्ष प्रतीक्षा कठिन नहीं होती थी, अब कन्याओं का विवाह काफी बड़ी उमर में होता है। इसलिये गुरु की दुगुनी, तिगुनी पूजा करके विवाह की अनुमति दे दी गई है।

विवाह लग्न के दिन घर में मण्डप स्थापित किया जाता है। जिसे मडवा भी कहते हैं। आजकल सब कुछ बहुत जल्दी-२ किया जाता है और बहुत से रीतिरिवाज समाप्त होते जा रहे हैं। परन्तु जहां सम्भव हो अथवा जो लोग कर सकें उनको ज्योतिषी को सब बातें विस्तार से बताना चाहिये, विवाह के दिन या उससे एक-दो दिन पहले मडवा (मण्डप) स्थापित किया जाता है। जहां भांवरें पड़नी हों उस स्थान पर मण्डप बनाया जाता है। टैन्ट लगाने वाले को वह स्थान बता देना चाहिये। सूर्य ५।६।७ राशियों में हो तो ईशान कोण में, ८।९।१० राशियों में हो तो वायव्य कोण में, ११।१२।१ राशियों में हो तो नैऋत्य कोण में और २।३।४ राशि में हो तो अग्नि कोण में विवाह कार्य के लिए मण्डप की स्थापना करनी चाहिये। ईशान कोण पूर्व व उत्तर के मध्य, वायव्य उत्तर-पश्चिम मध्य में, नैऋत्य कोण पश्चिम-दक्षिण मध्य तथा आग्नेय कोण दक्षिण-पूर्व मध्य में होता है।

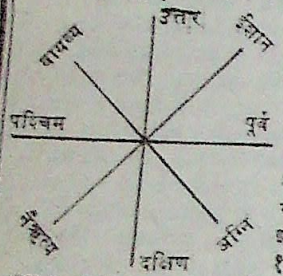

विवाह से पहले वर-वधू दोनों को ही तैल उबटन आदि लगाने, हल्दी चढ़ाने की प्रथा है। कन्या तथा वर की राशि के अनुसार तैल लेपन की संख्या बताई जाती है। इसको तेल चढ़ाना या तेल लेपन कहते हैं। मेष राशि ७, वृष १०, मिथुन ५, कर्क १०, सिंह ५, कन्या ७, तुला ७, वृश्चिक ५, धनु ५, मकर ५, कुम्भ ५ और मीन राशि के वर-कन्या को ७ बार तेल लेपन कराना चाहिये। पंचांग शुद्धि देख कर विवाह के दिन से १, २, ४, ५, ७, ८ दिन पहले जब शुभ दिन हो तब विवाह कार्य आरम्भ करना चाहिये। गणेश पूजन, नांदी श्राद्ध, हल्दी के हाथ लगाना, कलश स्थापन, घर की सफाई सजावट, भूषण वस्त्र बनवाना आदि कार्य करना शुभ होता है। जिस स्त्री के हाथ से कार्य कराना हो उसका चन्द्रमा नाम से या जन्म राशि से ४, ८ या १२ वां न हो अथवा जिस स्त्री का चन्द्रबल उस दिन उत्तम हो उसके हाथ से विवाह कार्य आरम्भ कराना चाहिये। सबसे पहले गणेश जी का पूजन करना चाहिये उनको प्रथम निमन्त्रण-पत्र समर्पित करना चाहिये। मन्दिर में जाकर गणेश जी की मूर्ति के सामने अथवा घर पर गणेश जी के चित्र के सामने सुपारी आदि के साथ निमन्त्रण-पत्र रख कर प्रार्थना करने से सब कार्य निर्विघ्न सम्पन्न होते हैं।

मेलापक में वर-कन्या का नाम बदलने की आवश्यकता पड़े तो कन्या का ही नाम बदलने की प्रथा है। परन्तु आज-कल बहुत सी लड़कियां नौकरी करती हैं इस कारण केवल घर में बुलाने के लिये ही नाम बदला जा सकता है। मेलापक सारणी में वर के नक्षत्र वाली कोष्ठक में जहां-जहां अधिक गुण संख्या हो, दोष नहीं हो उन सभी नक्षत्रों के नाम अक्षर लिख लो और उन में से ही किसी पर रुचि अनुसार नाम रखने को बता दो। मेलापक लड़के-लड़की दोनों की जन्म राशि से या फिर दोनों की नाम राशि से करना चाहिये। यह नहीं कि एक की कुण्डली है तो उसकी जन्म राशि ले ली और दूसरे की नाम राशि ले ली। ऐसा मेलापक ठीक नहीं होता। वैसे तो जन्म समय की राशि ही लेनी चाहिये परन्तु ऐसी परिस्थितियों में जब जन्म समय, तारीख ज्ञात न हो तो फिर प्रसिद्ध नाम बोलते नाम से मेलापक करना उचित है। ऐसे अवसरों पर नाम वही लेना चाहिये जिसके बुलाने पर वह सोते से जाग जाय, रास्ते में जा रहा हो तो बुलाने पर ठहर जाय, इसे बोलता नाम कहते हैं।

विवाह से पहले विवाह सम्बन्ध को पक्का करने के लिये सगाई, टीका, ठाका, मंगनी, कुडमाई की रसम की जाती है जिसे रोकना या विवाह पक्का करना भी कह सकते हैं। कहीं-२ यह रसम अलग-२ भी होती हैं, जैसे लड़के-लड़की के माता-पिता में बात तय हो गई तो कन्या पक्ष की ओर से लड़के के हाथ में कुछ रुपये सामर्थ्य अनुसार रख कर और सगे-सम्बन्धियों को नजरें देकर बात पक्की की जाती है। यह रसम शुभ वार शुभ दिन या शुभ होरा में चन्द्र बल नक्षत्र आदि देख कर देना चाहिये। यदि मुहूर्त निकालने का समय न हो तो शुभ होरा का ही विचार करके दिन के शुभ घण्टे बता देना चाहिये। दिन का चौघड़िया चक्र में यह बता दिया गया है। पंचांग में दिये सर्वार्थ सिद्धि योग आदि देखकर भद्रा, पंचक कुयोग रहित समय बता देना चाहिये। इसी प्रकार ठाका, सगाई, वर वरण का मुहूर्त भी निकाला जाता है। पंचांग शुद्धि देखकर कुयोग रहित दिन में शुभ तिथि, शुभवार, कृ. रो. पू. ३ उ. ३ नक्षत्रों में चन्द्र बल देख शुभ लग्न में या शुभ नवांश में कुल का पुरोहित या कन्या के भाई बन्धु वर के यहां जाकर पूर्व या उत्तर दिशा में बैठ कर कुंकुम, रोली, केसर से वर का तिलक कर पुष्प माला पहिनायें, यज्ञोपवीत, वस्त्र आदि वर को भेंट देकर वर का सत्कार माला, तिलक, ताम्बूल आदि से करें। सामर्थ्य अनुसार रुपया, मोहर, अशरफी, श्रीफल आदि वर को देकर गुड़, खजूर, बताशा या खोये की बनी मिठाई मुंह में देकर कन्या का भ्राता—"मैं अपनी अमुक नाम की बहन की सगाई या वाग्दान आपके साथ करता हूं"। पंडित हो तो गणेश पूजा नवग्रह पूजा स्वस्ति वाचन संकल्प आदि करा देना चाहिये।

विवाह निश्चय करते समय ध्यान देने योग्य कुछ बातें हैं :—जैसे लड़की-लड़के के गोत्र व प्रवर शाखा की न हो, वर की माता की सात पीढ़ी में से न हो, दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से नहीं किया जाता। दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों का या भाई-बहनों का विवाह छः मास का अन्तर देकर करना चाहिये। साथ-२ नहीं करना चाहिये। लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह किया जा सकता है। अलग-२ माता से उत्पन्न भाई-बहिनों का विवाह अलग-२ मण्डपों में अलग-२ पंडितों द्वारा अलग-२ दरवाजे से किया जा सकता है। जुड़वां भाई-बहिनों का विवाह एक ही मण्डप में किया जा सकता है। विवाह के बाद छः महीने तक घर-परिवार में मुण्डन, यज्ञोपवीत, केशान्त, चूड़ान्त, सीमान्तगुण्ठन आदि संस्कार नहीं किये जाते। वैसे यदि संवत् बदल जाय तो कोई दोष भी नहीं है। संवत्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र में बदलता है। एक मंगल कार्य माघ, फाल्गुन में किया हो तो दूसरा चैत्र, वैशाख में संवत् बदलने पर कर सकते हैं। यह विधान केवल तीन पीढ़ी तक के परिवार पर लागू होता है। मंगल उत्सव के बीच में श्राद्धादि अमंगल कार्य नहीं करने चाहिये। वाग्दान बानी सगाई, ठाका की रस्म के बाद वर या कन्या की तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाय तो १ मास के बाद सूतक निवृत्ति होने पर विवाह सम्पन्न किया जा सकता है। विवाह कार्य प्रारम्भ करके गणेश पूजन के बाद अर्थात् विवाह से कुछ दिन पहले परिवार में तीन पीढ़ी तक किसी की मृत्यु हो जाय तो वर-कन्या तथा उनके माता-पिता को सूतक अशौच नहीं लगता। विवाह-संस्कार को रोकना नहीं चाहिए, सम्पन्न करा देना चाहिये। निश्चित लग्न समय पर ही पाणिग्रहण करा देना चाहिये।

हमारे शास्त्रकारों ने जन-साधारण को विभिन्न विभागों में स्वभाव प्रवृत्ति प्रकृति आदि के अनुसार विभाजित किया है। ज्योतिष के नियमों के अन्तर्गत नक्षत्र भेद से मनुष्य, राक्षस, देवता तीन गण होते हैं। यह उनके स्वभाव के अनुसार विभाजन हुआ। राक्षस स्वभाव के व्यक्ति का देवता स्वभाव व्यक्ति के साथ मेल नहीं खायेगा। प्रत्येक नक्षत्र-राशि राशि-स्वामी ग्रह के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्थिति भिन्न होती है। उसका बल, पौरुष, काम शक्ति, पुरुष-स्त्री की परस्पर संभोग में संतुष्टि की क्षमता, योनि बनावट, सन्तान उत्पादक क्षमता आदि विषयों के अनुसार वर्ग भेद किये गये हैं। मेलापक में कुल ३६ अंक होते हैं: वर्ण-१, वश्य-२, तारा-३, योनि-४, ग्रहमैत्री-५, भकूट-६, गण-७ और नाड़ी के ८ कुल मिला कर ३६ अंक होते हैं। विस्तार से बताने के लिये तो अधिक स्थान चाहिये, संक्षेप में इन सभी वर्ग भेदों से प्रत्येक स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़की के उपरोक्त सभी गुण-दोष उसकी जन्म, राशि, नक्षत्र से ज्ञात हो जाते हैं और यह सब प्रक्रिया सम्पूर्ण रूप से नितान्त वैज्ञानिक है। इन सब का योग गणित से निकाल कर मेलापक सारणी बना दी गई है जो तुरन्त बता देती है कि किस नक्षत्र की लड़की का किस नक्षत्र के लड़के से मेलापक कितना प्रतिशत ठीक या गलत है।

विवाह लग्न निर्णय

ज्योतिषियों के पास लड़के या लड़की की ओर से विवाह की लगन(साहा)की तारीख समय निकलवाने के लिये यजमान (ग्राहक) लोग आते हैं। पंचांगों से विवाह मुहूर्त निकाल कर दे दिये जाते हैं। ज्योतिषियों को वर-कन्या की राशि के अनुसार त्रिबल-शुद्धि देख कर लग्न निकालनी पड़ती है। इससे काफी समय लग जाता है। ज्योतिषियों के परिश्रम को कम करने और उनके गणित में सहयोग करने के लिए हम त्रिबल-शुद्धि करके प्रत्येक राशि की उपयुक्त लगनों की तारीखें दे रहे हैं। त्रिबल-शुद्धि में तीन बातें देखनी होती हैं :—

१. **चन्द्रमा :** लगन के दिन व समय पर चन्द्रमा वर व कन्या की राशि से ४, ८, १२वें स्थान पर नहीं होना चाहिये। इसमें प्रधानता तो जन्म राशि को ही दी जाती है परन्तु जन्म समय ज्ञात न हो अथवा जन्म राशि से विवाह न बनता हो तो नाम राशि से भी कभी-२ विशेष परिस्थितियों में लग्न निकाल दिया जाता है। यदि कन्या के नाम बदलने से विवाह लग्न ठीक बनता हो तो बहुत आवश्यक होने पर उपयुक्त नाम रख दिया जाता है।

२. **वर का सूर्य :** वर की राशि से सूर्य ३, ६, ११वें स्थानों पर ही श्रेष्ठ होता है। १, २, ५, ७, ९वां सूर्य पूज्य होता है और ४, ८, १२वां नेष्ट होता है। नेष्ट सूर्य त्याज्य है, अतएव त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक बनाते समय हमने नेष्ट सूर्य के विवाह लग्नों को स्थान नहीं दिया है। पूज्य सूर्य में सूर्य की पूजा करके विवाह सम्पन्न किया जा सकता है। यदि बिना पूजा का लग्न नहीं निकलता हो तो पूजा के सूर्य में विवाह लग्न विधि सम्मत है परन्तु यजमान को बता देना चाहिये कि विवाह समय सूर्य की पूजा अवश्य करा दें।

३. **कन्या का गुरु :** गुरु कन्या की राशि से २, ५, ७, ९ व ११वां श्रेष्ठ होता है, १, ३, ६ व १०वां पूज्य होता है और ४, ८, व १२वां नेष्ट होता है। गुरु यदि उच्च राशि स्वराशि या मित्र राशि का हो तो नेष्ट होते हुये भी पूज्य माना जाता है। यथा कर्क, धनु, मीन, सिंह, मेष व वृश्चिक राशियों में मित्र राशि का गुरु पूज्य होता है। गुरु क्योंकि एक राशि में लगभग एक वर्ष तक रहता है और आजकल लड़कियों की शादी छोटी उमर में नहीं होती इसलिये नेष्ट गुरु को भी पूज्य ही मानना उचित है। वैसे भी २ फरवरी १९८७ से गुरु मीन राशि में स्वराशि का होने से पूज्य ही होगा।

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक में विवाह लग्न देखने का एक उदाहरण देकर बताया जा रहा है। मान लीजिये सिंह राशि का लड़का और कन्या राशि की लड़की का विवाह लग्न निकालना है। वर या कन्या के अभिभावक मई मास में विवाह करना चाहते हैं। कन्या की लग्नों वाले कोष्ठक में मई १, ४, ५, १०, ११, १२, १७, १९, २०, २८, २९ तारीखें हैं परन्तु वर वाले कोष्ठक में मई की १७, १९, २०, २८, २९ ही तारीखें हैं। इस प्रकार दोनों के लिये १७, १९, २०, २८, २९ तारीखें ही ठीक हैं और इन्हीं में से जो लग्न उनको उचित लगे तय कर सकते हैं। विवाह मुहूर्त में देख कर दिन, लग्न, समय, ग्रहदान, वार और अधिक खड़ी रेखायें देख कर तारीख निश्चित की जा सकती है। लग्नों के साथ जिन ग्रहों का दान लिखा हो जैसे चं.दा. का अर्थ चन्द्रमा का दान वह बता देना चाहिये। ग्रहों के दान पदार्थ उसी पंचांग में अन्यत्र पृष्ठ पर दिये हुये हैं। यह सब ग्रहों के दान तथा पूजा आदि विवाह के समय कराई जाती है।

जन्म स्थान विचार

[शेष पृष्ठ ७६ का]

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिये। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल वियाबान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो श्मशान या श्मशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो सुन्दर दर्शनीय रमणीक घर में जन्म। लग्न में गुरु हो, शुक्र-चन्द्र की दृष्टि हो तो राज-महल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुये, मूर्तियां बने हुये सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलाबल पर विचार करके फल कथन करना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महाविद्या श्री बगलामुखी के मन्त्रादि

[लेखक :—लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी०ए०, प्रभाकर, साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति]

बगलामुखी देवी भगवती माँ के ही अनेक स्वरूपों में से एक है। जैसे महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती माँ के तीन मुख्य रूप हैं। फिर नवदुर्गायें शैल पुत्री ब्रह्मचारिणि, चन्द्रघण्टादेवी, कूष्माण्डा देवी, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री हैं। विशेष प्रयोजन के लिए धारण किए गये भगवती के अनेक रूप हैं। जैसे रक्तबीज राक्षस पैदा हो गया था। जब माँ का उससे युद्ध हुआ तो राक्षस के रक्त से अनेकों रक्तबीज पैदा हो गये। महामाया माँ ने उस समय अपने ही अंश से चामुण्डा काली का रूप धारण किया जो उस राक्षस के शरीर से रक्त की बूंदों को गिरने से पहले ही पी जाती थी और इस प्रकार माँ ने उन अनेकों रक्तबीजों को समाप्त किया। चामुण्डा काली की उपासना मांस मदिरा से ही की जाती है।

भगवती बगलामुखी देवी की उत्पत्ति के बारे में तन्त्र शास्त्रों मे लिखा है कि एक समय सतयुग में भयंकर तूफान आया और समस्त चराचर सृष्टि नष्ट होने लगी तो शेषनाग की शैय्या पर लेटे हुए भगवान विष्णु को चिन्ता हुई। उन्होंने भगवती त्रिपुरसुन्दरी की आराधना (प्रार्थना) की। उस देवी ने प्रसन्न होकर बगलादेवी के रूप में अवतार लिया। सौराष्ट्र (काठियावाड़) देश में हरिद्रा नाम के पीले सरोवर में जलक्रीड़ा करती हुई प्रकट हुई और उनका अपूर्व तेज चारों ओर फैल गया। उस दिन मंगलवार था तथा चतुर्दशी तिथि थी। उस रात्रि का नाम वीररात्रि पड़ा। पंचमकार से सेवित देवी ने अर्धरात्रि के समय उस गहरे पीले सरोवर में निवास किया और त्रैलोक्य का स्तम्भन करके भयंकर तूफान दबकर से सृष्टि की रक्षा की। तान्त्रिक जन तभी से मंगलवार को जब चतुर्दशी पड़ती है पंचमकार का सेवन करके भगवती बगलामुखी देवी की आराधना करते हैं। भगवती के विद्या जनित तेज से दूसरी त्रैलोक्य स्तम्भिनी ब्रह्मास्त्र विद्या उत्पन्न हुई। उस ब्रह्मास्त्र विद्या का तेज भगवान विष्णु के तेज में विलीन हुआ तथा वह तेज विद्या तथा अनुविद्याओं में लीन हुआ। अर्थात् उत्पात की शान्ति के पश्चात् देवी का तेज भगवान विष्णु में विलीन हो गया और उनकी ब्रह्मास्त्र स्तम्भिनी विद्या, अन्य विद्या अनुविद्याओं में मिल गई। संसार के कल्याण के लिये प्रचलित हो गई।

ॐजगद्धात्री नमः स्वाहा ओ३म् महामाई नमः स्वाहा ओ३म्भातेश्वरी नमः
कहकर तीन बार आचमन करो। ओ३म् बगलामुखी पीताम्बरा देवी नमः

अपने शत्रु को, प्रतिद्वन्द्वी को, अपने विरुद्ध निरपराध सजा मिलने से रोकने के लिए, बन्धन मुक्ति के लिए किसी उच्च अधिकारी को अपने अनुकूल निर्णय की प्रेरणा देने के लिए, इस अनुष्ठान का आयोजन किया जाता है।

ओ३म् ह्लीं (हिलरीम्) बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं (हिलरीम्) ओ३म् स्वाहा।

इस मंत्र को भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगन्ध से लिखकर देवी के सामने रखे और दीक्षा की प्रार्थना करके दीक्षा ले लो। किसी गुरु से लो तो भी देवी से विधिपूर्वक दीक्षा ले लो, मन्त्र का उच्चारण शुद्ध हो बीजमंत्र ह्लीं (हिलरीम्) है। बगलामुखी का यंत्र भी भोजपत्र पर उसी प्रकार से बनाकर भगवती बगलामुखी के सामने रखो। भोजपत्र या अष्टगंध का प्रबन्ध न हो सके तो पीले कागज पर हल्दी से मंत्र व यंत्र बनाकर रखो। इस प्रकार से लिखा मंत्र व यन्त्र आप हमसे मंगाना चाहें तो मंगा सकते हैं। यन्त्र का नमूना आपको बगला स्तोत्र की पुस्तक में भी मिल जायेगा। ६ आप निम्न मंत्र से संकल्प करो। हाथ में द्रव्य अक्षत पुष्प जल लेकर संकल्प करो। संकल्प मंत्र पूरा पहले दिया जा चुका है। उसके अन्त में इस प्रकार जोड़ो :—मम समस्त सद अभीष्ट सिद्धयर्थ—यहाँ लिखे प्रयोजन को कहे। श्री भगवती पीताम्बराया श्री बगलामुखी देव्या. यथा लब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये। कह कर जल आदि सामग्री छोड़ दें।

हाथ में पीला पुष्प लेकर पद्मासन से बैठकर माँ बगलामुखी का ध्यान करें। ध्यान मंत्र इस प्रकार है :—

मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेद्यां सिंहासनो परिगतां परि पीत वर्णाम्।
पीताम्बराभरण माल्यविभूषितांगी, देवीं स्मरामि धृत मुद्गर वैरि जिह्वाम्।
जिह्वायमादाय करेण देवी वामेन शत्रुन परिपीड़यन्तीम्
गदाभि घातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्या द्विभुजां नमामि।

इस श्लोक का अर्थ यह है कि माँ बगलामुखी देवी मणि जड़ित पीत मण्डप में रत्न जड़ित सोने के पीत वर्ण सिंहासन पर विराजमान है। पीले रंग के वस्त्र आभूषण माला पहने है, सीधे हाथ में मुगदर है, बांये से वैरी की जिह्वा पकड़े हुए है। मुगदर से वैरी को मारने की मुद्रा है और जिह्वा को बाहर की ओर निकालकर शत्रुओं का उत्पीड़न करने वाली पीतवस्त्र धारण करने वाली माँ को नमस्कार करता हूं।

श्री बगलामुखी मन्त्र

ॐ ह्लीं (हिलरीम्) बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं (हिलरीम्) ॐ स्वाहा॥

आवाहन :— ओ३म् हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजां। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह। आगच्छेह महादेवि सर्वसिद्धि प्रदायिनि। यावद्व्रतं समाप्येत तावत्वं सन्निधा भव॥ इति बगलामुख्यै नमः आवाहनं समर्पयामि कह कर आवाहन करें।

आसन :—तां मआहव जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्य विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्। प्रसीद जगतां मातःसंसारार्णव तारिणीं। मया निवेदित भक्त्या आसनं सफलं कुरु॥ इति बगलामुखी देव्यै समर्पयामि बोलकर आसन दे। यदि यह अथवा नीचे लिखे मंत्र पूरे न पढ़ सके तो केवल आवाहन आदि कर लेना चाहिए। जैसे श्री बगलामुख्यै नमः ध्यानं समर्पयामि श्री बगलामुख्यै नमः आवाहनं समर्पयामि नमः श्री बगलामुख्यै नमः आसनं समर्पयामि श्री बगलामुख्यै नमः पाद्य समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि आचमनं समर्पयामि स्नानं समर्पयामि पंचामृत स्नानं समर्पयामि उदवर्तन् (उबटन) शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि आचमनं समर्पयामि। वस्त्रादिकं समर्पयामि गन्धं समर्पयामि सौभाग्य सूत्र समर्पयामि अक्षत हरिद्रा कुंकुम सिंदूर कज्जल पुष्प पुष्पमाला धूप दीप नैवेद्य फलताम्बुल पुंगीफल दक्षिणा पुष्पांजलि समर्पयामि कहकर षोडशोपचार पूजा कर देनी चाहिए। जो पूरा मंत्र पढ़कर संस्कार करना चाहे उनके लिए पूरे श्लोक लिखे जा रहे हैं।

पाद्य :—अश्वपूर्वां रथ मध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषतां॥ गंगादि सर्व तीर्थेभ्यो मया प्रार्थनया हृतम्। तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ इति पाद्यं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः। कहकर जल चढ़ाओ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अर्घ्य :—काञ्चनस्थितां हिरण्य प्रकारां मार्द्रां ज्वलन्तीम् तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मेस्थितां पद्म वर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ निधिनां सर्वदेवानां त्वमर्घ्य गुणा ह्यसि शिवो परिस्थिते देवि गृहाणार्घ्य नमोस्तुते । इत्यर्घ्यं समर्पयामि बगलामुखै नमः कहकर अर्घ्य दो ।

आचमन :—चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । पद्मे नेमि शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥ कर्पूरेण सुवासेन सुरभि स्वादु शीतलं । तोयमाचमनी यार्थं देवीद प्रतिगृह्यतां । इत्याचमनीयं समर्पयामि बगलामुखै नमः कहकर आचमन कराओ ।

स्नान :—आदित्य वर्णे तपसोऽधिजाती वनस्पतिस्तव वृक्षोथ बिल्वः । तस्यः फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा यश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ मन्दाकिन्याः समानीतैः हेमाम्भोज हवासितम् । स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥ इति स्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर देवी को जल छिड़क कर स्नान कराओ ।

पंचामृत स्नान :—तर्पतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह, प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रे-स्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे । पयोदधि घृतं चैव मधुच शर्करायुतम्, पंचामृतं मयानीत स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ इति पंचामृत स्नान समर्पयामि भगवती बगलायै नमः कहकर पंचामृत अर्पण करके स्नान कराओ । भगवती के चित्र को जल से पंचामृत से स्नान नहीं कराते अपितु जल या पंचामृत आदि को पंचपात्र में लेकर मन्त्र पढ़ने के बाद दूसरे पात्र में समर्पित कर देते हैं ।

उद्वर्तन (उबटन) स्नान :—श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् इष्टं मनिषाणामुक्तं मनिषाणम् सूर्य्यो वीरो दिशो लोकाः । तदा देवा देवतास्ता इन्द्रो ज्येष्ठ राजा विराट् । तदा मे यज्ञो यज्ञपतिर्गोप्ता गोपीथाय मे । तदा मे यज्ञस्तनूः पात्वग्निः पचतु मेधया । तदा मे यज्ञस्य दक्षिणा तां गुप्तां पान्तु यज्ञियाः । तदा मे यज्ञस्य हविस्तन्मे राध्यतामिह । तदा मे यज्ञस्य स्रुचस्ता मे सन्तु स्वर्गे लोके । तदा मे यज्ञस्य यज्ञायज्ञियं तन्मे राध्यतामिह । तदा मे यज्ञस्य यज्ञायज्ञियस्य

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रार्थना :—आराध्ये जगदम्ब दिव्य कविभिः सामाजिकी स्तोतृभि मार्त्यैश्चन्दन कुंकुमैः परिमलैरभ्यर्चिते सादरात् । सम्यग्न्यासि समस्त भूत निवहे सौभाग्य शोभाप्रदे । श्री मुग्धे बगले प्रसीद बिमले दुःखापहे पाहिमाम् ॥ अनया पूजया महामाया बगलामुखी प्रीयतां नमः । बोलकर देवी को प्रणाम करो ।

इसके बाद कर सको तो बगलामुखी स्तोत्र का जिसमें केवल १७ श्लोक हैं पाठ करो और न्यास सहित बगलामुखी कवच का पाठ भी करो । यदि यह नित्य नहीं कर सको तो आरम्भ व अन्त के दिन ही कर लो । यह स्तोत्र तथा कवच बगलामुखी पाठ की पुस्तक में मिल जायेंगे । यदि सस्कृत न आती हो तो पाठ की पुस्तक के छापे को तथा अपने उच्चारण को किसी पंडित या शास्त्री की सहायता से शुद्ध कर लेना चाहिए । नहीं तो हिन्दी भाषा में ही षोडषोपचार पूजा करके मंत्र का जाप शुरू कर देना चाहिए । जप से पहले मंत्र का न्यास करो ।

अथ विनियोगः ह्लीं ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारद ऋषि बृहती छंदो बगलामुखी देवता सम्पूर्ण मनोरथ सिध्यर्थे जपे विनियोगः कहकर पंचपात्र से जल दूसरे पात्र में डालें ॥

ऋष्यादिन्यासः—नारद ऋषये नमः शिरसि । बृहती छन्दसे नमः मुखे । बगलामुखी देवतायै नमः हृदि । ह्लीं बीजाय नमः गुह्य । स्वाहा शक्तये नमः पादयो । न्यास करने की विधि पिछले पाठों में विस्तार से बताई जा चुकी है उसी के अनुसार सारे न्यास करो ।

करन्यास :—ॐ ह्लीं अंगुष्टाभ्यां नमः । ओ३म् बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा । ओ३म् सर्वदुष्टानांमध्यमाभ्यां वौषट । ओ३म् वाचं मुख पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम् । ओ३म् जिह्वांकीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ओ३म् बुद्धि विनाशय ह्लीं ओ३म् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयादिन्यासः—ओ३म् ह्लीं हृदयाय नमः । ओ३म् बगलामुखि शिरसे स्वाहा । ओ३म् सर्वदुष्टानां शिखायै वौषट् । ओ३म् वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् । ओ३म् जिव्हां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । ओ३म् बुद्धि विनाशाय ह्लीं ओ३म् स्वाहा अस्त्राय फट् ।

अक्षरन्यासः—ओ३म् ह्लीं नमः शिखायाम् । ओ३म् बगलामुखी नमः दक्षिण नेत्रे । ओ३म् सर्वदुष्टानां नमः वामनेत्रे । ओ३म् वाचं नमः दक्षिण कर्णे । ओ३म् मुखनमः वामकर्णे । ओ३म् पदं नमः दक्षिण नासा पटे । ओ३म् स्तम्भय नमः वाम नासापुटे । ओ३म् जिव्हां कीलय नमः मुखे । ओ३म् बुद्धि विनाशय नमः गुह्ये ।

दिग्न्यास—ओम ह्लीं प्राच्यै नमः । ओ३म् बगलामुखी आग्नेयै नमः । ओ३म् वाचं दक्षिणायै नमः । ओ३म् मुखं नैऋत्यै नमः । ओ३म् पदे प्रतीच्यै नमः । ॐ स्तम्भय वायव्यै नमः । ओ३म् जिव्हां उदीच्यै नमः । ओ३म् कीलय ऐशान्यै नमः । ओ३म् बुद्धिं ऊर्ध्वायै नमः ओ३म् विनाशय भूम्यै नमः ।

उपरोक्त न्यास करने के बाद निम्न मंत्र से देवी का ध्यान करो और उसके बाद हल्दी की माला से देवी के मंत्र का जाप आरम्भ कर दो ।

ध्यान मंत्र :—

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं ।
हेमाभांगरुचि शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्रग्युताम् ॥
हस्तैर्मुद्गर पाशवद्ध रसनां संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्तांगीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनी चिंतये ॥

प्रथम दिन जितनी संख्या में जप करो उसी क्रम से प्रतिदिन करना चाहिए । बीच में कम ज्यादा करने से जप खण्डित हो जाता है । यदि किसी विशेष कार्य के लिए अनुष्ठान कर रहे हो या किसी दूसरे के लिए कर रहे हो तो इस नियम का पालन अवश्य करना चाहिए । यदि मंत्र को सिद्ध करने के लिए अनुष्ठान कर रहे हो तो ऐसी संख्या निर्धारित कर लो जिसे सुविचापूर्वक निबाह सको ।

जप का दशांश हवन नित्य या बाद मे इकट्ठा करने के लिए हल्दी की गांठों का जौ व अन्य सामग्री तिल श्वेत चावल बूरा पिसा हुआ, गुड़ का चूरा, देवदार की लकड़ी आदि पीत द्रव्यों से करना चाहिए । हवन का दशांश तर्पण किया जाता है । तर्पण के जल में हल्दी पीले पुष्प तिल हरताल, चावल, इलायची डाली जाती है । तर्पण का दसवां भाग मार्जन करने का भी विधान है और उसका दसवां भाग ब्राह्मण भोजन करा देना चाहिए ।

जब मंत्र सिद्ध हो जाए और किसी शत्रु का स्तम्भन करना हो तो मंत्र में इस प्रकार से उस व्यक्ति का नाम जोड़कर जप किया जाता है । इस मंत्र के द्वारा बुद्धि का, शास्त्र का देव-दानव भूत प्रेत सर्प आदि का भी स्तम्भन किया जाता है ।

ओ३म् ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं.....नामक शत्रु स्तम्भय स्तम्भय जिव्हां कीलय बुधिं विनाशय ह्लीं ओ३म् स्वाहा ।

रिक्त स्थान में जिसका स्तम्भन करना हो उसका नाम लगा देने से और उसी प्रकार जप करने से कार्य सिद्ध होता है ।

आकर्षण वशीकरण के लिए ९ इंच चौड़ी नौ इंच लम्बी योनि की शकल की वेदी बनाओ यह ऊपर के भाग में ९ इंच चौड़ी होगी और नीचे के भाग में कम होती हुई ३ इंच रह जायेगी । इसके चारों ओर तीन घेरे हल्दी के चूर्ण के बनाओ । जंगल में पशुओं के गोबर के जो कण्डे अपने आप बन जाते हैं उन्हें आयने कण्डे कहते हैं । उन कण्डों से या गाय के गोबर से बनाये गए कण्डों से तिल शहद घी शक्कर मिली हुई हवन सामग्री से उसमें थोड़ा नमक मिलाकर पीली सरसों के साथ हवन करने से वशीकरण व आकर्षण होता है । वशीकरण करने के लिए मंत्र में शत्रु शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता व्यक्तिं वश्य कहा जाता है ।

तेल में डूबी हुई नीम की पत्ती हवन सामग्री में विशेष मात्रा में डालने से दो व्यक्तियों में उच्चाटन कराया जा सकता है । हल्दी नमक हरताल मिलाकर हवन करने से शत्रु का स्तम्भन होता है । इसमें मंत्र में दोनों व्यक्तियों के नाम के साथ-साथ विनाशाय के बाद विद्वेषणं शब्द भी जोड़ा जाता है ।

हवन करते हुये यदि गीध व कौवे के पंख भी सरसों के तेल में भिगोकर बहेड़ा मिलाकर आहुति में डाल दिये जांय तो उच्चाटन तीव्र होता है । बहेड़ा त्रिफला का एक अंग होता है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनुभव सिद्ध मन्त्र-तन्त्र औषध प्रयोग

(लेखक—लक्ष्मी नारायण शर्मा)

सन्तान तन्त्र

इस तन्त्र को गर्मी के महीनों में नहीं करना चाहिये क्योंकि इसमें अजवायन का प्रयोग है जो कुछ गर्म तासीर की होती है। करें भी तो मात्रा कम रखें। सम्बन्धित व्यक्ति को आप १०० ग्राम अजवायन लाने के लिये कहिये। मासिक धर्म की समाप्ति के बाद से उसमें से २ ग्राम के करीब रोज रात्रि को सोने से पहले सन्तान की इच्छा रखने वाली स्त्री दूध के साथ ले। २५-३० दिन बाद यदि दूसरा मासिक धर्म न हो तो आगे लेना बन्द कर दे। मासिक धर्म हो जाये तो लेती रहे। यह प्रयोग ४० दिन तक करना होता है, आगे मासिक धर्म नहीं होगा और गर्भ रह जायेगा। परन्तु कभी-कभी दुबारा भी यही ४० दिन का प्रयोग करना पड़ता है। इस तन्त्र में प्रयुक्त की जाने वाली अजवायन को जिस मन्त्र से अभिषिक्त करना होता है वह प्रसिद्ध सन्तान गोपाल मन्त्र है। इसको विधि से सिद्ध किया हो तो अचूक फल देता है। नहीं तो महारात्रि मोहरात्रि कालरात्रि आदि के अवसर पर कुछ जप कर लेना चाहिये। जिस समय आप किसी को मन्त्र अभिषिक्त करके अजवायन दो उससे पहले ५१ बार इस मन्त्र को पढ़ो और उसमें फूंक मार कर अभिषिक्त कर दो। भगवती के सामने रखकर प्रार्थना करो भेंट, चढ़ावा दो, मनौती मनवा दो कि सन्तान होगी या पुत्र होगा तो यह चढ़ावा चढ़ायेंगे और अजवायन दे दो। रोज कितनी खानी है इसकी मात्रा बता दो। मात्रा अजवायन के १०० दानों के लगभग हो। गर्मी में ५० दाने की मात्रा काफी है।

सन्तान गोपाल मन्त्र : ॐ श्री ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

इस तन्त्र को देने से पहले यह पूछ लो कि पति-पत्नी दोनों ने डाक्टरी परीक्षा करा ली है और उनकी जननेन्द्रियां प्रजनन के योग्य हैं। कहीं कोई शारीरिक खराबी तो नहीं है शुक्राणु ठीक हैं। यह अनुभूत तन्त्र है। इसमें सन्तान गोपाल मन्त्र को सिद्ध करना आवश्यक है। ११००० आवृत्तियां करके पुरश्चरण किया हो। अथवा ग्रहण आदि के अवसर पर १०८ मालायें की हों तो फल देने वाला हो जाता है। यदि इस प्रकार से इसे सिद्ध नहीं किया जा सका है तो जो मन्त्र आप ने सिद्ध किया हुआ है उसके साथ इस सन्तान गोपाल मन्त्र को लिखकर स्त्री-पुरुष दोनों का नाम लिख कर सन्तान इच्छा या पुत्र इच्छा लिख कर जन्त्र भी दे दो जिसे सन्तान की इच्छुक महिला अपने शरीर पर धारण करें।

जब मासिक धर्म बन्द हो जाये तो अजवायन खाना बन्द कर देना चाहिये और गर्भ रक्षा के लिये शरीर पर रक्षा कवच गले में या बाहु पर बांधना चाहिये तथा कमर में अभिमन्त्रित करके गण्डा बांध देना चाहिये। इसका विचार नहीं करना चाहिये कि कमर में बांधने से गण्डा दूषित हो जायेगा। अन्य वैद्यक इलाज उपाय जब जैसे आवश्यक हों करते रहना चाहिये। मनौती सन्तान होने पर ही चढ़वानी चाहिये।

सरस्वती तन्त्र

विद्या प्राप्ति के लिये, विद्या की उन्नति के लिये, परीक्षा में उत्तम सफलता के लिये, वक्तृता में पटु होने के लिये, धारा प्रवाह भाषण देने के लिये, कविता, कहानी, साहित्य में धुरंधर होने के लिये तथा वाक् सिद्धि के लिये सरस्वती मन्त्र का जाप किया जाता है। सरस्वती देवी के मन्त्र-तन्त्र को सिद्ध करने से क्या और कैसे-कैसे लाभ मिलते हैं। मां सरस्वती का मुख्य मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः दृष्ट्वा वीणा पुस्तक धारिणी।
हंस युक्त विमानूढ़ा विद्या दान ददातु मे ह्रीं नमः ॥

इस मन्त्र का ग्यारह हजार जाप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसका पुरश्चरण पहले बताई विधि से ११०० हवन आहुतियां, ११० तर्पण ११ मार्जन तथा १ से, ११ ब्राह्मण भोजन के द्वारा किया जाता है। अंगन्यास करन्यास निवारण मन्त्र के अनुसार ही है जो पहले बताये गये हैं। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै मन्त्र के साथ, वही करना चाहिये। दुर्गा सप्तशती का प्रथम चरित महाकाली का, दूसरा महालक्ष्मी का तथा तीसरा चरित चौथे अध्याय से १३वें अध्याय तक महा सरस्वती के लिये है। उसका पाठ कर सको तो उत्तम है। नहीं तो केवल ग्यारहवें अध्याय का पाठ पुरश्चरण अवधि में नित्य कर लेना चाहिये। महासरस्वती का ध्यान मन्त्र इस प्रकार है:—

घण्टा शूल हलानि शंख मुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधती घनान्त विलसच्छीता शुतुल्य प्रभाम्।
गौरी देह समुद्भवां त्रिजगता माधार भूतां महा
पूर्वा मत्र सरस्वती मनु भजे शुम्भादि दैत्यादिनीम् ॥

यदि किसी को विद्या सम्बन्धी उपरोक्त कार्यों के लिये यन्त्र देना है तो १५ या २० का यन्त्र जो भी आप ने सिद्ध किया हो उसको उपरोक्त श्लोक के साथ लिख कर भोजपत्र पर या सफेद कागज पर श्वेत चन्दन की हलता वाले अष्टगंध से अनार की कलम से लिख कर दिया जाता है। यदि माता सरस्वती का यन्त्र सिद्ध करना चाहो तो वह नीचे दिया जा रहा है। यन्त्र सिद्ध करने की विधि बताई जा चुकी है। इसको माता सरस्वती की मूर्ति या चित्र के सम्मुख बैठ कर सिद्ध किया जाता है। महारात्रि, मोहरात्रि, कालरात्रि ग्रहण के समय अथवा बृहस्पतिवार के दिन पुष्य नक्षत्र में गुरु पूर्णिमा को शुभ मुहूर्तों में शुभ योगों में कर सकते हो। समय रात्रि का तीसरा प्रहर सर्वोत्तम होता है।

माता सरस्वती के हवन में चीनी, चावल, सफेद तिल विशेष होते हैं। श्वेत रंग के पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत मिष्ठान्न, प्रसाद नैवेद्य, श्वेत चन्दन की ही प्रधानता होती है। माला तुलसी की या मोती की या चांदी की होती है। आसन भी श्वेत रंग का लिया जाता है।

सरस्वती यन्त्र

यन्त्र सिद्ध करते समय पहले त्रिकोण बनाओ फिर बांये तरफ का अर्ध वृत्त फिर सीधी ओर का अर्ध वृत्त उनके बाद नीचे का अर्ध वृत्त बनाओ। पहले ॐ फिर श्रीं फिर ह्रीं फिर क्लीं और अन्त में नमः लिखो। इस प्रकार ११००० यंत्र लिखने पर यह यन्त्र सिद्ध हो जाता है। यथा विधि हवन आदि कराना चाहिये। पुरश्चरण की अवधि से ही

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मन्त्र के साथ यन्त्र भी सिद्ध कर सकते हो। अलग सिद्ध करो तो इसका हवन आदि अलग से करना चाहिये।

सरस्वती यन्त्र

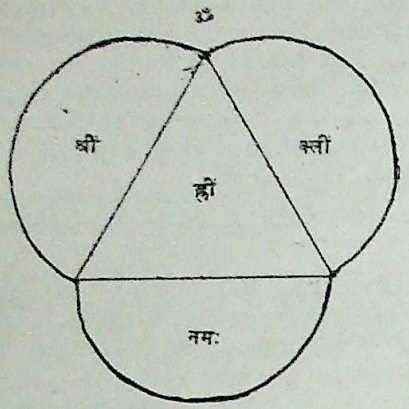

सरस्वती तन्त्र

बृहस्पतिवार के दिन इन सात वस्तुओं को उठा कर रख देने से (वद्यार्थी के हाथों से) मनौती मान कर बिना किसी को कहे-सुने बिना टोके रख देना चाहिये। परीक्षा साक्षात्कार में अवश्य सफलता प्राप्त होती है। जब सफल हो जाओ तो उसकी मनौती पूरी कर देनी चाहिये। (१) सफेद चावल साबुत दाने अक्षत-७ तोले, (२) सफेद फूल-७, (३) सफेद कपड़े का टुकड़ा-७० से.मी. (४) जनेऊ का जोड़ा-७, (५) कोई धार्मिक पुस्तक-७ (६) सफेद तिल-७ तोले, (७) सफेद चन्दन सात टुकड़े पतले-पतले, (८) छोटे-छोटे शंख-७, इन सात चीजों को सफेद कपड़े में बांध कर सरस्वती यन्त्र के साथ माता सरस्वती के चित्र के पीछे या किसी सुरक्षित स्थान में उठा कर रख दो। जब इच्छा पूरी हो जाय तो इन वस्तुओं को किसी विद्वान् ब्राह्मण को या मन्दिर में दान कर दो। यंत्र को वापस ले लो दूसरों के काम आ सकता है। साथ में कुछ द्रव्य रख दो। इसके साथ में जो सरस्वती मंत्र व यन्त्र भी लिख कर रखा हो तो सोने में सुहागे का काम करता है। जिस व्यक्ति के लिए करो उसका नाम उस यन्त्र में लिख देना चाहिये। अमुक व्यक्ति अमुक कामना प्राप्ति हेतु प्रार्थना करिष्ये। सिद्ध सरस्वती यन्त्र हमारे यहां से भी मंगाया जा सकता है।

ग्रह शांति के लिये अनुष्ठान

गोचर में जौनसा ग्रह प्रतिकूल चलता है उस राशि से किस भाव में वह चल रहा है उसी के अनुसार उसी भाव सम्बन्धी चिन्ता, बाधा, पीड़ा आदि उत्पन्न करता है तथा उस ग्रह की शान्ति के उपाय करना जरूरी हो जाता है। हमारे जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव शनि का पड़ता है और यह ग्रह बहुधा प्रतिकूल चलता है। जब इसकी साढ़े साती आती है तब कम-ज्यादा यह साढ़े सात वर्ष तक प्रतिकूल ही रहता है। इसके अतिरिक्त चौथा, सातवां, आठवां, दसवां भी कण्टक शनि के नाम से खराब ही होता है। यह ग्रह ३, ६, ११वें भाव में ही अच्छा फल देने वाला रहता है। इसकी शान्ति के उपायों में शनिवार के दिन तांबे के पैसे (अब तांबे के पैसे प्रचलित नहीं हैं अतः कोई भी छोटे सिक्के या तांबे का कोई टुकड़ा) सरसों के तेल में अपना मुख देखकर तेल दान करना चाहिये। इसके अलावा लोहे की बनी हुई कोई उपयोगी वस्तु जैसे चिमटा, संडासी, चाकू, छुरी आदि साबत उड़द, काला कपड़ा, काले या नीले फूल, पुराने उतरे हुये जूते, सतनजा भी शनिवार के दिन यथाशक्ति यदा-कदा देते रहना चाहिये। मंगलवार-शनिवार को हनुमानजी का पूजा प्रसाद चढ़ाते रहना चाहिये। सुन्दर काण्ड का या हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिये। हो सके तो मंगल का व्रत भी रख लेना चाहिये। शनि का मन्त्र : ॐ प्रां प्रीं प्रौ सः शनये नमः है— इसका २३००० जाप है। जप समय सन्ध्या काल है शमी यानी छोंकर के वृक्ष की समिधा से २३०० आहुतियां देकर हवन करने से शनि का दोष निवारण हो जाता है। ऊपर बताये गये उपायों में से जितने भी कर सको उत्तम रहते हैं। जब शनि खराब होता है तब नीलम धारण करने से लाभ होता है परन्तु इस नग को धारण करने से पहले यह देखना पड़ता है कि आपको माफिक है या नहीं। नीलम के नग को पंचामृत में धो कर रात को सोते समय अपने सिरहाने तकिये के नीचे रखकर सो जाओ। वह स्वप्न में संकेत देगा और स्वप्न के अनुसार ही विचार करो या कराओ कि यह कैसा फल देगा शुभ या अशुभ। यह तीन घंटे में या तीन दिन में ही अपना कोई न कोई चमत्कार शुभ या अशुभ प्रभाव दिखा देता है। परन्तु रिस्क लेने से पहले अच्छा है कि इसके स्वप्न के संकेत समझ लिये जायें और यदि संकेत ठीक नहीं है तो दूसरा नग लेकर उसकी इसी प्रकार परीक्षा की जाय। इसके स्थान पर यदि सिद्ध रक्षा कवच पहना जाय या लोहे का कड़ा या अष्टधातु की अंगूठी पहनी जाय तो सुरक्षित रहती है। नीलम प्रायः ४ रत्ती का स्टील की अंगूठी में दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में (स्त्रियों के बाये हाथ में) सूर्यास्त से दो घंटे पूर्व शनिवार के दिन प्रथम बार धारण किया जाता है। धारण करने से पहले अंगूठी को पंचामृत में धोकर गंगाजल या शुद्ध जल से साफ करके पहनना चाहिये।

राहु-केतु

शनि के बाद जो सबसे अधिक अनिष्टकारक ग्रह हैं वे राहु और केतु हैं। जो अपने इष्ट देव की पूजा-पाठ करते हैं उनके अनन्य शरणागति हैं, हनुमान जी या बटुक भैरव जी की, देवी की पूजा करते हैं उन पर ग्रहों का प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। यह निश्चित बात है। अस्तु सभी ग्रहों के दुष्ट प्रभाव से बचने के लिये जरूरी है कि किसी बड़ी ताकत का सहारा लिया जाय। देवों के देव परम पिता परमात्मा या जगन्माता या इनके ही रूपों की शरण ली जाय।

राहु का मन्त्र : ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः संख्या १८००० हवन सूखी दूब मिला कर १८०० आहुतियां सरसों, काले तिल आदि की हवन सामग्री से करें। बाल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पदार्थ :—सीसा (लैड), काले तिल, सरसों, सरसों का तेल, नीले फूल, नीला कपड़ा, चाकू, छुरी या लोहे का खड्ग या खिलौनेनुमा तलवार, कंबल या ऊनी बिछावनी का टुकड़ा, घोड़ा या घोड़े के प्रतीक लकड़ी या लोहे का बना घोड़े का खिलौना यह सब चीजें नीले कपड़े में बांध कर छाज या सूप में रखकर शनिवार के दिन जोशी को दान कर देनी चाहिये। सतनजा में यह सातधान्य होते हैं :—साबत उड़द, साबत मूंग, कणक (गेहूं), छोले (चने), जौ, चावल और कंगनी या बाजरा। सतनजे का भी दान कर देना चाहिये।

केतु मन्त्र : ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः संख्या १७००० जप समय राहु-केतु का रात्रि में है। हवन सामग्री में कुशा का विशेष मिश्रण किया जाता है। दान पदार्थ लोहा, काले तिल, सतनजा, सरसों का तेल, धूम्रवर्ण के वस्त्र का टुकड़ा व इसी रंग के पुष्प, नारियल, कम्बल, ऊनी कपड़ा, कोई हथियार या उसका प्रतीक, बकरा या उसका प्रतीक एक लकड़ी के खिलौना बकरा।

राहु का रत्न गोमेद है जिसको चांदी की या अष्ट धातु की अंगूठी में पहना जाता है। सूर्यास्त के २ घंटे बाद दाहिने हाथ की मध्यमा में पहनना चाहिए। वजन ४ रत्ती। केतु के लिए लहसुनिया पहना जाता है। वजन ४ रत्ती। दाहिने हाथ की कनिष्ठिका या मध्यमा में अर्धरात्रि के समय पहनना चाहिए। शनि, राहु व केतु के रत्न शनिवार के दिन ही प्रथम बार पहनना आरम्भ करना चाहिए। आम तौर से इन रत्नों का जो वजन लिया जाता है वह दे दिया है। परन्तु राशि के हिसाब से प्रत्येक व्यक्ति के लिए इनकी कम या ज्यादा रत्ती भी बताई जाती है। राहु-केतु के बुरे प्रभाव को दूर करने के लिए हाथी दांत पहनने से भी काम होता है।

बृहस्पति : महत्त्व की दृष्टि से अगला ग्रह बृहस्पति ही है।

गुरु एक शुभ ग्रह है। परन्तु गोचर में कभी-कभी यह भी खराब आ जाता है और विघ्न, बाधा, पीड़ा व्यर्थ व्यय आदि कराने वाला हो जाता है। इसकी शान्ति के लिये इसका मन्त्र है :—ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः इसकी संख्या १६००० है। हवन में पीपल के वृक्ष की समिधायें विशेष प्रयोग की जाती हैं। दान पदार्थों में कांसा, धातु का टुकड़ा, चने की दाल, खांड, चीनी, घी, पीला कपड़ा, पीला फूल, हल्दी, तुम्बक, पीले फल, केले, अमलतास आदि घोड़ा या घोड़े का प्रतीक खिलौना। बृहस्पति जब खराब हो या जन्मपत्री में गुरु नीच या शत्रु राशि का हो या बृहस्पति की दशा खराब चल रही हो अथवा जन्म सूर्य-गुरु की राशि का हो तो पुखराज धारण कराया जाता है। यह आम तौर से सवा पांच रत्ती का सोने की अंगूठी में दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली में पहना जाता है। सूर्यास्त से एक घण्टे पहले प्रथम बार गुरुवार के दिन पहनना आरम्भ करें।

सूर्य

सूर्य सब ग्रहों का राजा है। यदि जन्मपत्री में नीच राशि का पड़ जाय तो सब ग्रहों के शुभ फलों में न्यूनता ला देता है। इच्छा शक्ति कम कर देता है। क्योंकि एक राशि पर केवल एक मास तक रहता है, इस कारण गोचर में एक साथ बहुत दिन तक खराब नहीं चलता परन्तु दशा अन्तरदशा अधिक दिन तक खराब आ सकती है। तब सूर्य का उपाय करना चाहिए। किसी जमाने में सूर्य की पूजा मुख्य देवता के रूप में प्रचलित थी। सूर्य भगवान् की नित्य प्रातः काल पूजा करने से बल-बुद्धि तेज की वृद्धि होती है। इनका जप मन्त्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" है। जिसकी जप संख्या केवल सात हजार है। समय प्रातः काल है। अर्क-(अकौआ) या आक की समिधाओं से लाल चन्दन मिलाकर हवन किया जाता है। नित्य न कर सकें तो रविवार के दिन ही करें। प्रातः सूर्य को जल चढ़ाने से भी बहुत लाभ होता है। स्नान करके पूर्व की ओर मुख करके खड़े हो जाओ और सूर्य को एक लोटा जल से अर्घ्य दो। सूर्य की किरणें जल के द्वारा तुम्हारे शरीर में प्रवेश करें फिर अपने स्थान पर ही एक बार घूम कर परिक्रमा दो और पृथ्वी पर गिरे हुए जल को अपने शरीर के मुख्य भागों से स्पर्श कराओ। मस्तक, हृदय, बाहुओं पर लगाओ। सूर्य भगवान् को नमस्कार करो। जन्मकुंडली में जिनका सूर्य नीचे का था और जिनके उत्तम ग्रहों का प्रभाव नहीं हो रहा था ऐसे कितने ही लोगों को मैंने सूर्य पूजा, जल चढ़ाना बताया और केवल रविवार को ही यह नियम करने से उनको अप्रत्याशित लाभ हुआ।

सूर्य के प्रभाव को ठीक करने के लिये माणिक पहना जाता है। इसे सोने की अंगूठी में दाहिने हाथ की तर्जनी में सूर्योदय के समय रविवार के दिन से पहनते हैं। वजन सवा रत्ती से लेकर तीन रत्ती तक होता है। सूर्य का दान ब्राह्मण को दिया जाता है। जिसमें ताबा, गेहूं, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल फूल, केसर, मूंगा, लाल गाय सजीव न हो सके तो मिट्टी की बनी गाय, लाल चन्दन इन पदार्थों का दान किया जाता है।

चन्द्रमा

चन्द्रमा गोचर में एक राशि पर केवल ढाई दिन के लगभग रहता है। परन्तु जन्मकुंडली में आठवां हो, घातक पीड़ादायक हो या नीच राशि में हो, इसी प्रकार के चन्द्रमा की दशा हो तो निम्न उपाय किये जाते हैं। बच्चों के गले में चांदी का चन्द्रमा बनवा कर पहनाया जाता है। चन्द्रमा की शान्ति के लिए उसके प्रभाव को शुभ करने के लिये चांदी में मोती पहना जाता है। दो सवा दो रत्ती का सच्चा मोती दाहिने हाथ की कनिष्ठिका उंगली में संध्या के समय सोमवार के दिन से पहनते हैं। यह चित्त को शांत करता है और चन्द्रमा सम्बन्धी रोगों पर भी शुभ प्रभाव डालता है।

चन्द्रमा का जप मन्त्र :—ॐ रां री रौं सः चन्द्राय नमः" है। जप संख्या ११००० है। जप समय संध्याकाल हवन सामग्री में पलाश वृक्ष की समिधाओं का विशेष प्रयोग किया जाता है। सफेद चन्दन की लकड़ी भी मिलानी चाहिये। दान पदार्थों में :—चांदी, चावल, मिसरी, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, शंख, कपूर, श्वेत बैल, श्वेत चन्दन ब्राह्मण को दान किया जाता है। सजीव बैल के स्थान पर मिट्टी का बना खिलौना सफेद बैल का दिया जा सकता है। चन्द्रमा मन तथा मस्तिष्क का स्वामी होने से जब विपरीत फल देने वाला हो जाता है तो विक्षिप्तता मिरगी हिस्टीरिया आदि के दौरे बुद्धिभ्रंश आदि उत्पन्न करता है। कफ के रोग, स्वांस दमा आदि भी देता है। उपरोक्त उपाय करने से लाभ होता है।

मंगल [भौमः]

मंगल नीच राशि का पड़ा हो, नीच राशि का गोचर में अशुभ चल रहा हो, अथवा अशुभ मंगल की दशा अन्तरदशा आये तो उसमें यह ग्रह शरीर से रक्त निकालने वाली बीमारी बवासीर या चोट आदि में ऑपरेशन आदि से रक्त बहाने वाले कुयोग बनाता है। मामूली सी चोट से अधिक रक्त बहता है। इसके कुप्रभाव को कम करने के लिये या दूर करने के लिये हनुमानजी की पूजा प्रसाद उपासना बहुत लाभदायक होती है। इसके लिये बच्चों के गले में या बाहु पर मूंगा डाला जाता है। सच्चा न हो तो नकली मूंगा भी बच्चों को पहनाया जा सकता है। वयस्क लोग दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में सोने में सवा पांच रत्ती का मूंगा मंगलवार के दिन से सूर्योदय के एक घण्टे बाद प्रथम प्रहर में धारण करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इसका जपमंत्र ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः है। जप संख्या १०००० है। जप समय प्रातः प्रथम प्रहर। हवन में खैर की लकड़ी व रक्त चंदन की समिधा विशेष रूप से प्रयोग में लाई जाती है। दान पदार्थों में :—तांबा, मलका मसूर की दाल, गुड, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर के फूल, केसर, कस्तूरी, लाल बैल (या प्रतीक स्वरूप खिलौना बैल) लाल चन्दन आदि का मंगलवार के दिन ब्राह्मण को दान करना चाहिये। हनुमानजी को चोला भी चढ़ाया जाता है। घी, सिंदूर आदि लेपन कराया जाता है।

बुध

बुध का रत्न पन्ना है। तीन रत्ती वजन का पन्ना दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली जिसे कनिष्ठिका कहते हैं पहना जाता है। सोने में या चांदी में दिन के प्रथम प्रहर में बुधवार के दिन से पहनें। चांदी-सोना मिश्रित या कांसा धातु में भी पहना जा सकता है। दान पदार्थ—कांसा धातु, मूंग साबत, खांड या चीनी, घी, हरा कपड़ा, चम्पा पुष्प या सब तरह के मिश्रित पुष्प, हाथी दांत का टुकड़ा, कपूर, ऋतुफल, कोई हथियार या उसका प्रतीक बुधवार के दिन दान करना चाहिये। वह दान ब्राह्मण या किसी विद्वान् को देना चाहिये। जप मन्त्र है—ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः जप संख्या ९०००। जप समय मध्यान्हकाल हवन में हरी गिलोय और वनस्पतियों की जड़ें मिलाई जाती हैं। चावल, गोरोचन, शहद भी मिलाया जाता है।

एक राशि पर एक मास के लगभग रहता है। सूर्य के आसपास ही चलता है। गोचर में खराब हो, कुण्डली में पड़ा हो, नीच राशि में हो, दशा अन्तरदशा खराब हो तो बुध की शान्ति कराई जाती है। हाथी दांत पहनने से भी लाभ प्राप्त होता है।

शुक्र : गोचर में अनिष्ठ कारक हो, कुण्डली में बुरे भावों में पड़ा हो नीच का हो, अस्त हो दशा अन्तरदशा खराब हो तो शुक्र ग्रह की शान्ति करानी पड़ती है। यह ग्रह सूर्य के सबसे पास में है और एक राशि पर एक मास के लगभग ही रहता है। गोचर में तो ज्यादा देर तक खराब नहीं रहता परन्तु दशा अन्तरदशा लम्बी हो सकती है।

शुक्र का जप मन्त्र ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः शुक्राय नमः जप संख्या १६००० समय संध्याकाल हवन सामग्री में पीपल के वृक्ष की समिधायें, इलायची, केसर भी मिलाई जाती है। दान पदार्थ :—चांदी, चावल, मिसरी, दूध, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, खुशबूदार तेल या इतर की शीशी या फाया। दही, सफेद घोड़ा या उसका प्रतीक, सफेद चन्दन शुक्रवार के दिन किसी पंडित, ब्राह्मण को दान किया जाता है। इसका रत्न हीरा है जो चांदी या सोने में करीब सवा रत्ती का दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में शुक्रवार के दिन प्रातःकाल से पहनना चाहिये। वीर्यवान बनाता है, पुरुषत्व को बढ़ाता है। सन्तानोत्पत्ति की शक्ति देता है।

रोग औषधि

हमारे शरीर में जब किसी विटामिन की कमी हो जाती है अथवा जीवाणुओं का सन्तुलन बिगड़ जाता है तब रोग होते हैं। सभी ग्रहों की किरणों व रश्मियों का बुरा या अच्छा प्रभाव शरीर पर पड़ता है। जब भी किसी ग्रह की किरणों का बुरा प्रभाव पड़ता है तत्सम्बन्धी पोषक तत्त्व की कमी हो जाती है और शरीर रोगी हो जाता है। ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की दशा अन्तरदशा को देखकर गोचर में ग्रहों की स्थिति देखकर तथा रोग के लक्षण देखकर यह निर्णय किया जाता है कि रोगी का रोग किस ग्रह की कुदृष्टि का फल है? कब से है? लम्बी बीमारियां, चर्म रोग आदि शनि के कुप्रभाव से होते हैं। वात, हड्डी के रोग, पीलिया आदि गुरु के कुप्रभाव से, चोट, दुर्घटनायें, बवासीर आदि मंगल के कारण, दमा, श्वांस रोग, कफ आदि बुध या चन्द्रमा के कारण, नपुंसकता वीर्य की कमी, वीर्य संबंधी गुप्त रोग शुक्र के कारण होते हैं। वैसे ज्योतिष शास्त्र में रोगों के बारे में विस्तृत वर्णन है। शरीर के जिस अंग में हो वह किस ग्रह का किस भाव में है। उस पर किस ग्रह की दृष्टि है इस पर विचार करके यह निदान किया जाता है कि किस ग्रह के कारण यह रोग है। जब से आरम्भ हुआ है तब से ही वह ग्रह भी प्रतिकूल हुआ होगा और जब वह ग्रह अनुकूल होगा रोग भी दूर होगा। उसी ग्रह के अनुसार निम्न औषधियों का प्रयोग रोगी को करने के लिये बताओ।

नीचे जो ग्रहों के अनुसार औषधियां लिखी हैं उनको इकट्ठा करके कूट लेना चाहिये या कुचल लेना चाहिये। फिर उनको करीब दो लीटर पानी में २४ घण्टे तक भिगो कर रख देना चाहिये। जब इन औषधियों का सत पानी में आ जाय तो पानी को निथार कर या छान कर किसी बर्तन या बोतल में रख लेना चाहिये और फोक को बची हुई औषधियों को फेंक देना चाहिये। बोतल में रखे औषधियों के सत में से थोड़ा जल स्नान के पानी में मिला कर रोगी को स्नान कराने से रोग में लाभ होता है। एक बोतल, दो बोतल जितना सत आपने बनाया है वह समाप्त हो जाय तो उसी प्रकार से फिर बना लेना चाहिये। इस प्रयोग को कम से कम ४० दिन तक किया जाता है। यदि रोग बहुत दिन का है और औषधि स्नान से लाभ हो रहा है तो प्रयोग जारी रखना चाहिये। अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि यदि निदान ठीक हुआ तो इस प्रयोग से लाभ अवश्य होता है। डाक्टरी, वैद्यक इलाज जो चल रहा हो उसको बन्द नहीं किया जाता और यदि डाक्टर ने स्नान करने को मना किया है तो सत के जल को शरीर पर लेपन करना या मालिश करना काफी होगा।

सूर्य की औषधि:—मैनसिल इलायची, देवदारु की लकड़ी का बुरादा, खस, केसर, मुलैठी, लाल पुष्प, लाल कनेर के पुष्प। मात्रा एक-एक तोला, देवदारु और लाल कनेर के पुष्प १० तोले।

चन्द्रमा : शंख, सीपी, सफेद चन्दन, संगमरमर का पिसा हुआ चूरा, गजमद, पंचगव्य, एक-एक तोला शंख, संगमरमर का पत्थर, सफेद चन्दन, सीपी को पानी में घिस कर लेप बनाया जाता है। गजमद हाथी के मद को कहते हैं जो मिल जाय तो ठीक है नहीं तो नहीं। पंचगव्य में गाय के घी, दूध, दही, गोबर व मूत्र इन पांच वस्तुओं को मिलाया जाता है।

मंगल : बेलपत्र के वृक्ष की छाल, लाल चन्दन का चूरा, लाल पुष्प, सिंगरफ, मौलसिरी के फूल, मालकंगनी सब १-१ तोला, लाल चन्दन ५ तोला।

बुध : गाय का गोबर, अक्षत चावल, अमरूद, गोरोचन(एक रत्ती), शहद, मोती, सोने का आभूषण। मोती व सोने को बाद में निकाल कर रख लेना फेंकना नहीं। सब चीजें बराबर भाग, अमरूद विशेष।

गुरु : मालती के फूल, सफेद सरसों जिसे पीली सरसों भी कहते हैं। मुलैठी, शहद, मालती पुष्प व मालती लता की डाली पत्ती विशेष।

शुक्र : इलायची, मैनसिल, केसर और किसी भी सुगन्ध देने वाले वृक्ष या लता की जड़।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि : काले तिल, सुरमा, अंजन, लोबान, पिसा हुआ सौंफ, छौंकर की लकड़ी का बुरादा। छौंकर शमी वृक्ष को कहते हैं।

राहु : लोबान तिल के पत्ते, कस्तूरी, हाथी दांत को घिस कर उसका कुछ अंश पिसे हुए लोबान में मिला लिया जाय।

केतु : लोबान, हाथी दांत, तिल के पत्ते, बकरी का मूत्र ३ माशे के लगभग।

उपरोक्त औषधियों में मात्रा की कोई विशेष बंदिश नहीं है। मंहगी वस्तुयें कम मात्रा में ली जा सकती हैं। केसर, कस्तूरी, गोरोचन आदि थोड़ा-थोड़ा ले लें। सब्ज चीजों को घिस ले पीस लें इनमें से कोई चीज न मिले तो कोई बात नहीं है, जितनी मिले उतनी ही ले लें। इनके अतिरिक्त निम्न जड़ी, बूटियां सभी ग्रहों के लिए समान रूप से अलग से मिलाई जाती है—

लाजवन्ती (छुईमुई), कूट खिल्ला, कांगनी जौ, सरसों, हल्दी, पठानी लोध, गिलोय, मुलैठी, हरी दूब, तुलसी दल। यह पदार्थ या इनमें से जितनी हो सके मिला लेना चाहिये।

गायत्री मन्त्र

गायत्री मन्त्र भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, विद्या, बुद्धि, उत्तम विवेक के देने वाला, मोक्ष देने वाला है। इसकी सकाम उपासना में प्रयोग करने के बारे में मेरा मत यह है कि नहीं करना चाहिये। हां विद्या, बुद्धि की उन्नति के लिए, लेखन, वाचन, भक्ति, संगीत, स्वर साधना आदि में प्रयोग किया जा सकता है। इसके जप का पूरा विधान सहज उपलब्ध है। केवल जप से या इस मन्त्र से नित्य ही अग्निहोत्र हवन करने से सब प्रकार का कल्याण होता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

श्रीराम का पंचाक्षरी महामन्त्र:—ॐ रामरामाय नमः।

शिव जी का पंचाक्षरी मन्त्र:—ॐ नमः शिवाय।

श्रीकृष्ण भगवान का मन्त्र:—ॐ ए क्लीं कृष्णाय ही गोविंदाय श्रीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा: ॐ नमः

श्री गणेश जी का मन्त्र:—ॐ वक्रतुण्डैक दंष्ट्राय क्लीं ही रीं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। यह त्रैलोक्य मोहन गणेश मन्त्र चमत्कारी सिद्ध मन्त्र है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय। भगवान् विष्णु का द्वादश अक्षर वाला यह प्रसिद्ध मन्त्र है जिसे ध्रुवजी ने जप कर भगवान् का दर्शन प्राप्त किया था।

महा मृत्युंजय मन्त्र : ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ सुगन्धिं पुष्टवर्धनम् ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि ॐ उर्वारुकमिव बन्धनाद् ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ॥

असाध्य रोग से निवृत्ति पाने के लिए इस मन्त्र का स्वयं या विद्वान् आचार्य से जप कराने से तथा शिवलिंग पर मट्ठे से अभिषेक कराने से शीघ्र आरोग्य लाभ होता है।

कबीर साहब "ॐ नमः" मन्त्र का जाप करते थे। सनक सनंदन सनातन सनत्कुमार जी ॐ नमः हरिश्वरणं मन्त्र का जाप करते हैं।

उपरोक्त सिद्ध मन्त्रों का जाप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है अब तक जितने मन्त्र अनुष्ठान आदि बताये गये हैं उनको स्वयं थोड़ा करके अनुभव करके देखा है। गुरु के बताये हुए हैं। इन मन्त्रों का अनुष्ठान कुछ पढ़ा लिखा व्यक्ति भी कर सकता है।

स्नान करके शुद्ध पवित्र वस्त्र पहनकर शांत एकान्त स्थान में इन शाबर मंत्रों का पर्वकाल में जप करने से बहुत शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। केवल ग्रहण काल में जिस समय में ग्रास लगे तब से मुक्ति तक बराबर जप करते रहने से ही सिद्ध हो जाते हैं। कालरात्रि, मोहरात्रि, महारात्रि, जिन्हें होली, दिवाली, शिवरात्रि कहा जाता है, उन रात्रियों में रात के ११ बजे से दो-ढाई बजे तक के समय में जप करने से सिद्ध हो जाते हैं। वैसे किसी भी अमावस्या की रात्रि को इसी समय पर जाप करने से सिद्ध होते हैं। हाथ में माला, मन्त्र देवता का चित्र, दीपक, अग्निहोत्र और पूजा का सामान धूप, दीप नैवेद्य आदि देवता तथा मन्त्र के अनुसार रख लेने चाहिये। इनमें ऐसे किन्ही-किन्ही मन्त्रों में मद्य, मांस का भी प्रयोग किया जाता है और ऐसे मन्त्रों को श्मशान में जप करने से तत्काल सिद्धि प्राप्त होती है।

शाबर मन्त्र

नेत्र पीड़ा

अक्सर बच्चों की आंख दुखने आ जाती है, लाल हो जाती है, दर्द होता है, रोवे हो जाते हैं। नेत्र पीड़ा को निवारण करने का मन्त्र इस प्रकार है:—

"ओउम् नमो राम का धनुष लक्ष्मण का बाण।
आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन।"

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात को अर्थात् रात में अमावस्या हो तो श्मशान में या श्मशान के निकट के किसी शिव भैरव का मन्दिर में उपरोक्त मन्त्र की १० माला जपने से ही यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। ग्रहण काल, होली, दिवाली के पर्व काल भी उत्तम होते हैं। मन्त्र सिद्ध करने के बाद किसी आंख दर्द के रोगी की दुखती आंख पर नीम के पत्तों के झोरे (डाली) से २१ बार झाड़ने से आंख ठीक हो जाती है। दो या तीन दिन तक झाड़ा कराना चाहिए।

प्रेत बाधा निवारण मंत्र

"ओउम् नमो दीप सोहे दीप जामे पवन चले पानी चले शाकिनी चले डाकिनी चले भूत चले प्रेत चले नौसौ निन्नानबे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।"

इस मन्त्र को हनुमान जी के मन्दिर में तेल का दीपक बालकर सवालाख जप करने से ऊपर बताये पर्वकालों में जप करने से सिद्ध होता है। फिर किसी भी भूत प्रेत बाधा ग्रस्त व्यक्ति पर मोर के पंख से १०८ बार झाड़ा देने से प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

दूसरा मन्त्र :—ओउम् काला भैरव कपाली जटा रात दिन खेले चौपटा काला भस्म मुखाण जेहि मांगू तेहि पकड़ा आन डंकिनी शंखिनी पट्ट सिहारी जरख चढ़ती गोरख मारी। छोड़ि-छोड़ि रे पापिन बालक पराया गोरखनाथ का परवाना आया।"

इस मन्त्र को ग्रहण के समय में जप करके सिद्ध किया जाता है। ग्रहणकाल में जितनी संख्या जप हो जाए उससे सिद्ध हो जाता है। २१ बार बोलकर तीर से या सूजे से झाड़ा देने से तथा २१ बार मन्त्र से अभिषिक्त करके पानी पिलाने से बालक पर आई हुई भूत प्रेत बाधा शान्त हो जाती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिद्धि अनुभूत वशीकरण मन्त्र

[लेखक :—लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी०ए०, प्रभाकर, साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति]

वशीकरण एक मन्त्र है तज दे वचन कठोर। सबसे अच्छा वशीकरण मन्त्र तो यही है कि सबसे मीठा बोलो। संसार में रहते हुये अक्सर दूसरों को अपने अनुकूल बना कर अपना कार्य साधन करने की जरूरत पड़ती है ऐसे अवसरों पर आत्मिक शक्ति से बहुत काम निकाला जा सकता है। मन बहुत चंचल है। इसमें हजार हाथियों का बल है। जितने भी साधन अभ्यास हैं वे इसी को वश में करने के लिए हैं। जैसे आतशी शीशे द्वारा सूर्य की बिखरी हुई किरणों को एक जगह केन्द्रित करने से कपड़े में आग लग जाती है उसी प्रकार मन की बिखरी हुई वृत्तियों को एकत्रित करने से बहुत बड़ी आत्मिकशक्ति अर्जित की जा सकती है। मन्त्रशास्त्र में कुछ शक्तिशाली बीजाक्षरों का चुनाव किया गया है। आपने बरगद का पेड़ देखा होगा कितना विशाल होता है। परन्तु उसका बीज कितना छोटा होता है। इसी प्रकार छोटे से बीजाक्षरों में तत्सम्बन्धी देवी देवताओं की अपार शक्ति का भंडार निहित होता है। मन्त्रों में यही बीजाक्षर होते हैं और इनका बार-बार उच्चारण करने से जो ध्वनि अन्दर और बाहर पैदा होती है उससे अपार आत्मिकशक्ति पैदा होती है। लाख सवा लाख जप के बाद मन्त्र में शक्ति पैदा हो जाती है और तब समझा जाता है कि मन्त्र सिद्ध हो गया। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब उसका प्रयोग किया जा सकता है।

मन्त्र सिद्ध करने के लिए स्थान एकान्त हो और वातावरण शान्त हो। रात का समय इसके लिए सबसे अच्छा होता है। जब सब सो जायें तब घर में भी कर सकते हो। सूर्य या चन्द्र ग्रहण के समय, होली, दिवाली, शिवरात्रि की रात्रि में और कुछ विशेष योगों में जप करने से जल्दी सिद्धि प्राप्त होती है। अशोक, पीपल, बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर, देवी या भैरव के मन्दिर में और डर न लगे तो श्मशान में (दिन में या रात में) बैठकर जप करने से भी जल्दी लाभ होता है। जप पहले जिह्वा से, फिर कण्ठ से उसके बाद प्राणों से, फिर सुरति से करने से शीघ्र सिद्धि मिलती है। नैनन की करि कोठरी पलकनि की चिक डारि। पुतली पलंग बिछाय के पीतम लेउ निहार॥ यह राजयोग का बहुत सरल प्राणायाम व सुरति का अभ्यास है। तन्त्र में श्रीकृष्ण व महाकाली को एक ही माना गया है और उनका एक ही बीजाक्षर है। भगवान श्रीकृष्ण जिस महामन्त्र को मुरली में बजाकर सारे चराचर विश्व को मोहित कर देते थे वह महामन्त्र इस प्रकार है :—

ॐ क्लीं क्लीं नमः

इसमें कृ, लृ, ङ, मृ तथा अनुस्वार की मिली हुई ध्वनि है। इसका पुरश्चरण सवा-लाख जप का है जिसे ज्यादा से ज्यादा ४०-४१ दिन में पूरा कर लेना चाहिए। देवी देवता का ध्यान अंगन्यास करन्यास षोडशोपचार पूजन हवन तर्पण सहित पूरी पुरश्चरण विधि हमारी मन्त्र तन्त्र साधना पुस्तक में दी हुई है। यहां स्थानाभाव से पूरी विधि नहीं दी जा सकी है। इस मन्त्र का केवल जाप करने से ही दूसरों पर प्रभाव डालने वाली आकर्षण शक्ति प्राप्त होती है। बुद्धि निर्मल होती है, इन्टरव्यू साक्षात्कार में सफलता मिलती है, मुकद्दमे, वाद-विवाद में, प्रतिस्पर्धा कम्पटीशन में विजय प्राप्त होती है। पति-पत्नी में, शत्रुओं में, दो व्यक्तियों में मेल कराया जा सकता है, हाकिम अफसर को अपने ऊपर कृपालु किया जा सकता है तथा अपना कार्य सिद्ध किया जा सकता है। मन्त्र सिद्ध करने के बाद जब इसका प्रयोग करो तो इसका स्वरूप इस प्रकार होगा। मान लो रूपकिशोर नाम के किसी व्यक्ति को आप अपने अनुकूल करना चाहते हैं तो इसका जप इस प्रकार किया जायेगा। ॐ क्लीं क्लीं रूपकिशोर मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा। यदि किसी दूसरे के लिए करो तो भिन्न प्रकार से होगा। मान लो रूपकिशोर को शान्तिबाई के प्रति अनुरक्त करना है तो मन्त्र जप इस प्रकार से होगा।...ॐ क्लीं क्लीं रूपकिशोर शान्तिबाई वश्यं कुरु कुरु स्वाहा; यदि शान्तिबाई को रूपकिशोर के प्रति अनुरक्त करना है तो "ॐ क्लीं क्लीं शान्तिबाई रूपकिशोर वश्यं कुरु कुरु स्वाहा" मन्त्र जपते समय आप शान्तिबाई तथा रूपकिशोर के चित्र सामने रखकर त्राटक कर सकते हैं, ध्यान कर सकते हैं। यदि आपने दोनों को देखा है तो चित्र की जरूरत नहीं है वैसे ही ध्यान त्राटक किया जा सकता है। कोई बालक, युवा, स्त्री, पुरुष घर से भाग गया है तो उसके पहले हुए वस्त्र में इस मन्त्र को भोजपत्र या सफेद कागज पर लिखकर किसी भारी पदार्थ के नीचे दबा कर रख देने से वह व्यक्ति यदि स्वस्थ्य है, बंधन में नहीं है, मुक्त आजाद है तो तुरन्त वापिस आ जाता है। और भी अनेक अनुभूत प्रयोग इस महामन्त्र के द्वारा किए जा सकते हैं।

गोचर फल में ग्रहों का वेध

ग्रहों का गोचर (दैनिक गति का प्रभाव) फल देखने के लिए जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की राशि को लग्न मानकर जिस दिन का भविष्य देखना हो उस दिन के ग्रह स्पष्ट से कुण्डली में ग्रहों को स्थित करने पर उस दिन की गोचर कुण्डली बन जाती है।

गोचर कुण्डली में कभी-कभी एक ग्रह अपनी विशिष्ट स्थिति से दूसरे ग्रह का वेध कर देता है। वेध होने पर ग्रह के शुभ या अशुभ फल का प्रभाव नहीं रहता।

ग्रहों के वेध स्थान इस प्रकार हैं—

सूर्य :	3	6	10	11							
	9	12	4	5							
चन्द्र :	1	3	6	7	10	11					
	5	9	12	2	4	8					
मंगल :	3	6	11								
	12	9	5								
बृहस्पति :	2	5	7	9	11						
	12	4	3	10	8						
शनि :	3	6	11								
	12	9	5								
बुध :	2	4	6	8	10	11					
	5	3	9	1	7	12					
शुक्र :	1	2	3	4	5	8	9	11	12		
	8	7	1	10	9	5	11	6	3		

उपरोक्त पंक्तियों में प्रत्येक ग्रह के सामने दो पंक्तियां अंकों की हैं जो एक दूसरे के ऊपर नीचे दी गई हैं। इनमें प्रत्येक ऊपर के अंक के नीचे एक अंक है। इस प्रकार सभी ग्रहों के सामने कुछ अंकों के जोड़े लिखे हैं। प्रत्येक जोड़ा एक वेध दर्शाता है। उदाहरण के लिए सूर्य के तीसरे भाव में होने पर नवें भाव में स्थित ग्रह तथा सूर्य के नवें भाव में होने पर तीसरे भाव में स्थित ग्रह सूर्य का वेध कर देता है। सभी ग्रहों के विषय में इसी प्रकार देखा जाएगा।

नोट—इस विषय में ध्यान रहे कि सूर्य व शनि तथा बुध और चन्द्र आपस में एक दूसरे का वेध नहीं करते।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चमत्कारिक सिद्धि यन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

तीर्थ-यात्रा

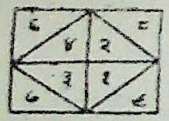

इस यन्त्र को भोज-पत्र के ऊपर अष्ट गंध द्वारा ५००० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देने तथा बाद में उन यन्त्रों को किसी नदी अथवा समुद्र के जल में विसर्जित कर देने से तीर्थ यात्रा का सुयोग बनता है तथा यश की प्राप्ति होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

मंदिर-निर्माण

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन १००० की संख्या में लिखकर उनका धूप-दीप आदि से पूजन करें, फिर उन यन्त्रों को किसी बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दें, तो मन्दिर-निर्माण की अभिलाषा पूरी होती है।

जलाशय-निर्माण

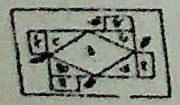

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन भोजपत्र या सफेद कागज के ऊपर केशर द्वारा ३१०० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देकर नदी के बहते हुए जल में प्रवाहित कर देने से जलाशय, कुआँ, बावड़ी, तालाब आदि बनवाने का मनोरथ पूरा होता है।

गृह-निर्माण

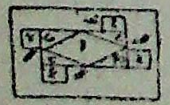

इस यन्त्र को किसी शुभ तिथि तथा शुभ दिन में प्रातः ५ बजे से लिखना प्रारम्भ करें। केशर द्वारा बमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर ११००० की संख्या में यन्त्र लिखने चाहिए, फिर उन्हें नदी में पानी में प्रवाहित कर देना चाहिए। इससे प्रभाव से गृह-निर्माण की इच्छा पूर्ण होती है।

सन्तान-प्राप्ति

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन प्रातः ४ बजे से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करें। लिखने की कलम चांदी की होनी चाहिए। यन्त्र ५००१ की संख्या में लिखने और बाद में नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिये। इस यन्त्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

वाहन-प्राप्ति

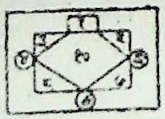

इस यन्त्र को मंगलवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर ५००१ की संख्या में लिखकर पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इसके प्रभाव से इच्छित वाहन (मोटर, गाड़ी आदि) की प्राप्ति होती है। यह प्रयोग ३१ दिन तक निरंतर करना चाहिए।

ऋण-मुक्ति

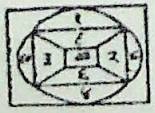

इस यन्त्र को मंगलवार के दिन प्रातः ६ बजे से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना प्रारम्भ करें। कुल ५००० यंत्र लिखकर, पूजनोपरान्त उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दें। ४० दिन तक प्रतिदिन यही क्रिया करने से मनुष्य ऋण मुक्त हो जाता है।

रोग-मुक्ति

इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोज पत्र या कागज के ऊपर २५०० की संख्या में लिखकर, यथाविधि पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस क्रिया को एक सप्ताह तक निरन्तर करता रहे तो रोग से छुटकारा मिल जाता है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

ईश्वर-भक्ति

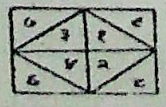

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन लिखना प्रारम्भ करें तथा आठ दिन में ५००० की संख्या में यन्त्र लिखकर अन्त में उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो ईश्वर की कृपा तथा भगवद्भक्ति की प्राप्ति होती है। यन्त्र लेखक को आध्यात्मिक ज्ञान मिलता है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः

पदोन्नति

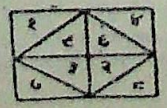

इस यन्त्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन लिखना आरम्भ करें। यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। प्रतिदिन १०० यन्त्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस प्रकार कुल ५००० यंत्र लिखकर जल में प्रवाहित कर देने पर पदोन्नति होती है।

मनोकामना सिद्धि प्रश्नावली

अ	च	इ
क	प	ट
उ	त	रा

प्रश्न करने वाला अपने इष्ट देव का ध्यान धर कर प्रश्नावली में अंगुली रखें। फल अ—उत्तम है। धन-प्राप्ति कार्य सिद्ध हो। च—कार्य पूरा होने में सन्देह है। इ—कार्य सिद्ध नहीं होगा। क—धन लाभ, कार्य सिद्ध हो। प—श्रेष्ठ फल है। धन लाभ, कार्य सिद्ध। ट—कार्य पूरा नहीं होगा। उ—सफलता प्राप्त होगी। त—अभी कार्य-सिद्ध में देरी है। रा—कार्य सिद्ध होगा। प्रश्न उत्तम है।

ग्रहपीड़ा (भूतप्रेतादि बाधा)-निवारण हेतु

नृसिंह मंत्र जीजन्तु सकृदुच्चरितं हरेत्। डाकिनी प्रेतं भूतानि तमः सूर्योदयो यथाः। नृसिंह मंत्र—

मन्त्र—ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्यकश्यपु वक्षस्थल विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवाय समस्त दोषान् हर-हर विसर-विसर पच पच हन हन कम्पय कम्पये मथ मथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट्-फट् ठः ठः एह्यहि रुद्र आज्ञा पयति स्वाहा॥

उक्त मंत्र का जप अनुष्ठान तथा हवनादि करने से भूत-प्रेत-पिशाच, डाकिनी आदि बाहरी बाधा-दोष समाप्त होकर ग्रह जनित अशुभ फलों का शमन हो जाता है।

दाडिमस्य च वन्दाकं ज्येष्ठर्क्षेतु समुद्धरेत्।
द्वार बन्धे च बालानां सर्व ग्रह निवारणम्॥

आर्द्रा या ज्येष्ठा नक्षत्र में दाडिमी वृक्ष का बन्दा (बांदा) लाकर घर के मुख्य द्वार (दरवाजे) पर बांध दें तो सभी प्रकार की ग्रह जनित बाधाएं पीड़ा आदि नष्ट होती हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बवासीर दूर करने का मन्त्र

ओउम् काका कर्ता किरोरी करता ओउम् करता से हो यगरसना दश हंस प्रगटे खूनी बादी बवासीर न होय मंत्र जान के न बताबे द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय लाख जप करे तो उसके वस में न होय शबद सांचा पिण्ड काचा हनुमान का मन्त्र सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यह मन्त्र ग्रहण काल में जितना जप हो जाय उतना ही जप करने से सिद्ध हो जाता है। २१ बार पढ़कर पानी को मन्त्र से अभिमन्त्रित करके प्रातःदस्त लेने से बवासीर दूर होती है।

दाढ़ में दर्द हो या कीड़ा पड़ गया हो तो निम्न मंत्र से झाड़ने से दर्द कष्ट, पीड़ा दूर हो जाती है।

ओउम् नमो आदेश गुरु को--वन में जाई अंजनी जिन जाया हनुमन्त। कीड़ा मकड़ा मसकड़ा यह तीनों भस्मन्त। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यह मन्त्र भी ग्रहण के समय जितना जपा जा सके उतना ही जप करने से सिद्ध होता है। इसको २१ बार पढ़कर नीम की डाली से झाड़ने से दाढ़ का दर्द, पीड़ा आदि दूर होती है।

कखवाई : - कांख (बगल) में होने वाले फोड़े को कखवाई कहते है। इसको दूर करने का मन्त्र निम्न प्रकार से है :--

ओउम् नमो कखवाई भरी तलाई जहाँ बैठा हनुमन्ता आई पके न फूटे चले न पीड़ा रक्षा करे हनुमन्त वीर दुहाई गोरखनाथ की शब्द सांचा पिण्ड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा सत्यनाम आदेश गुरु को।"

मन्त्र को ग्रहण समय में पर्वकालों में १०० माला जपकर सिद्ध करने के बाद २१ बार झाड़ने से और मोर पंख या नीम की डाली से जिस स्थान पर झाड़ा दे उस स्थान की मिट्टी बाँधने से तीन दिन में कखवाई की गाँठ बैठ जाती है।

कण्ठबेल दूर करने का मन्त्र:—ओउम् नमो कण्ठबेल तू द्रमदु माली सिर पर जकड़ी बज्र की नाली गोरखनाथ आगया आया बढ़ती बेल को तुरन्त घटाया। जो कुछ बची ताहि मुरझाया। घट गई बेल बढ़त नहिं बैठी लहाँ उठत नहिं। पके फूटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई। ओउम् नमो आदेश गुरु को मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

ग्रहण काल में अथवा पूर्वकाल में १०० माला जपकर इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद कण्ठबेल के रोगी को सात दिन तक चाकू की नोक से झाड़कर जमीन पर २१ बार लकीरें खींचें तो रोग दूर हो। कण्ठबेल गले पर गरदन का एक दुसाध्य चर्मरोग होता है। झाड़ने से दूर हो जाता है।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

बिच्छू काटने के बाद उसका जहर जहाँ तक चढ़ा हो वहाँ से पकड़कर झाड़ू से झाड़ें। जैसे-जैसे जहर उतरता जाए वहीं पर पकड़ता रहे और झाड़ते हुए उतारता जाए। डंक की जगह तक आने पर झाड़ना बंद कर दें और डंक से ऊपर तेनिया मोहरा जहर मोहरा पानी में घिसकर लगाएं। जहर मोहरा बाजार में मिल जाता है। शिलाजीत बेचने वालों के पास भी मिल जाता है। मन्त्र को पहले जताए तरीके से सिद्ध किया जाता है। ग्रहण के समय या पर्वकाल में १०० माला जप करके प्रयोग करने से पहले सिद्ध कर लेना चाहिए।

पहला मन्त्र :—ओउम् नमो आदेश गुरु को। लो बिच्छू कांकर वालो उतर बिच्छू न कर टालो उतरे तो उतारूं चढ़े तो मारूं गरुड़ मोर पंख हकालूं। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

दूसरा मन्त्र : (काला बिच्छू उतारने का)

ओउम् काला बिच्छू कांकरवालो हरी पूंछ मैंराला। सोना का नाढ़ू रूपे का पतनाला। आठ गाँठ नौ कोर नीचे बिच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकाकर बिच्छू रहे तो बावन वीर सीध निकोर के कौन वैद मानुष पर गया खाते जाते लागी वार। उतर रे बिच्छू तोहे मैरो बाबा की आन।

पागल कुत्ते का विष झाड़ने का मंत्र

ओउम् कामरूप देश कामाक्षी देवी जहां बसे मछन्दर जोगी। मछन्दर जोगी का झामरा कुत्ता सोने की डाढ़ रुपे का कुंडा। बन्दर नाचे रीछ बजाये चीता बैठा औषध बांटे कूकर का विष भागे। शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

१०० माला जपकर मन्त्र को सिद्ध कर ले। फिर समय पड़ने पर काटे हुए स्थान को चाकू की नोक से झाड़े। जमीन पर २१ लकीरें खींचे। इस प्रकार सात दिन तक झाड़ने से पागल कुत्ते का विष दूर हो जाता है। आजकल पागल कुत्ते के काटे के लिये शतिया इलाज इंजेक्शन हैं और उनको जरूर लगवाना चाहिए। अगर कुत्ता पागल होगा तो काटने के बाद २-३ दिन में मर जायेगा और ठीक इलाज न हो तो काटा हुआ व्यक्ति भी ४० दिन बाद कुत्ते की तरह भौंकता हुआ मर जाता है। इसलिये रिस्क नहीं लेना चाहिये इलाज पूरा कराना चाहिये। मन्त्र में शक्ति जरूर होती है यदि ऐसा कोई मन्त्रवेत्ता हो जिसे मन्त्र सिद्ध हो और इस प्रकार के प्रयोग सफलतापूर्वक कर चुका हो तभी उस पर निर्भर करे नहीं तो इलाज इंजेक्शन जरूर करावें साथ में झाड़-फूंक भी कराने से कोई हानि नहीं होती।

पीलिया रोग में शरीर पीला पड़ जाता है, आंखें पीली हो जाती हैं, सारा कुछ पीला ही दिखाई देता है। यह पित्ताशय में पित्त की अधिकता हो जाने पर होता है। आजकल तो चिकित्सा विज्ञान में इस रोग के लिए बहुत औषधियां उपलब्ध हैं। परन्तु पहले जमाने में गांवों में इन बीमारियों का इलाज मन्त्रों के ही द्वारा होता था। १०० माला जप कर मन्त्र को सिद्ध करके रोगी के सिर पर कांसे की कटोरी में तिल का तेल भर कर रखे और डाभ यानी कुशा से उस तेल को चलाते हुए निम्न मन्त्र को सात बार पढ़े। तीन दिन तक ऐसा करते रहने पर तेल पीला पड़ जायेगा और पीलिया रोग दूर हो जायेगा।

ओउम् नमो वीर बैताल असराल नार कहे तू देव खाली तू बादी पीलिया कूं भिदाती कारैं झारैं पीलिया रहे न एक निशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंत वीर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

यात्रा

यात्रा पर प्रस्थान करने से पहले चीनी मिला हुआ मीठा दही खाकर चलना चाहिये और निम्न मन्त्र का सात बार जप करके चले तो यात्रा निर्विघ्न समाप्त होगी तथा कार्य सिद्ध होगा।

पंचानं सुपथा रक्षे मानं क्षेमकारी तथा। राजद्वारे महाचण्डीविजया सर्वतः स्थिताः।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दरिद्रता नाशक अंगूठी

शुक्ल पक्ष में रविवार को या शुक्रवार को जब पुष्य नक्षत्र आवे तो उस समय इस अंगूठी को बनवावे। तांबा तीन माशे, चांदी ४ माशे, सोना ढाई माशे लेकर इन तीनों के अलग-अलग तार बनवावे और तीनों तारों को बट कर अंगूठी अपने नाप की उसी दिन पुष्य नक्षत्र में बनवा लें तथा उसी दिन पूजन करके दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में धारण कर ले तो रोजगार धन्धे में लाभ उन्नति होगी, दरिद्रता का नाश होगा। शरीर भी आरोग्य रहेगा। निश्चित है। भगवती, लक्ष्मी देवी की आराधना प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए। धर्मार्थ दान भी करना चाहिए।

खोये हुए व्यक्ति की वापसी के लिए तन्त्र

जब किसी का कोई प्रियजन कहीं चला जाए और पता न लगे तो उसकी वापसी के लिए यह तन्त्र करें। उसके पहने हुए वस्त्र पर निम्न मंत्र को लिख कर उस वस्त्र को चरखे की माला के साथ लपेट दो और चरखे को उल्टा घुमाओ, उस व्यक्ति का ही कोई प्रियजन सम्बन्धी उस चरखे को प्रतिदिन एक-आध घण्टा उल्टा घुमावे और यह मन्त्र पढ़ता जावे। तीन दिन के अन्दर वह व्यक्ति लौट आता है। या उसका कोई समाचार आ जाता है। मन्त्र यह है और इसको ग्रहण करने में १०० माला जप कर सिद्ध करके ही कपड़े पर लिखना चाहिए।

ओउम् कृतवीर्यार्जुनो नाम राजाबाहु सहस्रवान। यस्य स्मरण मात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते। व्यक्ति के स्थान पर उसका नाम लिख देना चाहिए।

संतान तन्त्र

रविवार के दिन या शुक्रवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सफेद फूल वाली कटेरी की जड़ उखाड़ कर लावे। इस प्रकार की कटेरी कहां लगी है यह पहले से देख ले। जब स्त्री मासिक धर्म से हो और ऋतु स्नान कर ले तो चौथे-पांचवे दिन इस जड़ को बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर पिलावे। छठे दिन पति के पास जाय तो पुत्र सन्तान होगी। कटेरी एक जड़ी-बूटी होती है और इसमें कांटे होते हैं। पीले फूल वाली भी होती है।

वशीकरण साबरी मंत्र

ओउम् मोहिनी माता भूत पिता भूम सिर बेताल उड़ ऐ काली नागिन (यहां प्रेमिका या कोई रूठी स्त्री का नाम लें) को लग जावे। ऐसी जा के लगे कि (यहां उसका नाम लो) को लग जावे हमारी मुहब्बत की आग। न खड़े सुख न लेटे सुख न सोते सुख, सिंदूर चढ़ाऊं मंगलवार कभी न छोड़े हमारा ख्याल। जब तक न देखे हमारा मुख काया तड़प-तड़प मर जाय चली मन्त्र फुरो वाचा। दिखाओ रे शब्द अपने गुरु के हुक्म का तमाशा। यह वशीकरण साबरी मन्त्र है।

शुक्ल पक्ष में अष्टमी से पूर्णमासी तक एकांत शांत कमरे में रात को दस-ग्यारह बजे के बाद बैठकर शुद्ध वस्त्रों में ऊन के आसन पर बैठकर जल का पात्र अपने पास रख ले, धूपबत्ती जला ले और उपरोक्त मन्त्र का जाप करे। रूठी स्त्री या विमुख प्रेमिका का ध्यान करता रहे, उसका फोटो हो तो पास सामने रख ले। इस प्रकार दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ दो घण्टे रोज जप करने से तो दिन में या ११ दिन में अभीष्ट सिद्धि होती है। ११ हजार जप कर मंत्र सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन कर सको तो कर दो नहीं तो इन साबरी मन्त्रों में जरूरी नहीं होता।

जमीन में गड़ी सम्पत्ति का ज्ञान करना

जमीन में जहां धन होता है वहां सर्प, भूत आदि भी होते हैं। बरसात में पानी भर जाता है। उस समय अन्य स्थानों का पानी तो मटमैला होगा परन्तु जहां धन गड़ा होगा उस स्थान पर पानी साफ होगा। जाड़ों में जहां का पानी गर्म और गर्मियों में ठण्डा रहता हो वहां भी धन होता है। अगर किसी तलाब में कमल या कमलिनी लगी हो तो वहां पर धन वाले स्थान के फूल धुवें के रंग के समान होंगे। पृथ्वी पर जहां धुन्ध सी दिखाई दे, सब जगह पौधे वनस्पति हों पर कुछ स्थान पर न हों तो उस स्थान पर धन हो सकता है। आस-पास की जमीन की वनस्पति किसी स्थान पर प्रकाश विशेष हो, रात में भी जगह चमकती हो, जहां घी के धुवें जैसी गंध आती हो, जहां बिना ऋतु के भी वृक्षों में पुष्प आते हों, कांटेदार पौधों में कांटे न हों, प्रकृति के विपरीत कोई चमत्कारिक बात दिखाई देती हो तो समझ लो कि वहां पर धन है। पत्थर पर कहीं विरोधी जाति के प्राणियों के चित्र अंकित हों जैसे शेर, बकरी, चूहा, बिल्ली, सांप, नेवला आदि तो वहां धन होने की सम्भावना होती है।

किसी पर्वत के शिखर पर किसी देवता की मूर्ति हो और उस मूर्ति पर कोई चिह्न हो तो उसके नीचे उस चिह्न के प्रमाण में गहराई पर धन होगा। यदि दो मूर्तियां आमने-सामने हों, गणेश जी की मूर्ति उत्तर की ओर मुख करके रखी हो, पेट बड़ा हो, दृष्टि नीचे की ओर हो, मुख का भाव शोकाकुल सा हो, मिट्टी की मूर्ति हो, हाथ में सात दल का कमल हो, मस्तक में कील लगी हुई हो या कोई विचित्र आकार बना हुआ हो तो वहां पर धन गड़ा होना चाहिये।

ऐसे स्थानों में जहां इस प्रकार के संकेत हों या जहां धन होने का शक हो चमेली के फूलों को दही में भिगो कर ५-६ जगह रख देना चाहिए अथवा हल्दी और दूध मिला कर छिड़क देना चाहिए। दूसरे दिन प्रातः काल यदि दही या दूध का रंग पीला, काला या लाल हो जाय तो समझना चाहिए कि वहां धन है।

पारा, बहेड़, कपूर, गेरू के पुष्प और सूरजमुखी के बीजों को बराबर भाग ले उन्हें मिला ले पीस ले, तेल में रुई की बत्ती में इन चीजों को लपेट कर अंजन बनावे। उसको लगा कर निम्न मंत्र पढ़ा "सत्यं दर्शयं भौमेय दिव्यं सत्यम दर्शय।" यदि भूमिगतं द्रव्य-मात्मानं दर्शय स्वयम्। ऊं ऊं यं यं अं अं लोकिनि निधिनि लेकिनि स्वाहा। अमावस्या की रात्रि को उस स्थान पर दीपक जलाकर बैठे और उपरोक्त मंत्र का जाप करे वहां पर कोई छाया, पुरुष या पक्षी रूप में या चूहा, बिल्ली आदि के जन्तु रूप में किसी स्थान में जाकर निकल कर संकेत देगा कि धन यहां पर है। उस स्थान को शुभ मुहूर्त में विश्वासी जनों के साथ खोदें। आक की जड़ व कनेर की जड़ और पलाश की जड़ का लेप पैरों में लगा कर नीचे उतरें। खैर की लकड़ी के सात अंगुल के कीले बनाकर उनकी धूप, दीप, अक्षत पुष्प से पूजा करके आठों दिशाओं में उस खोदे हुए स्थान पर धन निकालने से पहले गाड़ दें। दही चावल सरसों की बलि दें तब धन को हाथ लगायें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वप्न देखने का शुभ-अशुभ फल, दैनिक उपयोग की विविध ज्ञातव्य बातें

स्वप्न समय फल:—रात्रि के चार पहर होते हैं, जिनमें प्रायः प्रथम पहर में स्वप्न कम दीखते हैं, फिर भी रात्रि के प्रत्येक पहर का देखा हुआ स्वप्न इस प्रकार है—यदि रात्रि के पहले पहर में स्वप्न दीखे तो उसका फल एक साल के अन्दर मिलेगा। यदि दूसरे पहर में दीखे तो ६ मास में फल प्राप्त हो; इसी प्रकार तीसरे पहर का फल है। चौथे पहर में दीखे हुए स्वप्न का फल एक माह में मिलेगा। अरुणोदय के काल में देखे हुए स्वप्न का फल १० दिन में और सूर्योदय के समय में देखे हुए स्वप्न का फल शीघ्र ही मिलेगा—ऐसा जानना चाहिए। खोटा स्वप्न देखने पर उसकी शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय जाप, हवन, सोना तथा जौ का दान और विष्णु सहस्रनाम, गोपाल सहस्रनाम आदि शुभ कार्य कराने चाहिए।

★ यदि स्वप्न में कोई कुमारी स्त्री स्वयं को ढोलक बजाती हुई देखे तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

★ स्वप्न में देवी का दिखाई देना प्रयोग में सफलता का सूचक होता है।

★ यदि स्वप्न में पंचिंग मशीन दिखाई दे तो दृष्टा को कोई उच्चपद प्राप्त होता है।

★ विद्यालय में भाग आने का दिखाई देना अच्छा तथा दृष्टा की सर्वतोमुखी सफलता का सूचक होता है।

स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल	स्वप्न	स्वप्न का फल
कुएँ का पानी देखना	विविध लाभ, विजय	जानवर पकड़ना	नया काम करना	पानी में डूबना	शुभ कार्य; लाभ हो	मुर्गी के बच्चे खाना	लड़का हो
रत्न या नगीना देखना	दुःख-भय, व्यय हो	चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा प्राप्त हो	तैरना	धन मिले	सफेद बाल देखना	आयु बढ़े
धूप देखना	पदोन्नति एवं लाभ हो	चांद टूटा देखना	तकलीफ हो	अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले	बिच्छू देखना	इज्जत प्राप्त हो
अग्नि उठाना	अवैध धन-प्राप्ति, अवैध व्यय	चन्द्र-ग्रहण देखना	हाकिम पर आफत	आकाश की ओर उड़ान	यात्रा करनी पड़े	पहाड़ पर चढ़ना	तरक्की मिले
आग जलाकर पकड़ना	कष्ट का सामना हो व्यर्थ व्यय	नीच देखना	रंज पैदा हो	आकाश से गिरना	खराबी व कष्ट	पहाड़ हिलते देखना	बीमारी फैलना
बादल आकाश में देखना	राज्य से लाभ हो	कसीदा काढ़ना	पति से झगड़ा	आम खाना	धन मिले	शरीर में पाखाना	दौलत प्राप्त हो
बादल पूर्ण आकाश में देखना	विपत्ति, दुःख व परेशानी	चोटी देखना	मुसीबत पेश हो	अनार खाना	धन आनी मिले	तख्त पर चढ़ना	इज्जत मिले
आंधी और बिजली गिरना	मुसीबत में फंसे	चक्की देखना	मुसीबत में फंसे	ऊंट का देखना	धन लाभ	थूक देखना	परेशानी हो
सूखा अन्न खाना	विविध कष्ट, व्यर्थ परेशानी हो	चांद देखना	माल मिले	ऊंट पर चढ़ना	रोगी होवे	थूकना	व्यय बढ़ेगा
अंगूठी पहनना	धन-लाभ तथा प्रसन्नता बढ़े	चावल देखना	रंज दूर हो	सूर्य को देखना	बड़े आदमी के दर्शन	तीतर देखना	खुशी मिले
ऊंट देखना	अपार धन प्राप्त हो	तालाब में नहाना	धन प्राप्त हो	मुरमा लगाना	बीमारी से कष्ट	हंसता देखे	रंज प्राप्त हो
वर्षा अपने घर पर देखना	घर में कलह एवं रोग बढ़े	पानी स्पर्श	साधारण लाभ	बादल देखना	तरक्की होवे	रोते देखना	खुशी मिले
वर्षा पूरे नगर में देखना	सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त हो	जहाज देखना	दूर का सफर हो	धनघोर घटा	राजा के दर्शन से लाभ	तार खींचना	परेशानी मिले
हरी फुलवारी देखना	धन-जन की वृद्धि हो	झण्डा देखना	धर्म की वृद्धि हो	आग उठा लेना	हराम का माल मिले	तावीज देखना	आपत्ति में फंसे
सूखा बाग देखना	विपत्ति में फंसे	हरा जंगल देखना	खुशी मिले	घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में उन्नति	तरबूज खाना	रंज प्राप्त होवे
सर के बाल कटे देखना	ऋण-मुक्त हो, स्त्री को पुत्र हो	सूना जंगल देखना	परेशानी हो	घोड़े से गिरना	हानि होवे	पानी देखना	दूसरे की धरोहर मिले
बाल देखना	धन-लाभ हो	जंगल में उड़ना	मुसीबत दूर हो	आंधी देखना	सफर में कष्ट हो	मोटा बैल देखना	अनाज सस्ता हो
गोता देखना	संकट दूर हो	मुरदा देखना	बीमारी से आराम	शीशे में मुंह देखना	स्त्री से प्रेम	पतला बैल देखना	अनाज महंगा हो
घोड़े पर सवार होना	सरदारों या ओहदा मिले	जोड़ा तंग पहनना	स्त्री से झगड़ा हो	जलती आग देखना	स्त्री से प्रेम	बाल बिखरे देखना	धन की हानि हो
लोहा देखना	किसी धनवान् से लाभ हो	जवाहरात देखना	आशाएं पूर्ण हों	ऊंचे से गिरना	परेशानी व हानि हो	सुअर देखना	उम्र कम हो
लोमड़ी देखना	किसी सम्बन्धी से धोखा मिले	स्त्री-प्रसंग करना	धन प्राप्त हो	बाजू कटा देखना	भाई की मृत्यु हो	बिस्तर बिछाना	दीर्घायु हो
मोती देखना	लड़की पैदा हो	लड़ाई करना	खुशी हो	बाग फुलवारी देखना	खुशी प्राप्त हो	पाखाना खाना	मालामाल हो
मुर्दे का पुकारना	विपत्ति एवं दुःख प्राप्त हो	लड़ाई में मारे जाना	हुकूमत मिले	सूखा बाग देखना	रंज-दुःख मिले	पंजा कटा देखना	परेशानी हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पूरी हो	फल पाना	पुत्र हो	बारात देखना	रंज हो, स्त्री देखें तो उसको खुशी हो	पाखाना फिरना	धन व्यय हो
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो	फूल देखना	प्रेमी मिले	पानी बरसता देखना	अनाज महंगा हो	खून का पेशाब	स्त्री देखे तो सुख पुरुष देखे तो दुःख
बड़ी दीवार देखना	सम्मान मिले	पिंजड़ा देखना	कैद में कष्ट हो	हंस देखना	प्रतिष्ठा होगी	सिर के कटे बाल	कर्ज से छुट्टी मिले
दीवाल में कील ठोकना	वृद्ध से लाभ हो	छाती देखना	स्त्री मिले, खुशी हो	भैंस देखना	मुसीबत पेश हो	बर्फ देखना	मौसम खराब हो
दंतुवन करना	पाप का प्रायश्चित हो, सुख हो	प्यास लगना	लोभ अधिक हो	फेंड़िया देखना	हाकिम से भय हो	बांसुरी बजाना	परेशानी होना
खूंटा देखना	धर्म की ओर अभिरुचि बढ़े	पूड़ी खाना	प्रसन्नता प्राप्त हो	बादाम खाना	धन प्राप्त हो	अपने को बीमार	कष्ट मिले
जामुन खाना	तकलीफ दूर हो	पुल पर चढ़ना	नेक काम करे	बादशाह मरण	देश में खराबी		
बाल बनवाना	उम्र कम हो	पान खाना	सुन्दर स्त्री मिले				

शेष पृष्ठ ६५ पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंक-विद्या [Numerology] और आपका भाग्य

आजकल पाश्चात्य में तथा भारत में भी अंक विद्या की लोक-प्रियता बहुत बढ़ रही है। यद्यपि भारत में इस का प्रचलन अति प्राचीन काल से रहा है किन्तु भारतीय पद्धति वर्णमाला पर आधारित होने के कारण शीघ्र-बोधगम्य नहीं। अंकों के आधार पर हम मनुष्य-स्वभाव की चारित्रिक विशेषताओं का आश्चर्य जनक रूप से विवेचन कर सकते हैं। हमारे मतानुसार भविष्यवाणी करना कठिन है। यहां पर पाश्चात्य मतानुसार अंग्रेजी मास की जन्म तारीख को आधार मानकर ९ तक की तारीख में मूल अंकों की कल्पना की गई है तथा सूर्यादि नव ग्रहों को इन मूल अंकों का प्रतिनिधि माना गया है। ९ के बाद की तारीखों को मूल अंक बनाने की विधि इस प्रकार है—

१० = १ + ० = १ ॥ १३ = १ + ३ = ४
११ = १ + १ = २ ॥ १४ = १ + ४ = ५
१२ = १ + २ = ३ ॥ १५ = १ + ५ = ६

क्रमशः इसी प्रकार तारीख के दोनों अंकों की इकाइयों को जोड़ कर मूल अंक बनाएं अथवा किसी भी अभीष्ट संख्या को ९ से भाग देकर जो शेष बचे, वही मूल अंक होगा।

मूल अंक १ वाले व्यक्ति—ऐसे व्यक्ति स्थिर प्रकृति वाले क्रियात्मक स्वतन्त्र विचार धारा वाले तथा स्वाभिमानी होते हैं। अधिकार प्रदर्शन की भावना भी रहती है। किसी अन्य व्यक्ति का प्रभाव व अनुशासन सहन नहीं करते। अंक १ वालों को रविवार तथा सोमवार शुभ होते हैं। पीला व सुनहरी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के १३, १९, २२, २८, ३९, ४९, ५८, वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस अंक का प्रतीक सूर्यग्रह है। ऐसे व्यक्तियों को नेत्र, कण्ठ, रक्त, पित्त विकारादि का भय रहता है। माणिक्य धारण करना शुभ है।

मूल अंक २ वाले व्यक्ति—इस अंक का प्रतीक चन्द्रग्रह है। ये १ अंक वाले व्यक्तियों की अपेक्षा शान्त स्वभाव के होते हैं। कल्पना, साहित्य प्रेम, चंचल प्रवृत्ति, कला व सौंदर्य प्रेमी, लेखन कार्य करने में रुचि इनके स्वाभाविक गुण हैं। सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार शुभ हैं। ये निश्चयी कम होते हैं। जीवन के १५, ३१, ३४, ३७, ४६वें वर्ष विशेष महत्त्व पूर्ण। श्वेत रंग अनुकूल है।

अंक ३ वाले व्यक्ति—अनुशासन प्रिय, महत्त्वाकांक्षी, विद्या-अध्ययनी तथा परिश्रमी होते हैं। नेतृत्व करने में कुशल हैं। बृहस्पति प्रतिनिधि ग्रह है। इनके लिए मंगलवार, शुक्रवार तथा वीरवार और पीला रंग शुभ है। जीवन के ९, १२, ३०, ३८, ३५, वर्ष भाग्योन्नति कारक होते हैं। त्वचा रोगों से बचना चाहिए।

अंक ४ वाले व्यक्ति—प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये व्यक्ति नवीन खोज करने में दक्ष, प्रगतिशील कठिन परिश्रमी, उग्रस्वभाव वाले तथा संघर्षप्रिय होते हैं, तीव्र स्वभाव वाले तथा गम्भीर होते हैं। धन-संग्रह अधिक नहीं कर पाते। ४, १३, २२, ४०, ५९, ५८वां वर्ष भाग्योन्नति कारक रहेगा। शनिवार, रविवार तथा सोमवार शुभ दिन तथा नीलमणि विशेष अनुकूल है। मूंगा धारण करना शुभ।

अंक ५ वाले व्यक्ति—का अधिष्ठाता बुध ग्रह है। ये फुर्ती से काम करने वाले, जल्दबाज शीघ्र निर्णय लेने वाले व्यापारादि व्यवसाय में उन्नति करते तथा चंचल वृत्ति के होते हैं। प्रत्येक प्रकार की स्थिति में ढल जाते हैं। महत्त्वपूर्ण वर्ष १५, २५, ३२, ४१, ५१ ५७वां वर्ष होते हैं। बुधवार, शुक्रवार तथा श्वेत व हरित रंग विशेष शुभ है। पन्ना धारण करना शुभ है।

मूल अंक ६ वाले व्यक्ति—संगीत फोटोग्राफी, चित्रकला व सौंदर्य प्रेमी आदर्शवादी तथा कल्पनाशील होते हैं। किसी अन्य की अधीनता इन्हें कभी स्वीकार नहीं होती; मंगल, वीर और शुक्रवार के दिन तथा नीला व गुलाबी रंग शुभ हैं। अपनी योग्यता से धनोपार्जन करना पसन्द करते हैं। जीवन के १५, २४, ३३, ४२, ५१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मूल अंक ७ वाले व्यक्ति के प्रतिनिधि—ग्रह चन्द्रमा तथा नेप्चून हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक, परिवर्तनशील तथा नए-नए स्थानों पर भ्रमण करने में रुचि रखते हैं। तन्त्र विद्या, स्वतन्त्र विचार, स्वाभिमानी व सौंदर्य प्रिय होते हैं। प्रायः आर्थिक संकट बना रहता है। सोमवार, रविवार तथा हरा रंग शुभ है। १६, २६, ५४, ५२, ५१, ६१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक है। श्वेत गोमेद धारण करें।

मूल अंक ८ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह शनि है। ऐसे व्यक्ति अन्तर्मुखी, कठिन परिश्रमी तथा दृढ़ निश्चयी होते हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक सम्भव साधन (उचित व अनुचित का ध्यान किए बिना अपनाते) है। संघर्षमय दूरदर्शी तथा गूढ़ विद्याओं में रुचि रखने वाले होते हैं। वायु रोग से पीड़ित रहते हैं बुधवार शनिवार रविवार तथा गहरा नीला व स्लेटी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के २६, ३३, ३५, ४४, ५३ वर्ष भाग्योन्नति कारक होते हैं। नीलम धारण करना शुभ रहेगा।

मूल अंक ९ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये लोग स्पष्टवादी स्वाभिमानी, कठिन परिश्रमी उग्र-प्रकृति किन्तु दयालु स्वभाव के होते हैं। समस्त जीवन संघर्षों में व्यतीत होता है। रक्त विकार का भय रहता है। शुक्रवार मंगलवार व वीरवार तथा लाल एवं गुलाबी रंग विशेष अनुकूल तात्त्विक विद्या में भी रुचि रखते हैं। जीवन के १८, २७, ३१, ३६, ४५, ५४, ३३वें वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रमल प्रश्नावली

इस प्रश्नावली का यह तरीका है कि चंदन की लकड़ी का चौकोर पासा बना कर उस पर १, २, ३, ४, और खुदवा लें, फिर अपने कार्य का चिंतन करते हुए तीन बार पासा छोड़ें उसका जो नम्बर बने, उसी नम्बर पर फल देखें यदि किसी के पास पासा नहीं हो, तो अगले पृष्ठ के कोष्ठों में अंकाभिका रखकर उसका फल देखें।

१११	१३१	२११	२३१	३११	३३१	४११	४३१
११२	१३२	२१२	२३२	३१२	३३२	४१२	४३२
११३	१३३	२१३	२३३	३१३	३३३	४१३	४३३
११४	१३४	२१४	२३४	३१४	३३४	४१४	४३४
१२१	१४१	२२१	२४१	३२१	३४१	४२१	४४१
१२२	१४२	२२२	२४२	३२२	३४२	४२२	४४२
१२३	१४३	२२३	२४३	३२३	३४३	४२३	४४३
१२४	१४४	२२४	२४४	३२४	३४४	४२४	४४४

१११ मंगल भवन अमंगल हारी, होगी मनो कामना थारी।
११२ इष्ट देव का ध्यान धरोगे, मन इच्छा सब काम करोगे।
११३ होत काम में हुआ अंधेरा, बैरी पहुंच गया है तेरा।
११४ झटपट करो देर नहिं लाओ, यह अवसर फेर नहिं पाओ।
१२१ जो तुम मन में नहीं उपाई, होगा काम ढील से भाई।
१२२ आये विघन है बड़ा भारी, ईश्वर राखे लाज तुम्हारी।
१२३ संकट हटे सर्व सुख पावो, दिन-दिन दुगुनी बढ़ माया।
१२४ वा शुभ काम करो दिन राती, पांच जिमादे गोती नाती।
१३१ कपट भेद है मन में उसके, करि विश्वास आय तू जिसके।
१३२ होगी फतह देर नहिं लाओ, सूरज से तुम विनय सुनाओ।
१३३ दुविधा हटे सर्व सुख पाओ, गुरु गोविंद से ध्यान लगाओ।
१३४ बार-बार समझाऊं थाने, आज भला दीखे नहिं म्हाने।
१४१ विपत्तियां बीत गयीं सब पाछे, अब तो दिन आनंदमें आछे।
१४२ अब सुनता ना कोई तेरी, घर में पैठि रहा है बैरी।
१४३ धन परिवार सदा सुखदाई, कर्म विपाक देख ले जाई।
१४४ रात दिना की चिंता भारी, कुछ दिन में मिट जाये थारी।
२११ जर जमीन होवे फिर होवे, चिंता करि तन को क्यों खोवे।
२१२ यह तो काम बड़ा दुखदाई, कर्म-विपाक देख लो भाई।
२१३ सत्य बात तुम सुन लो म्हारी, बिगरी लाग रही है थारी।
२१४ हिम्मत बड़ी भरोसा खोटा, कर्म विपाक देख दुख मोटा।
२२१ कितना ही पुरुषार्थ मनमाहीं, यश तुमको मिलने का नाहीं।
२२२ होगी फतह देर नहिं लाओ, रविवार को व्रत बनाओ।
२२३ संकट देखि डरे क्यों भाई, ईश्वर थारी करे सहाई।
२२४ धर्म हार धन कोई खाओ, मन अपने में क्यों घबराओ।
२३१ सोच समझ के करना भाई, बिन सोचे होता दुखदाई।
२३२ रस्ते में जो भूला टोहवो, भोजन के देके निर्भय सोवो।
२३३ भली बुरी उसके ही हाथ, निर्धनी धनी बना वही नाथ।
२३४ यह अवसर करने का नाहीं, चुप बैठि रहो घर माहीं।
२४१ वह तुमसे लेने को डोले, इस कारण मुख मीठा बोले।
२४२ धीरज धरि रहो उर माहीं, गई वस्तु घर आने नाहीं।
२४३ किया कबूल भूलि गया भाई, वो ही थारी करे सहाई।
२४४ उदय पाप हो गये बज सारे, कर्म विपाक देखिल्यो थारे।
३११ तीन बार ऊकी है तेरी, पीछे लाग रही है बैरी।
३१२ करि कुछ यतन देर नहीं करना, करले जाप नहीं दुख भरना।
३१३ जो तुम मन में नई उपाई, होगा काम ढील से भाई।
३१४ करि कुछ दान वचन सुन मेरा संकट दूर हो गया तेरा।
३२१ यह तो बात नयी बनि आई, कर्म विपाक देख ले जाई।
३२२ करि विश्वास सत्य सुनि भाई, संकट मिटे होय सुखदाई।
३२३ करना हो सो जल्दी करिए, ध्यान गुरु का हृदय धरिए।
३२४ तुम तो सबकी करो भलाई, ईश्वर राखे लाज सदाई।
३३१ जस तुमको मिलना नहिं भाई, चाहे जितनी करो भलाई।
३३२ कर लें काम देर नहीं करना, ईश्वर ध्यान हिये में धरना।
३३३ देखि चंद्रमा काम करोगे, नित नये मंगल मोद भरोगे।
३३४ जिस नर की तुम करते आशा, उसका कौन करे विश्वासा।
३४१ तुम जानो अपना सा मन की, बुद्धि बदलि रही उस तन की।
३४२ अब तो समझि देखि मनमाहीं, धन्न ग्रह बिन होता नाहीं।
३४३ करिले यतन काम है तीका, अब तो फिकर मिटैया जीका।
३४४ दुर्गा पठित कराना भाई, तो यह संकट देय नवाई।
४११ चुपका बैठि रहो घर माहीं, यह अवसर करने का नाहीं।
४१२ करि विश्वास जाय जो कोई, उसकी हानि कबे नहीं होई।
४१३ यह सब दोष कर्म का भाई, कर्म विपाक देख लो जाई।
४१४ मन अपने को डाटो भाई, मन के डटे सर्व सुखदाई।
४२१ शुभ आचरण बने रहे भाई, तो सुख संपत्ति रहे सदाई।
४२२ अपना मन में तुम्हीं विचारो, भूलि गये सो देनि संभारो।
४२३ ये हैं दोष कर्म के भाई, करि कुछ जाप लेय छुटवाई।
४२४ मनि अपने को राखि जचाया, अब तो दिन अच्छे बनआया।
४३१ करिले यतन देर नहीं करना, इष्ट देव का ले ले सरना।
४३२ वो तेरी सब भली करेगा, उस ही से सब काम सरेगा।
४३३ अब तो फिकर तजो तुम भाई, कुछ दिन गये होवे सुखदाई।
४३४ धीरज धरो फिकर तजि डारो, है ईश्वर को बड़ो सहारो।
४४१ नीच निचाई नहीं तजेंगे, फिर भी सज्जन राम भजेंगे।
४४२ मन अपने करो विचारा, इस तन को देखो रखवारा।
४४३ रोस देव का तुम पर भारी, पहिले उसकी करो मनुहारी।
४४४ ठहर-ठहर कर जानें जोती, कुछ दिन गये सिद्ध सब होती।

॥ चौघड़िया मुहूर्त ॥

उद्वेगश्चामृतो रोगो लाभः शुभचरो मृतिः। सूर्य शुक्रो बुधश्चन्द्रो मंदोजीवो धरासुतः॥
सूर्यादौ क्रमतो ज्ञेयो रात्रौ पञ्चमगोऽह्नवत्। सूर्यो बृहस्पतिश्चन्द्रः शुक्रो भौमः शनि बुधः॥

दिन की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
दूसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तीसरी चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चौथी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पांचवी चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवी चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सातवी चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
आठवी चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
दूसरी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तीसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चौथी चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पांचवी चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवी चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सातवी चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
आठवी चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव

नवरत्न की अंगूठी इस ढङ्ग से बनानी चाहिए—

ईशान पन्ना	पूर्व हीरा	अग्नि मोती
उत्तर पुखराज	माणिक	दक्षिण मूंगा
वायव्य लहसुनिया	नीलम पश्चिम	नैर्ऋत्य गोमेद

शनिस्तोत्र

विप्रलाद उवाच—नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोस्तुते। नमस्ते विष्णुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते कालकायवे। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते। प्रसाद कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च इस स्तोत्र का नित्य सवेरे पाठ करने से शनि का अनिष्ट नहीं होता।

यज्ञोपवीत धारण कैसे करना चाहिये

शास्त्रीय ग्रंथों में वर्णित

यज्ञोपवीत को दाहिने हाथ से ही धारण करना चाहिये। लघुशंका के समय दाहिने-कर्ण पर, मलत्याग के समय वाम-कर्ण पर रहना चाहिये। यज्ञोपवीत वाम कन्धे पर दाहिनी भुजा की ओर लटकना चाहिये।

शनि का वास्तविक विचार

शनि जिस नक्षत्र पर हो उससे अपने नक्षत्र तक गिनिये। यदि वही नक्षत्र हो तो ३ मास १० दिन तक अनेक प्रकार की हानियां होंगी। दूसरे से पांचवें नक्षत्र तक १३½ मास की अवधि में युद्ध में विजय होगी। ततः ६ से ११वें नक्षत्र तक १ वर्ष ८ मास का समय वायु-रोग, देशान्तर में भ्रमण करायेगा। ततः १२ से १५वें नक्षत्र तक १३ मास १० दिन तक कष्टकारक समय बीतेगा। ततः १६ से १८ नक्षत्र तक १० मास का समय उत्तम राज-यश कारक होगा। ततः १९-२०वां नक्षत्र समय ६½ मास सुखदायक रहेगा। ततः २१-२२वां नक्षत्र ६ मास २० दिन ब्रह्मकष्ट, वायु-विकार होगा। ततः २३ से २७वां नक्षत्र १६ मास २० दिन तक अनुचित ढंग से धन-धान्य का लाभ होगा।

चक्र

शनि नक्षत्र	समय	फल
१	३ मास १० दिन	अनेक हानियां
४	१३ मास १० दिन	विजय, साफल्य
६	२० मास	व्यर्थ भ्रमण
४	१३ मास १० दिन	कष्ट, भुजा-व्यथा
३	१० मास	सम्मान, यश, सुख
२	६ मास २० दिन	उन्नति, सुख
२	६ मास २० दिन	महादुःख, वायु-विकार, आमाशय
५	१६ मास २० दिन	धन-धान्य का लाभ

अन्य प्रकार

जिस दिन शनि राशि-संक्रमण करे, उस दिन का चन्द्र नक्षत्र की राशि बनावें। यदि वह राशि अपनी राशि से १-६-११वीं पड़े तो लाभ, सुख, २-५-९वीं पड़े तो साधारण लाभ, शुभ, ३-७-१०वीं पड़े तो साधारण; ४-८-१२वीं पड़े तो अनिष्ट समझें। परन्तु पंचांगों में भेद के कारण यह फल नहीं मिलता शनि के नक्षत्र-संक्रमण में भी इसका विचार किया जा सकता है।

मुख्य बातें

शनि एक राशि में २॥ वर्ष रहता है। जन्मराशि से बारहवें, जन्मराशि का तथा दूसरे; इन तीन राशियों को मिलाकर ७॥ वर्ष हुआ। इसी को साढ़े साती शनि कहते हैं। जन्मराशि से जब शनि चौथे या आठवें हो तो अढ़ैया कहा जाता है जो कष्टप्रद है। जब शनि जन्मराशि से बारहवें आता है, तो व्ययाधिक्य अवश्य होता है। जन्मराशि का होने पर यात्रा, चर्म-वायुरोग अवश्य होता है, दूसरे होने पर परिवार में किसी की मृत्यु तथा धन-हानि होती ही है। चौथे शनि में मित्रों से सम्बन्ध-विच्छेद, विवाद, मुकद्दमा, आठवें, में व्यय, हानि, रोग होता है।

इसकी शान्ति

नीलम धारण करना चाहिए। छायादान करना चाहिये। शनैश्चर का जप करना चाहिए। काले घोड़े के नाल की अंगूठी बिना कटी हुई, बिना जोड़ी हुई धारण करनी चाहिए। शनिवार को मूंग हुआ चना खाना चाहिये। काला वस्त्र धारण, काले तिल का तेल लगाना चाहिए।

नीलम किन-किन राशि वालों को लाभप्रद होता है।

तुला, कुम्भ—को अत्यन्त लाभप्रद

मकर, वृष—को साधारण लाभप्रद

मिथुन, कन्या—को साधारण शुभ

धनु, मीन—को कभी अच्छा कभी साधारण बुरा

मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक को कभी भी अच्छा नहीं होता जब तक कुण्डली में शनि बहुत अच्छा न हो।

शनि के स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। हनुमान बाहुक या हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

जहां पर हनुमानजी की मूर्ति दक्षिण मुख की हो वहां पर हनुमान बाहुक, बजरंग बाण या और किसी हनुमान के मंत्र या स्तोत्र से ४० बार परिक्रमा करनी चाहिए। ततः पीपल में जल देकर ७ परिक्रमा करनी चाहिए।

इस प्रकार शनि की बाधा दूर हो जायगी। जीवन में प्रायः साढ़ेसाती शनि ३ बार या किसी-किसी को ४ बार आता है। पहली बार तो कोई प्रभाव नहीं रहता है। दूसरी बार जीवन भवन की नींव हिला देता है। तीसरी बार उस भवन को उखाड़ फेंकता है और चौथी बार जला देता है।

आयु-विचार

१—जन्म कुण्डली में लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम भाव के अंकों में प्रत्येक को ३ से गुणा करके जोड़िये उसमें से (यदि उक्त स्थानों में राहु और भौम पड़े हों) राहु और भौम की राशि-संख्या को निकाल देना चाहिये जो शेष बचे उतने वर्ष आयु समझिये।

२—लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम की राशि संख्या एकत्र करना यदि इन स्थानों में राहु, केतु, मंगल और शनि हों जो उक्त संख्याओं को जोड़कर पूर्वोक्त संख्या में घटाकर शेष को तिगुना करना; वही आयु की वर्ष संख्या होगी।

३—अष्टमेश (१) यदि बलहीन होकर लग्न से षष्ठ या बारहवें हों (२) अष्टमेश लग्नेश के साथ होकर उक्त स्थानों में दुर्बल रहें (३) लग्नेश, चन्द्रमा और सूर्य या पापग्रह के साथ दुर्बल रहें (४) लग्न या लग्नेश पर कर्तरी हो तो बालक हीनायु होता है।

४—लग्नेश अष्टमेश और कर्मेश ये तीनों बली हों, शुभ स्थान में बैठे हों तो दीर्घायु, दो बली हों, शुभ स्थान में बैठे हों तो मध्यायु, एक बली हो, शुभ स्थान में बैठा हो तो हीनायु होती है। अष्टमेश शनि अष्टम में, लग्नेश लग्न में हों तो दीर्घायु होता है। [शेष पृष्ठ ५६ पर]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के सामने और उसके अंशादि के आसन जो कोष्टक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को गृहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ गृहादि वर्गों की वर्तमान राशि है इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अतः सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिंशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारूढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्तिरहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषिकर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान्, धनिक, सन्तानवान्, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुःखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुषग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभ ग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली, सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होता है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल-स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचारिणी कुलटा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो जातक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थानों में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्रराशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

सर्वार्थसिद्धियोग:— शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धन क्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वार्थादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत को मन जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावें क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह लग्नों वा राशियों का फल

मेष लग्नम्—जिसका जन्मलग्न मेष हो उस पुरुष के भीतरी और बाहरी भाव सदा एक जैसे रहते हैं, शूरवीर, हर एक बात में फैसले के तौर पर अपनी राय देने में झट तैयार हो जाता है, इसके भाग्य में कई प्रकार की तबदीली होती है, जायदाद, जमीन के कामों की उन्नति के लिए अपने विचार बढ़ाता रहता है, जायदाद सम्बन्धी कई प्रकार के झगड़े पेश आते रहते हैं और इन्हीं कामों के सम्बन्ध द्वारा लाभ भी होता रहता है, भाई-बहिन ज्यादा नहीं होते, हों भी तो मर जाते हैं, पिता का सुख विशेष नहीं होता, रिश्तेदारों का भी सुख कम होता है, बहुत देर तक एक जगह पर रहना मुश्किल होता है, सन्तान की तरफ से पूर्ण सुख नहीं होता वह पुरुष चुस्त, चालाक तथा चंचल स्वभाव का होता है, स्वतन्त्र रहना पसन्द करता है, जब कभी कष्ट हो तो गुरदा दर्द, सोजश, हाथ, पांव, आंख पर चोट, रक्त विकार हो। ३-११-१५-२१-२७-४५ वर्ष में कष्ट।

वृष लग्नम्—यदि लग्न वृष राशि का हो तो वह पुरुष अपने हठ पर दृढ़ रहता है, दूसरे की बात को नहीं मानता जो काम करे देरी से करता है, दिल बहुत मजबूत होता है, आराम पसंद रहना इसका स्वाभाविक धर्म है, छोटे-छोटे कामों पर भी लम्बे-२ विचार करता रहता है, हर एक काम में झगड़े का कारण आप ही हो जाता है, बीमार हो तो बहुत कठिनाई और देरी से अच्छा होता है, झगड़ा और मुकद्दमा के कामों में बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं, माता-पिता का सुख अच्छा, यदि पहली सन्तान में लड़की हो तो मर जाती है, जिन्दगी का पिछला हिस्सा आराम से बीतता है, शत्रु इसके अधिक बने रहते हैं, कई तरह के मामलों का सामना करना पड़ता है, इसकी मृत्यु विदेश में अथवा पानी के कारण होती है। ५-२६-३७-४७ वर्ष में कष्ट हो।

मिथुन लग्नम्—जिसका जन्मलग्न मिथुन राशि का हो उसका स्वभाव नरम होता है, जिस काम को करने के लिए तत्पर हो जाए उसको सच्चाई से करता है, हरेक बात में अदलनी भाव सदा गुप्त रखता है, नये-२ विचार पैदा करता रहता है, कानूनी काम, व्यापार व लेखा संबंधी कामों को बड़ी गम्भीरता से करता दिल का बहुत मजबूत होता है परन्तु नरम स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है, विद्या द्वारा मान प्राप्त करता है, प्रायः इसको यात्रा बहुत करनी पड़ती है, दुःख और सुख में सदा एक भाव में रहता है, परन्तु झगड़ों में सदा चितातुर रहता है, इसका एक भाई मानी और प्रतिष्ठित होता है, पिता से इसका मन सदा उदासीन, संतान उत्पन्न तो बहुत होती है परन्तु मर कर थोड़ी रह जाती है, सन्तान की तरफ से चिंता ही रहती है, मित्रों से प्रीति तो बहुत करें परन्तु मित्रों से कुछ लाभ नहीं होता, स्त्री प्रेम से भी क्लेश रहता है, इसका सम्बन्ध दो जगह होता है अथवा दो स्त्रियों से संयोग होता है, औरतों के झगड़ों से तंग रहता है, गुप्त इसके शत्रु बने रहते हैं, कई मामलों का सामना करना पड़ता है, पर परिणाम अच्छा ही होता है, लिखने पढ़ने के कार्यों में प्रवृत्ति अधिक होती है, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है। ३-५-८-११-१८-२०-२८-४५ वर्ष में कष्ट हो।

कर्क लग्नम्—जिसका जन्मलग्न कर्क राशि का हो तो वह दिल से जिस काम को चाहे कर ही लेता है, इसकी जिन्दगी अक्सर उथल-पुथल होती है, चंचल प्रकृति और शान्त स्वभाव होता है, विचार शक्ति इसकी बहुत प्रबल होती है, टालमटोल करना बहुत जानता है, कभी-२ क्रोधित भी हो जाता है और हर एक से मेल मिलाप रखने वाला होता है, यह पुरुष हर एक बात के भाव को पहले से ही झट समझ लेता है, दूसरे के विचारों को अपने विचार में प्रकट करने वाला होता है, क्षणभर क्रोध में आकर झट शांत हो जाता है, धन इकट्ठा करने में कष्टता रहे, पैतृक सम्पत्ति थोड़ी प्राप्त हो, आयु के पहले हिस्से में अमन और सुख रहे, इसके कोई भाई-बहिन पूर्णायु न भोग कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, स्त्री से क्लेश, शत्रु इसके गुप्त रूप से बने रहते हैं, इसकी जीत रहती है, जिंदगी इसकी ३५ वर्ष तक डांवाडोल रहे, यह पुरुष नाजुक मिजाज होता है। ५-१६-१८-२०-२४ वर्ष में कष्ट हो।

सिंह लग्नम्—जन्म लग्न यदि सिंह राशि का हो तो वह पुरुष अपने गुणों से पुरुषार्थ द्वारा हर काम में उन्नति प्राप्त कर लेता है, मजबूत दिल वाला होता है। धर्मात्मा, दानी और भरोसे पर काम करने वाला होता है, पुरुषार्थी और अहंकार से युक्त होता है, मामूली बातों को नफरत की निगाह से देखने वाला होता है, बड़े-२ कामों के करने में तत्पर हो जाता है और उनको पूरे तौर पर कर लेता है, हर तरह के काम में अपनी सम्पत्ति झट कायम कर लेता है, नौकर और खानदानी कामों, झगड़ों में परेशानी रहा करेगी, पहनने और खाने वाली चीजों के व्यापार से लाभ होगा, संतान बहुत हो परन्तु सुख कम होगा, पहली सन्तान जीवित न रहे, दो सम्बन्ध अथवा दो स्त्रियों से संयोग हो। ५-१०-२७-३० वर्षों में कष्ट हो।

कन्या लग्नम्—यदि कन्या जन्म लग्न हो तो वह पुरुष ज्ञानी और पवित्रात्मा होता है, बुरी-भली बात को पहचानने वाला होता है, परिश्रमी शांत स्वभाव और अपने गुणों द्वारा संसार में मान प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है, शुद्ध चित्त, धैर्यवान और दूसरों में निर्मोह का बर्ताव करने वाला होता है, जिस से प्रेम करे तो दिलोजान से करता है, अपने छोटों के साथ सख्ती से बर्ताव करता है, यह पुरुष जिस काम को करना चाहे कर लेता है और जिस बात पर बिगड़ जावे उस बात को कभी नहीं छोड़ता, इतिहास, नाटक, चित्रकारी और बाग बगीचा संबंधी काम करने वाला होता है, सभा में चतुर और अच्छा बोलने वाला अति परिश्रम करने पर भी बहुत धन इकट्ठा नहीं होता, निर्वाह मात्र प्राप्त होता है, अचूक सम्पत्ति भी कुछ प्राप्त होती है, बाल्यावस्था में बीमारी से कष्ट रहे, पिछली अवस्था सुखी रहे, व्यापार व बैंकादि के कामों से धन प्राप्ति हो, परदेश में भाग्योदय रहे, संबन्धियों व पड़ौसियों में द्वेष रहे, पहली संतान युवावस्था में ही नष्ट हो जाए, दो संबंध या स्त्रियों से ताल्लुक हो। ३-५-१०-१८-३२-४० वर्ष में कष्ट हो।

तुला लग्नम्—इस लग्न वाला नरम स्वभाव मीठा बोलने वाला नीति करने में निपुण, हर बात में हर तरह से सहायक और नीति के अनुकूल काम करने वाला होता है, संगति का असर इसको बहुत जल्दी होता है, क्षण में क्रोधयुक्त और क्षण में शांत हो किसी नई बात को जानने और बनाने में तथा जहाज सम्बन्धी कामों में निपुण होता है, मानसिक शक्ति प्रबल रहती है परन्तु बहुत देर तक नहीं रहती, जब तक किसी काम को करने में लगा रहता है तब तक दिलोजान और मजबूत दिल होकर करता है परन्तु अपने विचार बदलने में भी झट तैयार हो जाता है, इसके भाई-बहिन और संबन्धी बहुत होते हैं, सुख किसी का नहीं होता, इसका पिता ऊंचे दरजे से नीचे के दरजे को प्राप्त हो जाता है और

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह लग्नों वा राशियों का फल

इसका पिता ही इसकी मुसीबत का कारण बने, जितनी संतान रहे खुशहाल रहे। ८-१५-१८-२३ वर्ष में कष्ट पाये यदि बच जाए तो ६८ वर्ष ७ महीने तक आयु भोगे।

वृश्चिक लग्नम्—इस लग्न वाला अत्यन्त ज्ञानी या अत्यन्त मूर्ख होता है, ईर्षा, द्वेष और अहंकार युक्त अथवा बड़े-२ कामों के करने में देवता के समान होता है, शूरवीर, दिलावर, लड़ाई में तत्पर और हर एक काम अत्यंतता करने से इसकी बीमारी का कारण हो जाता है, आत्मिक शक्ति बलवान् और स्थाई होती है, यह पुरुष हर एक काम के रहस्य को जानकर उसकी कमजोरियों को दूर कर लेता है, अग्नि के समान प्रचंड प्रकृति वाला गंवारों जैसे व्यवहार वाला, सत्यवक्ता और भय रहित होता है, इस लग्न वाला धन संबन्धी कामों में घबराहट से युक्त प्रथम अवस्था में भाग्योदय न हो मध्य अवस्था में भाग्योदय होता है, दूसरे देशों की यात्रा करता है, ससुराल के रिश्तेदारोंऔर कानूनी कामों से फायदा होता है, अचानक धन मिलने की सम्भावना होती है, भाई-बहिन इसके कम होते हैं, बल्कि पिता की एक ही संतान रह जाती है, संतान बहुत होने पर भी सुख नहीं होता, सबन्धियों को चाहने वाला होता है, एक से अधिक विवाह होंगे गुप्त रोगों से कष्ट उठाये। २-५-१०-१२-१८-२० और ३० वर्ष की आयु में कष्ट उठाये यदि बच जाये तो फिर ८५ वर्ष तक आयु भोगे।

धन लग्नम्—इस लग्न वालों की दो प्रकार की प्रकृति होती है। नियमों को पालन करने में तत्पर अथवा नियमों का उल्लंघन करने में तत्पर होते हैं, भविष्यवाणी करने में और दूसरों मन के गुप्त रहस्यों के जानने वाले होते हैं, विश्वास पात्र, दानी-सत्यवक्ता और निष्काम काम करने वाले, कई प्रकार की विद्या को जानने वाले, स्वतन्त्र रुचि वाले, किसी के ऊपर विश्वास न करने वाले और शांत स्वभाव, बिना कहे किसी बात में न बोलने वाले ईश्वर संबन्धी विषयों में तत्पर और दिमागी काम करने वाले होते हैं, पहली अवस्था में पिता को सुख कम, पिता की विपत्ति के कारण इसका भाग्योदय नहीं होता, अपने परिश्रम द्वारा धन कमाता है, इसके भाई कम हों, संबंधियों से प्रेम रहे, संतान कम होती है, दुश्मन बने रहते हैं, देवताओं और ब्राह्मणों का सेवक हो, यात्रा आदि बहुत करे। ८-१२-१५-२६-३८-४० वर्ष में कष्ट भोगे और यदि बच जाए तो ७५ वर्ष की आयु भोगे।

मकर लग्नम्—इस लग्न वालों का प्रायः सेवा करना धर्म है, जिस काम को करने की रुचि हो उसको दृढ़ता और शांति से करते हैं, परिश्रमी अधिक होते हैं, कभी मलीनचित्त और ईर्ष्या द्वेष से युक्त भी हो जाते हैं, किसी समय शूरवीरता और दृढ़ता से बड़े भारी काम को भी कर लेते हैं। चलना-फिरना कुछ अजीब व चतुर हो, परन्तु बोलते-२ वाणी में कुछ रुकावट सी हो जाती है, संशयात्मक बुद्धि और उदासीनता में रहते हैं, इनका जीवन हर्ष से व्यतीत नहीं होता, मित्रों में स्वतन्त्रता और दूसरे पुरुषों से लज्जा युक्त रहना, शत्रु को क्षमा करना, शत्रुता न भूलना, मित्रों से युक्त व्यवहार करते हैं, हरेक बात को सोच-समझकर करते हैं, काम में लगे रहना, व्यापार द्वारा धन अधिक प्राप्त करते हैं, भाई-बहिन बहुत होते हैं, सम्बन्धियों व भाई-बहिनों से सुख नहीं, पिता का सुख भी विशेष नहीं होता, कई विवाह होते हैं परन्तु विवाह होने के समय बहुत अड़चनें होती हैं। स्त्री प्रसन्न रहे, संतान थोड़ी होती है, खांसी और वायु रोग से दुःखी हो। ३-१८-२०-२४-३०-४२ वर्ष में कष्ट भोगे, बचे तो ५६ वर्ष की आयु भोगे।

कुम्भ लग्नम्—इस लग्न वाले को साहित्यकला, कौशल और दर्शनों के गुप्त रहस्यों का शौक होता है, लेखक और वक्ता भी अच्छा होता है, प्रेम करने की चाहना भी होती है, खासकर वृद्धावस्था तक अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, एकांत सेवी होता है, अन्य लोगों से मेल-जोल बहुत कम रखता है, अच्छे-२ मित्र होते हैं, इच्छा शक्ति प्रबल होती है, बड़ी-२ मुश्किलों का सामना करके अपने काम को कर लेता है, प्रसन्नात्मा होता है, दौलत और मरतबा हासिल करने में बहुत परिश्रम करने पर भी कामयाब नहीं होता, क्योंकि इसके कई गुप्त दुश्मन और गुप्त साजिशें बनी रहती हैं। कुटुम्ब के मनुष्यों से जायदाद व धन संबंधी सहायता और मित्रों द्वारा अपने मरतबे की सहायता इसके दुःख का कारण होती है। मकान के रुपये की खातिर लम्बी-२ यात्रा होती है, कभी-२ इसके संबंधी खासतौर पर इसका भाई कारोबार में कष्ट का कारण होता है, इसकी आमदनी कई कारणों से गुप्त रूप में होती है। सरकारी फौज की तरफ से गुप्तचर होता है, भाई-बहिन इसके कम होते हैं, अगर हों तो सलूक अच्छा नहीं होता, अक्सर कई बार भाई के साथ झगड़ा हो जाता है, पिता का देहान्त जल्दी हो जाता है। इनके संतान कम होती है, किसी समय जोड़े पैदा होते हैं, संतान से सुख कम, खासकर पहली संतान का दुःख होता है, इसकी शादी खानदानी रिश्ता या गवैया स्त्री से होती है, सम्बन्ध का लाभ हो, स्त्री विद्या को जानने वाली कन्या हो और वृश्चिक राशि वालों से दुःखी हो। ६-११-१९-२५-३९-४० वर्ष में दुःखी और कष्ट पाये, यदि बच जाए तो ४५ वर्ष उम्र होने की आयु भोगे।

मीन लग्नम्—इस लग्न वाले प्रायः देवता के समान प्रकृति वाले होते हैं और यह लग्न मनुष्य का बहुत कम होता है, अपने जीवन में मान और प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं, प्रायः विद्वता और कला कौशल इनके जीवन का आधार होता है। प्रसिद्ध लेखक नए विचारों से कई प्रकार की बातों को प्रकट करते हैं और उसका पूरा फल प्राप्त करते हैं, इसके विचारों का प्रभाव दूसरे के चित्त पर बहुत जल्दी पड़ जाता है, कई बार इसके विचार अपने ही दुःख का कारण बन जाते हैं, इस लग्न वाला ज्ञानहीन नहीं होता, साहित्य और संगीत विद्या में बहुत निपुण होते हैं, भोग में इनकी प्रवृत्ति अधिक होती है, संतान बहुत अधिक होती है और भाग्यवान होती है। दानी और पुण्यात्मा लोगों के साथ सहानुभूति रखते हैं। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों पर अन्याय करना पसन्द नहीं करते, अधिकार को प्राप्त करने पर भी सदा न्याय करते हैं, क्रोध जल्दी नहीं करते और शांत भी जल्दी नहीं होते, धन प्राप्ति के लिए कई प्रकार का कारोबार करते हैं और उसमें कामयाब भी हो जाते हैं, इसके भाई-बहिन अधिक होते हैं और इसके सम्बन्धित सहायक होते हैं। भाई व बहिन किसी की अकाल मृत्यु हो जाती है, माता-पिता का सुख कम होता है, पिता अकाल मृत्यु से मरता है, अधिक प्रतापशाली, व्यापार में लाभ, कर्णपीड़ा, विदेश में दुःखी हो। ४-२५-२०-३२-३८ और ४० वर्ष में कष्ट से बचे तो ८० वर्ष की आयु भोगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष सम्बन्धी लाल किताब के कुछ अनुभूत योग

ज्योतिष की लाल किताब के अनुसार केवल एक ही ग्रह अथवा रेखा को देखकर किया हुआ निर्णय कोई सम्पूर्ण निर्णय नहीं होता बल्कि कई बार इससे संदेह उत्पन्न होने की सम्भावना भी बनी रहती है। प्राचीन प्रचलित ज्योतिष में लग्नगत एवं अन्य भाव राशियों के अनुसार ही ग्रहों की स्थापना की जाती है। जबकि लाल किताब में राशियों एवं ग्रहों के पक्के (स्थिर) घर निर्धारित किये गए हैं। अर्थात् लाल किताब में प्रथम द्वितीयादि भावों में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टि अनुसार ही फलादेश का वर्णन किया गया है। "संक्षिप्त लाल किताब" हेतु हमारे यहां से "मृगु ज्योतिष" नामक पुस्तक मंगवा लें जो चार भागों में उपलब्ध है जिनका मूल्य १००) रुपये।

शुभ एवं अशुभ ग्रह

लाल किताब में फलादेश और उपायों का आधार मुख्यतः शुभ एवं अशुभ ग्रहों को माना गया है। जो ग्रह सर्वोच्च, मूलत्रिकोण स्वराशि या मित्र राशि में शुभ ग्रहों से युक्त अथवा शुभ ग्रहों द्वारा (३, ५, ७वें) दृष्ट हों, वह ग्रह जन्म कुण्डली में शुभ माने जाते हैं। जो ग्रह कुण्डली में नीच या शत्रु राशि में स्थित हों अथवा अशुभ स्थानों (६, ८, १२वें) के स्वामी होकर पापी ग्रहों से युक्त अथवा पापी ग्रहों द्वारा (३ या ८वीं दृष्टि से) दृष्ट हों, तो वह अशुभ कहे जायेंगे।

जन्म कुण्डली में स्थित शुभ अथवा अशुभ ग्रह अपनी स्थिति भावेश एवं कारकत्व के अनुसार ही अपना शुभ-अशुभ फल प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त कुण्डली में स्थित ग्रहों की दशा अन्तर्दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव वश भी कुण्डली स्थित ग्रहों के शुभत्व एवं अशुभत्व में न्यूनाधिकता आती रहती है। जन्म कुण्डली या वर्ष कुण्डली में शुभ ग्रहों के फल में वृद्धि तथा अशुभ ग्रहों के सम्भावित अनिष्ट फल की निवृत्ति के लिए 'लाल किताब' में कुछ अपने ही ढंग के अपूर्व उपायों का उल्लेख किया है। आगे हम ग्रहों के प्रत्येक भाव में शुभाशुभ फल उपाय सहित वर्णन करते हैं। ध्यान रहे 'लाल पुस्तक' में वर्णित ज्योतिष की आमर व फलादेश सम्बन्धी अन्य नियमों का सामूहिक रूप से अनुशीलन करने के पश्चात् ही फलादेश सम्बन्धी अन्तिम निर्णय पर पहुंचा जा सकता है।

बृहस्पति

प्रथम भाव—प्रथम भाव में यदि शुभ होकर स्थित हो, तो जातक का भाग्य अपनी बौद्धिक शक्ति के प्रयोग पर निर्भर या सरकारी अफसरों के सहयोग से उन्नति होगी। बृहस्पति के पदार्थों जैसे सोना, पीतल, पुखराज, चने, हल्दी, धार्मिक कार्य कुल पुरोहित (पिता आदि) के सम्बन्ध से भाग्य चमकेगा। सन्तान सुख केतु की स्थिति पर निर्भर करता है। स्त्री का सुख शुक्र की स्थिति एवं राज दरबार (सरकारी कार्य सम्बन्धी) से लाभ सूर्य की स्थिति पर निर्भर करेगा। इसके अतिरिक्त जातक स्वस्थ शरीर, बुद्धिमान, दूरदर्शी, सम्मानित, पिता के भाग्य में वृद्धि कारक, अच्छा वकील, अकाउन्टेंट, डाक्टर, सम्पादक, भूमि सुख युक्त एवं उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

अशुभ होने पर अधूरी शिक्षा वाला, पिता से मनमुटाव, ऋणी, रक्त विकारी, अल्प धनी होता हुआ भी मान-प्रतिष्ठा पाने वाला होता है।

उपाय—किसी से दान न लेना तथा पूर्णिमा के दिन कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि पर स्नान करना।

२. **द्वितीय भाव में शुभ** बृहस्पति हो, तो जातक उच्च शिक्षित, विद्या संस्थान, बैंक, अध्यापन, धनी सुन्दर स्त्री युक्त सफल व्यापारी, स्वतन्त्र विचारक, धार्मिक, लाटरी द्वारा अकस्मात धन प्राप्त करने वाला होता है।

अशुभ स्थिति में होने से माता-पिता को कष्ट देने वाला, स्त्री (या पति) से परेशान, चिन्तित मन वाला, कृतघ्न, कुलनाशक, अल्पधनी और राजदण्ड भोगने वाला होता है।

उपाय—(क) अपने मकान में कोई कच्चा मिट्टी का हिस्सा बनवाना। (ख) स्वयं केसर या हल्दी का तिलक करना शुभ है।

३. **तृतीय भाव में** शुभ बृहस्पति दयालु, बहुत भाइयों वाला, बहन-भाइयों एवं सम्बन्धियों के लिए शुभ, दूरदर्शी, ससुराल के लिए भाग्य कारक, उत्तम सन्तान, लेखक या विज्ञापनादि से धन लाभ, यात्राओं से लाभ प्राप्त करने वाला एवं दीर्घायु होता है।

तृतीय भावस्थ अशुभ बृहस्पति की स्थिति में जातक अपने स्वार्थ हेतु हर प्रकार के नैतिक एवं अनैतिक साधन अपनाने वाला, सन्तान से दुःखी, बहन भाइयों को दुःखी करने वाला, मित्र से धोखा करने वाला एवं बूढ़ों का निरादर करने वाला होता है।

उपाय—(च) अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु केसर या हल्दी का तिलक करना एवं (छ) श्री दुर्गा पूजन व कन्याओं को मीठा भोजन देकर आशीर्वाद ग्रहण करना।

४. **चतुर्थ भाव में** शुभ बृहस्पति हो तो जातक उच्च शिक्षित, मकान, भूमि, वाहनादि से युक्त, पालतु पशु रखने वाला, उत्तम व्यापारी, वकील, जज या नेतृत्व करने वाला, माता-पिता के लिए शुभ, लाटरी आदि से अचानक धन प्राप्त करने वाला होता है।

चतुर्थ भाव में अशुभ होने की स्थिति में जातक मांस, शराबादि का व्यसनी, बिगड़े कामों का खुद जिम्मेदार, परस्त्री गामी, वाहनादि से दुर्घटना का भय तथा इसे गृहस्थ सुख कम मिलता है।

उपाय—(अ) स्वयं लाल बनियान पहनना या बनियान पर लाल रंग के चिन्ह लगा लेना, अपना शरीर नंगा न रखना एवं किसी के सामने न नहाना। धर्म मन्दिर में पूजा-पाठ करना तथा कुल पुरोहित का आशीर्वाद लेना तथा पीपल के वृक्ष को पानी देना कल्याणकारी होगा।

५. **पंचम भाव में** शुभ बृहस्पति हो, तो जातक बुद्धिमान, सम्मानित, उत्तम सन्तान से युक्त, व्यापारी अथवा सेना में उच्चाधिकारी, धनी कुल में उत्पन्न, भाग्यवान, लाटरी आदि से अकस्मात धन प्राप्त करने वाला होता है।

यदि बृहस्पति अशुभ हो, तो जीवन में बड़े उतार-चढ़ाव देखे, सन्तान सम्बन्धी दुःखी कुटुम्ब में निन्दित, घर में किसी की अल्प मृत्यु हो तथा जीवन के अन्तिम समय भयंकर यंत्रणा भोगनी पड़े, सन्तान के कारण धन नाश तथा जुए सट्टे में हानि होती है।

उपाय—अशुभ बृहस्पति के अनिष्ट निवारण हेतु गुरुवार को किसी धर्मस्थान पर लड्डू या बूंदी का प्रसाद चढ़ाना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्मपत्री निर्माण

ज्योतिष विद्या द्वारा फलादेश कथन करने के लिए जन्म कुण्डली या प्रश्न कुण्डली बनाना प्राथमिक आवश्यकता है। खेद का विषय है कि हमारे अधिकांश ज्योतिषी इस प्राथमिक ज्ञान को भी ठीक से नहीं जानते। ज्योतिष विषय की विधिवत् शिक्षा कुछ गिने-चुने विद्यालयों में ही दी जाती है। ऐसे विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ज्योतिषाचार्यों तथा उनके शिष्यों को छोड़कर अधिकांश ज्योतिष व्यवसायी अधकचरे ज्ञान के बल पर ही काम चलाते हैं। धर्म प्राण आम जनता अपने कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ और ज्योतिष सम्बन्धी कार्यों के लिए अपने पास के मन्दिर के पुजारियों पर ही निर्भर करती है। अधिकांश पुजारी गण का ज्योतिष ज्ञान नगण्य होता है। बहुत से तो पंचांग में जो साप्ताहिक कुण्डलियां प्रातः काल की दी होती हैं, उनकी नकल कर देते हैं। कुछ ज्यादा समझदार हुए तो दैनिक लग्न सारिणी से लग्न निकाल लेते हैं। ऐसे ही एक महाशय सूर्योदयादिष्टम के चाने में सूर्योदय लिखते हैं, बहुतों को पता नहीं है कि इष्टकाल क्या होता है, किस काम आता है। प्रत्येक पंचांग किसी स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है और उसमें दिए लग्नों के समय, तिथि, वार, नक्षत्र, योग आदि के घटी-पल उसी स्थान विशेष के लिए होते हैं। किसी अन्य स्थान पर जन्मे व्यक्तियों के लिए उनमें परिवर्तन करना होता है। प्रत्येक पंचांगकर्ता अपने-अपने ढंग से इन प्रक्रियाओं को सरल करके समझाने का प्रयत्न करते हैं, फिर भी इस क्षेत्र में ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक है जिनको इन प्रारम्भिक विषयों की जानकारी नहीं के बराबर है। किसी ज्योतिषी से उनको पूछने में लज्जा लगती है। अतएव ऐसे व्यक्तियों को ध्यान में रखकर तथा ज्योतिष का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिए विस्तार से बताया जा रहा है।

दैनिक लग्न सारिणी

सभी अच्छे प्रतिष्ठित पंचांगों में दैनिक लग्न सारिणी होती है, जिसमें प्रत्येक दिन की तारीख, वार, बारहों लग्नों का आरम्भ और समाप्ति काल दिया होता है। यह समय भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में होता है और उस स्थान के लिए होता है जहां के अक्षांश पर पंचांग बना होता है। आर्यभट्ट पंचांग में यह सारिणी पृष्ठ संख्या ६६ से ७१ तक दी गई है और इसमें लग्नों का समय दिल्ली के लिए लागू होता है। साल दर साल इसमें विशेष अन्तर नहीं आता। स्थूल गणित के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है। अंग्रेजी तारीख के हिसाब से प्रतिवर्ष किसी विशेष तारीख को किसी विशेष लग्न का समय दिल्ली में प्रायः वही होगा। मान लो किसी का जन्म दिल्ली में २१ दिस. को मध्याह्न २ बजकर १५ मिनट पर हुआ है अथवा किसी प्रश्नकर्ता ने ज्योतिषी से प्रश्न किया है। आपको इसकी जन्म कुण्डली अथवा प्रश्न कुण्डली बनानी है। आपने दैनिक लग्न सारिणी देखी तो पाया कि २१ दिसम्बर को १३।२७ से १५।२ तक, अर्थात् अपराह्न १-२७ से ३-२ तक मेष लग्न है। आप मेष लग्न मानकर कुण्डली बना सकते हैं। परन्तु यदि जन्म समय या प्रश्न समय लग्न के आरम्भ या समाप्ति काल के आसपास १-३० बजे या ३ बजे का है तो सूक्ष्म गणित से लग्न का निश्चय कर लेना चाहिए। दिल्ली के अतिरिक्त अन्य स्थानों के लिए लग्नों का आरम्भ और समाप्ति काल निकालने के लिए पंचांग परिवर्तन पद्धति से गणित किया जाता है। इस गणित को उदाहरण देकर पृष्ठ ६५ पर समझाया गया है। इसे एक और उदाहरण देकर यहां भी समझाते हैं।

दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

(१) १५ जुलाई को दिल्ली की लग्न सारणी से बीकानेर में तुला लग्न का आरम्भ तथा समाप्ति काल निकालना है तो—

		आरम्भ			समाप्ति		
		घं.	मि.	सै.	घं.	मि.	सै.
(i) १५ जुलाई को दिल्ली में तुला लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल (पृष्ठ ६८)		१२	३६	००	१४	५६	००
(ii) बीकानेर का देशान्तर ऋण १५-४० है, अतः जोड़ा जायेगा देखिए अक्षांश सारिणी पृ. १०३	+		१५	४०		१५	४०
		१२	५१	४०	१५	११	४०
(iii) १५ जुलाई की रवि क्रान्ति २१।३७ उत्तर क्रान्ति है (देखिए सारिणी पृ. सं. ११४)। बीकानेर का अक्षांश उत्तर २८।१ है। चरान्तर सारिणी में (पृ. ११०) पर २८ अक्षांश के नीचे तथा २१ व २२ क्रान्त्यंश के सामने क्रान्ति उत्तर होने पर धन चरान्तर मिनट	+	०	१	००	०	१	००
(iv) बीकानेर में तुला लग्न का समय		१२	५२	४०	१५	१२	४०

(२) २० जनवरी को दिल्ली की लग्न सारिणी से उज्जैन में कर्क लग्न का मान निकालना है।

उज्जैन का उत्तर अक्षांश २३।११ तथा देशान्तर ६ मिनट ऋण है। देशान्तर ऋण है इसलिए धन किया जायेगा। २० जनवरी की रविक्रान्ति २०-१८ दक्षिण है, चरान्तर सारिणी में २० क्रान्त्यंश के सामने २३ अक्षांश के कोष्ठक में चरान्तर मिनट १० दिये हैं जो दक्षिण क्रान्ति होने से ऋण किये जायेंगे।

		आरम्भ			समाप्ति		
		घं.	मि.	सै.	घं.	मि.	सै.
(i) २० जनवरी को दिल्ली में कर्क लग्न का मान		१७	१६	००	१९	३६	००
(ii) देशान्तर संस्कार	+	०	६	००	०	६	००
		१७	२२	००	१९	४२	००
(iii) चरान्तर संस्कार	—	०	१०	००	०	१०	००
(iv) उज्जैन में कर्क लग्न का मान	—	१७	१२	००	१९	३२	००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन पद्धति

उदाहरण (१)—मान लो १० मई को बम्बई में कर्क लग्न का मान दिल्ली की दैनिक लग्न सारिणी से निकालना है—

	आरम्भ	समाप्ति
	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
(१) दिल्ली में कर्क लग्न का मान		
(दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६७)	९ ५७ ००	१२ १७ ००
(२) बम्बई का देशान्तर :—ऋण ३८।४० (देखिए सारिणी पृ. १०३, पूर्व रेखांश ७२।५०) ऋण देशान्तर होने से धन किया जायेगा।	+ ० ३८ ४०	+ ० ३८ ४०
(३) चरान्तर : १० मई की रवि क्रान्ति (पृ. ११४) १७।२९ उत्तर चरान्तर सारिणी पृ. ११० पर १७ क्रान्त्यंश के सामने अक्षांश १८ के नीचे देखा। बम्बई का उत्तर अक्षांश १७।५५ है, १८ के लगभग है (अक्षांश सारिणी पृ. १०३) चरान्तर मि. उत्तर क्रान्ति होने से धन है।	+ ० १५ ००	+ ० १५ ००
(४) बम्बई में कर्क लग्न का मान	१० ५० ४०	१३ १० ४०

उदाहरण (२)—मान लो ८ दिसम्बर को इलाहाबाद में वृष लग्न का मान निकालना है।

(१) इलाहाबाद : (पृष्ठ १०२ अक्षांशादि सारिणी से) उत्तर अक्षांश २५।२८ देशान्तर ।-१८-३२

(२) ८ दिसम्बर : (पृ. ११० रवि क्रान्ति सारिणी से) रवि क्रान्ति २२।४० दक्षिण

(३) चरान्तर मिनट : २२।४० दक्षिण क्रान्ति है, २३ क्रान्त्यंश के सामने २५ अक्षांश के नीचे ८ मिनट हैं तथा २६ के नीचे ६ मिनट हैं। हमें २५।२८ के लिए दोनों के बीच के २५ व २६ के चरान्तर मिनट लेने हैं, अतः ७ मिनट लेंगे जो दक्षिण क्रान्ति होने से ऋण किए जाएंगे।

	आरम्भ	समाप्ति
	घ. मि. सै.	घ. मि. सै.
(१) दिल्ली में वृष लग्न का मान दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ७० से	१५ ५५ ००	१७ ५० ००
(२) देशान्तर धन है ऋण किया जायेगा	— १८ ३२	— १८ ३२
(३) चरान्तर	— ७ ००	— ७ ००
(४) इलाहाबाद में लग्न का मान	१५ २६ २८	१७ २४ २८

इष्टकाल

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिनट पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-२ होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घण्टे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-२ सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियां उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घंटे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मानलो आपने २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय दिल्ली का है। २५ जून का सूर्योदय ५-२८ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै. टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टै. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

	घ.	मि.	
(१) २५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै.टा.
(२) २५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२८	,,
	६	०७	
६-०७ का ढाई गुना किया	६	०७	
	३	०३	३०
इष्टकाल घड़ी पल विपल में	१५	१७	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान
१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना
सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

	घं. मि.	
(१) १० सितम्बर को जन्म समय मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें	२० ४५	भा. स्टै. टा.
(२) १० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	— ६ ०८	,,
१४-३७ को ढाई गुना किया	१४ ३७	
	१४ ३७	
	७ १८ ३०	
(३) इष्टकाल घड़ी पल विपल मे	३६ ३२ ३०	

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं. मि.	
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५ २१	भा. स्टै. टा.
२४ जमा करके लिखा	२९ २१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	— ७ ०८	,,
२२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२ १३	
ढाई गुना किया	२२ १३	
	११ ०६ ३०	
इष्टकाल—घड़ीपल विपल में	५५ ३२ ३०	

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ७ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-७ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-९ हो तो इष्टकाल २½ पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

सूर्योदय परिवर्तन पद्धति

उपरोक्त उदाहरणों में यह बताया गया है कि दिल्ली में जन्मे व्यक्तियों का दिल्ली अक्षांश पर आधारित श्री आर्यभट्ट पंचांग की सहायता से इष्टकाल कैसे निकाला जाता है। अब आपको यह बताया जायेगा कि दिल्ली के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर जन्मे व्यक्तियों का दिल्ली के पंचांग से इष्टकाल कैसे निकाला जाता है। दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से जन्म स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि बताई जा रही है, यह काफी सरल है। जैसे हमने दिल्ली में लग्नों के आरम्भ व समाप्तिकाल की सहायता से अन्य स्थानों के लग्न अवधि काल निकाले थे, वैसे ही सूर्योदय भी निकाला जाता है। इसको कुछ उदाहरण देकर बताते हैं।

उदाहरण (१)—मान लो किसी का जन्म १२ अक्टूबर को प्रातः १०-२५ पर चण्डीगढ़ में हुआ है। आपको इसकी पत्री बनाने के लिए इष्टकाल निकालना है, तो पहले चण्डीगढ़ में १२ अक्टू. का सूर्योदय निकालना पड़ेगा। अक्षांशादि सारिणी (पृष्ठ १०२) से चण्डीगढ़ का विवरण लिया। उत्तर अक्षांश ३०।४०, देशान्तर १-२८ है, १२ अक्टूबर की रवि क्रान्ति ७-१२ दक्षिण क्रान्ति है। चरान्तर सारिणी में ७ दक्षिण क्रान्ति तथा ३१ उत्तर अक्षांश के अन्तर्गत चरान्तर मिनट २ है जो दक्षिण क्रान्ति होने से धन मिनट है। चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है, क्योंकि ३०½ से अधिक है, इसलिए ३१ के कोष्ठक में देखना ठीक रहेगा।

		घं. मि. सै.	भा.स्टै.टा.
(१) सूर्योदय दिल्ली १२ अक्टूबर		६ २४ ००	
(२) चण्डीगढ़ का देशान्तर ऋण है, अतः धन किया	+	० १ २८	
(३) चरान्तर मिनट	+	० २ ००	
(४) चण्डीगढ़ का सूर्योदय १२ अक्टूबर		६ २७ २८	,,

इष्टकाल का गणित उपरोक्त प्रकार से ही होगा—

जन्म समय प्रातः	१० २५ ००	,,
सूर्योदय चण्डीगढ़	६ २७ २८	
घड़ी पल बनाने के लिए ढाई गुना किया	३ ५७ ३२	
	३ ५७ ३२	
	१ ५८ ४६	
घड़ी पल विपल में इष्टकाल	९ ५३ ५०	

उदाहरण (२)—१५ मार्च को जयपुर में सायं ४-५० पर जन्म हुआ है। दिल्ली के पंचांग से जयपुर का सूर्योदय निकालना है। यहां एक बात बता देना आवश्यक है कि हम अपने उदाहरणों में साल का कोई जिक्र नहीं कर रहे हैं। तो कृपया ध्यान रखिए कि अंग्रेजी तारीख के अनुसार प्रत्येक वर्ष सूर्योदय किसी एक तारीख को किसी एक स्थान पर उसी समय पर होगा। जैसे इस उदाहरण में जयपुर में १५ मार्च को सूर्योदय प्रति वर्ष उसी समय पर होगा। इसलिए उदाहरणों में जन्म किसी वर्ष का हो कोई अन्तर नहीं पड़ता।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारिणी से जयपुर का विवरण इस प्रकार है—उत्तर अक्षांश २६।५५ देशान्तर —५।३६ है। १५ मार्च की रवि क्रान्ति २-३१ दक्षिण है। उत्तर अक्षांश २६।५५ को २७ मानकर देखा तो चरान्तर मिनट शून्य है।

		घ.	मि.	सै.	
(१) १५ मार्च को दिल्ली का सूर्योदय		६	३५	००	भा. स्टै टा.
(२) देशान्तर दिल्ली-जयपुर ऋण है, अतः धन किया	+		५	३६	
(३) चरान्तर शून्य है			०	०	
(४) सूर्योदय जयपुर भा. स्टै. टा. में		६	४०	३६	"

रवि क्रान्ति—अक्षांश

पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा भूमध्य रेखा है, जिसका अक्षांश ० शून्य है। इसके उत्तर भाग को उत्तर गोल तथा दक्षिण भाग को दक्षिण गोल कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर भाग में ९० और दक्षिण भाग में ९० अक्षांश हैं। उत्तर-दक्षिण अंशों को अक्षांश कहते हैं। जैसे दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर स्थित है। अर्थात् भूमध्य रेखा से उत्तर गोल में २८ व २९ अक्षांश के बीच में स्थित है, प्रत्येक अक्षांश को ६० भागों में विभाजित किया गया है, उनमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर है। एक अक्षांश की दूरी लगभग ७५ मील होती है, इसलिए एक अक्षांश का भी आगे ६० छोटे भागों में विभाजित किया जाता है। पृथ्वी पर किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति बताने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अंडाकार पदार्थ को लम्बाई में अर्थात् उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान में काटे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित स्थान पर आयेगा। इसलिए भूमध्य रेखा एक ही स्थान पर हो सकती है। भूमध्य रेखा ० शून्य अक्षांश पर है, इसके दक्षिण ० से ९० अंश तक दक्षिण अक्षांश और उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक ० से ९० अंश तक उत्तर अक्षांश है। आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा या घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है, साथ ही वह एक गोलाकार अंडाकार परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसा करते समय वह अपने केन्द्रस्थान की तरफ थोड़ा झुका हुआ रहता है। पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर इसी प्रकार घूमती है और उसके इस बदलते झुकाव के कारण सूर्य उत्तरायण तथा दक्षिणायण होता रहता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझाने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया है, परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में अधर में घूमती है।

२१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात् पहली राशि में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी का भूमध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है। रवि क्रान्ति शून्य होती है। दिन-रात उस समय पृथ्वी के मध्य भाग में बराबर होते हैं। उसके बाद सूर्य उत्तर गोल में ऊपर को चढ़ता जाता है और सूर्य की उत्तर क्रान्ति प्रतिदिन बढ़ती जाती है। २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है। उस दिन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और उत्तर रवि क्रान्ति अपने चरम अंश २३ पर पहुंच जाती है। आकाशीय क्रान्ति पथ के साथ पृथ्वी का क्रान्ति पथ २३½° का कोण बनाता है। उस समय दिन सबसे अधिक और रात न्यूनतम होती है। दुनिया का कोई नक्शा उठाकर देखो, भूमध्य रेखा ० अक्षांश भारत के दक्षिण में काफी दूर समुद्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of cancer) भारत में अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब कर्क रेखा पर होता है उस समय भारत के मध्य भाग उसके सीधे प्रभाव में होने से अधिकतम गर्मी की ऋतु का अनुभव करते हैं।

२१ जून के लगभग सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन होता है। २१ सितम्बर तक सूर्य भूमध्य रेखा पर ० अक्षांश पर पहुंच जाता है, तब उसकी उत्तर क्रान्ति भी कम होते-होते शून्य हो जाती है। इसके बाद भी सूर्य रहता तो दक्षिणायण ही है यानी दक्षिण की ओर ही जाने वाला, परन्तु २१ सितम्बर तक तो पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में था। इसके बाद वह दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से काफी दूरी पर पहुंच जाता है। अतः भारत में शरद् ऋतु आरम्भ हो जाती है। सूर्य निरन्तर दक्षिणायण रहते हुए दक्षिण गोल में अग्रसर होता रहता है और उसकी दक्षिण क्रान्ति २१ दिसम्बर तक चरम पर पहुंच जाती है। २१ सितम्बर को दिन-रात बराबर हो जाते हैं। २१-२२ दिसम्बर को दिन सबसे छोटा और रात सबसे बड़ी होती है। यहां से दिन बढ़ना शुरू होता है और इसी कारण २५ दिसम्बर को बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। २१ दिसम्बर के लगभग सायन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और अपनी दक्षिण यात्रा के चरम बिन्दु मकर रेखा पर पहुंच जाता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) हिन्द महासागर में भारत से बहुत दूर दक्षिण में है। यह रेखा दक्षिण अमरीका के मध्य भाग, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के मध्य में होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है उस समय इन देशों में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूर होने के कारण यहां मौसम ठंडा होता है। २१ दिसम्बर के बाद सूर्य उत्तर की ओर आने लगता है, वैसे सूर्य तो आकाश में स्थिर है, परन्तु पृथ्वी की गति में क्रान्ति में परिवर्तन के कारण वह इस प्रकार स्थान परिवर्तन करता प्रतीत होता है और बोलचाल तथा लिखने की भाषा में यही कहा जाता है कि सूर्य चल रहा है।

२१ दिसम्बर के लगभग सूर्य उत्तरायण हो जाता है, परन्तु २१ मार्च तक वह दक्षिण गोलार्ध में ही रहता है। २१ मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा पर आ जाता है, २१ मार्च से २१ सितम्बर तक सूर्य उत्तर गोल में रहता है और २१ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण गोल में। २१ दिसम्बर से २१ जून तक सूर्य उत्तरायण रहता है और २१ जून से २१ दिसम्बर तक दक्षिणायण। सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहां के पूरब-पश्चिम क्षितिज में सूर्योदय व सूर्यास्त को देखकर अथवा ऊपर के आकाश में सूर्य के भ्रमण पर ध्यान देकर या अपने घर में आने वाली धूप तथा सूर्य की किरणों के बदलते कोणों को देखकर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायण होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिनमान आदि में प्रतिदिन जो अन्तर आता है उसे चरान्तर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रान्ति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-२ परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरान्तर सारिणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए है और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरान्तर तथा रवि क्रान्ति सारिणी इस पंचांग के पृ. ११० व ११४ पर दी हुई हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रेखांश

उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक १८० अक्षांश हैं, जिसमें ९० उत्तर अक्षांश है और ९० दक्षिण अक्षांश हैं, इनकी गिनती भूमध्य रेखा से आरम्भ होती है। भूमध्य रेखा ० अक्षांश पर है, जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अंशों में विभाजित किया गया है उसी प्रकार इसको पूरब-पश्चिम ३६० अंशों में विभाजित किया गया है, इनको पूर्व रेखांश और पश्चिम रेखांश कहते हैं। उत्तर-दक्षिण विभाजित करने पर तो भूमध्य रेखा जहां है वहीं हो सकती है, परन्तु पूर्व-पश्चिम विभाजन में किसी भी रेखा को ० माना जा सकता है। आजकल इसे लन्दन के पास ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे ० रेखांश मानकर इसके पूर्व के रेखांशों को पूर्व रेखांश तथा पश्चिम के रेखांशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है। ग्रीनविच में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला है, इस कारण इसे यह महत्त्व दिया गया है। कभी यह सम्मान भारत की उज्जैन नगरी को प्राप्त था। पृथ्वी की परिधि भूमध्य रेखा पर २९४०० मील है। अतएव भूमध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील होती है, पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात् ३६० अंश २४ घंटे में सूर्य के सामने से गुजर जाते हैं। एक रेखांश पर यह अन्तर ४ मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। मान लो कलकत्ता नगर में सूर्योदय ५-३० पर हुआ, कलकत्ता ८८-२३ पूर्व रेखांश पर है तो ८९-२३ पर स्थित नगर में सूर्योदय ४ मिनट बाद होगा और इस प्रकार प्रति रेखांश ४ मिनट का अन्तर कलकत्ते के समय से आता जाएगा।

कुछ समय पहले तक प्रत्येक नगर अपना-२ अलग समय निर्धारण अपनी धूपघड़ियों या अन्य प्रकार की रेत घड़ियों, जल घड़ियों की सहायता से मध्याह्न और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे। सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैंडर्ड टाईम रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५½ घंटे आगे था और ८२½ पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैंडर्ड समय १ सितम्बर १९१७ से लागू कर दिया गया। परन्तु बंगाल प्रान्त और आसपास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रान्तों ने सितम्बर १९४१ में स्टैंडर्ड टाईम को व्यवहार में लाना आरम्भ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितम्बर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे, समय एक घंटा बढ़ा दिया गया था, अर्थात् ग्रीनविच समय से ६ घं. ३० मि. आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैंडर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५½ घंटा आगे है और ८२½ पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-२ स्थानीय समय रखे तो कामकाज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैंडर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही समय काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है उसका समय उतने ही अन्तर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर होता है। अतएव १५ रेखांश पर १ घण्टे का अन्तर हुआ, जो देश ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है, उनका स्टैंडर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टे के अन्तर पर निर्धारित है। हालैंड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेलजियम, हंगरी, युगोस्लाविया, डेन्मार्क, स्विटजरलैन्ड, स्पेन, पोर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैंडर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टा आगे है। मिश्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैन्ड, सीरिया, इजराइल, सूडान, बल्गेरिया आदि देशों का समय दो घंटे आगे है। यह देश २ घंटे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, इथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घंटे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४½ घंटे तथा पाकिस्तान ५ घंटे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घंटे तथा वर्मा ६½ घंटे आगे है। थाईलैंड, इन्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया, ७ घंटे के क्षेत्र हैं। चीन, होंगकांग, फिलीपीन्स ८ घंटे तथा कोरिया व जापान ९ घंटे के अन्तर पर हैं। आस्ट्रेलिया १० घंटे और न्यूजीलैण्ड १२ घंटे के अन्तर पर हैं। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय ग्रीनविच से उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंग्लैण्ड तथा स्काटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयार्क, वाशिंगटन, टोरन्टो, ओटावा, बोस्टन आदि नगर ५ घंटे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घंटे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लासऐंजिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घंटे कम है। किसी भी एटलस में दुनिया का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैंडर्ड समय निर्धारण में किन-२ बातों का ध्यान रखा जाता है यह आपको ज्ञात हुआ।

भारत वर्ष की सीमायें लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती है। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घंटे के समय क्षेत्र में रखा गया है और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगलादेश को ६ घंटे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५½ घंटे का समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर आता है तो ५½ घंटे का अन्तर ८२-३० रेखांश पर आता है (८२-३० × ४ = ३३० मि. = ५½ घं.)। भारत में ८२-३० अक्षांश इलाहाबाद अयोध्या के आसपास उत्तर से दक्षिण काकीनाडा मछलीपट्टम आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैंडर्ड समय रहता है, परन्तु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश अक्षांशादि सारिणी से ज्ञात कर लिए जाते हैं और तत्पश्चात उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है।

जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है। (कुछ आचार्य ७७।१२ कुछ ७७।१४ भी मानते हैं)। यह रेखांश ८२-३० से ५।१७ कम है। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से ५-१७ × ४ = २१-०८ अर्थात् २१ मिनट ८ सैकिण्ड। दिल्ली का स्थानीय समय स्टैंडर्ड समय से २१ मिनट ८ सैकिण्ड कम होगा। यदि किसी स्थान का रेखांश ८२-३० से अधिक है तो वहां का स्थानीय समय अधिक होगा। जैसे पटना का पूर्व रेखांश ८५-१३ है, जो ८२-३० से २-४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय (२-४३ × ४ = १०-५२) १० मिनट ५२ सैकिण्ड स्टैंडर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारिणी इस पंचांग में पृष्ठ १०२ पर दी गई है। इसमें मुख्य-२ नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैंडर्ड समय से उनका अन्तर तथा दिल्ली के समय से देशान्तर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांशादि सारिणी में यह नाम नहीं है। नक्शे में यह धौलपुर तथा ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर है अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। यह स्थान नक्शे में धौलपुर, ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है। आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। नक्शे में उसका स्केल दिया रहता है कि एक इंच या एक सैंटीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नापकर उनके अक्षांश-रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश-रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ, वह इस प्रकार है—

	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	−१८-२८	+२-३६
करौली	२६-३८	७७।०५	−२१-४०	−०-३६
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	−१७-२०	+३-४४
भिण्ड	२६-४०	७८-५०	−१८-४०	+२-२४

लग्न

पृथ्वी २४ घंटे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-२ तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरक्षन सूर्य प्रायः १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैंडर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रातः के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रातः पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७.३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९.३० बजे कर्क के ९ अंश, ११.३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानी मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आवेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अंडाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न निकाली जा सकती है।

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है :—

(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय
(२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में)
(३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट
(४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी

(१) सूर्योदय—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०७-१०८ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-९ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैंडर्ड समय जानने के लिए इनमें स्थान विशेष का स्टैंडर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ १०८-९ पर दी गई सूर्योदय सारिणी में चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८ तथा
१५ " " "	६-०२ दिया गया है

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९) में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)

	६ ०० ००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६ ०० ००
भा. स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैंडर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	० २२ ३२
दृग्य वक्री भवन संस्कार	० ५ ००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा. स्टै. समय अनुसार	६ २७ ३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ १०८-९ पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ १०८ पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च=६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४ = ७ मिनट का।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया ६ १० ००
जयपुर का स्टैंडर्ड अन्तर धन किया ० २६ ४०
दृश्य वक्री भवन संस्कार ० ४ ००
भा. स्टै. टा. में जयपुर का सूर्योदय ६ ४० ४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है।

यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे मे थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-२ पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित मे आ सकता है।

(२) **इष्टकाल**—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) **सूर्य स्पष्ट**—पंचांग मे दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते है, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) **लग्न सारिणी**—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग मे पृष्ठ ११५ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८।३८ अक्षांश की सारिणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग मे लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हम अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित कर रहे हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रातः ५-३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग मे पृष्ठ ११५ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३ अथवा १३।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खडे कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आडे कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला	घं.	मि.	सै.
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टै. टा.	११	५५	००
२५ जून का सूर्योदय ,,	५	२८	००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६	२७	००
	६	२७	००
	३	१३	३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६	७	३०

पृष्ठ ११५ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३।१५ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३-१५+१६-८=२९-२३

उपरोक्त २९-२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ४ अंशों के कोष्ठक में २९-२६ तथा ५ अंश के कोष्ठक में २९-३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११-५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ४ अंश बीत चुके हैं। पांचवें अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी है। वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६७ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११-३७ से १३-५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी में अंश भी ज्ञात हो गए है, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९-३७ में से २९-२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९-३३ तक (२९-३३—२९-२६) ७ अंकों में=६०×७=४२०÷११=३८।११ लग्न आई ५।४।३८।११ कन्या के ४ अंश ३८ कला ११ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

लग्न सारिणी

इस पंचांग मे अक्षांश १९, २१, २३, २५, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२ की अलग-२ सारिणियां दी हुई हैं। उन पर यह भी संकेत दे दिये गये हैं कि वह किन-किन मुख्य-मुख्य नगरों के लिये प्रयोग मे लाई जा सकती हैं। आप जिस नगर का लग्न निकालना चाहें उसके अक्षांश के अनुसार उपयुक्त सारिणी का प्रयोग करें। यह सारिणियां २४ अयनांश पर गणित करके बनाई गई हैं। वर्तमान अयनांश २३।४४ चल रहा है जो २४ अयनांश के अधिक निकट है और २३ अयनांश पर बनी सारिणियों के स्थान पर २४ अयनांश की सारिणियां अधिक शुद्ध सूक्ष्म गणित फल उपलब्ध करा सकती हैं। उपरोक्त सारिणियों से उत्तर भारत के किसी भी स्थान की लग्न स्पष्ट की जा सकती है।

इस विषय का अधिक विवरण जानने के लिए पुस्तक "ज्योतिष शिक्षा मध्यमा गणित" में पढ़ें। इसमें विश्व के किसी भी स्थान की सूक्ष्म शुद्ध लग्न स्पष्ट करने की विधियां विस्तार से समझाई गई हैं। अन्य अनेक विशेषतायें, गणित प्रक्रियायें भी दी गई हैं। ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए यह अनुपम पुस्तक है।

"ज्योतिष शिक्षा मध्यमा गणित"

लेखक :—

पं० लक्ष्मी नारायण शर्मा

मंगाने का पता :—

धर्मसन प्रकाशन

२५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा यह गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि पृष्ठ ११७ पर दी गई है।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्रायः सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैंडर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ११० पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्य काल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किए जाते हैं। यही ५-३० प्रातःकाल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्रायः सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्रायः सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने में सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहायता से गणित शीघ्रता व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों का जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रातः ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रातः ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रातः से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घं. १५ मि. अर्थात् ९७५ मि. भक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रातः के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रातः	६	२१	५४
१५ ,, ,, ,,	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति—

तो ९७५ ,, ,, ,,

$$\frac{७१२ \text{ कला} \times ९७५}{१४४०}$$

$= ६९४२०० \div १४४० = ४८२$ कला $=$ ८ अंश २ कला

१५ तारीख ५-३० प्रातः का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रातः ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

२४ घण्टे की गति	०	११	५२
१२ ,, ,, (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ ,, ,, (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ ,, (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ ,,	०	८	०२
	+ ६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घण्टे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रातः ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्र स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	९		१	७	२९		१८	९	४

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	१८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		—	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन				चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	३०	केतु	२	—	५	सूर्य	—	२	२१	राहु	१४	२	३	शनि	१०	२	१६	१५	२०	शुक्र	१७	—	—	चन्द्र	६	—	—	राहु	६	३	१८	शनि	१	१०	२४
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१	१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५	१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—	१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४	१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९	१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३	१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८	१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२	१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७	१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१	१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६	१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०	१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५	१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९	१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४	१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८	१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३	१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७	१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२	१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६	१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१	१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५	१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—	१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४	१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९	१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३	१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८	१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२	२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७	२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१	२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६	२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०	२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५	२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७
१५	१०		१७	३	—		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९	२१	०		८	६	—		१	९	—		१४	९	१८		११	५	२१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	१०	शुक्र	८	३	—	चन्द्र	१	७	१५	गुरु	१४	७	६	बुध	११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	—	१३

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२७	०	सूर्य	५	१०	६	मंगल	५	—	२७	गुरु	७	७	६	बुध	३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	९		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक-पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष मास	दिन	शुक्र २० वर्ष मास	दिन	सूर्य ६ वर्ष मास	दिन	चन्द्रमा १० वर्ष मास	दिन	मंगल ७ वर्ष मास	दिन	राहु १८ वर्ष मास	दिन	गुरु १६ वर्ष मास	दिन	शनि १९ वर्ष मास	दिन	बुध १७ वर्ष मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	६
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिये हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी जाता है। परन्तु हमने घटियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इस दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सेकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है।

उस समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौनसी अन्तर दशा का कौनसा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १५४ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्ष

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य अन्तर दशा — सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
३	६	४	१०	६	११	१०	४	०	मास	५	६	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	दिन
१०	०	६	२०	१८	१२	६	६	०	दिन	२४	०	१०	१२	२४	६	१८	१८	०	घ.

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा — सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	१	मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	६	दिन	७	१८	१६	६	१७	७	२१	६	१०	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.	२१	४४	४८	१७	५१	२१	०	१८	३०	घ.

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा — सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ग्रह
१	१	१	१	०	१	०	०	०	मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	दिन
३६	१२	१८	४४	४४	०	१२	०	४४	घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	घ.

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा — सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
१	१	०	१	०	०	०	१	१	मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२४	१८	१६	२०	१४	२८	१६	२१	१४	दिन	१३	१७	२१	१५	२४	१७	१५	१०	१८	दिन
६	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	घ.	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	घ.

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा — सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०	मास
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१६	१०	दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	दिन
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा — चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	१	१	१	०	१	०	वर्ष	०	१	१	१	१	१	०	१	०	मास
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मास	२५	१७	१४	१०	१७	१२	१७	२०	१५	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा — चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ग्रह
०	१	०	१	०	०	१	०	०	मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१	मास
१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	१७	दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	दिन
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	घ.	०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०	घ.

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा — चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ग्रह
२	२	२	०	२	०	१	०	२	मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२	मास
४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	घ.

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा — चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
२	०	२	०	१	०	२	२	२	मास	०	१	०	१	०	१	०	१	०	मास
१२	२६	२५	२५	१२	२६	१६	८	२०	दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२६	दिन
४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५	घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	घ.

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा — चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
३	१	१	१	३	२	३	२	१	मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१	मास
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	दिन	६	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	घ.

भौम(मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा — भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ग्रह	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	ग्रह
०	१	०	१	०	०	१	०	०	वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मास	८	२२	१६	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
२७	१८	६	६	२७	२७	०	६	०	दिन	३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५	घ.

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा — भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ग्रह	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ग्रह
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास	१	१	१	०	२	०	०	०	१	मास
२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन	१४	२३	१७	१६	२६	१६	२०	१६	२०	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा — भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

श.	बृ.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
२	१	०	१	०	१	०	१	१	मास	१	१	१	०	१	०	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२६	२३	दिन	२०	२०	२६	१७	२६	२०	२३	१७	२६	दिन
१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	घ.	४४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	घ.

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा — भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१६	२३	२०	दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२६	२४	दिन
३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४६	घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा — भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दिन	१	२८	३	२९	१२	१२	५	१०	१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा — राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ग्रह	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	ग्रह
२	२	२	२	१	३	०	१	१	वर्ष	४	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
८	४	१०	६	०	१०	६	०	१	मास	२५	६	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	दिन
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	दिन	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	घ.

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा — राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	ग्रह
३	४	४	१	४	१	२	१	४	मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४	मास
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	६	दिन	१२	२५	२६	२१	२१	२५	२६	३	१६	दिन
१६	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	घ.

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा — राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
४	१	५	१	२	१	४	४	४	मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१	मास
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	दिन	२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२६	२३	दिन
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	घ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	यह
६	१	३	२	५	४	५	५	२	मास
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	यह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	दिन
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	४४	०	घ.

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यह
१	१	२	२	२	१	३	०	०	मास
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	घ.

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	यह
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
१६	२०	१४	२३	१७	१६	२६	१६	२८	दिन
३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	घ.

गुरु(बृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	यह
२	२	२	०	२	०	१	०	२	वर्ष
१	६	३	११	८	६	४	११	४	मास
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	दिन

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	यह
३	१	४	१	२	१	४	१	२	मास
१२	१८	१४	८	८	४	१४	२५	१	दिन
४८	१८	०	२४	०	४८	१२	घ.		

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	यह
४	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
२४	६	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	दिन
२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	घ.

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	यह
३	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
२२	१८	१०	८	१७	२	१८	६	१८	दिन
४८	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	घ.	

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	यह
०	१	०	०	१	१	१	१	१	मास
१६	२६	१६	२०	१०	२०	१४	२३	१७	दिन
३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	घ.

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	यह
५	१	२	१	४	५	४	५	१	मास
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	यह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१४	२४	१६	१२	८	१५	१०	१६	१८	दिन
२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	घ.

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यह
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	यह
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
१६	२०	१४	२३	१७	१६	२६	१६	२८	दिन
३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	घ.

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	यह
३	४	३	१	४	१	२	१	४	मास
२	१६	१२	२५	२६	२१	१२	२५	६	दिन
४८	०	४८	०	३६	२४	०	४८	०	घ.

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	यह
३	२	१	३	०	१	१	२	२	वर्ष
०	८	१	८	११	७	१	१०	६	मास
३	६	६	०	१२	०	६	६	१२	दिन

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	यह
५	५	२	६	१	३	२	५	४	मास
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	दिन
०	६	१२	११	०	१४	११	२७	२४	घ.

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	यह
४	१	५	१	२	१	४	४	५	मास
१७	२६	१९	१८	२५	२४	६	३	२३	दिन
१६	३२	३०	२७	४४	३२	२१	१२	२४	घ.

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	यह
६	१	३	२	५	४	६	४	२	मास
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	यह
०	०	०	१	१	१	१	१	१	मास
१७	२८	१६	२१	१५	२४	१८	११	२७	दिन
६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०	घ.

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यह
१	१	२	२	२	२	१	३	०	मास
१७	३	२४	१६	०	२०	३	५	२८	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	यह
०	१	१	२	१	०	२	०	१	मास
२३	२६	२३	३	२६	२३	६	१६	३	दिन
१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५	घ.

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	यह
५	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
३	१६	१२	२५	२६	२१	२१	२५	२६	दिन
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	घ.

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	यह
४	४	४	१	५	१	२	१	४	मास
१	२४	६	२३	२	१५	१६	२३	१६	दिन
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	घ.

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	यह
०	२	०	१	०	२	२	२	०	मास
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	दिन
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	६	घ.

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	यह
४	१	४	१	४	१	२	१	४	मास
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	दिन
४८	३५	३०	२१	१५	३५	३०	३६	१६	घ.

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	यह
०	१	०	०	०	१	१	१	१	मास
२०	२६	१७	२१	२०	२३	१०	२६	२०	दिन
४०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४	घ.

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	यह
५	१	२	१	५	४	५	४	१	मास
२०	२१	२५	२६	३	१६	११	२३	२६	दिन
०	०	०	०	०	०	३०	३०	३०	घ.

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	यह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	दिन
१८	३०	५१	४४	४८	२७	२१	५१	०	घ.

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यह
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१२	२६	१६	८	२०	१२	२६	२५	२५	दिन
३०	४५	२०	०	४५	१५	४५	०	३०	घ.

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	यह
०	१	१	१	०	१	०	०	०	मास
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२६	१७	२६	दिन
५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५	घ.

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	यह
४	४	४	४	१	५	१	२	१	मास
१	२५	१६	८	२०	१२	२६	२५	२५	दिन
३०	४५	२०	०	४५	१५	४५	०	३०	घ.

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	यह
३	४	३	१	४	१	२	१	४	मास
१८	८	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	यह
५	४	४	१	५	१	२	१	४	मास
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	६	दिन
२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	घ.

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	यह
०	१	०	०	०	१	०	१	०	वर्ष
१	४	२	०	६	०	११	१	११	मास
२७	०	६	०	२७	१०	९	६	०	दिन

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	यह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
२४	७	१२	०	२२	१६	२३	२०	६	दिन
३०	२१	१४	३०	३५	३०	३१	४८	०	घ.

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	यह
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२६	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	यह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घ.

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यह
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२६	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	यह
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
६	२२	१६	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३५	३	३६	१६	४६	३५	३०	२१	१५	घ.

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	यह
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२६	२०	२६	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	यह
१	१	१	१	०	१	०	०	१	मास
१६	२३	१७	१६	२६	१६	२८	१६	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	यह
२	१	०	२	०	१	१	१	१	मास
३	२६	२३	६	१६	३	२३	२६	२३	दिन
१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	घ.

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	यह
४	१	५	१	२	१	४	०	४	मास
२०	२०	२६	१७	२६	२०	२३	१७	२६	दिन
३४	५०	३०	५१	४५	५०	३२	२६	३१	घ.

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	यह
३	१	१	३	२	३	२	१	१	वर्ष
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	यह
६	२	३	२	६	५	६	५	२	मास
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	यह
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	यह
१	१	३	२	३	२	१	३	१	मास
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	यह
०	२	१	२	१	०	२	०	१	मास
२४	३	२६	६	२६	२४	१०	२१	५	दिन
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	घ.

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	यह
५	४	५	५	२	६	१	३	२	मास
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	यह
४	५	४	१	५	१	२	१	४	मास
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	दिन
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	घ.

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	यह
६	५	२	६	१	३	२	५	५	मास
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	दिन
३०	३०	३०	०	०	०	०	३०	०	घ.

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	यह
४	१	५	१	२	१	५	०	५	मास
२४	२०	२०	२१	२४	२०	३१	५	२०	दिन
३०	५०	०	०	०	३०	०	०	०	घ.

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बु.	श.	बु.	यह
०	२	०	१	०	२	१	२	१	मास
२०	२१	५	२०	५	२५	५	१०	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र चार

कौन-सा ग्रह किस नक्षत्र के किस चरण में चल रहा है। यह जानने के लिए उसके स्पष्ट राशि अंशों को देखना होता है। साथ में एक सारिणी दी जा रही है इसमें चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से नक्षत्र तथा चरण का ज्ञान होता है। चन्द्रमा ०-०-० शून्य राशि अंश कला अर्थात् मेष राशि के शून्य अंश कला से आरम्भ होकर ३ अंश २० कला तक अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में होता है। ०-३-२० से एक विकला भी आगे चल गया तो दूसरे चरण में माना जायेगा। इसी प्रकार सभी स्थितियों में समझना।

जिस ग्रह का नक्षत्र चार देखना हो उसके स्पष्ट राशि अंश देखें। मान लो सूर्य सिंह के १६ अंश २६ कला पर है अर्थात् ४-१६-२६ है तो इस सारिणी में ज्ञात होगा कि पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र का प्रथम चरण ४-१३-२० से ४-१६-४० तक है। अर्थात् सूर्य पू.फा. १ में हुआ। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों का नक्षत्र चार जाना जा सकता है।

आर्यभट्ट पंचांग में साप्ताहिक कुण्डलियों में साप्ताहिक नक्षत्र चार दिया जाता है। अन्य स्थितियों का नक्षत्र चार इस सारिणी से जाना जा सकता है।

चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से नक्षत्र तथा चरण बोधक सारिणी

नक्षत्र	चरण	आरम्भ चन्द्रमा के स्पष्ट	समाप्ति चन्द्रमा के स्पष्ट
		रा. अं. क.	रा. अं. क.
अश्विनी	प्रथम	० ० ०	० ३ २०
	२	० ३ २०	० ६ ४०
	३	० ६ ४०	० १० ०
	४	० १० ०	० १३ २०
भरणी	१	० १३ २०	० १६ ४०
	२	० १६ ४०	० २० ०
	३	० २० ०	० २३ २०
	४	० २३ २०	० २६ ४०
कृत्तिका	१	० २६ ४०	१ ० ०
	२	१ ० ०	१ ३ २०
	३	१ ३ २०	१ ६ ४०
	४	१ ६ ४०	१ १० ०
रोहिणी	१	१ १० ०	१ १३ २०
	२	१ १३ २०	१ १६ ४०
	३	१ १६ ४०	१ २० ०
	४	१ २० ०	१ २३ २०
मृगशिर	१	१ २३ २०	१ २६ ४०
	२	१ २६ ४०	२ ० ०
	३	२ ० ०	२ ३ २०
	४	२ ३ २०	२ ६ ४०
आर्द्रा	१	२ ६ ४०	२ १० ०
	२	२ १० ०	२ १३ २०
	३	२ १३ २०	२ १६ ४०
	४	२ १६ ४०	२ २० ०
पुनर्वसु	१	२ २० ०	२ २३ २०
	२	२ २३ २०	२ २६ ४०
	३	२ २६ ४०	३ ० ०
	४	३ ० ०	३ ३ २०
पुष्य	१	३ ३ २०	३ ६ ४०
	२	३ ६ ४०	३ १० ०
	३	३ १० ०	३ १३ २०
	४	३ १३ २०	३ १६ ४०
अश्लेषा	१	३ १६ ४०	३ २० ०
	२	३ २० ०	३ २३ २०
	३	३ २३ २०	३ २६ ४०
	४	३ २६ ४०	४ ० ०
मघा	१	४ ० ०	४ ३ २०
	२	४ ३ २०	४ ६ ४०
	३	४ ६ ४०	४ १० ०
	४	४ १० ०	४ १३ २०
पू. फा.	१	४ १३ २०	४ १६ ४०
	२	४ १६ ४०	४ २० ०
	३	४ २० ०	४ २३ २०
	४	४ २३ २०	४ २६ ४०
उ. फा.	१	४ २६ ४०	५ ० ०
	२	५ ० ०	५ ३ २०
	३	५ ३ २०	५ ६ ४०
	४	५ ६ ४०	५ १० ०
हस्त	१	५ १० ०	५ १३ २०
	२	५ १३ २०	५ १६ ४०
	३	५ १६ ४०	५ २० ०
	४	५ २० ०	५ २३ २०
चित्रा	१	५ २३ २०	५ २६ ४०
	२	५ २६ ४०	६ ० ०
	३	६ ० ०	६ ३ २०
	४	६ ३ २०	६ ६ ४०
स्वाती	१	६ ६ ४०	६ १० ०
	२	६ १० ०	६ १३ २०
	३	६ १३ २०	६ १६ ४०
	४	६ १६ ४०	६ २० ०
विशाखा	१	६ २० ०	६ २३ २०
	२	६ २३ २०	६ २६ ४०
	३	६ २६ ४०	७ ० ०
	४	७ ० ०	७ ३ २०
अनुराधा	१	७ ३ २०	७ ६ ४०
	२	७ ६ ४०	७ १० ०
	३	७ १० ०	७ १३ २०
	४	७ १३ २०	७ १६ ४०
ज्येष्ठा	१	७ १६ ४०	७ २० ०
	२	७ २० ०	७ २३ २०
	३	७ २३ २०	७ २६ ४०
	४	७ २६ ४०	८ ० ०
मूल	१	८ ० ०	८ ३ २०
	२	८ ३ २०	८ ६ ४०
	३	८ ६ ४०	८ १० ०
	४	८ १० ०	८ १३ २०
पू. षा.	१	८ १३ २०	८ १६ ४०
	२	८ १६ ४०	८ २० ०
	३	८ २० ०	८ २३ २०
	४	८ २३ २०	८ २६ ४०
उ. षा.	१	८ २६ ४०	९ ० ०
	२	९ ० ०	९ ३ २०
	३	९ ३ २०	९ ६ ४०
	४	९ ६ ४०	९ १० ०
श्रवण	१	९ १० ०	९ १३ २०
	२	९ १३ २०	९ १६ ४०
	३	९ १६ ४०	९ २० ०
	४	९ २० ०	९ २३ २०
धनिष्ठा	१	९ २३ २०	९ २६ ४०
	२	९ २६ ४०	१० ० ०
	३	१० ० ०	१० ३ २०
	४	१० ३ २०	१० ६ ४०
शतभिषा	१	१० ६ ४०	१० १० ०
	२	१० १० ०	१० १३ २०
	३	१० १३ २०	१० १६ ४०
	४	१० १६ ४०	१० २० ०
पू. भा.	१	१० २० ०	१० २३ २०
	२	१० २३ २०	१० २६ ४०
	३	१० २६ ४०	११ ० ०
	४	११ ० ०	११ ३ २०
उ. भा.	१	११ ३ २०	११ ६ ४०
	२	११ ६ ४०	११ १० ०
	३	११ १० ०	११ १३ २०
	४	११ १३ २०	११ १६ ४०
रेवती	१	११ १६ ४०	११ २० ०
	२	११ २० ०	११ २३ २०
	३	११ २३ २०	११ २६ ४०
	४	११ २६ ४०	१२ ० ०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्रों के भेद

(१) क्षिप्र नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त और अभिजित यह चार नक्षत्र क्षिप्र नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में यात्रा, नृत्य, गीत, मंगल कार्य, नये वस्त्राभूषण धारण करना, वाणिज्य व्यवसाय तथा कला कौशल के कार्य शुभ फलदायक होते हैं।

(२) उग्र नक्षत्र—भरणी, मघा, पू.फा., पू.षा. तथा पू.भा. यह चार नक्षत्र उग्र नक्षत्र हैं। इनमें विष, अग्नि, शस्त्र घात मारण, आपरेशन, आक्रमण आदि उग्र कार्यों में ही सफलता मिलती है, शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

(३) मिश्र नक्षत्र—कृत्तिका तथा विशाखा यह दो नक्षत्र मिश्र है, इनमें अग्नि सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलती है। जैसे—बोइलर, भट्टी, वैल्डिंग, धातु गलाना इत्यादि। शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

(४) ध्रुव नक्षत्र—रोहि., उ.फा., उ.षा. और उ.भा. यह चार नक्षत्र ध्रुव संज्ञक हैं। इनमें सभी स्थिर कार्य जैसे—मकान बनाना, नींव रखना, उपनयन, कृषि, खेती, बाग बगीचा, नौकरी आरम्भ करना शुभ है।

(५) मृदु नक्षत्र—मृग., चित्रा, अनु., रेव. यह चार नक्षत्र मृदु संज्ञक हैं। इनमें सभी शुभ कार्य जैसे—यात्रा, नृत्य गीत, मंगल उत्सव, वस्त्र धारण, नौकरी, रोजगार आरम्भ करना शुभ रहता है।

(६) चर नक्षत्र—पुन., स्वा., श्रव., धनि. और शतभिषा यह पांच नक्षत्र चर संज्ञक हैं। इनमें यात्रा करना, कार, स्कूटर, सवारी, वाहन खरीदना, नृत्य, गीत आयोजन और थोड़े समय में समाप्त हो जाने वाले सभी अल्पकालिक कार्य सम्पन्न करना शुभ है।

(७) तीक्ष्ण नक्षत्र—आर्द्रा, अश्ले., ज्येष्ठा और मूल यह तीक्ष्ण नक्षत्र हैं। इनमें मारण, मोहन, उच्चाटन, भूतप्रेत, वैताल सिद्धि श्मशान साधना करने से शीघ्र सिद्धि होती है। शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

अवकहडा चक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण, वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधक चक्र)

नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा
नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी
योनी	अश्व योनी	गज योनी	मेष योनी	सर्प योनी	सर्प योनी	श्वान योनी	मार्जार योनी	मेष योनी	मार्जार योनी
गण	देवगण	मनुष्य गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	देवगण	मनुष्य गण	देवगण	देवगण	राक्षस गण
चरणाक	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
चरणाक्षर	चू चे चो ला	ली लू ले लो	अ इ उ ए	ओ वा वी वू	वे वो क की	कू घ ङ छ	के को हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो
राशि	मेष			वृष		मिथुन		कर्क	
राश्याधिपति	मंगल			शुक्र		बुध		चन्द्र	
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण			वैश्य वर्ण		शूद्र वर्ण		विप्र वर्ण	
वश्य	चतुष्पाद			चतुष्पाद		मानव		जलचर	

नक्षत्र	मघा	पूर्वा फाल्गुनी	उत्तरा फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी
योनी	मूषक योनी	मूषक योनी	गो योनी	महिष योनी	व्याघ्र योनी	महिष योनी	व्याघ्र योनी	मृग योनी	मृग योनी
गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण	राक्षस गण	देव गण	राक्षस गण	देव गण	राक्षस गण
चरणाक	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
चरणाक्षर	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पो पी	पू ष ण ठ	पे पो रा री	रू रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यू
राशि	सिंह			कन्या		तुला		वृश्चिक	
राश्याधिपति	सूर्य			बुध		शुक्र		मंगल	
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण			वैश्य वर्ण		शूद्र वर्ण		विप्र वर्ण	
वश्य	वनचर			मानव		मानव		कीटक	

नक्षत्र	मूला	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शततारका	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	आद्या नाड़ी	मध्या नाड़ी	अन्त्या नाड़ी
योनी	श्वान योनी	वानर योनी	नकुल योनी	वानर योनी	सिंह योनी	अश्व योनी	सिंह योनी	गो योनी	गज योनी
गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण	राक्षस गण	राक्षस गण	मनुष्य गण	मनुष्य गण	देव गण
चरणाक	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
चरणाक्षर	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू थ झ ञा	दे दो चा ची
राशि	धनु			मकर		कुम्भ		मीन	
राश्याधिपति	गुरु			शनि		शनि		गुरु	
वर्ण	क्षत्रिय वर्ण			वैश्य वर्ण		शूद्र वर्ण		विप्र वर्ण	
वश्य	मानव			जलचर		मानव		जलचर	

नोट—विस्तृत विवरण अवकहडा चक्र पृष्ठ ८२, ८३ पर देखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय गणित

अब हम आप को सूर्योदय निकालने का एक और आसान तरीका बताते हैं। इसकी सहायता से आप किसी भी स्थान का सूर्योदय सरलता से निकाल सकते है। इसके लिए आपको वेलान्तर सारिणी, रवि क्रान्ति सारिणी तथा चर सारिणी की आवश्यकता पड़ेगी। प्रथम दो सारिणियां पृष्ठ ११४ पर तथा चर सारिणी पृष्ठ १६४ पर दी गई है। यह चर सारिणी पृष्ठ ११० पर दी गई चरान्तर सारिणी से भिन्न है।

इस विधि में पहले स्थानीय मध्याह्न निकाला जाता है। भारतीय स्टैंडर्ड समय के अनुसार दोपहर १२ बजे का समय मध्याह्न का होता है। परन्तु प्रत्येक स्थान पर यह ठीक १२ बजे नहीं होता। मध्याह्न के समय किसी भी वस्तु की छाया पृथ्वी पर सबसे छोटी हो जाती है किसी भी स्थान का ठीक मध्याह्न का समय निकालने के लिये १२ में वेलान्तर के मिनटों को धन या ऋण करना होता है।

उदाहरण (१)—मानलो आपको नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालना है। नागपुर का पूर्व रेखांश ७९।६ स्टैंडर्ड अन्तर ऋण १३।३६ तथा उत्तर अक्षांश २१।९ है। १२ अक्टूबर की रवि क्रान्ति ७।१२ दक्षिण है और वेलान्तर १३ मिनट ऋण है। २१।९ अक्षांश के लिए २१ अक्षांश के चर अंकों से गणित किया जा सकता है।

८	क्रान्त्यंश के चर	१२-२४
६	,,	९-१२
२	,, का अन्तर	३-१२
१	,, ,,	१-३६
०-१२	,, ,,	०-१९
(९६×१२÷६०)		
१-१२	क्रान्त्यंश के चर	१-५५
६-००	,, ,,	९-१२
७-१२	,, ,,	११-०७

	घं.	मि.	सै.
मध्याह्न काल	१२	०	००
१२ अक्टूबर का वेलान्तर घटाया	०	१३	००
१२ ,, का स्पष्ट मध्याह्न	११	४७	००
दक्षिण क्रान्ति है अतएव ६-० में से चर अंक घटाये	६	०	००
	— ०	११	०७
	५	४८	५३

सूर्योदय गणित	११	४७	००
	— ५	४८	५३
	५	५८	०७
	+ ०	१३	३६
सूर्योदय	६	११	४३

स्थानीय समय स्टैंडर्ड अन्तर ऋण है अतः धन किया भा. स्टै. टाइम

सूर्यास्त गणित	११	४७	००
	+ ५	४८	५३
	१७	३५	५३
	+ ०	१३	३६
सूर्यास्त	१७	४९	२९

रवि क्रान्ति २२ मार्च से २३ सितम्बर तक उत्तरा होती है और शेष समय में २३ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण होती है। उत्तर क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में धन करते हैं और दक्षिण क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में से ऋण करते हैं। १२ अक्टूबर को क्रान्ति दक्षिण है अतएव चर अंकों को ६ में से घटाया गया है। इस गणित में वेलान्तर धन हो तो धन किया जाता है और ऋण हो तो ऋण किया जाता है। स्टैंडर्ड अन्तर ऋण हो तो धन किया जाता है और धन हो तो ऋण किया जाता है।

सूर्योदय तथा सूर्यास्त निकालने के बाद आप दिनमान भी निकाल सकते हैं। सूर्यास्त में से सूर्योदय घटाकर ढाई गुना करने से घटी पल में दिनमान आ जाता है।

सूर्यास्त	१७	४९	२९
सूर्योदय	— ६	११	४३
	११	३७	४६
	११	३७	४६
	५	४८	३८
	२९	०४	१०
	३०	५५	५०
	६०	००	००

घटी पल		दिनमान
२९	०४	रात्रिमान
३०	५६	

उदाहरण (२)—२० जून को मद्रास का सूर्योदय निकालना है, मद्रास उत्तर अक्षांश १३।५ पूर्व रेखांश ८०।१७ पर स्थित है। स्टैंडर्ड अन्तर ८।५२ ऋण है। रविक्रांति २३।२६ उत्तरा है, वेलान्तर १ मिनट धन है। चर सारिणी में नीचे की पंक्तियों में १३।४ के चर दिये हुए हैं।

२४	क्रान्त्यंश के चर	२३ ४२
२२	,, ,,	२१ ३०
२	,, का अन्तर	२ १२
१	,, ,,	१ ०६
०-२६	,, ,,	० २९
१ २६	,, के चर	१ ३५
२२ ००	,, ,,	२१ ३०
२३ २६	,, ,,	२३ ०५
६ ० ००		
+ ० २३ ०५	चर (उत्तर क्रान्ति में धन किये)	
६ २३ ०५		
+ १२ १ ००		
१८ २४ ०५		
+ ० ८ ५२		
१८ ३२ ५७	सूर्यास्त(भा.स्टै.टा.)	

मध्याह्न	१२	०	००
वेलान्तर	+ ०	१	००
	१२	१	००
	— ६	२३	०५
	५	३७	५५
स्टैंडर्ड अन्तर धन	+	८	५२
सूर्योदय(भा.स्टै.टा.)	५	४६	४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उदाहरण (३)—मानलो आपको २३ नवम्बर का बम्बई का सूर्योदय निकालना है। बम्बई का उत्तर अक्षांश १८।५५ पूर्व रेखांश ७२।५० तथा स्टैंडर्ड अन्तर ३८।४० ऋण है। २३ नवं. की रविक्रांति २०।१४ दक्षिण है तथा वेलान्तर १४ मिनट ऋण है। चर सारिणी में १८।५८ अक्षांश के क्रान्त्यंश नीचे की पंक्तियों में अलग से दिये हैं।

१८ ५८	उत्तर अक्षांश	२२ क्रान्त्यंश के चर	३१ ५४
"	"	२० " "	२८ ४२
"	"	२ " का अन्तर	३ १२
		१ " "	१ ३६
(९६×१४÷६०)		० १४ " "	० २२
		२० . ० " के चर	२८ ४२
		२० १४ " "	२९ ०४
६ ० ००			१२ ० ००
—० २९ ०४ चर घटाये		वेलान्तर घटाया	—० १४ ००
५ ३० ५६			११ ४६ ००
			—५ ३० ५६
			६ १५ ०४
		स्टैंडर्ड अन्तर जोड़ा	+० ३८ ४०
		सूर्योदय बम्बई भा. स्टै. टा. में	६ ५३ ४४

उदाहरण (४)—१६ सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय निकालते हैं और देखते हैं कि इस गणित से निकाला गया सूर्योदय पंचांग में दिये सूर्योदय से ठीक मिलता है या नहीं?

दिल्ली उत्तर अक्षांश २८।३८, पूर्व रेखांश ७७।१४, स्टैंडर्ड अन्तर ऋण २१ मिनट ४ सैकिण्ड, १६ सितम्बर की रवि क्रांति उत्तरा २-५२, वेलान्तर १६ सितम्बर ५ मिनट का ऋण है। चर सारिणी से २८।३८ उत्तर अक्षांश के चर निकाले। चर सारिणी में २८।३८ उत्तर अक्षांश के चर अलग से निकाले हुए हैं। सबसे नीचे की पंक्ति में देखो।

२८।३८ उत्तर अक्षांश ४ क्रान्त्यंश के चर		८ ४२
" " २ "		४ २४
" २ " का अन्तर		४ १८
" १ " "		२ ०९
(१२९×५२÷६०) ५२ " "		१ ५२
२ क्रान्त्यंश के चर		४ २४
०.५२ " "		१ ५२
	चर अंक	६ १६
१६ सितम्बर का मध्याह्न		१२ ० ००
	वेलान्तर	—० ५ ००
१६ सितम्बर का स्पष्ट मध्याह्न		११ ५५ ००

उत्तरा क्रांति है, इसलिये ६ में चर अंकों को जोड़ा ६-०-०+०-६-१६=६-६-१६

११ ५५ ०० में से	
—६ ६ १६ घटाया	
५ ४८ ४४ सूर्योदय स्थानीय समय	
+ २१ ०४ स्टैंडर्ड अन्तर धन किया	
६ ९ ४८ सूर्योदय IST में दिल्ली का ६-१०	

उदाहरण (५)—२४ दिसम्बर को कलकत्ता का सूर्योदय निकालो। कलकत्ता उत्तर अक्षांश २२।३५ पूर्व रेखांश ८८।२४ स्टैंडर्ड अन्तर +२३।३६, रविक्रांति २३।२६ (दक्षिण) वेलान्तर १ मिनट ऋण है। चर सारिणी से २२।३५ उत्तर अक्षांश तथा २३।२६ क्रान्त्यंश के चर निकाले।

हमें २३।२६ क्रान्त्यंश के चर चाहिए। २२ व २४ क्रान्त्यंश के साथ अनुपात किया तो २३।२६ के चर आए २२।३५ उत्तर अक्षांश के चर अलग से चर सारणी में नीचे दिये गये हैं।

२४ क्रान्त्यंश के चर		४२-४२
२२ " "		३८-४२
२ " में अन्तर		४- ०
१ " "		२- ०
०-२६		०-५२
१-२६		२-५२
२२-००		३८-४२
२३-२६	के चर	४१-३४
२४ दिसम्बर का मध्याह्न स्पष्ट किया		१२ ० ०
२४ " वेलान्तर धन किया		+ ० १ ०
२४ " स्पष्ट मध्याह्न		—१२ १ ०
सूर्योदय ६ ० ०		
चर घटाया —० ४१ ३४		
५ १८ २६		१२ १ ०
		—५ १८ २६
सूर्योदय स्थानीय समय		६ ४२ ३४
स्टैंडर्ड अन्तर ऋण		—२३ २६
कलकत्ता का सूर्योदय भा. स्टै. समय में		६ १९ १२

उदाहरण (६)—१२ अक्टू. को लन्दन का सूर्योदय ज्ञात करना है, लन्दन का उत्तर अक्षांश ५१।३२ तथा पश्चिम रेखांश ०।५ है, (देखें पृष्ठ १०५) स्टैंडर्ड अन्तर २० सेकिण्ड ऋण है। १२ अक्टूबर की रवि क्रांति ७।१२ दक्षिण तथा वेलान्तर १३ मिनट ऋण है। ५१।३२ उत्तर अक्षांश के चर निकाले। (देखें अगले पृष्ठ पर)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

		मि.	से.	मि.	से.
८	क्रान्त्यंश के चर	३९	००	४६	००
६	,, ,,	२९	००	३५	००
२	,, का अन्तर	१०	००	११	००
१	,, ,,	५	००	५	३०
० १२	,, ,,	१	००	१	०६
१ १२	,, ,,	६	००	६	३६
६ ००	,, के चर	२९	००	३५	००
७ १२	,, ,,	३५	००	४१	३६
५५ अक्षांश	७ १२ क्रान्त्यंश के चर			४१	३६
५० ,,	७ १२ ,, ,,			३५	००
५ ,,	पर अन्तर			६	३६
१ ,,	,,			१	१९
० ३२	,, (७९ × ३२ ÷ ६०)			०	४२
१ ३२	के चर			२	०१
५० ००	,,			३५	००
५१ ३२	अक्षांश ७ १२ क्रान्त्यंश के चर			३७	०१

१२ अक्टूबर का मध्याह्न ज्ञात किया		१२ ०	००
वेलान्तर घटाया	—	० १३	००
मध्याह्न		११ ४७	००
दक्षिण क्रान्ति है अतः चर अंक ६ में से घटाये जायेंगे		६ ०	००
चर घटाये	—	० ३७	०१
		५ २२	५९
		११ ४७	००
सूर्योदय ज्ञात करने के लिए मध्याह्न में से घटाया	—	५ २२	५९
सूर्योदय स्थानीय समय में		६ २४	०१
स्टैंडर्ड अन्तर जोड़ा	+		२०
		६ २४	२१
समर टाइम जोड़ा		१ ०	००
सूर्योदय ग्रीनविच टाइम	—	७ २४	२१

इंगलैंड में मार्च के तीसरे शनिवार की रात्रि के २ बजे से अक्टूबर के चौथे रविवार २ बजे रात्रि तक ग्रीष्म काल एक घण्टा बढ़ाकर समय निर्धारण किया जाता है। ग्रीनविच टाईम के अनुसार सूर्योदय ७।२४ पर होगा। यदि किसी का जन्म लन्दन ग्रीष्मकाल में हुआ हो तो स्थानीय समय निकालने के लिए १ घण्टा समर टाईम (ग्रीष्म समय) कम होगा और २० सेकिण्ड ग्रीनविच से लन्दन का अन्तर कम होगा, तब इष्ट काल बना कर लग्न निकाला जायेगा। इसके लिए निरयण लग्न सारिणी में ५१ या ५२ उत्तर अक्षांश की लग्न सारिणी सूर्योदय के समय कन्या के २५ अंश पर होता है। अतः लन्दन समय ६।२४ प्रातः पर कन्या लग्न के २५ अंश उदित होंगे। ग्रह स्पष्ट भारतीय पंचांग से भारतीय समय अनुसार जन्म समय में ५½ घण्टा जमा करके करना होगा।

उदाहरण (७)—न्यूयार्क नगर का २१ मई का सूर्योदय निकालना है। न्यूयार्क उत्तर अक्षांश ४०।४३ पश्चिम रेखांश ७४।०० स्टैंडर्ड अन्तर ४ मिनट है। २१ मई की उत्तरा क्रान्ति २०।४ वेलान्तर ४ मिनट ऋण है।

				मि.	से.
४५	अक्षांश पर	२०	क्रान्त्यंश के चर	८५	००
४०	,,	२०	,, ,,	७१	००
५	,,		अन्तर	१४	००
१	,,		,,	२	४८
० ४३	,,		,,	२	००
४० ००	,,		के चर	७१	००
४० ४३	,,		,,	७३	००

				६ ०	००
वेलान्तर ऋण	—	० ४	००	चर जोड़े + १ १३	००
		११ ५६	००	७ १३	००
	—	७ १३	००		
सूर्योदय	=	४ ४३	००	सूर्यास्त ११ ५६	००
स्टैंडर्ड अन्तर ऋण	—	० ४	००	+ ७ १३	००
		४ ३९	००	१९ ९	००
ग्रीष्म समय		१ ०	००	— ० ४	००
सूर्योदय क्षेत्रीय		५ ३९	००	१९ ५	००
स्टैंडर्ड समयानुसार				+ १ ०	००
				क्षे. स्टै. टाईम २० ५	००

ग्रीष्म समय अप्रैल के अन्तिम रविवार २ बजे रात्रि से अक्टूबर के अन्तिम रविवार २ बजे रात्रि तक एक घण्टा बढ़ा कर निर्धारित किया जाता है। इस अवधि में जन्म हो तो इष्ट काल बनाते समय ग्रीष्म समय का एक घण्टा कम करके स्टैंडर्ड अन्तर कम या ज्यादा करके स्थानीय समय निकालना चाहिए। २१ मई को सूर्य वृष राशि के ७ अंश के लगभग होता है। सूर्योदय के समय वृष लग्न ७ अंश पर उदित होगी। ग्रह स्पष्ट भारतीय पंचांग से स्थानीय समय में १०½ या ९½ घण्टा जोड़ कर भारतीय समय अनुसार किये जायेंगे।

न्यूयार्क की लग्न निकालने के लिये ४१ उत्तर अक्षांश की लग्न सारिणी से गणित करके लग्न निकाली जायेगी। ग्रह स्पष्ट ग्रीष्म काल में ग्रीष्म समय का एक घण्टा कम करके उसमें १०½ घण्टे जोड़कर जो समय आये भारतीय पंचांगों से उस समय के ग्रह स्पष्ट किये जायेंगे। न्यूयार्क भारत से १०½ घण्टे के अन्तर पर है। ग्रीष्म काल में यह बढ़े हुये समय से ९½ रह जाता है। इसी प्रकार लन्दन ५½ घण्टे के अन्तर पर है। ग्रीष्म काल में यह अन्तर ४½ घण्टे रह जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

—: चर सारिणी :—

क्रान्त्यंश → अक्षांश ↓	२ मि. सै.	४ मि. सै.	६ मि. सै.	८ मि. सै.	१० मि. सै.	१२ मि. सै.	१४ मि. सै.	१६ मि. सै.	१८ मि. सै.	२० मि. सै.	२२ मि. सै.	२४ मि. सै.	← क्रान्त्यंश अक्षांश ↓
२	० १८	० १०	० ५४	१ ६	१ २४	१ ४२	२ ०	२ १८	२ २४	२ ५४	३ १२	३ ३६	२
४	० ३०	१ ६	१ ४२	२ १२	२ ४८	३ २४	४ ०	४ २४	५ १२	५ ४८	६ ३०	७ ६	४
६	० ५४	१ ४२	२ ३०	३ २४	४ १२	५ ६	६ ०	६ ५४	७ ४८	८ ४८	९ २२	१० ४२	६
८	१ ६	२ १२	३ २४	४ ३०	५ ४२	६ ४८	८ ०	९ १२	१० ३०	११ ४२	१३ ००	१४ १८	८
९	१ १८	२ ३०	३ ४८	५ ६	६ २४	७ ४२	९ ०	१० २४	११ ४८	१३ १२	१४ ४२	१६ १२	९
१०	१ २४	२ ४८	४ १२	५ ४२	७ ६	८ ३६	१० ६	११ ३६	१३ ६	१४ ४२	१६ १८	१८ ००	१०
११	१ ३०	३ ६	४ ४२	६ १८	७ ४८	९ २४	११ ६	१२ ४८	१४ ३०	१६ १२	१८ ००	१९ ५४	११
१२	१ ४२	३ २४	५ ६	६ ४८	८ ३६	१० १८	१२ ६	१४ ००	१५ ४८	१७ ४२	१९ ४२	२१ ४२	१२
१३	१ ४८	३ ४२	५ ३६	७ २४	९ १८	११ १२	१३ १२	१५ १२	१७ १२	१९ १८	२१ २४	२३ ३६	१३
१४	२ ००	४ ००	६ ००	८ ००	१० ६	१२ ६	१४ १२	१६ २४	१८ ३६	२० ४८	२३ ६	२५ ३०	१४
१५	२ ६	४ १८	६ २४	८ ३६	१० ४८	१६ ६	१५ १८	१७ ३६	२० ००	२२ २४	२४ ५४	२७ २४	१५
१६	२ १८	४ ३६	६ ५४	९ १२	११ ३६	१४ ००	१६ २४	१८ ५४	२१ २४	२४ ००	२६ ३६	२९ १८	१६
१७	२ २४	४ ५४	७ १८	९ ४८	१२ २४	१४ ५४	१७ ३०	२० ६	२२ ४८	२५ ३०	२८ २४	३१ १८	१७
१८	२ ३६	५ १२	७ ४८	१० ३०	१३ ०६	१५ ४८	१८ ३६	२१ २४	२४ १२	२७ १२	३० १२	३३ १८	१८
१९	२ ४२	५ ३६	८ १८	११ ६	१३ ५४	१६ ४८	१९ ४२	२२ ४२	२५ ४२	२८ ४८	३२ ००	३५ १८	१९
२०	२ ५४	५ ४८	८ ४८	११ ४२	१४ ४२	१७ ४२	२० ४८	२४ ००	२७ १२	३० २४	३३ ४८	३७ १८	२०
२१	३ ०६	६ ०६	९ १२	१२ २४	१५ ३०	१८ ४२	२२ ००	२५ १८	२८ ४२	३२ ६	३५ ४२	३९ २४	२१
२२	३ १२	६ ३०	९ ४२	१३ ००	१६ १८	१९ ४२	२६ ६	२६ ३६	३० १२	३३ ४८	३७ ३६	४१ २४	२२
२३	३ २४	६ ४८	१० १२	१३ ४२	१७ १२	२० ४२	२४ १८	२८ ००	३१ ४२	३५ ३०	३९ ३०	४३ ३६	२३
२४	३ ३६	७ ०६	१० ४२	१४ १८	१८ ००	२१ ४२	२५ ३०	२९ १८	३३ १८	३७ १८	४१ २४	४५ ४२	२४
२५	३ ४२	७ ३०	११ १२	१५ ००	१८ ५४	२२ ४२	२६ ४२	३० ४२	३४ ४८	३९ ०६	४३ २४	४७ ५४	२५
२६	३ ५४	७ ४८	११ ४२	१५ ४२	१९ ४२	२३ ४८	२७ ५४	३२ ०६	३६ ३०	४० ५४	४५ ३०	५० १२	२६
२७	४ ६	८ १२	१२ १८	१६ ४८	२० ३६	२४ ५४	२९ १२	३३ ३६	३८ ०६	४२ ४२	४७ ३०	५२ २४	२७
२८	४ १८	८ ३०	१२ ४८	१७ ०५	२१ ३०	२५ ५४	३० ३०	३५ ०६	३९ ४८	४४ ५४	४९ ३६	५४ ४८	२८
२९	४ २४	८ ५४	१३ २४	१७ ५४	२२ २४	२७ ०६	३१ ४८	३६ ३६	४१ ३०	४६ ३०	५१ ४८	५७ ०६	२९
३०	४ ३६	९ १८	१३ ५४	१८ ३६	२३ २४	२८ १२	३३ ०६	३८ ०६	४३ १२	४८ ३०	५३ ५४	५९ ३६	३०
३१	४ ४८	९ ३६	१४ ३०	१९ २४	२४ १८	२९ १८	३४ ३०	३९ ४२	४५ ००	५० ३०	५६ १२	६२ ०६	३१
३३	५ १२	१० २४	१५ ३६	२० ५४	२६ १८	३१ ४२	३७ १८	४२ ५४	४८ ४२	५४ ४२	६० ४८	६७ १२	३३
३५	५ ३६	११ १२	१६ ५४	२२ ३६	२८ २४	३४ १२	४० १२	४६ १८	५२ ३६	५९ ०६	६५ ४२	७२ ३६	३५
४०	७ ००	१३ ००	२० ००	२७ ००	३४ ००	४१ ००	४८ ००	५६ ००	६३ ००	७१ ००	७९ ००	८८ ००	४०
४५	८ ००	१६ ००	२४ ००	३२ ००	४१ ००	४९ ००	५८ ००	६७ ००	७६ ००	८५ ००	९५ ००	१०६ ००	४५
५०	१० ००	१९ ००	२९ ००	३९ ००	४९ ००	५९ ००	६९ ००	८० ००	९१ ००	१०३ ००	११५ ००	१२८ ००	५०
५५	११ ००	२३ ००	३५ ००	४६ ००	५८ ००	७१ ००	८४ ००	९७ ००	१११ ००	१२५ ००	१४१ ००	१५९ ००	५५
१३°४'	१ ४८	३ ४२	५ ३६	७ ३०	९ २४	११ १८	१३ १८	१५ १८	१७ १८	१९ २४	२१ ३०	२३ ४२	१३°४'
१८°५८'	२ ४२	५ ३०	८ १८	११ ०६	१३ ५४	१६ ४२	१९ ४२	२२ ३६	२५ ३६	२८ ४२	३१ ५४	३५ १२	१८°५८'
२२°३५'	३ १८	६ ४२	१० ००	१३ २४	१६ ४८	२० १८	२३ ४८	२७ २४	३१ ०६	३४ ४८	३८ ४२	४२ ४२	२२°३५'
२८°३८'	४ २४	८ ४२	१३ १२	१७ ३६	२२ ०६	२६ ४२	३१ १८	३६ ००	४० ८४	४५ ५४	५१ ००	५६ १८	२८°३८'
क्रान्त्यंश →	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	← क्रान्त्यंश

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१ अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धुलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मेष	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
वृष	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
मिथुन	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
कर्क	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
सिंह	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
कन्या	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
तुला	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
वृश्चिक	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४
धनु	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
मकर	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
कुंभ	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३
मीन	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९ अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथ पुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मेष	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
वृष	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
मिथुन	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
कर्क	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
सिंह	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
कन्या	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
तुला	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
वृश्चिक	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२४
धनु	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
मकर	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०
कुंभ	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३
मीन	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तोडगढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादडी, छतरपुर, गया, मणिपुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, अम्बाजी, झांसी, पटना, शिलांग, चित्रकूट आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
०	२ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
४	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
५	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
६	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
७	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
८	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
९	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१०	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
११	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१२	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१४	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१५	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१६	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१७	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१८	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१९	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२०	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२१	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२२	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२४	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२५	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२६	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२७	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२८	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२९	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
३०	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, राँची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदरा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
०	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
४	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
५	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
६	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
७	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
८	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
९	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१०	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
११	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१२	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१४	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१५	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१६	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१७	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१८	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१९	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२०	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२१	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२२	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२४	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२५	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२६	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२७	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२८	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२९	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
३०	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoF-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायू, चन्दौसी, नारनोल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
०	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६
१	५	३	२	२	३	५	७	९	११	१३	१५	१७
२	६	४	३	३	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८
३	७	५	४	४	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९
४	८	६	५	५	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०
५	९	७	६	६	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१
६	१०	८	७	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
७	११	९	८	८	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
८	१२	१०	९	९	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४
९	१३	११	१०	१०	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५
१०	१४	१२	११	११	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६
११	१५	१३	१२	१२	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७
१२	१६	१४	१३	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८
१३	१७	१५	१४	१४	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९
१४	१८	१६	१५	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०
१५	१९	१७	१६	१६	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१
१६	२०	१८	१७	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२
१७	२१	१९	१८	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३
१८	२२	२०	१९	१९	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४
१९	२३	२१	२०	२०	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५
२०	२४	२२	२१	२१	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६
२१	२५	२३	२२	२२	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७
२२	२६	२४	२३	२३	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८
२३	२७	२५	२४	२४	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९
२४	२८	२६	२५	२५	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
२५	२९	२७	२६	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१
२६	३०	२८	२७	२७	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२
२७	३१	२९	२८	२८	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
२८	३२	३०	२९	२९	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४
२९	३३	३१	३०	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
३०	३४	३२	३१	३१	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६
३१	३५	३३	३२	३२	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७
३२	३६	३४	३३	३३	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८
३३	३७	३५	३४	३४	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९
३४	३८	३६	३५	३५	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०
३५	३९	३७	३६	३६	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१
३६	४०	३८	३७	३७	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२
३७	४१	३९	३८	३८	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३
३८	४२	४०	३९	३९	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४
३९	४३	४१	४०	४०	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५
४०	४४	४२	४१	४१	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६
४१	४५	४३	४२	४२	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७
४२	४६	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
४३	४७	४५	४४	४४	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९
४४	४८	४६	४५	४५	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०
४५	४९	४७	४६	४६	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	६१
४६	५०	४८	४७	४७	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०	६२
४७	५१	४९	४८	४८	४९	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३
४८	५२	५०	४९	४९	५०	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६४
४९	५३	५१	५०	५०	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	६५
५०	५४	५२	५१	५१	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६४	६६
५१	५५	५३	५२	५२	५३	५५	५७	५९	६१	६३	६५	६७
५२	५६	५४	५३	५३	५४	५६	५८	६०	६२	६४	६६	६८
५३	५७	५५	५४	५४	५५	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९
५४	५८	५६	५५	५५	५६	५८	६०	६२	६४	६६	६८	७०
५५	५९	५७	५६	५६	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१
५६	६०	५८	५७	५७	५८	६०	६२	६४	६६	६८	७०	७२
५७	६१	५९	५८	५८	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३
५८	६२	६०	५९	५९	६०	६२	६४	६६	६८	७०	७२	७४
५९	६३	६१	६०	६०	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	७५
६०	६४	६२	६१	६१	६२	६४	६६	६८	७०	७२	७४	७६

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्णिया, दरभंगा, शिलांग, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा. अं.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
०	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६
१	५	३	२	२	३	५	७	९	११	१३	१५	१७
२	६	४	३	३	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८
३	७	५	४	४	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९
४	८	६	५	५	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०
५	९	७	६	६	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१
६	१०	८	७	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
७	११	९	८	८	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
८	१२	१०	९	९	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४
९	१३	११	१०	१०	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५
१०	१४	१२	११	११	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६
११	१५	१३	१२	१२	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७
१२	१६	१४	१३	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८
१३	१७	१५	१४	१४	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९
१४	१८	१६	१५	१५	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०
१५	१९	१७	१६	१६	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१
१६	२०	१८	१७	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२
१७	२१	१९	१८	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३
१८	२२	२०	१९	१९	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४
१९	२३	२१	२०	२०	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५
२०	२४	२२	२१	२१	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६
२१	२५	२३	२२	२२	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७
२२	२६	२४	२३	२३	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८
२३	२७	२५	२४	२४	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९
२४	२८	२६	२५	२५	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
२५	२९	२७	२६	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१
२६	३०	२८	२७	२७	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२
२७	३१	२९	२८	२८	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
२८	३२	३०	२९	२९	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४
२९	३३	३१	३०	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
३०	३४	३२	३१	३१	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६
३१	३५	३३	३२	३२	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७
३२	३६	३४	३३	३३	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८
३३	३७	३५	३४	३४	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९
३४	३८	३६	३५	३५	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०
३५	३९	३७	३६	३६	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१
३६	४०	३८	३७	३७	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२
३७	४१	३९	३८	३८	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३
३८	४२	४०	३९	३९	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४
३९	४३	४१	४०	४०	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५
४०	४४	४२	४१	४१	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६
४१	४५	४३	४२	४२	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७
४२	४६	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
४३	४७	४५	४४	४४	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९
४४	४८	४६	४५	४५	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०
४५	४९	४७	४६	४६	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	६१
४६	५०	४८	४७	४७	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०	६२
४७	५१	४९	४८	४८	४९	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३
४८	५२	५०	४९	४९	५०	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६४
४९	५३	५१	५०	५०	५१	५३	५५	५७	५९	६१	६३	६५
५०	५४	५२	५१	५१	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६४	६६
५१	५५	५३	५२	५२	५३	५५	५७	५९	६१	६३	६५	६७
५२	५६	५४	५३	५३	५४	५६	५८	६०	६२	६४	६६	६८
५३	५७	५५	५४	५४	५५	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९
५४	५८	५६	५५	५५	५६	५८	६०	६२	६४	६६	६८	७०
५५	५९	५७	५६	५६	५७	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१
५६	६०	५८	५७	५७	५८	६०	६२	६४	६६	६८	७०	७२
५७	६१	५९	५८	५८	५९	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३
५८	६२	६०	५९	५९	६०	६२	६४	६६	६८	७०	७२	७४
५९	६३	६१	६०	६०	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	७५
६०	६४	६२	६१	६१	६२	६४	६६	६८	७०	७२	७४	७६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मेष	०	२	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
वृष	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४
मिथुन	६४	६६	६८	७०	७२	७४	७६	७८	८०	८२	८४	८६
कर्क	९६	९८	१००	१०२	१०४	१०६	१०८	११०	११२	११४	११६	११८
सिंह	१२८	१३०	१३२	१३४	१३६	१३८	१४०	१४२	१४४	१४६	१४८	१५०
कन्या	१६०	१६२	१६४	१६६	१६८	१७०	१७२	१७४	१७६	१७८	१८०	१८२
तुला	१९२	१९४	१९६	१९८	२००	२०२	२०४	२०६	२०८	२१०	२१२	२१४
वृश्चिक	२२४	२२६	२२८	२३०	२३२	२३४	२३६	२३८	२४०	२४२	२४४	२४६
धनु	२५६	२५८	२६०	२६२	२६४	२६६	२६८	२७०	२७२	२७४	२७६	२७८
मकर	२८८	२९०	२९२	२९४	२९६	२९८	३००	३०२	३०४	३०६	३०८	३१०
कुम्भ	३२०	३२२	३२४	३२६	३२८	३३०	३३२	३३४	३३६	३३८	३४०	३४२
मीन	३५२	३५४	३५६	३५८	३६०	३६२	३६४	३६६	३६८	३७०	३७२	३७४

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मेष	०	२	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
वृष	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४
मिथुन	६४	६६	६८	७०	७२	७४	७६	७८	८०	८२	८४	८६
कर्क	९६	९८	१००	१०२	१०४	१०६	१०८	११०	११२	११४	११६	११८
सिंह	१२८	१३०	१३२	१३४	१३६	१३८	१४०	१४२	१४४	१४६	१४८	१५०
कन्या	१६०	१६२	१६४	१६६	१६८	१७०	१७२	१७४	१७६	१७८	१८०	१८२
तुला	१९२	१९४	१९६	१९८	२००	२०२	२०४	२०६	२०८	२१०	२१२	२१४
वृश्चिक	२२४	२२६	२२८	२३०	२३२	२३४	२३६	२३८	२४०	२४२	२४४	२४६
धनु	२५६	२५८	२६०	२६२	२६४	२६६	२६८	२७०	२७२	२७४	२७६	२७८
मकर	२८८	२९०	२९२	२९४	२९६	२९८	३००	३०२	३०४	३०६	३०८	३१०
कुम्भ	३२०	३२२	३२४	३२६	३२८	३३०	३३२	३३४	३३६	३३८	३४०	३४२
मीन	३५२	३५४	३५६	३५८	३६०	३६२	३६४	३६६	३६८	३७०	३७२	३७४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धरमशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
३	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
४	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
५	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
६	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
७	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
८	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
९	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१०	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
११	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१२	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१३	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१४	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१५	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१६	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१७	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१८	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१९	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२०	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२१	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२२	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२३	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२४	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२५	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२६	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२७	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२८	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२९	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
३०	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होश्यारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
०	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
३	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
४	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
५	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
६	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
७	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
८	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
९	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१०	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
११	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१२	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१३	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१४	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१५	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१६	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१७	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१८	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
१९	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२०	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२१	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२२	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२३	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२४	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२५	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२६	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२७	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२८	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
२९	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३
३०	४ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३	३ ३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बालक के जन्म-समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं मृ—मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो तथा अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हों, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशीश पाप ग्रह से प्रयुक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धूम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २–३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हो तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा।

जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हों तो भी माता को अरिष्टकर होता है। इसी भांति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हों या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६ वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि(वृष) में हों और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुच्छल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्—भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्य-वादी होता है।

वाहन—सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश—ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौहों के मध्य भाग में तिल चिन्ह हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिन्ह हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, वह सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री के दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस में किसी ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर श्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्याभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, बैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिन्ह सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पुष्ट भाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिन्ह हो तथा उस यव (जौ) चिन्ह के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीना होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं ओर अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिन्ह हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिन्ह हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पांव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा शृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा

रविवार के व्रत की विधि—समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्टादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः** बीजमंत्र का पाठ पांच माला करें। **फिर रविवार कथा पढ़ें**। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाए अन्तिम रविवार हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन करा-कर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर **"ॐ नमः शिवाय"**—आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, खीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र बर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **'ॐ क्रां क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः,** की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र का दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि—बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन घी मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

बृहस्पति (गुरु वार) के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम वीरवार का अनुराधा नक्षत्र हो तो और भी अच्छा है। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय खावें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शांति के लिए **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि—यह व्रत धन विवाह संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, खीर, फलादि बांट दें। यह शान्ति के लिए **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय खीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को खीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चांदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोगों, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **ॐ शं शनैश्चराय नमः** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दे। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्तोत्र का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। राहु की शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें और दान में नारियल भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है। केतु ग्रह की शान्ति हेतु—केतु के बीज मंत्र **ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य(सतनजा)—१. काले माश(उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्ट गंध—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गृह-भूमि विचार

शुभाशुभ भूमि विचार—जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल से भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल—नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय—गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार—लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार—चन्द्रवेधी गृह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हृद या वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाम-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास—पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय—ब्राह्मण वर्ण (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वार शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय—मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पांच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध—ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मन्दिर के सामने, जैन मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किवाड़ों) का फल—कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधा-भय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें धोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें। यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्नकर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी है उनमें से किसी एक पर उंगली धरे। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

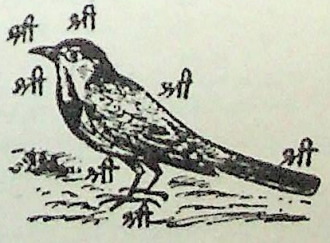

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावे राज॥
शुभ लक्षण पांवन परे, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह, बुधजन करें विचार॥

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं० (१) अश्लेषा नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७ शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३ कृत्तिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या विषकन्या कहलाती है।

ग्रह-गति से वंधव्य (विषकन्या) योग

(१) जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ मंगल १ शनि ५ सूर्य हों।

स्त्री के बाँझ होने के योग

१—जिस स्त्री के जन्म-लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२—जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के एक ही प्रसव होता है।

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसकी चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगनी की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मृत्यु सूचक चिन्ह

पुष्पं यथापूर्वं रूपं फलस्येह भविष्यतः ।
तथालिंगमरिष्टाख्यं पूर्वं रूपमरिष्यतः ॥

तत्वरिष्टस्य जातस्य नाशोस्ति मरणाद्ऋते ।
'मरणं चापि तत्रास्ति यत्रारिष्टपुरःसरम् ॥

अर्थात् जिस तरह फल लगने वाले वृक्ष पर पहले फूल आता है, पश्चात् फल । इसी प्रकार मरण से पूर्व अरिष्टों द्वारा मरण काल, मृत्युकाल का परिचय मिलता है । शास्त्रों मे वर्णित बहुशः मरण चिह्नों में से कुछ अरिष्टों का उल्लेख नीचे सप्रमाण दिया जाता है ।

(१) निजस्य प्रतिबिम्बस्य निश्चलेषूदकादिषु ।
उत्तमांगं न पश्येत् यःषण्मासेन विनश्यति ॥

अर्थात् स्थिर जल में जो व्यक्ति अपनी छाया मस्तक हीन देखे, वह छः महीने में मृत्यु को प्राप्त होगा ।

(२) करावरुद्ध श्रवणः संशृणोति न च ध्वनिम् ।
स्थूलः कृशः कृशः स्थूलस्तदामासान्नवर्त्तते ॥

हाथों के द्वारा दोनों कान बन्द कर लेने से बाहर का शब्द सुनाई नहीं पड़ता है, किन्तु कानों में वायु का एक प्रकार अस्पष्ट अव्यक्त शब्द सुनाई पड़ता है । यही स्वाभाविक नियम है, पर यदि यह स्वाभाविक शब्द भी जिसे न सुनाई पड़े, और यदि मोटा आदमी अकस्मात् दुबला और दुबला मोटा हो जाए तो एक महीने में वह मृत्यु को प्राप्त होगा ।

(३) विधाय कर्णनिर्घोषं न शृणोत्यात्मसम्भवम् ।
चक्षुषोर्नश्यतिर्ज्योतिर्यस्य सोऽपि न जीवति ॥

ऊपर कहे दूसरे नियमानुसार हाथों से कानों के बंद करने पर बाहर का कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पड़ता पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द स्पष्ट सुनाई देता है । यदि किसी को कान बंद करने पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द भी सुनाई नहीं देता हो और नेत्रों की ज्योतिः अकस्मात् नष्ट हो जाए तो वह मनुष्य भी न बचेगा ।

(४) नासिका वक्रतामेति कर्णौवातोन्नतिंपुनः ।
नेत्रं बाष्पं क्षरेद्यस्य सगच्छेद् यमसान्निध्यम् ॥

नाक टेढ़ी हो गई हो, कान नीचे की ओर ढल पड़े हों और नेत्रों से जल बहता हो, चाहे एक से और चाहे दोनों से, ऐसा मनुष्य शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा ।

(५) सुस्नातस्यापियस्यायु हृदयं परिशुष्यति ।
चरणौच करौचापि त्रिमासं तस्य जीवितम् ॥

स्नान करते ही जिसकी छाती का जल और हाथ पैर तुरन्त सूख जायें वह तीन महीने जीवित रहेगा ।

(६) भाद्रेऽन्हिवासरे सूर्येछाया सूर्यस्यनिर्मलाम् ।
निश्चलाम्पुन पश्येत् यःषण्मासेन समृत्युमाक् ॥

भाद्रपद महीने के रविवार को दिन में जो मनुष्य जल में सूर्य की छाया न देख पावे, तो छः महीने में उसकी मृत्यु हो ।

(७) घृतेतैले तथादर्शे तोयेच तनुमात्मनः ।
अशिरस्कञ्चयः पश्येद् मासाद्ध्वं न जीवति ॥

जिस मनुष्य को तये घी, तेल, दर्पण और जल में अपनी देह मस्तक रहित दिखाई पड़े, वह एक महीने से अधिक जीवित नहीं रहेगा ।

(८) यस्य वीर्यं मलं मूत्रं क्षुत्तं नूनंनिरन्तरं ।
इहैकदा भवेद्वापि अब्दं तस्यसुशब्यते ॥

जिस मनुष्य को वीर्य, मल, मूत्र और क्षुत एक साथ निकले तो समझ लो उसकी आयु एक वर्ष शेष है ।

(९) मूत्रं पुरीषं वायुश्च समकालं प्रजायते ।
तदासौचलितो ज्ञेयो दशाहे म्रियते ध्रुवम् ॥

जिस मनुष्य का मूत्र, मल, वायु (पाद) एक साथ चलते हों तो उसकी दस दिन में निश्चय ही मृत्यु होगी ।

(१०) मैथुने सप्रवृत्तं यो मध्येवान्ते क्षद्विक्कति ।
निश्चितं पञ्चमेमासि धर्मराजातिथिर्भवेत् ॥

जिस मनुष्य को स्त्री संसर्ग में प्रवृत्त होकर, बीच में और अंत में छींक आये तो वह पांचवें महीने अवश्य धर्मराज का अतिथि होगा, अर्थात् उसकी पांचवें महीने मृत्यु होना निश्चित समझना चाहिए ।

(११) यस्याबेस्नातमात्रस्य कपोलमाशु शुष्यति ।
पीतञ्चापि जलं पश्येत् दशाहं तस्य जीवनम् ॥

जिस मनुष्य के स्नान करते ही गाल तुरन्त सूख जायें और जो जल को पीले रंग का देखे, वह दस दिन मात्र ही जीवित रहेगा ।

(१२) यस्य वक्त्रेशवगन्धो गात्रे दसनयोरपि ।
तस्यायु मासमेकं स्यात् योगिनामपिनोऽधिकम् ॥

जिस मनुष्य के मुख, शरीर और वस्त्रों में मुरदे की सी गंध आती हो, वह चाहे योगी भी क्यों न हो, तो भी वह एक महीने भर ही जी सकेगा, अर्थात् एक महीने पश्चात् मर जाएगा ।

(१३) यस्यवं भुक्तमात्रस्य हृदयं बाध्यते क्षुधा ।
जायते दन्तहर्षश्च सगतायुर्न संशय ॥

जिस मनुष्य को भरपेट खा लेने के बाद भी भूख मालूम पड़े और दन्त हर्ष उत्पन्न हो तो उसकी आयु समाप्त हुई समझो ।

(१४) अहोरात्रं यदैकत्र बहते यस्य मारुतः ।
तदातस्य भवेदायुः सम्पूर्णं वत्सरत्रयं ॥

जिसके दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ एक रात-दिन श्वास वायु प्रवाहित हो उसकी आयु तीन वर्ष में पूर्ण होगी ।

(१५) अहोरात्रं हयं यस्य पिङ्गलायां सदागतिः ।
तस्य वर्षद्वयं ज्ञेयं जीवितं तत्वचेष्टिभिः ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जिस मनुष्य के दक्षिण नासिका छिद्र से ही दो रात-दिन लगातार श्वास चलता रहे, उसको दो वर्ष तक जीवित समझो अर्थात् दो वर्ष के बाद मर जाएगा।

(१६) त्रिरात्रं वहते यस्य वायु रेकपुरे स्थितः।
सम्वत्सरं मायुकायुः स्यात् वदन्ति मनीषिणः॥

यदि किसी मनुष्य के किसी* एक नासिका छिद्र से तीन दिन-रात श्वास वायु बहती रहे तो उसकी आयु एक वर्ष मनीषियों ने बताई है।

(१७) एकादियोडशाहेषु यदि मारुतिरन्तरम्।
वहेत् यस्य च व मृत्युः शेषाहेन च मासिकः॥

यदि किसी मनुष्य का एकादि क्रम से १६ दिन दक्षिण नासिका छिद्र से श्वास वायु प्रवाहित हो तो उसकी मृत्यु एक महीने में होगी।

(१८) सम्पूर्णं वहते सूर्यचन्द्रमानेव दृश्यते।
पक्षेण जायते मृत्यु कालज्ञानेन भाषितम्॥

यदि किसी के दक्षिण नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहती रहे और एक बार भी वाम नासिका से न बहे तो पक्ष वा १४ दिन में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

(१९) सम्पूर्णं वहते चन्द्रः सूर्यो नैव च दृश्यते।
मासेन दृश्यते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्॥

यदि किसी मनुष्य के वाम नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहता रहे और एक बार भी दक्षिण नासिका से बहता न दीखे तो एक महीने में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

(२०) रात्रौचन्द्रोदिवासूर्यो वहेत् यस्यनिरन्तरम्।
विजानीयात्तस्य मृत्युः षण्मासाभ्यन्तरेध्रुवम्॥

जिस मनुष्य के वाम नासिका से रात्रि में और दक्षिण नासिका से दिन में बराबर श्वास चलता रहे, उसकी मृत्यु छः महीने के भीतर निश्चय जानो।

(२१) अरुन्धती ध्रुवश्चैव विष्णोस्त्रीणिपदानिच।
आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थं मातृमण्डलम्॥

जिस मनुष्य की आयु हीन अर्थात् समाप्त हो जाती है, उसे अरुन्धती, ध्रुव तारा, विष्णु के तीन पद और चौथा मातृमण्डल दिखाई नहीं पड़ते।

सूचना—यह तारागण आकाश में सदैव उदय होते हैं, पुराने आदमी बहुधा इन्हें जानते हैं, जो न जानते हों वे किसी से पूछकर जान सकते हैं।

*सब लोग यही जानते है कि दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ ही समान श्वास वायु चला करती है, पर यह लोगों का भ्रम है। एक-एक घण्टे एक नासिका छिद्र से प्रबल रूप से और दूसरे एक छिद्र से बहुत ही निर्बल अथवा नहीं के समान श्वास वायु बहता है। पर दोनों से समान वायु कभी-कभी ही बहा करती है, जो भी परमायुनाशक और विपद् आदि का पूर्व रूप होता है। इस विषय को विस्तार रूप से जिन्हें देखना हो वह हमारी "मनोकामना सिद्धि" और "अनौषधि चिकित्सा" नामक ग्रन्थ में देखें।

दूसरी बात इन सबको मनुष्य देह में भी स्थित बताया है यथाहि

(२२) अरुन्धती भवेज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमुच्यते।
भ्रुवोर्मध्ये विष्णु पदं तारके मातृमण्डलम्॥

अर्थात् जीभ को अरुन्धती, नासिका का अग्रभाग ध्रुव, दोनों भौहों के बीच का भाग विष्णु पद, और आंखों का तारा मातृमण्डल कहलाते हैं।

जो मनुष्य इन सबको अपनी आंखों से बिना दर्पण आदि के नहीं देख सकता उसकी मृत्यु समीप अर्थात् आयु समाप्त समझनी चाहिए।

आवश्यक वक्तव्य

ऊपर कहे हुए पदार्थों में से आंख का तारा बिना बताये अपने नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। अतः इसके लिये महापुरुषों ने एक सहज उपाय बताया है और वह यह कि नेत्र बन्द करके नेत्र के कोने व कोरों को किसी भी अंगुली से किञ्चित् दबाओ, तो जिस कोने को दबाओगे उसके सम्मुख विपरीत दिशा में आंखों के मध्यवर्ती तारा की आकृति एक गोल ज्योति मण्डल दीख पड़ेगा। इसे मातृ-मण्डल कहते हैं, यद्यपि यह सदैव ऐसा करने पर दिखाई दिया करता है, पर जिसकी मृत्यु सन्निकट होती है उसे नहीं दिखाई देता।

(२३) दन्ताद्यश्चरणौ यस्य न किञ्चिदपि पीड्यते।
तृतीये मासिचावश्यं कालपाशो भवेश्वर॥

जिस मनुष्य के दांत और अण्डकोश को जोर से दबाने पर कुछ भी वेदना नहीं होती वह ३ महीने में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।

(२४) मध्यमांगुलिनां त्रितय वक्रयातिरुजम्बिना।
षण्मासेतस्यमृत्युः स्य.स्यकण्ठोऽपिशुष्यति॥

जिस मनुष्य के हाथ की बीच की तीन अंगुलियां तर्जनी, मध्यमा और अनामिका बिना किसी कारण के टेढ़ी हो जाये, और बिना किसी रोग के जिसका गला सूखता हो तो उसकी छः महीने में निश्चय मृत्यु होगी।

(२५) वाष्पं पुरीष मूत्राणिपश्येद्रूप्यसुवर्णवत्।
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने दशमासोऽत्र जीवति॥

जो मनुष्य जाग्रत वा निद्रावस्था वा स्वप्न में मलमूत्र, सुवर्ण तथा चांदी के समान देखे, वह १० महीने में मरेगा।

(२६) मर्त्यैर्वीक्षितलक्षणंहिसलिले भानुर्यदादृश्यते।
क्षीणोदक्षिणपश्चिमोत्तरपुर षट्त्रिद्विमासंकतः॥
मध्यं छिद्रमिवभवेत् दशदिनं धूमाकुलंतद्दिने।
सर्वज्ञैरपि भाषितं मुनिवरैरायुः प्रमाणं स्फुटम्॥

सर्वज्ञ मुनिवर कहते हैं कि जिस मनुष्य को जल में सूर्य की छाया दक्षिण की ओर कटी दीखे तो वह छः महीने, पश्चिम की ओर कटी दीखे तो तीन महीने और उत्तर की ओर कटी दीखे तो दो महीने में और पूर्व की ओर कटी दीखे तो एक महीने में, छाया के बीच में छिद्र दीखे तो दस दिन में और छाया को धुए के रंग देखे तो उसी दिन मृत्यु होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२७) जो मनुष्य दीपक बुझने पर उसकी गंध नहीं अनुभव करता और रात्रि में अग्नि देखकर भय मानता है वह छः महीने से अधिक जीवित नहीं रह सकता।

(२८) जिसके शरीर से अग्नि की गन्ध आती हो वह एक महीने के बाद मर जायेगा।

(२९) दक्षिण की मुट्ठी बन्द करके नाक की सीध में और भौंहों के बीच में नेत्र के सम्मुख रखकर हाथ की कलाई को देखा जाता है तो वह बहुत ही पतली दिखाई पड़ती है यही स्वाभाविक नियम है। परन्तु मृत्यु के छः महीने पहले से कलाई पतली मिली हुई नहीं दिखाई देती किन्तु अलग सी दिखाई देने लगती है।

(३०) जिस मनुष्य के स्तन का चर्म असाद हो वह पांच महीने में यमालय में पहुंच जायेगा अर्थात् पांच महीने में मर जायगा।

(३१) जिस मनुष्य की छाती स्नान करते ही तुरन्त सूख जाय उसकी मृत्यु छः महीने में अवश्य होगी।

स्वप्न फल विचार

मृत्यु से पूर्व जिस प्रकार शारीरिक विकार के पीछे कहे हुए लक्षण प्रकट होते हैं, उसी प्रकार अरिष्टजनक स्वप्न भी दिखाई पड़ते हैं। स्वप्नों का वर्णन वेद तक में पाया जाता है। मनुष्य जागृत अवस्था में जिन-जिन विषयों का चिन्तन करता और जिन वस्तुओं को इस जन्म में देखता व सुनता है अथवा पूर्व किसी जन्म में देखा वा सुना वा चिन्तन किया हो उन्हीं विषयों के सम्बन्धी अविकल अथवा भिन्न-भिन्न संयोग जनित अनेक प्रकार स्वप्न में देखता है अतः कैसा भी असम्बन्ध असामञ्जस्य भिन्न-भिन्न स्थान, भिन्न-भिन्न लोक आदि असम्भव से असम्भव स्वप्न भी क्यों न देखे जायें सब ठीक है। यद्यपि सम्पूर्ण स्वप्न सफल नहीं होते हैं। अतः यह भलीभांति स्मरण रखने योग्य है कि कौन-कौन से स्वप्न ठीक नहीं होते और कौन-कौन से ठीक होते हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन शास्त्रों से यहां उद्धृत कर देते हैं।

चिन्ताव्याधिसमायुक्तोनरः स्वप्नञ्चपश्यति।
तत्सर्वं निष्फलं तात प्रयात्यवे न संशयः॥
जड़ोमूत्र पुरीषण पीड़ितश्च भयाकुलः।
दिगम्बरो मुक्तकेशो न लभते स्वप्नजं फलं॥

अर्थात् चिन्ता और व्याधि (रोग) समायुत मनुष्य जो स्वप्न देखता है वह सब हे तात! निष्फल हैं इसमें संशय न करो।

मुत्र, पुरीष दुःखित, भयाकुल चित्त, बाल खुले और सोते में पहने हुए वस्त्र खुल जाने से अथवा नंगे होकर सोने वाले को जो स्वप्न दिखाई पड़ते हैं उनका फल कुछ नहीं होता।

दृष्ट्वास्वप्नञ्च निद्रांचुर्यदि निद्रां प्रयातिच।
.....नलभेत स्वप्नजं फलं॥
उक्तवाकाश्यपगोत्र य विपत्तिं लभते ध्रुवं।
प्रकाशयेन्न सुस्वप्नः पण्डिते कदपान्वये॥

अर्थात् स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाने से तथा काश्यपगोत्रज मनुष्य से स्वप्न का वर्णन कर देने से फिर उसका फल नहीं मिलता।

धातु विकार की दशा में कभी भी देखा स्वप्न दिखाई पड़े तो वह ठीक नहीं होता।

मृत्यु सूचक स्वप्न

१—जो मनुष्य लाल, श्वेत रस अथवा विष्ठा मूत्र की वमन होते देखे, उसकी केवल १० महीने आयु समझनी चाहिए।

२—जो कोई आदमी स्त्री को काले अथवा लाल वस्त्र पहने हुए हंसते, अपनी दाहिनी ओर जाते हुए देखे तो उसकी मृत्यु निकट समझनी चाहिए।

३—जो आदमी भयानक काले रंग के आदमी को हथियार लिये वा पत्थर से मारने को देखे तो उसकी उसी दिन मृत्यु होगी।

४—जो आदमी नंग धड़ंगा फकीर को नाचते, हंसते और क्रूर दृष्टि से अपनी ओर देखते देखे तो समझलो कि शीघ्र ही मृत्यु होगी।

५—काले रंग का काले वस्त्र पहने और लोहे का डंडा हाथ में लिये सन्मुख खड़ा दीखे तो ३ महीने में मृत्यु होगी।

६—जो मनुष्य काले रंग की स्त्री दोनों बाहुओं से पकड़े वह छः महीने पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होगा।

७—अपने शरीर को गन्ध पुष्प आदि से भूषित देखे तो समझ लो ८ महीने से अधिक नहीं बचेगा।

८—राख के ढेर अथवा दीपक के ऊपर अपने को खड़े हुये देख पड़े तो ८ महीने मात्र जीवित रहना चाहिए।

९—अपने मस्तक वा शरीर पर सूखी लकड़ी अथवा तृण रखा हुआ देखने से ६ महीने जीवित रहना चाहिए।

१०—शृगाल, कुक्कुर, शूकर, शकुनि, राक्षस, असुर, पिशाच, भूत, प्रेत, पतङ्ग, कुरङ्ग अथवा श्येन पक्षी में से किसी का दर्शन हो अथवा इन्हें खाते हुए देखे तो एक वर्ष में निश्चय यमलोक को जाना होगा।

११—अपने मुख से सब दांत गिर पड़े हुए देख पड़ें तो शीघ्र मृत्यु होगी।

१२—बन्दर की पीठ पर चढ़कर पूर्व की ओर जाता हुआ दिखाई पड़े तो पांच दिन में मरण होगा।

१३—गधा व भैंस की पीठ पर चढ़ दक्षिण की ओर जाता देख पड़े तो उसकी मृत्यु सन्निकट समझो।

विशेष ध्यान देने योग्य

१४—उक्त मृत्यु सूचक स्वप्नों में सब ही एक आमी को दिखाई नहीं पड़ते हैं। इनमें से कोई-कोई स्वप्न किसी-किसी को एक अथवा अधिक दिखाई पड़ते हैं। पर २१ और २७ नम्बर पर लिखित चिन्ह प्रत्येक को देख पड़ते हैं। यह जब देख पड़े तब से नित्य प्रायः तारामण्डल को देखते रहना चाहिए। जिस दिन तारामण्डल न दिखाई दे उस दिन से दशवें दिन मृत्यु होना निश्चय जान लें। और संसार से मोह छोड़ पुण्य काम कर परमेश्वर का स्मरण करते हुए मृत्यु के लिये प्रस्तुत रहना चाहिए। और "अन्तेयादृशीमतिर्गतिर्भवति तादृशी" के लिये मन को स्थिर करना चाहिए। यदि स्थिरता न हो सके क्योंकि "मनश्चञ्चलमस्थिरम्" तो उत्तम भावना रखनी चाहिए कि जिससे आगामी जन्म उत्तम कुल में प्राप्त हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसी लिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजम् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही समान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सब से बड़ी विडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकम्प बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे हैं कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उन को भले ही लाभ हो लेकिन इस से ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम् एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्रायः सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं ही है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे। कन्याभर्तु-र्विनाशाय, भर्तु कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगी। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अतः यह स्वतः प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इस विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है, अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखें हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो।
२. सप्तमेश पर बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है।
३. सप्तम भाव को बली शुक्र या बृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है।
४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेडा जातक में एक श्लोक आता है:

त्यक्ताकैं विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया। सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूं मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ३० वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह प्रभाव उत्पन्न हो गया है उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आईये जन्मपत्रिका बनायें

इष्टकाल-लग्न-समय एक अखंड एवं अविभाजित आयाम है, किन्तु हमने अपनी सुविधा के लिए तथा प्रकृति की स्थूल गति और परिमाणों को जानने के लिए उसे विभाजित कर लिया है। उन विभाजित खंडों का रात-दिन घण्टा-मिनट आदि नामकरण कर लिया है। दिन-रात के चौबीस भाग करके उन्हें घण्टा कहने लगे हैं और इन घण्टों की गिनती घड़ी द्वारा करने लगे हैं। प्रकृति के पास वैसी घड़ी नहीं है। वह समय नहीं देखती, बल्कि उन्मुक्त भाव से अपनी लीला में लीन है। हम यहां उस लोक की बात नहीं कर रहे, जहां समय का कोई माप नहीं है। हम यहां धरती की बात करेंगे, जहां समय को वर्ष-मास-सप्ताह-दिन-रात, घण्टा-मिनट एवं सैकिंडों में नापा जाता है। समय बलवान है, अजर है, अमर है, वह किसी के लिए रुकता नहीं है, निर्बाध गति से चलता ही रहता है। समय का व्यक्ति विशेष पर क्या प्रभाव पड़ेगा इस पर हम आगे विचार करेंगे जो कि ग्रहों द्वारा व्यक्ति विशेष के बारे में विशुद्ध जानकारी देता है।

जिस समय बालक जन्म लेता है तो हर व्यक्ति उसका जन्म समय घड़ी देखकर नोट कर लेता है। घड़ी के समय को स्टैंडर्ड टाइम कहते हैं। हमने अपनी सुविधा के लिए सारे देश के लिए एक समय निश्चित कर लिया है। असम में जब घड़ी में पांच बजते हैं तो सारे भारत की घड़ियों में भी पांच बजते हैं। भारत के पूर्वी भाग के सूर्योदय एवं पश्चिमी भाग के सूर्योदय में लगभग पौने दो घंटे का अंतर रहता है। घड़ियों में यदि यही अंतर रखा जाये तो बड़ी विसंगति प्रतीत होगी। प्रकृति सूर्य की घड़ी को ठीक मानती है। ग्रह भी सूर्य को केन्द्र मानकर चलते हैं, इसलिए जन्म लेने वाले बालक का जन्मपत्र बनाने के लिए स्थानीय सूर्योदय काल से ही बच्चे के जन्म समय का निर्धारण किया जाता है। सारे देश में सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न रहने से भिन्न-भिन्न स्थानों में जन्मे बालकों के समय में अंतर रहना स्वाभाविक है। मान लें कि असम में एक बालक का जन्म पांच बजे होता है और दूसरा बालक भी पांच बजे दिल्ली में जन्म लेता है तो स्टैंडर्ड समय तो एक ही रहेगा, लेकिन सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न होने से इष्टकाल भिन्न-भिन्न ही होगा। हमने अपनी सुविधा के लिए सारी पृथ्वी के पिंड को पूर्व से पश्चिम तक एक रेखा कल्पित करके दो भागों में विभाजित कर लिया है। एक भाग को हम उत्तरी गोलार्ध एवं दूसरे भाग को दक्षिणी गोलार्ध कहते हैं। इसी प्रकार हमने सारे भूमंडल को पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक रेखायें कल्पित करके छोटे-छोटे भागों में बांट लिया है। जो रेखायें पूर्व से पश्चिम को मानी जाती हैं उन्हें अक्षांश कहते हैं तथा जो रेखायें उत्तर से दक्षिण को मानी जाती हैं, उन्हें देशान्तर कहते हैं। इन रेखाओं की सहायता से हम किसी भी प्रदेश की जलवायु का ज्ञान आसानी से कर सकते हैं। अक्षांश रेखाओं से हम किसी भी देश और स्थान की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करते हैं। पृथ्वी के गोलक को हमने १८० अक्षांश मान लिया है। दूसरे शब्दों में मध्य रेखा के ऊपर ९० अक्षांश और नीचे ९० अक्षांश मान लिये हैं। यह रेखायें वास्तव में हमें किसी देश की कोणात्मक दूरी बताती हैं। देशान्तर रेखायें उत्तर से दक्षिण को चलती हैं और इन पर पड़ने वाले स्थानों की भौगोलिक स्थिति में काफी अन्तर रहता है, जबकि एक ही अक्षांश अर्थात् पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली रेखा पर पड़ने वाले स्थानों की जलवायु में कोई अन्तर नहीं रहता।

एक वृत्त को हमने ३६० भागों में बांट रखा है। पृथ्वी को अपनी धुरी पर घूमकर पुनः उसी बिन्दु पर आने के लिए २४ घण्टे का समय लगता है। इस प्रकार हमने गणित करके यह जान लिया है कि एक देशान्तर रेखा की दूरी तय करने में ४ मिनट का अंतर आता है। विश्व का मानक समय ग्रीनविच नामक शहर-जो कि भूमध्य रेखा पर स्थित है-को केन्द्रक बिन्दु मानकर निर्धारित किया गया है। हमारे देश का मानक समय आई.एस.टी. वाराणसी से गुजरने वाली (८२ अक्षांश) अक्षांश रेखा के अनुसार ५ घण्टे और ३० मिनट आगे है। इसी गणित को मानकर चलें तो वाराणसी से पूर्व में पड़ने वाले प्रत्येक अक्षांश वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट कम करने होंगे तथा पश्चिम में प्रत्येक अक्षांश पर पड़ने वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट बढ़ाने होंगे। मान लें कि वाराणसी में किसी दिन सूर्योदय प्रातः पांच बजकर ३० मिनट पर होता है तो पूर्व रेखांश (८१.३०) पर चार मिनट पहले अर्थात् पांच बजकर २६ मिनट पर होगा और पश्चिम में पड़ने रेखांश पर ४ मिनट बाद अर्थात् पांच बजकर ३४ मिनट पर होगा।

नक्षत्रमंडल के सारे ग्रह-पिंड प्रतिक्षण गतिशील हैं। इष्टकाल का अर्थ उन क्षणों से है जब बालक मां के गर्भ से बाहर धरती पर आ जाता है। मोटे तौर पर बनने वाली लग्न कुण्डली, जिसे टेवा या जन्माक्षर भी कहते हैं, पूरी राशि के उदयकाल से लेकर अस्तकाल तक अर्थात् दूसरी राशि के उदयकाल तक बनाई जाती है और यह स्थूल होती है, क्योंकि एक राशि में ३० अंश यानि १८०० कलायें होती हैं और आकाश में प्रतिक्षण परिवर्तन होते रहते हैं, अतः सूक्ष्म जानकारी के लिए इष्टकाल बनाकर और लग्नकाल के लघुतम समय तक पहुंचने के लिए नवांश से लेकर शतांश कुण्डली तक बनाई जाती है। भारत में जन्मे बालक का जन्म समय जोकि आई.एस.टी. होता है को स्थानीय समय बनाने के लिए संस्कार करने अनिवार्य होते हैं, पहला देशान्तर और दूसरा वेलान्तर। देशान्तर संस्कार इसलिए करना पड़ता है क्योंकि हर स्थान का सूर्योदय काल भिन्न होता है। उदाहरणार्थ २८ फरवरी के दिन दिल्ली में सूर्योदय ७ बजकर १७ मिनट पर था तो बम्बई में ७ बजकर ३ मिनट, मद्रास में ६ बजकर २९ मिनट और जयपुर में ६ बजकर ५६ मिनट पर था। ऐसा सब देशान्तर रेखाओं के कारण होता है। सारणी में दिये गये अंतर को ऋण या धन करके (चिह्नानुसार) से स्थानीय समय आ जाता है। इसी प्रकार वेलान्तर संस्कार भी करना पड़ता है। चूंकि सूर्य और पृथ्वी की गति में समानता नहीं है, अतः इनकी गति में सामंजस्य बिठाने के लिए वेलान्तर संस्कार किया जाता है। ऊपर से नीचे दिनांक और बांये से दायें महीने दिये गये हैं। दिनांक के सामने और महीने के नीचे धन या ऋण के चिह्न के साथ मिनट सैकिण्ड दिये गये हैं। अभीष्ट तारीख के स्थानीय टाईम में चिह्नानुसार ऋण तथा धन करने से वेलान्तर संस्कार हो जाता है। जन्म कुण्डली बनाने के लिए हमें निम्नलिखित तथ्यों की आवश्यकता पड़ती है:

१. बच्चे का जन्म समय, २. जन्म की तारीखादि, ३. जन्म स्थान, ४. सूर्योदय-सूर्यास्त

सर्व प्रथम लग्न सारिणी की सहायता से सूर्योदय एवं सूर्यास्त की विधि पर विचार करते हैं। एक बच्चे ने १५ अप्रैल १९९५ को बम्बई में सांय ४ बजे (आई.एस.टी.) जन्म लिया, हमारे पास दिल्ली के अक्षांश पर बना आर्यभट्ट पंचांग हैं, इसी पञ्चांग से बम्बई में जन्मे बच्चे की जन्म पत्रिका बनाते हैं। बम्बई का अक्षांश १८/५८ रेखांश ७२/५० है यहां का सूर्योदय एवं सूर्यास्त ज्ञात करते हैं। आर्यभट्ट पंचाग में १९° अक्षांश की लग्न सारिणी दे रखी है। दैनिक ग्रह स्पष्ट दे रखे हैं। १५ अप्रैल १९९५ का प्रातः ५.३० आई.एस.टी. का सूर्य स्पष्ट है ०.०° ४६'.२१'' अर्थात् मेष राशि शून्य अंश ४६ कला और २१ विकला।

सर्वप्रथम हम बम्बई का दिनमान निकालते हैं-

हमने १९° अक्षांश की सारिणी में प्रातः सूर्य स्पष्ट का फल देखा ० राशि ० अंश के नीचे संख्या मिली = ३/१०

अब प्रातः सूर्यस्पष्ट से सातवीं राशि का फल सारिणी में देखा तो संख्या मिली = ३४/१५

दूसरी संख्या में से प्रथम संख्या घटाई = ३४.१५ - ३.१० = ३०.५। ३० घटी ५ पल १५ अप्रैल १९९५ का बम्बई का दिनमान आया।

$$\text{सूर्यास्त} = \frac{\text{दिनमान (घड़ी-पल)}}{5} = \frac{30.5}{5} = 6.1 \text{ घं. मि.}$$

सूर्योदय = १२ - सूर्यास्त = ५.५९ घं.मि.

दिनमान = सूर्यास्त - सूर्योदय = १८.१ - ५.५९ = १२.२×२.५ = ३०.५

यह सूर्योदय बम्बई का स्थानीय समय एल.टी. है इसे स्थानीय मध्यम काल एल.एम.टी. बनाने के लिए इसमें देशान्तर जोड़ना या घटाना पड़ेगा और मानक समय आई.एस.टी. बनाने के लिए बेलान्तर जोड़ना या घटाना होगा।

एल.एम.टी.=एल.टी.+देशान्तर = ५.५९ + ०३८.४० = घं. ६ मि. ३७ सैं. ४०

आई.एस.टी.=एल.एम.टी.+वेलान्तर = ६.३७.४० + ०.०.० = ६.३७.४० आई.एस.टी.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

शाबर मन्त्र

शाबर मन्त्र-तन्त्र की ग्राम्य शाखा के मन्त्र हैं। तन्त्र मार्ग के प्रवर्तक भगवान् शंकर माने गये हैं किन्तु शाबर मन्त्रों के प्रवर्तक भगवान् शंकर प्रत्यक्ष रूप में नहीं है, लेकिन जिन सिद्ध पुरुषों ने इनको आविर्भूत किया वे सभी तन्त्र मार्ग के साधक और शिवानुरागी अवश्य थे। इन मन्त्रों का भले ही कोई शास्त्रीय आधार नहीं है किन्तु लाभकारिता की दृष्टि से या उपयोगिता में ये अशास्त्रीय प्रयोग भी किसी प्रकार कम नहीं है।

कुछ विद्वानों का मत है कि साबरमती के तटीय क्षेत्रों पर बसी जाति के सिद्धों ने ये मन्त्र प्रचारित किये इसलिए इन्हें साबर या शाबर मन्त्र कहा जाता है। शाबर मंत्र की शुरूआत कब से हुई और कौन इनके प्रवर्तक थे इस बारे में कई मत हैं, किन्तु यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इस मार्ग को प्रामाणिक स्वरूप प्रदान किया नाथ सम्प्रदाय के आदि गुरु मत्स्येन्द्र नाथ और गोरखनाथ ने। नाथ सम्प्रदाय के इन सिद्धों का यह समाज पर बहुत बड़ा अहसान है कि उन्होंने मन्त्र विज्ञान जैसे जटिल विषय के गूढ़ रहस्यों को साधारण जनों के लिए उपयोगी बना दिया सर्व सुलभ कर दिया। साबर का अर्थ होता है अपरिष्कृत, यह तो माना जा सकता है कि साबर तन्त्र से न तो हमें अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है न ही इनके द्वारा हम मुक्ति मार्ग को पा सकते हैं, किन्तु इस विद्या में जितने भी प्रयोग हैं वे सब काम्य प्रयोग हैं। आज हमें यह विदित नहीं है कि इनमें कुछ तथ्य है या हम प्रमादवश इनकी उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, किन्तु इस विद्या में अचूक मन्त्र और तन्त्र प्रयोग हैं जो हमारे जीवन में आये विघ्न-बाधाओं को समूल नष्ट करने, सामान्य आकांक्षाओं को पूर्ण करने और एक सीमा तक रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए ग्राम्य अंचलों में आज भी प्रयोग किये जा रहे हैं। जहां इस विद्या के जानकार सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाते हैं वहीं उनमें से कुछ अल्पज्ञानी अपने अहं और लोभ से प्रेरित होकर जनता को हानि भी पहुंचाते हैं। कई बार ऐसे लोग प्राकृत रोग-दोषों को भी झाड़-फूंक से दूर करने का ढोंग रचा कर रोगी का अहित कर डालते हैं। इसमें मुख्य कारण है ऐसे लोगों का विद्याव्यसनी न होना और निरक्षर व्यक्ति अहं और भ्रान्ति का शिकार हो जाये तो क्या आश्चर्य, दूसरे इनका जीवन जिस विश्वास और वातावरण में चलता है वहां सुविधा और सम्पर्क की बात थोड़ी रहती है। शाबर मंत्रों में आम बोल चाल की भाषा रहती है। इसमें न्यास, ध्यान, तर्पण हवन-मार्जन आदि शास्त्रीय मर्यादाओं को पालने का बन्धन नहीं है। जहां शास्त्रीय मन्त्र तुरन्त कोई विश्वस्त कार्य नहीं कर सकते वहां साबर मन्त्र पूर्णतया लाभप्रद रहते हैं। रोग, भूत बाधा से मुक्ति दिलाने एवं चौकी बैठाने (अभिचार कर्म) में इनसे चमत्कारिक रूप में कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। शाबर मन्त्रों में आन, शाप, श्रद्धा और धमकी का प्रयोग ही किया जाता है, और साधक का कार्य सम्पन्न हो जाता है। साबर मंत्रों का रूप विचित्रता और विविधता लिए हुए मिलता है। शुद्ध बीज मंत्रों को लेकर ग्रामीण भाषा की शब्दावली को वाक्य रूप दे दिया जाता है जिससे इन मन्त्रों में विचित्रता का आभास होता है, एक ही मंत्र में कई शैलियों के सम्मिश्रण के कारण इनमें विविधता आ जाती है। साबर मंत्रों में कुछ मंत्र तो ऐसे हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि उनका वाक्यगत कोई अर्थ नहीं निकलता जैसे सिर दर्द दूर करने का मन्त्र है:-

"हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा।"

प्रत्यक्ष में इस शब्दावली को निरर्थक कहा जा सकता है किन्तु इसका प्रभाव असाधारण रूप से पड़ता ही है। शाबर मन्त्र प्राय: संस्कृत, प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं में रचे गये हैं। कुछ-एक मंत्रों में कई भाषाओं का समावेश कर दिया गया है। तो कई-एक मंत्रों में ठेठ क्षेत्रीय भाषा तथा ग्राम्य लहजा, शैली और कल्पना भी। अधिक मन्त्र हिन्दी भाषा में मिलते हैं चूंकि हिन्दी एक बड़े भू-भाग की बोलचाल की भाषा प्राचीन काल से रही है। एक बात और भी है कि जहां शास्त्रीय मन्त्रों में षड्ांग (ऋषि, देवता, बीज, शक्ति-छन्द-कीलक) की आवश्यकता रहती है वहां साबर मंत्रों में इनकी कोई आवश्यकता नहीं है मन्त्र ही अपने आप में पूर्ण है। साबर मन्त्रों में श्रद्धा ही प्राण है, इसी के दृढ़ और विस्तार हो जाने पर शाबर मन्त्र अपना प्रभाव और फल दे देते हैं। साबर मन्त्रों में दूसरा प्रभाव सौगन्ध के रूप में देखने को मिलता है। यह सौगन्ध आन के रूप में दिलाई जाती है जिसमें गाली, शाप जैसी स्थितियों का उल्लेख होता है जैसे:-

"हे गुरु देव! मुझे आन है अगर मेरा कहा नहीं करेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पग धरे, चमार के कुंड में गिरे, धोबी की नांद में कंकर बनकर पड़े इत्यादि।"

इस प्रकार का व्यवहार समाज के दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता, किन्तु शाबर मन्त्र के साधक का व्यवहार वैसे ही क्षम्य है जैसे किसी अबोध बच्चे कि की गई अभद्रता को माता-पिता अपने वात्सल्य और बच्चे की अवस्था के कारण क्षमा कर देते हैं। बच्चा चूंकि छल-कपट से दूर होता है उसे अपनी जिद के आगे कुछ सूझता नहीं और वह कहनी-अनकहनी कह जाता है, ठीक यही हाल शाबर मन्त्र साधक का होता है, वह भी बाल सुलभ सरलता के कारण और श्रद्धा और विश्वास के बल पर मन्त्र साधना का अधिकार और सिद्धी प्राप्त कर लेता है।

शाबर मन्त्रों में सबसे बड़ी खूबी यह है कि इनमें अधिक झंझट नहीं है ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। साबर मंत्रों में गुरु की भी इतनी आवश्यकता इसलिए नहीं रहती क्योंकि इस विद्या के प्रवर्तक स्वयं सिद्ध गुरु गोरखनाथ हैं। इतने पर भी किसी निष्ठावान साधक को गुरु बना लेना लाभ ही देगा क्योंकि साधना में आने वाले विघ्नों में वह बचा लेगा शाबर मन्त्रों की साधना करते समय ब्रह्मचर्य और व्रतोपवास का पालन किया जा सके तो अधिक अच्छा रहे अन्यथा साधना करते समय शुद्ध होकर बैठना चाहिये। परोपकार पुण्य है और पर-पीड़न पाप। यदि हम इस दृष्टिकोण से सोचें तो दैहिक, मानसिक रोगों को शमन करने वाले मन्त्रों को सिद्ध करना चाहिये। इससे हमें दोहरा लाभ मिलेगा, एक तो हम परोपकार का पुण्य अर्जित करेंगे दूसरे अपने पूर्वजों की धरोहर को सहेजेंगे भी।

नीचे कुछ शाबर मन्त्र दिये जा रहे हैं। मन्त्र व्यवहारिक विषय है। धैर्य और विश्वास से अपना लेने पर सिद्धि मिलेगी ही। असफलताएं और विघ्न हर क्षेत्र में आते हैं, परन्तु इनसे घबराने से काम नहीं चलेगा। साधना करते समय गुठली को प्रतिपल उखाड़ कर देखने की (कि उगी या नहीं) बाल सुलभ चंचलता मत रखिये, आतुर मत होईये। एक निष्ठ होकर करते रहिये।

प्रेत बाधा निवारण के लिए:- "ॐ नमो दीप मोहे दीप जागे पवन चले पानी चले शाकिनी चले डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले, नो सौ निन्न्यानवे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।" किसी मंगलवार से किसी हनुमान मन्दिर में तैल का दीपक जलाकर इस मन्त्र का एक लाख पच्चीच हजार जप करें तो यह सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से रोगी को सामने बिठाकर मोर पंख से १०८ बार मन्त्र बोलकर झाड़ा देना चाहिये।

पीला निवारण के लिए:- "ॐ नमो वीर वेताल असराल, नार करे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूं भिदाती करै झारै पीलिया रहे न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमन्त की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।" ग्रहण काल में इस मन्त्र को जप कर सिद्ध कर लें। पीलिया के रोगी को सामने बिठा कर उसके सिर पर कांसे के बरतन में तिल्ली का तेल डालकर रखें और मन्त्र का जप करते हुए उसे कुशा (डांभ) से चलाते रहें ऐसा तीन दिन करें तो तेल पीला पड़ जायेगा और रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।

घर की रक्षा के लिए:- "या अल्लाह पाक इस आंगन को मैं करता हूं आज बन्द, हजरत सुलेमान की बरकत से बन्द, हजरत मूसा के हुकुम से बन्द, हजरत अली की शमशीर से बन्द, हजरत अहमद के कलाम से बन्द, या रहमान की रहमत से बन्द, या करीम के करम से बन्द या खालिक की बरकत से बन्द या मालिक की रहमत से बन्द या अल्लाह पाक मालिक रब्बुलगफूर, हमारी इस दुआ को तू करले कबूल, ला इलाहाइल्लल्लाह मुहम्मदुर सूलल्लाह।" नौचन्दी की जुमेरात को इस मन्त्र को जाप कर सिद्ध कर लेने के पश्चात सोते समय वजु कर के मन्त्र का उच्चारण कर लोटे के पानी में फूंक मारें यह क्रिया पांच बार करें, पानी को घर में छिड़क दें और ताली बजा कर सो रहें।

गणपति सिद्धि मन्त्र:- ॐ गणपति गणपति बसे मसान, जो फल मांगूं देते आन। पंजे लड्डू सेर सन्दूर भर आन आन आन-दपूर। न द्वैतीभान फूल फलन्त जागे भरल्यावे तो एक फूले हाथी जो तू मोहन रहे मूवा बाल साथ करी जाऊं तो मुट्ठी करो।

भाद्रपद की गणेश चतुर्थी से इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपें यह क्रम १०८ दिन तक चलना चाहिये। इस से गणपति प्रसन्न हो कर मन की इच्छा पूर्ण करते हैं।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति-वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्त्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में पृथ्वी तत्त्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं। वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्त्व अत्याधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति-वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्त्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित, सहृदय, स्वप्नदर्शी, मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष के दूर भागते हैं जिनके चेहरे पर जल तत्त्व का अत्याधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं। गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्त्व का अत्याधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति-सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्त्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्टवक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्त्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक में अत्यन्त क्रोधी हिंसात्मक एवं पाशविक वृति वाला होगा। सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति-अंडाकार मुखाकृति वायु तत्त्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मुड़ी उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वछन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं। यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंग्य प्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्त्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है। अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति-ऐसे जातक को देख कर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्त्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांन्ति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग अथाह हृदय, महत्वाकांक्षी स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं। अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:-

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं मानसिक इच्छाओं का सूचक है। जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यावहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है। जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी वासनायुक्त, असभ्य, मंदबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्न लिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है- (१) लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो। (२) लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो। (३) यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों। (४) लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों के लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखें तो कार्य की सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए। यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो। लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा?- (१) लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है। (२) यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न:- (१) यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा। (२) यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है। (३) यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों, तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है। (४) प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न:-यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो, ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न:--पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है। ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी। लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

पाण्डुलिपि सम्पादन की प्रक्रिया

① - मातृका-चयन

सर्वप्रथम हमें जिस मातृका का सम्पादन करना है उसकी कितनी मातृकाएं उपलब्ध हैं सम्पादन कार्य के लिए न्यूनतम 3 मातृकाएं अवश्य अपेक्षित हैं यदि अधिक मातृकाएं उपलब्ध होती हैं तो उनमें शुद्ध पाठवाली, पूर्ण तथा विभिन्न सम्प्रदाय या क्षेत्र की होनी चाहिए। यदि मातृका अपूर्ण है परन्तु शुद्ध और किसी क्षेत्र या सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व करती है तो उसे ग्रहण करना चाहिए। जिससे पाठ निर्णय में सुगमता हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तेज होता है। यह लोग अवारा हृदय, महत्वाकांक्षी स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी। लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

है। यह ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ

की जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होता। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

तथा बृहस्पति का बलवान होना भी सन्तति कारक योग बनता है। शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है। यदि पांचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी। यदि पांचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी। यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पांचवें भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है। यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी। यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है। यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न:-(१) यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बंटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है। (२) यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है। (३) यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर भूमि की प्राप्ति होती है। (४) यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि मकान खेत आदि प्राप्त करता है। (५) यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकद्दमें में जीत हार:- (१) यदि प्रश्न में पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात उसकी हार होगी। (२) यदि सप्तम भाव में बाल पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो। (३) यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकद्दमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा-प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न:-अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुंचा, बंधा हुआ है या मर गया है? (१) यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात् कुशल से है, ऐसा कहना। (२) प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना। यदि प्रश्न काल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुंच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन:-(१) प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पांचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पांचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना। (२) सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ९) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार:-(१) यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पाप ग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है। (२) लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है। अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार:-(१) दूसरे बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा। (२) चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्यु दण्ड का सूचक है। (३) यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठे हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा। (४) यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा?-(१) प्रश्न लग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में स्थित होकर लग्न को तीन चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

अमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगी?-प्रश्न काल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान् हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने से लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी:-(१) ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है। (२) यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? जितने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा। (३) क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हो तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान् होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गड़ा धन है या नहीं?-(१) प्रश्न कुण्डली में चतुर्थ भाव का स्वामी चौथे स्थान को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी। (२) चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न-प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायु गत हुई शोक जानो।

नष्ट वस्तु परिज्ञान

नक्षत्री की संज्ञा	नक्षत्र	दिशा	अवधि प्राप्ति या नहीं
अन्धलोचन	रो., पु., उ. फा., वि., पू. षा., ध., रे.	पूर्व	शीघ्र मिले प्रयत्न से
मंदलोचन	मृ., अश., ह., अनु., उषा., श., अ.	दक्षिण	३ दिन में मिले प्रयत्न से
मध्यलोचन	आ., भ., चि., ज्ये., अभि., पुष्य., भ.	पश्चिम	६४ दिन में मिले प्रयत्न से
सुलोचन	पुन., पूफा., स्वा., मू., श्र., उभा., कृ.	उत्तर	नहीं मिले

चोर ज्ञानम्-प्रश्न लग्न की कुण्डली बनाकर देखिए, सप्तम स्थान में स्त्री राशि है या पुरुष राशि। स्त्री राशि हो तो स्त्री चोर, पुरुष राशि हो तो पुरुष चोर है, ऐसा जानो।

सर्पदंश सम्बन्धी प्रश्न-मूल, कृतिका, मघा, विशाखा, आश्लेषा, रेवती आर्द्रा नक्षत्रों में सर्प ने काटा है तो यदि गरुड़ भी रक्षा करें तो भी प्राण नहीं बच सकते।

ऋणी-धनी प्रश्न-अपने वर्ग को दूनाकर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर आठ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके अपना वर्ग जोड़ना उपरान्त आठ का भाग देना। जिसका अधिक शेषांक बचे तो ऋणी तथा कम बचने वाले को धनी जाना।

पशु विषयक प्रश्न-सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र नवम तक हो तो पशु वन में है आगे से छः नक्षत्र में हो तो पशु घर को शीघ्र आएगा। आगे के दो नक्षत्र में मिलेगा नहीं, आगे की तीन नक्षत्र में मृत्यु को प्राप्त हुआ ऐसा जाने।

आयु निर्णय चक्र:

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चर में लग्नेश/चर में अष्टमेश	चर में लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश	चर में लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश
स्थिर में लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश/चर में अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश
द्विस्व. लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश	द्विस्व. लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश	द्विस्व. लग्नेश/चर में अष्टमेश

आयु निर्णय-(१) जन्म कुण्डली में देखें लग्नेश एवं अष्टमेश-चर, स्थिर, द्विस्वभाव किस राशि में पड़ा है। पश्चात् ऊपर दिये गये चक्र से जातक की दीर्घायु मध्यायु एवं अल्पायु निश्चित करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न विचार

मेष लग्न:-मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुँआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, रक्त गोल नेत्र, मुख पर चिन्ह, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी उधमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतन्त्र विचार वाला प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली स्वच्छन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं। तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि बुध शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्रायः शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६ वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न:-जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्षाल, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरणशक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, काम्टमैटिक्स, भवन निर्माण, जवाहरात विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कन्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते है। इनका भाग्योदय २५, २८ ३६ एवं ४२ वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न:-जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रूचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्टस, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३४, ३६, ४२ वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ चन्द्रमा अशुभ मंगल, सूर्य अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न:-जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय कल्पनाशील, परिश्रमी भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मन्त्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२ वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न:- जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट शरीर प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रसासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ राहु-केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२ वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न:-जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवादि, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न:-जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रशन्नचित तथा तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है। यह न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र, शुभ, सूर्य मंगल बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न:-जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एंव संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दृष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य चन्द्रमा मंगल बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२ वें वर्ष मे, होता है।

धनु लग्न:-बड़े कान, लम्बी गर्दन,बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, बकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२ वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न:-जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२ वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न:- जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छहृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी विचारक, रोचकवक्ता एवलं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न:-जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत, बहुकुटुम्बी, सदगृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य शुक्र शनि बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३३ वें वर्ष में होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हथेली से भविष्य ज्ञान

आई.ए.एस. अधिकारी:-यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई.ए.एस. अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग:-यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुंच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग:-यदि बुद्ध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुद्ध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी:-मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग:-यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

डाक्टर होने का योग:-यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डाक्टर होता है।

शिक्षक होने का योग:-बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो।

अभिनेता-अभिनेत्री योग:-अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और हलकी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार:-हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन:-(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हों, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग:-(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है। (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो।

सुखहीन विवाह का योग:-(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत का कम उभरा हुआ होना।

तलाक होने के योग:-(१) विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से रेखा चल कर विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग-विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठा उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

(१) यदि चन्द्र पर्वत अत्याधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है। (२) यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है। (३) यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है। (४) यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है। (५) यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है। (६) यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है। (७) यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुर्दों के रोग रहते हैं। (८) अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य योग:-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु:-भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता या पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग:-मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु:-जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमे बाजी में जायदाद और धन नाश होना:-दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग:-(१) चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग:-जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिलो हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-(१) यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है। (२) शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी में आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है। (३) चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है। (४) हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है। (५) जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए। (६) बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है। (७) शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्याधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है। (८) जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है। (९) भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में विलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है। (१०) यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धनहानि होती है। (११) यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

नव-रत्नों का चमत्कार

प्राचीन ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार नौ ग्रहों सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु का विभिन्न रत्नों से सम्बन्ध है। इन रत्नों के क्रमशः नाम इस प्रकार है:- माणिक्य, मोती, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, वैडूर्य अथवा लहसुनिया। इन रत्नों को जब मनुष्य अपने शरीर पर धारण करता है तब वे अपने माध्यम से ग्रहों की रश्मियों को मानव शरीर में प्रविष्ट कर देते हैं जिसके फलस्वरूप रत्न धारण करने वाला मनुष्य उससे सम्बन्धित ग्रह के शुभ प्रभाव का पर्याप्त लाभ उठाने लगता है।

माणिक्य-यह सूर्य का रत्न माना जाता है तथा लाल रंग का होता है। इसके पहनने से शत्रुओं का नाश होता है तथा जीवन में भाग्योदय होता है, नौकरी वालों को पदोन्नति में सहायक होता है तथा मन्त्रियों अथवा सरकारी विभागों में सहयोग मिलता है। मन्त्रियों को यह पहनना लाभदायक है। इसके धारण करने से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धारणकर्त्ता साहसवान आत्मबली, धैर्यवान तथा निर्भीक बनता है। समाज में उच्च और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है। अगर जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य नीच का हो अथवा छठे आठवें और बारहवें घर में बैठा हो तो माणिक्य नहीं धारण करना चाहिए। श्रेष्ठ माणिक्य खरीद कर, उस पर सूर्य का बीजमन्त्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" का विधिवत ७००० जप करके कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सोने अथवा तांबे की अंगूठी में जड़वाकर धारण करें।

मोती:-यह चन्द्रमा का रत्न माना जाता है तथा इसके पहनने से मन की बेचैनी दूर हो जाती है, जिन व्यक्तियों को बहुत क्रोध आता है अथवा जिनका ब्लड प्रैशर अधिक होता है उनके लिए यह रत्न लाभकारी है। स्त्रियों के लिए मोती पहनना आवश्यक है क्योंकि उनको यह रत्न सौभाग्यशाली बनाता है। स्वच्छ और दोषरहित मोती पहनने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा यश मिलता है। उच्चकोटि का मोती खरीद कर सोमवार के दिन अथवा रोहिणी, हस्त, श्रवण नक्षत्रों अथवा पूर्णिमा को चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, चन्द्र के बीज मन्त्र "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः" का विधिवत जप करके अनामिका में धारण करें।

मूंगा:-लाल रंग का यह रत्न मंगल का रत्न माना जाता है। मूंगा धारण करने वाले का साहस बढ़ता है और उसके शत्रुओं का नाश होता है। पुलिस तथा सैनिक सेवाओं में काम करने वालों को विशेष लाभदायक है। यदि भयानक स्वप्न आते हों तो इसके पहनने से ऐसे स्वप्न आने बन्द हो जाते हैं। भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति प्राप्त होती है। स्त्रियों को मूंगा सौभाग्य प्रदान करता है। जिसका ब्लड प्रैशर कम हो उनके लिए लाभकारी है। उच्चकोटि का दोष रहित मूंगा खरीद कर मंगलवार के दिन मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्रों में सोने अथवा तांबे की अंगूठी में जड़वा कर "ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भमाय नमः" मन्त्र का विधिवत १०,००० जप करके धारण करें। याद रहे मूंगे के साथ कभी नीलम, गोमेद और लहसुनिया नहीं धारण करना चाहिए। अगर जन्म कुण्डली में मंगल छठे, आठवें तथा बारहवें घर में पड़ा हो तो भी मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।

पन्ना:-हरे रंग का यह रत्न बुध का रत्न माना जाता है। यह रत्न बुद्धि बल देता है तथा इसके पहनने से शरीर पुष्ट होता है। धन, धान्य तथा सम्पत्ति की वृद्धि होती है। इसके धारण करने से जादू, टोने नजर आदि से रक्षा होती है। मिर्गी और पागलपन से बचाता है। नेत्रों में तरावट लाता है। स्वप्नदोष दूर करता है। स्त्री के प्रसव के समय पर बांधने से शीघ्र प्रसव हो जाता है। यह रत्न लेखकों, अध्यापकों, राजनीतिज्ञों, व्यापारियों को अधिक लाभकारी है। उच्चकोटि का दोष रहित पन्ना खरीद कर बुधवार के दिन अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्रों में सोने अथवा चांदी की अंगूठी में जड़वा कर "ॐ ब्रां ब्री ब्रौं सः बुधाय नमः" मन्त्र का विधिवत् ८००० जप करके कनिष्ठिका उंगली में धारण करें।

पुखराज:-चिकना, चमकदार, पानीदार पीले रंग का पुखराज बृहस्पति का रत्न माना जाता है। यह धन, धान्य, विद्या, बुद्धि, बल, ज्ञान, सम्पत्ति, आयु और यश प्रदान करता है। इसके धारण करने से वंश की वृद्धि होती है। यह भूत-प्रेत की बाधा से रक्षा भी करता है। जिस कन्या के विवाह में बाधा पड़ रही हो तो पुखराज पहनने से शीघ्र उपयुक्त वर प्राप्त हो जाता है। जिसके घर में क्लेश रहता है वहां पति अथवा पत्नी को पुखराज धारण करना अत्यन्त लाभकारी है। यह रत्न मन में धार्मिक विचारों का संचार करता है तथा इससे शराब जैसे बुरे व्यसन छूट जाते हैं। उच्चकोटि का पुखराज खरीद कर बृहस्पतिवार के दिन पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भादप्रद नक्षत्रों में सोने की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ बृं बृहस्पतये नमः" मन्त्र का विधिवत १९००० जप करके पहनना चाहिए। मगर लग्न वालों के लिए पुखराज इतना लाभकारी नहीं है।

हीरा:-हीरा शुक्र का रत्न माना जाता है। इसके पहने से धन प्राप्ति, दाम्पत्य सुख, विवाह सुख तथा वाहन सुख प्राप्त होता है। इसको शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वा फाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में प्लेटीनम अथवा चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ शुं शुक्राय नमः" मन्त्र का विधिवत् १६००० जप करके धारण करें। मेष, वृश्चिक तथा मीन लग्न वालों के लिए यह रत्न लाभकारी नहीं है।

नीलम:-यह शनि का रत्न माना जाता है। इसको पहनने से पहले इसकी परीक्षा करना आवश्यक है क्योंकि जहां यह अत्यन्त अशुभ फलदायक भी है, और अपना फल दो/तीन दिन में ही दे देता है। इसे शनिवार के दिन खरीद कर पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्र पद नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः" मन्त्र का विधिवत् २३००० हजार जप करके धारण करें। यदि यह लाभदायक सिद्ध हो तो कारोबार में आकस्मिक धन लाभ तरक्की देता है तथा गैस रोग व अन्य बीमारियों में लाभदायक होता है। यदि थोड़ा सा भी हानिप्रद साबित हो तो फौरन उतार देना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में शनि छठे, आठवें, द्वादश स्थान में बैठा हो तो नीलम कदापि धारण नहीं करना चाहिए।

उपरत्नों का प्रभाव

मुख्य रत्नों का जातक पर क्या प्रभाव पड़ता है। वह ग्रहों के अनुसार ऊपर दिया गया है। परन्तु रत्न मंहगे होने के कारण साधारण व्यक्ति इन्हें कम खरीदते हैं। अतः ज्योतिषी कई बार उन्हें उपरत्न पहनने की सलाह देते हैं। इन उपरत्नों को पहनने से क्या प्रभाव पड़ता है नीचे दिया गया है:-

अकीक:-यह पत्थर प्रायः कई रंगों में मिलता है। कुण्डली में जो ग्रह कमजोर हो उस ग्रह से सम्बन्धित रंग का पत्थर पहना जाता है। अच्छी सेहत, धन सम्पत्ति और हर कार्य में सफलता हासिल करने के लिए यह पहना जाता है। इसे आप चांदी में जड़वा कर किसी भी शुभ दिन को पहन सकते हैं।

फिरोजा:-फिरोजी रंग का यह पत्थर जातक को विषम परिस्थितियों का सामना करने में सहायता करता है। तथा दुर्घटना एवं चोट से बचाता है। विष से जातक की रक्षा करता है। स्त्रियों की प्रजनन शक्ति को बढ़ाता है। फिरोजा बुध और शनि का मिश्रित प्रभाव देता है। इसे चांदी और तांबे की मिश्रित धातु से बनी अंगूठी में जड़वा कर पहनें।

कटैला:-जामुनी रंग का यह पत्थर नेत्र रोग, अधरंग से पीड़ित व्यक्तियों को लाभकारी है। इसके पहले शराबियों की शराब छूट सकती है। और किसी प्रकार के नशे से भी छुटकारा मिल सकता है। माहवारी रोग से पीड़ित स्त्रियों को स्वास्थ्य लाभ हो सकता है। मुकद्दमेबाजी में सफलता प्राप्त होती है।

ब्लड स्टोन:-हरे रंग के इस पत्थर पर लाल रंग के धब्बे होते हैं। जिन स्त्रियों को मासिक धर्म में अत्याधिक खून आता है उनके लिए यह रत्न बहुत उपयोगी है। बावासीर से पीड़ित व्यक्ति इसे पहन कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अक्वामैरिन:-इस पत्थर को प्रेमी अपनी प्रेमिका को अथवा प्रेमिका अपने प्रेमी को पहनाए तो दोनों में प्रेम बना रहता है, ऐसी धारणा है। पति और पत्नि के बीच सम्बन्धों को मधुर बनाता है।

केन्द्र, त्रिकोण तथा तीसरे, छठे और एकादश स्थान में बैठा हो तो राहू की महादशा में गोमेद धारण करना लाभकारी है। अगर राहु द्वितीय, सप्तम, अष्टम, द्वादश भाव में स्थित हो तो गोमेद नहीं धारण करना चाहिए। बुधवार के दिन स्वाती, शतभिषा और आर्द्रा नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ रां राहवे नमः" मन्त्र का विधिवत् १८००० जप करके धारण करें। तो रोग व शत्रुओं के नाश के लिए यह लाभकारी है। आकस्मिक धन लाभ भी कराता है।

वैडूर्य अथवा लहसुनिया:-यह केतु का रत्न माना जाता है। जब केतु लग्न, केन्द्र त्रिकोण अथवा तृतीय, षष्ट तथा एकादश भाव में स्थित हो तो केतु की महादशा में लहसुनिया धारण करना लाभकारी होता है। यदि केतु द्वितीय, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में हो तो यह रत्न नहीं धारण करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन अथवा अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर इस रत्न पर "ॐ के केतवे नमः" मन्त्र का १७००० जप करके धारण करना चाहिए।

धर्मसन प्रकाशन. 2596. नई सड़क. दिल्ली-110006 ☎ 3285234. 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक शुभाशुभ देखने का चन्द्रकालानल चक्र

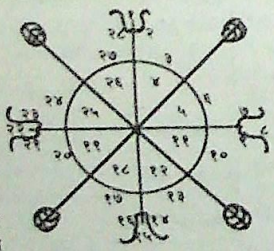

दिये हुए चित्र के समान एक चंद्र कालानल चक्र बनावें। फिर जिस दिन का शुभाशुभ विचार करना हो उस दिन का नक्षत्र देखें कि पंचांग में चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। प्रातःकाल जिस नक्षत्र पर चंद्रमा हो उसको चित्र में १ अंक पर रखकर फिर आगे के २८ नक्षत्रों को अंकों के क्रमानुसार लिखें। इसमें अभिजित का समावेश भी है। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ रहा है। उसी के अनुसार फल समझें। यदि त्रिशूल में नाम नक्षत्र पड़े तो अशुभ, वादविवाद, रोग, धनहानि आदि। वृत्त के अन्दर पड़े तो आयुवृद्धि, धनलाभ, हर्ष, मित्रों का मिलन आदि शुभ फल हो। यदि वृत्त के बाहर (३,६,१०,१३,१७,२०,२४,२७ अंको पर) पड़े तो कुछ प्रसन्नता और कुछ दुःख। आधा दिन अच्छा और आधा क्लेश, चिन्ता, धन हानि से बीतेगा। इस प्रकार आप रोज देख सकते हैं कि "आज का दिन कैसा बीतेगा।"

शनि पीड़ा नाशक यंत्र

यदि किसी व्यक्ति को शनि की ढैया या साढ़ेसाती के कारण बहुत परेशानी आ रही है हो तो चित्र में दिये हुए यंत्र को एक पत्थर की स्लेट के टुकड़े पर लकड़ी के कोयले से शनिवार को व्रत रख कर लिखें। तथा उस शनि से परेशान व्यक्ति के ऊपर सिर से पैरों की ओर सात बार उतार कर उस व्यक्ति के द्वारा ही किसी ऐसे कुएं (या पानी के तालाब) में फिकवादें जिसका पानी वह स्वयं कभी न पियें। उसके बाद वह पीछे मुड़कर न देखें। यह कार्य सांय काल को अधिक प्रभावशाली रहता है। ऐसा करने से उसको शनि की पीड़ा से मुक्ति मिल जाएगी यह अनुभूत है।

यंत्र

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

सर्वरोग नाशक यंत्र

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अनार की कलम और केशर की स्याही से लिखें। देवदत्त के स्थान पर रोगी का नाम लिखें। फिर उस भोजपत्र को लपेट कर तावीज के रूप में लाल कपड़े में लपेटकर सिल लें। और धूपदेकर तथा घी के दीपक के ऊपर ७ बार फिराकर अपने दाहिने बाजू में बांध लें। यह क्रिया करते समय कोई देखे या टोके नहीं इसलिए एकान्त में करना चाहिये। इसके बांधने से प्रायः सभी रोग नष्ट हो जाते हैं और सुख मिलता है।

यंत्र

श्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	देवदत्त		श्रीं
श्रीं			श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं

व्यापार में वृद्धिकारक लक्ष्मी यंत्र

दीपावली की रात्रि में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगंध की स्याही से लिखकर गुग्गुल की धूप तथा दीप से यंत्र की पूजा करें। और उसी समय "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" मंत्र की २१ माला (१०८ दानेवाली) जपकर प्रत्येक माला के बाद यंत्र पर फूंक मारें। फिर इस यंत्र को दुकान की गद्दी के नीचे लाल कपड़े में लपेट कर रख दें तथा नित्य प्रातः स्नान करके गद्दी पर बैठने से पहले धूप दीप से पूजा करके तब गद्दी पर बैठें। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में व्यापार में आश्चर्य जनक तरक्की होगी।

यंत्र

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

शत्रु दमन कारक यंत्र

इस यंत्र को चिता की भस्म की पानी में स्याही बनाकर आक (मदार) की लकड़ी की कलम से भोजपत्र पर लिखकर मंगल वार के दिन श्मशान की अग्नि में शत्रु का नाम लेकर डालने से शत्रु पूरी तरह से परास्त होकर वशीभूत हो जाता है और हमेशा के लिए दास बन जाता है।

यंत्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

मुकदमा जीतने का यंत्र

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर किसी तांबे के तावीज में भरकर, गुग्गुल की धूप देकर तथा घी के दीपक से पूजा करके अपने गले या दाई भुजा में बांधें जब तक अंतिम फैसला न हो जाय बांधे रखें। मुकदमें में विजय होगी।

यंत्र

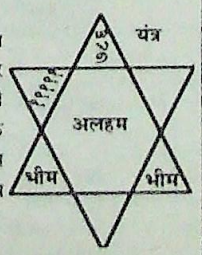

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारक मंत्र, यंत्र

सूर्यः- यदि सूर्य गोचर में ४, ८, १२वें हो तो कष्ट, रोग, धनहानि, असफलता प्रदान करता है। यही फल विंशोत्तरी दशा आने पर भी करता है। इसके निवारण के लिए सूर्य के बीज मंत्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" का ७००० जप उपयुक्त रहता है। किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से आरंभ करें। लाल कपड़ा, गुड़, ताम्र पात्र, गेहूं का दान करें। रक्त पुष्पों से सूर्य की पूजा करें। सूर्य यंत्र को अष्टगंध की स्याही व अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप देकर ताबीज की भांति दाहिनी भुजा में रविवार प्रातः को ही धारण करें तो अरिष्ट निवारण होता है, सुखशान्ति मिलती है। ये सभी यंत्र सर्वार्थसिद्धि मुहूर्त में धारण किये जायें तो उत्तम है।

सूर्य यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चंद्रमा :- यदि चंद्रमा के कारण अरिष्ट हो रहा है तो इसके निवारण के लिए किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसेनमः" मंत्र का चन्द्रोदय समय में ११००० जप करें। जप एक सी संख्या में करें। कभी ज्यादा कभी कम, ऐसा न करें। श्वेत फूलों से चंद्रमा की पूजा करें। चांदी, चावल, चीनी, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन का दान करें। चन्द्र यंत्र को चांदी के तावीज या श्वेत वस्त्र के ताबीज में (भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखकर) दायीं भुजापर धारण करें। सुख-शान्ति होगी।

चन्द्र यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगलः मंगल एक पापी ग्रह है। गोचर में ४, ८, १२वें स्थान में आने पर या विंशोत्तरी दशा आने पर या जन्म कुण्डली में अशुभ होने पर बहुत हानिकरता है। इसकी शान्ति के लिए बीज मंत्र "ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमायनमः" का शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से जप आरम्भ करें। लाल फूलों से मंगल की पूजा करें। सोना, ताम्रपात्र, गुड़, घी, लाल वस्त्र, मसूर, केसर, लालचंदन का दान करें। अष्टगंध, अनार की कलम से भोजपत्र पर भौमयंत्र लिखकर, धूप, दीप देकर दायीं भुजा में धारण करें। शांतिहोगी, दुख दूर होंगे।

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	१०	५
४	११	६

बुधः- पापी या क्रूर ग्रहों के साथ जन्म कुण्डली में बुध के बैठ जाने से बुध भी अनिष्ट कारक फल देता है। इसके निवारण के लिए बुध के बीजमंत्र "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधायनमः" का शुक्ल पक्ष के ज्येष्ठ बुधवार से जप प्रारम्भ करें। सुवर्ण, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र, फल का दान करें, जप ९००० हजार करें। केशर या अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर बुधयंत्र लिखकर हरे वस्त्र के ताबीज में रखकर, धूपदीप देकर दांयी भुजा में बांधे तो अवश्य कष्ट निवारण होगा।

बुध यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

बृहस्पतिः- यद्यपि गुरु शुभ ग्रह है किन्तु यदि गोचर में ४, ८, १२ हो तो विवाहादि शुभ कार्यों में अड़चन डालता है। अन्य प्रकार से भी अनिष्टकारक हो सकता है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः" का १९००० जप करें। जप शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से शुरू करें। सोना, चने की दाल, घी, पीला वस्त्र, केले के फल, हल्दी का

गुरु यंत्र

१०	५	१२
११	९	६
६	१३	८

धर्मसन प्रकाशन. 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दान करें। भोजपत्र पर केशर की स्याही व अनार की कलम से गुरु यंत्र लिखकर तथा सोने के या पीले वस्त्र के तावीज में रखकर दांये हाथ में धारण करें। जप के लिए पीली माला लें।

शुक्र :- शुक्र के अनिष्ट कारक प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्र के बीज मंत्र "ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।" का १६००० जप करें। श्वेत चंदन की माला प्रयोग करें। चांदी, चावल, चीनी, दूध, श्वेत वस्त्र, दही का दान करें। जप प्रातः सूर्योदय काल में करें। अष्टगंध तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर शुक्र यंत्र लिखकर धूपदीप देकर श्वेत वस्त्र या चांदी के तावीज में रखकर दांयी भुजा में धारण करें। अवश्य सुख व शान्ति मिलेगी।

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि :- शनि एक क्रूर ग्रह है। बड़ा विनाशक ग्रह है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः" का कृष्णा पक्ष के प्रथम शनिवार से जप प्रारम्भ करें। जप संध्याकाल में करें। नीलम, लोहा, उड़द, तेल सरसों, कुलथी, काला, कम्बल व वस्त्र दान करें। जप संख्या २३००० है। भोज पत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से शनि यंत्र लिखकर काले कपड़े या सोने के तावीज में मंढवा कर धारण करें। शनि का प्रभाव दूर होगा।

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहुः शनि की भांति राहु भी एक क्रूर छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए कृष्ण पक्ष के प्रथम शनिवार से बीजमंत्र "ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवेनमः" का जप रात्री के प्रथम प्रहर में कम्बल के आसन पर बैठ कर करें। जप संख्या १८००० है। तिल, सरसों, तेल, नीले वस्त्र, कम्बल (काले) का दान करें। भोजपत्र पर अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से राहुयंत्र को लिखकर, धूप दीप देकर, सोने के तावीज में रख कर धारण करें।

राहु यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु :- मंगल की भांति केतु भी अनिष्ट कारक छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से बीजमंत्र "ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः" से १७००० जप करें। लहसुनियां, सुवर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूम्रवस्त्र, नारियल का दान करें। केतु के यंत्र को राहु की भांति धारण करें।

केतु यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

कतिपय चमत्कारी मंत्र

(१) व्यापार वृद्धि के लिए :- "भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा, उठे तो डंडी बिकैजो माल, भंवरवीर सोखे नहिं जाय।" रविवार के दिन प्रातःकाल स्नान करके १ माला जप करें। फिर ११ दाने उड़द के इसी मंत्र से ११ बार पढ़कर अपनी व्यापार की गद्दी पर फैंक दें। तीन रविवार लगातार ऐसा करने से व्यापार में अवश्य वृद्धि होती है।

(२) सर्व मनोकामना पूर्ति के लिए :- श्री दुर्गामाता की मूर्ति सामने रखकर उसका विधिवत पूजन करके, हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए संकल्प करें। फिर निम्नमंत्र का सवालाख जप करें। तो निश्चित मनोकामना पूर्ति होती है। मंत्र "ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमस्तुते॥"

(३) विवाह सम्पन्न करने के लिए:- "ॐ गौरी आवे शिवजी ब्याहवै, अमुक को विवाह तुरंत सिद्ध करै, देर न करै, देर होय तो शिवजी का त्रिशूल पड़े, गुरू गोरखनाथ की दुहाई फिरै" इस मंत्र का ११ दिन तक लगातार एक माला रोज, जप करें, दीपक व धूप बालें। ग्यारहवें दिन रात को एक कोरे कुल्हड़ में सात डली नमक की, सात काली मिर्च लाल कपड़े में बांधकर रखदें। कुल्हड़ का मुंह भी लाल कपड़े से बांध दें। कुल्हड़ पर बाहर की ओर सात बिन्दी कुमकुम की लगाकर और ऊपर लिखे मन्त्र की पांच माला जप करके, चुपचाप कुल्हड़ को आधी रात को किसी चौराहे पर रख आवें, पीछे मुड़कर न देखें। सारी रुकावटें दूर होकर बहुत जल्द शादी हो जाती है।

(४) आधाशीशी दूर करने का मंत्रः- ॐ नमो बन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद कूद शाखान पै कच्चे बन फल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े आधादेय गिराय, हंकारत हनुमान जी आधा शीशी जाय" इस मंत्र से नीम की डाल या राख से रोगी को दक्षिण को मुख करा कर झाड़ा दें तो तीन दिन में आधा शीशी बिल्कुल ठीक हो जाती है।

(५) पुत्रदायक मंत्रः- "ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहिमे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।" शुद्ध आसन पर पूर्व मुख होकर तुलसी या रुद्राक्ष की १०८ दाने की माला से सवा लाख जप करें। जप के बाद शहद, घी, शक्कर, तिल मिश्रित सामग्री से १०००० आहुतियों का हवन करें। १००० तर्पण, १०० मार्जन करें। भगवान कृष्ण का ध्यान करें, अभक्ष्य चीजों से दूर रहें। भगवान अवश्य कामना पूर्ति करेंगे।

(६) रोग नाश के लिए मंत्र :- "ॐ रोगान शेषानपहं सितुष्टा, रुष्टा तु कामान सकलान भीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयांति।" इस मंत्र का दुर्गा सप्तशती में दी हुई विधि से सवा लाख मंत्र जप करें तो माँ भगवती की कृपा से कठिन से कठिन रोग से भी मुक्ति मिलती है।

(७) धन प्राप्ति के हेतु महालक्ष्मी मंत्रः- श्री लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति के समक्ष, धूप, दीप, फल, मिष्ठान्न रखकर मंत्रजप करें। मूर्ति का मुख पूर्व दिशा में तथा जपकर्ता का मुख उत्तर को रहे जलकलश पर नारियल अवश्य रखें। मंत्र "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं कमले कमला लये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।" सवा लाख मंत्र जप, हवन करें।

(८) शत्रु विनाशक मंत्रः- शत्रु विनाश के लिए श्री बगलामुखी मंत्र से बढ़कर अन्य कोई मंत्र नहीं है। पीली धोती व दुपट्टा आदि कपड़े धारण करें। बगलामुखी का चित्र सामने रख कर उसकी विधिवत पूजा करें, पीले फूल चढ़ावें, पीले मिष्ठान्न से भोग लगावें, पीली माला (हल्दी की) प्रयोग करें। ५१००० जप करें। जप के बाद नीम के पत्ते, कौए के पंख तथा सरसों के तेल से हवन करें। तो शत्रु का विनाश होता है। मंत्र-"ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा॥"

(९) रोग निवारण तथा दीर्घायु प्राप्ति के लिए:- इसके लिए महामृत्युञ्जय मंत्र का शिव की मूर्ति के समक्ष बैठकर विधि पूर्वक जप करें। जप सवा लाख हो, बाद में हवन, तर्पण, मार्जन दशांश करें। मंत्र -"ॐ ह्रौं जूं सः। ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः भुवः भूः। ॐ सः जूं ह्रौं ॐ।

(१०) मृत संजीवनी मंत्र :- ॐ तत्सवितुर वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं भर्गो देवस्य धीमहि, उर्वारुक मिव बन्धनात् धियो योनः प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ।। इस मंत्र के सविधि जप से अकालमृत्यु भी टल सकती है।

(११) बिच्छू का विष उतारने का मंत्रः- "ॐ नमो आदेश गुरू को। कालो बिच्छू कांकरवालो, उतर बिच्छू न कर टालो, उतरै तो उतारूं चढ़ै तो मारूं, गरुड़ मोर पंख हंकालूं। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।" इस मंत्र को सूर्य ग्रहण में जितना जप संभव हो सके, जप करके सिद्ध करलें। फिर चिम्टा, चाकू या झाड़ू से ७ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दे दें। विष उतर जायेगा।

(१२) पीलिया दूर करने का मंत्रः- "ॐ नमः आदेश गुरू को श्रीराम सर साधा लक्ष्मण साधा वाण, काला पीला सीता नीला थोथा पीली पीला पीला चारों गिरि जहि तो श्री रामचन्द्र जी रहे नाम। हमारी भक्ति गुरू की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।" पहले इस मंत्र को सूर्यग्रहण या दिवाली की रात को अधिक से अधिक (१००००) जप करके सिद्ध कर लें। बाद में रोगी को पीतल के पात्र में शुद्ध जल देकर मंत्र का उच्चारण करते हुए सुई से सात बार शनिवार के दिन झाड़ें। सात शनिवार तक क्रिया करें। अवश्य लाभ होगा।

द्वादश राशियों के देवता औरजपनीय मंत्रः- स्तोत्र ग्रंथों के अनुसार यदि व्यक्ति अपनी जन्म या नाम राशि के देवता का नियमित रूप से एक माला का जप करता रहे तो उसकी आपदा, कष्ट, रोगादि का स्वतः ही निवारण होता रहता है। राशियों के मंत्र निम्न प्रकार हैं (१) **मेष**- "ॐ विष्णवे नमः" (२) **वृष**-"ॐ वासु देवाय नमः (३) **मिथुन** :- ॐ केशवाय नमः (४) **कर्क** :- "ॐ राधा कृष्णायनमः" या "ॐ हरिहराय नमः"। (५) **सिंह**- "ॐ बालमुकुन्दाय नमः (६) **कन्या**:- "ॐ ह्रीं पीतम्बराय परमात्मने नमः (७) **तुला** :-ॐ श्रीराम दाशरथये नमः। (८) **वृश्चिक**:- "ॐ नमो नारायणाय नमः" (९) **धनु**- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं धरणी धराय नमः (१०) **मकर** :- ॐ श्री वत्साय उपेन्द्राय नमः (११) **कुम्भ राशि**- के देवता गोविन्द गोपाल हैं। "ॐ गोपाल गोविन्दाय नमः।" (१२) **मीन**- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं रथाङ्गचक्राय नमः।"

॥ चमत्कारी यंत्रों द्वारा सिद्धि ॥

(१) शत्रु को वश में करने का यंत्र :- इस यंत्र को कागज पर हाथी दांत से लिखकर मरघट में गाड़ दें तो शत्रु वश में हो जाय।

५८	३७	५	८
७८	९	२	५२
५४	५	८४	११
७	८७	६८	५८

यंत्र-१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२) परदेशी को वापिस बुलाने का यंत्र:- इस यंत्र को तथा आने वाले का नाम तालाब की मिट्टी से बड़ के पत्ते पर लिखकर आगन्तुक की दिशा में गाड़ दे वह शीघ्र आ जावेगा।

३८	६५	१	२१
१०	६३	६५	१६
४	५	८७	९१
३९	२८	२८	२८

यंत्र-२

(३) भूत प्रेत नाशक यंत्र:- यंत्र (३) को असगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखें तो भय नहीं रहता। या इस यंत्र को चांदी के वर्क पर या भोजपत्र पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताये रोगी के सिर पर दो मिनट रखकर तालाब में फेंक आवें तो भूत भाग जाता है।

८५	५६	९	१२
१	६१	६२	१४
४६	४	१८	९१
८	६७	२८	५८

यंत्र-३

(४) बवासीर नाशक यंत्र:- रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में इस यंत्र को भोजपत्र पर नीबू के रस से लिखकर गले में बांध लें तो बवासीर से मुक्ति मिलती है।

९	३	८	१३
६५	४	१०	७७
७	६	१५	८०
१२	८२	११	१४

यंत्र-४

(५) पुरुष वशीकरण मंत्र:- इस यंत्र (५) को भोजपत्र पर पान के रस या केशर से लिखें। अनार की कलम बनावें। फिर स्त्री उसे अपनी साड़ी में या भुजा में बांध ले तो उसका पुरुष उसके वश में रहता है।

१	६५	२	९२
७५	९	२	५२
९७	२८	८३	९१
६	७	३९	४५

यंत्र-५

(६) सर्व कार्य सिद्धि यंत्र :- इस यंत्र (६) को भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल, असगंध की धूप दे कर तांबे के तावीज में भुजा में बांध लें तो मनचाहा कार्य सिद्ध हो।

५७	५८	९	११
३३	५७	४८	३७
८६	६	४४	६८
२५	५५	६५	९

यंत्र-६

(७) नजर (दीठि) दूर करने का यंत्र :- यंत्र (७) को भोजपत्र पर अनार की कलम तथा केसर की स्याही से लिखकर तांबे के तावीज में मढ़कर इतवार या मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बांध दें तो बच्चे को कभी नजर न लगे।

४६	६	८५	८५
९	८	४२	२५
७८	७२	८	५
७	५	३५	८

यंत्र-७

(८) सर्व बाधानाशक यंत्र:- पैंसठिया यंत्र यह यंत्र सब प्रकार की बाधाओं को नाश करता है। इस यंत्र को भोजपत्र पर, अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से लिखें। इस यंत्र के चारों ओर 'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्ये नमः' लिखें। दीपावली की रात को यह यंत्र बनावें। गुग्गुल की धूप दें। महालक्ष्मी मंत्र का १००८ बार जप कर चांदी के तावीज में मंढवाकर दाहिनी भुजा में बांध लें। तो धन सम्बंधी सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं। **महालक्ष्मी मंत्र** "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः॥"

यंत्र-८

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

(९) मुकदमा जीतने का यंत्र :- दीपावली की रात को या चंद्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण में इस यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर गुग्गुल, असगंध की धूप देकर चांदी के तावीज में मंढवाकर गले या दांये बाजू में जब तक मुकदमा चले तब तक बांधे रहें। मुकदमे में अवश्य विजय होगी। शराब, मांस का परहेज रखें।

यंत्र-९

५९२	५९५	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

(१०) गर्भधारण यंत्र:- जिस स्त्री के गर्भ धारण में असुविधा हो रही हो उस की बांयी भुजा में इस यंत्र को जिस दिन रविवार को मूल नक्षत्र हो उस दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर धूपदीप देकर चांदी के तावीज में रखकर बांध दें। अवश्य सिद्धि होगी।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

यंत्र-१०

॥ अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष ॥

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्वपूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जन. २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्व पूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जन. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जन. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जन. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३, तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जन. ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जन. ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जन. ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखें जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जन. ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९० वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं। तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फर. १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इन का लगाव होता है। **फर. २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फर. ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फर. ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९ ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फर. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फर. ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ६, १५, २४ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फर. ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फर. ८, १७, २६** इनके लिए

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फर ९, १८, २७** इनके जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ था ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्पूर्ण वर्ष, १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं। और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७८ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८ १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं। तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्पूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्पूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, १०, १९, २८, ९, १८, २७ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, २२, १५, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६, मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की २, ७, ११, १६, २०, २८, २५, १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

जून १, १०, १९, २८ जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६९, ६८९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जुलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जु. ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों के प्रति तीव्र आकर्षण रखते हैं। **जुलाई ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २२, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ६, १५, २४, ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुला. ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जु.**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

८, १७, २६ को जन्मे लोगों के लिये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ९, ८, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०, ३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, १३, २२, ३१, ८, १७, २६ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ ता. में जन्म लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आगकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ४, २३, ६, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण रहता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्तू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्तू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। तारीख ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्तू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्तूबर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्पूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ४, १३, ३२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नव. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवं. ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। **दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। **दिनांक ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं। तथा १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। दिसं. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे लोगों के जीनव के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। दिसं. ७, १६, २५ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

धर्मायन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फर ९, १८, २७** इनके जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते है तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ था ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च में ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्पूर्ण वर्ष, १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं। और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं। तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्पूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्पूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, १०, १९, २८, ९, १८, २७ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, २२, १५, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६, मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की २, ७, ११, १६, २०, २८, २५, १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

जून १, १०, १९, २८ जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६९, ६८९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जुलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जु. ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों के प्रति तीव्र आकर्षण रखते हैं। **जुलाई ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ६, १५, २४, ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुला. ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७१वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जु.**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

८,१७, २६ को जन्मे लोगों के लिये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ९, ८, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०, ३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४,१३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, १३, २२, ३१, ८, १७, २६ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ ता. में जन्म लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आगकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ४, २३, ६, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण रहता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्तू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६, २८, ३१ की जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। तारीख ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्तू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्तूबर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्पूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ४, १३, ३२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नव. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवं. ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। **दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। **दिनांक ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं। तथा १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। दिसं. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे लोगों के जीनव के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। दिसं. ७, १६, २५ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

धर्मपाल प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु: अनिद्रा, उदर विकार, मस्तिष्क विकार, पागलपन।
केतु: चर्म रोग, मस्तिष्क रोग, क्षुधा जनित रोग।

ग्रहों के कारकत्व

ग्रहों के कारकत्व दो प्रकार के होते हैं (१) स्थिर कारकत्व (२) चर कारकत्व। ग्रहों के स्थिर कारकत्व तो सदा अपरिवर्तनीय हैं, परन्तु चर कारकत्व एक जन्म पत्री से दूसरी जन्म पत्री में प्राय: बदल जाते हैं।

स्थिर कारकत्व: सूर्य:-आत्मा, पिता, प्रताप, आरोग्यता, आसक्ति, लक्ष्मी, राजा शासन कार्य, नेत्र, पर्वत आदि का कारक है।

चंद्रमा: मन, बुद्धि, माता, स्त्री, चांदी, चावल, जल, राज-कृपा का कारक है।

मंगल: पराक्रम, रोग, भाई, भूमि, शत्रु, जाति, युद्ध, साहस, सेना, अग्नि, पुत्र का कारक है।

बुध: विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र, वाणी, व्यापार, गणित, शिल्प आदि का कारक है।

गुरु: बुद्धि, विद्या, स्वास्थ्य, पुत्र, ज्ञान, शास्त्र अध्ययन, अग्रज, ब्राह्मण, दादा का कारक है।

शुक्र: स्त्री, वाहन, मकान, भूषण, काम, व्यापार, कला संगीतादि श्वेत वस्तु का कारक है।

शनि: आयु, मृत्यु का कारण, जीवन, विपत्, सम्पत्, सेवक, दु:ख, रोग का कारक है।

राहु: पितामह, गुप्तधन, प्रेत बाधा, तस्कर-व्यापार आदि का कारक है।

केतु: मातामह (नाना), गुप्तशक्ति, चर्मरोग, तंत्रविद्या, धूम्र वर्ण का कारक है।

चर कारक:-जन्मपत्री में पहले ग्रह स्पष्ट करें। उसके पश्चात ग्रहों की राशि को छोड़कर केवल उनके अंश, कला, विकलादि पर ध्यान दें। जिस ग्रह के सबसे अधिक अंश हों वह **आत्म कारक** ग्रह होता है। यदि दो ग्रहों के अधिकतम परन्तु समान अंश हों तो उनके कला विकलादिसे निर्णय करें। आत्मकारक से न्यून अंश वाला **अमात्य** कारक, उससे न्यून अंश वाला **भ्रातृकारक**, उससे कम अंश वाला **मातृकारक**, उससे कम अंश वाला **पुत्रकारक**, उससे कम अंश वाला जाति कारक तथा उससे कम अंश वाला **स्त्रीकारक** ग्रह होता है। कारकांश कुण्डली बनाने की प्रक्रिया यह है कि आत्मकारक ग्रह जिस राशि के नवांश में हो उसको कारकांश कुण्डली का लग्न मानकर सभी ग्रहों को यथास्थान रख देने से कारकांश कुण्डली बन जाती है।

अंगपीड़ा ज्ञान:-षष्ट भाव से मुख्यत: रोग, चोट, ऐक्सीडेंट, बीमारी आदि का ज्ञान होता है। छठे भाव की सूक्ष्मता को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि कौन-कौन सी राशियां किन-किन अंगों से सम्बन्धित है। इस प्रकार छठे भाव में जो राशि होती है उससे संबंधित जातक अंग ही विशेष रूप से प्रभावित होता है। यदि छठे भाव की राशि शुभ है या शुभ ग्रह युक्त है तो वह अंग ठीक रहता है। यदि पाप या क्रूर ग्रह युक्त है तो वह अंग दुर्बल या रोग युक्त हो जाता है। इसी प्रकार अकारक षष्ठेश जब जब जिन-जिन राशियों पर जायेगा तभी उन राशियों से अंग पीड़ित होंगे। अत: नीचे राशियां तथा उनसे संबंधित अंग दिये जा रहे हैं-

क्रम सं.	राशि	संबंधित मानव अंग
१	मेष	सिर, चेहरा, मस्तिष्क, कान, नाक, ओष्ठ।
२	वृष	गर्दन, गिल्टियां, कंठ, गले का भीतरी भाग।
३	मिथुन	कंधे, हाथ, फेफड़े, रक्त, मांस, भुजाएं, हड्डियां।
४	कर्क	सीना, छाती तथा पेट, हंसली।
५	सिंह	पीठ, कमर, हृदय, रीढ़ की हड्डी।
६	कन्या	लिवर, तिल्ली, गुर्दे, पीठ की हड्डियां।
७	तुला	त्वचा
८	वृश्चिक	जननेन्द्रिय, गुह्यस्थान, जंघाएं।
९	धनु	कमर, नाड़ियां।
१०	मकर	घुटने, हड्डियों के जोड़।
११	कुम्भ	पांव, टखने, पाचन संस्थान।
१२	मीन	एड़ी, पंजा, तलवे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों से शारीरिक अंगों का अध्ययन करना चाहिये। प्रथम भाव से-मस्तक, मस्तिष्क, चेहरा। द्वि भाव से-नेत्र, वाणी, जीभ। तृतीय भाव से-हाथ, कान, कन्धे, भुजाएं, चतु. भाव से-पेट, हृदय, गुर्दा। पंचम भाव से-हृदय, पीठ, कुक्षि, मूत्राशय, गर्भाशय। षष्ठ भाव से-कमर, उदर, आंते, नाभि, गुह्य स्थान। सप्तम से: -नाभि, कमर, गुप्तांग रोग। अष्टम भाव से- गुर्दा, जननेन्द्रिय। नवम भाव से-जांघ। दशम से-घुटने, पेट, पीठ, रीढ़। एकादश से- कान, पिण्डली, पांव, गर्दन, हाथ। द्वादश भाव से-पांव की अंगुली, तलवे के रोगों का अध्ययन करें।

द्वादश भावों के नाम तथा उन से संबंधित विचारणीय विषय

(१) **प्रथम भाव के नाम:**-आत्मा, शरीर, लग्न, होरा, देह, वयु, कल्प, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, आद्य, केंद्र, प्रथम, कण्टक, चतुष्टय।
विचारणीय विषय:-रूप, चिह्न, जाति, आयु, सुख, दु:ख, विवेक, शील, मस्तिष्क, स्वभाव, आकृति, आकार, माता-पिता को देहादि का विचार।

(२) **द्वितीय भाव के नाम:**- धन, स्व, वित्त, कोष, अर्थ, कुटुम्ब, पणफर, द्रव्य, मारक आदि।
विचारणीय विषय:- कुल, मित्र, आंख, कान, नाक, स्वर, सौंदर्य, गान, प्रेम, सुखभोग, क्रय-विक्रय, संचित पूंजी आदि।

(३) **तृतीय भाव के नाम:**- उपचय, पराक्रम, सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य, आपेक्लिम आदि।
विषय:-नौकर, चाकर, भाई, पराक्रम, आभूषण, दासकर्म, आयु, शौर्य, दमा, योगभ्यास आदि।

(४) **चतुर्थ भाव के नाम:**-केन्द्र, कण्टक, सुख, पाताल, तुर्य, हिबुक, गृह, सुहृद, वाहन, यान, अम्बु।
विषय:-मातृ पितृ सुख, मकान, गृह, ग्राम, चतुष्पद, वाहन, शान्ति, अन्त:करण, पेट के रोगादि।

(५) **पंचम भाव के नाम:**-पंचम, सुत, तनुज, पणफर, त्रिकोण, बुद्धि, विद्या, वाणी, आत्मज आदि।
विषय:-बुद्धि, विद्या, सन्तान, नीति, व्यवस्था, मातुल सुख, नौकरी छूटना, जठराग्नि, गर्भाशय, हाथ का यश, मूत्र पिण्ड, वस्ति, गर्भ, मंत्र साधना, हृदय, पीठ, कोख, आकस्मिक धन लाभ, पूर्व जन्म, प्रेम सम्बन्ध, मनोरंजन कार्य आदि।

(६) **षष्ठ भाव के नाम:**-रिपु, शत्रु, आपेक्लिम, उपचय, त्रिक, रोग, नष्ट आदि।
विषय:-मामा की स्थिति, शत्रु, रोग, चिन्ता, जमींदारी, गुदास्थान, ऋण, मौसी, पशु, अपयश, सौतेली मां, युद्ध, विश्वासघात, कमर, उदर, आतें, नाभि आदि।

(७) **सप्तम भाव के नाम:**-केन्द्र, मदन, सौभाग्य, जाया, जामित्र, काम, कलत्र, स्त्री आदि।
विषय:-पत्नी, पत्नी सुख, साझेदारी, विवाह समय, प्रवास, न्यायालय विवाद, मैथुन आदि।

(८) **अष्टम भाव के नाम:**-पणफर, चतुरस्र, त्रिक, आयु, रंध्र, मृत्यु, गुदारोग, युद्ध, सजा, दुर्घटना, बंधन, वियोग, जननेन्द्रिय, गुप्तधन, स्त्री से धन प्राप्ति आदि।

(९) **नवम भाव के नाम:**-भाग्य, धर्म, पुण्य, त्रिकोण।
विषय:-भाग्य, अधिकार, आदेश, पौत्र, धर्म, तीर्थ यात्रा, नेतृत्व, विदेश यात्रा, भाग्योदयकाल, भाग्योदय स्थान, पिता का सुख, साला, भावज, जांघ आदि।

(१०) **दशम भाव के नाम:**-कर्म, व्योम, गगन, केन्द्र, स्व, नभ, आस्पद।
विषय:-व्यवसाय, पिता का सुख, कर्म क्षेत्र, उद्योग धन्धा, नौकरी, विदेश गमन, घुटने, व्यापार आदि।

(११) **एकादश भाव के नाम:**-लाभ, आय, उत्तम, पणफर, उपचय आदि।
चिन्तन के विषय:-बड़े भाई, बड़ी बहिन, मित्र, लाभ, सम्पत्ति, विद्या, द्वितीय पत्नी, दामाद, कान, पिण्डली, पांव, भाइयों से आर्थिक सहायता आदि।

(१२) **द्वादश भाव के नाम:**-रिष्फ, व्यय, त्रिक, अंतिम, प्रान्त्य आदि।
चिन्तनीय विषय:-मोक्ष, प्रवास, व्यय, अपव्यय, घाटा, अन्तर्जातीय-विवाह, तलाक, आत्म हत्या, गुप्त विद्या, षड्यन्त्र, जेल, राजदंड, बांया नेत्र (पुरुषों का), दांया नेत्र स्त्रियों का। व्यसन, रोग, शत्रु, पैर की अंगुलियां, तलवे आदि।

मनुष्य के शरीर में नक्षत्रों की स्थिति

मनुष्य शरीर के विभिन्न भागों में २७ नक्षत्रों की प्रथक-प्रथक स्थिति ज्योतिषियों ने बताई है जो निम्न प्रकार से है:- (१) अश्विनी पांव के ऊपरी भाग में (२) भरणी पैर के तलवे में (३) कृत्तिका-शिरोभाग में (४) रोहिणी:-मस्तक में (५) मृगशिर- दोनों भौंहो में (६) आर्द्रा-दोनों आंखों में (७) पुनर्वसु: दोनों नथनों में (८) पुष्य: मुख में (९) आश्लेषा- कानों में (१०) मघा-ठोड़ी या होठों पर (११) पूर्वा फाल्गुनी: दायें हाथ में (१२) उत्तराफाल्गुनी- बायें हाथ में (१३) हस्त-अंगुलियों में (१४) चित्रा: ग्रीवा में (१५) स्वाती- वक्षस्थल में (१६) विशाखा-हृदय में (१७) अनुराधा-पेट पर (१८) ज्येष्ठा- आमाशय में (१९) मूल:- बाईं कुक्षि में (२०) पूर्वाषाढ़ा-पीठ में (२१) उत्तराषाढ़ा- रीढ़ की हड्डी में (२२) श्रवण-कमर में (२३) धनिष्ठा- गुदा में (२४) शतभिषा- दाईं जांघ में (२५) पूर्वाभाद्र-बाईं जांघ में (२६) उत्तराभा.- पिंडलियों में (२७) रेवती: टखनों में निवास करता है। जन्मकालीन या गोचरवश जब कोई क्रूर या पापी ग्रह सम्बद्ध नक्षत्र को पीड़ित करता है तब तत् सम्बन्धी शरीरांग में उस ग्रह संबंधी रोग या कष्ट उत्पन्न होता है। (भारतीय ज्योतिष)

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, ...-110006 ☎ 3285234, 3264980

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२ (बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अत: उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्टक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र की तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या दोनों का योग कर ले तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्टक संख्या के आगे उत्तर देख लें।

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह), यन्त्र के कोष्टक की संख्या है १५ (पन्द्रह), दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इस में से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अत: केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्टक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्टक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इन को योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अत: इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १० वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करलें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्दमें में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूंगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मै इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करूंगा अथवा नहीं?	तक्षक

(१) श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है होशियार!
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

(२) शिव

१. मुकद्दमे में जीत होगी।
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. सम्बन्धी धोखा देगा, सावधान!
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३. यात्रा लाभकारी रहेगा।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

(३) कृष्ण

१. आप का भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्दमे में जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

(४) राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. सम्बन्धी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

(५) सीता

१. उन्नति (प्रमोशन) मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिल जायेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४. चिन्ता न करें मुकद्दमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. सम्बन्धी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूर्ती हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।
१४. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी है।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

(६) राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र प्रेम का दिखावा करता/करती है।
९. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुआं बन जायेगा।

(७) लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. पत्नी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. सम्बन्धी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

(८) विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. सन्तान सुख के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. सम्बन्धी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तान जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

(९) नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें सन्देह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर आने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें!
१२. सम्बन्धी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

(१०) दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

(११) इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. सम्बन्धी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

(१२) गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं है।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. सम्बन्धी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

(१३) अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।
३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या/प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

(१४) वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह सम्बन्ध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

(१५) वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. सन्तान सुख भाग्य में नहीं है।

(१६) यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

(१७) कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमान उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसे योग नहीं हैं।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

(१८) सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगा कर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

(१९) चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जायेगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए रिश्यासुमन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

(२०) मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नहीं लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती में लाभ रहेगा।

(२१) बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मिलना बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ रहेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. [illegible] होने के लिए परिश्रम एवं हनुमत्मन्त्र जप।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

(२२) बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा विलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं है।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं है।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

(२३) शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करें।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

(२४) शनि

१. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाइयों में बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्जा मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

(२५) राहु

१. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुआं बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

(२६) केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुआं नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीपार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

(२७) मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

(२८) पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआ बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

(२९) कारन

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुआं बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार में लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

(३०) शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुंआ बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाइयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा में लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

(३१) यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. गृह निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

(३२) तक्षक

१. तीर्थ-यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टपद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म दशा सारिणी

सूक्ष्म दशा सारिणी की पूर्ण तालिका इस वर्ष हमारे शतक मार्तण्ड में प्रकाशित की गई है। जो सज्जन इसका प्रयोग करना चाहे वह शतक मार्तण्ड खरीदकर इससे लाभ उठा सकते है

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	००
घटि	१६	२०	१८	४८	४३	५१	४५	१८	५४
पल	१२	००	५४	३६	१२	१८	५४	५४	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	४५	३३	२१	१२	२५	१५	३१	३०	२७
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	००	००	००	००	००	१	००	००
घटि	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३	१८	३१
पल	३	४२	२४	२६	३३	३	००	५१	३०

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	
घटि	२५	९	३३	१७	५६	४२	४८	२१	५६
पल	४८	३६	५४	४२	००	३६	००	४२	

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	५५	१६	२	५०	२४	४३	१२	५०	९
पल	१२	४८	२४	००	१२	००	२४	३६	

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	२	२	००	२	००	१	००	२	
घटि	४२	२५	५९	५१	५१	२५	५९	३३	१६
पल	१७	२१	५१	००	१८	३०	५१	५४	४८

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	००	२	००	१	००	२	२	२
घटि	१०	५२	३३	४५	१६	५३	१७	२	२५
पल	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	२४	२१

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	००	००	००	००
घटि	२२	३	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३
पल	३	००	५१	३०	३	४२	२४	५१	३३

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	००	१	१	२	२	२	२	१
घटि	००	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	२	००	२	००
घटि	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	
घटि	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	२	४	२	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	२	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३०	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१६	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	००	१	१	००	१	००	००
घटि	२५	६	५८	९	२	२५	१३	२२	३६
पल	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	२	१	३	००	१	१
घटि	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४	६
पल	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३१
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	९	४९	९	१९	५९	३९	९	५९	३९
पल	३१	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२८
विपल	३०	००	००	००	३०	००	३०	३०	

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	१	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	७	६	७	६	२	८	२	४	२
घटि	१७	२८	४१	५३	५०	६	२५	३	५०
पल	२४	४८	४२	६	६	००	४८	००	६

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१	२८
पल	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	८	७	२	८	२	४	२	७	६
घटि	७	१६	५९	३३	३३	१६	५९	४१	५०
पल	२१	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	२४

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	२	२	६	६	७
घटि	३०	४	३९	१७	४९	४०	५३	७	१६
पल	९	३९	००	४२	३०	३९	६	१२	३

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	२	२
घटि	६	९	५६	३४	६	५०	३१	५९	४०
पल	९	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	९	२	४	३	८	७	८	७	३
घटि	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९	९
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४८	२१	५६	२५	९	३३	१७	५६	४२
पल	३६	००	४२	४८	३६	५४	४२	४२	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	३	४	३	१	४	१
घटि	१५	३४	३	३६	१६	४	३४	३०	२१
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	३	००	१
घटि	६	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४
पल	९	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुरुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	१	३	२	५
घटि	७	६	२६	२४	५८	१२	१६	४८	३६
पल	१२	४८	२४	२४		१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	५	६
घटि	१७	२७	३९	३६	१६	४८	३९	००	४
पल	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४	४८

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	५	२	६	२	३	२	६	५	६
घटि	४६	४२	४८	२	२४	२२	७	२६	२७
पल	४८	४८	००	४८	१२	२४	२४	३६	

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घटि	५८	४८	५०	२४	५८	३१	१४	३९	२२
पल	४८	४८	००	२४	००	४८	१२	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	६	२
घटि	००	२४	००	४८	१२	२४	३६	४८	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	०	१	००	२	१	२	२	००	२
घटि	४३	१२	५०	९	५५	१६	२	५०	२४
पल	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	४	१	४	३	६	४	१	४	१
घटि	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	०	०	०	०	०	०	०	१	०
घटि	५८	३१	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४
पल	४८	१२	२४	३६	४८	४८	००	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	५	६	६	२	७	२	३	२
घटि	२८	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१
पल	४८	३६	२४	१२	१२	००	२६	००	१२

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	६	२	७	२	४	३	८	७	७
घटि	३४	४०	९	२	४२	३०	९	७	१३
पल	२५	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२
विपल	३०	३०	३०	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	६	२	४	२	७	६	७
घटि	५१	४९	४	२५	२	४५	१६	२७	४०
पल	४९	३४	३०	२१	१५	३०	३	३६	१६
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	३	२
घटि	९	२	४५	२२	९	५९	३९	९	४९
पल	४५	३०	५९	४५	४२	३३	३६	३१	३४
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	४	३	८	७	९	८	७	३
घटि	३०	५१	५१	५८	३९	३६	९	३६	३६
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	०	०	२	२	२	२	०	०	२
घटि	५९	२५	५९	५१	१६	४२	२५	५९	५१
पल	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	१	४	३	६	४	४	१	४
घटि	२२	३०	१६	४८	३०	२	३९	४५	२५
पल	३६	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	१
घटि	५९	५५	५९	३९	३६	३१	३४	३०	५१
पल	३०	३०	३०	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	७	६	२	८	२	४	२	७	६
घटि	४१	५०	७	१६	५९	३३	३३	१६	५९
पल	४३	२४	२१	३	३३	००	५४	३०	३२

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुरुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४	५१	४९	४	२५	२	४८	१६	२७
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	८	३१	१३	१०	३६	३१	३०	४६	५१
पल	२८	४३	३०	३	३४	४३	२	४८	४९
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	०	१	१	२	२	२	२
घटि	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९	३१
पल	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४	४३
विपल	३०	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	६	२	७	६	८	७	२
घटि	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४	१३	५८
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	४	२	००	२
घटि	४५	१६	५३	१७	२	२५	१०	५३	३३
पल	५४	३०	३३	४४	२४	२९	३	३३	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	४	३	१	४	१
घटि	७	२९	४५	२४	२	३६	२९	१५	१६
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	१	२	०	०	१
घटि	२	४०	२२	४९	३१	२	५८	५३	२९
पल	४८	३९	४८	३४	४३	२८	३०	३३	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	६	७	६	२	७	२	३	२
घटि	५३	७	१६	३०	४०	३९	१७	४९	४०
पल	६	१२	३	९	३९	००	४२	३०	३९

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२६	२७	२६	२२	४८	२	२४	२२	७
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१४

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	८	२	४	२	७	६
घटि	४०	५१	४९	४	२५	२	४८	१६	२७
पल	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२६
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	२	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१५	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२०	५६	५१	५३	२२	३	४९
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घटि	२५	३१	२०	५६	५१	५३	२२	३	४९
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	०	०	०	०	०	०	०	१	०
घटि	२५	६	५८	९	२	४८	४९	२६	४३
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२६
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	०	२	०	१	०	२
घटि	५५	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३९
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुरुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	२	२	०	२	०	१	०	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३९
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	२	४९	९	१९	५९	३९	९	५९	३९
पल	३१	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१०	३	५	३	९	८	९	८	३
घटि	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	१	२	२	२	२	१	३
घटि	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	४	४	४	१	५	१
घटि	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	३	२	३	२	१	३	१	१
घटि	१३	२	४८	१९	५९	१३	३०	३	४५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	८	७	८	७	२	९	२	४	३
घटि	६	१२	३३	३९	२	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुरुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	८	२	४	२	७
घटि	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	९	८	३	९	२	४	३	८	७
घटि	९	४	१९	३०	५१	४५	१९	३३	३६
पल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	७	२	८	२	४	२	७	६	८
घटि	१३	५८	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	१	१	१	३	२	३	२
घटि	१३	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	३	१	४	१	
घटि	५	२७	४५	२०	५७	३२	२७	१०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	१	२	२	२	२	१	२	००	१
घटि	१	३७	३०	४६	२८	१	५५	५२	२७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	४	३	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४२	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२०	२०	४०	२०	४०	००	२०	२०	००
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	७	१
घटि	३१	४३	४६	५५	२२	५७	४६	७	२०
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	१	२८	५	७	३२	२८	२२	४०	४३
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	००	१	१	२	२	२	२
घटि	१	५५	५२	२७	१	३७	२०	४६	२८
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	७	२
घटि	२०	३०	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४५	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	००	१	१	१	१	००	२	००	१
घटि	४३	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५३	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	४	३	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०	३८	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	२	१	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	४	१	४	१	२	१	४	३	४
घटि	१२	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	९	१	१	९
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
पल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	४०	२२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	००	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	२७	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	१२	१०	१२	१२	४	१३	४	६	४
घटि	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५	४३
पल	००	००	३०	३०	३०	००	३०	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	९	११	२०	४	१२	३	६	४	१०
घटि	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	१३	१२	४	१०	४	७	४	१२	११
घटि	३२	६	५९	१५	१६	७	५९	४९	२४
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	१०	४	१२	३	६	४	११	१०	१२
घटि	५९	२७	४५	४९	२२	२७	२८	१२	६
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	२	१	४	४	४	४
घटि	५०	५५	३७	५०	४३	१२	५९	२७
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१३	१२	२४	१२	५
घटि	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	३	१	४
घटि	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	६	७	६	२	७	२
घटि	४५	३७	४५	००	७	२२	३७	३०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	१	४	४	४	४	१	५	१	१
घटि	५०	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	८	१०	९	७	१०	३	५	३	९
घटि	३२	८	४	४४	४०	१२	२०	४४	३६
पल	००	००	३०	३०	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	१२	१०	४	१२	३	६	४	११	१०
घटि	२	४६	२६	४०	४८	२०	२६	२४	८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	९	३	११	३	५	३	१०	९	१०
घटि	३८	५८	२०	२४	४०	५८	१२	४	४६

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	३
घटि	३८	४०	२४	२०	३८	१२	४४	२६	५८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१३	४	६	४	१२	१०	१२	११	४
घटि	२०	००	४०	४०	००	४०	४०	२०	४०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	३	३	१	४
घटि	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	५	२	६	२
घटि	२०	२०	००	२०	२०	४०	२०	४०	००

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	१	४	३	४	३	१	४	१	२
घटि	३८	१२	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	१०	९	११	१०	४	१२	३	६	४
घटि	४८	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	१४	१२	५	१५	४	७	५	१३	१२
घटि	१७	४७	१५	२	३१	१५	३२	३२	२
पल	२२	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	११	४	१३	४	६	४	१२	१०	१२
घटि	२६	४२	२७	२	४३	४२	६	४५	४७
पल	२२	३७	३०	१५	४५	३७	०	००	७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	३	१	४	४	५	४
घटि	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६	१५	४२
पल	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००	५२	३७
विपल	३०	००	००	३०	००	००	३०	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१४	१२	१५	१३	५
घटि	५०	४५	५५	३२	१५	४०	२	२७	३२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	४	१	४
घटि	२५	२२	३९	१६	४८	३०	२	३९	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	७	६	७	६	२	७	२
घटि	५७	४६	७	२०	३१	४३	४६	५५	२२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	१	४	४	५	४	१	५	१	२
घटि	५६	५९	२६	१५	४२	५६	३२	३९	४६
पल	२२	१५	००	५२	३७	२२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	१२	११	१३	१२	४	१४	४	७	४
घटि	४९	२४	३२	६	५९	१५	१६	७	५९
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४	११
घटि	८	२	४६	२४	००	४८	२०	२६	२४

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	१०	४	१२	३	६	४	१०	९	११
घटि	१४	१२	२	३६	१	१२	५०	३८	२६
पल	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	४
घटि	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२	१२
पल	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७	५२
विपल	३०	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१४	७	४	९	२४	१९	१३	१२	४
घटि	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७	२	५७
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	४	३	१	४
घटि	१६	३	२५	४९	२४	२	३५	२१	१५
पल	३०	३०	१५	३०	००	००	१५	४५	१५
विपल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	४	३	६	६	२	७	२
घटि	३२	२८	२२	४०	४३	१	२८	५	७
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	१	४	३	४	६	१	६	१	२
घटि	४४	२७	५८	४२	१४	४६	५७	२९	२८
पल	७	४५	००	३७	५२	७	३०	१५	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	११	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४
घटि	५८	१२	६	५०	२७	४५	४९	२२	२७
पल	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	९	१०	९	३	११	३	५	३	१०
घटि	४	४५	३८	५८	२०	२४	४०	५८	१२

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	१४	११	४	१३	४	६	४	१२	१०
घटि	४०	२६	४२	२७	३	४३	४२	६	४६
पल	७	३०	३०	३०	१५	४५	३७	४५	००
विपल	३०	००	३०	००	००	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	१	१	१	१
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
पल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	३०	३२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	२	००	१
घटि	३१	५२	३५	३४	२४	३४	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	५७	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	००	१	१	१	२	००	२	००	१
घटि	४४	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	४	४	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	४५

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	३	४	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०	४८	१२

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	२	१	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४५	५६	५९	२५
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	४	१	४	१	२	१	४	२	४
घटि	१४	४४	५७	२९	२८	३४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१६	५	८	५	१५	१३	१५	१४	५
घटि	४०	००	२०	५०	००	२०	५०	१०	५०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	४	४	४	१	१
घटि	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	४	२	७	६	७	७	२	८	२
घटि	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५	२०	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	२	५	४	५	४	२	५	१	२
घटि	२	१५	४०	३२	५७	२	५७	४५	५५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	१३	१२	१४	१२	५	१५	६	७	५
घटि	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	१०	१२	११	४	१३	४	६	४	१२
घटि	४०	४०	२०	४०	२०	००	४०	४०	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	१५	१३	५	१५	४	७	५	१४	१२
घटि	२	२७	३२	५०	४५	५५	३२	१५	४०
पल	३०	३०	३०	००	००	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	१२	४	१४	४	७	४	१२	११	१३
घटि	३	५७	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	२	५	१	२	२	५	४	५	४
घटि	२	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा,

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	००	२	००	००
घटि	१५	५४	४०	२२	५७	२	५७	४५	५५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	४	३	४	३	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३०	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१५	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	भौ	रा	जी	श	बु	के	श	सू	च
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३०	१७	८	२१	१२	२५	२५	२५	४२
पल	००	१०	३६	२७	५३	००	४५	४३	५२
विपल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	३	२	३	३	१	३	१	१	१
घटि	१८	५६	२९	७	१७	४०	६	५०	१७
पल	२७	२४	२८	२५	१०	३०	४५	१५	१०
विपल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	२	३	३	१	३	१	३	२	३
घटि	३६	६	४६	८	१६	५८	३८	८	५६
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	३	३	१	३	१	४	१	३	३
घटि	४१	१७	२१	५२	९	५४	२१	२९	६
पल	६	५०	२७	४५	४९	१२	२७	२८	१२
विपल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	३	१	१	३	२	३	३
घटि	५७	१३	२८	२	४४	१२	७	४६	१७
पल	००	५३	१५	२८	७	५३	२५	३६	५०
विपल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३०	२५	४३	३०	१७	८	२१	१२	२१
पल	००	४५	४३	५२	००	१०	३६	२७	५३
विपल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	४	१	१	१	३	३	३	३	१
घटि	५	१३	२	२५	४०	१६	५२	२८	२५
पल	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	००	१	१	००	१
घटि	२२	३६	२५	६	५८	९	२	२५	१३
पल	३	४५	४३	९	४८	४९	२८	०३	३०
विपल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	००	१	१	१	१	२	००	००
घटि	१	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६
पल	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
विपल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पृष्ठ १६ का शेष.....

वर्ष प्रवेश कुण्डली

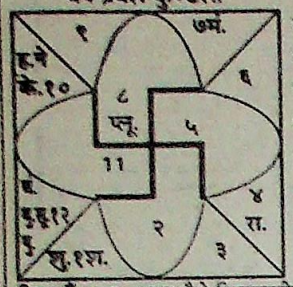

हो रहा है। जिसकी तत्कालीन कुण्डली साथ में दी गयी है। नवीन वर्ष लग्न का स्वामी मंगल द्वादश भाव में स्थित होकर शनि, शुक्र से प्रतियोग बना रहा है। जिससे अनेक देशों की आर्थिक स्थिति कमजोर तथा जनता मंहगाई से पीड़ित होगी। विश्व के अनेक देशों में अशांति, बम विस्फोट, यान दुर्घटना व भूकम्पागिद से जनता पीड़ित होगी। वर्ष का प्रवेश वृश्चिक लग्न में होने से पूर्व के देशों में राजविग्रह, उत्तर में अर्द्धधान्य की उत्पत्ति तथा मध्य प्रदेश में धान्यों की पैदावार कमजोर होगी। धातु पदार्थों में तेजी होगी। भाग्येश चन्द्रमा राज्येश सूर्य के साथ पंचमभाव में उत्तम है। वर्ष के राजा गुरु व मंत्री बुध भी इसी भाव में स्थित हैं। अत: भारत जैसे विकाशसील देश अपनी श्रेष्ठता के साथ आत्मनिर्भर बनेंगे। वैज्ञानिक-अनुसंधान में भारत की अच्छी साख बढ़ेगी। शासन व्यवस्था को भी उच्च नेतागण सुधारने की पूर्ण कोशिश करेंगे।

वर्ष प्रारम्भ को ही मंगल वक्री होकर शनि से प्रतियोग तथा अतिचारी गुरु से षडाष्टक योग बनायेगा। जिससे चीन, जापान, इग्लैण्ड, ईरान, जर्मनी आदि देशों में भूकम्प, प्रकृति-प्रकोप तथा अग्निभय से जन धन की हानि होगी। कहीं युद्धादि से एवं यान दुर्घटना से जनता आतंकित होगी। औद्योगिक क्षेत्रों में भी आशानुरूप प्रगति नहीं होने से आर्थिक संकट बना रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनावपूर्ण और शासन स्तर पर लिए गये निर्णयों के क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न होगी।

प्रथम ज्येषठ मास में पांच शनिवार एवं पांच रविवार के अलावा मासारंभ में आठ ग्रहों का केन्द्र योग होने से जनस्वास्थ्य की समस्या उत्पन्न होगी। रोग महामारी के रूप में फैलेंगे। खाद्य पदार्थों में मिलावट होने से जनस्वास्थ्य को हानि होगी। अनेक देशों के राष्ट्राध्यक्षों के मनमुटाव परिलक्षित होने से तनाव की स्थिति बनेगी। यहां वृहस्पति २६ मई को मेष राशि में प्रवेश करने से प्रजा में आरोग्यता, आनन्द उत्सवों की वृद्धि तथा सुभिक्ष का संचार होगा किन्तु यहां वृहस्पति का शनि से योग तथा मंगल से प्रतियोग भारत के मध्यभाग में विशेष उथल-पुथल करेगा। कहीं भूकम्प, महामारी, अग्निकांड, रेलदुर्घटना से जनधन की भारी हानि होगी। प्राचीन आचार्यों ने मंगल-गुरु के प्रतियोग का फल इस प्रकार लिखा है-

यदारक्षौरी सुराज मंत्री यदैकराशौ समसप्तके वा। अयोध्यलंकापुर मध्य देशे क्षुधाभयं शस्त्र भयं करोति॥

आषाढ़ मास के उत्तरार्ध में आधे से अधिक ग्रहों का केन्द्रयोग बनने से कुछ शक्तिशाली राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों में कटुता आयेगी। आयात-निर्यात का संतुलन बिगड़ने के साथ आर्थिक संकट में बढ़ोत्तरी होगी। प्रकृति-प्रकोप, अनावृष्टि, अतिवृष्टि से जनमानस पीड़ित होगा। श्रावण मास में पांच गुरुवार पश्चिमी अनार्य देशों के साथ भारतीय सीमाओं पर सैनिक हलचल पैदा करेगा। श्रावण मास की अमावस्या को खण्डग्रास सूर्यग्रहण वर्ष लग्न के नवम भाव में होगा। जिसकी लग्न पर पूर्ण दृष्टि होने से अफगानिस्तान, आष्ट्रेलिया, अरब राष्ट्र, ईरान, ईराक, अमेरिका के साथ-साथ भारत में भी राजनैतिक सत्तालिप्सा, राजनैतिक दलों में परस्पर संघर्ष के कारण राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बनेगा। प्रजा कहीं दुर्भिक्ष भय से तो कहीं साम्प्रदायिक दंगों से पीड़ित रहेगी। ता. ३० अगस्त को शनि नीचस्थ राशि में वक्री होगी जो विश्व में अकल्पित घटनाओं को बढ़ावा देगा। विमान दुर्घटना, भूकम्प, बम विस्फोट की अधिकता से जनमानस आतंकित रहेगा। आश्विन मास में पांच रविवार विश्व के अनेक राष्ट्राध्यक्षों के सामने राजनैतिक संकट उत्पन्न करेंगे। किसी देश को महान नेता की मृत्यु अथवा सत्ता परिवर्तन का सामना करना पड़ेगा। पांच रविवारों का फल-

यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंग: स्यात्तदास्ते च महद्भयम॥

नवम्बर-दिसम्बर मास में शनि वक्र गति से तथा मंगल अतिचारी गति से विचरण करेगा जो विश्व शांति के प्रयासों को कमजोर करेगा। मंहगाई वृद्धि से आम जनता में भारी असन्तोष उत्पन्न होगा। भारत के साथ-साथ पाकिस्तान, अफगानिस्तान, रूस, जापान, ईरान, सऊदी अरब में प्रकृति-प्रकोप, बम विस्फोट, आन्दोलन, प्रदर्शन आदि से जनता को परेशानी बढ़ेगी। मार्गशीर्ष आदि चार मासों में शुक्ल पक्ष की तिथि क्षय होना भी प्राचीन आचार्यों ने साशनाध्यक्षों के लिए नेष्ट बताया है। इस वर्ष इन चार मासों में शुक्ल पक्ष की तिथि क्षय हो रही है जिससे विश्व के किसी देश के प्रधान शासक को सत्ता हस्तान्तरण अथवा छत्रभंग का सामना करना पड़ेगा। प्रजा में रोग पीड़ा तथा दुर्भिक्ष भय से जनोपयोगी वस्तुओं में तेजी होगी। वर्षान्त में १४ मार्च को मई ९९ से चले आ रहे गुरु-शनि योग में मंगल का योग भी सम्मिलित हो जायेगा। जिससे विश्व में अनेक अप्रत्याशित रोमांचक घटनाएं घटेंगी। चीन, रूस, अमेरिका, जापान, इंगलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, यूनान, तुर्की, पाकिस्तान में भी अनेक दुर्घटनाएं एवं प्रमुख शासकों में अकल्पित उलट फेर होगा। प्राचीन दैवज्ञों ने गुरु-शनि के योग का फल इस प्रखार लिखा है:-

यदा जीव युतो नंदो जीवाद्व सप्तमे स्थित:। तदा प्रज्ञा विनश्यंति भूयश्चान्न परिक्षाय:॥

संवत् २०५६ विक्रमी में सूर्य भगवान् सप्ताश्वजुत रथ पर वैशाख कृष्ण १३ बुधवार दिनांक १४ अप्रैल ९९ ई. को दिन के ११ बजकर १५ मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करेंगे। मेष राशि में प्रवेश के समय जगत् कुण्डली मिथन लग्न की बनी है जो साथ में दी जा रही है।

जगत् लग्न कुण्डली

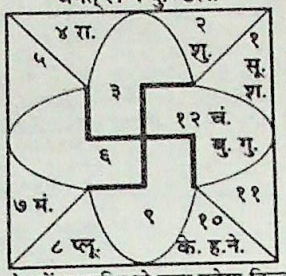

मिथुन लग्न का स्वामी बुध नीच राशिस्थ होकर दशम भाव में स्थित है, धनेश व राज्येश चन्द्र-गुरु भी इसी भाव में स्थित हैं। अत: विश्वशांति व शिखर सम्मेलनों के द्वारा शांति प्रयास किये जायेंगे। वर्ष के राजा-मंत्री भी बुध-गुरु बने हैं जो राज्य पक्ष में स्थित हैं अत: शासन व्यवस्था में सुधार तथा जन कल्याण हेतु नवीन योजनाओं के अंतिम रूप दिया जायेगा। भाग्येश शनि उच्चस्थ सूर्य के साथ एकादश भाव में उत्तम किन्तु क्रूर ग्रह मंगल से दृष्ट होने के कारण नवीन योजनाओं का पूर्ण लाभ जनता को प्राप्त नहीं हो सकेगा। भ्रष्टाचार पदलोलुपता, राजनैतिक उथल पुथल की अधिकता रहेगी। भारत नवीन अनुसंधान एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में उपलब्धि तो प्राप्त करेगा किन्तु भ्रष्टाचार व मंहगाई रोकने के प्रयास कमजोर साबित होंगे। अष्टमभाव में हर्शल-नेपच्यून की स्थिति कृषि क्षेत्र की उन्नति में बाधक बनेगी। आणुविक प्रतिस्पर्धा की वृद्धि होगी।

भारतीय गणतंत्र का ५०वां वर्ष

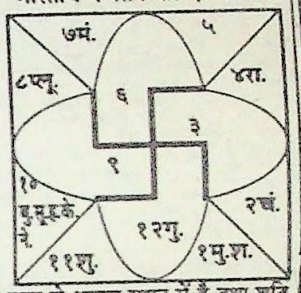

भारतीय गणतंत्र का ५०वां वर्ष सम्वत् २०५५ वि. माघ शुक्ल ९ मंगलवार दिनांक २६ जनवरी १९९९ ई. को भारतीय स्टैं.टा. २३।४९ पर कन्या लग्न के उनत्तीसवें अंश में प्रवेश होगा। ५०वें वर्ष प्रवेश की तात्कालीन ग्रह स्थिति की कुण्डली सामने दी गयी है। गणतंत्र वर्ष के लग्न का स्वामी बुध राज्येश होकर पंचम भाव में सूर्य, हर्शल, नेपच्यून, केतु से पीड़ित है। नवमेश शुक्र शत्रुभाव में तथा मुंथा अष्टम भाव में शनि के साथ है। अत: भारत के प्रधानमंत्री के लिए आने वाला वर्ष संकष्टमय रहेगा। वर्ष पूर्वार्द्ध में ही एकबार पुन: सत्ता-परिवर्तन के योग प्रबल हो रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी की नामराशि भी लग्न से अष्टम स्थान में है तथा शनि की साढ़ेसाती भी चल रही है। अत: श्री वाजपेयी के स्वास्थ्य में अचानक गिरावट आयेगी। उनकी जन्मपत्रिका में राज्येश की स्थिति सुदृढ़ हो तो वे इस समय को काफी उथल-पुथल के साथ पार करने में सक्षम होंगे। यदि

प्रकाशक: धर्मसन : काशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राज्येश कमजोर हुआ तो विपक्षी पार्टियां वर्ष पूर्वार्द्ध में सत्ता हस्तान्तरण कराने में सक्षम होंगी। मुद्रास्फीति एवं आर्थिक संकट और महंगाई वृद्धि से जनता त्रस्त रहेगी। धार्मिक, साम्प्रदायिक एवं राजनैतिक पार्टियों में अन्त:कलह बढ़ेगा। स्नेह सद्भावना की समाप्ति होगी। अनेक बड़े उद्योगपति शनि के कारण तेल, गैस, पेट्रोल, डीजल, मोबाइल के व्यापारी अधिक संकटग्रस्त होंगे। नये बजट में सौन्दर्य प्रसाधन, शृंगार की वस्तुओं, मादक नशीले पदार्थों के साथ रेल किराया, टेलीफोन पर कुछ प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष कर भार बढ़ने से जनता में असन्तोष बढ़ेगा। गणतन्त्र वर्ष लग्न में लग्नेश व्ययेश का धनेश से (सूर्य बुध का शुक्र से) द्विर्द्वादश योग, धनेश, भाग्येश शुक्र षष्ठ स्थान में, षष्ठेश शनि अष्टम स्थान में नीच राशि का है अत: यह सम्पूर्ण वर्ष पड़ौसी राष्ट्र पाकिस्तान के नापाक इरादों से त्रस्त रहेगा। सीमाओं पर विशेष सुरक्षा प्रबन्ध करने की आवश्यकता महसूस होगी। श्रीमती सोनिया गांधी कांग्रेस की अध्यक्षा बनने से कांग्रेस में नई आशा की किरण जागेगी। फिर भी श्रीमती सोनिया गांधी को आनेवाले वर्षों में कांग्रेस को एक सूत्र में बांधने में काफी संकटों का सामना करना पड़ेगा।

भारत के नये प्रधानमंत्री-श्री वाजपेयी जी

भारत में फरवरी १९९८ ई. में बारहवीं लोकसभा के आम चुनाव सम्पन्न हुए। जिसके परिणाम मार्च में आये। जनता ने एक बार फिर किसी भी दल को २७२ का जरूरी बहुमत नहीं दिया। भारतीय जनता पार्टी बहुतम के करीब तक आकर ठिठक गई। उसने २५१ सीटें, कांग्रेस ने १६७ सीटें जबकि संयुक्त मोर्चा ९७ सीटें ही प्राप्त कर सका। भारत के राष्ट्रपति ने सबसे बड़े दल भाजपा के नेता श्री अटलबिहारी वाजपेयी को देश का नया प्रधानमंत्री बनाने की घोषणा करते हुए शपथ पश्चात् दस दिन में बहुत सिद्ध करने को कहा। श्री अटलबिहारी वाजपेयी की सरकार ने दिनांक १९ मार्च ९८ ई. को राष्ट्रपति भवन के मुख्य प्रांगण में देश के सोलहवें प्रधानमंत्री के पद की शपथ प्रात: ९ बजकर ३२ मिनट से ९ बजकर ३४ मिनट तक ली। जिसकी शपथकालीन कुण्डली व नवमांश कुण्डली आगे दी जा रही है।

शपथकालीन कुण्डली

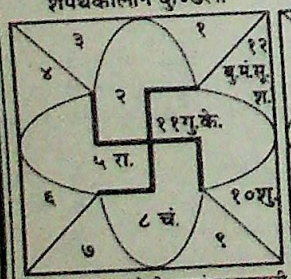

नवमांश कुण्डली

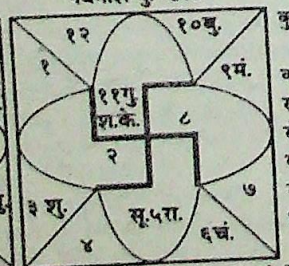

शपथ कालीन कुण्डली का स्वामी शुक्र भाग्यभवन में मित्र राशि का होकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। वृष लग्न तथा वृश्चिक का चन्द्रमा दोनों स्थिर राशि में है तथा चन्द्रमा केन्द्रस्थ है जिससे श्री वाजपेयी की सरकार स्थाईपन लिए होगी। नवांश कुण्डली में शनि अपनी मूल त्रिकोण राशि जो कि एक स्थिर राशि भी है। गुरु, राहु एवं केतु भी वर्गोत्तम हैं अत: यह योग भी स्थिरता की दृष्टि से उत्तम हैं। किन्तु चैत्र मास तथा पृष्ठोदयी लग्न नया राज्याभिषेक के लिए उत्तम नहीं माने जाते हैं। श्री वाजपेयी व उनके मंत्रिमंडल का शपथ ग्रहण समारोह पृष्ठोदयी राशि में सम्पन्न हुआ। जिससे श्री वाजपेयी सरकार को कई बार विकट समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। राज्येश व भाग्येश शनि लाभ भाद में सूर्य, बुध व मंगल के साथ स्थित हैं अर्थात् चतुर्ग्रही योग बन गया है। नवमांश कुण्डली में इनमें से एक भी ग्रह वर्गोत्तमी नहीं बना है अत: भाजपा को सहयोग देने वाली पार्टियां आंतरिक द्वेष अवश्य रखेंगी और मौका मिलते ही अपना समर्थन वापिस ले लेंगी। भारतीय जनता पार्टी गठबन्धन सरकार का आत्माकारक ग्रह शनि तथा अमात्यकारक ग्रह बुध बना है। शनि नीचाभिलाषी तथा बुध नीच राशि का होने से प्रधानमंत्री का पद श्री वाजपेयी के लिए खिन्नता भरा रहेगा। शपथ कालीन समय अनुराधा का द्वितीय चरण समाप्त होने से शनि की महादशा में शुक्र का अन्तर चल रहा है जो ५ जनवरी १९९९ ई. तक रहेगा। शनि एकादश भाव में होने से श्रेष्ठ किन्तु सूर्य, मंगल, बुध के साथ होने से सरकार कठिनाइयों से गुजरते हुए समय पार करेगी। विदेशों में भारत की साख बढ़ेगी तथा वैज्ञानिक व अनुसंधान के क्षेत्र में प्रगति होगी। ५ जनवरी ९९ से शनि दशा में सूर्य का अन्तर प्रारम्भ होगा। सूर्य के अन्तर में सरकार अपने उत्तरदायित्व को आकर्षक ढंग से निभाने में सफल होगी। अमेरिका द्वारा परमाणु विस्फोट के बाद लगाये गये वित्तीय प्रतिबन्धों पर पुन: विचार कर हटाने की घोषणा की जायेगी। देश में औद्योगिक प्रगति के साथ कृषि क्षेत्र में आशानुरूप प्रगति होगी। दिनांक १७ दिसम्बर ९९ से शनि महादशा में चन्द्रमा का अन्तर चालू होगा। चन्द्रमा वृश्चिक राशि में स्थित होने के कारण श्री वाजपेयी सरकार में संकट की स्थिति उत्पन्न करेगा। उनको सहयोग देने वाली पार्टियां विमुख होती दिखाई देंगी। विपक्षी पार्टियों द्वारा सरकार गिराने के लिए एकजूट होने का प्रयास किया जायेगा। यहां वाजपेयी सरकार को काफी सतर्कता से काम करना चाहिए वरना आने वाले समय में प्रमुख विपक्षी दल अन्य सहयोगी दलों के सहयोग से सत्ता हस्तगत कर लें तो आश्चर्य की बात नहीं होगी।

भारतीय वायुमंडल एवं वर्षादि योग

इस वर्ष भारत के वायुमंडल एवं वर्षादि योग जानने के लिए भारतीय वायुशास्त्र अनुसार प्रत्येक नगर व राज्य में प्रतिदिन की वायु, मेघ गर्जना, बादल वर्षा की परीक्षा द्वारा वृष्टि गर्भ लक्षण का उल्लेख मिलता है। जैसे आषाढ़ी १५ को वायु परीक्षा, अन्तरिक्ष लक्षण जहां शुभ शकुन का आभास करायेंगे। वहां सुभिक्ष व सुवृष्टि का संचार होगा। अर्थात् आषाढ़ी पूर्णिमा (२७ जुलाई मंगलवार) को पूर्व, उत्तर, पश्चिम व ईशान कोण से हवा चले तो सुभिक्ष माना गया है जबकि अन्य शेष कोण की हवा दुर्भिक्ष उत्पात व रोग भय कारण मानी गयी है। विद्वान विज्ञों को वर्षभर के गर्भ लक्षण नोट करने चाहिए। वर्ष पर्यन्त नहीं कर सके तो आषाढ़ी पूर्णिमा को सायंकाल सूर्यास्त के समय खुले स्थान में जाकर ध्वजा की विधिवत पूजा करके वायु परीक्षा कर अपने नगर, देश व राज्य के लिए शुभाशुभ फल का निर्णय करना चाहिए।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

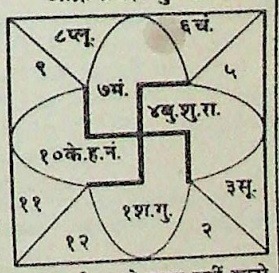

वर्षादि योग के लिए सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से आगामी दश नक्षत्र वर्षा के द्योतक माने जाते हैं। नवीन वर्ष में आर्द्रा प्रवेश द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल २२ जून मंगलवार तदनुसार २२ जून १९९८ ई. को दोपहर २ बजकर २० मिनट पर हुआ है आर्द्रा प्रवेश कुण्डली साथ में दृष्टव्य है। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली का लग्न तुला बना है। जिसका स्वामी शुक्र-बुध राहु के साथ दशम स्थान में स्थित है। लग्न में मंगल तथा सप्तम भाव में शनि की स्थिति वर्षा में बाधक योग बनाती है। अत: कहीं खण्डवृष्टि से जनमानस पीड़ित होगा तो कहीं अतिवृष्टि से कृषि में हानि होगी। बुध-शुक्र का योग श्रेष्ठ वर्षा का द्योतक है। ३ जुलाई से सिंह का शुक्र वर्षा में अवरोधक तथा वायु प्रकोप बढ़ेगा। याथा-सिंह शुक्र जब होय भवानी। चले पवन नहीं बरसे पानी॥ मास मध्य में बुध का अस्त गर्ज-तर्ज के साथ वर्षा करेगा। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में तेज हवा के साथ वर्षा होगी। अगस्त मास में शुक्र का अस्त व उदय सभी स्थानों पर व्यापक वर्षा करेगा। पूर्वोत्तर भागों में बाढ़ की स्थिति व्यापेगी। सितम्बर में मध्यम वर्षा के योग हैं। शीतकाल में पंचग्रही योग तथा गुरु शनि का योग कहीं प्रकृति-प्रकोप, ओलावृष्टि, भूकम्प, रोगपीड़ा से अशांति कारक रहेगा। आगे सर्वज्ञ ईश्वर है। यतो धर्मस्ततो जय:॥ इति शुभम् भूयात्॥

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (१८ से ३१ मार्च)

मार्च	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
18	१	गु	२१	२९	उभा	२२	५९	शु	२२	१२	मीन	उ.भा. में सूर्य ११.१९, वक्री मंगल १९.१०, नूतन संवत्सरारम्भ A
19	२	शु	१८	२६	रे	२०	३९	ब्र	१८	३३	मे. २०.३९	चन्द्रदर्शन मु. ३०, श्री झूलेलाल जयंती, पंचक समाप्त २०.३९
20	३	श	१५	१८	अ	१८	१८	ऐं	१४	४९	मेष	भद्रा २५.४५ से, वक्री पू.भा. में बुध १७.२७, मा. मेष में ७.१६
21	४	र	१२	१४	भ	१६	००	वै	११	०७	वृ. २१.२७	भद्रा १२.१४ तक, वसन्त सम्पात, वैनायक ४ व्रत, वैधृति पुण्यम्
22	५	चं	९	२२	कृ	१३	५७	वि	२२ / २२	३५ / २०	वृष	गुरु अस्त पश्चिम में २३.५५, श्री लक्ष्मीपूजनारंभ B
23	६	मं	६	५०	रो	१२	१४	आ	२५	२४	मि. २३.३१	स्कन्द ६, मेला माईसरखाना अमृतसर, जैन आर्यबिल ओली प्रा.
0	७	बु	२८	४२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	सप्तमी क्षय: A नवगत्रारंभ, घटस्थापनं, गुड़ी पड़वा
24	८	गु	२७	०१	मृ	१०	५६	सौ	२२	५०	मिथुन	भ. १५.४७ तक, भर. १ में शुक्र १४.१४, श्री दुर्गाष्टमी
25	९	शु	२५	५१	आ	१०	०५	शो	२०	४०	क. २७.५०	वक्री कुम्भ में बुध १६.५३, श्री रामनवमी व्रत
26	१०	श	२५	११	पुन	९	४८	अति	१८	५५	कर्क	बुध उ.पूर्व २८.३८ B रा. चैत्र मास, शाके १९२१ प्रा.
27	११	श	२४	५९	पु	९	५७	सु	१७	३२	कर्क	भद्रा १३.०२ से २४.५९ तक, कामदा एका. व्रत स्मा.वैष्ण.
28	१२	र	२५	१४	श्ले	१०	३४	धृ	१६	२९	सिं. १०.३४	कामदा एकादशी व्रत निम्बार्कानाम, हज्ज
29	१३	चं	२५	५३	म	११	३५	शू	१५	४८	सिंह	रेव. १ में गुरु २७.४१, अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर ज., C
30	१४	मं	२६	५५	पूफा	१३	००	गं	१५	२५	कं. १९.२६	भद्रा २६.५५ से, दमनक चतुर्दशी C ईद-उल-जुहा (बकरीद)
31	१५	बु	२८	१८	उफा	१४	४८	वृ	१५	१९	कन्या	भद्रा १५.३४ तक, रेव. में सूर्य २१.५५, सत्यव्रत

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (१७ से ३० अप्रैल)

अप्रैल	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
17	१	श	६	१२	भ	२५	०४	ध्रु	१९	५१	मेष	चन्द्रदर्शन मु. १५
0	२	श	२६	२९	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वितीया क्षय:
18	३	र	२२	५५	कृ	२२	१७	आ	१५	४५	वृ. ६.२१	अक्षय तृतीया, मुहर्रम मु. मास १ हिजरी सन् १४२० प्रा.
19	४	चं	१९	४०	रो	१९	४९	सौ	११	४९	वृष	भद्रा ९.१४ से १९.४० तक
20	५	मं	१६	५०	मृ	१७	४८	शो	२९	१५ / ०८	मि. ६.४५	सायन वृष में सूर्य प्र.१८.१६ E सत्यव्रत, बुद्ध पूर्णिमा
21	६	बु	१४	३७	आ	१६	२२	सु	२६	३०	मिथुन	गुरु पूर्व में उदय ११.४१, रा. वैशाख मास
22	७	गु	१३	०४	पुन	१५	३५	धृ	२४	२५	क. १.४४	भद्रा १३.०४ से २४.३७ तक A३ में गुरू प्रवेश B
23	८	शु	१२	११	पु	१५	२९	शू	२२	५३	कर्क	श्री दुर्गाष्टमी, श्री बगलामुखी जयंती
24	९	श	११	५६	श्ले	१६	०१	गं	२१	५२	सिं. १६.०१	श्री सीता नवमी B२२.५२, मोहनी एका.व्रत (स.), D
25	१०	र	१२	२०	म	१७	०९	वृ	२१	१९	सिंह	भद्रा २४.४७ से, श्री महावीर स्वामी केवल ज्ञान जैन
26	११	चं	१३	१४	पूफा	१८	४६	ध्रु	२१	०९	क. २५.१६	भद्रा १३.१४ तक, रेवती में बुध प्र. १८.२९, रेवती A
27	१२	मं	१४	३६	उफा	२०	४८	व्या	२१	१७	कन्या	भरणी में सूर्य प्र. २७.०५, मृगशिर में शुक्र प्र. C
28	१३	बु	१६	१७	ह	२३	०८	ह	२१	३८	कन्या	C १३.५९, भौम प्रदोष व्रत, मुहर्रम ताजिया
29	१४	गु	१८	१४	चि	२५	४५	वज्र	२२	१२	तु. १२.१५	भद्रा १८.१४ से D अगस्त्य तारा अस्त १२.२९
30	१५	शु	२०	२३	स्वा	२८	३०	सि	२२	५६	तुला	भद्रा ७.१९ तक, भरणी १ में शनि प्रवेश २३.४०, E

वैशाख कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (१ से १६ अप्रैल)

अप्रैल	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
A.1	१	गु	३०	०३	ह	१६	५४	ध्रु	१५	२८	तु. ३०.०५	
2	२	शु	-	-	चि	१९	२१	व्या	१५	५३	तुला	मार्गी बुध १४.५३, गुड फ्राईडे
3	२	श	८	०६	स्वा	२२	०२	हं	१६	३०	तुला	भद्रा २१.१४ से,
4	३	र	१०	२२	वि	२४	५४	वज्र	१७	२०	वृ. १८.१२	भद्रा १०.१२ तक, कृतिका में शुक्र प्रवेश १७.५६, अश्विनी ४ A
5	४	चं	१२	४९	अनु	२७	५४	सि	१८	१३	वृश्चिक	A में शनि प्रवेश १५.५२, इस्टर सन्डे, कृष्ण चतुर्थी व्रत
6	५	मं	१५	१९	ज्ये	-	-	व्य	१९	०६	वृश्चिक	गुरु तेग बहादुर जयंती,
7	६	बु	१७	३८	ज्ये	६	४८	व	१९	५२	ध. ६.४८	भद्रा १७.३८ से, वृष में शुक्र प्रवेश १३.१५
8	७	गु	१९	३२	मू	९	२६	प	२०	२२	धनु	भद्रा ६.३७ तक, गुरु अर्जुन देव जयंती
9	८	शु	२०	५८	पूषा	११	३९	शि	२०	२५	म. १८.०४	शनि पश्चिम में अस्त २५.१८, शीतलाष्टमी (बूढा बासोड़ा)
10	९	श	२१	४१	उषा	१३	११	सि	१९	५४	मकर	मीन में बुध प्रवेश २४.०५ B संक्रांति मु. ३०, वैशाखी C
11	१०	र	२१	३३	श्र	१४	०१	सा	१८	४८	कुं. २६.०५	भद्रा ९.४१ से २१.३३ तक, पंचक प्रारम्भ २६.०५ से,
12	११	चं	२०	३४	ध	१३	५८	शुभ	१७	०१	कुम्भ	रेवती २ में गुरु प्रवेश २२.५४, वरूथिनी एका. व्रत (सबका)
13	१२	मं	१८	५०	श	१३	१०	शु	१४	३६	कुम्भ	भौम प्रदोष व्रत C (पंजाब), सौर मास वैशाख प्रा.
14	१३	बु	१६	२२	पूभा	११	३७	ब्र	११	३४	मीन. ६.०३	भद्रा १६.२२ से २६.५० तक, अश्विनी मेष में सूर्य प्र. ११.१५ B
15	१४	गु	१३	१९	उभा	९	२६	ऐं	८ / २८	०४ / ११	मीन	उ.भा. में बुध प्रवेश ६.२०, रोहिणी में शुक्र प्रवेश २५.३०
16	३०	शु	९	५२	रे	६ / २७	५१ / ५१	वि	२४	०३	मे. ६.५१	देवकार्याऽमावस्या, देवदामोदर तिथि आमाम, पंचक समा. ६.५१

प्र.ज्येष्ठ (शुद्ध) कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (१ से १५ मई)

मई	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
M.1	१	श	२२	४४	वि	-	-	व्य	२३	४९	वृ. २४.४०	देवऋषि नारद जयंती C पंचक समाप्त १७.३६
2	२	र	२५	११	वि	७	२४	व	२४	४४	वृश्चिक	A रेवती ४ में गुरु प्रवेश ९.५७, अपरा एकादशी व्रत B
3	३	चं	२७	३५	अनु	१०	२१	प	२५	३७	वृश्चिक	भद्रा १४.२४ से २७.३५ तक, मिथुन में शुक्र प्रवे. १०.३३
4	४	मं	-	-	ज्ये	१३	१९	शि	२६	२९	ध. १३.१९	वक्री चित्रा में मंगल प्र. १६.०५, अंगारक कृष्ण ४ व्रत
5	४	बु	५	५३	मू	१६	०६	सि	२७	१२	धनु	अश्विनी मेष में बुध प्रवेश १२.५२
6	५	गु	७	५७	पूषा	१८	३७	सा	२७	३४	म. २५.०८	B (स्मार्त), भद्रकाली एकादशी (पंजाब)
7	६	शु	९	३७	उषा	२०	३७	शुभ	२७	३४	मकर	भद्रा ९.३७ से २२.१० तक, वक्री नेपच्यून १०.५०
8	७	श	१०	४२	श्र	२२	०३	शु	२७	०२	मकर	कालाष्टमी D उद. १२.३९, देवपितृकार्याऽमावस्या, E
9	८	र	११	०३	ध	२२	४१	ब्र	२५	५१	कुं. १०.२७	आर्द्रा में शुक्र प्रवेश ९.०२, पंचक प्रा. १०.२७ से,
10	९	चं	१०	३९	श	२२	३४	ऐं	२४	०२	कुंभ	भद्रा २१.५८ से, E वट सावित्री व्रत, बड़ पूजनार्चन, F
11	१०	मं	९	२०	पूभा	२१	३७	वै	२१	३४	मी. १५.५३	भद्रा ९.२० तक, कृत्तिका में सूर्य प्रवेश २१.१४, A
12	११	बु	७	१७	उभा	१९	५४	वि	१८	३०	मीन	भरणी में बुध प्रवेश २४.४१, अपरा एका. व्रत (वैष्णव)
0	१२	बु	२८	३२	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वादशी क्षय: F सौर ज्येष्ठ मास प्रारंभ
13	१३	गु	२५	१२	रे	१७	३६	ध्रु	१४	५४	मे. १७.३६	भद्रा २५.१२ से, प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारंभ, C
14	१४	शु	२१	२९	अ	१४	४८	आ	१०	५२	मेष	भद्रा ११.२४ तक, बुध पूर्व में अस्त १२.४४
15	३०	श	१७	३४	भ	११	४५	सौ	६ / २६	३८ / १७	वृ. १६.५१	वृष में सूर्य प्रवे. ८.०७, मं. मु. १५, शनि पूर्व में D

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रथम (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (१६ से ३० मई)

मई	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
16	१	र	१३	३९	कृ	८	३९	अति	२१	५९	वृष	चन्द्रदर्शन मु. ७५, अधिक पुरुषोत्तम मास प्रारंभ
17	२	चं	९	५३	म	२६	३८	ध्रु	१७	५८	मि.	अश्लेषा २ में राहु प्रवेश ४ में केतु प्रवेश १३।२५, A
18	३	मं	६	३०	आ	२४	४८	शु	१४	०८	मिथुन	भद्रा १७।०२ से २७।३५ तक, विनायक ४ व्रत
0	४	मं	२७	३५	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्थी क्षय: A सफर मु.मास २ प्रारंभ
19	५	बु	२५	२२	पुन	२३	१६	शु	१०	५३	क.	कृत्तिका में बुध प्रवेश १६।२८
20	६	गु	२३	५१	पु	२२	२७	गं	८	११	कर्क	B प्रवेश १३।१७, सायन मिथुन में सूर्य प्रवेश १७।२२
21	७	शु	२३	०७	श्ले	२२	२६	ब	६ २८	०९ ००	सिं.	भद्रा २३।०७ से, वृष में बुध प्र. ६।१७, पुनर्वसु में शुक्र B
22	८	श	२३	१०	म	२३	०९	ध्रु	२७	४७	सिंह	भद्रा ११।०२ तक, राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारम्भ
23	९	र	२३	५४	पूफा	२४	३२	इ	२७	२८	सिंह	वक्री हर्षल ५।३७C रोहि. में बुध प्रवेश २०।५८, कमला D
24	१०	चं	२५	१४	उफा	२६	३२	वज्र	२७	३७	क.	श्री गंगा दशहरा मेला हरिद्वार E एकादशी व्रत निम्बार्काणाम
25	११	मं	२७	०२	ह	२८	५४	सि	२८	०४	कन्या	भद्रा १४।०३ से २७।०२ तक, रोहि. में सूर्य प्र. १७।२७ C
26	१२	बु	२९	०६	चि	-	-	व्य	२८	४६	तु.	अश्वि. १ मेष में गुरु प्रवेश १६।३९, कमला पुरुषोत्तम E
27	१३	गु	-	-	चि	७	३७	व	-	-	तुला	भरणी २ में शनि प्रवेश १४।४४, प्रदोष व्रत
28	१४	शु	७	२४	स्वा	१०	२८	व	५	३७	तुला	त्रयोदशी वृद्धि D पुरुषोत्तम एका. व्रत स्मार्त वैष्णवानां
29	१५	श	९	४५	वि	१३	२४	ध	६	३२	वृ.	भद्रा ९।४५ से २२।५७ तक, सत्यव्रत
30	१५	र	१२	०९	अनु	१६	२१	शि	७	२८	वृश्चिक	कर्क में शुक्र प्रवेश २५।२०, पूर्णिमा पुण्यं

द्वितीय (अधिक) ज्येष्ठ कृष्णा पक्ष सं. २०५६ (३१ मई से १३ जून)

मई	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
31	१	चं	१४	२८	ज्ये	१९	१२	मि	८	२२	ध.	मृगशिर में बुध प्रवेश २३।४८
J.1	२	मं	१६	४०	मूल	२१	५८	सा	९	१०	धनु	A पंचक प्रा. १६।५७ से
2	३	बु	१८	३८	पूषा	२४	२६	शुभ	९	५१	धनु	भद्रा ५।४२ से १८।३८ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
3	४	गु	२०	१६	उषा	२६	३६	शु	१०	१६	म.	मिथुन में बुध प्रवेश २७।५२, पुष्य में शुक्र प्रवेश ७।३९
4	५	शु	२१	१८	श्र	२८	१९	ब्र	१०	२५	मकर	मार्गी मंगल १९।१७
5	६	श	२२	०७	ध	२९	२६	ऐं	१०	११	कुं.	भद्रा २२।०७ से, बुध पश्चिम में उदय २६।०८, A
6	७	र	२२	०६	श	-	-	वै	९	२७	कुंभ	भद्रा १०।१२ तक, वैधृति पुण्य
7	८	चं	२१	२२	भ	५	५७	वि	८	१०	मी.	आर्द्रा में बुध प्रवेश १२।०६
8	९	मं	१९	५५	पूभा	२८ २८	४६ ५६	प्री	२७ २७	५९ ५९	मीन	मृगशिर में सूर्य प्रवेश १५।१९
9	१०	बु	१७	४६	रेव	२७	०६	मा	२४	५३	मे.	भद्रा ६।५६ से १७।०६ तक, पंचक समाप्त २७।०६
10	११	गु	१४	५८	अ	२४	५४	आ	२१	२३	मेष	कमला पुरुषोत्तम एकादशी व्रत सबका
11	१२	शु	११	४३	भ	२२	१५	अति	१७	३३	वृ.	प्रदोष व्रत
12	१३	श	८	०७	कृ	१९	२३	सु	१३	२७	वृष	भद्रा ८।०७ से १८।१५ तक, अश्वि. २ में गुरु प्रवेश ९।४६
0	१४	श	२८	२०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी क्षय
13	३०	र	२४	३१	रो	१६	२३	धृ	२५ २५	३० ३०	मि.	शहादत इमाम हसन (मु.), देवपितृकार्याऽमा

द्वितीय (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (१४ से २८ जून)

जून	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
14	१	चं	२०	५७	मृ	१३	३३	ग	२५	०५	मिथुन	पुनर्वसु में बुध प्र. २३।४९, A मु. ७५, सौर आषाढ़ मास प्रा.
15	२	मं	१७	४३	आ	११	००	वृ	२१	२७	क.	मिथुन में सूर्य प्र. १४।४३, संक्रांति मु. ४५, समर्प. चन्द्रदर्शन A
16	३	बु	१४	५९	पुन	८	५५	ध्रु	१८	१३	कर्क	भद्रा २५।५५ से, अश्लेषा में शुक्र प्रवेश २६।३४ B
17	४	गु	१२	५३	पु	७	२६	व्या	१५	३६	कर्क	भद्रा १२।५३ तक, विनायक ४ व्रत
18	५	शु	११	३५	श्ले	६	४२	ह	१३	३४	सिं.	श्रुति पंचमी (जैन) B रवि-उल-अव्वल मु. मास ३ प्रारंभ
19	६	श	११	०३	म	६	४५	वज्र	१२	१०	सिंह	अरण्य षष्ठी व्रत, जामित्रा षष्ठी (बंगाल) D(बारावफात)
20	७	र	११	१७	पूफा	७	३३	सि	११	२४	क.	भद्रा ११।१७ से २३।४७ तक, भानु सप्तमी
21	८	चं	१२	१७	उफा	९	०५	व्य	११	११	कन्या	कर्क में बुध प्र.१८।३०, वक्री उ.फा.४ में नेप.प्र. २२।३३.C
22	९	मं	१३	५१	ह	११	१३	व	११	२७	तु.	आर्द्रा में सूर्य प्रवे. १४।२०, श्री माहेश्वरी ९. रा. आषाढ़ मासारम्भ
23	१०	बु	१५	५०	चि	१३	५०	ध	१२	०५	तुला	भद्रा २१।०० से, बटुक भैरव जयंती E व्रत समाप्त
24	११	गु	१८	११	स्वा	१६	४२	शि	१२	५५	तुला	भद्रा १८।११ तक, पुष्य में बुध प्र. ९।४६, निर्जला एका. व्रत
25	१२	शु	२०	३२	वि	१९	३८	सि	१३	५३	वृ.	चम्पक द्वादशी C श्री दुर्गा ८, सायन कर्क में सूर्य प्र. २५।१९
26	१३	श	२२	५४	अनु	२२	३३	सा	१४	४९	वृश्चिक	शनि प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत प्रारम्भ (गुजरात में)
27	१४	र	२५	०८	ज्ये	२५	२४	शुभ	१५	४४	ध.	भद्रा २५।०८ से, भर. ३ में शनि प्र. ५।४७, ईद-ए-मिलाद D
28	१५	चं	२७	०८	मू	२७	५८	शु	१६	२४	धनु	भद्रा १४।०८ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यम्, वट सावित्रीE

आषाढ़ कृष्णा पक्ष सं. २०५६ (२९ जून से १३ जुलाई)

जून	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
29	१	मं	२८	५०	पूषा	-	-	ब्र	१६	५६	धनु	वटसावित्री व्रत पारणा, गुरु हरगोबिन्द सिंह जयंती
30	२	बु	-	-	पूषा	६	१८	ऐं	१७	१३	म.	
J.1	२	गु	६	१०	उषा	८	१५	वै	१७	१५	मकर	भद्रा १८।४० से, अश्विनी ३ में गुरु प्रवेश २१।५०
2	३	शु	७	१०	श्र	९	५२	वि	१६	५२	कुं.	भद्रा ७।१० तक, मघा सिंह में शुक्र प्रवेश २९।०४, कृष्णA
3	४	श	७	४३	ध	११	०१	प्री	१६	११	कुंभ	A चतुर्थी व्रत, पंचक प्रा. २२।३० से, ईद-ए-मौलाद (मु.)
4	५	र	७	४५	शत	११	४१	आ	१५	०५	कुंभ	B प्रवेश २२।२०, कालाष्टमी
5	६	चं	७	१५	पूभा	११	४८	सौ	१३	३२	मी.	भद्रा ७।१५ से १८।४३ तक
6	७	मं	६	११	उभा	११	२४	शो	११	३३	मीन	पुनर्वसु में सूर्य प्रवेश १३।५५, स्वाती में मंगल B
0	८	मं	२८	३४	०	०	०	०	०	०	० ० ०	अष्टमी क्षय:
7	९	बु	२६	२३	रे	१०	२५	अति	९	०७	मे.	पंचक समाप्त १०।२५
8	१०	गु	२३	४९	अ	८	५४	सु	२७ २७	१४ २१	मेष	भद्रा १३।१० से २३।४९ तक
9	११	शु	२०	५०	भ	२२ २२	४४ ४६	शु	२३	२८	वृ.	योगिनी एकादशी व्रत सब का
10	१२	श	१७	३६	रो	२६	१७	गं	१९	४५	वृष	शनि प्रदोष व्रत, पापनाशिनी महाद्वादशी व्रत
11	१३	र	१४	१९	मृग	२३	४७	वृ	१५	५८	मि.	भद्रा १४।१९ से २४।४० तक, मासशिवरात्रि व्रत
12	१४	चं	११	००	आ	२१	२३	ध्रु	१२	११	मिथुन	पितृकार्याऽमावस्या
13	३०	मं	७	५३	पुन	१९	१४	व्या	२६	३० ३०	क.	वक्री बुध ९।४५, देवकार्याऽमावस्या

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (१४ से २८ जुलाई)

जुलाई	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
0	१	म	२०	०८	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा क्षय:
14	२	बु	२६	५१	पु	१७	३३	वज्र	२६	२३	कर्क	चन्द्रदर्शन मु. १५. श्री जगदीश रथयात्रा जगन्नाथपुरी
15	३	गु	२५	११	श्ले	१६	२२	सि	२३	५०	सिं. १६।२२	रवि उस्मानी मु. मास ४ प्रारंभ
16	४	शु	२४	१२	म	१५	५४	व्य	२२	०७	सिंह	भद्रा १२।३४ मे २४।१२ तक. कर्क में सूर्य प्र.२५।३५. A
17	५	श	२३	५८	पूफा	१६	०७	व	२०	५१	कं. २२।१८	संक्रांति पुण्यकाल पूर्वान्ह में
18	६	र	२४	२०	उफा	१७	०७	प	२०	१२	कन्या	बुध पश्चिम में अस्त १५।१७. श्री महावीर गर्भ कल्याणक
19	७	चं	२५	३०	ह	१८	४७	शि	२०	०६	कन्या	भद्रा २५।३९ मे. अश्ले. १ में राहु श्रवण ३ में केतु प्र. ११।०९
20	८	मं	२७	२५	चि	२१	०२	मि	२०	२०	तु. ७।४८	भद्रा १४।३० तक. पुष्य में सूर्य प्र. १३।२७. श्री दुर्गाष्टमी.
21	९	बु	२९	३४	स्वा	२३	४१	मा	२१	०८	तुला	भड्डली नवमी B राष्ट्रीय श्रावण मासारम्भ
22	१०	गु	-	-	वि	२६	३४	शुभ	२२	०२	वृ. १९।५१	A संक्रांति मु.३०, विनायक ४ व्रत, सौर श्रावण मासारम्भ
23	१०	शु	७	५६	अनु	२९	३२	शु	२३	००	वृश्चिक	भद्रा २१।०५ से, सायन सिंह में सूर्य प्रवेश १२।१४. B
24	११	श	१०	१६	ज्ये	-	-	ब्र	२३	५२	वृश्चिक	भद्रा १०।१६ तक, देवशयनी एकादशी व्रत (सबका).
25	१२	र	१२	३०	ज्ये	८	२१	ऐं	२४	३३	ध. ८।२१	प्रदोष व्रत, फतौहा वजद हुम (ग्यारहवीं शरीफ)
26	१३	चं	१४	२३	मू	१०	५२	वै	२४	५६	धनु	जयापार्वती व्रत शुरू C सत्यव्रत, चान्द्र पूर्णिमा व्रत
27	१४	मं	१५	५२	पूषा	१३	०२	वि	२५	०३	म. १९।३२	भद्रा १५।५२ से २८।२३ तक, चौमासी चौदश (जैन) C
28	१५	बु	१६	५३	उषा	१४	४७	प्री	२४	४५	मकर	आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा

श्रावण कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (२९ जुलाई से ११ अगस्त)

जुलाई	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
29	१	गु	१७	३०	श्र	१६	०४	आ	२४	०८	कुं. २८।३२	अश्विनी ४ में गुरु प्र. १६।०५. पंचक प्रा. २८।३२ से
30	२	शु	१७	३६	ध	१६	५५	सौ	२३	०८	कुंभ	भद्रा २९।२५ से, वक्री शुक्र ९।२६
31	३	श	१७	१७	शत	१७	१७	शो	२१	४८	कुंभ	भद्रा १७।१७ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
A1	४	र	१६	३१	पूभा	१७	१५	अति	२०	०६	मी. ११।२८	A १२।२०, पंचाक समाप्त १६।०५
2	५	चं	१५	२२	उभा	१६	४९	सु	१८	०७	मीन	नाग पंचमी (बंगाल व मरुस्थल में), श्रावण सोमवार व्रत
3	६	मं	१३	५१	रे	१६	०५	धृ	१५	४८	मे. १६।०५	भद्रा १३।५१ से २४।५७ तक, अश्लेषा में सूर्य प्रवेश A
4	७	बु	१२	००	अ	१४	५५	शू	१३	१३	मेष	बुध पूर्व में उदय १९।०८ B गुरु हरकिशन जयंती
5	८	गु	९	४९	भर	१३	३१	गं	१०	२५	वृ. १९।०६	विशाखा में मंगल प्रवेश २६।२४
6	९	शु	७	२६	कृ	११	५२	वृ	७ / २८	२४ / १६	वृष	भद्रा १८।०९ से २८।५३ तक, मार्गी बुध १०।२१. B
0	१०	शु	२८	५३	०	०	०	०	०	०	०००	दशमी क्षय: D देवपितृकार्याऽमावस्या, हरियाली अमावस्या
7	११	श	२६	१५	रो	१०	०५	व्या	२५	००	मि. २१।१०	कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त) C मास शिवरात्रि व्रत
8	१२	र	२३	३५	मृ	८	१३	ह	२१	४७	मिथुन	कामदा एकादशी व्रत (वैष्णवानां)
9	१३	चं	२१	०१	आ	५ / २८	२४ / ४१	वज्र	१८	३८	क. २३।०६	भद्रा २१।०१ से, सोम प्रदोष व्रत, श्रावण सोमवार व्रत, C
10	१४	मं	१८	३९	पु	२७	१३	सि	१५	३६	कर्क	भद्रा ७।४९ तक, मंगला गौरी पूजन
11	३०	बु	१६	३९	श्ले	२६	०९	व्य	१२	५३	सिं. २६।०१	शुक्र पश्चिम में अस्त १०।५५. D [शुक्र अस्त]

श्रावण शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (१२ से २६ अगस्त)

अगस्त	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
12	१	गु	१५	०१	म	२५	३०	व	१०	२७	सिंह	दक्षिण भारते चन्द्रदर्शन मु. ३०, साम्यार्ध A मु. मा. ५ प्रा.
13	२	शु	१३	५९	पूफा	२५	२८	प	८	२८	सिंह	चन्द्रदर्शन उत्तर भारते मु. ३०, सिंधारा C भाद्रपद मासारम्भ
14	३	श	१३	३२	उफा	२६	०३	शि	६	५५	कं. ७।३३	भद्रा २५।३९ से, हरियाली तीज, जमादि-उल-अव्वल A
15	४	र	१३	४६	ह	२७	१७	सि	५ / २९	५६ / ३०	कन्या	भद्रा १३।४६ तक, विनायक ४ व्रत, श्रवण तप (जैन), B
16	५	चं	१४	४०	चि	२९	०९	शुभ	२९	३२	तु. १६।१०	सोमवती नाग ५, श्रावण सोमवार व्रत, अमरनाथ यात्रा प्रा.
17	६	मं	१६	१०	स्वा	-	-	शु	-	-	तुला	मघा सिंह में सूर्य प्र. १०।००, संक्रांति मु. १५, सौर C
18	७	बु	१८	१०	स्वा	७	३४	शु	६	००	वृ. २७।३८	भद्रा १८।१० से, F २४।०१, रक्षाबन्धन, पं. प्रा. १२।०५ से
19	८	गु	२०	२६	वि	१०	१९	ब्र	६	४२	वृश्चिक	भद्रा ७।१७ तक, मार्गी प्लूटो ६।१०, श्री दुर्गाष्टमी
20	९	शु	२२	५२	अनु	१३	१५	ऐं	७	३८	वृश्चिक	अश्लेषा में बुध प्रवेश २६।५२ B भा. स्वतंत्रता दिवस
21	१०	श	२५	०४	ज्ये	१६	०८	वै	८	३२	ध. १६।०८	D सायन कन्या में सूर्य प्रवेश १९।२१
22	११	र	२७	००	मू	१८	४७	वि	९	१७	धनु	भद्रा १४।०७ से २७।०० तक
23	१२	चं	२८	२७	पूषा	२०	५९	प्री	९	४३	म. २७।२८	वृश्चि. में मंगल प्र. २२।४८, रा. भाद्रपद मासारम्भ, D
24	१३	मं	२९	२३	उषा	२२	३९	आ	९	४८	मकर	भौम प्रदोष व्रत E में शुक्र प्र. २२।४९
25	१४	बु	२९	३७	श्र	२३	४६	सौ	९	२३	मकर	भद्रा २९।३७ से, वक्री गुरु १०।३५, वक्री अश्ले. ४ कर्क E
26	१५	गु	२९	१६	ध	२४	१५	शो	८	२९	कुं. १२।०५	भद्रा १७।३१ तक, बुध पूर्व में अस्त ९।००, शुक्र पूर्व में उदय F

भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (२७ अगस्त से ९ सितंबर)

अगस्त	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
27	१	शु	२८	२७	शत	२४	१३	अति	७ / २९	११ / २८	कुंभ	भर. ४ में शनि प्र. २५।३० A अगस्त्य (तारा) उदय २६।४०
28	२	श	२७	०८	पूभा	२३	४५	धृ	२७	१८	मी. १७।५४	मघा सिंह में बुध प्रवेश १६।४८ E गोगा नवमी
29	३	र	२५	२८	उभा	२२	५२	शूल	२४	५२	मीन	भद्रा १४।२१ से २५।२८ तक, अनु. में मंगल प्र.११।३५ A
30	४	चं	२३	३२	रे	२१	४२	गं	२२	१३	मे. २१।४२	वक्री शनि ११।३०, पू.फा. में सूर्य प्रवेश २९।५९, कृष्ण B
31	५	मं	२१	२५	अ	२०	२१	वृ	१९	२७	मेष	चन्द्र षष्ठी व्रत B चतुर्थी व्रत, बहुला ४ व्रत, पंचक समा. २१।४२
S1	६	बु	१९	११	भ	१८	५४	ध्रु	१६	३४	वृ. २४।३१	भद्रा १९।११ से ३०।०५ तक, वक्री भर. ३ में शनि C
2	७	गु	१६	५६	कृ	१७	२५	व्या	१३	३७	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मा., कालाष्टमी F (पंचमी पक्ष)
3	८	शु	१४	४०	रो	१५	५५	ह	१०	४१	मि. २७।१४	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव
4	९	श	१२	२९	मृ	१४	३१	वज्र	७ / २९	४६ / ०३	मिथुन	भद्रा २३।२७ से, पू.फा. में बुध प्रवेश १२।१६, गोकुलाष्टमी E
5	१०	र	१०	२६	आ	१३	१५	व्य	२६	२२	मिथुन	भद्रा १०।२६ तक C १२।१०, वक्री श्रवण ३ में हर्षल D
6	११	चं	८	३२	पु	१२	०७	ध	२३	५१	क. ६।२२	अजा एका. व्रत सबका, जैन पर्युषण पर्वारम्भ चतुर्थी पक्ष
7	१२	मं	६	४९	पु	११	१३	प	२१	३३	कर्क	भद्रा २९।२३ से, भौम प्रदोष व्रत, जैन पर्युषण पर्वारम्भ F
0	१३	मं	२९	२३	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशी क्षय: D प्रवेश २९।३०
8	१४	बु	२८	१६	श्ले	१०	३३	शि	१९	२८	सिं. १०।३३	भद्रा १६।४६ तक
9	३०	गु	२७	३३	म	१०	१४	सि	१७	४१	सिंह	देवपितृकार्याऽमावस्या

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (१० से २५ सितम्बर)

मिति	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार रा.रा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
10	१	शु	२७	१७	पूभा	१०	१०	मा	१६	१८	कं. १६।२६	श्री जन्माष्टमी व्रत AM ३०, बलराम जयंती (जैन)
11	२	श	२७	३२	उभा	१०	५२	गुप्त	१५	११	कन्या	उ.फा. में बुध प्रवेश २१।५६, मन्दी शुक्र ७।१३, चन्द्रदर्शन A
12	३	र	२८	२२	ह	११	५०	शु	१४	३३	तु. २४।५५	गौरी तृतीया व्रत, वराहि उपपुराण मु. क्षय ६ घ.
13	४	च	२९	४५	चि	१३	३८	ब	१४	२२	तुला	भद्रा १७।०० से २९।४० तक, उ.फा. में सूर्य प्र. २३।५२, कन्या B
14	५	मं	-	-	स्वा	१५	४८	ऐं	१४	३६	तुला	स्वतन्त्रता दिन, ५ पक्षा C संक्रांति मु. १५, विनायकी पूजा D
15	५	बु	७	४१	वि	१८	२५	वै	१५	११	वृ. ११।५५	पंचमी वृद्धि B वै बुध प्रवेश ७।४१, वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी
16	६	गु	९	५६	अनु	२१	१८	वि	१६	०१	वृश्चिक	बलदेव ६, श्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ E केतु प्रवेश ८।५८
17	७	शु	१२	२१	ज्ये	२४	१९	प्री	१६	५८	ध. २४।१९	भद्रा १२।३१ से २५।३५ तक, कन्या में सूर्य प्रवेश ९।५२ C
18	८	श	१४	०७	मू	२७	०९	आ	१७	५२	धनु	हस्त में बुध प्र. २३।५५, अनन्ताष्टमी, श्री महालक्ष्मी व्रत समा.
19	९	र	१६	५४	पूषा	२९	३९	सौ	१८	२९	धनु	ज्येष्ठा में मंगल प्रवेश ७।०२ D श्रवण आश्विन मासारंभ
20	१०	च	१८	३४	उषा	-	-	शो	१८	०६	म. १२।१२	वक्री अश्वि. ३ में गुरु प्र. २२।१४ पूर्व ८ में राहु प्रवेश २ में E
21	११	मं	१९	३२	उषा	७	३४	अ	१८	३०	मकर	भद्रा ३।०९ से १९।१२ तक, पद्मा एकादशी व्रत मथुरा
22	१२	बु	१९	५०	श्र	८	०७	सु	१७	४१	कुं. २१।०३	श्री वामन जयंती, पंचक प्रा. २१।०३ से
23	१३	गु	१९	२०	ध	९	१८	धृ	१६	१७	कुम्भ	मघा युक्त में सूर्य प्रवेश १७।०८, राष्ट्रीय आश्विन मासारंभ
24	१४	शु	१८	०८	शत	९	०४	शू	१४	१८	मी. २६।३०	भद्रा १८।४८ से २९।१५ तक, अनन्त १४ व्रत, कुंभ पूर्णिमा व्रत
25	१५	श	१६	२०	पूभा	८	१४	गं	११	५०	मीन	बुध पश्चिम में उदय १३।४८, मन्वन्तर पूर्णिमा पूर्ण

आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (१० से २४ अक्टूबर)

अक्टू.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार रा.रा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
10	१	र	१८	०९	चि	२१	३२	वै	२२	०१	तु. ८ ३०	चित्रा में सूर्य प्र. २८।२३, शा. नवरात्रा प्रा., कलश A
11	२	चं	१९	३६	स्वा	२३	३७	वि	२२	११	तुला	उत्तराभाद्रे चन्द्रदर्शन मु. १५, महर्ष A स्थापना, मातामह B
12	३	मं	२१	३३	वि	२६	०८	प्री	२२	३९	वृ. १९।३०	रजब मु. ७ घ. B श्राद्ध, उ. भाद्रे चन्द्रदर्शन मु. ३०
13	४	बु	२३	५३	अनु	२८	५९	आ	२३	२५	वृश्चिक	भद्रा १०।३९ से २३।५३ तक F शा. कार्तिक मासारम्भ
14	५	गु	२६	२५	ज्ये	-	-	सौ	२४	२२	वृश्चिक	मार्गी नेपच्यून ११।४०, C संक्रांति मु. ४५, सौर कार्तिक D
15	६	शु	२८	५९	मू	८	०३	शो	२५	२१	ध. ८।४३	विशा. में बुध प्र. १०।३५ D मासारम्भ, श्री महाष्टमी व्रत पू.
16	७	श	-	-	पू	११	०८	अ	२६	१४	धनु	पू.फा. में शुक्र प्रवेश २१।१७, जैन आयंबिल ओली प्रा.
17	७	र	७	२५	पूषा	१३	५८	सु	२६	४७	म. २२।३७	भद्रा ७।२५ से २०।२५ तक, तुला में सूर्य प्र. २१।५७, C
18	८	चं	९	२६	उषा	१६	२०	धृ	२६	५७	मकर	श्री महाष्टमी व्रत पूजन, महानवमी, श्री सरस्वती बलि.
19	९	मं	१०	४९	श्र	१८	०४	शू	२६	३३	मकर	वक्री अश्वि. २ में गुरु प्र. १६।४१, विजया दशमी (कर्नाटक)
20	१०	बु	११	२२	ध	१८	५९	गं	२५	२७	कुं. ६ ३०	भद्रा २३।१४ से, पंचक प्रा. ६।३७ से
21	११	गु	११	०६	श	१९	०४	ध्रु	२३	४३	कुम्भ	भद्रा ११।०६ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत मथुरा
22	१२	शु	९	५८	पूभा	१८	२०	धृ	२१	१८	मी. १२ ३०	प्रदोष व्रत E १८।४० मासान्त वृश्चिक, में सूर्य प्र. २६।१२ F
23	१३	श	८	०५	उभा	१६	५५	व्या	१८	२०	मीन	भद्रा २९।३३ से, वृश्चिक में बुध प्र. २०।३६, मार्गी हर्षल E
0	१४	श	२९	३५	-	०	०	०	०	०	०००	चतुर्दशी क्षय; G जयंती, शरद पूर्णिमा, पंचक समा. १४।५६
24	१५	र	२६	३२	र	१४	५६	ह	१४	५४	मे. १४।५६	भद्रा १६।०६ तक, स्व. में सूर्य प्र. १४।२, महर्षि कार्तिक G

आश्विन कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (२६ सितम्बर से ९ अक्टूबर)

मिति	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार रा.रा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
26	१	र	१८	०४	उभा	१०	१२	व	१०	१२	मे. २१।००	चित्र में बुध प्रवेश २०।०३, प्रतिपदा व द्वितीया श्राद्ध A
27	२	चं	११	३२	अ	२७	१२	व्या	२६	२६	मेष	भद्रा २२।०८ से, हस्त में सूर्य प्रवेश १५।२२, तृतीया श्राद्ध
28	३	मं	८	४६	भ	२५	११	ह	२३	०३	मेष	भद्रा ८।४६ तक, मघा चित्र में शुक्र प्र. १०।०६ अंगारक B
0	४	मं	३०	००	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्थी क्षय; A पंचक समाप्त २९।१०
29	५	बु	२७	१९	कृ	२३	१३	वज्र	१९	४१	वृ. ६।४०	पंचमी श्राद्ध B चतुर्थी श्राद्ध, कृष्ण चतुर्थी व्रत
30	६	गु	२४	४७	रो	२१	२६	सि	१६	२५	वृष	भद्रा २४।४७ से, रुष्टा श्राद्ध, वैश्यों में अष्टवार्षिक संकल्पारंभ
Q.1	७	शु	२२	३३	मृ	१९	५४	व्य	१३	२२	मि. ८।३७	भद्रा ११।३७ तक, तुला में बुध प्र. ७।४९, मन्वन्तर श्राद्ध C
2	८	श	२०	३७	आ	१८	४०	व	१०	३५	मिथुन	कालाष्टमी, अष्टमी श्राद्ध, गांधी व शास्त्री जयं.
3	९	र	१९	०२	पुन	१७	४७	प	९	४२	क. ११।०१	नवमी श्राद्ध C श्री महालक्ष्मी व्रत समा.
4	१०	चं	१७	४९	पु	१७	१६	सि	२७	४८	कर्क	भद्रा ६।२३ से १७।४९ तक, दशमी श्राद्ध D सम्वादि मेष
5	११	मं	१६	५७	श्ले	१७	२४	सा	२६	०७	सिं. १७।०१	स्वाती में बुध १९।१०, इन्दि. एका. व्रत मथुरा, एका. श्राद्ध
6	१२	बु	१६	२४	म	१७	३२	शुभ	२४	४१	सिंह	प्रदोष व्रत, द्वादशी श्राद्ध, संन्यासी श्राद्ध E मृतकों का श्राद्ध
7	१३	गु	१६	१३	पूफा	१७	४२	शु	२३	३४	कं. २१।४३	भद्रा १६।१३ से २८।२२ तक, त्रयोदशी श्राद्ध
8	१४	शु	१६	२८	उफा	१८	३६	ब्र	२२	४५	कन्या	मूल धनु में मंगल प्र. १६।१२, चतुर्दशी श्राद्ध, विपत्ति D
9	३०	श	१७	०४	ह	१९	५०	ऐं	२२	१३	कन्या	देवपितृकार्य अमावस्या, सर्वपितृ अमावस्या

कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (२५ अक्टू. से ८ नवं.)

अक्टू.	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार रा.रा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
25	१	चं	२३	१२	अ	१२	३०	वज्र	११	१०	मेष	A (करवा चौथ व्रत)
26	२	मं	१९	४८	भ	०	५३	सि	[illegible]	[illegible]	वृ. १५।१	भद्रा ३०।०७ से, उ.फा. में मंगल प्रवेश २७।४१,
27	३	बु	१६	२६	कृ	[illegible]	[illegible]	व	२३	१९	वृष	भद्रा १६।२६ तक, अनुराधा में बुध प्रवेश ७।२५, A
28	४	गु	१३	१७	रो	२६	२९	प	१९	३६	मि. १०।३३	B पूजा, प्रदोष काल दीपदान, महावीर निर्वाण दिवस
29	५	शु	१०	२७	मृ	२४	४१	शि	१६	१३	मिथुन	पंच प्रभु जयंती (जैन)
30	६	श	८	०६	आ	२३	२५	सि	१३	१६	क. १७।४१	भद्रा ८।०६ से १९।१३ तक, उ.फा. में शुक्र प्रवेश २७।०१
0	७	श	३०	१६	०	०	०	०	०	०	०००	सप्तमी क्षय;
31	८	र	२९	००	पु	२२	४१	सा	१०	४३	कर्क	कालाष्टमी, अहोई अष्टमी
N1	९	चं	२८	१६	श्ले	२२	२८	शुभ	[illegible]	३६	सिं. २२।४८	
2	१०	मं	२८	०५	म	२२	०७	शु	[illegible]	[illegible]	सिंह	भद्रा १६।०६ से २८।०५ तक C बलिराज पूजा
3	११	बु	२८	२०	पूफा	२३	३४	ऐं	२८	६६	कं. २१।४०	कन्या में शुक्र प्रवेश १०।०८, रमा एका. व्रत स्म. वैष्णव
4	१२	गु	२९	०३	उफा	२४	०६	वै	२८	००	कन्या	वक्री भा. २ में शनि प्र. २४।०१, रमा एका. व्रत निम्बकोना
5	१३	शु	३०	०९	ह	२६	१९	वि	२७	५३	तु. १५ १५	भद्रा ३०।०९ से, वक्री बुध १०।२८, प्रदोष व्रत, धन तेरस
6	१४	श	-	-	चि	२८	१७	प्री	२७	५२	तुला	भद्रा १८।४९ तक, विशा. में सूर्य प्र. २३।०७, नरक १४
7	१४	र	७	३७	स्वा	३०	३०	आ	२८	०६		श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, निशीथ काल में महाकाली B
8	३०	चं	९	२२	वि	-	-	सौ	२८	३५	वृ. २६।२६	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, C

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (९ से २३ नवम्बर)

दिन	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
9	१	भ	११	२९	वि	९	०५	शो	२९	१९	वृश्चिक	बुध पश्चिम में अस्त २६।०१, चन्द्रदर्शन मु. ३०,
10	२	बु	१३	५६	अनु	११	५५	अ	३०	११	वृश्चिक	भैया दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा जयंती, सावान A
11	३	गु	१६	३१	ज्ये	१४	५८	सु	-	-	ध. १४।५८	भद्रा २९।५१ से, B हस्त में शुक्र प्र. २२।२२, चिन्ता. ४ व्रत,
12	४	शु	१९	१२	मू	१८	०८	सु	७	१२	धनु	भद्रा १९।१२ तक, वक्री विशाखा में बुध प्रवेश २२।२३ B
13	५	श	२१	५१	पूषा	२१	१०	धृ	८	०९	म. २०।५४	उ.षा. में मंगल प्रवेश २४।५४, गु. गोबिन्द सिंह पुण्य दिवस
14	६	र	२४	०७	उषा	२३	५७	शू	९	०१	मकर	वक्री अश्वि. १ में गुरु प्रवेश १२।५५, डाला छठ (बिहार)
15	७	चं	२५	५३	श्र	२६	१३	गं	९	३३	मकर	भद्रा २५।५३ से, वक्री तुला में बुध प्र. १३।०२, अष्टान्हिकC
16	८	मं	२६	५८	ध	२७	४९	वृ	९	४०	कुं. १५।०६	भद्रा १४।३२ तक, वृश्चिक में सूर्य प्रवेश २१।०३, D
17	९	बु	२७	१३	शत	२८	३८	ध्रु	९	०९	कुम्भ	आंवला ९, अक्षय नवमी, कूष्मांड नवमी Cजैन व्रतारंभ
18	१०	गु	२६	३३	पूभा	२८	३१	व्या	८ ९०	०३ ३०	मी. २२।३८	मकर में मंगल प्र. १०।३६ A मु. मास ८ प्रारम्भ
19	११	शु	२५	०१	उभा	२७	३३	व	२७	३९	मीन	भद्रा १३।५३ से २५।०१ तक, अनु. में सूर्य प्र. २९।०२ F
20	१२	श	२२	४३	रे	२५	५२	सि	२४	३०	मे. २५।५२	पंचकसमा. २५।५२Dसंक्रांति मु. ३०, दुर्गाष्टमी, सौरE
21	१३	र	१९	४४	अ	२३	३३	व्य	२०	४९	मेष	पुष्य ३ में राहु श्रवण १ में केतु प्रवेश ३०।३८, प्रदोष व्रत
22	१४	चं	१६	१७	भ	२०	५७	व	१६	४८	वृ. २६।०३	भद्रा १६।२७ से २६।२५ तक, बुध पूर्व में उ. ११।१०, G
23	१५	मं	१२	३४	कृ	१७	४६	प	१२	३०	वृष	गुरु नानक ज., अष्टान्हिक जैन व्रत व भीष्म पंचक समा.

E मार्ग. कल्पारंभ, पंचक प्रा. १५।०६ से F देव प्रबोधिनी एका. व्रत, भीष्म पंचकप्रारम्भ Gतुलन धनु में सूर्य प्रवेश २३।५५, त. मार्गशीर्ष मासारंभ, सत्यव्रत

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (८ से २२ दिसम्बर)

दिन	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
8	१	बु	३०	४०	ज्ये	२१	१५	ध्रु	१०	४८	ध. २१।१५	अनुराधा में बुध प्रवेश २९।०७ Aपौष मासारंभ, दुर्गाष्टमी
9	२	गु	-	-	मू	२४	१९	शू	२१	४३	धनु	चन्द्रदर्शन मु. ३० B प्र. १६।१८, पंचक समा. ११।५१
10	२	शु	९	१९	पूषा.	२७	२१	गं	१२	३९	धनु	रमजान मु. मास ९ प्रारम्भ, रोजा प्रारम्भ, द्वितीया वृद्धि
11	३	श	११	५६	उषा.	३०	१३	वृ	१३	३१	म. १०।०४	भद्रा २५।०५ से, श्रवण ४ में हर्षण प्रवेश १२।५२
12	४	र	१४	१४	श्र	-	-	ध्रु	१४	१०	मकर	भद्रा १४।१४ तक, विनायक ४ व्रत
13	५	चं	१६	१२	श्र	८	४४	व्या	१४	३४	कुं. २१।५०	गुरु तेगबहादुर, बलिदान दिवस, पंचक प्रा. २१।५० में
14	६	मं	१७	३४	ध	१०	४८	ह	१४	३१	कुम्भ	स्कन्द षष्ठी व्रत, चम्पाषष्ठी (महाराष्ट्र)
15	७	बु	१८	१६	श	१२	१२	वज्र	१३	५८	मी. ३०।०९	भद्रा १८।१६ से ३०।१५ तक C सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्य D
16	८	गु	१८	११	पूभा	१२	५४	सि	१२	५०	मीन	मूल धनु में सूर्य प्रवेश १२।२०, संक्रांति मु. ३०, सौर A
17	९	शु	१७	१७	उभा	१२	४५	व्य	११	०३	मीन	विशाखा में शुक्र प्रवेश २२।५६ D राष्ट्रीय पौष मासारंभ
18	१०	श	१५	३३	रे	११	५१	व	८ २९	३९ ३८	मे. ११।५१	भद्रा २६।२० से, धनि. में मंगल प्र. १९।४५, ज्ये. में बुध B
19	११	र	१३	०७	अ	१०	१४	सि	२६	०५	मेष	भद्रा १३।०७ तक, मोक्षदा एका. व्रत सबका, मीनी एका.(जैन)
20	१२	चं	१०	०५	भ	७ २९	५९ २६	सि	२२	०८	वृ. १३।१९	सोम प्रदोष व्रत, गुरु ग्रन्थ साहिब का वार्षिक उत्सव
0	१३	चं	३०	३७	०	०	०	०	०	०	० ० ०	त्रयोदशी क्षय:
21	१४	मं	२६	५१	रो	२६	१६	सा	१७	५४	वृष	भद्रा २६।५१ से, मार्गी गुरु १२।५५, पिशाच मोचन श्राद्ध,
22	१५	बु	२३	०१	मृ	२३	११	शुभ	१३	३१	मि. १२।०८	भद्रा १२।५७ तक, मायन मकर में सूर्य प्रवेश १३।२० C

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (२४ नवं. से ७ दिसं.)

दिन	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
24	१	बु	८	४५	गो	१४	४३	शि	९ २७	०९ ५२	मि. २५।१३	चित्रा में शुक्र प्रवेश २३।५९
0	२	बु	२९	०१	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वितीया क्षय:
25	३	गु	२५	३१	मृ	११	४८	सा	२३	४७	मिथुन	भद्रा १५।१३ से २५।३२ तक, मार्गी बुध १४।६०
26	४	शु	२२	३१	आ	९	१२	शुभ	२०	०२	क. २५।३५	कृष्ण चतुर्थी व्रत
27	५	श	२०	०२	पुन	७ २९	०७ ३७	शु	१६	४५	कर्क	सुविधानाथ जयंती व दीक्षा दिवस (जैन)
28	६	र	१८	१२	श्ले	२८	४६	ब्र	१३	५८	सिं. २८।६६	भद्रा १८।१२ से २९।३७ तक
29	७	चं	१७	०४	म	२८	३७	ऐं	११	४४	सिंह	श्री महाकाल भैरवाष्टमी
30	८	मं	१६	४१	पूफा.	२९	११	वै	१०	०४	सिंह	तुला में शुक्र प्रवेश २०।२९
D1	९	बु	१६	५८	उफा.	३०	१८	वि	८	५८	कं. ११।२२	भद्रा २९।२४ से, श्रवण में मंगल प्रवेश १२।५८,
2	१०	गु	१७	५०	ह	-	-	प्री	८	२०	कन्या	भद्रा १७।५० तक
3	११	शु	१९	१४	ह	७	५९	आ	८	०५	तु. २०।५१	ज्येष्ठा में सूर्य प्रवेश ९।२०, उत्पत्ति एका. व्रत सबका
4	१२	श	२१	००	चि	१०	०६	सौ	८	११	तुला	A शुक्र प्रवेश १४।५४ B देवपितृकार्याऽमावस्या
5	१३	र	२३	०९	स्वा	१२	३३	शो	८	३५	तुला	भद्रा २३।०९ से, प्रदोष व्रत
6	१४	चं	२५	२८	वि	१५	१७	अ	९	१२	वृ. ८।३३	भद्रा १२।१६ तक, वृश्चि. में बुध प्र.१३।३९, स्वा. में A
7	३०	मं	२८	००	अनु	१८	११	मु	९	५६	वृश्चिक	ज्येष्ठा १ में प्लूटो प्रवेश २९।०७, भीमवती अमावस्या, B

पौष कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (२३ दिसम्बर से ६ जनवरी)

दिन	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
23	१	गु	१९	१६	आ	२०	१२	शु	९ २८	०८ ५६	मिथुन	बुध पूर्व में अस्त २२।२०, स्वा. श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
24	२	शु	१५	४९	पुन	१७	३०	ऐं	२५	००	क. १२।०९	भद्रा २६।१७ से, Aवक्री भरणी १ में शनि प्रवेश ८।१५
25	३	श	१२	४६	पु	१५	१२	वै	२१	२९	कर्क	भद्रा १२।४६ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, क्रिसमस डे,
26	४	र	१०	१९	श्ले	१३	३२	वि	१८	२८	सिं. १३।३२	वृश्चिक में शुक्र प्रवेश ७।५०,
27	५	चं	८	३४	म	१२	३५	प्री	१६	०२	सिंह	कुंभ में मंगल प्र. १०।११, मूल धनु में बुध प्र. १२।०१ A
28	६	मं	७	३४	पूफा.	१२	२१	आ	१४	१४	कं. १८।२५	भद्रा ७।३४ से १९।३० तक, अनु. में शुक्र प्रवेश २६।२३
29	७	बु	७	२४	उफा.	१२	५५	सौ	१३	०३	कन्या	पू.षा. में सूर्य प्रवेश १४।३२, कालाष्टमी,
30	८	गु	७	५८	ह	१४	११	शो	१२	२३	तु. २७।०५	शहादते हजरत अली
31	९	शु	९	१३	चि	१६	०९	अ	१२	१८	तुला	भद्रा २२।०८ से,
J1	१०	श	११	०४	स्वा	१८	३३	सु	१२	३६	तुला	भद्रा ११।०४ तक
2	११	र	१३	२१	वि	२१	२०	धृ	१३	१२	वृ. १४।३७	सफला एकादशी व्रत सबका
3	१२	चं	१५	५०	अनु	२४	१९	शू	१४	०९	वृश्चिक	Bबुध प्र. २६।४२, भौम प्रदोष व्रत, श्री चन्द्रप्रभु ज. (जैन)
4	१३	मं	१८	३१	ज्ये	२७	२४	गं	१४	५७	ध. २७।२८	भद्रा १८।३१ से, शत. में मंगल प्र. २४।२८, पू.षा. में B
5	१४	बु	२१	११	मू	३०	२७	वृ	१५	५२	धनु	भद्रा ७।५२ तक, शबे-ए-कदर
6	३०	गु	२३	४४	पूषा.	-	-	ध्रु	१६	४४	धनु	देवपितृकार्याऽमावस्या, वकुला अमावस्या (उड़ीसा)

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

पौष शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (७ से २१ जनवरी)

जनवरी	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
7	१	शु	२६	०५	पूष	९	२२	व्या	१७	२७	म. १६।०४	बुधातुलविद्या (मु.) A संक्रांति मु. ३०, सौरमाघ मासारम्भ, B
8	२	श	२८	०९	उषा	१२	०४	हर्ष	१८	०२	मकर	ज्येष्ठा में शुक्र प्रवेश २६।४२, चन्द्रदर्शन मु. ३०, सायार्य
9	३	र	२२	३०	श्र	१४	२८	वज्र	१८	१९	कुं. २७।४२	पंचक प्रा. २७।३२ से, सब्बाल मु. मास १० प्रारम्भ, ईदुलफित्तर
10	४	चं	३१	०७	ध	१६	२९	सि	१८	१९	कुंभ	भद्रा १८।३५ से ३१।०७ तक B मकर संक्रान्ति, श्री गुरु C
11	५	मं	-	-	शत	१८	०४	व्य	१७	५५	कुंभ	उ.षा. में सूर्य प्रवेश १६।३१ D पौगल पर्व (द. भारत)
12	५	बु	७	५३	पूभा	१९	०६	व	१७	०९	मी. १२।५३	मार्गी शनि १०।३० F सत्य व्रत, E १४।०९, प्रदोष व्रत
13	६	गु	८	००	उभा	१९	३३	ध	१५	५३	मीन	उ.षा. में बुध प्रवेश १०।११, लोहड़ी उत्सव (पं. हरि. में)
14	७	शु	७	३३	रे	१९	२२	शि	१४	०७	मे. १९।२२	भद्रा ७।३३ से १९।०० तक, मकर में सूर्य प्रवेश २३।०२, A
0	८	श	३०	२६	०	०	०	०	०	०	० ० ०	अष्टमी क्षय: C गोविन्दसिंह ज., दुर्गाष्टमी, पंचक समा. १९।२२
15	९	र	२८	४०	अ	१८	३३	सि	११	५२	मेष	मकर में बुध प्रवेश १०।४३, संक्रान्ति पुण्यकाल पूर्वार्द्ध में, D
16	१०	र	२६	२२	म	१७	१०	सा	९ ५९	०९ ५५	वृ. २२।४३	नव दशमी G पूर्णिमा पुष्य, गुरुवार माघ मासारंभ
17	११	चं	२३	३३	कृ	१५	१५	शु	२६	२२	वृष	भद्रा १३।०१ से २३।३३ तक, पौषी एका. व्रत स्मार्त वैष्णवाणां
18	१२	मं	२०	२३	रो	१२	५६	ब	२२	३०	मि. २३।४०	पुत्रदा एकादशी व्रत निम्बार्कानां
19	१३	बु	१७	००	मृ	१०	२०	ऐं	१८	२९	मिथुन	मूल धनु में शुक्र प्रवेश २४।५७, श्रवण १ में नेपच्यून प्रवेश E
20	१४	गु	१३	३४	आ	७ २८	४८ ८८	वै	१४	३५	क. २३।३७	भद्रा १३।३४ से २३।५२ तक, सायन कुम्भ में सूर्य प्र. २३।५३F
21	१५	शु	१०	२०	पु	२६	२९	वि	११ ३८	४० ३८	कर्क	पू.भा. में मंगल प्रवेश २९।०७, श्रवण में बुध प्रवेश १।५२, G

माघ कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (२२ जनवरी से ५ फरवरी)

जनवरी	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
0	१	शु	३१	०३	०	०	०	०	०	०	० ० ०	प्रतिपदा क्षय: B मेला निजामुद्दीन (दिल्ली में)
22	२	श	२८	२०	श्ले	२४	२३	आ	२७	०९	सिं. २४।२३	A में केतु प्रवेश २८।२२, श्री सुभाष चन्द्र बोस जयंती
23	३	र	२६	०७	म	२२	४७	सौ	२४	०७	सिंह	भद्रा १५।०९ से २६।०७ तक, पुष्य २ में राहु उ.षा. ४A
24	४	चं	२४	३६	पूफा	२१	४९	शो	२१	३६	कं. २७।४२	श्रवण में सूर्य प्रवेश १८।५०, संकष्ट चतुर्थी व्रत, उर्स B
25	५	मं	२३	५०	उफा	२१	३५	अ	१९	४१	कन्या	अश्विनी २ में गुरु प्रवेश २५।०७
26	६	बु	२३	५३	ह	२२	१२	सु	१८	२४	कन्या	भद्रा २३।५३ से, भारतीय गणतंत्र दिवस
27	७	गु	२४	४४	चि	२३	२९	धृ	१७	४४	तु. १०।०४	भद्रा १२।१४ तक, स्वा. विवेकानन्द व श्री रामानन्दाचार्य ज.
28	८	शु	२६	१९	स्वा	२५	३४	शू	१७	३८	तुला	धनिष्ठा में बुध प्र. २८।०२, भरणी २ में शनि प्र. ७।५७, C
29	९	श	२८	२७	वि	२८	०८	ग	१८	००	वृ. २१।१७	C कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, लाला लाजपतराय जयंती
30	१०	र	३०	५७	अनु	३१	०५	वृ	१८	४३	वृश्चिक	भद्रा १७।४१ से ३०।५७ तक, पू.षा. में शुक्र प्र. २१।४८
31	११	चं	-	-	ज्ये	-	-	ध्रु	१९	३८	वृश्चिक	D २९।३४, बुध पश्चि. में उदय २०।४०, मेरु १३ (जैन)
F1	११	मं	९	३९	ज्ये	१०	११	व्या	२०	३५	ध. १०।११	कुंभ में बुध प्रवेश २३।४७, षट्तिला एकादशी व्रत सबका
2	१२	बु	१२	१८	मू	१३	१३	ह	२१	२८	धनु	प्रदोष व्रत, श्री शीतल नाथ जयंती (जैन), दस्तकार दिवस
3	१३	गु	१४	४४	पूषा	१६	०७	वज्र	२२	१०	म. २२।०७	भद्रा १४।४४ से २७।०७ तक, मीन में मंगल प्रवेश D
4	१४	शु	१६	४९	उषा	१८	३९	सि	२२	३७	मकर	
5	३०	श	१८	३२	श्र	२०	४७	व्य	२२	४३	मकर	शतभिषा में बुध प्रवेश २१।०८, मौनी अमावस्या

माघ शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (६ से १९ फरवरी)

फरवरी	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
6	१	र	१९	४८	ध	२२	३०	व	२२	२७	कु. १।०६	धनिष्ठा में सूर्य प्रवेश २१।५८, पंचक प्रारम्भ ९।४३ से
7	२	चं	२०	३५	शत	२३	४६	प	२१	५२	कुंभ	चन्द्रदर्शन मु. १५ A कुन्द ४ व्रत, वाद ४
8	३	मं	२०	५३	पूभा	२४	३५	शि	२०	५६	मी. १८।२७	उ.भा. में मंगल प्रवेश १४।०१, जिल्काद मु. मास ११ प्रा.
9	४	बु	२०	४४	उभा	२५	००	सि	१९	३९	मीन	भद्रा ८।५१ से २०।४४ तक, वैनायक ४ व्रत, तिल चतुर्थी A
10	५	गु	२०	०७	रे	२४	५५	सा	१७	५९	मे. २४।५५	उ.षा. में शुक्र प्र. १७।४५, बसन्त ५, पंचक समा. २४।५५
11	६	शु	१९	०८	अ	२४	२८	शुभ	१६	०१	मेष	C श्री दुर्गाष्टमी, सौर फाल्गुन मासारम्भ
12	७	श	१७	४२	म	२३	३९	शु	१३	४३	वृ. २१।२२	भद्रा १७।४२ से २८।४३ तक, E श्री गुरु रविदास ज.
13	८	र	१५	५५	कृ	२२	२५	ब	११	०८	वृष	कुंभ में सूर्य प्र. १२।०२, संक्रां. मु. ३०, मकर में शुक्र B
14	९	चं	१३	४८	रो	२०	५४	ऐं	८ २९	९५ ०२	वृष	B प्रवेश १०।३८, धनिष्ठा १ में हर्षल प्रवेश ७।०७, C
15	१०	मं	११	२४	मृ	१९	०५	वि	२५	५०	मि. ८।०२	भद्रा २२।०५ से, पू.भा. में बुध प्र. ८।४२, जया एका. व्रत स्मा
16	११	बु	८	४४	आ	१७	०७	प्री	२२	२४	मिथुन	भद्रा ८।४४ तक, जया एका. व्रत (वैष्णव), भीष्म द्वादशी
0	१२	गु	२९	५७	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वादशी क्षय: D में सूर्य प्र. १४।०३, माघी पू. E
17	१३	गु	२७	०८	पुन	१५	०३	आ	१८	५४	क. १।३४	अश्विनी ३ में गुरु प्र. ३०।१५, प्रदोष व्रत गुरु हरराय जयंती,
18	१४	शु	२४	२६	पु	१३	०१	सौ	१५	२६	कर्क	भद्रा २४।२६ से, श्री जिनेन्द्र रथयात्रा (जैन)
19	१५	श	२१	५७	श्ले	११	०७	शो	१२	०७	सिं. ११।०७	भद्रा ११।११ तक, शत. में सूर्य प्र. २६।२९, सायन मीन D

फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (२० फरवरी से ६ मार्च)

फरवरी	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
20	१	र	१९	४८	म	९	३१	अ	९ ३०	२८ २८	सिंह	राष्ट्रीय फाल्गुन मासारंभ
21	२	चं	१८	११	पूफा	८	१९	धृ	२८	००	कं. १४।०५	भद्रा २९।४० से, वक्री बुध १८।१५, श्रवण में शुक्र प्र. १३।०९
22	३	मं	१७	०७	उफा	७	४०	शू	२६	१३	कन्या	भद्रा १७।०७ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
23	४	बु	१६	४९	ह	७	४२	गं	२५	००	तु. १९।५८	बुध पश्चिम में अस्त ११।३१
24	५	गु	१७	१६	चि	८	२७	वृ	२४	२३	तुला	
25	६	शु	१८	२५	स्वा	९	५६	ध्रु	२४	१९	वृ. १९।२८	भद्रा १८।२५ से, रेवती में मंगल प्रवेश २७।११
26	७	श	२०	१७	वि	१२	०४	व्या	२४	४४	वृश्चिक	भद्रा ७।१७ तक
27	८	र	२२	३५	अनु	१४	४५	ह	२५	२९	वृश्चिक	वक्री शत. में बुध प्र. ३०।१८, कालाष्टमी, श्री सीताष्टमी
28	९	चं	२५	१४	ज्ये	१७	४२	वज्र	२६	२८	ध. १७।४२	A महाशिवरात्रि व्रत (स्मार्त), पंचक प्रारंभ १७।१८ से
29	१०	मं	२७	५२	मू	२०	५२	सि	२७	२४	धनु	भद्रा १४।३५ से २७।५२ तक
M1	११	बु	३०	१६	पूषा	२३	४७	व्य	२८	११	म. ३०।२८	विजया एकादशी व्रत (स्मार्त), मार्च मा. ३ ता. ३१
2	१२	गु	-	-	उषा	२६	२४	व	२८	४१	मकर	विजया एकादशी व्रत (वैष्णव)
3	१२	शु	८	१४	श्र	२८	२८	प	२८	४६	मकर	धनिष्ठा में शुक्र प्रवेश ८।१४, प्रदोष व्रत
4	१३	श	९	४२	ध	२९	५९	शि	२८	२४	कुं. १७।१८	भद्रा ९।४२ से २२।०६ तक, पू.भा. में सूर्य प्रवेश ८।४८ A
5	१४	र	१०	३०	शत	-	-	सि	२७	३५	कुंभ	महाशिवरात्रि व्रत (वै.) पितृकार्याऽमावस्या
6	३०	चं	१०	४६	शत	६	५७	सा	२६	२१	मी. ५।१५	देवकार्याऽमावस्या, सोमवती अमावस्या पुण्य

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. २०५६ (७ से २० मार्च)

मार्च	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
7	१	मं	१०	२८	पूभा	७	१८	शुभ	२४	४२	मीन	अश्विनी ४ में गुरु प्रवेश ६।५०, चन्द्रदर्शन मु. ।५
8	२	बु	०	४२	उभा	७	१४	शु	२२	४३	मीन	कुम्भ में शुक्र प्र. १७।४४, बुध पूर्व में उदय १३।४२, A
9	३	गु	८	३१	रे	५ ३०	४५ ००	ब्र	२०	२७	मे. ६।५०	भद्रा १९।४७ से, विनायक ४ व्रत, पंचक समाप्त ६।४५
10	४	शु	७	०३	अ	२८	५९	ऐं	१७	५९	मेष	भद्रा ७।०३ तक, A जिल्हेज मु. मास १२ प्रा.
0	५	शु	२९	२१	०	०	०	०	०	०	० ० ०	पंचमी क्षय: B प्रा. २५।२९ से, भानु ७ F भद्रोत्तर २२।५३
11	६	श	२७	२९	कृ	२७	५१	वै	१५	२३	वृ. १०।४४	गोरूपिणी ६ (बंगाल) C मंगल प्र. २२।५५, मार्गी बुध D
12	७	र	२५	२९	रो	२६	३४	वि	१२	४०	वृष	भद्रा २५।२९ से, अष्टाह्निक जैन व्रत प्रारंभ, होलाष्टक B
13	८	चं	२३	२७	मृ	२५	१३	ध्रु	९	५२	मि. १३।५५	भद्रा १२।२९ तक, शत. में शुक्र प्र. २७।१४, श्री दुर्गाष्टमी,
14	९	मं	२१	२०	आ	२३	५१	आ	७ २८	०२ ०२	मिथुन	मीन में सूर्य प्र. ८।५४, संक्रांति मु. १५, अश्वि. मेष में C
15	१०	बु	१९	१३	पुन	२२	२७	प्री	२५	१५	क. १६।४७	भद्रा ३०।१० से, प्लूटो वक्री १७।२० E एका. व्रत सबका
16	११	गु	१७	०७	पु	२१	०५	आ	२२	२४	कर्क	भद्रा १७।०७ तक, भरणी ३ में शनि प्र. २४।५७, आमला E
17	१२	शु	१५	०५	श्ले	१९	४७	सु	१९	३६	सिं. १९।४७	उ.भा. में सूर्य प्र. १७।१४, प्रदोष व्रत, ईल-उल-जुहा (बकरीद)
18	१३	श	१३	११	म	१८	३९	धृ	१६	५७	सिंह	D २६।१८, सौर चैत्र मासारंभ, मीन खर मास प्रा.
19	१४	र	११	३३	पूफा	१७	४८	शू	१४	३०	क. २३।३७	भद्रा ११।३३ से २२।५३ तक, चन्द्र पू., होलिकादहन, F
20	१५	चं	१०	१३	उफा	१७	१७	गं	१२	२१	कन्या	सायन मेष में सूर्य प्र. १३।०५, (धूलण्डी) पूर्णिमा

चैत्र कृष्ण पक्ष सं. २०५६ (२१ मार्च से ४ अप्रैल)

मार्च	तिथि	वार	घण्टा	मिनट	नक्षत्र	घण्टा	मिनट	योग	घण्टा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्रवेश
21	१	मं	९	२३	ह	१७	१४	वृ	१०	३१	तु. २९।१६	बसन्तोत्सव, राष्ट्रीय चैत्र मासारंभ शाक: १९२२ प्रा.
22	२	बु	०	३	चि	१७	४६	ध्रु	९	०९	तुला	भद्रा २१।११ से, भरणी १ में गुरु प्रवेश २९।४५, भाई २,
23	३	गु	९	२०	स्वा	१८	५४	व्या	८	१६	तुला	भद्रा ९।२० तक, कृष्ण गणेश ४ व्रत, कल्पादि तिथि
24	४	शु	१०	१९	वि	२०	०२	हर्ष	७	५४	वृ. १४।१२	पू.भा. में शुक्र प्र. २२।१५ A में केतु प्र. २६।००, एकनाथ ६
25	५	श	११	५६	अनु	२३	०४	वज्र	८	०२	वृश्चिक	रंग पंचमी, श्री जयंती B दशामाता व्रत
26	६	र	१४	०२	ज्ये	२५	५५	सि	८	३७	ध. २५।५५	भद्रा १४।०२ से २७।१७ तक, पुष्य १ में राहु उ.षा. ३ A
27	७	चं	१६	३२	मू	२८	५५	व्य	९	२५	धनु	शीतला सप्तमी, शीतला पूजन, व्यतिपात पुष्य
28	८	मं	१९	१२	पूषा	-	-	व	१०	२५	धनु	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, शीतलाष्टमी, ऋषभ ज. (जैन))
29	९	बु	२१	३५	पूषा	७	५९	ध	११	२२	म. १४।४३	C पंचक प्रारंभ २५।५८ से
30	१०	गु	२३	३७	उषा	१०	४६	शि	१२	०५	मकर	भद्रा १०।४२ से २३।३७ तक, रे. में सूर्य प्र. २८।०५, B
31	११	शु	२५	०५	श्र	१३	०३	सि	१२	२३	कुं. २५।५८	पू.भा. में बुध प्र. २६।०४, पापमोचनी एका. व्रत सब., C
A1	१२	श	२५	४८	ध	१४	४३	सा	१२	१०	कुंभ	भरणी में मंगल प्रवेश २६।३४, मीन में शुक्र प्र. २४।३७
2	१३	र	२५	४४	शत	१५	३८	शुभ	११	२६	कुंभ	भद्रा २५।४४ से, प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व योग
3	१४	चं	२५	०१	पूभा	१५	०९	शु	१०	०४	मी. ९।५१	भद्रा १३।२९ तक, मास शिवरात्रि व्रत
4	३०	मं	२३	४१	उभा	१५	२६	ब	९ २९	०३ ८३	मीन	उ.भा. में शुक्र प्रवेश १७।२६, भौमवती अमा., मन्वादि

ग्रह-राशियों की तेजी मंदी-विचार

राशियों के पदार्थ

मेष—सोना, गेहूँ, जौ, कम्बल, पशमीना, दालें, मसूर और चावल। **वृष**—कपड़ा, सरसों, पुष्प, जौ, चावल, महिष, बैल, गेहूं और लघु धान्य। **मिथुन**—रुई, कपास, बिनौला, ज्वार, मकई, तोरिया, अलसी, मूंग और माष। **कर्क**—केला, घास, जायफल, दाल-चीनी, तम्बाकू, चाय, सोना, चांदी, जवाहरात। **सिंह**—गुड़, खांड, साठी, चावल, तैल, घी, मृगछाल, पटरस। **कन्या**—ज्वार, बाजरा, कुल्थी, रत्न, गेहूँ, अलसी, मूंग और माष। **तुला**—उड़द, गेहूँ, सरसों, नारियल, हरड़े, मटर, तोरिया, जौ। **वृश्चिक**—गुड़, खांड, नगर, पान, लोहा, चना, चौपाए, पीतल, ताँबा आदि धातुयें। **धनु**—रस, घोड़ा, लवण, बिन्न-वस्त्र, गुड़, रुई। **मकर**—कनीर, मजीठ, जिमीकन्द, सोना, चांदी, पीतल, तांबा, लोहा। **कुम्भ**—तैल, घी, पोस्त, जवाहरात, रंगदार वस्तुयें, सोना, चांदी, ज्वार। **मीन**—सीप, मोती, पंसारियों की वस्तुयें।

ग्रहों के पदार्थ

सूर्य—तुष्य धान्य, बीज, गेहूं, गुड़, शक्कर, खांड़, ऊनी वस्त्र, सोना, तांबा, सुगन्धित वस्तुयें, घी, तैल, नमक, रस। **चन्द्रमा**—चावल, मीठे रस, फल, फूल, जलोदर वस्तुयें, नमक, मोती, औषधियां, गेहूं, कांसी, दूध, दही। **मंगल**—गेहूं, चना, मूंग, गुड़, शक्कर, लघुधान्य, सोना, तांबा, पीतल, चौपाए। **बुध**—सरसों, तोरिया, घी, बिनौला, मक्की, ज्वार, बाजरा, दाल, लघुधान्य, सब्ज, रंग की वस्तुयें, रुई। **गुरू**—मीठे रस, सुगन्धित पदार्थ, पारा, नमक, चाय, कपड़ा, पीले, रंग की वस्तुयें, घी, गेहूँ, चावल, घोड़ा। **शुक्र**—रुई, कपास, कपड़ा, चांदी, लघु धान्य और भोग सामग्री, खांड, चावल और सफेद रंग की वस्तुयें। **शनि**—कटु वस्तुयें, मिर्च काली, माष, चना, मटर, लोहा, रंग सीमा, तोरिया, अलसी, कंगनी, कोयला, काले, रंग की वस्तुयें, तिल, तैल मूंगफली और नशीली वस्तुयें आदि।

ग्रहों-राशियों से मंदा-तेजी जानने का प्रकार

जब कोई राशि क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो दूषित हो या उसको क्रूर ग्रह देखते हों अथवा वहां पड़े हों या वह राशि क्रूर ग्रहों की कर्तरी में हो तो उस राशि जन्य पदार्थों की तेजी होती है और राशि शुभ ग्रहों से युक्त, दृष्ट हो उसके पदार्थों का मन्दा होता है। इसी प्रकार जो ग्रह अशुभ ग्रहों से पीड़ित अथवा दृष्ट या युक्त हो तो उन ग्रहों के पदार्थों की तेजी होती है और जो ग्रह अशुभ ग्रहों से पीड़ित अथवा दृष्ट या युक्त ग्रहों के पदार्थों की तेजी होती है और जो ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हों उनके पदार्थों का मंदा होता है। जिस वस्तु की राशि से गुरु ४, १०, २, ११, ७, ९, ५ इतनी राशि पर हो तो उस वस्तु की मंदी करता है और १, ३, ४, ६, ७, ९, १२ इन स्थानों पर बुध हो तो इस वस्तु की तेजी करता है। ऐसे ही २, ११, १०, ५, ८ स्थानों पर शुक्र सर्वदा मंदा करता हैं। मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य, और क्षीण चंद्र यह ग्रह ३, ६, १०, ११ स्थानों पर मंदा और १, २, ४, ५, ७, ८, ९ स्थानों पर होने से तेजी हो।

तेजी-मन्दी जानने के सिद्धान्त

(१) यदि रविवार को तेजी या मन्दी हो तो सोमवार को मन्दी अथवा तेजी आ जाती है। (२) सोमवार को एकदम मन्दी के आने पर मंगलवार को विचार से सौदा करना चाहिए। (३) सोमवार की मन्दी के बाद मंगलवार को तेजी अवश्य होती है अथवा सोमवार को तेजी हो तो मंगलवार को मन्दी अवश्य होगी। (४) मंगलवार को आई मन्दी बुधवार को १२ बजे तक चलती है इसी प्रकार मंगलवार की तेजी बुधवार १२ बजे हो।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान पर (जन.१९९९ से अप्रैल सन् २००० ई. तक)

परिलेखकर्ता व संग्रहकर्ता -- अखिलेश कुमार जैन पोरसा वाले S/o पी.सी.जैन पोरसा वाले C/o लाइट मशीनरी, चम्बल कॉलोनी, ठाटीपुर, ग्वालियर (म. प्र.)-४७४०११ एस.टी.डी.-०७५१ फोन : पी.पी.-३४३२८३, ३१०४५२, ३४३३९० भारन्ती कम्प्यूटर

नोट: व्यापार में लाभ-हानि की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

जनवरी-१९९९

ता. १ से २७ जनवरी तक फली तेल २५०-८५० की जोरदार मंदी तथा सरसों, अलसी, अरण्ड Castor, सोयाबीन, सूरजमुखी तेलों इत्यादि में जोरदार मंदी चल सकती है। तो तिल, जीरा ४०५, केशर १५००-२५००, उड़द, मूँग १५०, तिल ३६०, चीनी ६३६ की तेजी मगर अरहर, बिनौला तेल में जोरदार मंदी आवेगी। (२७-०-१८) ता. २-१ से १५-१ तक चना, अरहर, सरसों, बिनौला में अच्छी तेजी आवे तो ११ या २१ जनवरी से ता. ३-२ के मध्य सरसों तेल २५०, फली तेल ३६० की जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। फिर बाद में तेजी आवेगी। ता. २५ १२-१९९८ से ७-२ तक रिलाइंस, टिस्को, S.B.I., I.T.C.-I.M.I., शेयर्स Markets में जोरदार तेजी आ सकती है।

फरवरी-१९९९

ता. २ से ९ फरवरी तक फली तेल ९९-१५० मंदी, सरसों ७० की मंदी तो ७ से १५ फरवरी तक अलसी, फली तेल, सोयाबीन में तेजी का उछाला आवे तो १५ से २० तक तेलों में मंदी तो २० फरवरी से १ मार्च ९९ तक तेल, तिलहन, बिनौला में तेजी आवेगी। २ से १५ फरवरी तक मटर २०५, मूंग ९९, अरहर २४३, ग्वार ९२, अनारदाना १६०० की जोरदार तेजी साथ में जीरा, राजमा में तेजी आवेगी। २५ दिसम्बर १९९८ से २५ फरवरी तक सोंठ ५००-११९९ धमाकेदार मंदी आवेगी। ५ से १८ फरवरी तक बड़ी इलायची ७०२, तिल तेल १५२, मूंग १२०, चना ९०, अरहर ७४, गुवार ९७, लाल मिर्च ५०६ जोरदार तेजी आ सकती है। ४ फरवरी को सूर्य-बुध की Superior Conjuction सुपीरियर युति होने से ३ से ११ फरवरी तक बिनौला तेल, सरसों, मूंगफली तेल Ground Nut Oil में अच्छी तेजी आवे तो ११ से १८ फरवरी तक तेलों में जोरदार मंदी का धमाका आवे तो १९ फरवरी से ९ मार्च तक अचानक तेजी आकर २० मार्च तक मंदी आवेगी। २० मार्च से ५ अप्रैल तक जोरदार तेजी चल सकती है।

मार्च-१९९९

ता. २५ से ३१ मार्च तक मसूर ६०-१२०, केशर २००० की तेजी तथा अरहर ६३, मोंठ ९०, उडद २५, बाजरा २५, सोंठ ६०१, हल्दी ६३, गेहूँ, छुआरे ५०, सोना ७२ की जोरदार तेजी आ सकती है। ११ से २५ मार्च तक अरहर ९३, मसूर २०५, उडद में मंदी, जीरा, ग्वार, सुतली ५०, काबली चना ७५, खाद्य तेल २०५ की जोरदार मंदी, मगर लाल मिर्च, सौंठ, काली मिर्च, बड़ी इलायची २०५, चाँदी ५०६ की तेजी, सरसों तेल २५०, चना, सोयाबीन तेल २७० की मंदी साथ में अरहर, चना, मसूर, मटर, तेबड़ी में मंदी आ सकती है। २३ मार्च से ५ अप्रैल तक अलसी, गुड़ मंदी तो मसूर १५०, मटर ७७, मूंग ४५, चीनी ४५, अरहर ६३, सोना २५० शेयर्स की जोरदार तेजी मगर फली तेल, बिनौला, सरसों, काबली चना २०५ की जोरदार मंदी बन सकती है। ५ से १५ अप्रैल तक उड़द, मूँग, अरहर, लौंग, दाल चीनी ७, हल्दी १५०, चना ३८, अजवायन में तेजी, इसके साथ फली २२५, सरसों तेल ११० तेजी, इसके अलावा काली मिर्च, जीरा, धनिया, सौंठ, डालडा में अच्छी तेजी आ सकती है। १९ मार्च की वक्री बुध की सूर्य-बुध की Inferjor-Conjuction युति होने से फली तेल, सोयाबीन, सरसों, चाँदी में ७ दिन पहले से ५ दिन बाद तक, जोरदार मंदी आवे तो आगे तेजी आयेगी। १५ मार्च से उड़द, मसूर, चना में तेजी आ सकती है। २० मार्च से १८ अप्रैल तक चाँदी, सोना में अच्छी तेजी आ सकती है। २२ मार्च से २० अप्रैल तक गुरु अस्त होने से चाँदी+तेलों में अच्छी तेजी आ सकती हैं।

अप्रैल-१९९९

ता. ९ अप्रैल से १२ मई तक शनि अस्त से तेजी की आशा है। २५ मार्च से ११ अप्रैल तक सरसों ९९, काली मिर्च, धनिया, ग्वार, मूँग ८७, अरहर ९२, हल्दी १५०, बिनौला तेल ११० की जोरदार तेजी आ सकती है। ११ से १८ अप्रैल तक तेलों में मंदी तो १८ से २५ अप्रैल तक तेलों में तेजी तो २५ से ३० अप्रैल तक तेलों में मंदी आवेगी। ता. १५ से ३० तक मसूर १७०, मटर, चना में मंदी आवेगी। २८ मार्च से २७ अप्रैल तक तेलों, मूँग-मोंठ, उड़द ७०, काली मिर्च ८० मंदी। बड़ी इलायची, लालमिर्च, अरहर ७०, तिल २५० की। भड़कती तेजी होकर मंदी आवेगी। २० अप्रैल से ५ मई तक चाँदी में जोरदार मंदी आवेगी। २० अप्रैल से ११ मई तक पोस्तदाना, किसमिस, जीरा ४०५, खोपरा गोला २५०, सोना आदि में जबरदस्त मंदी चलने की आशा है। १५ दिन या २७ दिन में अच्छी तेजी आवे तो २७ से ६५% माल बेचकर नफा PROFIT लेना उत्तम रहता है। २४ अप्रैल को सूर्य से मंगल का प्रतियोग तथा सूर्य-शनि युति होने से १५-२० दिन पूर्व से १५ दिन बाद तक सरसों, अरहर में भंयकर तेजी एक बार आ सकती है। अतः शेयर्स A.C.C. रिलाइंस, ट्रिस्को तथा दालों, लाल मिर्च, जीरा, बड़ी इलायची में घटबढ़ से एक बार अच्छी तेजी आ सकती है। (२७-०-१८) २४ अप्रैल से १० मई तक, सरसों CASTOR, बिनौला तेल में अच्छी तेजी आवे तो आगे मंदी आवेगी। १९ मार्च से ५ जून तक मंगल वक्री रहेगा। कई बाजारों में तूफानी बधघट चलने की आशा है। तिल, चाँदी, खोपरा तेल COCONUT OIL, सरसों, जीरा, मिर्च लाल आदि में एक बार भंयकर तेजी होकर बाद में तेल सरसों, मिर्च में जोरदार मंदी आवेगी। तेल+अरहर+मटर आदि में एक महीने पहले से १ महीने बाद तक सरसों, अजवायन, पोस्तदाना, मैथी, जीरा में भंयकर तेजी हो सकती है। फिर बाजार जिधर चले वैसा व्यापार करें। २०-२५ अप्रैल के आसपास रिलायंस, टिस्को A.C.C. LML शेयर्स नीचे LOIN या ऊँचे होने का समय है। नीचे टच हो तो आगे तेजी आयेगी। २०-२५ अप्रैल से सरसों, सींगदाना तेल में इकतरफा लाइन चल सकती है।

मई-१९९९

ता. ५ से १८ मई तक तिल तेल २५०, मूँग दाल ३६०, उड़द २५०, मोंठ १५०, मटर ७४, लाल मिर्च ३०६, चाँदी २१५ की भड़कती तेजी आ सकती है। साथ में जौ ३०, ज्वार २८ तेजी आ सकती है। ५ मई से २५ तक सरसों, सोयाबीन, रुई में मंदी आ सकती है। २० से ३० मई तक हल्दी ९९, गेहूँ ४५ तेज, अनारदाना ३०२, ग्वार ४५, मैथी, बाजरा तेजी, मगर मसूर ७०, अरहर, चीनी, सूत आदि मंदी का धमाका हो सकता है। २५ मई से २ जून तक सरसों, सोयाबीन में मंदी आ सकती है। बाजार रुख TREND देखकर व्यापार करें।

जून-१९९९

ता. १ से २१ जून तक सरसों, अरहर, ज्वार, सोयाबीन ७०, जौ ७०, ग्वार ४५, हल्दी १५०-२०५ की अच्छी तेजी आ सकती है। साथ में चना में अच्छी तेजी, हल्दी, मैथी, सौंफ में तेजी आवेगी। २ जून से ५

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई तक बड़ी इलायची, सोंठ, अमचूर, हल्दी, अनारदाना, ग्वार में तेजी आ सकती है। २१ से २७ जून तक तेलों में तेजी आ सकती है। १५ मई से २१ जून तक, चाँदी-सोना में जोरदार मंदी आ सकती है।

जुलाई-१९९९

ता. २ से २० जुलाई तक सौंफ ५००, पोस्तदाना, मोंठ, बड़ी इलायची, गेहूँ, राजमा २०५, मसूर, अरहर, सोयाबीन, बारदाना, सरसों ६५ में अच्छी तेजी चलने की आशा है। इसके जीरा, बड़ी इलायची, ज्वार, मटर ७०१, मोम, पीतल में भयंकर तेजी आवेगी। २५ जुलाई से १५ अगस्त तक ग्वार ७०, जौ, गेहूँ, जीरा में विशेष तेजी आवे, सरसों, बिनौला, तेल, राजमा १००, तिल तेल में १५० तेजी तो पिपरमेन्ट केडियम में मंदी आवेगी। २६ जुलाई को सूर्य-बुध INFERIOR CONJUCTION युति होने से चना, सरसों में मंदी का झटका आकर बाद में अच्छी तेजी आ सकती है।

अगस्त-१९९९

ता. १ से १५ अगस्त तक गेहूँ २०, मसूर ७५-१५०, उड़द २५, जौ ६१ की तेजी, चना ३६, अरहर १९, सूरजमुखी १२९, लाल मिर्च २५० की तेजी, केसर १००० तेज, साथ में गुड़ में तेजी, मगर हल्दी ९९, पिपरमेन्ट, राजमा २०५, मूँग १२७, तिल तेल में २५० की जोरदार मन्दी का झटका लगेगा। ५ से २५ अगस्त गुवार, चावल, ताँबा में मंदी आवेगी। ११ से २० अगस्त तक सरसों, फली तेल, सोयाबीन, अलसी में मंदी आवेगी। ५ से ३० अगस्त के मध्य पोस्ता दाना, लौंग, छोटी इलायची, छुआरे में तेजी आवेगी। पानी वर्षा हो सकती है। २० से ३० अगस्त तक चना ७०, सरसों ७०, उड़द, चांदी अमचूर, बड़ी इलायची, मक्का, गेहूँ १५, चीनी १२६७ जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। ११ अगस्त को सूर्य ग्रहण विदेश में होने से २ जुलाई से २२ अगस्त तक अरहर, मटर, चना में अच्छी तेजी आ सकती है। २६ अगस्त गुरुवार रक्षाबन्धन-श्रावण पूर्णिमा है। ३० जुलाई से १ सितम्बर तक शुक्र ग्रह वक्री रहने से शेयर मार्किट में तूफानी लाइन चलने की आशा है। शायद तेजी की आशा है। २४ अगस्त को गुरु ग्रह वक्री तथा २९ अगस्त को शनि ग्रह वक्री होगा। अतः लालमिर्च, सोयाबीन, सरसों, बिनौला तेल, अरहर, अमचूर, बड़ी इलायची आदि में घटबढ़ से अच्छी तेजी आ सकती है। फिर भी बाजार रुख देखकर व्यापार करें। चाँदी, सोना में अत्यन्त भारी तेजी-मंदी, घटाबढ़ी चलने की आशा है।

सितम्बर-१९९९

ता. १९ से २१ सितम्बर तक तेल, बिनौला १२०, सरसों तेल ९९, की तेजी तथा गेहूँ, अरहर, चीनी ७०, छोटी इलायची, पोस्तदाना, जीरा, हल्दी में तेजी आवेगी। मगर ज्वार १५०, लाल मिर्च A.C.C. शेयर में मंदी आवेगी। २ से १८ सितम्बर के मध्य मूँग, मोठ, उड़द, चना, चाँदी ६५, चीनी में मंदी आवेगी। २० से २९ सितम्बर तक तेलों में जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है।

अक्टूबर-१९९९

ता. १ से १५ अक्टूबर तक लाल मिर्च, अरहर ७०, मूंग, उड़द १७०, पिपरमेन्ट में मंदी; बड़ी इलायची ७००, महुआ तेल ७०, सोयाबीन १५० की जोरदार मंदी आ सकती है। मगर चना, मक्का, जौ में तेजी आवेगी। २५ अक्टूबर से २ नवम्बर तक फली तेल, सरसों में तेजी आवेगी। हल्दी में अस्थाई तेजी का उछाल आ सकता है। १५ अक्टूबर से ५ नवम्बर के मध्य जीरा ५०२, पिपरमेन्ट, मसूर, गेहूँ, साइट्रिक एसिड, किसमिस में तेजी आ सकती है। पानी वर्षा हो सकती है। उड़द, राजमा, जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। (१७-१८) ५ से २५ अक्टूबर तक मूंगफली, सरसों सोयाबीन में मंदी का धमाका हो सकता है। २५ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक तेलों में तेजी आ सकती है।

नवम्बर-१९९९

ता. १ से १९ नवम्बर तक उड़द, काबली चना, काली मिर्च, छुआरे, बड़ी इलायची मंदी, सरसों तेल, सोयाबीन में धमाके की मंदी, मगर किशमिश, चीनी ६५, देशी घी ७५ प्रति टीन की अच्छी तेजी आ सकती है। ७ से १२ नवम्बर तक खाद्य तेल, फली तेल में तेजी तो बाद में मंदी आवेगी। ५ से २५ नवम्बर तक जौ, गेहूँ २०, अजवायन ९९९, सौंफ५००, जीरा, लाल मिर्च, खोपरा गोला COCONUT, मसूर, बारदाना आदि में अच्छी जबरदस्त तेजी आ सकती है। २२ से ३० नवम्बर तक फली तेल, बिनौला, सरसों, किशमिश में जोरदार मंदी बन सकती है। ६ नवम्बर को सूर्य-शनि प्रतिभोग होने से शेयर मार्किट की इकतरफा तेजी-मंदी की लाइन एक डेढ़ महीने में चल सकती है। १५ नवम्बर को सूर्य, बुध की INFERIOR इनफेरियर होने से १६ नवम्बर से ५ दिसम्बर तक बिनौला तेल, सरसों में ७०-१०० की, अरहर, चना में तेजी आ सकती है।

दिसम्बर-१९९९

ता. १ से १४ दिसम्बर तक सरसों ७०, फली तेल १५० की मंदी आवेगी, पानी वर्षा हो सकती है। मगर गुड़, चीनी, गेहूँ ४५, मूँग ७०, मसूर ७०, छोटी इलायची, जीरा, खोपरा, गोला में तेजी तो बाद में धनिया, मिर्च, काबली चना में मंदी आवेगी। १५ से २० दिसम्बर तक तेलों में अस्थाई तेजी होकर फिर मंदी, २० से २७ दिसम्बर तक तेलों में मंदी आवेगी। १५ से ३० दिसम्बर तक छोटी इलायची, अलसी, तेल ७२, चीनी ४५, सुपारी में तेजी आवेगी। साथ में जीरा, गुवार ७०, फली तेल २५० की मंदी, चाँदी ३६० की मंदी, राजमां, धनिया, किशमिश, सौंफ ३०६, काली मिर्च, सोंठ में जोरदार मंदी आ सकती है।

जनवरी-२०००

ता. २ से १६ जनवरी तक तिल, तेल २५० की जोरदार तेजी; इसके अलावा बड़ी इलायची, गेहूँ, मूगँ, राजमां, बिनौला तेल २५०, जौ, मैदा, तेल गोला ४०५ की जोरदार तेजी आ सकती है। २७ दिसम्बर से २७ जनवरी तक मटर १२७, जौ, छोटी इलायची ३० की जोरदार तेजी आ सकती है। १६ से २९ जनवरी तक तेलों में तथा सौंफ, धनिया, अजवायन, लाल मिर्च ७०० जोरदार मंदी का धमाका हो सकता है। १६ जनवरी को सूर्य-बुध SUPERIOR-CONJUCTION युति होने से ११ जन. से ८ फर. तक, तेलों में तेजी आ सकती है। तो १५ फरवरी तक मंदी आवेगी। १७ से २५ फरवरी तक सरसों, सोयाबीन जोरदार मंदी आवे तो २७ फरवरी से ५ मार्च तक तेजी आवेगी।

फरवरी-२०००

ता. २ से १५ फरवरी तक गेहूँ, मसूर ५५, जौ, मटर, काबुली चना, अरण्डी तेलों में मन्दी, सोंठ ७०२, खोपरा तेल, सोंठ ७०० की जोरदार मन्दी मगर चीनी, मक्का, मूंग, बाजरा, सुपारी, किशमिश, इमली आदि में अच्छी तेजी आवेगी।

मार्च-२०००

ता. २ से ३० मार्च तक गुवार ७०, राजमा, काली मिर्च, गेहूँ, लाल मिर्च ५०२, किशमिश में अच्छी तेजी आ सकती है। २० मार्च से ७ अप्रैल तक चाँदी २५०, सरसों ११-१२५, गुण ७०, हल्दी, चना, मसूर आदि में अच्छी तेजी आ सकती है। १ मार्च को सूर्य-बुध की INFERIOR CONJUCTION होने से सरसों, सौदाना, तेलों व दालों में १०-१५ दिन में भयंकर मन्दी होकर फिर आगे तेल, दाल, गुड़ में अच्छी तेजी चलने की आशा है।

अप्रैल-२०००

ता. १५ मार्च से २७ अप्रैल तक गुवार ६०-१११ की भड़कती तेजी आ सकती है। २ से १५ अप्रैल तक गेहूँ १२७, काली मिर्च ७०२, जौ, चना, मसूर, खोपरा, गोला में अच्छी तेजी आ सकती है। २७ मार्च से १५ अप्रैल तक बिनौला तेल १५०, मूंगफली तेल २६३, चीनी ६५ की अच्छी तेजी आ सकती है। ५ से २३ अप्रैल तक मोठ, गुड़ ७०, पीतल, जस्ता, खोपरा, गोला COCONUT, मक्का, सौंफ, बड़ी इलायची ७०२ की अच्छी तेजी आ सकती है। ११ से ३० अप्रैल तक मटर, गुवार, बारदाना में अच्छी तेजी आ सकती है।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् १९९९ सार संक्षिप्त (OIL SEEDS)

सन् १९९७ के वर्ष में आर्यभट्ट पद्धति से २७-१२-१९९७ तक सरसों ११०० वाली १६०० के नये भावों का टच होने का अनुमान था। २३ वर्ष बाद मंगलवार तेजी आती देखी गई है। सन् १९७४ के बाद १९९७-९८ में तेजी आनी थी पर तेजी चली २०-१०-९७ से १५ जुलाई ९८ तक, सरसों ११०० वाली १५-७-९८ को, १९०१-२००० के नये टोप भाव बने। ये ऊँचे भाव आर्यभट्ट पद्धति से ६ महीने विलम्ब से बने। पुस्तक व्यापारिक दिग्दर्शन सन् ९८ का पेज १ से ११ व पेज ६०-६१ १५२ से १५८ पेज पढ़ें। अथवा पुस्तक ९६ का पेज ५ से ६ तक, सन् ९६ से २००१ तक क्या-क्या भाव होने का अनुमान पढ़ें। सरसों सन् ९९ में २००० वाली घटकर ९९९ के नीचे भाव हो सकते हैं। सन् २०००-२००१ के बीच कभी ११०० वाली सरसों १८००-२१०९ के नये भाव हो सकते हैं। अब सन् ९९ में सावधानी से व्यापार करें। २५ मार्च ९९ से १८ अप्रैल तक, इकतरफा तेजी अथवा १८ अप्रैल ९९ से १५-२० दिन लगातार इकतरफा चल सकती है। १८-६-९९ से १५-३६ दिन में जोरदार तेजी हो सकती है।

सरसों ९ मार्च ९८ को १२५० के करीब भाव थे। १५ जुलाई ९८ को १९०१-२००१ के करीब भाव टच हो चुके हैं। यानी ४ महीने में सरसों ६५० की तेजी आना एक आश्चर्य है। वैसे १०-११ वर्षों में तेजी के वर्ष में मार्च के महीने से दिसम्बर के महीने तक २५०-३९९ की तेजी आने में ९-१० महीने का समय लगता था। पर सन् ९८ के वर्ष में ३०-३१ रुपये प्रति किलोग्राम वाला सरसों तैल ४७-५० साढ़े सैंतालीस के भाव हो गये। यानी ४ महीने में ड्योढ़े हो गए।

२१ जून ९५ को अरहर २१५० के टोप भाव थे वो घटते-घटते ४-७-९७ को १०३५ के भाव रह गए। जुलाई ९८ में १९००-२००० के बीच भाव चल रहे हैं। अब से ११-७-९९ के मध्य कभी भी २१००-२३५१ के भाव हो सकते हैं। चना २३-१२-९७ को १९५० का टॉप भाव होकर ९ जून ९८ को घटकर ९८२ के करीब भाव रह गए। १५-७-९८ को करीब १३२५ के भाव चल रहे हैं। एक बार १५००-१६०० होकर सन् ९९ के वर्ष में ९००-६६५ के भाव रह सकते हैं। रुई में भयंकर मंदी हो सकती है। लाल मिर्च, बड़ी इलाइची, जीरा में विशेष घटबढ़ी चल सकती है।

चांदी २१-११-८७ को ६५०० के टोप भाव थे फिर १३ मार्च ८९ को ५८७५ के भाव रह गए। ५-१२-८९ को ७२४४, १०-१२-९० को ६२४८, १९-१-९१ को ६९००, १७ जनवरी ९२ को चांदी ९४५० के नये टॉप भाव बने, बाद में घटकर २६ मार्च ९३ को ५४९२, ४ मई ९३ को ६४६०, ५-१०-९३ को ५८३५, २१-१-९४ को ६८१०, ४-३-९५ को चांदी भाव ६०००, ५ मई ९५ को ७४८०, ६ फरवरी ९६ को ८४८६, ३-१२-९६ को ६७५०, ४ मार्च ९७ को ७६५०, ९ जुलाई ९७ को ६१५० के नाचे भाव बने, बाद में बाजार बढ़े। ९-१०-९७ को ७४१०, ४-११-९७ को ६६९०, २९-१२-९७ को चाँदी ८३९०, ५ फरवरी ९८ को टोप भाव ९३५० तो कहीं ९५०० के सुनने में आए। २९ मई ९८ को घटकर ७४५० के भाव होकर १६ जुलाई १९९८ को ८००१ के भाव हो चुके हैं। चाँदी ८००१ वाली मंदी में नीचे ५९००-६६१० के भाव १२ सितम्बर ९९ तक हो सकते है और तेजी भी ९००-१२०० की आकर अर्थात चाँदी ८७००-८९०० होकर फिर नीचा भाव होने की आशा है। १२-९-९९ के २ महीने पूर्व से यहाँ तक मंदी चली तो मंदी में नीचे भाव यदि १२-९-९९ के नीचे भाव बनें तो आगे ३ या साढ़े तीन महीने तेजी चलेगी। अन्यथा मंदी चलेगी। चाँदी में जब ५००-७०० की बने खरीदें। २५०-५०६ की तेजी में बेचते भी चलें। बीच- बीच में तेजी चलने की आशा है दान पुण्य धर्म करते रहें जिससे व्यापार में लाभ होता रहे।

रिलाइंस इन्डस्ट्रीज शेयर भाव— (ये भाव औसत व स्थूल हैं) २ जनवरी ९५ को ३४२, १०-१-९५ को रिलाइंस २४०, २४ मार्च ९५ को २१३, २ मई ९५ को २३३, १९-५-९५ को २७८, २७-७-९५ को २९३, २३-११-९५ को २१८, २५ जनवरी १९९६ को १५५, ९-२-१९९६को २३४, १९-३-९६ को २०३, ३ मई ९६ को २५९ के भाव हुए। २७ मई ९६ को २३५, ९-७-९६ को १७४, २३-७-९६ को २३९, १९-८-९६ को १९५, ११-११-९६ को २०२, ४ दिसम्बर ९६ को १४९, २४ जनवरी १९९७ को २५१, ४ मार्च ९७ को ३११, ३१-३-९७ को २५६, २८-४-९७ को ३१७, २६ मई ९७ को २८८ रिलाईंस शेयर्स को नीचा भाव, १६ जून ९७ को ३७१, १८-७-९७ को ३४२, ११ अगस्त ९७ को ३८१, २९-८-९७ को ३२९, २४-९-९७ को ३३९ औसत भाव, १३-१०-१९९७ को ४२६, २८-१०-९७ को ३४१, बाद में बोनस मिलने से भाव घटे, १२--११-९७ को १६८, २४-११-९७ को १४८, २६-११-९७ को १६६, २७-११-९७ को १५८, १२ दिसम्बर ९७ को १५०, ५ जनवरी ९८ को रिलाइंस इन्डस्ट्रीज शेयर्स १७२, १४-१-९८ को १५४ २८-१-९८ को १४८, २-२-९८ को १५६, २७-२-९८ को १६७, २३-३-९८ को १८४, ३१-३-९८ को १७६, २१-४-९८ को २०२, २८- ४-९८ को १९७. बाद में घटकर १० जून ९८ को १४८, ३ जुलाई ९८ को १३८ के भाव हो गए है। १२-१२-९८ से, १९-९-९९ तक रिलाइंस शेयर १३८ वाला ३९९- ४६१ के भाव हो सकते हैं। A.C.C. १२००-१४०० वाला ३६००-४५०० के भाव हो सकते हैं। B.S.E. शेयर्स सूचकांक INDEX (जुलाई ९८ को ३४०० वाला-४७५० को CROSS पार कर्रे तो ५५००-६१०० सूचकांक INDEX) हो सकता है। भाव व सूचकांक के बारे में कोई जिम्मेदारी नहीं होगी ध्यान रहे कि बम्बई शेयर्स सूचकांक ४-१२-९६ को २५४५ के करीब, २० जून ९८ को २९५२ करीब नीचे टच हो चुका है। १२ सितम्बर ९४ को INDEX ४६३० के करीब था। ६-८-९७ को ४६०४ के करीब होकर तब से बाजार घटबढ़ से नीचे चल रहे हैं।

अनुमान— यदि २३ नवम्बर ९८ के आसपास रिलायंस इण्डस्ट्रीज A.C.C., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया सैंचुरी, L.M.L.व I.T.C. आदि शेयर्स SHARES भाव नीचे बने तो आगे डेढ़ या पौने ३ महीने में शेयर्स मार्केट में भयंकर तेजी आवेगी। यदि कहीं २३ से २५ नवम्बर १९९८ के आसपास भाव TOP बने तो आगे डेढ़ महीना मंदी समझना। अथवा ११ फरवरी ९९ या १५ मार्च ९९ तक शेयर्स मार्केट में तेजी हो तो ३० जून ९९ तक जोरदार मंदी आवेगी। ३ जुला. से १५ सितं. तक तेजी आवेगी। ये तेजी तभी आवेगी जब २० जून से ३ जुलाई तक बाजार में मन्दी चलकर ३-७-९९ तक नीचे भाव बने हों। मान लो कहीं ३ जुलाई ९९ के आसपास भाव ऊंचे हों तो ३-७-९९ से २ महीने मंदी आवेगी। बाजार रुख देखकर व्यापार करें।

व्यापारिक दिग्दर्शन वैज्ञानिक अनुसंधान पर (जन.-९९ से जून-२०००) १८ महीने की तेजी-मंदी पुस्तक

परिलेखकर्ता : श्रीमती चम्पादेवी जैन पत्नी पी.सी. जैन पोरसा वाले
पुस्तक मूल्य : ११०/-, रियायती मूल्य: ९०/-, डाक खर्च सहित।

सन् ९९ में तैल, सरसों, अलसी, अरण्डी, मूंगफली व अरहर, चना, मस्टर, मटर आदि में भयंकर घटाबढ़ी से एक बार टॉप भाव होकर फिर मन्दी चलने की आशा है। इसके अलावा चांदी, सोना, किराना मार्केट में तेजी-मंदी कुछ चांस पुस्तक में हैं। तेजी-मंदी निकालने के तरीके भी दिये हैं। रात में क्या-क्या स्वप्न देखने से किस वस्तु में तेजी आती है। तेजी-मंदी निकालने के कई-कई तरीके दिये हैं। पुस्तक मंगाकर पढ़ें। बी.पी.पी. नहीं होती है।

पता:-१. श्रीमती चम्पा देवी जैन पत्नी पी.सी. जैन पोरसा वाले द्वारा १०३, न्यू शिवाजी नगर, भारन्ती कम्प्यूटर के पास, गांधी रोड, ठाटीपुर-ग्वालियर (म.प्र.) पिन-४७४०११
२. अखिलेश कुमार जैन पोरसा वाले द्वारा लाइट मशीनरी चम्बल कॉलोनी, ठाटीपुर-ग्वालियर (म.प्र.) पिन-४७४०११
३. अखिलेश कुमार जैन पोरसावाले द्वारा महेन्द्र कुमार सुखमाल जैन किराना स्टोर, राजेन्द्र रोड, मेहगांव, जिला भिण्ड (म.प्र.) पिन-४७७५५७ एस.टी.डी.-०७५२७ फोन : पी.पी. ५५२८१

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५१६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

संवत् विक्रम् २०५६ (सन् १९९९-२००० ई.) का सामूहिक व्यापार भविष्य

लेखक: ओंकार दैवज्ञ (व्यापार अनुसंधान केन्द्र, पो. हापुड़, (यू.पी.) फोन: ३१२२३८

विक्रमादित्य संवत् के आकाशी कौंसिल के चुनाव में कलियुग-प्रमाणम् ४३२०००, इसी के मध्य में कलियुग के ५१०० भोग्य कलि की गणित ज्योतिष के आधार से विक्रम संवत् २०५६ की आकाशी वार्षिक चुनाव में राष्ट्रपति नवग्रहों के मध्य देवताओं के गुरु बृहस्पति होंगे। मंत्री (प्रधान) व्यापार पति बुध होंगे। जब व्यापार पति बुध व्यापार का स्वामी प्रधान मंत्री बनते हैं तो व्यापार में या तो भारी तेजी या भारी मंदी करते हैं। वर्षेश लग्न में बुध, मीन राशि जो गुरु की राशि कहाती है और गुरु से बुध की शत्रुता है पर बुध गुरु से समत्वता रखता है। इस प्रकार के ग्रह के असर से व्यापार खूब फलेगा तथा भारी मंदी हो या भारी तेजी समत्व भाव में आने से जनता सुखी होगी। इस वर्ष में सस्येश शुक्र, धान्येश गुरु, मेघेश भौम, रसेश भास्कर देव, नीरसेश शुक्र, फलेश भौम, धनेश शुक्र, दुर्गेश भौम चुनाव में ९ ग्रहों में शुभ ग्रह के अधिकार ज्यादा होने से सरकारी नियंत्रण अच्छा रहेगा।

भैरव-भवानी संवाद की गोष्ठी की झलक पढ़ें

भैरव प्रश्न— सुनो भवानी खड़ा है भैरव, माता तुम्हारे द्वार।
संवत् छप्पन का कहो-माता शुभ शुभ हाल॥

भवान्युत्तर— सुन भैरव मेरे लाडले-क्या भविष्य सुनाऊं तोय।
ग्रह चाल विचार के उत्तम संवत् होय॥
गुरु राजा छप्पन वर्ष में, धर्म हो यत्र-तत्र हर्षाय।
मंत्री पद बुध को मिला-करे व्यापार में न्याय॥
विक्रम संवत् छप्पन में अधिक सौम्य ग्रह अधिकार।
शुभ कर्म-धर्म चहुँ ओर हों घर-घर मंगलाचार॥
पृथ्वी पति फल पति हुए और भौम ही बने मेघेश।
जग संसारिक चक में दुष्ट फल करते रहें विशेष॥
बस गई रोहिणी सिन्धु, तट-विश्वा अष्टम अंक।
वैभव सब को ही होवेगा, क्या राजा क्या रंक॥
समय निवास रजक घर स्तम्भ लगे हैं दोय।
अन्न जल की घटबढ़ रहे मंदी-तेजी दोनों होय॥

भैरव से भवानी उत्तर के दोहों से सिद्ध होता है कि वर्ष २०५६ की आकाशी कौंसिल में शुभ ग्रहों का ज्यादा अधिकार वर्ष को उत्तम बनायेगा। धार्मिक भावनाएं जागृत होंगी और सरकार भी हीन भावना को त्याग कर दृढ़ता से शासन करेगी। गुरु राजा, मंत्री बुध होने से व्यापार में दखल कोई करेगा या भारत के व्यापार में कोई गिरावट की कोशिश करेगा तो भारत सरकार सहन नहीं करेगी। वर्षात छिन्न-भिन्न होगी। व्यापारी धन लाभ प्राप्त करेगा।

चैत्र शुक्ल सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

वर्ष सं. २०५६ विक्रम ता. १८ मार्च सन् १९९९ को गुरुवार के दिन प्रारंभ होकर ता. ४ अप्रैल सन् २००० को समाप्त होगा। इस विक्रम का राष्ट्रपति गुरुदेव है। ये गुरुदेव चैत्र शुदि ५ की अर्द्ध रात्रि के बाद ता. २२ मार्च के लगते ही आकाशी मंडल में अस्त होने से पीले पदार्थों की तेजी को ब्रेक लगायेंगे परन्तु पूर्व तेजी आयेगी। क्योंकि गुरु अस्त होते समय मंगल के नवांश में रहेंगे। भौम गुरु दोनों आपस में मित्र माने जाते हैं और ये ही कारण है कि पीली तथा लाल वस्तुओं के भावों में एकता चलेगी। गुड़ के सट्टों में और सोम के सट्टे वायदे तथा हल्दी में भी मंदी आयेगी। इस पक्ष में भगवान् भास्कर बुध से आगे इन्फीरियर लाइन बनायेंगे। अत: गल्ले में लास्ट तेजी ही रहेगी। पुराना स्टाक निकालना चाहिये साथ ही चैत्र शुदी की सप्तमी तिथि क्षय बहुधा वस्तुओं मे तेजी कारक होती है। सोने में सुहागा जैसा योग वक्री कुंभ बुध चैत्र शुदि ९ को हर वस्तु में मंदी कारक पर इसी दिन बुध का उदय रात्रि के ५७ घड़ी अगले दिन उदय होने से पूर्व ही हो जायेंगे। इसलिये लोंग, इलायची, दालचीनी, जीरा स्टाक करना। अन्य चालू सट्टों के भावों में तथा रबड़ उद्योग के शेयरों में भी ध्यान वायदे सट्टों के भावों में रखिये कि जिन वस्तु में आज चैत्र शुदि १० शुक्रवार ता. २५ मार्च को पिछले मंगल के नीचे भाव कटें तो भारी मंदी एक ही सप्ताह में आयेगी पर नोट है कि ऊँचे भाव कटें तो तेजी जोरदार मार्च में आकर मार्केट उप्प हो जायेंगे। धातुओं में मंदी आने पर स्टाक करना न भूलें। एल्युमीनियम, पीतल फूट, रांगा, जस्ता, बोरी, बारदाना का स्टाक आगे लाभ देगा। इस महीने के बसना बदलते समय शृंगार की सुगन्धित वस्तु, रुई, कपास, खास तौर से इस माह में हनुमान जयन्ती पर स्टाक करके २ ही माह में लाभ होगा। पीपरमैंट, मैथाइल भी लेना चाहिये। इस माह में ता. २२ और २९ मार्च को नजराने गली फलेंगे।

वैशाख सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

बैशाख का महीना ता. १ अप्रैल १९९९ का आरंभ होकर ३० अप्रैल को समाप्त होगा। इस माह में ५ गुरु ५ शुक्रवार होंगे और इसी माह कृष्ण पक्ष में द्वितीया की वृद्धि और मार्गी बुध बैशाख वदी ३ रविवार में इन २ उपरोक्त संक्रमणों में विरोधाभास है। इसलिये बैशाख वदी ५ भौमवार को जिस वस्तु में गत शुक्र के ऊँचे भाव क्रॉस हो तो वही वायदा सट्टा एक दम तेजी पर जाकर ३ या ५ दिन में मोटी लाइन उसी ओर की चलेगी। चालू सीजन की वस्तु गेहूँ, जौ, चना, मटर, मसूर, अरहर, लाहा, सरसों, तोरिया समस्त रबी की वस्तुओं में मन्दी धीरे-धीरे आयेगी। इस वास्ते अभी स्टाक न करना। बैशाख वदी ७ को प्रात: दिन निकलने से २ घंटे बाद शुक्र वृष राशि में प्रवेश करने से धातु पदार्थ चाँदी, अन्य समस्त श्वेत रंग की धातुओं में तेजी का बोलबाला कट्टे, वायदे तैयारी मांग बढ़ने से २ माह में ऊँचे भाव बनेंगे सीधी तेजी नहीं आयेगी। क्योंकि बीच में बैशाख बदी ८ को शनि अस्त बदी ९ को शनि अस्त और इन्फीरियर लाइन विचित्र घटाबढ़ी करेंगे। काश ऊपर ग्रहों के संक्रमण पर बदी ८ शुक्र को गत मंगल के भाव नीचे के कटें तो तेजी को ब्रेक लग जायेगा। वैशाख शुदी में प्रतिपदा का क्षय ५ या ७ दिन में ही तेजी, ३ या ९ दिन में तेजी गत तेजी से दुगनी तक आ सकती है। खरीफ की तमाम वस्तुओं में तेजी आयेगी। इस माह में बुध ग्रह का असर ज्यादा होगा। मंत्री होने के कारण अच्छी लाइन निकलेगी। वैशाख शुदी ५ की रात्रि को जिसका असर शुदी ६ से उदय गुरु का होगा, आज पीली वस्तु सोना आदि पीली दालों में तेजी का बिगुल बजेगा। नोट— अगर इस ग्रह के पदार्पण से शुक्र मिति बैशाख शुदी ८ से लाइन नहीं चले तो इसी मंदी में खरीदी वस्तु आगे प्रथम जेठ में लाभ देगी। इस माह में बदी ८ और अमावस्या तथा शुदी में ५ को नजराने तेजी-मंदे फलेंगे।

प्र. जेठ सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

प्रथम जेठ का महीना ता. १ मई शनिवार को प्रारंभ होकर ता. ३० मई को समाप्त होगा। इस माह में ५ शनिवार व रविवार पड़ेंगे। जबरदस्त मीठे, चांदी, सोना, मैटीरियल, लौंग, इलायची तथा महीन मखमल, शृंगार के सामान, मेंहदी, रोली, मौली और समस्त साज-सज्जा के सामान, चावल बासमती, मोटे और सुनहरी चावलों में भी प्रथम जेठ बदी ३ सोमवार को मिथुन का शुक्र आते ही तेजी का बिगुल बजेगा। विशेष नोट है कि ऊपर जेठ वदी ३ व चौथ को मंगला चौथ के ११ बजकर १६ मिनट से चालू सौदे जैसे गुड़, लाहा, सरसों में अगर तेजी न चले तो जोरदार मंदी एक ही सप्ताह में आयेगी। बाद पलट होगी। मेथाइल, कपूर, तेल, संदल जरूर-जरूर ही लेकर ५ दिन में मोटा लाभ उठाना। शेयर के भावों में भी मंदी का वातावरण बनेगा। तेजी के रियक्शन आने पर बेचना, बोले पर चांदी हर मंदी में खरीदना। सोना भी मंगला चौथ पर लेना। जेठ बदी द्वादशी टूटी है इस वास्ते अब माल की आवक इस मौसम की तमाम वस्तुओं की भरमार होने से जोरदार मन्दी का एलान हम नहीं करते बल्कि ग्रह चाल की पोजीशनें कर रही है। ये ग्रहों की पोजीशन जहां मन्दी को कहती है वहां यह भी पेशीन गोई है कि बुधास्त पूर्व में बदी १४ को और दूसरे दिन शनिश्चरी मावस वृष की सूर्य संक्रान्ति मुहर्त १५ महर्घता की सूचक है। इसलिये चालू फसल की

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वस्तुओं का स्टाक भी करना चाहिये। क्योंकि यहां से १४ या ४१ दिन में धमाके की मन्दी लास्ट होगी। चीनी, चांदी व अन्य सूत श्वेत वस्तुओं प्रथम जेठ शुदी की चतुर्थी टूट जाना तेजी कारक है। एक विशेष चांस सरसों, तोरिया में जेठ शुदी ७ का पिछले भौमवार के नीचे भाव कटें तो मंदी होगी और ऊँचे भाव कटें तो तेजी। काश ऊंचे या नीचे भाव न कटें तो कोई भी लाइन न चलकर मार्केट घटबढ़ में रहेगा। ता. १८ व २१ के बाद २८ को मई में नजराने या ५० मंदी तो ७५ तेजी बायदे सट्टे चांदी में डालकर लाभ उठाना।

द्वि. जेठ सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

द्वितीय जेठ माह में सुपीरियर लाइन चलेगी। बुध सूर्य से आगे-आगे स्वतंत्र रूप से चलेंगे और वृष राशि से हटकर जेठ बदी ४ को अपनी ही राशि में चलकर जेठ बदी ६ को पश्चिम दिशा में उदय भी हो जायेंगे। इस ग्रह का असर समस्त मार्केटों में पड़ा करता है। क्योंकि बुध ज्योति-शास्त्र में ज्योति स्वरूप तमाम मार्केटों में असरदायक माना गया है। चूंकि व्यापार पति प्रधान ग्रह बुध माना गया है। जेठ बदी ६ शनिवार तक पूर्व की चालू लाइन ही चलेगी। क्योंकि छट शनिवार की रात दिन छिपने के बाद ३९-४० घड़ी पर पश्चिम में उदय पंचांङ्गों में है। इस वास्ते सोमवार आठे ता. ७ जून को अगर पिछले-गुरुवार के ऊँचे भाव कटें तो १२ या १४ दिवसीय तेजी ठसी वस्तु में आयेगी। काश नीचे के भाव ५१ पैसे से ज्यादा कटें तो जोरदार मंदी का पैगाम जानें। इसी द्वितीय जेठ में संक्रान्ति मिथुन की द्वि.ज्येष्ठ शुदी २ भौमवार के दिन शाम २२ घड़ी पर ४५ मुहूर्ती मन्दीकारक है पर साथ ही चन्द्रदर्शन जोरदार तेजी कारक है। पर अंतर क्या है कि मंगलवारी चन्द्रदर्शन सोना, चांदी, खनिज पदार्थ और कुछ चन्द्र महाराज शौभाग्य श्रृंगार से सम्बन्धित सभी वस्तु हाजिर की हों या बादे की हों एकसार असर होगा। इसके अलावा चालू फसल की खाद्य वस्तुओं में एकदम गिरावट आयेगी। सभी में एक नोट है कि गुरुवार ता. १७ जून को गत सोमवार के ऊँचे भाव कटें तो ठसी में भारी तेजी न कटें तो भारी मंदी अष्टमी सोमवार तक या नौमी भौमवार को हर वस्तु में नये ऊँचे या नीचे भाव बनकर मार्केट हर वस्तु शेयर, चांदी, सोना, सरसों, तिलहन के भावों में तथा गुड़, चाँदी के अलावा मैथल, चीनी में भी बे लाइन चलेगी। ता. १ व ४-१५ में नजराने लगाना। जेठ शुदी ९ भौमवार ता. २२ को आर्द्रा रवि के असर से सभी वस्तुओं में पूर्णिमा तक एकसार लाइन चलेगी। आगे सोमवती अमावस्या ता. २८ जून की है। यह लास्ट मन्दी खाद्यान्नों में करेगी। अब स्टाक करना भविष्य में लाभ देगा।

आषाढ़ सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

आषाढ़ माह में ५ भौमवार ५ ही बुधवार हैं और बुध ग्रह सुपीरियर गति से चलेंगे पर बुध महाराज वर्गोत्तम से आषाढ़ बदी ३ को निकल जायेंगे। तब बुध तो महत्व हीन हो जायेंगे। सभी पिछली लाइनों में आषाढ़ बदी ३ ता. २ जुलाई १९९९ तक ही १/४ तक रियक्शन आयेंगे पर ५ भौम इस माह में मंगल की अधिकृत वस्तुओं में तेजी चलेगी लेकिन खास ग्रह शुक्र सिंह राशि में ता. २ की रात्रि की पदार्पण करेंगे और स्ववर्गोत्तम में शुक्र पूरे माह भी नहीं आयेंगे। वर्गोत्तम का असर तो कहीं भादों में होगा क्योंकि श्री शुक्र देव श्रावण बदी २ को वक्री हो जायेंगे और पुनः कर्क में आ जायेंगे। शुक्र के वक्रत्व काल में शुक्र के अधिकार की वस्तु रुई, सूत, चांदी, मखमल, कपूर, मैथल ऑयल में एक दम झटका मंदी का आयेगा। मैटीरियल शुरू में तेज बाद मन्दी एकदम होगी तथा चीनी के भाव स्थिर रहेंगे। चालू बायदा आलू, गुड़, सरसों में शुरू माह से बदी ३ तक पूर्व लाइन चलकर बदी ४ से बदी अष्टमी भौमवार तक लाइन चलेगी। कृष्ण पक्ष की टूटी मिली खाद्यान्नों में मंदी करो या स्थिर भाव रहें पर नये भाव अगर न बनें तो इस पक्ष में मार्केट पड़ जायेंगे। मिर्च, अखरोट, काजू, काली मिर्च, बादाम का स्टाक करने से ३ या ५ माह में मंदी खत्म होकर तेजी का बिगुल बजेगा। कापर मंदी अरंडा सींगदाना तेजी पर जायेगा। स्वाती में भौम अष्टमी बदी में मंगलवार को ता. ६ जुलाई के शाम २१ घड़ी पर होने से कर्ब रेट बदलने शुरू होंगे। भौम का असर लाल रंग की वस्तुओं गुड़, मघ, तीक्ष्ण पदार्थों में पारा, मनशिल, मिश्री, तांबा, लाल रंग की धातुओं में और वस्तु शास्त्र शस्त्र, मूंगा में पड़ता है। अतः ता. ७ जुलाई नौमी बुधवार की लाइन ता. १० शनिवार जुलाई की आषाढ़ बदी १२ तक चलेगी। पिछली लाईन में आलू, गुड़ या तांबे बम्बई के सौदे में ता. ७ बुधवार को गत शनिवार के नीचे भाव कटें तो मन्दी जानना वर्ना विपरीत असर जानें क्योंकि ता. ११ जुला. रविवार आषाढ़ बदी १३ रविवार को कर्बरेट मुखतलिफ जिधर भी बनेंगे वही लाइन सोमवार बदी चौदस ता. १२ जुलाई से ता. १६ शुक्रवार आषाढ़ शुदी ४ चौथ के शाम तक चलेगी और चालू लाइन के नये भाव आलू, गुड़, सरसों, अरंडा में तथा अन्य बायदे के भावों में भी बनेंगे। धातु पदार्थ चांदी, सोना में तथा मैथल, पारा आदि में भी मन्दी चलेगी। काश पिछली तारीख के चालू चांस पर जरा भी यह देखें एक बजे तक कि मार्केट विपरीत हैं तो फौरन सौदा काट कर हल्ला करना न चूकें। ता. ११ व १७ जुलाई को अगले दिन की तेजी-मन्दी भी जरूर-जरूर डालें। ता. ११ जुलाई सोमवार को एकदम बुधास्त का असर समस्त वस्तुओं में होना शुरू होगा। यद्यपि बुध विशेष रूप से मूंगी, मूंग, ज्वार, मटर, अरहर, द्विदल माश, अन्न, घी, वनस्पति, हरे रंग की सारी वस्तु, स्नेह बीज, तेल निकालने के बीज, समस्त तीखी वस्तु, सुगन्ध, समस्त हरे रंग के कपड़ों का स्वामी बुध है। इन्हीं वस्तुओं में लाइन जो भी आज से चलेगी वही लाइन जब तक बुधास्त है चलती रहेगी और आलू, गुड़ अरंडा, सरसों, असली घी में भी ऊँचे भाव कटेंगे तो तेजी वर्ना मन्दी आषाढ़ शुदी १५ तक चलेगी। यह हमारा विशेष संकेत चांदी, सोना और फूट बर्तन हाजिर में भी है।

श्रावण सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में ५ गुरुवार हैं। श्रावण बदि २ ता. ३० जुलाई शुक्र को बक्री शुक्र २७ घड़ी शाम होने से शनिवार से एकदम लाइन पलट जायेगी तथा रेशमी वस्त्र, कम्बल, सूती वस्त्र, मणि, हीरा बने आभूषण, स्नेह-मिश्रित अन्न, चित्र विचित्र वस्तु, चांदी, जलज वस्तु, स्फटिक, त्रिफला, दाल चीली, चोब चीनी इन उपरोक्त वस्तुओं में खास तौर से मन्दी १५ दिन में आयेगी पर एक ही नोट ध्यान रखना अगर गत ३१ जुलाई को १२ व १४ मिनट तक मंदी न चल जिस वस्तु में तेजी चलेगी तो मंदी जड़ मूल से समाप्त होगी या ३१ जुलाई को पिछले बुध के पीछे के भाव ऊपर के कटेंगे तो तेजी बनेगी बर्ना ध्रुवमंडल का चक्र चांदी में विशेष चांस १८ से ४८ या ६८ रु. तक चलेगा। अन्य वस्तुओं में पूर्व के २५ दिनों में जितना मार्किट चला था उस से ३ गुना भी चल सकता है। तिलहन, गुड़ में मार्के स्थिर से रहेंगे। आलू में ता. ६ अगस्त नौमी शुक्रवार बदि पक्ष में जिधर भी लाइन चल रही थी वह ता. १० अगस्त तक चलेगी क्योंकि ता. ११अगस्त को श्रावण बदी अमावस्या को शुक्रास्त होते ही रुई, चांदी, तेल मूंगफली, सूरजमुखी, पीपरमेंट, आयल, मैथल, बिरोजा और दाल अरहर, चांदी व जेवरातों में मन्दी आयेगी। पर एक नोट जरूर है चालू बायदे सट्टे ता. ११ को पिछले सोमवार के ऊँचे भाव कटें तो तूफानी तेजी आयेगी। काश न कटे तो मंदी ता. १७ अगस्त के खुलते-खुलते आयेगी बाद सभी मार्केट आलू, गुड़, तेल, अरंडा, कौपर के भाव पड़ जायेंगे। ता. १७ अगस्त मंगल के दिन निकलने के ९ या १० घड़ी पर सूर्य-सिंह की निरयन सं. १५ मुहूर्ती महर्घता सूचक है। सूर्य विशेष रूप से मोती, मणि, सोना, तांबा, रेशम अस्त्रों का स्वामी, चर्म, तुष, धान्य, कशैली कड़वी वस्तु, शाशकीय सुद्रा और अग्नि उत्पन्न करने वाली वस्तु हर प्रकार के जहर, बीज, हर प्रकार के कोष, धान्य, सरसों। सभी लाल रंग के पदार्थों के साथ ही चिकने पदार्थ, रस, हर प्रकार की सुगन्ध के भी स्वामी भगवान भास्कर कहलाते हैं। इस वास्ते ऊपरी तमाम वस्तुओं में और चालू बादे सट्टों में तथा शेयरों में तेजी आज भौम आगे शुक्र को नये भाव बनकर भाव ठहर जायेंगे तथा बाद घट बढ़ मामूली रहेगी। खास तौर पर ता. २३ अगस्त को दिन छिपने से पहले वृश्चिक का भौम प्रवेश होगा और इस ग्रह का असर कल भौमवार को लाल रंग के फूल फल दीगर लाल वस्तु गुड़, मीठा, मघ, तीक्ष्ण पदार्थ, पारा, मनशिल, मिसरी, शीशा, तांबा, मूंगा तथा सट्टे बायदे में शुक्र के ऊँचे भाव कटेंगे। भारी तेजी शुरू के ४ दिन में बाद जब भौम भादों बदी ५ से भादों शुदि ७ शुक्रवार के करीब वर्गोत्तम में होंगे तब विशेष चाल आयेगी जहां नजराना तेजी-मंदी भी फलेगी। ता. २४ अगस्त को दिन निकलने के बाद १० घड़ी पर गुरु वक्री हो रहे हैं गुरु का असर हल्दी, जटा माशी, तगर, भौम, सभी पीले रंग के पदार्थ सोने, सैंधा नमक, बल्ली बेल से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं में पूर्व लाइनें पलट जायेंगी।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

भाद्रपद सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

भाद्रपद में ५ शुक्र ५ ही शनिवार हैं। इस माह में मिले जुले असर होंगे क्योंकि एक शुभ ग्रह एक पाप ग्रह है। जो भी वस्तु शुक्र को मंदी होगी वो ही वस्तु अगले दिन से उल्टी चलेगी क्योंकि भादों वदि २ को शनिवार के दिन मघायां सिंह बुध और अनुराधा पर भौम और रविवार को ता. २९ अगस्त को शनि महाराज मेष राशि में ही वक्री होंगे। भादों कृष्ण में १३ का टूटना मंदी कारक श्यौर है यहां की मंदी अखरेगी। भादों शुद्धि में सुपोरियर लाइन लम्बी शुरू होगी यह लाइन पुराने स्टोकों को निकालने का भी सुअवसर देगी। चालू तिलहन में तेजी रुकेगी, चांदी मंदी होगी। भादों शुदि शेयर खासतौर से टाटा में दाम बढ़ेगें और अपोलो टायर भी शनिवारी चन्द्रदर्शन ता. ११ सित. १२ ॥ बजे से चाल निकलेगी परंच जिन अन्य शेयरों के मूल्य घटेगें उनमें पानी-पानी होगा तथा ता. १३ सित. को बुध स्वग्रही कन्या राशि में भ्रमण करेंगे। तिलहन, तेल, सरसों, अरंडा, सींगदाना, गुड़, आलू में ता. १४ भौम वार भादों शुदि ५को जिन ऊपर लिखित वस्तुओं में गत शुक्रवार को ऊंचे के भाव कटेंगे तो भयंकर तेजी आयेगी। इस ग्रह का असर ज्योतिष शास्त्रानुसार व्यापार पति बुध का मूंग, ग्वार, मटर, अरहर, द्विदल मात्र अन्न, बनस्पति, समस्त हरे रंग के पदार्थों में, तेल निकालने के बीजों के साथ तीखी वस्तु, सुगन्ध, हरे रंग के कपड़ों में पड़ता है। कन्या राशि में आने से अच्छी क्वालिटी के गेहुंओं में तथा कुलथी, अलसी, खांड, शक्कर, हरे उड़दों में, कपास की खेती में भी तेजी का पड़ेगा अतः मन्दी का झटका-रियक्शन में लिवाल को लाभ एक सप्ताह में पड़ेगा। भविष्य में कन्या राशि में सूर्य १७ सित. को प्रवेश होने से लाइन को बल मिलेगा क्योंकि सूर्य बुध से पीछे बुध आगे सुपीरियर गति से तमाम माह चलेगा। जिस वस्तु में ता. २० को गत गुरु के नीचे भाव कटें तो भारी मन्दी न कटें तो तेजी चलेगी। यहां से चांदी, सोना की लाइन भी नये किस्म से चलेगी।

आश्विन सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

आश्विन में ५ रविवार है, ज्योति शास्त्र में ५ रविवारों का फल इस प्रकार लिखा है। **श्लोक-यत्र मासे रविवारा जायंते पंचसन्ततम। दुर्भिक्षं छत्रभंगश्च तथाऽन्ते च महद्भय॥**

इस मांस में बदि ३ चौथे मंगल ता. २८ सितं. को सिंह शुक्र २१ घड़ी शाम विराजते हैं इस ग्रह के लगने के बाद अगले दिन १२ ब. १८ मिनट से जिधर की लाइन चले बही लाइन ७ या १० दिन एक ही लाइन पर मार्किट चलेगी। इस शुक्र ग्रह का असर चांदी, खांड, शक्कर, चीनी तथा कपड़ा, रुई, चावलों पर भी पड़ेगा। रेशमी वस्त्र, कम्बल, मणि, हीरा, आभूषण, मिश्रित श्वेत अन्न, जलज वस्तु, स्फटिक, त्रिफला, दालचीनी, चोब चीनी, पठानी, लोध और जायफल, अगरबती आदि किराने की वस्तुओं में भी असर पड़ता है। कभी उत्तरोत्तर जब तक चालू राशि पर चलता है तब तक असर और सभी चीजों पर रहता है परन्तु चालू बादे चादी, श्वेत मील की वस्तुओं के शेयर में भी पूर्ण असर पड़ता है। ऊपर चालू २८ सितम्बर से दो दिन का असर देख कर ही व्यापार करना चाहिये। इस ग्रह के अन्तर्गत शुक्र व मंगलवार को नये ऊँचे-नीचे भाव मार्किट में बनेंगें पर रियक्शन आने पर लम्बी चालू लाइन को हाथ से न निकालें। सिंह राशि पर पदार्पण होने से सर्वप्रकार के रस, तृण, धान्य, भूसी वाले अन्न, चना, गुड़ और सोना भी पूर्ण लाइन देगा। आगे ता. ३० सितबर अशौज बदि ६ की रात सप्तमी के प्रातः तुला-बुध होने से चालू वायदों में सप्तमी शुक्रवार को गत भौमवार के नीचे भाव कटें तो मंदी की लाइन शुक्रवार ता. ८ अक्टूबर तक चलेगी। अगर नीचे के भाव न कटे तो तेजी चलेगी। यह आलू में विशेष है। ता. ९ अक्टू., शुक्रवार अशौज बदि १४ धनुषी भौम होने से मंगल के अधिकार की वस्तुओं में लाइन एकदम परिर्वतन होगी जैसे धान्य, तृण, भूसा, घी, घृत पदार्थ, रस, कपास, रुई, सूत, सन, सोना-चांदी आदि धातु, बिनौला, खरसों में एकसार लाईन १२ से २० दिन चलेगी। आने वाले अन्य ग्रहों के असर से रियक्शन जरूर आयेंगें पर लाइन जनरल को मत छोड़ना। अशौज शुद्धि पर ५ गुरुवार को जिस वस्तु में पिछले सोमवार के नीचे भाव न टच हों और ना ही क्रौस हों तो तेजी ५ से ९ दिन एकसार चलेगी। अशौज शुदि सोमवार को तुला सूर्य अपने वर्गोत्तम में ३ दिन चलेगा इस वास्ते सूर्य के अधिकार की तमाम वतुओं में तेजी जोरदार आकर बाद २ दिन रियक्शन आकर बाद सारे आश्विन में चलेगी। ता. १७ व २२, २३ अक्तूबर में नजराने तेजी-मंदी फलेंगे। बोरी, वारदाना खरीदना अच्छा रहेगा। तेल, बिनौला, सूरजमुखी, पीपरमेन्ट इस माह १५. अक्टू. से २ सप्ताह लाभ देगा। चना, गुवार, मैंथा आयल और पीतल भी स्टॉक करना लाभ देगा।

कार्तिक सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में ५ सोमवार, ५ मंगल होने से बुध, सूर्य से शुरू से आग्रे लास्ट में बुध बक्री होने से पीछे होने से महर्घ समर्घ की घमासानी से रियक्शन के चक्कर में व्यापारी धोखा खायेंगे। इसलिए लगते माह की खांड, चीनी की तेजी कतई धोखा देगी, दूसरे बदि में तिथि का क्षय होना भी तेजी में ब्रैक लगा देता है। मिती बदी ६ नवं. को शनिवार के दिन जिस वस्तु में पिछले बुध के नीचे भाव न कटेंगे, नई मन्दी समाप्त। कपूर, चांदी, तेल, घी, आलू, सट्टे में एक ही फार्मूला काम करेगा। यहां की चालू लाइन सीधी कार्तिक शुदि ३ तक चलेगी। बोरी, वारदाना, अलसी में विपरीत लाइन चलेगी। विशेष रूप से शेयर रिलाइंश में शुरू में भाव बढ़ेंगे पर महालक्ष्मी पूजन बाद जिस शेयर में नीचे भाव कटेंगे, उसी में मंदी वर्ना न कटें तो तेजी। इस माह में बुध बक्री और अस्त दोनों ही संक्रमण होंगे। इस वास्ते ता. ४ नवम्बर पर नजराने तेजी-मन्दी दूसरे दिन के डालें। अगर इस दिन मार्केट स्थिर रह जाये तो ता. ८, ९ से गली, लगाकर भारी लाभ उठाना। ता. १६ नवम्बर को १२ बजकर ४० मिनट से जिधर की लाइन १० मिनट चले वहीं लाइन एक सप्ताह तक चलेगी और यहीं शेयरों में विपरीत चाल चलेगी। कपूरादि पसारट के भाव विशेषतया सूखे मेवों में चमक। १५ दिन की अच्छी उठेगी और तोरिया, अरंडा, बारदाना तेज होगा। ऊनी वस्त्रों में तेजी होगी।

मंगशिर सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

मंगशिर में ५ बुधवार हैं। मार्गी बुध बदी ३ को और तृतीया से पूर्व २ का क्षय मंदीकारक योग माना गया है। इसलिए चीनी, खंडसारी, खांड की मंदी आयेगी। आलू, मंदा होगा तथा हरे, पीले रंग के पदार्थों में घटबढ़ रहेगी। ता. २५ नवम्बर की रात मार्गी बुध यानि मंगशिर बदि ३ शुक्र की रात को प्रवेश होगा. अतः अगले दिन से पिछले नीचे भाव आलू, हल्दी या गुड़, चांदी में क्रास हों तो बेचो वर्ना कतई न बेचें क्योंकि बुध परतंत्र है। सूर्य से पीछे हैं। लेकिन मक्का हाजिर भी स्टाक न करें। ता. १ दिसम्बर मगशिर बदि ९ बुधवार को दिन निकलने से पूर्व तुला शुक्र रुई, सूत, चांदी, खांड, चीनी की मांग को बढ़ाने वाली ग्रह का पदार्पण और दिन निकलने के बाद भौम श्रवण में मंदीकारक पृथक-पृथक तेजी-मंदी की चाल चलाने वाले चलने से यह विश्वस्त चाल बनती है कि मूरजमुखी और हल्दी, सोना, पीतल, तांबा में अगर दिसं. ता. १ को गत शनिवार के जिस वस्तु में ऊंचे भाव क्रौस हों तो तेजी चन्द्रदर्शन तक यानि ता. ९ दिसं. तक बहुत जोरदार आयेगी। काश और नीचे भाव कटें भारी मंदी आयेगी। मध्य में ज्येष्ठा रवि ता. ३ दिसं. को लगेगा। जिस का असर ११ बजे से शुरू होकर ५ दिन में ही समाप्त होगा। हाजिर हो या सट्टा सभी में एकसार असर होगा। सोने और मंगल की सभी वस्तुओं में एकसार असर होगा। मंगल की वस्तु खासतौर से लाल सम्पूर्ण रंग, गुड़, मद्य। इसी मंगशिर में भौम का असर तीक्ष्ण पदार्थों तथा पारा, मनशिर, मसरी, तांबा, मूंगा, सोना साथ ही प्रभावित होगा। मंगशिर बदी ९ ता. १ दिसं. को इस ग्रह का असर ११ बजकर ४२ मिनट से पड़ेगा। चन्द्रदर्शन ता. ९ से घी, तेल, बैजीटेबिल, पारा, मैंथा में ४ या १० दिवसीय मन्दी चलेगी। धन की संक्रांति से ३ या ५ दिन में एक जोरदार रियक्शन आयेगी। इस टाइम में खांड, गुड़, चीनी और जूट, पाट में भी मंदी लास्ट आयेगी। ये मंदी किसी-किसी वस्तु में खरीददारों को लाभ देगी। मंगशिर शुदि १४ का टूट जाना और लास्ट माह में मार्गी गुरु भी इसी दिन ता. २१ को प्रातः दिन निकलने के ढाई घंटे बाद प्रवेश मार्गी गति में होने से सुवर्ण, मलका-मसूर, दालमोंठ, बेसन, उम्दा, राजधानी का मक्का, बाजरा भी तेज होगा। परन्तु खाद्य तेल, रिफाइन्ड तथा घी, अलसी, अमचूर, चिरौंजी, मगज, मतीरा मन्दी पर जायेंगी। सट्टे बदनी, गुड़, आलू, सरसों, अरंडा, अलसी में खुला व्यापार पूर्व लाइन पर ही करें। लेकिन शेयर बेचें, सट्टे में १०० तेजी तो १२५ मन्दी ता. २० दिसं. को २१ को लगाना तथा २१ को १ बजकर २७ मिनट पर ही सौदा बराबर करना।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

पांच ही गुरु ५ ही शुक्र तथा इन्फीरियर लाइन तमाम पौष का चलना मंदी का सूचक है। इसलिए इस माह में अलोह धातु, रांग, टिन, निकल, प्लेट, जस्ता, गन मैटल, शीशा, तार, फूट, बर्तन, फूट में पौष बदी ता. २३ दिसं. १। बजे से ९ या १४ दिन में मंदी आयेगी तथा गुड़ में ५०० मंदी तो ५० तेजी डालें यह (एटम बम) चांस है जो कभी आता है. अरंडा, सींगदाना में मंदी डालें। ता. २५ दिसं. बड़े दिन की रात्रि को ता. २६ के प्रातः शुक्र वृश्चिक राशि में प्रवेश होने से खाद्य तेल जैसे सरसों आदि में मुनाफा बढ़ जाने से ७ या १७ दिवसीय मन्दी आयेगी। रिफाइंड में मार्केट स्थिर होंगे साथ ही अलसी, घी, चीनी, चांदी हाजिर, मैदा-सूजी और बासमती चावलों में मंदी का वातावरण बनेगा। ता. २४, २५, २८ में सट्टों में मन्दी डाल कर लाभ उठाना। ता. २९ को साढ़े छः घंटे दिन चढ़े पूषायां सूर्य प्रवेश होने से आलू, प्याज, खली, एक्सपेलर, अखाद्य तेल, महुआ, अलसी, अरंडी, नीम में जोरदार मन्दी या तेजी ४ या ९ दिनों को चलेगी। चांदी में मंदी डालें। ता. २९ दिसं. शाम घंटी बंद पर बाद ता. ३१ दिसम्बर तथा ता. ४ जनवरी २००० को नये लाइन के अनुसार भाव अवश्य ही बनेंगे। देशी घी, डेरियों के घी, मिल्क फूड विशेष रूप से पक्के ब्रांडों में अपार कृष्ण गोपाल जी में विशेष अन्यों में मन्दी आयेगी, साथ ही किराना में कालीमिर्च, बड़ी इलायची, दाल चीनी, अजवायन, चिरौंजी में भी भाव गिरेंगे। शते भौम ता. ४ जनवरी में ३३ घटी करीब रात्रि में प्रवेश से मेवा बाजार कंधारी, किशमिश, बादाम गुरुबंदी तथा अखरोट, गोला, छुहारा, काजू में १० दिवसीय मंदी आयेगी बाद तमाम माह मार्केट पड़े रहेंगे। पौष शुदी में ज्येष्ठा शुक्र शुदी में २ मिति ता. ८ जन. में रात्रि को प्रवेश से मंदियों में ब्रैक लगने की पूर्ण सम्भावना है क्योंकि शनि मार्गी मकरे सूर्य समता सूचक है पर पौष शुदि की अष्टमी ता. १४ जनवरी को टूटना भी तेजी का सूचक है। विशेषतया ता. १२ से ता. १६ जनवरी तक निरयन संक्रांति वर्गोत्तम में चलेगी। एक बार मार्केट की सुस्ती दूर होकर मैदा, चुन्नी, चोकर तथा किराना और अनाज, दालों में मटर, फार्म चना, दाल, कपूर, सोडियम, सिलिकेट तथा सूरजमुखी के साथ हैसियन, जूट, पाट, बारदाना और प्लास्टिक बाजारों में तेजी। पौष में ता. २३, २४ दिसं. की १०० तेजी तो ४०० मंदी गुड़ में डालना अगर ऊपर लिखित ता. पर काश बाजार पड़ा रह जाये तो ता. २८ दिसं. और ११ जन. को भी गली तेजी-मंदी की मुजफ्फर नगर, हापुड़, दिल्ली की मंडियों में नजराने भी फलेंगे।

माघ सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

माघ में ५ शनिवार और तमाम माह सुपीरियर लाइन तथा शुदी में मिति क्षय, तमाम ग्रहों की चाल मार्केटों में उथल-पुथल के सूचक हैं। ता. २७ जन. ३, १० और १७ फर. इनमें चन्द्र वर्गोत्तम चांदी में भारी उथल-पुथल करेगा। तेजी-मंदी फलेगी। विशेष चांदी में ध्यान तेजी का सोने में भी स्टेडी रहेगी। गुड़, सरसों, कापर, बम्बई के वायदों में दुतर्फी गली लगाना। आलू में भी नजराने फलेंगे। माघ बदि ४ सोमवार ता. २४ जनवरी से सूर्य के अधिकारी वस्तु तेजी पर जायेंगी और यहां की चालू लाइन एक फरवरी तक सीधी चलेगी। ता. ७ फरवरी रियक्शन आकर पुनः लाइन संक्रान्ति ता. १४ शुदी नौमी तक चलेगी। बाद में धान्यादि भाव सम। नई तेजी सरबती गेहूँ, चना में आयेगी। मूंग कतकिया और किराना, मेवे, चावल, परमल, मलका मसूर, दाल, मोंठ, मैदा में तेजी का चक्र साथ ही किराना मार्केट में माघ बदी ११ से १० दिन में और शुदी में नौमी से ७ दिन में आयेगी पर इस माह की तेजी में गेहूँ, चना, मोंठ बेचना ही अच्छा रहेगा।

फाल्गुन सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

फाल्गुन में ५ रविवार ५ ही सोमवार होने से मिले-जुले फल होंगे। भारी-तेजी वाली वस्तु एक दम गिरेगी। खास तौर से फागुन बदी २ की रात को बुध वक्री भारी तेजी सूचक है, परन्तु इसी दिन श्रवणे शुक्र भारी मंदी कारक है। फाल्गुन बदी ३ भौमवार ता. २२ को १० बजकर १३ मिनट से १५-२० मिनट में मंदी गुड़ में चली तो मोटी मंदी निकलेगी। काश मंदी ऊपर समय पर न चली तो तेजी की लाइन ३ दिन की कमाल दिखा देगी। नोट-ऐसे योग में ता. २२ व २४ को दुतरफा गली गुड़, आलू, तिलहन के सौदों में डालें इसी टाइम पर मैथा ऑयल, कपूर, खरीदें पर ता. २५ को रेवत्यां भौम होने से आखिरी तेजी लाल गेहूँ, चना में आयेगी। गेहूँ दड़ा, फार्म, बैझड़, अरहर, मैंथी, दाल, चना में स्टाक निकालना बेहतर होगा। गुड़ दिल्ली चला तो मंदी में स्टाक करें, वायदा सोयाबीन खरीद वार लाभ उठाना। ता. २८ फरवरी शाम बक्री शते बुध होने के बाद ता. २९ फरवरी ११ बजे से गुड़ व सरसों लेना ४ ही दिन में लाभ उठाना। एसिड ऑयल तेजी पर जायेगा। अमेरिका डालर तेज होगा तथा खंडसारी में लास्ट मंदी १५ दिन में आने पर स्टाक करना लाभदायक रहेगा। राष्ट्रीय शेयर ता. १ से ४ मार्च तक लेना क्योंकि फागुन शुदी ५ का टूटना तेजी कारक है। बदी १२ ता. ३ मार्च की चालू लाइन गुड़, आलू, शेयर तथा सरसों की लाइन ३ मार्च की चालू फागुन बदी १ भौमवार ता. ७ मार्च तक चलेगी। ता. ८ मार्च को बुधोदय तेजी सभी पदार्थों में करेगा पर इसी दिन कुंभे शुक्र मंदी कारक है। ग्रह भिन्न-भिन्न असर कारक होने से जो भी लाइन चलेगी वहीं लाइन शुदी ९ भौमवार ता. १४ तक चलेगी। ता. १४ मार्च को नये भाव बनकर भावों में रियक्शन होली दहन ता. १९ छार्डी ता. २० मार्च जहां भाव स्थिर रहेंगे।

बदी चैत्र सं. २०५६ का सामूहिक व्यापार भविष्य

तमाम चैत्र में ५ भौमवार होंगे ये एक प्रकार से तेजी का वर्ष सं. २०५७ का माना जायेगा। इसलिए सोना व लाल वस्तु शस्त्र-अस्त्र तथा अखाद्य तेल जो शस्त्र-अस्त्र में भी काम आते हैं तथा रसायन बाजार में भी सोडियम नाइट्रेट और सोडियम हाइड्रो सल्फाइट में भारी तेजी आयेगी। सं. २०५६ के आधे चैत्र में भी खरीद सोना की जरुर कर लें तथा प्रारंभ में मंगलवारी प्रतिपदा कभी-कभी मंदी भी किया करती है। ता. २२ मार्च चैत्र बदी २ बुधवार को भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में गुरु का प्रवेश ता. २३ मार्च को नई लाईन गुरु के अधिकार की वस्तुओं में प्रारंभ होगी। हल्दी, सुवर्ण तथा गुरु की अधिकृत वस्तु हल्दी, जटामांशी, तगर, मोंम, सेंधा नमक, बेल से उत्पन्न होने वाली समस्त वस्तु, सरसों, गेहूँ, जौ, ईख, कपूर, गाय आदि हैं। राहू-केतु का नक्षत्र परिवर्तन लोहे तर धातु तथा काली वस्तु एल्युमीनियम सिक्का, शीशा, लोहा, कुधान्य, नीले रंग की वस्तु गोमेद, हड्डी, मज्जा, कोदो, कांगनी, तिल, उड़द इनका स्टाक करना १५ दिन में ही लाभ देगा। आलू की वायदा मिति भविष्य में ठीक ३० मार्च से तेजी का बिगुल बजायेगा। गुड़, सरसों शरद ऋतु की उत्पन्न होने वाली वस्तु ज्वार, बाजरा, मक्का, ग्वार, मूंग, मोंठ, मूंगफली, तोरिया, चावल, कपास, बिनौला, जूट, पाट, बारदाना, केशर, कस्तूरी में ता. २४ मार्च शुक्र को पिछले भौम के भाव नीचे के न कटें तो मंदी वर्ना जोरदार लाइन तेजी की बनेगी। इसी प्रकार चैत्र बदी ८ ता. २८ मार्च को गत शुक्र के ऊँचे भाव कटें तो भारी तेजी १४ दिन की लाईन से ही लाभ होगा। ता. १ अप्रैल शनिवार को निरयन चाल से शुक्र मीन में आते ही राहू से ९ वें स्थान पर चलने से विशेष रूप से शुक्र की वस्तु विशेष चांदी सट्टा खरीदें यहां की तेजी की चालू लाइन नये संवत् २०५७ में चली जायेगी और रियक्शन ले ले कर १२० रु की तेजी आयेगी।

अनमोल चांस मंगाइये

हर हाजिर या वायदा वस्तु के चांस जैसे सोना, चांदी, शेयर, तांबा, स्टील, पीतल, गेहूँ, जौ, चना, मैंथा, रुई, सूत, सरसों, अरण्डा, गुड़, आलू हर प्रकार की दालों, पंसारठ की वस्तु, जूट, पाट, बारदाना, चीनी, खांडसारी, सींगदाना, तेल आदि एक वस्तु के १ वर्ष के चांस की फीस ५००/- छः माह की ३००/-, तीन माह की फीस २००/- है। शेयर व वायदा वस्तु एक माह की फीस २५०/- है। पूरे वर्ष की फीस २५०१/- है। एक वर्ष की "शांडिल्य व्यापार भविष्य पुस्तक" जिसमें दैनिक चांस, लम्बी-लम्बी धारणा के चांस आदि लगभग १७० से २०० पेजी मूल्य-८१/- है। रुपये अग्रिम भेंजे। रजिस्ट्री शुल्क अलग से भेंजे।

पता-श्री ओंकार प्रसाद एवं विश्वबन्धु शर्मा
आयुर्वेद रत्न एवं एम.काम.एल.एल.बी.
मोहल्ला-२१-२२ ब्रह्मनान,
पो. हापुड़, जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.),
फोन-३१२२३८ है, पिन-२४५१०१

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार भविष्य १९९९ ई.

लेखकः—श्री रामावतार गुप्ता, "व्यापार भूषण", मु.पो. खोरी, जिला-रेवाड़ी-१२३१०१ (हरियाणा)

जनवरी मास (माघ मास कृष्ण पक्ष)—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ता. २, १२, १५, १६, १९, २६ एवं ३० जनवरी तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें ४, ७, २१, २२ जन. हैं। इन तारीखों में व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी-मन्दी के झटके आ सकते हैं। ता. ३ जन. माघ बदी प्रतिपदा शनिवारी का क्षय होने से धान्य का स्टाक करना चाहिए। क्योंकि-**"माघ मासे प्रतिपदि शनि योग प्रशस्यते। सर्वथा धान्य निष्पतिरारोग्यं देश स्वस्थता॥"** अर्थात् आगे अनाज की पैदावार उत्तम हो तथा देश स्वस्थ व सुखी हो। ता. ४ जन. को यदि आकाश में बादल खूब गर्जना करे परन्तु वर्षा ना हो तो गेहूं आदि अनाज का स्टाक करें। आगे तेजी से लाभ हो। ता. ५ जन. को यदि वर्षा हो तो नारियल में शीघ्र तेजी आ जायेगी। ता. ११ जन. पू.षा. बुध एक सप्ताह के अन्तर्गत बिनौला में तेजी तथा अन्न में मन्दीकारक है तथा सोना चांदी में अच्छी मन्दी आ सकती है। यहां कर्क राशि में राहु का प्रवेश होने से सभी प्रकार की धातुओं, रुई आदि में प्रथम छः महीने बाजार मन्दा रहकर अनन्तर भारी तेजी कारक हैं एवं ज्वार में भारी तेजी आगे लायेगा। ता. १३ जन. तुला राशि का मंगल शुक्र क्षेत्र में होने से प्रायः व्यापारिक वस्तुओं के भावों में तेजी बनाये रखेगा। विशेषकर अन्न दलहन, तिलहन, रुई, कपास आदि में। मसालों में दो मास के अर्न्तगत भारी तेजी आ सकती है। यहां मंगल, शनि का अपोजिशन योग भी तेजी में सहायक होगा। आगे सरसों, तिलहन तेलों के भावों में अच्छी वृद्धि सम्भव। ता. १७ जन. रविवारी मावस तेजी कारक है। घी में तेजी लायेगी। **"मावस्या तिथि माघ या जेठ पड़ै रविवार। घोर युद्ध जनहानि से मचै हाहाकार॥"** तथा लड़ाई-झगड़े रोगादि से जनता भयभीत रहेगी।

माघ सुदी पक्ष—बदी पक्ष की बजाय इस पक्ष में व्यापारिक वस्तुओं में अधिक तेजी रहे। ता. २२ जन. अश्विनी २ चरण में शनि के प्रवेश से एक मास के अन्दर सौराष्ट्र, गुजरात, मालवा, पश्चिम बंगाल आदि के इलाकों में भारी आगजनी, उपद्रव आदि से व्यापक क्षति की आशंका रहेगी तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी को बल मिलेगा। तिलहन, घी, चावलों, मिर्चों के भावों में वृद्धि होगी। ता. २४ जन. सुदी सप्तमी रविवारी, दुर्भिक्षकारी है। **"माघ सुदी साते पड़ै रवि शनि चन्दावार। विग्रह भय दुर्भिक्ष से दुख पावै संसार॥"** ता. २४ जन. को आकाश में बादल ना हो परन्तु २५ जन. को यदि आकाश में बादल हों तो आगे श्रावण मास में भारी वर्षा होगी। ता. ३० जन. को यदि आकाश में पूरे दिन बादल छाये रहे तो समझना चाहिए कि आगे चौमासे में वर्षा की अत्यधिक कमी रहेगी। परन्तु यदि पूरे दिन आकाश निर्मल रहे। अर्थात् बादल आदि ना हो तो आगे चौमासे (वर्षा ऋतु) में भरपूर वर्षा निसन्देह होगी।

फरवरी मास (फाल्गुन मास)—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें २, १५, १६, २३, २७ तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें ४, १०, ११ एवं १८ फरवरी हैं। इन तारीखों में व्यापारिक वस्तुओं में अधिक तेजी-मन्दी आने की प्रबल संभावना रहेगी। फागुन कृष्ण पक्ष में बुध अतिचारी गति से चल रहा है। बाजार भाव में थोड़ा उछाला देते हुये रुई, सोना, चांदी, सूत, बारदाना, बिनौला, हल्दी, गुड़, शेयर्स आदि के अन्तर्गत भावों में मन्दी चल पड़ेगी। ता. २६-२-९९ से १३-३-९९ तक भारत वर्ष के अनेक स्थानों पर वर्षा होगी। ता. ५ फरवरी धनिष्ठा का बुध एक सप्ताह के अन्दर सोना, चांदी, रुई, अनाजों में बीच-बीच में मन्दी के रियक्सन लायेगा। परन्तु चावलों में तेजी को सपोर्ट करेगा। बदी छट चित्रा नक्षत्र युक्त है। **"षष्ठी फाल्गुन बदी में चित्रा करे सुभिक्ष। यदि स्वाति नक्षत्र तो तीन मास दुर्भिक्ष॥"** के अनुसार तीन मास जनरल लाईन मन्दी रह सकती है। इसका विशेष प्रभाव गेहूँ आदि अनाजों पर पड़ेगा। ता. ९ फर. से कुंभ राशि में बुध-शुक्र की मीटिंग चलेगी। व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का ही बिल पास होगा। यह मीटिंग चार दिन चलेगी। यदि इससे पूर्व किसी वस्तुओं में मन्दी चल रही हो तो यहाँ जोरदार मन्दी भी सम्भव होगी। सावधान! ता. १२ फरवरी कुंभ संक्रान्ति आयेगी। इस संक्रान्ति काल में (अगली संक्रान्ति लगने से पूर्व) जो भी वस्तुएं मन्दे स्तर पर हों तो स्टाक करके दो मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। यदि आज वर्षा हो तो लाल रंग की वस्तु मात्र का स्टाक चार मास बाद में बेचने से उत्तम लाभ हो। ता. १३ फर. से सूर्य-बुध-शुक्र योग बनेगा। व्यापारिक वस्तुओं का रुख तेजी की ओर अग्रसर होगा। ता. १६ फर. मंगलवारी मावस तीन दिन के अन्दर एक दफे प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के उछाले लायेगी। फाल्गुन सुदी पक्ष में बाजार कुछ तेज रहेंगे। परन्तु चांदी में पक्ष में विशेष मन्दी के झटके आने संभव होंगे, सावधान! सुदी एकम् शतभिषा नक्षत्र युक्त है। अन्न, दलहन, घी, आदि में बाजार की लाईन तेज रहे। यहां गुरु-शुक्र का भी योग बन रहा है। यहां यह योग महावर्षा कारी सिद्ध हो सकता है। यथा—**"एक जगह गुरु शुक्र हो, बनै युद्ध आसार। अनावृष्टि अतिवृष्टि से दुःख पावै संसार॥"** ता. १९ फर. उ.भा. शुक्र-सफेद वस्तुओं मोती, चांदी, कपूर, खाण्ड, नमक आदि में मन्दीकारक है। अतः इनमें मन्दी के रियक्सन आयेंगे। ता. २० फरवरी सुदी चौथ का क्षय पक्ष में दलहन, मूंग आदि तथा घी में जनरल लाईन तेज रहेगी एवं बीच-२ में अच्छी तेजी के उछाले आ सकते हैं। **"किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाए। ग्राहक मांगे मूंग घी, विक्रेता नट जाएं।"** पू.भा. बुध दिन सात के अन्तर्गत लोहा, सोना-चांदी आदि प्रायः हर धातु के भाव गिरते नजर आयेंगे तथा रविवारी छठ अनाजों के भावों में निःसन्देह वृद्धि करेगी। ता. २३ फरवरी सुदी ८ मंगलवारी रोहिणी नक्षत्र युक्त है। अनाजों में निःसन्देह भारी तेजी लायेगी। परन्तु प्रथम बाजार मन्दा होकर अच्छा तेज होगा। ता. २७ फरवरी से १२ मार्च तक मीन राशि में बुध-गुरु-शुक्र का योग चल रहा है। **"बुध गुरु भृगु साथ हों, देखे कोई न क्रूर। महावृष्टि का योग यह ज्योतिष में मशहूर॥"** यह योग भारी वर्षा कारक है।

मार्च मास—ता. १ मार्च को होलिका दहन है। ता. २ मार्च को मंगलवारी पूनम पू.फा. नक्षत्र युक्त होने से सुभिक्षकारी है। इससे आगे व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का प्रभाव होगा। मास में तेजी की प्रमुख तारीखें २, ६, ९, १३, १६, २०, २३, २७ एवं ३० मार्च तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें ४, ८, २५ मार्च हैं।

चैत्र मास—संवत् २०५५ कृष्ण पक्ष—इस पक्ष में बाजार की जनरल लाईन तेज रहेगी। बदी प्रतिपदा बुधवारी होने से पक्ष में सभी खाद्य पदार्थ, आलू, प्याज, सब्जियां, मसाले, दलहन, अन्न आदि में जनरल लाईन तेज रहेगी। परन्तु आलू, प्याज में बदी एकादशी तक अच्छी तेजी आकर मावस तक बाद में अच्छा मन्दी आ सकती है। सावधान! ता. १२ मार्च बुधास्त पश्चिमे गल्ला माल अनाज चांदी आदि में तेजी कारक है। यहां इन वस्तुओं में विशेष तेजी के झटके भी आ सकते हैं। सावधान्! ता. १४ मार्च यदि आज वर्षा हो तो तेल, घी, कपास का स्टाक चार मास बाद में अच्छा लाभ देगा। आज ही मंगल देव वक्री होंगे। अपने वक्रकाल में (मई तक) किराने सामान में धीरे-धीरे अथवा अचानक अच्छी तेजी लायेगा। चैत्र में वक्री होने

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से—"फाल्गुन अथवा चैत्र मंगल या शनि वक्र। मन्दी रह करके चले, फिर तेजी का चक्र॥" के अनुसार प्रथम बाजार मन्दा रखकर १०-१५ दिन पीछे अच्छी तेज लायेगा। बाजार का रुख देख कर काम करें।

चैत्र शुक्ल पक्ष संवत् २०५६ विक्रमी :—ता. १८ मार्च से संवत् का शुभारम्भ होगा। संवत् का राजा गुरुदेव तथा मन्त्री का पद बुध ग्रह को प्राप्त हुआ है। संवत् के प्रारम्भ काल में प्राय: सभी पदार्थों में मन्दापन रहे। परन्तु बाद में तेजी रहे। अनाज के व्यापारियों को अच्छा लाभ। परन्तु स्टाक न करके अपितु खरीदते-बेचते रहें। लौंद का वर्ष होने से गुड़ मीठा में एक दो चांस अच्छी तेजी के प्राप्त हो सकते हैं। यदि इस संवत् के आश्विन मास में दूर-दूर तक अच्छी वर्षा हो जाए तो घी, मजीठ, हल्दी, तिल, राई, जौ, अरहर, मेंहदी, तिलहन, दलहन आदि में आगे तेजी चल पड़ेगी। इस संवत् में प्राय: बाजार दुतर्फा चलेंगे। चैत्र सुदी अष्टमी बुधवारी है। आगे वर्षाकाल में अवरोध पैदा करेगी। **"चैत्र सुदी आठें दिना मंगल या बुधवार। नदी किनारे पर बसी पानी के आधार॥"** ता. ३१ मार्च बुधवारी पूनम मन्दी कारक है। परन्तु अलसी में दिन ३ के अन्दर विशेष तेजी के झटके संभव हों।

अप्रैल मास—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ३, १०, १७, २०, ३० तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें १, ५, ८, १५ एवं २२ अप्रैल हैं। इन तारीखों में विशेष तेजी मन्दी के झटके व्यापारिक वस्तुओं में संभव होंगे।

वैशाख मास—मास मन्दी प्रधान रहे। बदी सुदी दोनों चौदश गुरुवारी तथा अमावस्या को रेवती नक्षत्र का संयोग सुख सुभिक्षकारी है तथा फसलें उत्तम हों, ऐसा संकेत मिलता है। ता. ५ अप्रैल शनि का नक्षत्र चरण परिवर्तन-एक मास के अन्दर पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा के प्रमुख क्षेत्रों में भारी उत्पात तथा प्राकृतिक प्रकोप से हानि होना संभव है। ता. ९ तथा १५ अप्रैल को यदि दक्षिण की वायु चले तो आगे वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होगी। ता. १२ अप्रैल को यदि आकाश प्रबल बादलों से ढक जाएं तो अनाज का स्टाक निकाल देना चाहिए। ता. १४ अप्रैल मेष की संक्रान्ति अर्केगी। इस संक्रान्ति काल में अग्निकाण्ड की घटनाओं में वृद्धि होगी। यहां सूर्य-शनि का राशि योग तथा मंगल की दृष्टि से अनाजों, प्रमुख व्यापारिक वस्तुएं, तिलहन, घी, लाल रंग की वस्तुओं, रस पदार्थों के भाव तेजी की ओर अग्रसर होंगे। इनमें से किसी-२ वस्तु में अच्छी तेजी भी संभव हो सकती है। अत: रुख देखकर काम करें। परन्तु अन्त में घटाबढ़ी अधिक रह सकती है। वैशाख सुदी प्रतिपदा का क्षय तेजी कारक है। अत: बदी पक्ष की अपेक्षा सुदी पक्ष में व्यापारिक वस्तुओं के भाव मजबूत होंगे। **"पड़वा पांचे चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मन्दी करे, तेजी हो जब छीन॥"** ता. २० अप्रैल गुरु उदय होगा। सप्ताह दस दिन बाजार रुख की तेजी बनाये रखेगा। परन्तु फिर भाव गिर जायेंगे। इसका प्रभाव विशेषकर रुई, सोना, चांदी, मूंगफली, सरसों, गुड़, खाण्ड, अन्न आदि पर होगा। ता. २५ अप्रैल को यदि आकाश में बादल छा जाएं तो वर्षाकाल में नि:सन्देह वर्षा नहीं होगी। ता. २७ अप्रैल मृगे शुक्र दिन ७ के अन्दर रस पदार्थों, गुड़, चीनी आदि के भावों में बढ़ोत्तरी करेगा। ता. ३० अप्रैल शुक्रवारी पूनम चांदी प्रमुख शेयर्स जूट, पाट, बारदाना, घी, गुड़, खाण्ड, तेलों में दिन ३ के अन्दर घटबढ़ से तेजी तथा रुई में मन्दी के रियक्सन लायेगी।

मई मास—इस मास में विशेष तेजी प्रधान तारीखें १, ७, ८, १८, २२ एवं २९ मई तथा मन्दी प्रधान तारीखें ३, ६, १३, २४ मई हैं। इन तारीखों में विशेष तेजी मन्दी के झटके व्यापारिक वस्तुओं में आने संभव होंगे।

प्रथम ज्येष्ठ मास—इस मास का फल नेष्ट फलकारक है। यथा **पंचार्क बासरे रोगा.... दुर्भिक्ष पंचभदे भू।** अर्थात दुर्भिक्ष तथा अनेक रोगों का प्रार्दुभाव हो। मास में प्राय: व्यापारिक वस्तुएं तेज होंगी तथा तेजी प्रधान रहें। वृष संक्रान्ति क्रूरवारी तथा खर्पर योग युक्त है। अत: अनाजों में जोरदार तेजी आ सकती है। सुदी पक्ष से रुई आदि में एक डेढ़ महीने के अन्दर जोरदार तेजी संभव है। ज्येष्ठ मास में किसी भी दिन यदि २४ घण्टे आकाश बादलों से ढका रहे तथा दक्षिण दिशा की हवा चले तथा उधर का ही गर्ज गर्जना (मेघ गर्जना) सुना जाए, ऐसा अच्छी तरह विचार करके शीघ्र ही अनाज, तिल, तेलों का स्टाक करके चार मास पश्चात् बेचने से उत्तम लाभ की प्राप्ति हो।

ता. १ मई बदी एकम् शनिवारी—जल का शोषण मन्त्रिमण्डल भंग तथा दुर्भिक्षकारी है। **"जेठी कृष्ण प्रतिपदा शनिवारी के संग। जल सुखै दुखै प्रजा मन्त्रिमण्डल भंग॥"** (भविष्य भारती) ता. ५ मई से मेष राशि में बुध-सूर्य-शनि की मीटिंग होगी। **"शनि बुध सूरज साथ जब इक राशि इक सेज। जौ, गेहूं चावल, चणा, जुवार बाजरा तेज॥"** इसके अलावा धातुओं तिलहन, बिनौला, मोती, जवाहरात, रुई आदि पर भी तेजी का प्रभाव होगा। यह मीटिंग १४ मई तक चलेगी। परन्तु ९ मई आर्द्रा का शुक्र मन्दी कारक है। दिन सात के अन्दर कभी भी अचानक मन्दी का वातावरण बनायेगा। यदि रुई में अच्छी मन्दी आए तो तुरन्त खरीद कर शीघ्र ही अच्छी तेजी में बेचकर नफा लें। यह एक चांस है। ता. १४ मई बुधास्त पूर्व यहां अटके हुए रुई, सोना-चांदी में घटाबढ़ी से तेजी का तूफान मालूम दे। अर्थात् प्रथम पांच दिन तेज फिर ६ दिन मन्दा तो फिर सात दिन तेज। इसी हाशियारी का उपयोग करते हुये काम करो लाभ होगा। ता. १५ मई वृष संक्रान्ति खर्पर योग युक्त है। घोर तेजी कारक है। विशेष प्रभाव, अनाज, दलहन, चांदी, गुड़, तेलों में होगा। यदि आज वर्षा हो तो किराने की जो भी वस्तुएं मन्दे स्तर पर हों स्टाक करके चार मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ हो।

प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अधिक मास आरम्भ—पक्ष में सोना चांदी में जनरल लाईन तेज रहे। एक दो उछाले अच्छी तेजी के संभव हों। सुदी तीज आर्द्रा नक्षत्र युक्त है। **"दुतिया तृतीया जेठ सुदी आवै आर्द्रा रिक्ष। वर्षे तो कर्षे नमी दरसै दु:ख दुर्भिक्ष॥"** (भविष्य भारती से) आज वर्षा होना खराब है। सुदी चौथ का क्षय पक्ष में दलहन मूंग एवं घी में जनरल लाईन तेज रहे। ता. २१ मई से एक मास के अन्तर्गत एशिया महाद्वीप के कुछ देशों में कोई भारी घटना तथा भारी उपद्रव आदि से जनता भयभीत रहे। ता. २२ मई से पुन. शुक्र दिन सात के अन्दर रुई, सोना, चांदी, सरसों आदि में बीच-बीच में मन्दी के रियक्सन लाता रहेगा। रुख देख कर काम करना चाहिए। ता. २६ मई मेष राशि में गुरु का प्रवेश सुख सुभिक्षकारी तथा सुख समृद्धि की वृद्धिकारक है। माघ फाग्गुन में अनाजों में अच्छी तेजी लायेगा। भाद्रपद मास में गेहूं, चावल, घी, उड़द आदि में बाजार मन्दा चलेगा। ता. ३० मई रविवारी पूनम तेजी कारक है। दिन ३ के अन्दर प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में कम ज्यादा तेजी की उछालें लायेगी। कर्क राशि राहु-शुक्र योग से आकाश में बादल खूब होंगे तथा रस पदार्थ, सोना, चांदी, घी, अनाजों में तेजी लायेगा। ता. ३१ मई मृगे बुध दिन सात के अन्दर गेहूं, तिल, उड़द, सरसों, तिलहन के भावों में बीच-बीच में मन्दी के रियक्सन लायेगा। रुई, चांदी में घटाबढ़ी। वायु के साथ वर्षा कारक है।

जून मास—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ५, १२, २६ हैं तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें-७, १४, २१, २८ जून हैं। इन तारीखों में विशेष तेजी मन्दी के झटके आने संभव हैं।

द्वितीय ज्येष्ठ मास—इस मास में पांच सोमवार उत्तम फल दायक हैं। मास मन्दी प्रधान रहे। परन्तु सुदी पक्ष की बजाय कृष्ण पक्ष में व्यापारिक वस्तुओं, अनाजों, सोना, चांदी, धातुएं, रुई, किराना सामान आदि में मन्दी रहेगी। मास में वर्षा अच्छी होने के साथ-साथ हानिकारक भी सिद्ध होगी। शुक्ल पक्ष में लाल वर्ण

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

की वस्तुओं में तेजी चमकेगी। मासान्त में घी, तेल, कपूर, नमक आदि वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। फिर भी कुल मिलाकर मास में आवरेज मन्दी का जोर रहे। ता. १ जून मार्गी मंगल-किराना में मन्दी लायेगा। अपने बक्री काल में जो-जो वस्तुएं जिस हिसाब से तेज हुई थी। उसी हिसाब से यहां उनमें मन्दी आ जायेगी। रुई में अच्छी मन्दीकारक है। रुई के व्यापारी रुख देखकर काम करें। ता. ५ जून बुध का उदय पश्चिम में होगा। मन्दी तथा अति वृष्टिकारक है। सोना, चांदी, लाख, चपड़ा, रुई, बारदाना, अनाज, तिलहन आदि के भाव मन्दी की तरफ झुक जायेंगे। बदी दशमी रेवती नक्षत्र युक्त है। **ज्येष्ठ कृष्णा दशम्यां च रेवती सुख कारिमी॥** सुख सुभिक्षकारी है। यह योग भी मन्दी को सपोर्ट करेगा। ता. १३ जून रविवारी मावस रुई, पाट, बारदाना, चांदी में दिन ३ के अन्दर मन्दी के रियक्सन लायेगी।

सुदी एकम् पुनर्वसु का बुध दिन सात के अन्दर कभी भी अचानक रुई, सूत, कपास, बिनौला, चांदी, बारदाना में खासी मन्दी आ सकती है। ता. १५ जून मिथुने संक्रांति ४५ मुहूर्ती मन्दी कारक है। अन्न के भावों में गिरावट आयेगी। परन्तु लाल रंग की वस्तुओं के भावों में कुछ तेजी लायेगी। यहां सूर्य-चन्द्रमा एक राशि पर होने से नेष्ट फलकारी माने गये हैं। परन्तु मित्र ग्रह में होने से श्रेष्ठ फलकारी हैं। यथा—**चन्द्र सूर्य संक्रांति को एक राशि पर नेष्ट। मित्र ग्रह में होय तो हो जाते हैं श्रेष्ठ॥** यदि आज वर्षा हो तो शहद तथा मोम का स्टाक छः मास पश्चात् बेचने से उत्तम लाभ हो। ता. २२ जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर १३.०५ बजे प्रवेश होगा। यदि प्रवेश के समय वर्षा हो तो आगे ४५ दिन वहां वर्षा नहीं होगी। यदि आकाश निर्मल रहे तो आगे वर्षा एवं उत्तम पैदावार होगी। सोमवारी पूनम मूल नक्षत्र युक्त है। **पूर्णमासी ज्येष्ठ की मूल नखत शुभ योग। सुख सम्पत्ति आनन्दमय सुखी रहें सब लोग॥** सुख सुभिक्षकारी योग है। यह योग बाजार का रुख मन्दी की ओर ले जाता है। परन्तु धीमी गति से।

आषाढ़ मास—इस मास में तिलहन, दलहन, अनाज, दालें, साग सब्जियां, फल, फूल, घी, मसाला आदि प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में जनरल लाईन तेज रहेगी। इनमें किसी में कम तो किसी में अच्छी तेजी के झटके भी संभव होंगे। कृष्ण पक्ष में वर्षा अच्छी तथा शुक्ल पक्ष में वर्षा की कमी रहे।

जुलाई मास—इस मास में तेजी की प्रधान तारीखें—२, १०, १७, २० एवं २४ तथा मन्दी की प्रधान तारीखें ५, १२, १५, १९ जुलाई है। ता. १ जुलाई बुदी ३ श्रावण नक्षत्र युक्त है। **पड़वा दोयज तीज तक प्रथम पक्ष आषाढ़। श्रवण धनिष्ठा होय तो अन्न संग्रहों गाढ़॥** यह योग अन्न का स्टाक करने की राय देता है। आगे लाभ होगा। ता. ६ जुलाई स्वाती का मंगल दिन १५ के अन्दर रुई में कुछ झटके अच्छी तेजी के संभव हों। अनाज, तिलहन, रुई, तेलों में तेजी को सपोर्ट करेगा। चांदी में घटबढ़ तो सोना में मन्दी आयेगी। यदि आज दिन में आकाश बादलों से ढका रहे तो अनाज गल्ला मालों में तेजी आ जायेगी। यदि रात्रि में आकाश निर्मल रहे अर्थात् बादल आदि न होतो रुई में शीघ्र तेजी आ जायेगी। यदि चन्द्रमा बादलों में छुपा रहे तो आगे भारी वर्षा होगी। यथा—**साढ़ बदी आठें अगर बादल चन्दा जोय। वर्षा ऋतु में जानिए भारी वर्षा होय॥** (भविष्य भारती से) ता. ११ जुलाई बक्री बुध तेजीकारक है। रस पदार्थों बिनौला, मूंगफली, तिल, तेलों, शेयर्स के भावों में वृद्धि होगी। आगे अनाज, चांदी में अत्यधिक तेजी के उछाले ला सकता है।

आषाढ़ सुदी एकम् का क्षय तेजीकारक है। पक्ष में व्यापारिक वस्तुओं में जनरल लाईन तेज रहे। घी में अच्छी तेजी चल सकती है। ता. १६ जुलाई कर्क संक्रांति पू.फा. नक्षत्र में होने से दुर्भिक्षकारी है। भड्डली जी कहते हैं—**आर्द्रा भरणी चित्रा मघा तीनों पूर्वा शतभिषा। आठ नक्षत्र जो कर्क डेढ़ ककड़ो ध्यान॥ सायर सोखे रवि तपै, अन्न मंहगों जु जाव। अमर भणीजे, भड्डली छत्र भंग जु होवे॥** अर्थात् वर्षा की कमी, किसी श्रेष्ठ पुरुष की मृत्यु, सूर्य की धूप अधिक तथा किसी राज्य का मन्त्रीमण्डल भंग, परिवर्तन आदि तथा अन्न तेज होगा। ता. १८ जुलाई रविवारी छट अनाज में तेजीकारक है। अतः अनाजों में अच्छी तेजी आयेगी। साथ में बक्री बुधास्त जोरदार तेजी में सहायक होगा। इसका प्रभाव, चांदी, अनाज गल्ला माल आदि पर पड़ेगा। किराना, रस पदार्थों के भावों में भी वृद्धि होगी। ता. २८ जुलाई या ११ अगस्त या दोनों दिन यदि कोई उत्पात दिखाई दे जैसे भयंकर वर्षा, ओले बहुत गिरे, काले पीले रंग की घोर तूफान, बिजली भयंकर गर्जना करते कई स्थानों पर गिरे, सूर्य चन्द्रमा पर घेरा दिखाई दे आदि होतो सोना, चांदी, पीतल आदि धातुएं व घी, तेल, गुड़, खाण्ड, चीनी आदि का स्टाक करके एक मास बाद बेचने से उत्तम लाभ हो।

श्रावण मास—इस मास पाँच गुरुवार मध्यम फल देने वाले है। **"चैत्र च श्रावणे मासे पंच जीवो यदा भवेत। दुर्भिक्षं रौरवं घोरं छत्र भंग न संशयः॥"** दुर्भिक्षकारी, घोर कष्ट, मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन अथवा भंग होना तथा ईशान कोण की दिशा (उत्तर पूर्व का मध्य) में भारी उपद्रव, प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प आदि से जन-धन की हानि संभव। मास में खण्डवृष्टि अर्थात् कहीं ज्यादा कही कम तथा कही सूखा पड़ेगा तथा कुल मिलाकर वर्षा की कमी महसूस होगी। मास में अनाजों में अत्यधिक तेजी तथा तिलहन, दलहन, घी, किराना, लाल रंग की वस्तुओं, रुई, सोना, चांदी में बाजारों में तेजी का ही जोर रहेगा। मास में हर घटे भाव पर माल खरीद कर बेच देने से लाभ होगा। ता. २९ जुलाई प्रतिपदा गुरुवारी। **"सावन कृष्णा प्रतिपदा जो होवे गुरुवार। उर्द मूंग तिल तेल का मंहगा चले बाजार॥"** ता. ३१ जुलाई बड़ी ३ शनिवारी प्रायः सभी प्रमुख बाजारों में तेजी के उछाले आयेंगे। तीन दिन बाजार तेज रहेगा।

अगस्त मास—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें-७, १०, २१, २४, २८ एवं ३१ तथा मन्दी का प्रमुख तारीखें-२, १२, १६, २३, ३० अगस्त। ता. १ अगस्त को यदि किसी भी इलाके गांव आदि में आकाश में अच्छे बादल छाये हुए हो तो वहां पर अठारह दिन वर्षा नहीं होगी। ता. ४ अगस्त को यदि आकाश में बादल छाए हुए हो तथा हवा भी जोरों से चले तो आगे आश्विन मास में गेहूं, चना, ताम्बा तेज तथा पाट, जूट, बारदाना, किराना मन्दा हो जायेगा। मकई की पैदवार उत्तम होगी। ता. ७ अगस्त से १० दिन के अन्दर (लाईन परिवर्तन योग) गुड़, रुई, गुवार, मटर, सरसों में मन्दी से अचानक अच्छी तेजी के भटके आ सकते हैं। अतः रुख देखकर काम करें। बदी एकादशी रोहिणी युक्त है। **"सावन बदी एकादशी रोहिणी संवत् जान।"** अर्थात् संवत् श्रेष्ठ होगा। शुभ योग है।

सुदी २ चन्द्रदर्शन तेजी कारक है। प्रायः व्यापारिक वस्तुओं के भावों में तेजी आयेगी। परन्तु दोनों सींग बराबर होने से एक मास में बाजार ऊंचा नीचा चलता समान आ जायेगा। ता. १७ अगस्त सिंह की संक्रान्ति - **"ईख शर्करा मिष्ट रस गुड़ हल्दी तिल तेल। सोना तांबा तेज हो, सूर्य सिंह के मेल॥"** ज्येष्ठा आर्द्रा शतभिषा स्वाती सुलेखा मार्हि। जो सूर्य संक्रमण हो महंगा अन्न बिकाहि॥ उपरोक्त वस्तुएं तेज होंगी। पूर्णिमा तक विशेष प्रभाव रहेगा। श्रावण शुक्ल पक्ष में वर्षा समुन्द्र में तो अधिक परन्तु अन्य स्थानों पर कम होवे। अर्थात् वर्षा की कमी तथा आंधी वायु तूफान का जोर रहे। ता. २३ अगस्त वृश्चिक राशि का मंगल-सभी प्रकार के द्रव्य पदार्थ (तरल) में तेजी का संचार होगा। रुई, सोना, चांदी में तेजी का चांस मिल सकता है। परन्तु गुरुदेव बक्री हो रहे हैं। व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का संचार करेगा। अतः सप्ताह दो सप्ताह बाजार का ही रुख देखकर काम करें। अन्यथा हानि उठानी पड़ सकती है। क्योंकि प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

घटबढ़ ज्यादा चल सकती है। शुक्र का उदय भी हो रहा है। इसके प्रभाव से आगे नारियल, रेशम, पंचवर्ण, रेशमी, सूत आदि में भारी तेजी आ सकती है तथा किसी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के प्रसिद्ध व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है। ता. २६ अगस्त को यदि आकाश निर्मल रहे तो श्रेष्ठ है। यदि बादल आदि हो तो घी, तेल का व्यापार करें। लाभ होगा।

भाद्रपद मास—मास में शनि+गुरु दोनों साथ-साथ बक्री चलेंगे। यह एक महत्वपूर्ण योग है एवं २० दिसम्बर तक साथ-साथ रहेंगे। यहां रुई में धीरे-धीरे या अचानक अच्छी मन्दी लायेगा। सावधान! रुई के व्यापारियों को रुख देखकर काम करना चाहिए। मास में कई योग सुभिक्ष श्रेष्ठ फलकारी हैं। अतः दुर्भिक्ष जन्य अपराध उग्रवाद, दंगों आदि का ग्राफ नीचे आयेगा। मास में वर्षा की स्थिति ठीक है। ता. २९ अगस्त से तीन ग्रह एक साथ बक्री चल रहे हैं। जो कि मन्दी कारक हैं। रुई, चांदी के बाजार गिर जायेंगे।

सितम्बर मास—ता. ३ सितम्बर बदी ८ रोहिणी युक्त है। **रोहिणी युक्त जन्माष्टमी शनि, रवि या भृगुवार। जौ, गेहूँ, अरु बाजरा महंगा मटर गुवार। महंगा मटर-गुवार, सोंठ, जीरा, किरयाना। सोना, शीशा, आदि धातु सब तेज बारदाना। कस्तूरी, तिल, तेल, हींग, गुड़ संग्रह कर लो। तीन मास पश्चात् नफा ले घर में घर लो।**" उपरोक्त चांस एक महत्वपूर्ण पूर्ण चांस हैं। ता. ९ सितम्बर शुक्रदेव मार्गी होंगे। पांच दिन तक सोना, चांदी, रुई, सरसों, अलसी, आदि में मन्दी चलकर तेजी आयेगी। दुधारु पशुओं में भारी मन्दी लायेगा। ता. १३ सितम्बर सुदी चौथ सोमवारा चन्द्रदर्शन उत्तम फसल का संकेत देता है। यथा- "**भादव शुक्ला चौथ को सोम गुरु भृगुवार। उ.फा., चित्रा, हस्त हो, उत्तम पैदावार॥**" ता. १६ सितम्बर सुदी छट अनुराधा नक्षत्र युक्त है। यह योग भी सुभिक्षकारी है। "**षष्ठी भादव सुदी में अनुराधा नक्षत्र। अन्य दोष मिट जाएं सब हो सुभिक्ष सर्वत्र॥**" यह योग दुर्भिक्षकारी योगों के फलों का नाश करके सुख सुभिक्ष प्रजा में सुख शान्ति पैदा करता है। ता. १७ सितम्बर कन्या की संक्रान्ति आवेगी। पन्द्रह मुहूर्ती बैठी स्थिति में होने से व्यापारिक वस्तुओं में तेजी कारक है। अनाज, तिलहन आदि में अच्छी तेजी (२८ सितम्बर से ७ अक्टूबर के मध्य) लायेगी। शकुन—"**भादव शुक्ला सप्तमी बादल गाज ना बीन। यह लक्षण दुर्भिक्ष का महंगी हो सब चीज॥**" ता. १९ सितम्बर राहू, केतु का नक्षत्र चरण परिवर्तन दो मास के अन्दर लोहा तथा लोहे से बनी हुई वस्तुओं में विशेष तेजी लायेगा। सावधान! इसके अलावा तेल, घी, गुड़, खाण्ड, लाख, चपड़ा, चांदी में भी मध्यम प्रकार की तेजी ला देगा। ता. २५ सितम्बर शनिवारी पूनम तेजी कारक है। प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के झटके दिन ३ के अन्दर तथा शेयरों में विशेष तेजी के झटके लायेगी। परन्तु रुई मन्दी हो।

आश्विन मास—इस मास में पांच रविवार दुर्भिक्षकारी हैं। रुई में मन्दी चले तो अन्य व्यापारिक वस्तुएं प्रायः तेज रहेंगी। मास में मूंग, मोंठ, चोला, उर्द, कपास आदि का स्टाक करके चैत्र में बेचने से अच्छा लाभ होगा। यह एक चांस है।

अक्टूबर मास—तेजी की प्रमुख तारीखें २, ५, १६, १९, २६ एवं ३० तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें ७, १४, २१, २८ अक्टूबर हैं। ता. ५ अक्टू. बदी एकादशी तेजी कारक है। स्वाती का बुध दिन ७ के अन्दर रुई में अच्छी मन्दी के झटके आ सकते हैं। सावधान! ता. ८ अक्टू. को यदि हवा जोरों से चले तो समझना चाहिए कि दस दिन बाद गल्ला भावों में तेजी आ जायेगी। ता. ९ अक्टू. शनिवारी मावस घोर तेजी कारक है। अनाजों के भावों में अच्छी तेजी। "**दुर्भिक्ष रोरव घोरं महा दुःख महदभयं पराङ् मुखा पित पुत्रा व्यसन शनिवासरे।**"

सोना, चांदी, रुई, तिलहन तेल, मशीनरी शेयर्स, गुड़ के भावों में वृद्धि करेगी। ता. ११ अक्टू. सुदी २ सोमवारा चन्द्रदर्शन तेजी कारक है। अनाजों के भावों में वृद्धि होगी। सोना, चांदी, तिलहन, नमक आदि के भावों में वृद्धि करेगा। यथा—"**जो शशि उगै सोम शनि एक अचम्भा जिय जोय। छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जू महंगों होय॥**" ता. १५ अक्टू. विशाखा का बुध दिन ७ के अन्दर रुई, सूत में मन्दीकारक है। अच्छी मन्दी भी आ सकती है। सावधान! ता. १७ अक्टू. तुला की संक्रान्ति ४५ मुहूर्ती तथा संक्रान्ति समय चन्द्रमा का निवास माहेन्द्र मण्डल में होने से मन्दी कारक है। अनाज के भावों में गिरावट तथा सोना, चांदी, रस पदार्थ, चावल, हल्दी, धनियां के भावों में तेजी लायेगा। इसका विशेष प्रभाव २८ अक्टू. से ७ नवं. के मध्य होगा। ता. १७ अक्टू. को यदि वर्षा हो तो तिल तेल, उर्द, मूंग, दलहन पदार्थ, मूंज का स्टाक करके चार मास पश्चात बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. २१ अक्टूबर को यदि पुरवा पवन (पूर्व की हवा) चले तो कार्तिक में गेहूँ एवं चना तेज हो। माघ-पौष में सर्दी अत्यधिक पड़ेगी तथा पाला कोहरा, ओला आदि से फसलों को काफी नुकसान की संभावना रहे। ता. २४ अक्टूबर को यदि आकाश निर्मल रहे तो अनाजों में मन्दी आ जायेगी। यदि बादल बिजली चमके तो अन्न का स्टाक करके चैत्र मास में बेचने से अच्छा लाभ होगा। ता. १९ अक्टू. सुदी नवमी मंगलवारी- "**नवमी मंगलवार जो शुक्ला आश्विन मास।**

मूंग, मोंठ चोला, उर्द संग्रह करो कपास॥"

के अनुसार उपरोक्त वस्तुओं का स्टाक करके चैत्र मास में बेचने से उत्तम लाभ हो। यह एक महत्वपूर्ण चांस है। सुदी १३ शनिवारी यहां सूर्य अपने नक्षत्र पर चल रहा है। पृथ्वी पर अनाज की कमी रहे। अनाजों में जनरल लाईन तेज रहे। यथा- "**आश्विन तेरस शशि दिना सूर नखत पर सूर। अन्न हीन भूमि रहे, मन्दी समझो दूर॥**"

कार्तिक मास—इस मास में पांच सोमवार तथा पांच ही मंगलवार हैं। मिलेजुले फल होंगे। बदी पक्ष में घी, तेलों में जनरल लाईन तेज तो सुदी पक्ष में घी, सोना, चाँदी, रुई, अनाज, किराना आदि प्रायः व्यापारिक किसी-किसी वस्तु में अच्छी तेजी संभव है। रविवारी दीपावली को स्वाती नक्षत्र, आयुष्मान योग युक्त होने से दुर्भिक्षकारी है। कहीं पर भूकम्प आदि से जन धन की हानि होना संभव है। यथा- "**कार्तिक मावस के दिना स्वाती नक्षत्र विचार। गिरे कहीं भूकम्प से पर्वत या मीनार॥**" ता. २९ अक्टू. बदी ५ आर्द्रा नक्षत्र युक्त है। पशुओं के घास चारे का स्टाक करने की राय देती है। इस योग के अनुसार आगे वर्षा बहुत कम होगी। ता. ३० अक्टू. उ.फा. शुक्र दिन सात के अन्दर मारवाड़ राजस्थान के कुछ इलाकों में उपद्रव आगजनी आदि हो तथा अन्न के भावों में गर्मी आयेगी। सोना, चाँदी में घटबढ़ चलेगी।

नवम्बर मास—इस मास में तेजी की प्रधान तारीखें ९, १३, १६, २०, २७, २८ एवं ३० तथा मन्दी की प्रधान तारीखें ४, ११, १८ नवम्बर हैं। ता. ३ नवम्बर कन्या राशि का शुक्र तेजी कारक है। अनाज, रेशम, गुड़, खांड आदि में तेजी लायेगा। प्राकृतिक कारणों से फसलों को नुकसान तथा चावल, शाल की लकड़ी में विशेष तेजी कारक तो रुई, चांदी, घी के भाव मन्दा करेगा। यदि आज आकाश बादलों से ढंक जाएं तो आगे आषाढ़ मास में उत्तम वर्षा होगी। ता. ५ नवं. को यदि आकाश में बादल गरजे या बिजली चमके तो गल्ला, अनाजों में तुरन्त तेजी आकर बाद में मन्दी आयेगी। ता. ७ नवं. शुभ दीपावली रविवारी आयुष्मान योग तथा स्वाती नक्षत्र युक्त हैं। "**कार्तिक मावस देखो जोशी रवि शनि भौमवार जो होशी। स्वाती नखत अरु आयु संयोगा काल पड़ै अरु नासे लोगा।**" दूसरे दिन विशाखा नक्षत्र में गोवर्धन पूजा सम्पन्न होगी।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भड्डली जी कहते हैं। ''स्वाती दीपक जो बरै खेल विशाखा गाय। धना गर्यादा रण चढ़ै उपजी साख नसाय॥'' प्राकृतिक आपदाएं युद्ध तथा फसलों को व्यापक नुकसान की आशंका रहेगी तथा अनाजों में तेजी चलेगी। ता. ९ नवं. आज का चन्द्रदर्शन प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में तेजी को सपोर्ट करेगा। ता. १० नवं. सुदी २ बुधवारी पक्ष में घी में तेजी की घोषणा करती है तथा बक्री बुधास्त तेजी कारक है। गल्ला, अनाज, चांदी में विशेष तेजी कारक है। अतः इनके भावों में वृद्धि होगी। ता. १२ नवं. से दिन १३ के अन्दर जो भी वस्तुएं मन्दे स्तर पर खरीदना तथा तेजी चल रही हो बेचकर लाभ लेना चाहिए। ता. १६ नवं. वृश्चिक संक्रान्ति काल में कपड़े तथा नारियल के व्यापार से विशेष लाभ की संभावना रहेगी। ता. १८ नवं. मकर राशि का मंगल एक मास के अन्दर घी, तेल, सोना, चांदी, तांबा, रुई, अलसी, अरण्डा, तिलहन पदार्थ, गर्म वस्त्रों आदि में तेजी कारक है। यहां राहू+शनि की दृष्टि से विशेष तेजी संभव होगी। सावधान!

मार्गशीर्ष मास—इस मास का फल साधारण है। बदी पक्ष में वर्षा योग है। विशेषकर गुजरात, बम्बई, महाराष्ट्र आदि में भारी वर्षा हो सकती है। घी, तेल में पूरे मास जनरल तौर पर तेजी बनी रहेगी पर रुई में मन्दा चलेगा परन्तु एक दो उछाले अच्छी तेजी के संभव हैं। बदी पक्ष में सभी प्रकार के खाद्य सामान सब्जियां, दालें, मसाले आदि में बाजार जनरल तौर पर तेज रहेगा। मार्गी बुध घटाबढ़ी कारक है। रुई में प्रथम मन्दी होकर तेजी तथा शेयर्स के भावों में गिरावट दर्ज होगी तथा चांदी में तेजी आयेगी।

दिसम्बर मास—इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ७, ११, २१, २५, २७ एवं २८ तथा मन्दी की प्रमुख तारीखें २, ९, १६, ३० दिसं. हैं। ता. १ दिसं. श्रवण नक्षत्र पर मंगल का प्रवेश-अनाजों में अच्छी तेजी कारक है। ''श्रवण नखत पर कोई ग्रह हो क्रूर। अन्न भाव महंगा रहे, गेहूँ तेज जरूर॥'' अनाज, सोना, चांदी, तिल तेल, अफीम, तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों में भी तेजी की चमक आयेगी। ता. ६ या ७ दिसं. या दोनों दिन सूर्य बादलों से ढका रहे तो अनाज घास चारा में तेजी आ जाये। इसके प्रभाव से अनाजों में चार मास तेजी चलकर फसल पर ही मन्दी आवेगी। मंगलवारी मावस दिन ३ के अन्दर लाल रंग की वस्तुएं, रस पदार्थ, लाख, चपड़ा, सुगन्धित वस्तुएं, काली वस्तुओं में प्रायः एक बार तेजी का उछाला जरूर आयेगा। सुदी एक बुधवारी पक्ष में घी में जनरल लाईन तेज रहे तथा अनुराधा का बुध दिन ७ के अन्दर बीच-बीच में अनाजों, रुई, सूत, सोना, चांदी में मन्दी के रियक्सन लाते रहेगा। सुदी पक्ष में प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में प्रथम मन्दी चलकर पक्षान्त में कुछ तेजी आयेगी। ता. १६ दिसं. धन संक्रान्ति काल में व्यापारियों की अपेक्षा कृत लाभ कम होगा। यदि आज वर्षा हो तो नोट करें कि आगे गेहूँ, चना की रिकार्ड पैदावार होगी। यदि दिन या रात में बिजली चमके तो आगे श्रावण मास में निश्चय ही उत्तम वर्षा होगी। ता. १७ दिसं. विशाखा शुक्र दिन १० के अन्दर रुई, चांदी, चावल, सोना, सरसों में मन्दी का रियक्सन लाते रहेगा। ता. २१ दिसं. गुरुदेव मार्गी होंगे। दिन १३ के अन्दर सोना, चांदी, सरसों, मूंगफली, कपास आदि में एक उछाला आकर बाजर मन्दा होगा। यह उछाला ५ दिन पूर्व से भी आ सकता है तथा घी का बाजार तेजी का ही बना रहेगा। चमड़ा में मन्दी तो तम्बाकू, नशीले पदार्थों का बाजार गर्म होगा। ता. २६ दिसं. कुंभ राशि का मंगल-व्यापार की प्रमुख वस्तुओं सर्व अनाजों गुड़, खाण्ड, सोना, दलहन के भावों में तेजी कारक है। शीघ्र ही इनके भावों में वृद्धि होगी। रुई, लहसून, चावल, चांदी, सफेद वस्तुओं के भावों में गिरावट दर्ज होगी। ता. २९ दिसं. पू.षा. का सूर्य दिन १५ के अन्दर सर्दी में बढ़ोत्तरी। तिल तेल, हल्दी, लाख, चपड़ा, ऊनी वस्त्रों के भावों में वृद्धि करेगा।

नोट-यह लेख ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध, राशि परिवर्तन, वक्री, मार्गी, उदयास्त, तिथि, वार, योग, ग्रहों के नक्षत्र चरण परिवर्तन आदि अन्य महत्वपूर्ण योगों के आधार पर लिखा गया है। होना न होना ईश्वराधीन है। एक ही समय में एक योग तेजी का तथा दूसरा योग मन्दी का हो तो बाजार का रुख देखते हुए काम करना चाहिए। लाभ-हानि में हमारी किसी भी स्टेज पर कोई जिम्मेवारी नहीं होगी। यह ध्यान में रखना चाहिए।

आवश्यक सूचना

हमारे लेखों से लाभान्वित होने पर हजारों व्यापारियों ने हमें प्रशंसा पत्र भेजे हैं। हम इस सूचना के माध्यम से उनका आभार प्रकट करते हैं। यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्यौरा, सिलसिलेवार, सालभर का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक ''भविष्य फल प्रकाश'' सन् १९९९ ई. का मंगाकर व्यापार में लाभ उठाएं। पुस्तक समय से मंगा लें। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई योग आये हैं। अतः व्यापार की उन्नति के लिए पुस्तक अवश्य मंगाकर पढ़ें। प्रकाशित हो चुकी है। ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मन्दी के बारे में विश्लेषण एवं पूर्वानुमान से सम्बन्धित यह पुस्तक गत ५० वर्षों से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में साल भर की दैनिक तेजी-मन्दी मासिक विश्लेषण, माल स्टाक करने के उचित महत्वपूर्ण मौके, माल खरीदने-बेचने की महत्वपूर्ण लाभकारी तारीखें (प्रत्येक मास की) अनाज, किराना, तिलहन, सरसों, सोना, चांदी आदि धातुएं शेयर्स, गुड़, खांड, घी, रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसून, रुई, पाट, वारदाना आदि सभी व्यापारिक वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भर के), महत्वपूर्ण लेख चांस भी प्रकाशित किया गया है। मूल्य ८५/- प्रति कापी डाक व्यय रु. १५/- अलग। १००/- रुपया मनीआर्डर द्वारा/पोस्टल आर्डर द्वारा भिजवाएं। मंगाना न भूलें। आज ही आदेश भेजें।

हमारी दूसरी पुस्तक ''भविष्य भारती'' अर्घ काण्ड सम्बन्धी अद्भुत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी दोहों के रूप में है। इस पुस्तक में ज्योतिष के योगा योग (फारमूले) दिए गये है। यह लेख भी इसी के आधार पर लिखा गया है। उपयोगी पुस्तक है एवं हमेशा काम आयेगी। मूल्य ४५/- रुपया डाक व्यय ५/- अलग। पुस्तकें वी.पी. से मंगाने के लिए रु. ५०/- का मनीआर्डर अग्रिम भेजना आवश्यक है। अपना पता साफ-साफ हिन्दी, उर्दू, अथवा अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें। निम्नलिखित किसी भी एक पते पर पत्र-मनीआर्डर भेजें।

हमारा पता - प्रकाश पुस्तकालय
पो. आ. खोरी,
जिला रेवाड़ी
(हरियाणा) पिन १२३१०१

श्री रामावतार गुप्ता
राव उमराव सिंह मार्केट,
आर्य समाज रोड,
नई सब्जी मण्डी, रेवाड़ी-१२३४०१

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों का शेयर मार्केट पर प्रभाव, सन् 1999 ई.

जनवरी ९९— नववर्ष आपको लाभप्रद हो. २ जन. शेयर का भाव गिरे, ६ जन. भावों में सुधार, ९ जन. भाव सर्पमुखी चाल में, १३ जन. भावों में अस्थिरता को बल, १९ जन. भाव गिरे, २१ जन. शेयर बाजार में गर्मी को बल, २७ जन. बाजार में चमक बनी रहेगी, २८ जन. बाजार में झटके के साथ मंदी, ३० जनवरी सर्दी की वृद्धि के साथ-साथ भावों में भी चमक। **फरवरी ९९** — १ फर. घटा-बढ़ी के साथ तेजी, ७ फर. शेयर सर्पमुखी चाल में, ११ फर. भावों में गिरावट, १६ फर. वर्षा हो तो मंदी अन्यथा तेजी, २० फर. शेयर घटाबढ़ी में चलकर तेजी की ओर, २२ फर. भावों में गिरावट, २५ फर. बाजार लाइन में सुधार, २६ फर. भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा, विशेष जानकारी के लिए रिपोर्ट मंगावें। **मार्च ९९**— २ मार्च भावों में तेजी को बल, ६ मार्च भाव गिर कर उठे। ११ मार्च भावों में विशेष सुधार की आशा, १६ मार्च नवीन शेयरों के आगमन से तेजी को बल, २० मार्च भाव गिर कर उठे, २२ मार्च चलते बाजार में परिवर्तन, २५ मार्च भाव मन्दी की ओर, २६ मार्च तेजी को बल, ३० मार्च भावों में गर्मी, बजट भी भावों में गर्मी देगा। **अप्रैल ९९** — २ अप्रैल शेयर बाजार में मन्दी को मान, ७ मार्च भाव घटाबढ़ी के साथ उठे, १३ अप्रैल बाजार में गर्मी, १६ अप्रैल भाव सर्पमुखी चाल में उठे, २२ अप्रैल भावों में साधारण सुधार, २५ अप्रैल शेयर बाजार में गर्मी, २८ अप्रैल सर्पमुखी बढ़त से सावधान रहें। भाव झटके के साथ गिरेंगे। **मई ९९** — १ मई भाव गिरे, ४ मई भावों में सुधार लेकिन विशेष नहीं, १० मई साधारण चमक १५ मई बादल हों तो तेजी अन्यथा साधारण मन्दी, १६ मई चमक बरकरार बनी रहे। २० मई शेयर भावों में मन्दी, २५ मई भाव गिर कर उठे, २९ मई सर्पमुखी चाल में मंदी का झटका, ३० मई भावों में तेजी विशेष सम्पर्क करें। **जून ९९** — २ जून बाजार भाव में मन्दी, ५ जून शेयर घटाबढ़ी के साथ उठे, ८ जून भावों में मन्दी छायी रहे, १७ से १८ जून तक मंदी के विशेष झटके, २० जून भावों में सुधार, २७ जून भावों में तेजी को बल मिलेगा। अन्तिम सप्ताह बाजार में सर्पमुखी चाल में चलकर पलट जाना चाहता है। अतः सतर्कता से काम लें। **जुलाई ९९** — २ जुलाई भाव गिरें, ७ जुलाई सर्पमुखी चाल में भाव उठे, बीच में कुछ अच्छी तेजी के झटके भी संभव हैं। ८ जुलाई से १५ जुलाई तक बाजार में घटाबढ़ी अधिक रहे, १६ जुलाई तेजी के उछाले, २० जुलाई बाजार सामान्य रहें। २४-२६ जुलाई बाजार सामान्य कोई विशेष परिवर्तन नहीं, ३० जुलाई भावों में सुधार, मध्यम तेजी के झटके। **अगस्त ९९** — १ अगस्त बाजार में तेजी सुधार, ३ अगस्त बाजार में तेजी को बल मिले, ५ अगस्त गिरावट रहे, ११ अगस्त बाजार में विशेष मंदी, १७ अगस्त भावों की अस्थिरता टूटे, २१ अगस्त गिरे भाव भी उठे, २५ अगस्त शेयर भाव घटाबढ़ी के साथ सामान्य, २७ अगस्त चलते-चलते भावों में तेजी को बल मिले। २९ व ३० अगस्त को मंदी के करारे झटके। **सितम्बर ९९** — १ सितम्बर से १० सितं. तक बाजार भाव तेज रहेंगे। ७ व ९ को घटाबढ़ी के झटके हैं। अतः बाजार रुख देखकर कार्य करें। १४ सितं. भावों में अस्थिरता को बल मिले, १९ सितं. भावों में मन्दी का प्रभाव, २२ सितं. शेयर भाव उठकर गिरे, २६ सितं. नवीन विदेशी व देशी शेयरों के प्रवेश के साथ बाजार गर्म रहे तेजी को विशेष बल मिले। **अक्टूबर ९९** — ५ अक्टूबर बाजार रुख में सुधार होकर भावों में मजबूती आयेगी लेकिन कोई विशेष नहीं, ५ व ६ अक्टूबर घटा बढ़ी के साथ भावों में सुधार, २० अक्टूबर भावों में गिरावट, २५ अक्टूबर सर्पमुखी चाल में तेजी के झटके, २३ अक्टूबर जनरल लाइन तेज, २८ अक्टू. बाजार में गर्मी के साथ-साथ अस्थिरता को बल मिले। **नवम्बर ९९** — १ नवम्बर बाजार सामान्य भाव से खुलकर उठे, ६ नवम्बर तेजी के अच्छे झटके, १२ नवम्बर मंदी मध्यम, १४ नवम्बर लक्ष्मी माँ की कृपा बने तेजी के झटके, २० नवम्बर भाव गिरकर उठे, २५ नवम्बर घटाबढ़ी चलती रहे। ३० नवम्बर तक अच्छी तेजी के अवसर के साथ-साथ बीच में मध्यम मंदी भी आ सकती है। **दिसम्बर ९९** — ३ से ५ दिसं. तक मंदी के झटके, ११ दिसम्बर शेयर सर्पमुखी चाल से उठें, १४ से १६ दिसं. तक अच्छी तेजी के चान्स, २० दिसं. भाव गिरें, २५ दिसं. घटाबढ़ी के साथ बाजार उठें, २६ दिसं. को साधारण मन्दी वर्षान्त शेयर मार्केट उठ गिरकर भी गर्म रहेगी।

नोट-शेयर बाजार की जानकारी ग्रहों के आधार पर है परन्तु शेयर बाजार में कुछ अन्य ग्रह भी हैं जिनका असर इस मार्केट पर होता है। राजनैतिक परिवर्तन व अस्थिरता, मौसम के परिवर्तन का प्रभाव ज्योतिष गणना से अधिक होता है। एक विशेष ग्रह शेयर ब्रोकर (सटोरिया, शेयर दलाल) जो हर समय इस बाजार पर प्रभाव रखता है अतः आप सभी पर निगाह रखें। व्यापार में लाभ के लिए वर्ष १९९९ का भविष्य फल १००/-, तेजी-मन्दी दर्पण गाइड १००/-, एक मास की रिपोर्ट ७१/-, एक वर्ष के ६००/- हैं व प्रति शेयर का मासिक भविष्य ५१/- है। पत्रोत्तर के लिए जवाबी कार्ड भेजें। मिलने के लिए आने से पहले समय लें व पंजीकृत ग्राहक के लिए २०/- पृथक् होगा।

श्री पुरुषोत्तम (अधिक मास के लक्षण और कर्त्तव्य) सन् १९९९ ई. वि.सं. २०५६

असंक्रांति मासोऽधिक मासो स्फुट स्यात्। द्वि संक्रांति मास क्षयोख्यः कदाचित्॥ भास्कराचार्य॥

चन्द्र और सौर मासों के अन्तर का नाम ही अधिक मास है। एक सौर वर्ष और चन्द्र मास का अन्तर समयव समान होता है। अतः मध्यम मान से ३२ मास १६ दिन ४ घड़ी बीतने पर अधिक मास संभव होता है। कुछ आचार्यों ने ३० से ३४ मास तक अधिक मास होने की संभावना कही है। जिन दो अमावस्याओं के बीच सूर्य की संक्रांति नहीं होती तो वह मास अधिक मास, पुरुषोत्तम मास कहलाता है।

इस वर्ष १९९९ में अधिक मास ज्येष्ठ है। चैत्रादि १२ मासों में वरुण, सूर्य भानु, तपन, चन्द्र, रवि समास्ति धर्मा, हरण्य रेता, दिवाकर, मित्र और विष्णु १२ सूर्य होते हैं और अधिमास इनसे पृथक रह जाता है। इस कारण इसको मलिम्लु मास भी कहते हैं। अधिमास में फल प्राप्ती की कामना से किये जाने वाले प्रायः सभी कर्म वर्जित हैं और फल की आशा से रहित होकर करने के सभी आवश्यक कार्य किये जा सकते हैं। क्योंकि— "न कुर्याद्विधिके मासि काम्य कर्म कदाचन्।" अतः कुंआ निर्माण बावली और बाग आदि का प्रारम्भ, प्रतिष्ठा, किसी भी प्रयोजनों के व्रत का प्रारम्भ, उत्सर्ग, उद्यापन, विवाहिता वधू का प्रवेश, पृथ्वी, सोना, तुला आदि का महादान, सोमयज्ञ, अष्टका श्राद्ध, गौ का यथोचित दान ग्रहण, नवीन यज्ञ से अन्न, वर्षा ऋतु में संग (सांवत्सर), गौसरे का प्रथमारंभ, उपाकर्म (श्रावणी पूर्णिमा), ऋषि पूजन, वेद व्रत, नील वृष का विवाह, अति पन्न (बालकों के नियतकाल में न किये हुए संस्कार), दीक्षा देवताओं की स्थापना, यज्ञोपवीत संस्कार, विवाह, मुंडन, प्रथम देव और तीर्थदर्शन, सन्यास, अग्नि परिग्रह पूजा के दर्शन, अभिषेक, प्र[illegible] यात्रा, चातुर्मासीय व्रत का प्रारम्भ, कर्णवेध, परीक्षा ये सब अधिमास और गुरु-शुक्र अस्त, बालक होने के तीन दिनों में क्षय मास में सर्वथा वर्जित हैं।

इनके अतिरिक्त प्राणघातक रोगादि की निवृत्ति के लिए रुद्र जपादि, अनुष्ठान, कपिल षष्टी आदि व्रत अनावृष्टि निवारण के पुरुश्चरण ग्रहण संबंधी श्राद्ध, दान, जप, पुत्र जन्म के कृत्य, पितृ मरण के श्राद्धादि, पुंसवन और सीमा जैसे संस्कार, अवधि समाप्त करने के पूर्वागत और सीमन्त जैसे संस्कार, नियत जैसे संस्कार, नियत अवधि समाप्त करने के पूर्वागत प्रयोगादि किये जा सकते हैं।

मलमास के रूप में निंदित इस मास को भगवान पुरुषोत्तम ने आप नाम और स्वरूप देकर कहा है कि इस मास का स्वामी हूँ और मेरी ही तरह विश्व इसको पवित्र मानेगा। यह मास मेरी सादृश्यता प्राप्त कर सब मासों का अधिपति होगा और इस मास में पूजा करने वाले मनुष्य के दुःख दारिद्रय का नाश करने वाला होगा। अधिमास में प्रथम शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से द्वितीय कृष्ण की अमावस्या तक पुरुषोत्तम मास के व्रत नियम से रहकर श्री हरि की विधि पूर्वक पूजा करने से भगवान् प्रसन्न होते हैं। श्री हरि की पूजा करने वाला यहां सब प्रकार के सुखों को भोगकर मृत्यु के बाद श्रीहरि के दिव्य लोक में वास करता है। यदि मास पर्यन्त की सामर्थ्य न हो या उतना अवसर न मिले तो किसी भी दिन भगवान् वासुदेव को हृदय में रखकर उपवास करें सप्रेम पूजन, जप, दान इत्यादि करें।

महर्षि बाल्मीक ने अधिक मास के नियमों के विषय में कहा है। इस मास में गेहूँ, चावल, सफेद धान, जौ, तिल, बथुआ, मटर, ककड़ी, केला, सामक, घी, आम, कटहल, हर्र, पीपल, जीरा, सौंठ, इमली, सुपारी, आंवला, सेंधानमक आदि हविष्यान्न भोजन करना चाहिए। सभी प्रकार के अभक्ष्य पदार्थ, मांस, शहद, चौलाई, माड़, राई, उड़द, प्याज, नागड़मोथा, लहसन सभी नशे की वस्तुएं, गाजर, मूली, गोभी, दाल, तिलपत्र का तेल, दूषित और निन्दित अन्न का त्याग करना चाहिए।

देवी, देवताओं, वेद, ब्राह्मण, गुरु, साधु, सन्यासी, स्त्री व अपने से बड़ों की निन्दा नहीं करनी चाहिए। तांबे के बर्तन रखा दूध, चमड़े का पानी व केवल अपना भोजन दूषित होता है। सूर्योदय से पूर्व जागकर शौच, स्नान, संध्या क्रिया आदि धर्म का और अधिकार अनुसार नित्य कर्म करके श्रद्धापूर्वक भगवान की पूजा व पाठ करना चाहिए।

विशेष रूप से इस मास में-गोवर्धन धर्म वन्दे गोपाले धर्म गोप रूपिणां। गोकुलोत्सव की शानं गोविन्द गोपिका प्रिय॥ का श्रद्धापूर्वक जप करना चाहिए। मंत्र जप के समय श्री राधिका सहित द्विभुज श्री मुरलीधर पीत पटधारी श्री पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान हृदय में करना चाहिए और मंत्र का जाप करना चाहिए। भगवान् के स्तोत्र, परिक्रमा, तीर्थ दर्शन, जप, हवन आदि भी करने चाहिए। श्रीमद्भागवत की कथा का श्रवण, भगवन्नाम कीर्तन, गौ रक्षा हेतु दान, गौ सेवा, विधवा, अनाथ, असहाय साधु संत, ब्राह्मणों की निष्काम भाव सेवा व धर्मानुसार आचरण से स्वयं का, परिवार का, देश का और समाज के साथ विश्व का कल्याण होता है। देवीभागवत्, भविष्योत्तर पुराण, हेमाद्रि पूजा, पंकज भास्कर में पुरुषोत्तम मास का विशेष महत्व वर्जित है। श्रीमद्भागवत सप्ताह के व आदि अनुष्ठानों के सलाह व अन्य मार्ग दर्शन हेतु मिलें या पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

पत्र:- पं. अनिल कुमार व्यास, श्री अम्बा व्यापार भविष्य कार्यालय, राया (मथुरा) उ.प्र. दूरभाष: (०५६५)-८३३३५३ (नोट- फोन रात्रि ९ बजे के बाद व मिलने से पहले समय लें।)

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र शृंगोन्नत: विचार सं. २०५५-५६ वि. (सन् १९९९-२००० ई.)

चन्द्र दृश्याकृति — ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य कविराज, पं. शंकरलाल गौड़, "शंभु कवि"

उत्तरशृंग

दिनांक १९ जनवरी सन् १९९९ ई. भौमवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। पशु पक्षियों का भारी विनाश होता है। राजनैतिक पार्टियों का समीकरण विखराव के कगार पर जा सकता है। प्रादेशिक सरकार का अस्तित्व प्राय: समाप्त होता है। साम्प्रदायिक तनाव आकस्मिक बढ़ सकता है। गेहूँ, चना, मटर, उड़द, मूँग, मसूर, रुई, कपास पर भीषण तेजी के आसार का संकेत है। धातुवाने का भाव मंदी पर जावे।

सम शृंग

फरवरी मास में चन्द्रमा का उदय मुहूर्त ३० से है। बुधवार का चन्द्रमा सुख शान्ति का परिचायक है। शान्ति का वातावरण बने। दिनांक १७ फरवरी सन् १९९९ ई. बुधवार को चन्द्रदर्शन समशृंग से होगा। इस मास के चन्द्रमा से भारतीय सीमा पर छुटपुट हरकतें तथा घुस पैठ जारी रह सकती है। जगत में शान्ति चर्चा चलती रहे परन्तु कोई डेटफल नहीं निकल सकता है। गेहूँ, चना, जौ, मटर पर तेजी होकर एकदम मंदी हो जाया करती है। व्यापार सोचकर करें।

दक्षिण शृंग

दिनांक १९ मार्च सन् १९९९ ई. शुक्रवार को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से होगा। पड़ोसी राष्ट्रों से मतभेद होता है। राजनैतिक उथल-पुथल भी होती है। दक्षिण भारत में नये-नये उपद्रव भी होते है। वायु संचार, खण्डवृष्टि भी हो। गेहूँ, चना, मटर, उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर, सोना, चांदी, ताम्बा के भावों में एकदम गिरावट होती है। किराना के भाव एकदम ऊँचे पर जाते हैं। झंझावत, उल्कापात, रोगोपद्रव से जनता को आकस्मिक हानि होगी। पाक, अमेरिका के लिये विशेष खराब है।

दक्षिण शृंग

दिनांक १७ अप्रैल सन् १९९९ ई. शनिवार को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से हो रहा है। खड़ी फसल में हानि की पूर्ण संभावना है। किसी प्रदेश में सत्ता हस्तांतरण के लिये नये-नये हथकंडे अपनाये जावें तो आश्चर्य न होगा। किसी प्रदेश का मंत्रिमंडल भंग हो तो आश्चर्य न होगा। गेहूँ, चना, मटर, मूंग, उड़द, चावल के भाव गिर जावें तो आश्चर्य न होगा। राजनैतिक पार्टियों में कलह पैदा हो सकता है। धातुवाने पर तेजी हो।

समशृंग

दिनांक १६ मई सन् १९९९ ई. रविवार को चन्द्रदर्शन समशृंग से हो रहा है। आपसी संघर्ष से सरकार की स्थिति डांवाडोल हो सकती है। राजनैतिक पार्टियों में परस्पर विष वमन होगा। पृथ्वी पर कहीं-कहीं रक्तपात से हाहाकार मच सकता है। अग्निकाण्ड से भारी क्षति हो सकती है। गेहूँ, चना, चावल, उड़द, मूंग, मोंठ पर सन्तापन हो सकता है। सोना, चांदी, ताम्बा, जस्ता, काष्ठ, कोयला पर सन्तापन हो सकता है। मासान्त में कहीं-कहीं खण्डवृष्टि भी हो सकती है। महंगाई बढ़ने से जनता में परेशानी बढ़ सकती है।

उत्तर शृंग

दिनांक १५ जून सन् १९९९ ई. मंगलवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। जो देश विदेश में नई-नई व्याधियों का सूचक है। मासान्त में राजनीतिक सरगर्मी चल सकती है। बाजार भाव गेहूँ, चावल, चना, दाख, किशमिश, हींग, जीरा, धनियां के भाव कुछ गिरते दिखाई देते है। धातुवाने सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील, कांच के भाव कुछ तेजी पर जा सकते है। वायु वेग, खण्डवृष्टि के प्राय: योग हैं। दि. २५ से २८ तक आकाश में तारे टूटते दिखाई दें।

उत्तर शृंग

दिनांक १४ जुलाई सन् १९९९ ई. बुधवार की चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। पृथ्वी पर पश्चिमी भाग में युद्ध की पूर्ण संभावना है। भारत वर्ष के किसी वृद्ध राष्ट्रनायक का निधन भी संभव है। रूस तथा जापान में भूस्खलन, भूकम्प, विद्युत पात से जन-धन का भारी विनाश होगा। गेहूँ, चना, जौ, चावल, सोना, चाँदी, तांबा, पीतल में साधारण मंदी ही होगी। बंगलादेश, भूटान, सिक्किम में भी दुर्भिक्ष की पूर्ण संभावना है। चालू मार्केट में घटाबढ़ी का रुख प्रतीत होता है। इस मास (मासान्त) में वर्षा होने से जनता को राहत मिले, हर्ष का वातावरण बनेगा।

उत्तर शृंग

दिनांक १३ अगस्त १९९९ ई. शुक्रवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। जिसका फल आगामी मास में अच्छी वर्षा का सूचक है। भ्रष्टाचार, पापाचार, दुराचार, घोटाले बाजी को बढ़ावा दिया जावेगा। राजस्थान, उत्तर प्रदेश में अच्छी वर्षा होगी। गेहूँ, चावल, चना, उड़द, लोहा, चांदी, सोना, प्रियंगू पर अच्छी तेजी होगी। दाख, काली मिर्च, मखाने, चिरौंजी के भाव एकदम गिर सकते हैं। जनता में चहुँ ओर हर्ष का वातावरण पैदा हो सकता है।

उत्तर शृंग

दिनांक ११ सितम्बर सन् १९९९ ई. शनिवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। इस चन्द्रदर्शन से उत्तर भारत में उथल-पुथल होगी। उत्तरा खण्ड की समस्याएं उभर कर आवें। जिसका समाधान शीघ्र ही होगा। गेहूँ, चावल, चना, जौ, मटर, दाख, फल, घास, फूस, जीरा, धनियां, हींग, मखाने पर भाव गिर जाते हैं। सोना, चांदी, तांबा, लोहा पर विशेष तेजी हो।

उत्तर शृंग

दिनांक ११ अक्टूबर सन् १९९९ ई. सोमवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। जनता में सुख शान्ति का वातावरण पैदा हो सकता है। गेहूँ, चना, मटर, चावल, घी, तेल, तिलहन, चिरौंजी, मखाने, किशमिश, काली मिर्च पर तेजी पुन: भड़क सकती हैं। सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता पर घोर तेजी होती है। मासान्त में भूकम्प से जन धान्य की हानि होती है।

उत्तर शृंग

दिनांक ९ नवम्बर सन् १९९९ ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। इस चन्द्रदर्शन से अमेरिका, अफ्रीका में अराजकता से अशान्ति व्याप्त होगी। ईरान, इजरायल में विद्रोह युद्ध होगा। गेहूँ, चना, चावल, मटर, सोना, चांदी, ताम्बा पर अच्छी तेजी होती है। सीमा पर विद्रोह।

उत्तर शृंग

दिनांक १९ दिसं. सन् १९९९ ई. गुरुवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। इस चन्द्रदर्शन से गेहूँ, चना, जौ, चावल, घी, काष्ठ, कोयला, मिट्टी का तेल, रुई, कपास, ऊन, पर अच्छी तेजी होगी। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, जस्ता, जीरा, धनियां, हींग, मखाने, काली मिर्च पर अच्छी तेजी होगी। जनता में हर्ष की लहर दौड़े।

उत्तर शृंग

सं. २०५६ वि. पौष शुक्ला २ शनिवार दिनांक जनवरी सन २००० ई. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। इसका भारतीय ज्योतिषानुसार अशुभ फल ही घटित हो रहा है। उत्तर पूर्व में विग्रह, जनता में रोग शोक की उत्पत्ति होती है। रुई, ऊन, कपास पर घोर तेजी का वातावरण होता है। गेहूँ, चना, मटर, सरसों, मक्का के भाव घोर तेजी पर तेजी पर जाते हैं। सोना, चाँदी, ताम्बा, स्टील के भाव बढ़ जाते हैं। जूट, पाट, बारदाना में घोर तेजी होती है। पूर्व में संग्रह करने पर अच्छा लाभ होता है।

सम शृंग

सं. २०५६ वि. माघ शुक्ला २ सोमवार दिनांक ७ फरवरी सन् २००० ई. को चन्द्रदर्शन सम शृंग से हो रहा है। जो सुभिक्ष का सूचक है। गेहूँ, चना, मक्का, मटर, चावल, घी, तेल, रुई, ऊन, कपास, काष्ठ, तेल, पेट्रोल, डीजल, किशमिश, मुनक्का, काली मिर्च, लौंग आदि पर घोर तेजी होती है। जूट, पाट, बारदाने, फल, दूध, दही के भाव गिर जाते हैं। केन्द्रिय मंत्रिमंडल में फेर बदल होगा।

दक्षिण शृंग

संवत् २०५६ वि. फाल्गुन शुक्ला २ बुधवार दिनांक ७ मार्च सन् २००० ई. को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से हो रहा है। अत: इस मास में गेहूँ, जौ, चना, जी, मटर, मक्का, सोना, चाँदी, ताम्बा, स्टील, काष्ट, मिट्टी का तेल, सरसों पर घोर तेजी होती है। किशमिश, दाख, काली मिर्च, लौंग, गुगल, चिरौंजी, मखाने के भाव गिर जाते हैं। प्रान्तीय मंत्रिमंडल में परिवर्तन संभव होता है। मासान्त में हिमाचल प्रदेश में हिमपात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब में खण्डवृष्टि, उपलवृष्टि होती है। जिससे फसल में हानि हो जाया करती है।

ज्योतिष, आयुर्वेद, साहित्य, धर्मशास्त्र, मंत्र, विज्ञानादि की लोकप्रिय पत्रिका
वार्षिक मूल्य ३०/- "संकर भारती" एक प्रति १०/-
सम्पादक- ब्रह्मर्षि, ज्योतिषाचार्य, वैभवरत्न कविराज पं. शंकरलाल गौड़ "शंभूकवि"
ब्रजबाबा पथ, दूरा (आगरा) (उ. प्र.) पिन -२८३११०
स्वर्ण अवसर-अवश्य लाभ उठाईये-ज्योतिष शास्त्र के उद्भट विद्वान पं. शंकरलाल गौड़ "शंभू कवि" से सम्पर्क कर अपने मनोवांछित कार्य पूर्ण करें
जन्म पत्र दक्षिणा- अत्युत्तम १००१/-, उत्तम ५०१/-, साधारण २५१/-, कुण्डली १२५/- (डाक खर्च २/-) हस्तरेखा भविष्य दर्शिका- अति श्रेष्ठ १००१/-, श्रेष्ठ ५०१/-, मध्यम २५१/-, साधारण १२५/- (डाक व्यय २५/-) तेजी-मंदी रिपोर्ट दक्षिणा- वार्षिक १००१/-, षट्मासिक ५०१/, त्रैमासिक २५१/-, मासिक १२५/- (डाकव्यय २५/-)
विशेष- जन्मपत्र बनवाने के लिये जन्म स्थान, जन्म समय अवश्य लिखें, हस्त रेखा भविष्य दर्शिका के लिये सीधे (दक्षिणा) हाथ का रंगीन चित्र (फोटो) भेजें।
व्यवस्थापक- श्री शंकर साहित्य सदन,
ब्रजबाबा पथ, दूरा (आगरा) (उ. प्र.)-२८३११०

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वास्तु शास्त्र

लेखक-श्री सत्यवीर शास्त्री

विश्वकर्मा जी बोले—हे मुनि श्रेष्ठ! मैं गृहस्थ आश्रम में रहने वाले लोगों के कल्याण के लिए गृह आरम्भ और गृह प्रवेश के समय को विस्तारपूर्वक कहता हूँ। आप एकाग्रचित होकर सुनें। यह वही वास्तु शास्त्र है जिसे भगवान् महादेव ने महर्षि पराशर को और पराशर जी ने मुनि वेद को और मुनि वेद ने मुझसे कहा था। पूर्वकाल (त्रेतायुग) में एक महाभूत उत्पन्न हुआ जिसने अपनी विशाल देह से समस्त चराचर को आच्छादित कर लिया। उससे इन्द्र आदि सभी देवता विस्मय युक्त होकर और भयभीत होकर ब्रह्मा की शरण में जाकर बोले—हे भूत भावन! हे भूतेषु लोक पितामह! हमारे लिए महाभयंकारी एक संकट उत्पन्न हुआ है। आप उससे त्राण पाने का उपाय हमें बतलायें। ब्रह्माजी बोले—हे देवगण! भय मत करो। जो बलशाली महाभूत उत्पन्न हुआ है उसको पकड़ो और भूमि पर गिराकर तुम सभी निर्भय हो जाओ। ब्रह्माजी के वचन सुनकर देव समूह क्रोध में संतप्त हो उस महाभूत को पकड़कर आधोमुख धरती पर पटक कर निर्भय हो वहीं स्थित हो गये। उसी को लोक पितामह ब्रह्माजी ने वास्तु पुरुष की संज्ञा दी है। यह वास्तु पुरुष भाद्रपद मास की कृष्ण तृतीया शनिवार, कृतिका नक्षत्र, व्यतिपात योग, विष्टिकरण, भद्रा के मध्य और कुलिक मुहूर्त में उत्पन्न हुआ था। उस समय वह वास्तु पुरुष भारी शब्द करता हुआ ब्रह्माजी के पास पहुंचा और ब्रह्माजी के सम्मुख जाकर दीन स्वर में बोला—हे प्रभु! आपने इस सम्पूर्ण चराचर जगत की रचना की है और आपने ही मुझे रचा है फिर बिना अपराध के यह देव समूह मुझे पीड़ा क्यों पहुंचा रहा है? वास्तु पुरुष के दीन वचन सुनकर लोक पितामह ब्रह्माजी ने उसे वरदान दिया कि हे वास्तु पुरुष! जो व्यक्ति ग्राम, नगर, द्वार, गृह, जलाशय, देव स्थान इत्यादि के आरंभ करने में मोह वश हमारा पूजन करेगा वह व्यक्ति दरिद्रता को तो प्राप्त होगा ही परन्तु जीवन रहते भी मृत्यु सम कष्ट भोगेगा, उसके हर कार्य में विघ्न उपस्थित होंगे और अन्ततः वह हमारा आहार बन जायेगा। ऐसा कहकर लोकपति ब्रह्माजी अन्तर्ध्यान हो गये। इसलिए विज्ञ पुरुषों को चाहिए कि गृह आरम्भ और गृह प्रवेश के समय वास्तु पूजा अवश्य करें। इसके अतिरिक्त भी द्वार बनने के समय तीन प्रकार के गृह प्रवेश (यात्रा से लौटने पर, नवीन गृह में प्रवेश के समय, यदि यात्रा से लौटकर आने पर नूतन गृह प्रवेश) के समय उस प्रत्येक वर्ष यज्ञ आदि में, संतान के जन्म के समय, यज्ञोपवीत के समय, विवाह के समय, मंगल्य उत्सवों के समय, गृह के जीर्णोद्धार तथा गृह में धान रखने के समय, बिजली से टूटे हुए मकान में, अग्नि में जल जाने पर, गृह में सर्प और चण्डाल के वास करने पर जिस गृह में उल्लू और कौआ एक सप्ताह वास करे उस घर में, जिस गृह में हिरण वास करे, बिड़ला शब्द करे, हाथी-घोड़े क्रूर शब्द करें, जिस गृह में स्त्रियां कलह करती हों, मधुमक्खियों का छत्ता रखा हो। जंगली कबूतरों का वास हो अथवा अन्य अप्राकृतिक उत्पात होते हैं वहां वास्तु शांति अवश्य करनी चाहिए।

गृह निर्माण योग्य भूमि के लक्षण

प्राचीन मुनियों में भूमि को ब्राह्मादि वर्णनक्रम से श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण भूमि को शुभ कहा है। जिस भूमि में फूलों की सी सुन्दर गंध आती हो वह भूमि ब्राह्मण वर्णी कहलाती हैं। जिसमें रक्त जैसी गंध आती हो वह क्षत्रिय वर्णी, जिसमें मधु जैसी गंध आती हो वह वैश्य वर्णी और जिसमें मदिरा जैसी गंध आती हो वह भूमि शूद्र वर्णी कहलाती हैं। जिस भूमि की मिट्टी का स्वाद मधुर हो वह ब्राह्मण वर्णी, जिसका स्वाद कसैला हो वह क्षत्रिय वर्णी, जो स्वाद में खट्टी हो वह वैश्य वर्णी और जिस भूमि की मिट्टी तिती हो वह शूद्र वर्णी कहलाती है। भवन निर्माण के लिए जो भूमि चौकोर हो, हाथी के आकार की हो, सिंह, बैल, घोड़े आदि के समान रूप वाली हो, त्रिशूल, भद्रपीठ, शिवलिंग के समान हो, प्रसाद के ध्वज और कुंभ आदि के समान हो वह भूमि देवताओं को भी दुर्लभ है। जिसकी आकृति त्रिकोनी गाड़ी के आकार की, सूर्प बीज के समान, मृदंग के आकार की, सर्प अथवा मेढक के रूप वाली, गधा, अजगर के सादृश्य, सूकर, उंट, बकरी के समान, धनुष, कुल्हाड़ी के सादृश्य, गिरगिट और शव के रूप वाली, जहां जाना कष्ट साध्य हो ऐसी भूमियों को गृह निर्माण के लिए उपयोग में नहीं लाना चहिए। गृह निर्माण के लिए उसी भूमि की परीक्षा करनी चाहिए जो सुन्दर हो। जो भूमि उत्तर और पूर्व की ओर नीची, दक्षिण और पश्चिम की ओर ऊंची होती है वह दृढ़ कही जाती है। ब्राह्मणों के लिए गंभीर भूमि, क्षत्रियों के लिए ऊंची भूमि, वैश्यों के लिए समतल भूमि और शूद्रों के लिए विकट भूमि पर गृह निर्माण शुभ रहता है। अथवा समतल भूमि पर सभी वर्ण वाले गृह निर्माण करे तो शुभ फल मिलते हैं। जिस भूमि का वर्ण श्वेत हो वह सभी वर्णों के लिए शुभ रहती है। जिस भूमि पर कुशा उगी हो वह ब्राह्मणी भूमि कही जाती है और ब्राह्मणों को शुभद रहता है। क्षत्रियों के लिये दूवा से युक्त भूमि शुभद रहती है। जो भूमि फल-पुष्प से युक्त हो वह वैश्यों को सुखकर रहती है। जिस भूमि पर कष आदि उत्पन्न होते हैं वह भूमि शूद्रों के लिए शुभ फलकारी होती है। जिस भूमि पर नदी कटाव दे रही हो अथवा उसमें बड़े-बड़े पत्थर हों, पर्वतों के साथ मिली हुई गड्ढे से युक्त छत वाली, टेढ़ी-मेढ़ी, सूर्प के आकार की दण्ड के समान, निस्तेज भल और रीछ के सादृश्य, मध्य में विकट रूप कुत्ता और शयारों के सादृश्य रूखी, चैत्य श्मशान वामी आदि के स्थान से युक्त चौराहा युक्त, जहाँ बड़े- बड़े ऊंचे वृक्ष हों, जिस भूमि पर भूत आदि का निवास हो, जो नगर से दूर हो ऐसी भूमि को गृह निर्माण के लिये उपयोग में नही लाना चाहिए। जिस भूमि में अपने वर्ण की गंध आती हो, जो सुंदर स्वाद से युक्त हो उस पर गृह निर्माण करने से गृह स्वामी को धन-धान्य और सुख की प्राप्ति होती हैं। इसके विपरीत भूमि पर गृह निर्माण करने से विपरीत फल मिलता हैं। अतः भूमि की परीक्षा करना गृह निर्माण से पूर्व आवश्यक रहता हैं। जो भूमि चौकोर है उस पर गृह निर्माण करने से धन- धान्य की वृद्धि होती है। जो भूमि हाथी के समान है उस पर गृह निर्माण करने से व्यवसाय में वृद्धि होती है। सिंह के समान भूमि पर गृह निर्माण करने से उत्तम संतान की प्राप्ति होती है। जो भूमि बैल के सादृश्य है उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी के पशु धन की वृद्धि होती है। जो भूमि गोल आकार की तथा भद्रपीठ के सादृश्य है उस भूमि पर वास करने से सुख की प्राप्ति और जो भूमि त्रिशूल के समान आकार वाली है उस पर वास करने से धन व सुख दोनों

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मिलते हैं। जो भूमि शिवलिंग के आकार की हो उस पर शिवालय आदि का निर्माण और साधुओं का निवास शुभद रहता है। जो भूमि प्रस्तुत ध्वज के समान हो उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी को पदोन्नति मिलती है। कुंभ के सादृश्य भूमि पर गृह निर्माण कर गृहस्वामी अपनी धन-संपदा को बढ़ा लेता है। जो भूमि त्रिकोण के सादृश्य, गाड़ी के आकार वाली, सूर्प और बीज के सादृश्य हो उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी को क्रमशः पुत्र सुख, धन सुख में कमी और धर्म की हानि होती है। जो भूमि मृदंग के समान हो वह वंश की हानि करती है। सर्प और मेढ़क के आकार वाली भूमि भय उत्पन्न करती है, गधे के आकार वाली भूमि निर्धनता को जन्म देती है। अजगर के सादृश्य भूमि मृत्यु सम कष्ट पहुंचाती है। चपटी और मुदगर के सादृश्य भूमि पुरुषार्थ की हानि करती है। उल्लू और कौए की सादृश्य भूमि दुःख, सुख और भय को जन्म देती है। सर्पाकार भूमि संतति आदि को नष्ट करती है। सूकर, ऊँट और बकरे के साध्य भूमि मलिन, मूर्ख पुत्रों को उत्पन्न करती है। जो भूमि गिरगिट और सर्प के समान हो वह मृत संतान को उत्पन्न करती है। मार्गश्री, फाल्गुन, वैशाख, माघ, आश्विन और कार्तिक में गृह आदि का निर्माण करने से गृहपति को पुत्र तथा स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। यह नारद का मत है। वैशाख, आश्विन, मार्ग., आषाढ़, माघ, फाल्गुन में यदि कन्या, मिथुन, धनु और मीन से अन्य राशि में सूर्य हो तो गृह निर्माण करना शुभ होता है। यह किसी आचार्य का मत है। चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और माघ के महीनों में गृह आरम्भ नहीं करना चाहिए। यह योगेशाचार्य का मत है। मेष के सूर्य यदि वैशाख में गृह निर्माण करने से सुख, वृष के सूर्य अर्थात् ज्येष्ठ में धन वृद्धि, माघ के सूर्य अर्थात् आषाढ़ में मृत्यु, कर्क के सूर्य अर्थात् आश्विन में धन लाभ, सिंह सूर्य अर्थात् भाद्रपद में भद्रव्य वृद्धि, कन्या अर्थात् आश्विन में रोग से पीड़ा, तुला अर्थात् कार्तिक में धन वृद्धि, धनु के सूर्य अर्थात् पौष में हानि का भय, मकर के सूर्य अर्थात् माघ में धन का लाभ, कुंभ के सूर्य अर्थात् फाल्गुन में रत्नों का लाभ और मीन के सूर्य अर्थात् चैत्र में गृह निर्माण करना भयदायक होता है यह नारद का मत है।

फाल्गुन मास में कुंभ का सूर्य हो, आश्विन में सिंह अथवा कर्क के तथा पौष में मकर के तो पूर्व, पश्चिम द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। वैशाख में मेष और वृष मार्ग. दल में तुला और वृष के सूर्य हो तो दक्षिण-उत्तर द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। यह रामदेवाज्ञ का मत है। कर्क, मकर, सिंह, कुंभ के सूर्य में पूर्व, पश्चिम और द्वार में घर तुला, मेष, वृष, वृश्चिक के सूर्य में दक्षिण, उत्तर द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। मीन, धनु, कन्या के सूर्य में गृह निर्माण करना निषिद्ध है। जो अनभिज्ञ लोग इस काल में गृह निर्माण करते हैं वह सदैव ही दुःख और शोक को भोगते हैं यह द्रोपति का मत है। किसी आचार्य का मत है कि मेष के सूर्य में चैत्र, वृष में ज्येष्ठ, कर्क में आषाढ़, सिंह में भाद्रपद, तुला में आश्विन, वृश्चिक में कार्तिक, मकर में पौष और कुम्भ में माघ मास में गृह आरम्भ शुभ होता है। कार्तिक में कन्या का सूर्य और माघ में धनु का सूर्य शुभ नहीं होता। घास-फूस अथवा लकड़ी के घर बनाने में मास शुद्धि की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह लंबे समय तक रहने योग्य नहीं होता। ईंट अथवा पत्थर द्वारा गृह निर्माण निन्दित मासों में नहीं करना चाहिए। ज्येष्ठ में पशु गृह, आश्विन में धान्य गृह, माघ में गौशाला और चैत्र में नदी के तटवर्ती भवन का निर्माण शुभ होता है। शुक्ल पक्ष में गृह आरम्भ करने से सरवीत शोक, कृष्ण पक्ष में चौरों का भय तथा शुक्र और गुरु दोनों ही उदिय हों तो शुक्ल पक्ष में दिन के समय गृह आरम्भ करना चाहिए।

शास्त्र का ज्ञाता होना एक बात है, उसके रहस्य को जानना नितान्त भिन्न बात है। जब तक किसी भी शास्त्र के मर्म को नहीं जाना जाता तब तक केवल जमीन की सतह की पैमाइश करने वाली बात ही रहती है। रहस्य उस विषय के मर्मज्ञ जनों की कृपा से अथवा पराम्बा केप्रसाद से उद्घाटित होता है। ज्योतिष एवं सामुद्रिक शास्त्र जैसे विषय का रहस्य तो गुरू-कृपा से ही ज्ञात हो सकता है। ज्योतिष को त्रिपाक्षिकी की विद्या कहते हैं अर्थात् छः सप्ताह तक यदि ज्योतिष का प्रयोग ना किया जाए तो यह विस्मृत हो जाती है। किसी भी विद्या को चिरयुवा रखने का अमोघ आधार अभ्यास है इसलिए जो कोई भी इस विद्या में निपुणता प्राप्त करना चाहता है उसे निरन्तर अभ्यास से परिपुष्ट करते रहना चाहिए।

ज्योतिष को वेदांग के सुरूप में सम्मानित किया गया है और इस विषय की व्यापकता सूर्य की रश्मियों की तरह अपरिमेय है। भगवान् भास्कर हमें प्रकाश ही नहीं देते, सविता के रूप में विविध वस्तुओं को उत्पन्न भी करते हैं और सप्ताश्ववाही रथ पर अधिष्ठित होने के कारण हमारे जीवन और सृष्टि को तरंगी सतरंगी सुन्दरता से सजाते भी हैं। ये भुवनस्य गोप्ता हैं इसलिए इनकी प्रचण्ड किरणों के आवरण को भेदकर ब्रह्माण्डीय किरणें तथा अल्ट्रा वायलेट रेज जैसी घातक एवं शक्तिशाली तरंगे हमें क्षति नहीं पहुंचा सकतीं।

सूर्य की किरणें हमारे अन्तर्बाह्य को प्रभावित करती हैं, इसके निर्माण में भी इनका प्रमुख योगदान रहा है, हमारा ही नहीं समस्त संसार का इतिहास इस कालात्मा के विराट रूप में सुरक्षित है। ऐसे ही हमारा अज्ञात भविष्य भी इसके अलौकिक रूप में वर्तमान है अन्यथा हमारे सीमित पुरज्ञान में वर्तमान का अस्तित्व हस्तलभ्य होता ही कहां है। जो कुछ भी अतीत और वाह्यता बहुत सीमित है इसलिए हमारी व्यावहारिकता में केवल विगत और आगमिष्यत् हैं जबकि कालात्म के रूप में सभी कुछ वर्तमान है। ज्योतिषी इसी कालात्म को साक्ष्य मानकर हमारे लिए कुतूहल का विषय बन भविष्यत् का कथन करते हैं।

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे इसलिए उन्होंने अविभाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किए। यह विषय व्याकरण का रहा पर शुद्ध रूप से ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे परिणामतः जिस तरह वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धरित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। लगध, वराह, पराशर, गर्ग, भृगु और रावण जैसे स्वनाम धन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान किया। धरती के नीचे कहां मीठे जल की धारा है, किस प्रकार की धरती मनुष्य के आवास के उपयुक्त है, धरती की गंध में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा अथवा प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही संबद्ध है।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष की ही एक शाखा है, "सामुद्रिक।" सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसूत चिन्हों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना — यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है और यह व्यक्ति की रूप रेखाओं की है को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्येत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुख मंडल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में सुन्दर पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिए जो उपमायें दी गई हैं वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं को सिद्ध करती हैं। कमल पत्र के समान आयत विशाल आंखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह को ही संभव हुआ करता है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचना देता है। बिहारी की रचनाएं आँखें मुख मंडल को आकर्षक ही नहीं बनाती उसके कामी होने की सूचक भी हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखों में भार मंगल की सुदृढ़ एवं नेत्र स्थान से सीधे संबंध के कारण होता है और उनमें रंग चंद्रमा के कारण होता है जहां इन दोनों ग्रहों का संयोजन हुआ। वही व्यक्ति आकृति से मोहक और व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के वे बाह्य चिन्ह व्यक्ति की गृहस्थिति के जन्मकालिक सभी कारण को प्रकट करते हैं और उस स्थिति को जानने पर किसी के भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर यही है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजना और संघटनों का फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान-सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार बहुत पुराने समय से प्रचलित है। वाल्मीकि ने राम को आजानुबाहु और अरविन्द दलायताक्ष (घुटनों तक लंबे हाथ और कमल के पत्ते के समान विशाल आंख वाला) बतला कर सामुद्रिक शास्त्र के इस सिद्धान्त की पुष्टि की है कि घुटनों तक के लंबे हाथ वाला व्यक्ति सम्राट हुआ करता है। पैरों के तलवों की रेखाओं, लाल ललाट पर पड़ने वाली वलियों, नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन काल से है। हाथों की रेखा भी इस भविष्यत् ज्ञान का एक माध्यम रहा है।

आज सामुद्रिक शास्त्र में हस्त सामुद्रिक का ही अधिक प्रचार है और निश्चय से इसका श्रेय कीरों को दिया जाना चाहिए। इस शताब्दी में वही एक चमत्कारी सामुद्रिक शास्त्री था जिसकी शुद्ध और चमत्कारी भविष्यवाणियों ने पश्चिम वासियों को इस विज्ञान पर विश्वास करने के लिए बाध्य कर दिया। यद्यपि कीरों की हस्त सामुद्रिक भी भारत की ही देन है (वह दक्षिणी भारत के धर्मपत्र पर लिखी हस्त सामुद्रिक की कोई पुस्तक ले गया था और वही उसके ज्ञान का आधार बनी थी), फिर भी उसने पामिस्ट्री को वैज्ञानिक आधार दिया। उसकी दृष्टि से हाथ की रचना में निर्मित कोई भी चिन्ह बचा नहीं। हाथ का आकार, अंगुलियों की बनावट, अंगूठा, चमड़ी, रेखाओं का रंग रूप आदि सारे अंग-उपांग उसके अध्ययन का विषय बने और इन सबकी उसने सम्यक संगति करके अपने निष्कर्ष को प्रामाणिक एवं कारणवादी सिद्ध किया।

मेरा अपना विचार है कि कीरों को छोड़कर आज की प्रचलित हस्त रेखा की पुस्तकों को पढ़कर कोई भी उतनी सूक्ष्म और विस्तृत भविष्यवाणी नहीं कर सकता (कर भी सकता है तो मुझे ज्ञात नहीं) इसके साथ ही यह भी है कि ज्योतिष जितना विस्तृत आधार देता है उतना हस्त रेखा नहीं देती। हस्त रेखा वस्तुतः रेडी रालेज है, हस्तरेखा देखने वाले को किसी कुण्डली या समय की आवश्यकता नहीं रहती यह इस विद्या की विशेषता है या अपने सामने फैले हुए हाथ को देखकर व्यक्ति के चरित्र एवं भविष्यत् के गूढ़ रहस्यों को कह देने के खतरे से भी आमने-सामने होना पड़ता है।

इस विद्या से समय का दुरुपयोग अधिक होता है और लोग सच्ची भविष्यवाणियों पर इस विषय की प्रामाणिकता की प्रशंसा नहीं करते बल्कि एक गलत बात का उदाहरण देने लगते हैं। अन्ततः यह भी एक साइंस आफ एस्टीमेट है।

हस्त सामुद्रिक को सम्पूर्ण ज्योतिषीय आधार देने में कीरों ने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं रखी। हाथ का रूप एवं आकार हमारे जन्म-लग्न की तरह भविष्य कथन का आधार बनता है अर्थात् हाथ का सामान्य आकार व्यक्ति के चरित्र एवं प्रकृति का ज्ञान कराता है तो रेखायें दशा अन्तर्दशा घटने वाली घटनाओं का ज्ञान कराती हैं। अंगुलियों में क्रियात्मकता है और इनका लचीलापन मनुष्य की विकसित बुद्धि का साहचर्य पाकर संसार को मानववृत्त रूप मज्जा से संवारता है।

भारत का तत्वसिद्धांत अंगूठे में आकाश तत्व का मानता है और इन पांच अंगुलियों में यही एक पुल्लिंग है तथा आकाश तत्व का प्रतिनिधि होने के कारण शून्य प्रतीक है और शून्य क्रियाशीलता की प्रत्येक मुद्रा का आधार है। तंत्र में बनाई जाने वाली मुद्राएं और अनिवार्य रूप से किया जाने वाला कर न्यास हमारे हाथ के महत्व को सिद्ध करता है। "कराग्रे वसति लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती मूले तंत्र स्थितो ब्रह्मा" हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती और मूल भाग में ब्रह्मा का निवास रहता है। इस रूप में सोचने वाले भारतीय प्रातःकाल सबसे पहले अपने हाथ को देखने की व्यवस्था करते हैं।

आज की पामिस्ट्री में और भारतीय सामुद्रिक शास्त्र में मूलभूत अंतर है। जिसे समुद्र शास्त्र माता व पिता की रेखा मानता है। उसे पामिस्ट्री मस्तिष्क या शिर और जीवन की रेखा बतलाता है, भारतीय दृष्टि की जीवन रेखा पामिस्ट्री के अनुसार हृदय रेखा होती है। रेखाओं के अन्य स्थानों पर होने वाले चिन्हों के संबंध में कोई मूलभूत अंतर नहीं है।

ग्रहों के स्थानों का नामकरण पामिस्ट्री की अपना स्थापना है। इस विषय में सामुद्रिक शास्त्र केवल इनके आकार का फलित बतलाता है, नामकरण नहीं करता। हमारे हाथ के नीचे भाग मणिबंध के पास चन्द्र और शुक्र के स्थान माने जाते हैं ये दोनों जलीय ग्रह हैं और इनसे व्यक्ति की कल्पनाशीलता और कामुकता का ज्ञान होना एक व्यवहारिक बात रहती है। इससे आगे मंगल का स्थान तेजस्तत्वीय ग्रह का स्थान है। अंगूठे और तर्जनी के बीच के स्थान का पुष्ट होना व्यक्ति की आक्रामक शक्ति को सूचित करता है तो इसके नीचे कनिष्ठा अंगुली की सीध में व्यक्ति की निरोधक शक्ति को। हमारी हथेली के तीन चौथाई भाग में इन तीन ग्रहों का आधिपत्य है अंगुलियों के आधारभूत स्थान शेष चार ग्रहों के।

वृष वास्तु चक्र

गृह निर्माण के पूर्व जिस नक्षत्र में सूर्य हो उस नक्षत्र को दिन नक्षत्र तक गिनें। प्रथम तीन नक्षत्र वृष के शरीर में रहते हैं। उनमें गृह आरम्भ किया हो तो घर में अग्नि काण्ड का भय रहता है। अगले चार नक्षत्र वृष के अगले पैर में होते हैं उनमें गृह आरंभ हो तो घर जनशून्य रहता है। इसके बाद चार नक्षत्र वृष के पिछले पैर में होते हैं

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २८९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

इनमें किया गया गृह आरम्भ धन और शांतिदायक रहता है। इसके बाद तीन नक्षत्र वृष की पीठ पर स्थित होते हैं इनमें यदि गृह आरम्भ किया जाये तो गृह स्वामी के व्यवसाय में उन्नति होती है। उसके बाद के चार नक्षत्र वृष के दाहिनी कुक्षि में स्थित होते हैं उसमें गृह आरम्भ हो तो लाभ रहता है। इसके बाद के तीन नक्षत्र वृष की पूंछ में स्थित होते हैं। इनमें गृह आरंभ हो तो गृह स्वामी नाश को प्राप्त होता है। इसके बाद के चार नक्षत्र वृष की बायीं कुक्षि में स्थित होते हैं इनमें गृह आरम्भ करना दरिद्रपना देता है। इसके बाद के तीन नक्षत्र वृष के मुख में स्थित होते हैं इनमें गृह आरम्भ किया जाये तो गृह स्वामी को अनेक पीड़ाएं भोगनी पड़ती हैं। सारांश यह है कि जिस नक्षत्र में सूर्य हो उसके सात नक्षत्र अशुभ, उसके बाद ग्यारह नक्षत्र शुभ और पीछे के दस नक्षत्र अशुभ होते हैं। गृह निर्माण करने के लिए सूर्य किस राशि पर स्थित है इस पर विचार कर लेना भी श्रेष्ठकर रहता है। मेष के सूर्य में घर बनाना शुभ फलदायक होता है। वृष के सूर्य में घर बनाना धन-धान्य की वृद्धि करता है। मिथुन के सूर्य में घर बनाने वाले को मृत्यु सम कष्ट पहुंचाता है। कर्क के सूर्य में घर बनाना शुभ फलदाता रहता है। सिंह के सूर्य में घर बनाना दास-दासियों की वृद्धि करता है। कन्या के सूर्य में घर बनाना रोग उत्पन्न करता है। तुला के सूर्य में गृह निर्माण शुभकारी होता है। वृष के सूर्य में घर बनाना धन की वृद्धि करता है। धनु के सूर्य में घर बनाना हानिकारक रहता है। मकर के सूर्य में घर बनाना व्यवसाय में वृद्धि करता है। कुंभ के सूर्य में घर बनाना रत्नों का लाभ पहुंचाता है। मीन के सूर्य में घर बनाना भय उत्पन्न करता है। चैत्र मास में घर बनाने से गृहकर्त्ता को व्याधि का भय। वैशाख मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन-रत्न आदि का लाभ। जेठ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को मरण तुल्य कष्ट। आषाढ़ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को श्रेष्ठ एवं अधिक भद्र की प्राप्ति लेकिन पशुओं की हानि। इसलिए आषाढ़ मास में पशुओं के लिए घर न बनाना। सावन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को मित्र से लाभ। भाद्रपद मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को हानि का भय। आश्विन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता की स्त्री की मृत्यु। कार्तिक मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन-धान्य का लाभ। अगहन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन का

[illegible] मास में गृह निर्माण [illegible] मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को विविध भोगों की प्राप्ति परन्तु अग्नि का भय। फाल्गुन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को रत्न आदि की प्राप्ति। मुहूर्त मार्तण्ड में, पौष में (मकर के सूर्य में) गृह निर्माण करना विशेष फलदायी रहता है। पत्थर, ईंट आदि का घर निन्द मास में निर्माण नहीं करना चाहिए। तृण, काष्ठ आदि के गृह निर्माण के आरम्भ में मास दोष नहीं देखा जाता। यदि सूर्य कर्क, सिंह, मकर अथवा कुंभ राशि का है तो पूर्व या पश्चिम मुख के द्वार का गृह निर्माण करना शुभ रहता है। तुला, वृश्चिक और मेष में का सूर्य हो तो दक्षिण या उत्तर मुख का गृह बनाना। यदि मिथुन, कन्या, धनु और मीन का सूर्य हो तो गृह निर्माण नहीं करना चाहिए। शुक्ल पक्ष का गृह निर्माण करने से सुख मिलता है और कृष्ण पक्ष में गृह निर्माण करने से चोरों का भय रहता है। नारद आदि ऋषियों का मत है कि फाल्गुन, वैशाख, माघ, सावन, कार्तिक इन पांचों मासों में गृह निर्माण करना विशेष फलदायी रहता है। श्रीपति का मत है कि ब्राह्मण आदि वर्णों को क्रमशः पश्चिम, उत्तर, पूर्व, दक्षिण मुख का द्वार बनाना शुभ है। जैसे—ब्राह्मण को पश्चिम मुख, क्षत्रिय को उत्तर मुख, वैश्य को पूर्व मुख और शूद्र को दक्षिण मुख बनाना शुभ है। गृह निर्माण करते समय रवि, चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र इन चारों ग्रहों में से कोई भी ग्रह निर्बल हो, अस्तगत हो अथवा नीचगस्त हो तो क्रमशः गृह स्वामी की स्त्री सुख और धन का नाश होता है। चन्द्रमा और ग्रह का नक्षत्र ये दोनों यदि आगे बढ़े तो उस ग्रह में गृह स्वामी की स्थिति नहीं होती। अगर उपरोक्त दोनों नक्षत्र पीछे पड़े तो चोरों का भय रहता है। जिस समय गृह बनाना प्रारम्भ करना हो उस समय की कुण्डली बनानी चाहिए। यदि उस कुण्डली के लग्न में सूर्य पड़े तो वज्रपात, चन्द्रमा पड़े तो कोष की हानि, मंगल पड़े तो मृत्यु का भय, शनि पड़े तो दरिद्रता, बृहस्पति पड़े तो धर्म अर्थ और काम की प्राप्ति, शुक्र पड़े तो सुत की उत्पत्ति, बुध पड़े तो बाहुबल और आयु की वृद्धि होती है। द्वितीय भाव में सूर्य पड़े तो हानि का भय, चन्द्रमा हो तो शत्रु का नाश, मंगल हो तो अनेक प्रकार के विघ्न, बुध हो तो अतुल संपत्ति, बृहस्पति हो तो धर्म का समागम, शुक्र हो तो काम सुख की प्राप्ति होती है। तीसरे भाव में शुभ ग्रह पड़े तो थोड़ा शुभ फल करते हैं, पाप ग्रह पड़े तो विशेष शुभफल करते हैं। चतुर्थ स्थान में बृहस्पति हो तो राजा की प्रजित, बुध हो तो सर्वथा लाभ प्राप्ति करने वाला, शुक्र हो तो भूमि का लाभ, सूर्य हो तो मित्र से वियोग, मंगल हो तो मित्र से भेद, चन्द्रमा हो तो वृद्धि का नाश, शनि हो तो महा लाभ मिलता है। पंचम भाव में बृहस्पति हो तो वस्त्र और धन का लाभ, मित्र से समागम, शुक्र हो तो पुत्र और धन की प्राप्ति, बुध हो तो स्वर्ण आभूषण की प्राप्ति, सूर्य हो तो पुत्र को कष्ट, चंद्रमा हो तो कलह का आगमन, मंगल हो तो काम सुख में वृद्धि, शनि हो तो काम सुख का नाश करता है। छठे स्थान में सूर्य हो तो राजा को सम्मान, चंद्रमा हो तो पुष्टि, मंगल हो तो शत्रु का नाश, बृहस्पति हो तो धनागम, शुक्र हो तो विद्या का लाभ, बुध हो तो मान का ज्ञान प्राप्त होता है। सप्तम स्थान में बृहस्पति हो तो उच्च वाहन की प्राप्ति, बुध हो तो मध्यम वाहन की प्राप्ति, शुक्र हो तो भूमि और काम सुख की प्राप्ति, रवि हो तो यश का नाश, मंगल हो तो लड़ाई-झगड़े का भय, चंद्रमा हो तो मूर्खता से हानि और शनि हो तो शत्रु से भय रहता है। अष्टम भाव में सूर्य हो तो शत्रु से भय, अनेक विपत्तियों का आगमन, चंद्रमा हो तो सर्वस्व की हानि, मंगल-शनि हो तो महान भय की प्राप्ति, बुध हो तो महान धन की प्राप्ति, बृहस्पति हो तो शत्रु पर विजय का लाभ और शुक्र हो तो परिजनों से सुख मिलता है। नवम भाव में बृहस्पति हो तो बुद्धि और भाग्य की वृद्धि, बुध हो तो नाना प्रकार के भाग की प्राप्ति, शुक्र हो तो थोड़ा भाग उदय, चन्द्रमा हो तो धातु का क्षय, सूर्य हो तो धर्म की हानि, मंगल हो तो सामर्थ्य का नाश, शनि हो तो इच्छा पूर्ति में बाधा उत्पन्न करते हैं। दसम भाव में शुक्र हो तो उत्कृष्ट शयान, बृहस्पति हो तो बहुत सुख, बुध हो तो विजय की प्राप्ति, सूर्य हो तो धन की वृद्धि, चन्द्रमा हो तो कोष की वृद्धि, मंगल हो तो बाहुबल की वृद्धि, शनि हो तो यश का नाश होता है। एकादश स्थान में सभी ग्रह शुभ फलदायी होते हैं। बारहवें स्थान में बैठे हुए सभी ग्रह उदासी उत्पन्न करते हैं।

अगर बृहस्पति, सूर्य, बुध, शुक्र और शनि क्रमशः लग्न षष्ट, सप्तम, चतुर्थ और तृतीय भाव में हो तो ऐसे समय में घर बनाने से वह घर सौ वर्ष तक रहता है। यदि शुक्र, शनि, सूर्य, मंगल और बृहस्पति क्रमशः लग्न तृतीय, षष्ट और पंचम भाव में हो तो उस घर की आयु 200 वर्ष होती है। लग्न में शुक्र, दशम में बुध, एकादश में सूर्य और लग्न को छोड़कर बाकी किसी केन्द्र स्थान में बृहस्पति हो

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उस घर की आयु सौ वर्ष होती है। यदि चौथे स्थान में बृहस्पति, दशवें में चन्द्रमा, मंगल और एकादश स्थान में शनि हो तो उस घर की आयु 80 वर्ष होती है। यदि उच्च में शुक्र लग्न का हो अथवा उच्च का बृहस्पति चतुर्थ में हो अथवा उच्च का शनि एकादश में हो तो ऐसे घर में सदैव लक्ष्मी का निवास रहता है। एक भी गृह शत्रु के नवांश में स्थित होकर सातवें या दशवें स्थान में हो तो उस समय बना हुआ घर एक वर्ष के भीतर ही दूसरे के हाथ में चला जाता है। ध्यान रहे ब्राह्मण आदि वर्ण स्वामी यदि दुर्बल हो तो ऐसा होता है यदि बलि हो तो उपरोक्त फल नहीं मिलता। पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, रोहिणी, उत्तरा भाद्रपद, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा, पूर्वाषाढ़ इन नक्षत्रों में से किसी एक पर बृहस्पति बैठा हो और उस समय में बृहस्पतिवार हो तो उस समय घर का प्रारम्भ करने से पुत्र-पौत्र आदि की प्राप्ति और राज्य के तुल्य सुख मिलता है। विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा, आर्द्रा इन नक्षत्रों में से किसी एक में शुक्र बैठा हो और उस दिन शुक्रवार ही हो तो घर आरम्भ करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है। रामदेवाज्ञ के मत से विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा और आर्द्रा, नारद के मत से अश्विनी, शतभिषा, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, चित्रा, धनिष्ठा और पुनर्वसु वशिष्ट के मत से आर्द्रा विशेष रूप से, दूसरे के मत से पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और पुनर्वसु नक्षत्रों में घर आरंभ विशेष शुभ फलदायी होता है। मूल, रेवती, कृतिका, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त और मघा इन सात नक्षत्रों में से किसी एक में मंगल स्थित हो और उस दिन मंगलवार हो उस दिन घर आरंभ करने से वह घर अग्नि से जल जाता है और पुत्र-पौत्र आदि का नाश होता है। ये नारद का मत है। हस्त, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, अश्विनी और रोहिणी इनमें से किसी एक नक्षत्र में बुध स्थित हो और उस दिन बुधवार हो तो घर आरंभ करने से गृह स्वामी को धन, पुत्र और सुख मिलता है ये वशिष्ट का मत है। यदि पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, भरणी, अनुराधा, ज्येष्ठा, स्वाती इन नक्षत्रों में से किसी एक में शनि बैठा हो और उस दिन शनिवार ही हो तो उस घर में उस दिन घर आरम्भ करने से भूत-प्रेत का वास होता है और गृह में निवास करने वालों को भूत और राक्षस प्रताड़ित करते हैं। यह भी वशिष्ट का मत है। हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ और मूल इनमें से किसी एक नक्षत्र में मंगल बैठा हो और उस दिन मंगलवार ही हो तो उस दिन घर आरम्भ करने से गृह स्वामी को अग्नि से पीड़ा और पुत्र शोक भोगना पड़ता है। ये रामदेवाज्ञ का मत है। रोहिणी, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, हस्त इन नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में स्थित बुध बैठा हो और उस दिन बुधवार ही हो तो उस दिन गृह आरम्भ करने से गृह स्वामी को पुत्र सुख और धन सुख मिलता है। यह भी देवा रामदेवाज्ञ का मत है। सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र इनमें से कोई भी ग्रह यदि निर्बल हो तो, नीच स्थागत अथवा हस्तगत हो तो क्रमशः गृहपति, उसकी पत्नी, धन और सुख का नाश होता है। भृगु के मत से सप्त शलाका का चक्र बनाकर और उस पर कृतिका से सात-सात नक्षत्र पूर्व आदि दिशाओं में स्थापित करें यदि वास्तु चंद्रमा का नक्षत्र आगे या पीछे हो तो शुभ नहीं होता। कृतिका से अश्लेषा तक पूर्व दिशा की, मघा से विशाखा तक दक्षिण दिशा की, अनुराधा से श्रवण तक तथा पश्चिम दिशा और धनिष्ठा से भरणी तक उत्तर दिशा के नक्षत्र होते हैं। यदि वास्तु का नक्षत्र पूर्व दिशा के नक्षत्रों में हो तो पश्चिम दिशा के नक्षत्रों में गृहारम्भ अशुभ होता है। यदि पश्चिम दिशा के किसी नक्षत्र में वास्तु नक्षत्र है तो पूर्व दिशा के नक्षत्रों में गृह आरम्भ अशुभ होता है। इसके विपरीत पूर्व में हो तो उत्तर में और पश्चिम में हो तो दक्षिण में गृह आरम्भ शुभ होता है। वज्र, व्याघ्रात, शूल, व्यतिपात, अतिगंड, विश्वकुंभ, गद्य, परिघ इन योगों में गृह आरम्भ का निषेध किया गया। यदि गृह निर्माण के समय कर्क लग्न हो उसमें चंद्रमा स्थित हो, केन्द्र में बृहस्पति शेष ग्रह अपने मित्र अथवा उच्च अंश में हो तो ऐसे समय में बना हुआ गृह धन-धान्य से पूर्ण रहता है। यदि गृह आरम्भ के समय उपरोक्त ग्रह अन्य राशि में स्थित हो तो गृह स्वामी दिवालिया हो जाता है। यदि गृह निर्माण के समय एक भी ग्रह दशम या सप्तम में होकर शत्रु के भाव में हो तो वह ग्रह वर्ष भर में दूसरे के अधिकार में चला जाता है। वास्तु चक्र में सूर्य को यदि नक्षत्र तक गिनें पहले सात नक्षत्र अशुभ, अगले ग्यारह नक्षत्र शुभ और अंतिम दस नक्षत्र अशुभ होते हैं। सूर्य के नक्षत्र को चंद्रमा तक गिनें यदि पहले तीन नक्षत्रों में गृह आरम्भ का नक्षत्र हो तो अग्नि का भय, अगले चार नक्षत्रों में घर का विनाश, अगले चार नक्षत्रों में स्थिरता, अगले तीन नक्षत्रों में धन लाभ, अगले चार नक्षत्रों में लक्ष्मी की प्राप्ति, अगले तीन नक्षत्रों में शून्यता, अगले चार नक्षत्रों में गरीबी और अगले तीन नक्षत्रों में मृत्यु सम कष्ट मिलता है। यह रामदेवाज्ञ का मत है और वह वृष वास्तु चक्र के नाम से प्रसिद्ध है।

सम्पूर्ण अंगों वाले वृषभ के शरीर में सूर्य नक्षत्र से तीन नक्षत्र शीर्ष में रखें उनमें किया गया गृह आरम्भ अग्निकाण्ड में समाप्त हो जाता है। उसके अगले चार नक्षत्रों में गृह आरम्भ करने से शून्यता प्राप्त होती है। उसके अगले चार नक्षत्रों में गृह आरम्भ करने से स्थिरता, अगले तीन नक्षत्रों में लक्ष्मी प्राप्ति, अगले चार नक्षत्रों में लाभ, अगले तीन नक्षत्रों में गृह स्वामी का विनाश, अगले चार नक्षत्रों में निर्धनता और अगले चार नक्षत्रों में मृत्यु समय कष्ट मिलता है।

महाऋषि पराशर के मत से गृह आरम्भ करने वाली तिथि में चार मिलाकर उस संख्या को दुगुना कर उसमें गृहपति के नाम की अक्षरों की संख्या को जोड़कर तीन का भाग दें अतः एक शेष बचने पर स्वर्ग, दूसरे शेष में पाताल और शून्य शेष में मृत्यु लेकिन उस वास्तु पुरुष का वास समझें। वास्तु पुरुष के शरीर, पूंछ, दक्षिण, कुकक्षी और पृष्ठ भाग में लंबी आयु चाहने वाले पुरुष को गड्ढा नहीं खोदना चाहिए। वास्तु पुरुष को 28 भागों में बचे दस भाग शरीर की ओर और 17 भाग पूंछ की ओर छोड़ दें बाकी भाग में गड्ढा खोदें। ज्योति प्रकाश के मत से तिथि संख्या को पांच से गुणा करें और कृतिका आदि (शब्द शलाका चक्र के अनुसार) नक्षत्र संख्या को जोड़कर उनमें 12 और जोड़ें और इस योग को नौ से भाग दें यदि शेष 1, 4, 7 बचे तो जल में, 2, 5, 8 शेष बचे तो स्थल में, 3, 6, 0 शेष बचे तो आकाश में कूर्म का निवास होता है। इसका फल है जल में लाभ, स्थल में हानि और आकाश में मरण होता है। प्रसाद और गृह का आरम्भ और समाप्ति हरिप्रबोदनी एकादशी के बाद और हरिशयनि एकादशी से पूर्व ही कर लेना चाहिए। चैत्र मास में गृह आरम्भ करने से शोक, वैशाख में धन लाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशु हानि, सावन में पशु वृद्धि, भाद्रपद में शून्यता, आश्विन में कलह, कार्तिक में भ्रातृ नाश, मार्गशीर्ष और पौष में अन्य लाभ, माघ में अग्नि भय तथा फाल्गुन में श्री लाभ होता है।

जिस भूमि पर कठिनता से जाया जाये ऐसी भूमि गृह निर्माण के लिये त्याज्य होती है। मनोरम भूमि पुत्रों को देने वाली, दृढ़ता भूमि धन को देने वाली, उत्तर-पूर्व की ओर नीच भूमि पुत्र और धन दोनों को देती है। अपने वर्ण की भूमि अपने वर्ण को शुभद होती है,

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वर्ण को अधोगति देती है। जिस भूमि पर पुष्प और कुशकासा उगती है उस भूमि पर ब्रह्म तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होते हैं। दुवा युक्त भूमि पर धीर पुत्र और फल युक्त भूमि पर धाती पुत्र उत्पन्न होते हैं। नदी के कटाव की भूमि पर गृह निर्माण करने से मूर्ख संतान को जन्म देते हैं। जिस भूमि पर पत्थर अधिक हों वह दरिद्री संतान को उत्पन्न करते हैं। गड्ढे युक्त भूमि पर गृह निर्माण करना झूठे और मलीनवेशी पुत्रों को उत्पन्न करते हैं। जो भूमि छिद्र युक्त हो वे पशुओं की और सुख का नाश करती है तथा संपत्ति को दुःखदायी होती है। जो भूमि रेतीली और टेढ़ी हो वह विद्याहीन पुत्रों को जन्म देती है। सर्प, बिल्ली, लाकूट के समान भूमि भय को देने वाली और संतान को कष्टदायक होती है। मूसल के समान भूमि कुल घातक पुत्रों को जन्म देती है। रूखी भूमि दुर्वैशनी पुत्रों को जन्म देती है। चैत्य भूमि गृह स्वामी को भय उत्पन्न करती है। जिस भूमि पर वामी हो वह विपत्ति को देती है। धूर्त के गृह के समीप गृह निर्माण करने से पुत्र-सुख नहीं मिलता। चौराहे पर गृह निर्माण करने से कीर्ति का नाश, देव मंदिर पर घर बनाने से उद्वेग, राजा के स्थान पर गृह बनाने से धन हानि, गड्ढे पर गृह बनाने से निकट अनेक विपत्ति और जिस भूमि पर अधिक गड्ढे हों उसमें गृह निर्माण करने से पिपासा और कछुए के सादृश्य भूमि पर गृह-निर्माण करने से धन का नाश होता है।

भूमि का परीक्षण

जिस भूमि पर गृह निर्माण करना हो उसमें कहीं पर भी एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसे पुनः उसी खोदी हुई मिट्टी से भरना चाहिए। यदि मिट्टी अधिक है तो श्रेष्ठ फल, पूरी हो जाये तो मध्यम फल और कम पड़ जाये तो अदम फल मिलता है। दूसरी विधि है कि उस गड्ढे को जल से भरकर सौ कदम आगे जाकर पुनः लौटकर देखना चाहिए कि गड्ढे का जल कम तो नहीं हो गया यदि जल कम हो गया हो तो भूमि शुभ फलदायक नहीं होती अथवा जिस भूमि पर गृह बनाना हो उसमें हल जुतवाकर उसमें सभी अनाजों को बो दें। यदि वे भी 3, 5, 7 नग में न उगे तो उस भूमि पर गृह निर्माण नहीं करना। यदि बोये हुए बीजों में 2-3 दिनों में अंकुर फूट आयें तो भूमि श्रेष्ठ होती है। पांच रात्रि में उगे तो मध्यम और सात दिन में उगे तो अधम होती है। विरीह, साटी, मूंग, गोदूम, सरसों, तिल, जौ ये सात औषधियां हैं और यही सर्प बीज कहे जाते हैं। उपयुक्त सर्प बीजों को बोने के बाद उनके फूलों को देखना चाहिए। इस भूमि के किसी गड्ढे पर स्वर्ण अथवा तांबे के रंग के पुष्प दिखाई दें तो उस भूमि पर गृह निर्माण करना गृह स्वामी के लिये लाभप्रद रहता है। उस भूमि के धूल के कण को लेकर आकाश में फेंकें और देखें कि धूल अदम, मध्यम अथवा उद्भव इन तीनों में कहां जाती है। जहां जाये वही गति को भूमि पर गृह निर्माण कार्यकर्त्ता की होती है। भूमि में प्रवेश करते समय पुण्यावाचान, शंख और अध्ययन के शब्द, जल पूर्ण घड़ा, ब्राह्मण समुदाय, वीणाक शब्द, पुत्री युक्त स्त्री, माता-पिता अथवा गुरुजन आ जाये वह भूमि शुभ फल को देने वाली होती है। यदि प्रवेश करते समय स्वच्छ वस्त्र धारण किये हुए कन्या मिले, सुस्वादु और सुगंधित पुष्प, फल, सोना, चांदी, मृग, मोती अथवा अच्छे भोजन पदार्थों का दर्शन शुभ फलदायक रहता है। भूमि या गृह प्रवेश के समय मृग, सोरमा, चंदन बंधा हुआ पशु, पगड़ी अथवा भोज्य पदार्थों का दर्शन भी कल्याणप्रद होता है। भूमि या गृह प्रवेश करते समय मांस, दूध, दही, पालकी, छतर, मछलियां, स्त्री-पुरुष का जोड़ा दिखाई पड़े तो आयु और आरोग्यता बढ़ती है। भूमि अथवा गृह प्रवेश करते समय कमल का फूल, सफेद बैल, ब्राह्मण, मृग दिखलाई पड़े अथवा गीत गाने का शब्द सुनाई पड़े और हाथी, घोड़ा और सौभाग्यवती स्त्री दिखलाई पड़े तो धन सुख और अरोग्यता बढ़ती है। गृह आरम्भ अथवा प्रवेश के समय वेश्या, अंकुश, दीपक, पुष्प माला, आभूषण धारण किये कन्या दिखाई पड़े अथवा वर्षा हो तो उत्तम फल मिलता है।

यदि गृह आरम्भ अथवा गृह प्रवेश के समय श्रेष्ठ, वाणी, शत्रु, मदिरा, चमड़ा, हड्डी, तृण, भूसी, सर्प अथवा कोयला दिखाई दे तो अशुभ फल मिलता है। यदि गृह आरम्भ अथवा गृह प्रवेश के समय नमक, कीचड़, कपास, नापुंसक, तेल, औषधि, विष्टा, काले तिल, रोगी अथवा उपटन लगाये कोई व्यक्ति मिले तो अशुभ फल मिलता है। भूमि अथवा गृह प्रवेश के समय पापी, जटाधारी, पागल, मुण्डन कराया व्यक्ति, ईंधन, काला पक्षी दिखाई पड़े तो कल्याणप्रद नहीं होता। जलती हुई लकड़ी, धुएं से युक्त अथवा अधजली लकड़ी गृह आरम्भ अथवा प्रवेश के समय यदि मनुष्य देखे तो उसे मृत्यु सम कष्ट मिलता है। यदि उपयुक्त अपशकुन गृह आरम्भ के समय हो अथवा गृह प्रवेश के समय हो तो उस भूमि पर गृह कल्याण का विचार अथवा गृह प्रवेश का विचार त्याग देना चाहिए।

'नींव खोदने की विधि'

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अच्छा लग्न व अच्छा मुहूर्त में स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर पूर्व अभियुक्त होकर कलश की स्थापना करें, कलश के ऊपर गणेश जी की और नव ग्रहों का पूजन करें, उस परिक्षित भूमि को गाय के गोबर से लीपें और उस भूमि पर ब्राह्मण और देवता का पूजन करे और उस भूमि की शुद्धि के लिये पांच गव्य सर्प औषधि पांचामृत और जल से उस भूमि के ऊपर छिड़काव कर उसे शुद्ध करें। स्थापित कलश में वरूण का आह्वान करें उसी में पर्वत, वन, नदी, नाग से युक्त आनन्द से युक्त कमलों से विभूषित, सागरों से युक्त भूमि की पूजा करें, प्रार्थना करें। दिगपालों और कुलदेवी तथा देवता और नागों का पूजन करें, उनकी बलि देकर सद् अष्ट अध्यायी का विधिप्रद पाठ करें और वास्तु पुरूष का पूजन करें। कं नमो भगवते वास्तु पुरुषये कपिलये चे, पृथ्वी धरये देवेय प्रधान पुरूषये चे, सकल गृह प्रसाद पुष्पकरोधान कर्मणि गृह आरम्भ प्रथमकाले सर्वासिद्धि प्रदायक सिद्ध देव मनुष्यैश्चे पूज्य नमो दिवा निशिय गृह स्थाने प्रजापति क्षेत्रे अस्मीन तिष्ठ साम प्रतम इहा गच्छ इमां पूजां गृहेण वर दो भव मंत्र से प्रार्थना करें, वास्तु पुरुष नमस्ते अस्तु------- हे वास्तु पुरुष भू शययागत् हे प्रभु मुझे घर से सर्वथा धन-धान्य से पूर्ण रखना यह कहकर पुष्प चढ़ावें और प्रार्थना करने के पश्चात् चावल की पीढ़ी की नग के आकार का वास्तु पुरुष बनावें। वास्तु मंत्रो का आह्वान करें, अपनी शक्ति के अनुसार पूजन करें। आह्वान करते समय विशेष ध्यान रखें और मन में विचार करके उस भूमि पर अधोमुख लेटे हुये वास्तु पुरुष का आह्वान कर रहे हैं। विश्नोरण इत्यादि मंत्र से वास्तु के स्वर्ण वास्तु के प्राण और पूर्व दिशा में प्रथम स्थित सर्प के स्वर्ण का पूजन करें अथवा अपने सामर्थ्य के अनुसार नमोअस्तु सर्पेभ्यो----आदि मंत्र से वास्तु का पूजन करें, कुकशी प्रदेश में नाग मंत्र को पढ़ता हुआ पृथ्वी को खोदें। गृह कुपतहाग आदि आरंम्भ में वास्तु पुरुष की स्थिति '' भाद्रपद से तीन मासों में क्रम से पूर्व आदि दिशाओं में वास्तु पुरुष का मुख होता है। दूसरी दिशा के मुख वाले गृह को आरंभ करने से दुःख, शोक और भय उत्पन्न होते हैं। वृष से तीन-तीन राशि के क्रम को वेणी बनाने से तीन -तीन राशि के सूर्य गृह में और मीन को तीन-तीन राशि सूर्य देवालय और मकर आदि तीन-तीन राशि सूर्य तड़ाग लेना उत्तम है। युक्त तान-तीन राशियों के सूर्य में वास्तु पुरुष पूर्व आदि दिशाओ में शरीर करके सोता है।

''वास्तु पुरुष मुख ज्ञानार्थं चक्रमीदम''

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पृष्ठ ११ का शेष–

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
मा.शीर्ष	शु.	६	भौमे	१४	दिसं.	धनिष्ठा	रे. ९ ॥॥॥5॥। दिवालग्न धनु ७।१५ से ९।१९ तक
पौष	शु.	९	शनौ	१५	जन.	अश्विनी	रे. ७ ॥5गु. ॥।5ऽ ॥दिवा लग्न १०।२९ से ११।५४ तक मीने, सायं अन्यगोधूलि सोग्रांग: नक्षत्रांत दोष:, गुरुयुति दोष: आवश्यके
माघ	कृ.	२	शनौ	२२	"	मघा	रे. ७ ॥।5बु।5रो5 ॥। लग्न रात्री २६।२२ से वृश्चिक, धनु लग्ने, पादवेधात् बुधवेधाऽभाव:
"	"	५	भौमे	२५	"	हस्त	रे. ७ ॥॥।5अऽऽ ॥लग्न रात्री वृश्चिक, धनु २६।०९ से ३०।३१ तक
"	"	६	बुधे	२६	"	हस्त	रे. ७ ॥॥।5अऽऽ ॥ दिवा लग्न मीने ९।४३ से ११।०८ तक, चंद्र ७ पूज्य:, रात्री गोधूलि सोग्रांग: मंगल ८ पूज्य:, गोधूल्यां अग्निपंचकाऽभाव रेखा ८
"	"	११	भौमे	१	फर.	मूल	रे. ७ ॥॥॥5ऽऽ ।5 लग्न रात्री २५।४१ से २७।५८ तक वृश्चिक लग्ने, दग्धातिथिदोष:
"	"	१२	बुधे	२	"	"	रे. ७ ॥॥॥5ऽऽ ।5 दिवा लग्न मीने ९।१५ से १०।३९ तक, दग्धातिथि दोष परिहार:
माघ	शु.	४	बुधे	९	"	रेवती	रे. ७ ।5 ॥।5रो5ऽ ॥ रात्री लग्न २५।११ से २९।३२ वृश्चिक धनु लग्ने
"	"	५	गुरौ	१०	"	"	रे. ७ ।5 ॥॥5ऽ ॥ दिवालग्न कुंभे ७।१५ से ८।४४ तक, सायं अन्यगोधूलि सोग्रांग:
"	"	५	गुरौ	१०	"		अश्विनी रे. ८ 5मं. ।5गु. ॥॥॥॥ ॥लग्न रात्री २७।२४ से २९।२७ तक धनु लग्ने, गुरुयुति दोष: आवश्यके
"	"	६	शुक्रे	११	"	"	रे. ८ 5मं. ।5गु. ॥॥॥ ॥दिवा ७।११ से कुंभ लग्ने, गुरुयुति दोष:
"	"	१०	भौमे	१५	"	मृगशिर	रे. ६ ।5 ।5शु. ।5अ ।5 ॥ दिवा लग्न वृषे ११।२४ से शनि १२ पूज्य:, सायं गोधूलि मं. ८ पूज्य:, नक्षत्रांत दोष: पादवेधात्शुक्र वेधाऽभाव:
"	"	१५	शनौ	१९	"	मघा	रे. ८ ॥॥।5चो ।5 ॥दिवा लग्न ११।०८ से १३।०३ तक वृष लग्ने, शनि १२ पूज्य:, रात्री २६।३० से २८।५१ तक वृश्चिक धनु लग्ने, वृश्चिक लग्ने शुक्र ३ पूज्य:
फाल्गु.	कृ.	२	चन्द्रे	२१	"	उ.फा.	रे. ८ ॥॥5बु5रो ॥॥ दिवा वृष लग्ने १०।५९ से शनि १२ पूज्य:, सायं गोधूलि मंगल ८ पूज्य:, रात्री वृश्चिक लग्ने २४।२१ से शुक्र ३ पूज्य:, धनु लग्ने २६।३९ से २८।०० तक
"	"	९	चन्द्रे	२८	"	मूल	रे. ७ ॥॥।5चो5ऽ ॥ लग्न अन्यगोधूलि मंगल ८ पूज्य:, रात्री २३।५४ से २६।१२ तक वृश्चिक लग्ने
"	"	१२	गुरौ	२	मार्च	श्रवण	रे. ७ ॥5शु ।5रा ।5 ॥ लग्न धनु रात्री २६।२४ से २८।०७ तक, शुक्रयुति दोष:
फाल्गु.	शु.	१	भौमे	७	मार्च	उ.भा.	रे. १० ॥॥॥॥॥ दिवा लग्न वृष १०।०५ से १२।०० तक, शनि १२ पूज्य: रात्री वृश्चिक लग्ने २३।२७ से २५।४५ तक, शुक्र ३ पूज्य:, धनु लग्ने २७।४८ तक
"	"	३	गुरौ	९	"		अश्विनी रे. ८ ॥5गु ॥॥॥5दिवा १०।०० से १४।०५ तक वृष मिथुन लग्ने, सायं अन्यगोधूलि, दग्धा तिथि दोष परिहार:, वृषलग्ने शनि १२ पूज्य:

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्ता: सं. २०५६ विक्रमी, शाक: १९२१ मध्ये)

वर्षारंभ से १४ अप्रैल बुधवार तक मीन मल मास दोष। २२ मार्च सोम से २४ अप्रैल शनिवार तक गुरु अस्त बाल्यत्व दोष

२४ अप्रैल	शनि	मघा	गुरु बाल्यत्व, मृत्यु पंचक दोष
२५ "	रवि	मघा	मृत्यु पंचक दोष
२७ "	मंगल	हस्त	लग्नाऽभाव:
२८ "	बुध	चित्रा	लग्नाऽभाव:
२९ "	गुरु	स्वाती	भौमयुति दोष:
३० "	शुक्र	स्वाती	भौमयुति दोष:
२ मई	रवि	अनुरा.	सूर्य-शनि वेध:
३ "	चन्द्रे	अनुरा.	" "
८ "	शनि	धनिष्ठा	राहु वेध: केतुयुति
९ "	रवि	धनिष्ठा	" "
१३ "	गुरु	रेवती	क्षीणचन्द्र दोष:

१६ मई रवि से १३ जून रवि तक ज्येष्ठ अधिक मास दोष:

१४ जून	सोम	मृगशिर	क्षीणचन्द्र दोष:
१८ "	शुक्र	मघा	केतुवेध:
१९ "	शनि	मघा	"
२० "	रवि	उ.फा.	लग्नाऽभाव: भद्रा व्यतिपात दोष:
२१ "	सोम	उ.फा.	व्यतिपात दोष:
२२ "	मंगल	चित्रा	भौमयुति परिघार्द्ध दोष:
२३ "	बुध	चित्रा	भौमयुति दोष:
२४ "	गुरु	स्वाती	भद्रादोष:
२५ "	शुक्र	अनुरा.	शनिवेध:
२६ "	शनि	अनुरा.	शनिवेध:
२७ "	रवि	मूल	भद्रादोष:
१ जुला.	गुरु	उ.षा.	वैधृति दोष:
१ "	गुरु	श्रवण	वैधृति विष्कुम्भ ३ घटी दोष: केतुयुति
२ "	शुक्र	श्रवण	केतुयुति
२ "	शुक्र	धनिष्ठा	राहुवेध
३ "	शनि	धनिष्ठा	राहुवेध
५ "	सोम	उ.भा.	भद्रा पश्चात् मृत्यु पंचक दोष:
६ "	मंगल	उ.भा.	मृत्यु पंचक दोष
७ "	बुध	रेवती	लग्नाऽभाव:
८ "	गुरु	अश्विनी	" "
९ जुला.	शुक्र	रोहिणी	लग्नाऽभाव:
१० "	शनि	मृग.	लग्नाऽभाव:
११ "	रवि	मृग.	कृष्णांग चतुर्दिनम् दोष
१५ "	गुरु	मघा	केतुवेध, व्यतिपात दोष
१६ "	शुक्र	मघा	केतुवेध, व्यतिपात दोष
१८ "	रवि	उ.फा.	मृत्युबाण दोष
२० "	मंगल	स्वाती	भौमयुति दोष
२१ "	बुध	स्वाती	भौमयुति दोष
२२ "	गुरु	अनुरा.	शनिवेध
२३ "	शुक्र	अनुरा.	शनिवेध
२६ "	सोम	मूल	वैधृति दोष
२७ "	भौम	उ.षा.	मृत्युबाण दोष
२८ "	बुध	उ.षा.	मृत्युबाण उपरान्त नक्षत्रांत दोष:
२८ "	बुध	श्रवण	केतुयुति दोष
२९ "	गुरु	श्रवण	" "
२९ "	गुरु	धनिष्ठा	राहुवेध दोष
३० "	शुक्र	धनिष्ठा	" "
३ अग.	मंगल	रेवती	भद्रा पूर्व लग्नाऽभाव:
३ "	मंगल	अश्विनी	भुजंगपात दोष:
४ "	बुध	"	" "
६ "	शुक्र	रोहिणी	मृत्युबाण, भद्रापश्चात् व्याघात ९ घटी दोष:

अग्रे ९ अगस्त सोम से २९ अगस्त रवि तक शुक्र वृद्धत्व, बाल्यत्व एवं शुक्रास्त दोष:

२९ अग.	रवि	रेवती	भुजंगपात दोष
३० "	सोम	रेवती	" "
३१ "	मंगल	अश्विनी	सूर्यवेध दोष
३ सित.	शुक्र	रोहिणी	लग्नाऽभाव:
४ "	शनि	मृगशिर	लग्नाऽभाव नक्षत्रांत दोष, अग्रे कृष्णांग चतुर्दिनम् दोष:
११ "	शनि	उ.फा.	लग्नाऽभाव:
१२ "	रवि	हस्त	" "
१३ "	सोम	चित्रा	" "
१५ "	बुध	अनुरा.	शनिवेध, भौमयुति दोष:
१६ "	गुरु	अनुरा.	" " "
१७ "	शुक्र	मूल	संक्रांति दिन दोष
१८ "	शनि	मूल	लग्नाऽभाव मृत्युपंचक दोष

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२१ सित. मंगल उ.षा. लग्नाऽभाव: नक्षत्रांत दोष
२१ " " श्रवण केतुयुति
२२ " बुध श्रवण केतुयुति
२३ " गुरु धनिष्ठा लग्नाऽभाव:
२५ " शनि उ.भा. ।ऽ।ऽबु.ऽसू.ऽरो।ऽऽ। रेखा ४ अन्यत्व दोष:, अग्रे श्राद्ध पक्ष दोष
१० अक्टू. रवि चित्रा वैधृतिदोष
१२ " मंगल अनुरा. शनिवेध
१३ " बुध अनुरा. शनिवेध
१५ " शुक्र मूल भौमयुति, मृत्युबाण
१६ " शनि मूल " "
१७ अक्टू. रवि उ.षा. भद्रा संक्रांति दिन दोष
१८ " सोम श्रवण केतुयुति
१९ " मंगल " " मृत्युपंचक दोष
१९ " " धनि मृत्युपंचक, भुजंगपात दोष
२० " बुध धनिष्ठा भुजंगपात दोष
२२ " शुक्र उ.भा. लग्नाऽभाव:
२४ " रवि रेवती भद्रादोष
२५ " सोम अश्विनी लग्नाऽभाव:
२७ " बुध मृगशिर मृत्युबाण, परिघार्धम्
१ नव. सोम मघा केतुवेध:
२ " मंगल मघा केतुवेध:
३ " बुध उ.फा. वैधृति दोष पूर्व लग्नाऽभाव:
४ " गुरु उ.फा. वैधृति दोष
४ " गुरु हस्त वैधृति विष्कुंभ ३ घटी दोष पश्चात् लग्नाऽभाव:
५ " शुक्र हस्त कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोष
९ " मंगल अनुरा. शनिवेध
१० " बुध " शनिवेध
१२ " शुक्र मूल भद्रा दोष
१३ " शनि उ.षा. भौमयुति दोष
१४ " रवि " " "
१४ " रवि श्रवण केतुयुति दोष
१५ " सोम श्रवण " "
१५ " सोम धनिष्ठा संक्रांति पूर्व दिन भद्रा दोष
१६ " मंगल धनिष्ठा भद्रा-संक्रांति दिन दोष
१८ " गुरु उ.भा. लग्नाऽभाव:

१९ नव. शुक्र रेवती लग्नाऽभाव:
२० " शनि अश्विनी व्यतिपातदोष:
२१ " रवि अश्विनी व्यतिपात नक्षत्रांत दोष:
२४ " बुध मृगशिर भौमवेध
२५ " गुरु मृगशिर " "
२८ " रवि मघा केतुवेध
२९ " सोम मघा "
३० " मंगल उ.फा. लग्नाऽभाव:
१ दिसं. बुध हस्त भद्रादोष
३ " शुक्र हस्त नक्षत्रांत दोष
५ " रवि स्वाती क्षीणचन्द्र दोष अग्रे कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोष:
८ " बुध मूल भुजंगपात दोष
९ " गुरु मूल " "
१० " शुक्र उ.षा. लग्नाऽभाव:
११ " शनि श्रवण भौम केतुयुति दोष:
१२ " रवि श्रवण " " "
१३ " सोम श्रवण " " "
१६ " गुरु उ.भा. संक्रांति दिन दोष
अग्रे. धनु संक्रांति (मल) मास दोष:
१४ जन. शुक्र अश्विनी संक्रांति दिन दोष
१७ " सोम रोहिणी भद्रा केतुवेध
१८ " मंगल " केतुवेध महापात दिन दोष
१८ " मंगल मृगशिर सूर्यवेध महापात दिन
१९ " बुध मृगशिर " " "
२३ " रवि मघा लग्नाऽभाव भद्रादोष
२४ " सोम उ.फा. मृत्युबाण दोष:
२५ " मंगल उ.फा. " "
२६ " बुध चित्रा भौमवेध, भद्रा दोष:
२७ " गुरु " भद्रा दोष भौमवेध:
२७ " " स्वाती भुजंगपात दोष
२८ " शुक्र स्वाती " "
२९ " शनि अनुरा. शनिवेध
३० " रवि अनुरा. शनिवेध
३ फर. गुरु उ.षा. क्षीणचन्द्र: कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोष:
८ " मंगल उ.भा. भौमयुति
९ " बुध उ.भा. भौमयुति

१३ फर. रवि रोहिणी संक्रांति दिन दोष
१४ " सोम रोहिणी लग्नाऽभाव: वैधृति दोष: मृत्युबाण दोष
१४ " सोम मृगशिर वैधृति मृत्युबाण दोष
२० " रवि मघा लग्नाऽभाव:
२२ " मंगल उ.फा. भद्रादोष
२२ " मंगल हस्त भौमवेध दोष:
२३ " बुध हस्त " "
२३ " बुध चित्रा मृत्युबाण पूर्व लग्नाऽभाव:
२४ " गुरु चित्रा मृत्युबाण दोष:
२४ " गुरु स्वाती सूर्यवेध दोष:
२५ " शुक्र स्वाती " "
२६ " शनि अनुरा. शनिवेध दोष:
२७ " रवि अनुरा. " "
२९ " मंगल मूल भद्रा पूर्व लग्नाऽभाव:
१ मार्च बुध उ.षा. व्यतिपात केतुयुति
२ " गुरु उ.षा. केतुयुति दोष:
३ " शुक्र श्रवण मृत्युबाण पूर्व परिघार्द्धम् दोष
३ " शुक्र धनिष्ठा क्षीणचन्द्र दोष:
अग्रे कृष्णानंग चतुर्दिनम् दोष
८ " बुध उ.भा. नक्षत्रांत लग्नाऽभाव:
८ " बुध रेवती भौमयुति
९ " गुरु रेवती "
११ " शनि रोहिणी लग्नाऽभाव:
१२ " रवि रोहिणी मृत्युबाण पूर्व लग्नाऽभाव:
१२ " रवि मृगशिर भद्रा केतुवेध:
१३ " सोम मृगशिर " "
अग्रे होलाष्टक, मीन (मल) मास दोष प्रारंभ

उपनयन मुहूर्त्ता: सं. २०५६ वि.

मास.	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र लग्न व अन्य विवरण
चैत्र	शु	२	शुक्रे	१९	मार्च	रेवती अभिजिति
वैशाख	शु	१२	भौमे	२७	अप्रैल	उ.फा. अभिजिति पादवेधात् बुध गुरुवेधाऽभाव: सामान्यानाम
ज्येष्ठ	कृ	४	बुधे	५	मई	मूल लग्न मिथुन
द्वि. ज्ये.	शु	३	बुधे	१६	जून	पुन: पुष्ये लग्न चिन्त्यं
आषाढ़	कृ	२	बुधे	३०	जून	उ.फा. लग्न सिंह सम्या.

मास.	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र लग्न व अन्य विवरण
आषाढ़	शु.	२	बुधे	१४	जुला.	पुष्य लग्न सिंह (सम्या.)
माघ	कृ.	५	भौमे	२५	जन.	उ.फा. अभिजिति सामान्यानाम्
माघ	शु.	२	चन्द्रे	७	फर.	शतभिषा अभिजिति
फाल्गु.	कृ.	२	चन्द्रे	२१	फर.	पू.फा.उ.फा. स्टै. टा. १०।१४ तक ल. चिं.
फाल्गु.	शु.	१	भौमे	७	मार्च	उ.भा. अभिजिति सामान्यानाम्
चैत्र	कृ.	२	बुधे	२२	मार्च	चित्रा स्टै. टा. ९।५८ तक

गृहारम्भ मुहूर्त्ता: सं. २०५६ वि.

वैशा.	शु.	१३	बुधे	२८	अप्रै	हस्त लग्न वृष
आषाढ़	शु.	१५	बुधे	२८	जुलाई	उ.षा. लग्न लग्न सिंह
श्रावण	कृ.	२	शुक्रे	३०	जुलाई	धनिष्ठा अभिजिति
आश्विन	शु.	१०	बुधे	२०	अक्टू.	धनिष्ठालग्न वृश्चिक पादवेधात् बुदवेधाऽभाव:
आश्विन	शु.	११	गुरौ	२१	अक्टू.	शतभिषा अभिजिति
कार्तिक	शु.	११	शुक्रे	१९	नव.	उ.भा. लग्न वृश्चिक पादवेधात् शुक्रवेधाऽभाव:
कार्तिक	शु.	१२	शनौ	२०	नव.	रेवती अभिजिति
मार्ग.	शु.	७	बुधे	१५	दिसं.	शतभिषा स्टै. टा. १२।१२ तक पादवेधात्कुक्रवेधाऽभाव:
फाल्गु.	कृ.	५	गुरौ	२४	फर.	चित्रा लग्न कुंभ बुधपादवेध दोष: आवश्यके

अन्य गृहारम्भ मुहूर्त्ता: (अति आवश्यकता में)

प्र. ज्ये.	कृ.	६	शुक्रे	७	मई	उ.षा. स्टै.टा. ९।३७ तक
प्र. ज्ये.	कृ.	१	चन्द्रे	१०	"	शतभिषा अभिजिति
" "	"	११	बुधे	१२	"	उ.भा. लग्न वृष
" "	"	१३	गुरौ	१३	"	रेवती अभिजिति
आषाढ़	शु.	७	चन्द्रे	१९	जुला.	हस्त अभिजिति
श्रावण	कृ.	५	चन्द्रे	२	अग.	उ.भा. अभिजिति
"	"	९	शुक्रे	६	"	रोहिणी अभिजिति
भाद्रपद	कृ.	९	शनौ	४	सितं.	मृगशिर अभिजिति
भाद्रपद	शु.	२	शनौ	११	"	हस्त अभिजिति
कार्तिक	शु.	१३	शुक्रे	५	नवं.	हस्त अभिजिति
मार्गशीर्ष	कृ.	१२	शनौ	४	दिसं.	स्वाती अभिजिति

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मास.	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र लग्न व अन्य विवरण
मार्गशीर्ष	शु.	५	चन्द्रे	१३	दिसं.	धनिष्ठा अभिजित
माघ	कृ.	६	बुधे	२६	जन.	हस्त ल. चि.
माघ	शु.	२	चन्द्रे	७	फर.	शत. अभिजित
"	"	५	गुरौ	१०	फर.	रेवती अभिजित
फाल्गु.	कृ.	७	शनौ	२६	फर.	अनु. स्टे. टा. १२।०४ उप
"	"	१२	गुरौ	२	मार्च	उ. षा. अभिजित

गृह प्रवेश मुहूर्त्तः सं. २०५६ वि.

वैशाख	शु.	८	शुक्रे	२३	अप्रै.	पुष्य लग्न वृष
प्र. ज्ये.	कृ.	९	चन्द्रे	१०	मई	शतभिषा अभिजित
कार्तिक	शु.	११	शुक्रे	१९	नवं.	उ. भा. लग्न वृश्चिक पादवेधात्शुक्र वेधाऽभावः
कार्तिक	शु	१२	शनौ	२०	नवं.	रेवती अभिजित
मार्गशीर्ष	शु.	५	चन्द्रे	१३	दिसं.	धनिष्ठा अभिजित
"	"	७	बुधे	१५	दिसं.	शत. स्टे. टा. १२।१२ तक पादवेधात् शुक्र वेधाऽभावः

अन्य गृह प्रवेश मुहूर्त्तः (अति आवश्यकता में)

प्र. ज्ये.	कृ.	६	शुक्रे	७	मई	उ. षा. स्टे. टा. ९।३७ तक
"	"	१३	गुरौ	१३	"	रेवती अभिजित
द्वि. ज्ये.	शु.	३	बुधे	१६	जून	पुष्य लग्न सिंह
श्रावण	कृ.	२	शुक्रे	३०	जुला.	धनिष्ठा अभिजित
"	"	५	चन्द्रे	२	अग.	उ. भा. अभिजित
कार्तिक	शु.	२	बुधे	१०	नवं.	अनु. स्टे. टा. ११।५५ तक
मार्गशीर्ष	कृ.	१	बुधे	२६	"	रोहिणी ल. चि.
"	"	१२	शनौ	४	दिसं.	स्वाती अभिजित
माघ	कृ.	८	शुक्रे	२८	जन.	स्वाती अभिजित
माघ	शु.	२	चन्द्रे	७	फर.	शत. अभिजित
"	"	५	गुरौ	१०	"	रेवती अभिजित
फाल्गु.	कृ.	२	चन्द्रे	२१	"	उ. फा. अभिजित
"	"	५	गुरौ	२४	"	चित्रा लग्न कुंभ बुध पादवेधदोषः
"	"	७	शनौ	२६	"	अनु. स्टे. टा. १२।०४ बाद
"	"	१२	गुरौ	२	मार्च	उ. षा. अभिजित

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तः सं. २०५६ वि.

वैशाख	शु.	१३	बुधे	२८	अप्रै.	हस्त लग्न वृष
प्र. ज्ये.	कृ.	६	शुक्रे	७	मई	उ. षा. स्टे. टा. ९।३७ तक
" "	"	७	शनौ	८	"	श्रवण अभिजित
" "	"	९	चन्द्रे	१०	"	शतभिषा अभिजित
द्वि. ज्ये.	शु.	३	बुधे	१६	जून	पुष्य लग्न सिंह
" "	"	७	रवौ	२०	"	उ. फा. स्टे. टा. ११।१७ तक
" "	"	८	चन्द्रे	२१	"	हस्त स्टे. टा. ११।११ से १२।१७ तक
माघ	कृ.	६	बुधे	२६	जन.	हस्त ल. चि.
"	"	८	शुक्रे	२८	"	स्वाती अभिजित
"	"	१०	रवौ	३०	"	अनुराधा अभिजित
माघ	शु.	२	चन्द्रे	७	फर.	शत. अभिजित
"	"	५	गुरौ	१०	"	रेवती अभिजित
"	"	६	शुक्रे	११	"	अश्विनी अभिजित
"	"	१३	गुरौ	१७	"	पुनर्वसु अभिजित
फाल्गुन	कृ.	२	चन्द्रे	२१	"	उ. फा. अभिजित
"	"	५	गुरौ	२४	"	चित्रा लग्न कुंभ बुध पादवेधदोषः
"	"	७	शनौ	२६	"	अनु. स्टे. टा. १२।०४ बाद
"	"	८	रवौ	२७	"	अनुराधा अभिजित

तामसी देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तः सं. २०५६ वि.

आषाढ़	कृ.	२	बुधे	३०	जून	उ. षा. ल. चि.
"	"	४	शनौ	३	जुलाई	शतभिषा अभिजित
"	"	५	रवौ	४	"	शतभिषा लग्न मिथुन
"	"	१०	गुरौ	८	"	अश्वि. स्टे. टा. ८।५४ तक
"	"	२	बुधे	१४	"	पुष्य लग्न सिंह
कार्तिक	शु.	११	शुक्रे	१९	नवं.	उ. भा. लग्न वृश्चिक पादवेधात्शुक्रवेधाऽभावः
"	"	१२	शनौ	२०	नवं.	रेवती अभिजित
मार्गशीर्ष	कृ.	१२	शनौ	४	दिसं.	स्वाती अभिजित
मार्गशीर्ष	शु.	५	चन्द्रे	१३	"	धनिष्ठा अभिजित
"	"	७	बुधे	१५	दिसं.	शत. स्टे. टा. १२।१२ तक

कर्णवेध-मुण्डन संस्कार मुहूर्त्तः सं. २०५६ वि.

वैशाख	शु.	१३	बुधे	२८	अप्रैल	हस्त लग्न वृष
द्वि. ज्ये.	शु.	३	बुधे	१६	जून	पुनर्वसु-पुष्य
" "	"	१०	बुधे	२३	"	चित्रा लग्न सिंह
आषाढ़	कृ.	१०	गुरौ	८	जुलाई	अश्वि. स्टे. टा. ८।५४ तक
"	शु.	२	बुधे	१४	"	पुष्य लग्न सिंह
"	"	७	चन्द्रे	१९	"	हस्त अभिजित
"	"	१०	शुक्रे	२३	"	अनुराधा अभिजित
मार्गशीर्ष	कृ.	३	गुरौ	२५	नवं.	मृग. स्टे. टा. ११।४८ तक
"	शु.	५	चन्द्रे	१३	दिसं.	धनिष्ठा अभिजित
"	"	७	बुधे	१५	"	शत. स्टे. टा. १२।१२ तक
माघ	कृ.	७	गुरौ	२३	जन.	चित्रा अभिजित स्टे. टा. १२।१४ उप.
माघ	शु.	२	चन्द्रे	७	फर.	शतभिषा अभिजित
"	"	५	गुरौ	१०	"	रेवती अभिजित
"	"	१३	गुरौ	१७	"	पुनर्वसु अभिजित
फाल्गु.	कृ.	५	गुरौ	२४	"	स्वाती अभिजित
फाल्गु.	शु.	२	बुधे	८	मार्च	रेवती अनबूझ मुहूर्त
"	"	३	गुरौ	९	"	अश्वि. स्टे. टा. ८।३१ तक

विपणि व्यापार प्रारंभ मुहूर्त्तः सं. २०५६ वि.

चैत्र	शु.	९	गुरौ	२५	मार्च	समनवमी अनबूझ मुहूर्त
वैशाख	शु.	१३	बुधे	२८	अप्रैल	हस्त लग्न मिथुन
प्र. ज्ये.	कृ.	२	रवौ	२	मई	अनु. स्टे. टा. ७।२४ बाद
" "	"	११	बुधे	१२	"	उ. भा. स्टे. टा. ७।१७ बाद
" "	"	१३	गुरौ	१३	"	रेवती अभिजित
द्वि. ज्ये.	शु.	३	बुधे	१६	जून	पुष्य स्टे. टा. ८।५५ बाद
" "	"	७	रवौ	२०	"	उ. फा. स्टे. टा. ७।३३ से ११।१७ तक
" "	"	१०	बुधे	२३	"	चित्रा लग्न मिथुन
" "	"	१३	शनौ	२६	"	अनुराधा अभिजित
आषाढ़	कृ.	२	बुधे	३०	"	उ. षा. स्टे. ६।१८ बाद
"	"	१०	गुरौ	८	जुलाई	अश्वि. स्टे. टा. ८।५४ तक
"	"	१२	शनौ	१०	"	रोहिणी अभिजित
"	"	१३	रवौ	११	"	मृगशिर अभिजित
आषाढ़	शु.	२	बुधे	१४	जुला.	पुष्य लाभ अमृत चौघड़िया
"	"	७	चन्द्रे	१९	"	हस्त अभिजित
"	"	१०	शुक्रे	२३	"	अनु. स्टे. टा. ७।५६ तक
"	"	१५	बुधे	२८	"	उ. षा. लाभ अमृत चौघड़िया
श्रावण	कृ.	५	चन्द्रे	२	अग.	उ. भा. अभिजित
"	"	७	बुधे	४	"	अश्वि लाभ अमृत चौघड़िया
"	"	१२	रवौ	८	"	मृग. स्टे. टा. ८।२३ तक
भाद्रपद	कृ.	३	रवौ	२९	"	उ. भा. अभिजित
भाद्रपद	शु.	२	शनौ	११	सितं.	उ. फा. अभिजित
"	"	३	रवौ	१२	"	हस्त अभिजित
"	"	६	गुरौ	१६	"	अनुराधा अभिजित
"	"	१०	चन्द्रे	२०	"	उ. षा. अभिजित
आश्वि.	शु.	९	भौमे	१९	अक्टू.	दशहरा अनबूझ मुहूर्त
"	"	१३	शनौ	२३	"	उ. भा. स्टे. टा. ८।०५ तक
कार्तिक	कृ.	१	चन्द्रे	२५	"	अश्विनी अभिजित,
"	"	१३	शुक्रे	५	नवं.	हस्त अभिजित
कार्तिक	शु.	२	बुधे	१०	"	अनुराधा लाभ अमृत चौघड़िया
"	"	१२	शनौ	२०	"	रेवती अभिजित
"	"	१३	रवौ	२१	"	अश्विनी अभिजित
मार्ग.	कृ.	१	बुधे	२४	"	रोहि. लग्न धनु क्षय तिथि
"	"	३	गुरौ	२५	"	मृग. स्टे. टा. ११।४८ तक
"	"	५	शनौ	२७	"	पुष्य अभिजित
"	"	१२	शनौ	४	दिसं.	चित्रा स्टे. टा. १०।०६ तक
मार्ग.	शु.	३	शनौ	११	"	उ. षा. स्टे. टा. ११।५६ तक
पौष	शु.	१३	बुधे	१९	जन.	मृग स्टे. टा. १०।२० तक
माघ	कृ.	७	गुरौ	२७	"	चित्रा स्टे. टा. १२।१४ तक
"	"	१०	रवौ	३०	"	अनुराधा अभिजित
माघ	शु.	५	गुरौ	१०	फर.	रेवती अभिजित
फाल्गुन	कृ.	२	चन्द्रे	२१	"	उ. फा. अभिजित
"	"	५	गुरौ	२४	"	चित्रा स्टे. टा. ८।२७ तक
"	"	१२	गुरौ	२	मार्च	उ. षा. अभिजित
फाल्गुन	शु.	२	बुधे	८	"	उ. भा. रेवती लाभ अमृत चौघड़िया
"	"	३	गुरौ	९	"	अश्वि. स्टे. टा. ८।३१ तक
"	"	७	रवौ	१२	"	रोहिणी अभिजित

प्रकाशकः धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वास्तुशास्त्र और गृहसज्जा (पिरामिड, फैंग शुई के चमत्कार)

महर्षि गोपाल शर्मा (बी.ई.) बी.सी.-4, मियांवाली नगर, पश्चिम विहार, दिल्ली-110087 दूरभाष : 5687077, 5670033 तथा बड़ोदरा के प्रोफेसर डॉ. जितेन भट्ट

श्री आर्यभट्ट पंचांग के पाठक वास्तुशास्त्र की महत्ता व मूल सिद्धांतों से भलीभांति परिचित हैं और जानते हैं कि यदि भवन निर्माण के समय ही वास्तु नियमों का पालन किया जाए तो सर्वोत्तम है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो भवन बने हुए हैं इनमें तोड़-फोड़ की नहीं जा सकती, ऐसे भवन वास्तु नियमों का लाभ लेकर सुख-समृद्धि दायक बन सकते हैं। ऐसी स्थिति में दक्षिण-पूर्वी देशों में विकसित फैंग-शुई नामक उपचार पद्धति व मिस्र में उपजी पिरामिड शक्ति से बिना तोड़-फोड़ के मामूली परिवर्तन द्वारा भवन के वास्तु दोष-निवारण किये जा सकते हैं।

यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि भवन निर्माण में वास्तु-शास्त्र का पालन करने या विभिन्न तकनीकों द्वारा वास्तु-दोष निवारण से विभिन्न दैवीय शक्तियां उन सब व्यक्तियों के सोच-विचार एवं कार्यशैली में मदद करती हैं जो इन निर्माण स्थलों से जुड़े होते हैं। स्थान के मालिक, किरायेदार, भवन बनाने वाले ठेकेदार तथा मजदूरों पर भी इसका प्रभाव देखा गया है। उन सरल अनुभूत प्रयोगों से हर घर, दुकान, कार्यालय अथवा व्यावसायिक परिसर में ब्रह्मांड के प्रत्येक अणु में व्याप्त असीम ऊर्जा द्वारा सभी रुके कार्य अल्प प्रयास से थोड़े ही समय में पूर्ण किये जा सकते हैं। सर्वव्यापी मान्यता के अनुसार प्रकृति के विभिन्न तत्वों का स्थानन अथवा वर्गीकरण आठ मुख्य दिशाओं में किया जाता है।

आंतरिक भवन-सज्जा

घर, दुकान या कारखाने को वास्तु अनुरूप बनाने के लिये निर्माण के साथ-साथ उस जगह की आंतरिक मुख्यव्यवस्था एवं साज-सज्जा अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वास्तु, फैंग-शुई, पिरामिड शक्ति प्रयोग तंत्र में बिना तोड़-फोड़ किये निम्नलिखित उपाय प्रचलित हैं-

दर्पण-यह घर की सुख शांति तथा व्यापार में धन की वृद्धि करता है। इसी कारण होटलों, जलपान ग्रहों तथा बड़े ज्वैलर्स के यहां दर्पण का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। दक्षिण, पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम के मुख्य द्वार वाले भवनों, कोने कटे मकानों, संकरे गलियारों या व्यावसायिक स्थानों पर भी दर्पण के उचित प्रयोग से काफी हद तक वास्तु दोष दूर किया जा सकता है।

यथासंभव दर्पण का प्रयोग पूर्व, उत्तर या उत्तर-पूर्व में ही होना चाहिए। एक चीनी मान्यता के अनुसार शयनकक्ष में सोते समय शरीर का जो हिस्सा दर्पण में नजर आता है उस हिस्से में दर्द-बीमारी का वास हो जाता है। रात को ठीक से नींद नहीं आती है तथा सुबह शरीर थका-थका सा रहता है।

पौधे-प्रवेश द्वार के दोनों ओर पौधे रखने से मनुष्य की शक्ति, धन, वैभव में वृद्धि होती है। घर एवं स्कूल में बच्चों के अध्ययन कक्ष व व्यापारिक स्थल को उत्तरी दीवार के पास पौधे या बौन साई रखने से चमत्कारिक प्रभाव देखे जा सकते हैं। प्राकृतिक पौधों के अभाव में कागज तथा प्लास्टिक के फूल पत्ती तथा पेड़ों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

प्रकाश-घर व्यवसाय में असमताओं को ठीक करने का अचूक साधन है। स्फटिक निर्मित शेन्डलियर से भी भवन की पारंपरिक सुंदरता बढ़ाने के अलावा वातावरण में समरसता व संतुलन लाया जा सकता है। प्रकाश का प्रयोग एल के आकार के समान भवन का दोष दूर करने में किया जा सकता है।

फव्वारे-झरने-पानी वैभव, धन तथा अधिकाधिक समृद्धि का प्रतीक है। फव्वारे एवं एक्वेरियम लगाने से परिवार में खुशी, धन, समृद्धि तथा आपस में प्रेम बढ़ता है। इनका प्रयोग भी पूर्व, उत्तर-पूर्व, उत्तर में ही अच्छा है।

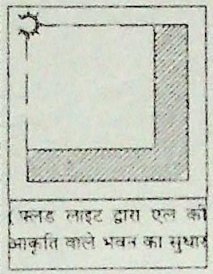

फ्लड लाइट द्वारा एल की आकृति वाले भवन का सुधार

वायु की झंकार-(घंटियां) आपसी संबंधों को नई दिशा, काम के नये आयाम, विभिन्न आकार व आवाज वाली घंटियां प्रोफेशनल जानकारी तथा व्यापार में नई उपलब्धियां प्रस्तुत करती हैं। द्वार, खिड़की के समीप या उत्तर-पश्चिम कोने में इनका प्रयोग सर्वोत्तम है।

पिरामिड शक्ति-भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों व तत्व वेत्ताओं तथा मिस्र के प्राचीन विद्वानों के अनुसार पिरामिड आकार एक अपरिचित शक्ति स्रोत है।

उचित प्रयोगों से अनगिनत स्वास्थ्य समस्याएं तथा भवनों में वास्तु दोष दूर किये जा सकते हैं। ई.एस.पी. प्रयोग शाला लॉसएंजिल्स (अमरीका) के निर्देशक एल. मेनिंग ने असंख्य परीक्षणों के बाद ये माना है कि पिरामिड संरचना में वास्तव में एक अबूझ विस्मयकारी व अचूक शक्ति है जो मानव कल्याण के लिए प्रयोग की जानी चाहिए। इस अमेरिकन संस्था के वैज्ञानिकों ने लिखा है कि अपनी राशि के अनुसार छोटे रंगीन पिरामिडों में अपनी फोटो तथा तिकोने कागज पर एक इच्छा लिखकर लगभग ३९ दिनों में पूरी की जा सकती है। प्लास्टिक के पिरामिड का कुछ समय प्रतिदिन सिर पर तथा छोटी पिरामिड शक्ति का कुर्सी या बिस्तर पर तकिये के नीचे प्रयोग करने से भी अनेकों अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई में ध्यान न देने या शीघ्र न समझ आने की शिकायतें दूर हुई हैं।

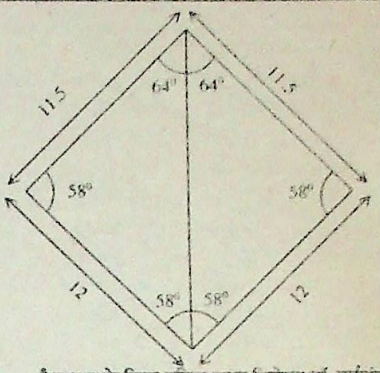

हैदराबाद के विश्व प्रसिद्ध वास्तु विशेषज्ञ डॉ. पूर्णचंद राव के अनुसार ९×९ अधिक शक्ति युक्त पिरामिड को दफ्तर, अध्ययन कक्ष, गोष्ठी कक्ष में रखने मात्र से सारा कमरा दैवी शक्ति से ओत-प्रोत हो जाता है। बहुत से लोगों के पत्र आये हैं कि यह उपकरण लगाने पर-

❖ कचहरियों के फैसले कंपनी के हक में हुए हैं। ❖ अधिक संस्थाओं में कर्ज के पुराने अनिर्णित प्रार्थनापत्रों के कर्ज मिल गये। ❖ अप्रत्याशित बिक्री के लक्ष्य प्राप्त हुए। ❖ मार्ग की सब रुकावटें समाप्त हुईं। ❖ गंभीर बीमारियां ठीक हुई हैं। ❖ मन पसंद रिश्ते हुए। ❖ घर, कारखाने, व्यावसायिक स्थलों पर गंभीर वास्तु दोष दूर किये गये।

आवश्यकतानुसार एक या उससे अधिक पिरामिड शक्ति युक्त यंत्र लगाकर वे लोग उस दोष का निवारण करके सैकड़ों लोगों को २१ से ९० दिन में ही लाभान्वित कर चुके हैं।

अपने तीस साल के आध्यात्मिक जीवन के देश-विदेश के विभिन्न भागों में हुए पिछले ९ वर्ष के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर मैं यह पूर्ण विश्वास से कह सकता हूं कि वास्तुशास्त्र, फैंग-शुई व पिरामिड शक्ति के उचित प्रयोग द्वारा घर-घर में व्याप्त चिंता व तनाव बहुत हद तक कम किया जा सकता है। हमारी इस प्राचीन अनमोल विरासत का आधुनिक विज्ञान के साथ सुखद तालमेल हो तथा अधिक से अधिक लोग सुखी व समृद्ध हों, यही हम सब के हित में है। -गोपाल शर्मा

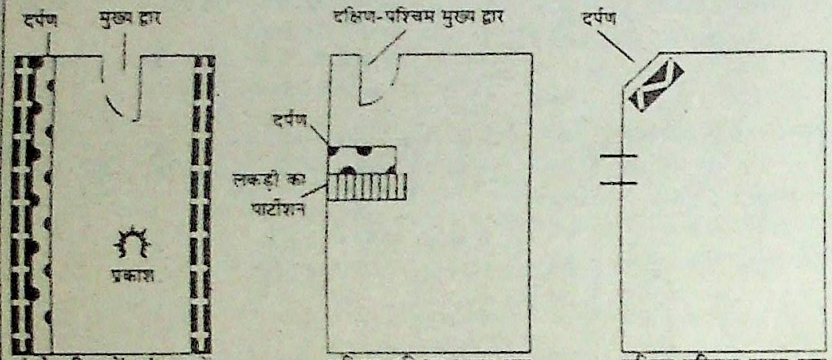

संकरे गलियारों एवं दुकानों का सुधार | दक्षिण-पश्चिम मुख्य द्वार का सुधार | दक्षिण-पश्चिम मुख्य द्वार का सुधार

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश मासिक राशिफल संवत् २०५६ विक्रमी

मेष—चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल—प्रतिकूल ग्रहों की अधिकता अपव्यय, दौड़धूप वृद्धि के साथ स्वास्थ्य में बाधा उत्पन्न करेगी। स्वजनों से कष्ट तथा किसी आगन्तुक की प्रतीक्षा में घबराहट रहेगी। स्त्री पुत्रादि से सामान्य सहयोग मिलेगा किन्तु फिर भी मनोबल की कमी दिखाई देगी।

मई—मासान्तर्गत मित्र-बन्धु तथा कुटुम्बियों के सहयोग से अधूरे कार्य पूर्ण होंगे किन्तु मानसिक चिन्ताओं में कमी नहीं होगी। मास उत्तरार्ध में संचय धन से खर्चा होगा। व्यापारिक उत्थान व प्रगति से आंशिक प्रगति संभव है।

जून—मेष राशि वालों को यह मास जोश, क्रोध से बचने पर परिवर्तनशील बनेगा। आर्थिक लाभोन्नति के साथ मान-सम्मान भी बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से परेशानी हो सकती है। सामाजिक व रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी।

जुलाई—आपको शारीरिक परेशानियों में आंशिक सुधार महसूस होगा। पराक्रम पुरुषार्थ वृद्धि से अधूरे कार्य पूर्ण होंगे किन्तु चारित्रिक नियम संयम बनाये रखना अनिवार्य है। दुष्ट जनोपद्रव से दूर रहना लाभकारी होगा।

अगस्त—कृषि, वाणिज्य तथा सत्यप्रयासों से विफलता मनोबल को कमजोर बनायेगी किन्तु मास उत्तरार्ध में शुभ परिवर्तन, श्रेष्ठ जन सम्पर्क से स्वल्प सुधार, आर्थिक सहयोग तथा सुखद यात्रा के अवसर मिलेंगे।

सितम्बर—मास आपको रोजगार धन्धों और पारिवारिक सुख के लिए सामान्य रहेगा किन्तु जोश, क्रोध व उत्तेजना से बचने पर स्वास्थ्य, धन तथा मान सम्मान की रक्षा होगी। लम्बी दूरी की यात्रा से बचना श्रेष्ठ रहेगा।

अक्टूबर—गोचर ग्रहानुसार दाम्पत्य सुख एवं कर्म शक्ति मजबूत बनेगी। व्यापारिक लाभ तथा प्रतिस्पर्धा में विजय से मनोबल बढ़ेगा। अभीष्ट कार्यों में साधारण रुकावटों के बाद सफलता मिलेगी।

नवम्बर—बुद्धि भ्रमता तथा मनोद्वेग से अपकीर्ति, शारीरिक स्थिति को कमजोर बनायेगी। कृषि व्यापार में परिश्रम करने पर भी सफलता कम मिलेगी। स्वजनों से मनमुटाव तथा भाग्य सहारा कम देगा।

दिसम्बर—मास की ग्रहचाल आंशिक सुधर रही है। व्यापार-धन्धों में प्रगति तथा राजकाज में रुके काम पूर्ण होते दिखाई देंगे। अनपेक्षित आगन्तुकों के भार से आर्थिक कष्ट का अनुभव हो सकता है किन्तु मासान्त में समस्याओं का समाधान हो जायेगा।

जनवरी २०००—मेष राशि वालों को नववर्ष वरिष्ठ लोगों से सम्पर्क तथा मान-सम्मान में वृद्धि करेगा। भाग्य दोष का आंशिक निवारण होने से कुछ अधूरे कार्य पूर्ण होंगे तथा व्यापारिक कार्यों से धन लाभ के चांस मिलेंगे।

फरवरी—मासान्तर्गत सत्पुरुषों के परामर्श से मानसिक शांति व धार्मिक प्रवृत्ति बढ़ेगी। आय-व्यय समान तथा नवीन योजना की रूपरेखा बनाने में धन खर्चा बढ़े। शत्रु कमजोर तथा शरीर में स्फूर्ति बढ़ेगी।

मार्च—इस मास में आपको मित्र-कुटुम्ब, स्त्री, सन्तान सुख उत्तम मिलने से प्रसन्नता बढ़ेगी। भूमि, भवन तथा वाहनादि का सुख बढ़ेगा। धार्मिक रुचि से घर में मांगलिक उत्सव सम्पन्न हो तथा मान-सम्मान अच्छा रहेगा।

वृष—ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल—मास में शुभ फल उदित होने से बाधित सफलता की प्राप्ति, मन में परोपकारी व दया भावना की वृद्धि होगी। श्रेष्ठजन सम्पर्क से व्यक्तित्व का विकास होगा। मासान्त में खर्चा बढ़ने की संभावना है।

मई—आपको यह मास गत मास की अपेक्षा दौड़धूप व चिन्ताओं को बढ़ावा देगा। अनापेक्षित आगन्तुकों से आर्थिक भार बढ़ेगा। अकर्मण्यता से चलते व्यापार में शिथिलता दिखाई देगी। शारीरिक परेशानी भी बढ़ेगी।

जून—मासान्तर्गत सिद्धिदायक गतिविधियों में बाधा, परिश्रम-प्रयत्न से स्वल्प लाभ, स्वजनों से मार्मिक पीड़ा का योग है। मासारंभ से पूर्व ही द्वादश गुरु का प्रवेश अनियमित दिनचर्या, हानि, अपयश प्रदान करेगा।

जुलाई—इस मास में बुद्धि की चातुर्यता से स्वाभिमान की रक्षा होगी। शत्रु परास्त होंगे। चलते व्यवसाय में लाभोन्नति तथा स्त्री-पुत्र-कुटुम्ब सुख उत्तम रहेगा। व्यय की अधिकता यथावत् बनी रह सकती है।

अगस्त—गोचर ग्रह बलानुसार स्वधर्म पालन से आत्मशक्ति में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्यों के सम्पादन से कुटुम्ब सुख बढ़ेगा। भोजन शयन को व्यवस्थित रखेंगे तो स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा कार्य कुशलता बढ़ेगी।

सितम्बर—मास में उचित मार्गदर्शन का अभाव तथा रोजी रोजगार में सामान्य फल होने लगेंगे। स्त्री पीड़ा तथा मानसिक अशांति से अभीष्ट सिद्धि में बाधा बनेगी। शत्रुओं व धोखेबाजों से सावधान रहें।

अक्टूबर—वृष राशि वालों को इस मास में आंशिक सुधार महसूस होगा। श्रेष्ठजनों से सत्परामर्श की प्राप्ति होगी। चलते कार्यों में अड़चनें आकर पूर्ण होंगी। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा यथावत् चलती रहेगी।

नवम्बर—मास मध्य तक शारीरिक दौड़धूप से कष्ट, मानसिक उद्वेगता तथा क्रोध की अधिकता रहेगी। उत्तरार्ध में सदाचारी दिनचर्या बनाने से इष्ट मित्रों के साथ शारीरिक परेशानी का निवारण होगा। व्यापारिक स्थिति में सुधार होगा।

दिसंबर—स्वास्थ्य बाधा, अनियमित दिनचर्या, स्त्री कष्ट से मन में चिन्ता बनी रहेगी। व्यर्थ का खर्चा संचय धन में कमी करेगा। शत्रु उत्पन्न होकर चलते कार्यों में बाधा उत्पन्न करेंगे। मान सम्मान यथावत् बना रहेगा।

जनवरी २००० ई.—नववर्ष के जनवरी मास में अत्यधिक व्यस्तता तथा अड़चनों के साथ कार्य सिद्धि होगी। स्त्री सन्तान सुख सामान्य, धन खर्चा का योग बना रहेगा। विद्यार्थियों तथा महिलाओं में मासान्तर्गत विशेष पठन व संगीत में रुचि बढ़ेगी।

फरवरी—मास पूर्वार्ध में भाग्यावरोध तथा व्ययाधिक्य से मन में असन्तोष बढ़ेगा। यात्रादि से कष्ट व स्वजनों से विरोध संभव है। उत्तरार्ध में आपत्ति-विपत्ति कम होकर व्यापार में लाभ के चांस प्राप्त होंगे।

मार्च—गोचर ग्रहानुसार सत्पुरुषों के मार्गदर्शन व सहयोग से अधूरे कार्य पूर्ण होंगे। व्यय की अधिकता यथावत् बनी रहेगी। मेहनत के चलते-सेहत का ख्याल रखें। घर गृहस्थ की समस्या का समाधान खोजें।

मिथुन—क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

अप्रैल—यह मास उत्तम फलप्रद है। राज्याधिकारियों से अनुकूलता, कुटुम्ब सुख वृद्धि तथा तीर्थ, व्रत, दान पुण्यादि कर्मों में रुचि बढ़ेगी। व्यापारिक क्षेत्र में आशातीत सफलता मन को उत्साहित करेगी किन्तु खर्च की अधिकता से बुद्धि भ्रमता रह सकती है।

मई—मास में मानसिक-बौद्धिक श्रम साध्य बढ़ने से शरीर में कमजोरी महसूस हो सकती है। स्त्री सुख सहयोग से रुके काम बनें किन्तु सन्तान पक्ष से अशांति व कष्ट रह सकता है। मंगल की आराधना करें श्रेष्ठ रहेगी।

जून—ग्रहचाल अनपेक्षित आगन्तुकों से व्यय भार में बढ़ोतरी, प्रियजन वियोग, द्रव्यहानि से मानसिक चिन्ता बढ़ेगी। उत्तरार्ध में श्रमसाध्य सफलता के साथ स्वल्प लाभ के योग हैं। मान-सम्मान यथावत् बना रहेगा।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२१४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई—जन्मस्थ सूर्य तथा पंचम स्थान में चल रहा मंगल समस्याएं यथावत् बरकरार रखेगा। भोजन शयन में बाधा तथा दिमागी उष्णता से व्यवहार में कमजोरी बनेगी। स्त्री सन्तान द्वारा भी सहयोग साधारण मिलेगा।

अगस्त—मासारम्भ में आमोद-प्रमोद का अवसर मिले किन्तु मन में अशान्ति रुचिकर बनने नहीं देगी। मासान्त में मंगल षष्ठभाव में जाने से व्यावसायिक शैथिल्य व शरीर की अशांति दूर होगी। बुद्धिचातुर्यता की वृद्धि होगी।

सितम्बर—मास बुद्धि कौशल से बाधाएं दूर करके समाज परिवार में मान प्रभाव बढ़ायेगा। सप्रयत्न से काम धन्धों में नवीन योजना की रूपरेखा बनेगी। पुण्य संस्कारों की वृद्धि सत्पुरुषों से मेलजोल बढ़ायेगी।

अक्टूबर—नवीन रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। जनश्रुति - सम्मान मर्यादा लोकप्रियता की वृद्धि तथा लेखन, अध्ययन के अवसर मिलेंगे। स्त्री पक्ष से चिन्ता बनने से पारिवारिक कष्ट की अनुभूति हो सकती है।

नवम्बर—गोचर ग्रहानुसार गृह प्रपंच की व्यस्तता से दूर रहेंगे तो श्रेष्ठ जनसम्पर्क और बकाया धन की प्राप्ति होगी। वृद्धजनों को तीर्थ भ्रमण व देवदर्शन का अवसर मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा ठीक बनी रहेगी।

दिसम्बर—मास में आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। कौटुम्बिक विवाद का समाधान होने से मानसिक शांति बढ़ेगी। भवन, वाहन सुख की प्राप्ति के साथ वाकपटुता से कार्य सिद्धि होगी। संतान सुख उत्तम प्राप्त होगा।

जनवरी २०००—मासारम्भ में सामान्य सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य में बाधा के कारण मानसिक अशान्ति रहेगी। उत्तरार्द्ध में कठिन परिश्रम द्वारा जीविका-निर्वाह होगा। धनी-मानी प्रतापी पुरुषों से सम्पर्क होने से धन लाभ होगा।

फरवरी—निकटतम लोगों से विश्वास घात मिलने की सम्भावना है। रोग-शोक-भय, शरीर कष्ट, मित्रजन से विरोध, चतुष्पद पीड़ा, सामाजिक और पारिवारिक प्रपंच की वृद्धि होगी।

मार्च—धैर्य-गंभीरता-सहनशीलता अपनाने पर व्यापारिक विस्तार की संभावना है। वयोवृद्ध महिलाओं से सत्परामर्श की प्राप्ति होगी। स्त्री-बच्चों को शारीरिक पीड़ा, पारिवारिक सद्व्यय की वृद्धि होगी।

कर्क—ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल—इष्ट मित्र, समाज-परिवार का सहयोग सुलभ होने पर घरेलू-सुख की प्राप्ति होगी। शारीरिक सौन्दर्य का विकास, तरल पेय पदार्थों के सेवन में रुचि, अभीष्ट कार्य सिद्धि का योग है।

मई—घरेलू सम्पर्क, पद-मर्यादा-यश की वृद्धि होगी। रोजी-धन्धे में परिवर्तन होने से नये ढंग की दिनचर्या शुरू होगी। मासान्त में ऋण, कर की अदायगी की चिन्ता सतायेगी।

जून—परिचितों से विवाद, स्त्री-पुत्र कष्ट, अप्रिय स्थानान्तरण, भ्रमण, अधीनस्थ लोगों के उपद्रव से मन अशांत रहेगा। उदर-विकार, स्वजन चिंता, आकस्मिक लाभ के प्रति निराशा, धन की कमी रहेगी।

जुलाई—आरोग्य बाधा, नेत्रोदर-पीड़ा, वाग्दोष, लोकापवाद, आवश्यक कामों में विफलता कष्टकर होगी। उत्तरार्ध में सामान्य सुधार, घरेलू साज-सज्जा एवं आतिथ्य सत्कार में धन व्यय बढ़ेगा।

अगस्त—विशेष परिश्रम से आंशिक सफलता, अत्यधिक दौड़-धूप, आकस्मिक यात्राएं होंगी। उद्योग-धन्धे के विकास में पूंजी की आवश्यकता बढ़ेगी। विशिष्ट अतिथि अभ्यागत में खर्च बढ़ेगा, चित्त प्रफुल्लित रहेगा।

सितम्बर—सत्कर्मजन्य सुख उत्तम, स्त्री-सन्तान से सहयोग, सफल एवं सुखद दिनचर्या से आत्म शांति मिलेगी। स्वास्थ्य सुख उत्तम रहेगा। रोजी-रोजगार की स्थिति पूर्ववत् रहेगी।

अक्टूबर—लाभ-व्यय की समानता, श्रमसाध्य सफलता, मानसिक अस्थिरता, पत्नी सुख उत्तम रहेगा। मासमध्य में रोजी-रोटी की कठिनाइयां दूर होने पर लाभ, पदोन्नति, सामाजिक मान प्रभाव की वृद्धि होगी।

नवम्बर—व्यावसायिक विस्तार, आत्म शक्ति का अभ्युदय, सम्मान-पदाधिकार का लाभ, कुटुम्ब-सुख, यशोबल की वृद्धि, श्रेष्ठ-संगति से बौद्धिक विकास होने पर उग्र-विरोधियों का शमन, सोत्साह कार्य सम्पादन, नष्ट वस्तु की पुनः प्राप्ति होगी।

दिसम्बर—सप्तम मंगल उच्चस्थ है। यात्रा में कष्ट, भागीदारों-पड़ोसियों से अनबन, क्षुद्र व्यक्तियों के साहचर्यवश दुःख मिलेगा। मानसिक असन्तोषी तत्कालीन समस्या के समाधान हेतु राहु की शांति करावें।

जनवरी २०००—मासफल श्रेष्ठ है। व्यापार-धन्धों में प्रगति, राजकीय सहायता की प्राप्ति, समाज परिवार में व्यक्तित्व का विकास होगा। सर्वत्र विजयोपलब्धि तथा साहस सुयश की वृद्धि होगी।

फरवरी—रोजगार धंधा मध्यम चलने से सुख-दुःख की समानता रहेगी। धनार्जन में उतार-चढ़ाव, गृहस्थ जीवन में अशांति, शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान का योग है। सूर्य नारायण की उपासना नियमित करने से राहत मिलेगी।

मार्च—मनमानी आदतों की वृद्धि, अनियमित दिनचर्या, चित्त ज्वर, रक्त दोष, उदर विकार, कलह वैमनस्यता का वातावरण बनेगा। उत्तरार्ध में साहस, पुरुषार्थ-पराक्रम की वृद्धि से सम्मान की सुरक्षा होगी।

सिंह—म, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल—मानसिक अवसाद, प्रतिकूल परिवर्तन चालू काम-धंधे में उतार-चढ़ाव के दुर्योग हैं, परिवार एवं उच्चाधिकारियों से मतभेद होगा। सम्पत्ति-क्षय, नेत्रोदर-पीड़ा, रक्ताल्पता, स्त्री को भी रोग-भय होगा।

मई—आत्मशक्ति का विकास, सत्याचरण से प्रभाव वृद्धि होने से दिमागी तनाव दूर होगा। विशिष्ट आगन्तुक के लिए प्रतीक्षारत रहेंगे। किसी नई योजना में हाथ डालना हानिप्रद है। उत्तरार्ध में स्वजनों का सुख सहयोग मिलेगा।

जून—स्त्री-बच्चों की मदद से व्यक्तित्व का विकास, भ्रमण में तत्परता, आरोग्य लाभ, पड़ोसियों से सम्पर्क वृद्धि होगी। निजी उद्यम के शक्ति-साहस से विवादास्पद मामले सुलझेंगे। भूमि-भवन, वाहनादि कामों में सफलता संदिग्ध होगी।

जुलाई—लिखा-पढ़ी की गलती से हानि, परेशानी, अत्यधिक परिश्रम से शरीर-मन-मस्तिष्क क्लांत रहेगा। शिक्षा-दीक्षा में व्यवधान, कार्य क्षेत्र में प्रतिद्वन्दिता की वृद्धि, स्वरूप लाभ, वाणी-व्यक्तित्व-मस्तिष्क में कठोरता का योग है।

अगस्त—आलस्य-तंद्रादि की वृद्धि, धन-धर्म-सम्मान की कमी, अनपेक्षित आगन्तुकों से कष्ट होने से चित्त में उदासीनता, दुर्भावना उत्पन्न होगी। स्त्री-सन्तानादि स्वजनों से असन्तोष, विभव-च्युति, कीमती वस्तु नष्ट होगी।

सितम्बर—रोजी-रोजगार में सामान्य सफलता होगी। स्थिति में उत्तरोत्तर सुधार, विशेष श्रम से स्वल्प लाभ होने पर भ्रमण-मनोरंजन, आमोद-प्रमोद का किंचित्-सुख मिलेगा। घरेलू प्रपंच की वृद्धि, लापरवाही से विशेष चिन्ता भी होगी।

अक्टूबर—सन्तान का अभ्युदय, वैधानिक विवाद में विजय, प्रबल शत्रुओं का गमन होने पर शुभ कार्य सम्पादन, नववस्त्र धारण, इच्छित उन्नति की दिशा में निजी उद्यम शक्ति का विकास होगा। महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में सुपरिणाम की प्राप्ति होगी।

नवम्बर—जन संपर्क वृद्धि, संघर्ष पूर्ण विजय, पत्नी-सुख, आंशिक स्वास्थ्य लाभ का योग है। दाम्पत्य सुख उत्तम रहते हुए भी गृह प्रपंच की उलझनें लगी रहेंगी। अविवाहितों को वैवाहिक सुख प्राप्त होगा। सहोदरों का सहयोग मिलेगा।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिसम्बर—प्रवास पीड़ा, व्यवसाय शैथिल्य, मानसिक त्रास, भाई-बहनों में विग्रह, घरेलू कठिनाइयों में मन परेशान होगा। इष्ट-मित्र पर व्यय होगा। मासान्त में स्वजनों का न्यूनाधिक सहयोग मिलेगा। व्यस्त भी खूब रहेंगे।

जनवरी २०००—धनागम, नौकरी, व्यापार में तरक्की, शारीरिक सामर्थ्य की अनुकूलता रहेगी। मनोरथ सिद्धि, साहसिक क्षमता की वृद्धि, इष्ट-मित्र कुटुम्बी से सामयिक सहयोग मिलेगा। पशु-पक्षियों से प्रेम, धर्म-कर्म में रुचि, शुभाशुभ कामों का सम्पादन होगा।

फरवरी—श्रेष्ठजनों से सहयोग, भाग्य बाधा का निवारण, पद, मान-मर्यादा-सुयश की सुरक्षा होगी। पुरानी परेशानियाँ दूर होकर भी नई आकस्मिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होंगी। स्वबुद्धि विवेक में नई चैतन्यता जगेगी, सर्वत्र चर्चित बनेंगे।

मार्च—आगन्तुकों से कष्ट, विद्याध्ययन, व्यवसाय में बाधा का योग है। इष्ट मित्रों का सहयोग मिलने से स्वल्प द्रव्य-लाभ होगा। उत्तरार्ध में संघर्ष और श्रम का मीठा फल मिलने से बिगड़े काम बनेंगे।

कन्या—टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल—कृषि व्यवसाय एवं नौकरी की स्थिति में सुधार होगा। लाभ-खर्च में समानता रहेगी। मास मध्य में अति हानिकारक वातावरण से बचेंगे। स्वकीय सत्कृत्य से आत्मशांति, शनैः शनैः भाग्योन्नति होगी।

मई—मासारम्भ में अपव्यय, स्वास्थ्य बाधा, दुश्चिन्ता का योग है। दिमागी उष्णता, वाहन कष्ट, कौटुम्बिक वाद-विवाद, क्रोधाधिक्य, आर्थिक लेन-देन व्यवहार की चिन्ता रहेगी। उत्तरार्ध में हानि उठाकर लाभ पायेंगे। एक संतान की मदद मिलेगी।

जून—साहस-उद्योग-पुरुषार्थ द्वारा अवरुद्ध काम पूरा होने से सामाजिक मान-प्रभाव, कर्म-व्यस्तता, अन्न-द्रव्य-वस्त्रादि का लाभ, हर काम में कृषिक सुधार होगा। प्रिय अतिथि समागम से हर्ष, गृहोपयोगी वस्तुओं के संचय में रुचि बढ़ेगी।

जुलाई—सुख यात्रा, धन-वस्त्र-लाभ, शैक्षणिक प्रगति, परिवार में सुख-शान्ति रहेगी। दिमागी तनाव दूर होकर स्वतंत्र उद्योग-धंधे का विस्तार, उद्यम-[illegible] चिन्तित मनोरथ की सिद्धि, गृहोपयोगी वस्तुओं के संचय में रुचि बढ़ेगी।

अगस्त—आमदनी की कमी, बच्चों में शैक्षणिक व्यतिक्रम, पितृरोग से पीड़ा, व्यय-वृद्धि, शारीरिक दुर्बलता का दुर्योग है। निकट पड़ोसियों-सम्बन्धियों से विवाद, असंमंजस्यता, प्रियजन-वियोग से कष्ट संभव है। साहस-उत्साह की कमी रहेगी, शिकायत जरूरी है।

सितम्बर—कष्ट से मन में उद्विग्नता, स्त्री-सन्तति कष्ट, अत्यधिक दौड़-धूप, कानूनी विवाद का भय बना रहेगा। अनपेक्षित व्यय की वृद्धि, धनाभाव, रोग-शोक, आत्मीयजनों से व्यर्थ कठिनाइयां मिलेंगी। अनेक खट्टे मीठे अनुभव प्राप्त होंगे।

अक्टूबर—यात्रा में सुख-दुःख की समानता, साहसिक प्रयत्नों में सिद्धि प्राप्त होगी। जीविकोपार्जन की बड़ी कठिनाइयां दूर होंगी। ता. १५ के बाद अनिवार्य सफलता, नये स्थानों का भ्रमण, भूमि-भवन-वाहनादि-भोजन-शयन में व्यतिक्रम का योग है।

नवम्बर—साहसिक सफलता, श्रम प्रयत्न से द्रव्योपार्जन, पत्नी सन्तान-सुख उत्तम रहेगा। तीव्र लगन से सर्वत्र सिद्धि मिलेगी। व्यापार-नौकरी में शुभ परिवर्तन-परिवर्धन, सुखद यात्रा, सुयश की प्राप्ति, लेखन अध्ययन में रुचि वृद्धि होगी।

दिसम्बर—लाभ-व्यय की समानता पूंजी की कमी से उद्यमहीनता, स्वास्थ्य रक्षार्थ खान-पान पर नियंत्रण आवश्यक है। अर्थतंत्र अव्यवस्थित रहेगा। दैनिक जीवन में कुछ नई समस्यायें उत्पन्न होंगी।

जनवरी २०००—स्वजनों से प्रेम-सद्भाव की वृद्धि, दुःख-शोक शमन, साहस-पराक्रम-पुरुषार्थ का विकास, अत्यधिक कार्य-व्यस्तता रहने से शारीरिक-मानसिक-बौद्धिक श्रम की अधिकता बरकरार रहेगी। सवारियों का उपयोग कष्टदायक होगा।

फरवरी—राश्येश बुध शत्रु स्थान में तथा अष्टम गुरु, शनि से प्रतिकूलता रहेगी। वैधानिक पीड़ा, राज्याधिकारियों से कष्ट, पड़ोसियों से विवाद, उदर-विकार, सिर दर्द, अस्वाभाविक भोग-विलास, उत्तेजना, जोश, क्रोध की वृद्धि होगी।

मार्च—गृह प्रापंचिक-सुख की अनुकूलता, पितृ-संचित द्रव्यादि-लाभ, स्त्री-सन्तान से हर्ष, राज्याधिकारियों के शुभ सम्पर्क से लाभ होगा। साथी-सहयोगियों से सुखानन्द, सत्परामर्श की प्राप्ति, वाद-विवाद की प्रेरक परिस्थितियाँ नियंत्रित होंगी।

तुला—र, रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल—स्वास्थ्य लाभ होकर हानि, राजकीय परेशानी, स्त्री-सन्तान-कुटुम्बियों से असन्तोष, ऋण अदायगी की चिन्ता रहेगी। मास मध्य में विरोधियों से संघर्ष-भय रहेगा। धनाभाव से योजनाएं ठप होंगी।

मई—यह मास मध्यम है। निकट-स्थानों की अधिकाधिक यात्रा, आमदनी कम, खर्च ज्यादा होगा। धैर्य-साहस-सहनशीलता-स्वपराक्रम से कुछ जरूरी काम पूरा होगा। स्वार्थी लोगों का आवागमन कष्टकर होगा। गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा।

जून—रोजी रोजगार में गतिरोध, अर्थाभाव, यात्रा से हानि-परेशानी का दुर्योग है। पत्नी व माता को स्वास्थ्य बाधा, मास मध्य में प्रियजन-विद्रोह संभव होगा। चित्त-वैकल्य, शरीरांग-पीड़ा, खर्च की अधिकता रहेगी।

जुलाई—मासफल उत्तम है। दाम्पत्य-जीवन में अनुकूलता रहेगी। श्रेष्ठ जन-सम्पर्क, भाई-बहन-माता-पिता-कुटुम्बियों का सुख श्रेष्ठ रहेगा। अभीष्ट सिद्धि, परीक्षा में सफलता, दैवी कृपा की प्राप्ति, [illegible] खर्च की जरूरतें बढ़ेंगी।

अगस्त—भाग्य-कर्मोदय, उत्तम भोज्य पदार्थों की प्राप्ति, भ्रमण प्रयास की सुखानुभूति होगी। सामयिक परिवर्तनों में विश्वास बढ़ेगा। मान-यश-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। दौड़-धूप श्रमाधिक्य से पेट-पैर में कष्ट व चेहरा क्लान्त रहेगा।

सितम्बर—अन्न-द्रव्य, बकाया रकम की प्राप्ति, वस्त्रादि लाभ, दैनिक सुख-शान्ति, साहस-पुरुषार्थ की वृद्धि होगी। उत्तरार्ध में व्ययस्थ ग्रहों का प्राबल्य विवादग्रस्त लोगों का सम्पर्क देगा। वाहन कष्ट, अर्थाभाव, अस्वाभाविक उत्तेजना होगी।

अक्टूबर—पूर्व स्थगित कामों में सफलता, विशेष दौड़धूप, स्वल्प द्रव्य लाभ, स्वधर्म पालन में रुचि बढ़ेगी। नेत्र पीड़ा, चिंतित कार्यों में विफलता, कठिनाइयों की वृद्धि, पत्नी-सन्तान अस्वस्थ रहेंगे। ता. १६ से हर क्षेत्र में दुष्प्रभाव कम होगा।

नवम्बर—भोजन-शयनादि दिनचर्या सामान्य रहेगी। कुछ आकस्मिक शुभ कार्यों का सम्पादन, धर्म-कृत्यों में आस्था, हर क्षेत्र में क्रमिक प्रगति, नवीन जन-सम्पर्क की वृद्धि होगी। स्वल्प द्रव्य लाभ, कार्य सिद्धि में श्रम बुद्धिचातुर्य की प्रधानता रहेगी।

दिसम्बर—साहस-पराक्रम की वृद्धि, आर्थिक विकास, पत्नी सन्तान, कुटुम्बियों से सहयोग प्राप्ति, बौद्धिक-चमत्कार का [illegible] होगा। दैवी कृपावशात् नये उद्योगों में रुचि जागृत होगी।

जनवरी २०००—मासारम्भ सुखदायक है। बारम्बार [illegible] वस्त्रादि की प्राप्ति, हर प्रयत्न में सफलता, विवि[illegible] सुख साधनों की वृद्धि, वाद-विवाद में विजय-प्राप्ति का योग है। साहस-पुरुषार्थ-धैर्यावलम्बन से रुके काम पूरे होंगे।

फरवरी—प्रभाव-प्रताप, धन-कोष की वृद्धि, आवश्यक कार्य-सिद्धि, बकाया रकम की प्राप्ति, पारिवारिक उत्तरदायित्व एवं औपचारिकता का निर्वाह करना पड़ेगा। पुरानी समस्याओं का समाधान, पारिवारिक अभ्युदय, सानंद जीविका निर्वाह होगा।

मार्च—उच्चवर्गीय व्यक्तियों के समागम एवं साहचर्य से आनन्दानुभूति मिलेगी। उद्योग धन्धा की प्रगति, प्रयत्न पूर्वक अभीष्ट सफलता, गृह में मंगलोत्सव होगा। न्यायालयीय कार्यों में पर्याप्त दौड़धूप से सफलता, विजय की प्राप्ति हर्षप्रद होगी।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्रकाशक: धर्मसंघ प्रकाशन २५९६ नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६८९८६, ३२८५२३४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वृश्चिक — तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल— अत्यधिक कार्य व्यस्तता, शुभ कार्य-सम्पादन, व्यापार में क्रम से सुधार, कठिन कार्य सिद्धि, आजीविका क्षेत्र का विस्तार होगा। नौकरी चाहने वालों की इच्छा, द्रव्यागम, बौद्धिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

मई— स्वास्थ्य-सुखानुभूति, स्वजन-समागम, मानसिक खुशी, मनोरथ की सिद्धि, ऋण-अनुदान का लाभ, पठन-पाठन में रुचि की वृद्धि, स्थिर बुद्धि रहेगी। उच्च समाज से अनुकूलता, कार्य साफल्य, विद्यार्थियों को अधिक श्रम से सफलता मिलेगी।

जून— भोजन-शयन में कष्ट, मिथ्यापवाद, मानसिक अवसाद, हर काम में व्यतिक्रम का योग है। वाक्शक्ति संयम रखने से झगड़े-झंझट का भय निवृत्त होगा। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा यथावत् बनी रहेगी।

जुलाई— अरेनू अशान्ति, आकस्मिक रोग-व्याधि, मनोव्यथा, आघात-प्रत्याघात से शरीर-कष्ट उपचार साध्य होगा। उत्तरार्ध में शुभ परिवर्तन, पारिवारिक सुख-समृद्धि, अनेक उत्तरदायित्व की वृद्धि, हानि-लाभ की समानता, यात्रा कष्टकारक होगी।

अगस्त— लेखन अध्ययन में रुचि बढ़ने से मन प्रसन्न रहेगा। व्यापारिक यात्रा में शिथिलता, मानसिक चंचलता, कर्मोपजीविका में सामयिक परिवर्तन का योग है। कार्य-साफल्य, अन्न-धन-वस्त्रादि का सामान्य सुख प्राप्त होगा।

सितम्बर— कर्तव्यनिष्ठ जीवन का विकास, पशु-पक्षी प्राणियों से प्रेम, सुदीर्घ विवादों की निवृत्ति, रोग-निवारण, कुल की शोभा वृद्धि होगी। इष्ट-मित्र-कुटुम्बियों के समागम से लाभ, नवीन योजनाओं का निर्माण, पड़ोसियों से आनन्दानुभूति हो।

अक्टूबर— आर्थिक लाभ व्यय की समानता, शुभाशुभ मिश्रित फल प्राप्त होगा। नये-नये लोगों से सम्पर्क सत्परामर्श मिलेगा। ता. १६ से रोजी-रोजगार में गतिरोध, हर क्षेत्र में आपत्ति-विपत्ति, स्त्री-बच्चों पर व्ययाधिक हो।

नवम्बर— गृह-भूमि-भवन-वाहनादि संपत्ति कुछ विवादग्रस्त बनेगी। धनाभाव से महत्वपूर्ण कार्य स्थगित करना होगा। घर-गृहस्थी में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनेगी। कृषि-वाणिज्य का विकास, गृह में मंगलोत्सव, विवादग्रस्तता निवृत्त होगी।

दिसम्बर— स्वल्प लाभ, श्रमसाध्य जीविकोपार्जन, शरीर सुख की न्यूनता रहेगी। कार्य क्षेत्र में व्यस्तता बढ़ेगी। उच्चाधिकारियों से सहयोग आशानुरूप नहीं मिलेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। मासान्त में इच्छापूर्ति, अनिवार्य सफलता मिलेगी।

जनवरी २०००— स्थान-परिवर्तन, पुत्र-कुटुम्ब से प्रीति, इच्छित कार्यक्रम में सफलता का योग है। मास मध्य में स्वजनों के विरोध-प्रतिरोध के बावजूद भी व्यावसायिक विस्तार, मुख्य-मुख्य कार्य सप्रयत्न सफल होंगे। श्रीमान् लोगों से मित्रता बढ़ेगी।

फरवरी— औद्योगिक अपयश, चोरोपद्रव से हानि, स्त्री-बच्चों को शरीरारिष्ट का भय रहेगा। बुद्धि चातुर्य से काम-काज सफल रहेगा। मौसम परिवर्तन से शारीरिक पीड़ा, कदा-कदा अनिद्रा, दुःस्वप्न दर्शन, दुश्चरित्रता का भय बना रहेगा।

मार्च— ऋण भार की वृद्धि, स्वजनों के व्यवहार से मानसिक आघात, यात्रा में हानि, बच्चों के लिए विशेष परेशानी का लक्षण है। स्त्री-चिंता, गुप्तरोग, निरन्तर शत्रुओं की वृद्धि, कौटुम्बिक विरोध से सतर्क रहना अनिवार्य है।

धनु — ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

अप्रैल— मासान्तर्गत सुख समृद्धि के चांस मिलेंगे। भाइयों व पिता को स्वास्थ्य पीड़ा से दौड़धूप की बढ़ोत्तरी होगी। यात्रा में कष्ट तथा शत्रुओं से सावधान रहें वरना आर्थिक कष्ट संभव है।

मई— ग्रहचाल प्रगति में सहायक है। कार्यारम्भ कीजिए भाग्य सहारा से लाभ मिलेगा। पदमान, सुयश की बढ़ोत्तरी होगी। परोपकारी भावना का उदय धार्मिक मांगलिक कार्यों में धन खर्च करायेगा।

जून— यह मास धनु राशि वालों के लिए साधारण कठिनाई के बावजूद द्रव्यार्जन व धन लाभ ठीक मिलेगा। भाग्यफल अच्छा रहेगा। पुराने मित्रों से मिलने से मन में प्रसन्नता बढ़ेगी। यात्रा व दौड़धूप बढ़ेगी।

जुलाई— मास की ग्रहचाल पारिवारिक अशांति, सामयिक कार्यों में गतिरोध उत्पन्न करेगी। धन खर्च असाधारण रहेगा। स्त्री सहयोग में कमी आने से मन बैचेन रहेगा। सामाजिक कार्यों का उत्तरदायित्व बढ़ेगा।

अगस्त— अष्टमस्थ ग्रहों का प्राबल्य कष्टदायक है। अत्यधिक कार्य-व्यस्तता से मन बैचेन रहेगा। व्यापारिक कार्यों में लाभ ठीक होने के बावजूद खर्चा बढ़ेगा। स्त्री-सन्तान सुख सामान्य प्राप्त होंगे।

सितम्बर— मास में साधारण सुधार आयेगा किन्तु दौड़धूप व क्रोधाधिक्य से शरीर को कष्ट रहेगा। इष्ट, मित्रों व कुटुम्बियों का सुख ठीक मिलेगा। अधूरे कार्यों में सफलता तथा बौद्धिक विकास में वृद्धि होगी।

अक्टूबर— यह मास आपके लिए कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। राजनैतिक माहौल में सितारा चमकेगा। वाद-विवाद [illegible] में विजय प्राप्त होगी। पुराने रोग, ऋण से छुटकारा मिलने से मन में उत्साह बढ़ेगा।

नवम्बर— गोचर ग्रहावस्थित इष्ट-मित्र-कुटुम्बियों के समागम से आनन्द लाभ, आरोग्य सुख तथा महत्वपूर्ण यात्रा सम्पन्न होगी। मास उत्तरार्ध में व्यसनादि से धन खर्चा बढ़ेगा। क्रोध पर संयम रखें।

दिसम्बर— धनु राशि वालों को यह मास अतिरिक्त जिम्मेदारियों को बढ़ावा देगा। दौड़धूप से स्वास्थ्य में गिरावट का योग होगी। अधिकारी वर्ग से आशानुरूप सहयोग नहीं मिलेगा जिससे समय पर कार्य नहीं होंगे।

जनवरी २०००— नववर्षारंभ आपके लिए नई स्फूर्ति लेकर आयेगा। स्त्री-सुख, कीर्तिमान तथा शत्रुओं कृत [illegible] होने से रुके कार्य पूर्ण होंगे। उच्चवर्ग से सम्पर्क तथा मर्यादा वश धन खर्चा में बढ़ोत्तरी हो सकती है। [illegible] रहेंगे। वि[illegible]

फरवरी— आपको यह मास नवीन योजनाओं कोंद है। [illegible] धन लाभ में बढ़ोत्तरी करेगा। घूमने-फिरने का अवसर मिलने से खुशी [illegible] इष्ट आराधना, अधूरे काम में पूर्णता प्रदान करेगी। मान सम्मान ठीक रहेगा।

मार्च— मास व्यक्तित्व विकास के साथ व्यवहारिक स्थिति में सुदृढ़ता लायेगा। विद्यार्थी पढ़ाई में अधिक ध्यान देंगे तथा [illegible]री कामों की तरक्की व स्थानान्तरण का योग है। उत्तरार्ध में अज्ञात भय पीड़ा से मन अशांत रहेगा।

मकर — भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, [illegible]

अप्रैल— मासारंभ में अभीष्ट सिद्धि, बुद्धि चातुर्यता से अधिकारी गणों की नाराजगी दूर होगी। स्त्री सुख मध्यम मिलेगा। मासान्त में भोजन सुविधा में व्यतिक्रम तथा शारीरिक परेशानी बढ़ेगी। स्वजनों से मनमुटाव होगा।

मई— गोचर ग्रह बलानुसार मई मास मिश्रित फलदायक है। पारिवारिक क्लेश खुशी के अहसास में कमी लायेगा। गुप्त शत्रुओं से सावधानी अपेक्षित है। व्यवसाय में लाभ कम खर्चा अधिक बढ़ेगा। [illegible]

जून— मासान्तर्गत पारिवारिक सुख समृद्धि हेतु शिवाराधना करें। मित्र बन्धुओं से आशानुकूल सहयोग मिलने से सामयिक कार्यों में प्रगति होगी। मान-सम्मान यथावत् मिलता रहेगा। विशिष्ट व्यक्तियों से मेलजोल बढ़ेगा।

जुलाई— आपको यह मास महत्वपूर्ण कार्य में सामान्य सफलता तथा अधिकारियों से अनुकूलता का लाभ दिलायेगा। शत्रु कमजोर व नतमस्तक होंगे। अनावश्यक दौड़धूप से शारीरिक कष्ट बढ़ सकता है।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८ — २३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection